स्वर्गकी सड़क।

अनुवादक और प्रकाशक

महावीरप्रसाद गहमरी।

" हरे राम, हरे राम, राम राम हरे हरे;

हरे कृष्ण, हरे कृष्ण, कृष्ण कृष्ण हरे हरे "

स्वर्गमाला कार्यालय

गहमर।

पहली बार।

सन् १९१६ ईस्वी।

Published by Mahavir Prasad Gahmari
Swargmala Karyalay Gahmar (Ghazipur)
and
Printed by B. L. Pawagi
at the Hitchintak Press, Ramghat, Benares City.

समर्पण ।

श्रीमान् पण्डित सुरेन्द्रप्रसाद जी शुक्ल

कन्हौली-पति (मुजफ्फरपुर)

सद्गुणसम्पन्न भूदेव !

हिन्दी भाषा भाषी समृद्धिशाली पुरुषोंमें मातृ-भाषा-को सहारा देनेवाले, सद्ग्रंथोंका प्रचार चाहनेवाले और साहित्यसेवियों को उत्साहित करनेवाले सज्जन इनेगिने हैं और दीन हीन बनी हुई मातृ भाषा के प्रति कृपादृष्टि रखना कम महानुभावता नहीं है । आप वैसे ही महानुभाव हैं । अतएव " स्वर्गकी सड़क " विनय पूर्वक आपको समर्पित है ।

सेवक-

महावीरप्रसाद



श्रीमान पण्डित श्री सुरेन्द्रप्रसाद जी शुक्ल
तालुकेदार, कन्हौली (मुजफ्फरपुर)

विषय सूची।

पढ़ने योग्य पुस्तकें।

स्वर्गके रत्न—ईश्वरके साथ एकता करनेकी दो कुंजियां है। एक है कर्म करनेमें कुशलता और दूसरी भले बुरे मौकों पर-सुख दुःखमें समता रखना, इन दोनों कुंजियोंको पकड़नेकी युक्ति इस पुस्तकमें बहुत विस्तारसे दलील दृष्टान्तों सहित समझायी है। इसको समझनेसे अन्दरका बहुत कुछ संशय मिटजाता है, हृदयके बहुतसे सद्गुण खिल उठते हैं, हृदयकी तहमें पड़ी हुई बहुतेरी उत्तम वृत्तियां जागजाती हैं और इस दुनियाका व्यवहार सुधरता है तथा अन्तरात्माको शान्ति मिलती है। क्योंकि इसमें प्रभुप्रेम है, सत्य ज्ञान है, अपने कर्त्तव्यकी समझ है, भ्रातृभावका रसायन है, अमूल्य समयकी महिमा बतायी है, महात्मा बननेके लिये अपना सुधार करनेका मंत्र है और साधारण धर्म तथा गूढ़ तत्व है। भाषा बहुत सहज सबके समझने योग्य है। १०१ दृष्टान्त ४०० पृष्ठ दाम १)

स्वर्गकी सड़क—इस पुस्तकके पढ़नेसे सज्जनोंका इतना लाभ होगा—धर्मभावना अधिक खिलेगी, ईश्वरी ज्ञान बढ़ेगा; श्रद्धा दृढ़ होगी, ईश्वरकी महिमा, हरिजनोंका धर्म; धर्मका बल, धर्मकी जरूरत और धर्मकी खूबियां समझमें आवेंगी, नया जीवन आवेगा; परमार्थके काम करनेका बल आवेगा मनको मजबूत रखना आवेगा, चित्तका बहुत कुछ समाधान हो जायगा। कितने ही विषय अपने स्नेहियोंको समझाना आजायगा; प्रभुप्रेम जागृत होगा; धर्मकी ओर प्रभुकी ओर अधिक खिंचाव

होगा और अपना आचरण सुधारनेका मन होगा। इसके सिवा और बहुत कुछ लाभ होगा। और यह सब होना छोटी मोटी बात नहीं है। यही स्वर्गकी सड़क है। जिनको इस सड़कपर चलना आता है उनका मनचाहा काम होजाता है। इसमें तनिक सन्देह नहीं है। इसलिये सब भाई बहनोंसे विनती है कि कृपा करके इस पुस्तकको बारंबार पढ़िये तथा सुनिये। तब परम कृपालु परमात्मा आपका भला करेगा। १६६ दृष्टान्त पृष्ठ ५५६ मूल्य १॥)

स्वर्गकी सुन्दरियां—ईश्वरकृपासे अब हमारे देशमें कन्याओंकी शिक्षा बढ़ती जाती है और जवान उमरकी स्त्रियोंमें भी पढ़नेका शौक बढ़ताजाता है। इससे स्त्री उपयोगी पुस्तकोंकी अच्छी मांग होने लगी है। उन्नतिके अभिलाषी सज्जन यह चाहते है कि हमारी माताओंको, पत्नियोंको, लड़कियोंको, बहनोंको, सम्बन्धिनोंको तथा पड़ोसिनोंको ऊंचे दरजेकी स्त्रीउपयोगी पुस्तकें पढ़नेको मिलें। इससे स्त्री-उपयोगी पुस्तकोंकी ओर विद्वानोंका ध्यान गया है और कुछ कुछ ऐसी पुस्तकें निकलती जाती हैं यह बड़ी खुशीकी बात है। कुछ वर्ष पहले स्त्रीउपयोगी पुस्तकें बहुत कम मिलती थीं अब अधिकतासे मिलने लगी हैं यह एक प्रकारके सन्तोषकी बात है। तथापि अभी इस विषयमें हमारे देशमें बहुत कुछ करनेको है। क्योंकि आजकल भी स्त्रीउपयोगी पुस्तकें बहुत थोड़ी हैं और उनमें भी जमानेके अनुसार ऊंचीसे ऊंची भावनाएं बहुत थोड़ी हैं, हमारी घर गृहस्थीमें रोजमर्रा काम आनेयोग्य कुंजियां बहुत थोड़ी हैं और हम इस समय किस स्थानपर हैं तथा हमें किस स्थानपर पहुंचना चाहिये इसको खूबसूरतीसे समझानेवाली पुस्तकें भी थोड़ी हैं। इन तीन विषयोंपर लक्ष्य

रखकर "स्वर्गकी सुन्दरियां" नामक पुस्तक रची गयी है। इसमें जमानेके अनुसार नये नये तथा ऊंचे ऊंचे विचार है। इस बातका विशेष ध्यान रखागया है कि इन नये तथा ऊचे विचारोंसे हमारे यहांकी आजकलकी अज्ञान स्त्रियां भड़क न जायं। इसके सिवा ऐसी सीधी सीधी युक्तियां बतायी है कि वे इन विचारोंको पचा सकें और थोड़ा बहुत भी अपने जीवनमें दिखा सकें। स्त्रियोंके समझने योग्य बहुत सहज भाषा रखी है पृष्ठ ६०० मूल्य २)

मिलने का पता—

प्रबन्धकर्ता स्वर्गमाला।

गहमर (गाजीपुर)

ईश्वरस्तुति ।

(१)

शरणागत पाल कृपाल प्रभो ! हमको एक आश तुम्हारी है ।
तुमरे सम दूसर और कोऊ नहिं, दीननको हितकारी है ॥
सुधि लेत सदा सब जीवनकी, अतिही करुना विस्तारी है ।
प्रतिपाल करै बिनही बदले, अस कौन पिता महतारी है ॥
जब नाथ दया करि देखत हो, छुटिजात बिथा संसारी है ।
बिसराय तुम्हें सुख चाहत जो, अस कौन नदान अनारी है ॥
परवाह तिन्हें नहिं स्वर्गहुकी, जिनको तव कीरति प्यारी है ।
धनि है, धनि है सुखदायक जो, तव प्रेमसुधा अधिकारी है ॥
सब भांति समर्थ सहायक हो, तव आश्रित बुद्धि हमारी है ।
" परताप नरायन" तो तुम्हरे पदपंकजपै बलिहारी है ॥

(२)

पितु मातु सहायक स्वामि सखा, तुमही एक नाथ हमारे हो ।
जिनके कछु और अधार नहीं, तिनके तुमही रखवारे हो ॥
प्रतिपाल करो सगरे जगको, अतिशै करुना उर धारे हो ।
भुलिहैं हमही तुमको तुमतो, हमरी सुधि नाहिं बिसारे हो ॥
उपकारनको कछु अंत नहीं, छिनही छिन जो विसतारे हो ।
महराज, महा महिमा तुमरी, समुझे बिरले बुधवारे हो ॥
शुभ शान्तिनिकेतन प्रेमनिधे, मनमंदिरके उजियारे हो ।
एहि जीवन के तुम जीवन हो, इन प्राननके तुम प्यारे हो ॥
तुम सों प्रभु पाय " प्रताप हरी, केहिके अब और सहारे हो ।

प्रतापनारायण मिश्र

निवेदन ।

स्वर्गमाला द्वारा पण्डित अमृतलाल सुन्दरजी पढ़ियार रचित दो ग्रंथोंका हिन्दी अनुवाद प्रकाशित हो चुका। पहला "स्वर्गके रत्न" और दूसरा "स्वर्गकी सुन्दरियां"। आज तीसरे ग्रंथका अनुवाद हिन्दी पाठकोंके सामने रखा जाता है। इसका नाम स्वर्गकी सड़क है। "स्वर्गके रत्न" की तरह यह भी भक्ति मार्गकी पुस्तक है। इसमें भी भक्ति और ज्ञानकी बातें प्रेम पगे शब्दोंमें समझायी गयी हैं। अनुभवी पढ़ियारजीमें पुराने विषयको नये फैशनसे कहनेकी जो शक्ति है; देशकालके अनुसार धर्मका रहस्य समझानेकी जो विद्वत्ता है; हंसाते खेलाते मनुष्य-स्वभावकी भारी भारी भूलें और उनका कुफल आँखों के सामने खड़ा करदेनेकी जो कारीगरी है; मनमोहनी शैलीपर सुधारके सुन्दर सुन्दर प्रभावशाली उपदेश देनेकी जो पटुता है और प्रेमकी धारासे पाठकोंका हृदय सींचकर सद्गुणोंके बीज लहलहा देनेकी जो खास खूबी है उसका परिचय इस पुस्तकमें भी पदपद पर मिलता है। आशा है कि पाठक इसे भी अपनावेंगे।

गहमर } महावीरप्रसाद गहमरी।
तिलसंक्रान्ति १९७२ }

ग्रंथकार लिखित

पुस्तकका परिचय।

यह स्वर्गकी सड़क किसके लिये है ?

परमकृपालु परमात्माकी कृपासे लोकप्रिय बने हुए स्वर्गके भिन्न भिन्न ग्रंथ भिन्न भिन्न अधिकारियोंके लिये लिखे गये हैं। जैसे—बेसाधनकी स्थितिसे तथा अनेक प्रकारकी मानसिक और सांसारिक कठिनाइयोंसे आगे बढ़नेकी युक्ति समझानेके लिये " संसारमें स्वर्ग " लिखा है। जमानेके अनुसार नये विचारोंको विकसित करना तथा परमार्थकी भावनाओंको अमलमें लाना भली भांति समझानेके लिये " सच्चा स्वर्ग " लिखा है। जिन्दगी सुधारनेमें काम आनेवाले हिन्दूधर्मके उत्तम सिद्धान्त समझानेके लिये तथा श्रीमद्भगवद्गीताका रहस्य बतानेके लिये " स्वर्गकी सीढ़ी " लिखी है। स्त्रियोंमें जो स्त्रीत्व है उसकी महत्ता समझाने तथा पतिप्रेम बढ़ानेके लिये प्रेमिली स्त्रियोंके निमित्त " स्त्रियोंका स्वर्ग " लिखा है। हमारी बहनें अपने घरमें रहकर अपने भाई बहनोंकी जरूरत लायक पारमार्थिक काम कर सकें तथा अपना जीवन सुधार कर हृदयका सन्तोष पासकें इसके लिये " स्वर्गकी सुन्दरियां " नामक पुस्तक लिखी है। उमगमें आये हुए अपने

जवान भाइयोंको शांत रखनेके लिये, उनका कर्त्तव्य समझानेके लिये तथा उन्हें नये युगकी नयी भक्ति बतानेके लिये "स्वर्गके रत्न" नामक ग्रंथ लिखा है। इसके सिवा सत्संगमण्डलीमें एक महात्माके कहे हुए चमत्कार और प्रभावशाली दृष्टन्तोंसे स्वर्गके दूसरे चार ग्रंथ लिखे हैं। पहला ग्रंथ "स्वर्गका विमान" है, उसमें प्रभुका प्रेम जगानेके लिये सब लोगोंके रुचने योग्य छोटे छोटे कीमती दृष्टान्त है। वह पुस्तक लोगोंको भक्तिमार्गमें लगानेके लिये है। इसके बाद भक्तिकी दूसरी पुस्तक "स्वर्गकी कुञ्जी" है; उसमें भक्तोंका लक्षण, भक्तोंका कर्त्तव्य और ईश्वरकी महिमा तथा ईश्वरकी कृपा वर्णित है। यह पुस्तक प्रभु प्रेममें जरा और आगे बढ़े हुए हरिजनोंके लिये है। इसके बाद भक्तिमार्गकी तीसरी पुस्तक "स्वर्गका खजाना" है। इसमें धर्मसम्बन्धी अनेक विषयोंका खुलासा है। यह पुस्तक धर्मके तथा भक्तिके भेद समझनेकी इच्छा रखनेवाले हरिजनोंके लिये है। इस प्रकार अलग अलग अधिकारियोंके लिये अलग अलग उद्देश्यसे स्वर्गकी अलग अलग पुस्तकें लिखी हैं। उसी तरह यह "स्वर्गकी सड़क" भी एक प्रकारके खास भक्तोंके लिये है। वे भक्त कौन है? जो काशी, प्रयाग, मथुरा वृंदावन, हरिद्वार, द्वारका, पंचवटी आदि तीर्थस्थानोंमें अपनी अपनी मण्डली लेकर घूमा करते हैं, ताल मृदंग बजाया करते हैं, स्मरण कीर्त्तन किया करते हैं, नाचते हैं, कूदते हैं और प्रभुका पवित्र नाम स्मरण किया करते

हैं तथा प्रभुप्रेमके कारण जिन्होंने अपना बहुत कुछ स्वार्थत्याग किया है उन भावुक भोले और पवित्र प्रभुप्रेमी भक्तोंकी सेवाके लिये यह स्वर्गकी सडक नामक पुस्तक लिखी है। इससे इस पुस्तकके दृष्टान्त मन्दिरोंमें बेधडक कहे और पढ़े जा-सकते हैं। परन्तु कहीं कहीं हमने इसमें जमानेके अनुसार स्वाधीन विचार भी भरे हैं। इस कारण इन दृष्टान्तोंमें कोई कडा चाबुक सा लगे तो उसे मेरे प्रेमकी कड़वी मौताद समझना।

खास श्रेणीके भक्तोंके लिये ही यह पुस्तक लिखी है इससे अगर सब लोगोंको इस पुस्तककी सब बातें न रुचें तो कुछ आश्चर्य नहीं है। क्योंकि जानबूझ कर प्रभुप्रेमी भक्तोंके लिये ही यह पुस्तक लिखी है। हमारा विश्वास है कि जिन हरिजनोंके लिये यह पुस्तक लिखी है उन्हें अतिशय उपयोगी होगी इसमें कुछ सन्देह नहीं है। अगर ऐसे भक्तोंको यह कीमती लगेगी तो हम अपना परिश्रम सफल समझेंगे।

स्वर्गकी सड़क नाम रखनेका क्या कारण है ?

स्वर्गकी सड़क नाम रखनेका कारण यह है कि इस पुस्तकमें जो जो विषय आये हैं वे सब स्वर्गका सीधा रास्ता बतानेवाले हैं। जैसे—भजन करनेमें चित्त लगानेका उपाय, किनारे पहुँचे हुए वृद्ध जनोंका धर्म, संसारी जनोंको सिखावन, हरिजनोंका कर्त्तव्य, दुःखसे कातर न होनेके लिये सलाह, हरिजनोंकी मरते समयकी शान्ति, बीमारीसे लाभ, सन्तोषसे रहना आनंदर गरीबीमें भी मिलनेवाला

सुख, अर्पणविधिकी युक्तियां, बाहरकी तथा भीतरकी भक्तिका खुलासा, ईश्वरकी महिमाकी बातें, पापसे बचनेका उपाय, भीतरकी तथा बाहरकी पवित्रताका वर्णन और जगतकी रचना तथा अपने हृदय और परमकृपालु परमात्मासे आनन्द लेनेका उपाय तथा हरिजनोंके काम आनेवाले दूसरे कितने ही विषय इस पुस्तकमें आये हैं। इससे हम इसे स्वर्गकी सड़क समझते हैं।

भक्तिमार्गकी पुस्तकोंमें नये नये रूप और जुदे जुदे दृष्टान्तोंमें वारंवार वहीकी वही बातें कहनी पड़ती हैं।

कितने आदमी हमसे यह कहते हैं कि तुम्हारी पुस्तकोंमें एक ही विषय वारंवार आता है। इसमे पुनरुक्ति दोष होता है। इसके उत्तरमें हमें कहना चाहिये कि भक्तिमार्गकी पुस्तकोंमें तो नये नये रूपमें और जुदे जुदे दृष्टान्तोंमें वारंवार वहीकी वही बातें कहनी ही पड़ेंगी। क्योंकि जबतक वे बातें वारंवार लोगोंके कानोंमें नहीं पड़ेंगी तबतक संसारी लोग शीघ्र उन्हें ग्रहण नहीं कर सकेंगे। इसके लिये महात्मा कपिल मुनिने सांख्य शास्त्रके चौथे अध्यायके एक सूत्रमें कहा है—

आवृत्तिरस कृदुपदेशात्।

इस सूत्रमें भगवान् कपिलदेवने यह समझाया है कि "उपदेशको वारंवार दुहराना।" अर्थात् जो उपदेश मिला हो उसको फिर फिर कर याद करना, फिर फिर कर उसी उपदेशकी भावना

रखना और फिर फिर कर वही उपदेश सुनना तथा करना'। शास्त्रका यह सिद्धान्त है। इससे भक्तिमार्गके ग्रंथोंमें वहीकी वही बात नये नये रूप और नये नये दृष्टान्तोंमें वारंवार आवे तो कुछ आश्चर्य नहीं है। और यह पुनरुक्ति दोष नहीं कहलाता। विशेष प्रकारके साहित्य ग्रंथोंमें एक बातको वारंवार कहना पुनरुक्ति दोष भले ही माना जाय परन्तु भक्तिमार्गके ग्रंथोंमें यह नियम नहीं लग सकता। क्योंकि उनमें तो एक ही बात नये नये रूपमें वारंवार कहनी ही पडती है। जैसे—प्रभुपर प्रेम रखनेके विषयमें, धर्मके नियम पालनके विषयमें, सत्संग करनेके विषयमें, पाप त्यागनेके विषयमें और परमार्थके काम करनेके विषयमें वारवार न कहा जाय तो फिर भक्त जमा होकर दूसरी नयी बात क्या कहेंगे? हमारी समझमें नहीं आता। भक्त सदा भगवानकी महिमाकी, भक्तिविषयक अपने अनुभवकी और सन्तोंके परिचयकी बातें करेंगे ही। अगर यह पुनरुक्ति दोष माना जाता हो तो इसमें भी इस प्रकारका पुनरुक्ति दोष है और रहेगा ही। क्योंकि ऐसी पुनरुक्ति स्वाभाविक है।

इस पुस्तकके बाचनेसे लाभ।

जो सज्जन यह स्वर्गकी सड़क नामक पुस्तक पढ़ेंगे उनकी धर्मभावना खिलेगी, उनका ईश्वरीज्ञान बढ़ेगा, उनकी श्रद्धा दृढ़ होगी, ईश्वरकी महिमा उनकी समझमें आवेगी, वे हरिजनोंका धर्म समझेंगे, वे धर्मका बल, धर्मकी जरूरत और धर्मकी खूबी सम-

झेंगे, उनमें नया जीवन आवेगा, उनमें अच्छे काम करनेका बल आवेगा, वे अपने मनको दृढ़ रखना सीखेंगे, उनके चित्तका बहुत कुछ समाधान हो जायगा; वे कितनी बातें अपने स्नेहियोंको समझा सकेंगे और उनमें प्रभुप्रेम जागेगा तथा धर्मका और प्रभुका आकर्षण बढ़ेगा। इतना ही नहीं, वे अपना आचरण सुधारनेकी चेष्टा करेंगे और इसके लिये बल भी इस पुस्तकसे पा सकेंगे। इसके सिवा और बहुत कुछ लाभ यह पुस्तक बाचनेवाले हरिजनोंको हो सकेगा। यह थोड़ी बात नही है। ऐसा असर ही स्वर्गका रास्ता है। इसलिये इस पुस्तकका नाम **स्वर्गकी सड़क** रखा है। जिसे इस सडकपर चलना आवे उसका मनमाना काम हो जाता है; इसमें तानिक सन्देह नहीं है। इसलिये सब भाई बहनोंसे हमारी यह बिनती है कि बारंबार इस पुस्तक को पढ़ना तथा पढ़ानेकी कृपा करना। तब परमकृपालु परमात्मा आपका भला करेंगे।

वैद्य अमृतलाल सुन्दरजी पढ़ियार

बम्बई पुरानी हनुमानगली, सं० १९७० महाशिवरात्रि, ता० २३ फरवरी १९१४ ईस्वी।



स्वर्गकी सड़क।

१—बहुतेरे आदमी संसारकी बहुतेरी बातें जानते हैं, परन्तु प्रभुसम्बन्धी कोई बात नहीं जानते ।

एक सेठ था। उसकी सराफोंसे दोस्ती थी, व्यापारियोंसे दोस्ती थी, कारखानेवालोंसे दोस्ती थी, मोटरवालोसे दोस्ती थी, अमलोंसे दोस्ती थी, फेन्सी माल बेचनेवालोसे दोस्ती थी, फलवालों तथा फूलवालोसे जानपहचान थी, बड़े बड़े हाकिमोंसे मुलाकात बात थी, घोड़ा हाथी बेचनेवालोसे परिचय था, घुड़दौड़वालोंसे परिचय था, जहाजवालोंसे जानपहचान थी, रेलवेके आदमियोसे दोस्ती थी, डाक और तार विभाग-वालोसे अच्छी जानपहचान थी, विलायतके अढ़तियोंसे जानपहचान थी, बड़े बड़े आदमियोंसे मुलाकात बात थी, बढ़िया सिलाई करनेवाले दरजियोसे दोस्ती थी, गाड़ी मरम्मत करनेवालों तथा बेचनेवालोसे दोस्ती थी, बिजली की रोशनी तथा पंखा लगा देनेवालोसे परिचय था, मकान बिकवा और खरीदवा या भाड़े दिलवा देनेवाले दलालोंसे जानपहचान थी, कम्पनी कागज और सोने चांदीके दलालोंसे दोस्ती थी और मौज शौकके नये नये उपाय निकालनेवाले आदमियोंसे मित्रता थी। इन सबसे वह बहुत मिलता जुलता और बेधड़क बातचीत करता था। सिर्फ अपने बापसे नहीं बोलता था। उसे बापके साथ बातचीत करना नहीं आता था; यहां तक कि वह अपने

बापसे बातचीत करनेमें शरमाता था। अब विचार कीजिये कि जो लड़का बापसे बात नहीं करता उसपर बापको क्योंकर स्नेह होगा? धन बापका दिया हुआ खाय, मौज शौक बापकी कृपासे करे और फिर भी बापसे बात तक न करे! यह कौन-सी रीति है? भला कहिये तो!

भाइयो! उस सेठकी तरह हमलोग भी दुनियादारीकी बातोंमें बड़े पक्के हैं और दूसरोंके साथ जरूरतसे ज्यादा बातें करते हैं; परन्तु अपने सर्वशक्तिमान् परमकृपालु पिता परमात्मासे किसी दिन जी खोल कर बात नहीं करते। हमलोग उसकी कृपासे हर तरहका आराम पाते हैं; उसीकी कृपासे जीते हैं, उसीकी कृपासे तन्दुरुस्त रहते हैं, उसीकी कृपासे धन दौलत पाते हैं और उसीकी कृपासे सौ तरहके सुख भोगते हैं; तो भी अदल दिलसे कभी उसके साथ बातचीत नहीं करते; बातचीत करनेका नियम भी नहीं जानते। परन्तु यह विषय विशेष रूपसे जानने योग्य है। सन्त लोग कहते हैं कि प्रभुसे बातचीत करनेके माने हैं जी खोलकर प्रेमपूर्वक उसकी प्रार्थना करना; प्रभुसे बातचीत करनेके माने हैं प्रभुको अपने सामने बैठा जानकर उसकी महिमा बखानना; प्रभुसे बातचीत करनेके माने हैं हृदयकी उमंगसे उसका यश गाना और उसका नाम प्रेमपूर्वक स्मरण करना; प्रभुसे बातचीत करनेके माने हैं प्रभुको प्रेम स्वरूप समझकर उसमें तल्लीन होनेके लिये हृदयसे प्रेमको जगानेवाली गद्गद वाणीकी लहरें निकालना; प्रभुसे बातचीत करनेके माने हैं उसके महान् गुण याद कर करके चित्तसे प्रसन्न होना और प्रभुसे बातचीत करनेके माने हैं उसके नामकी धुन मचाकर उसमें तदाकार हो जाना। ऐसी अवस्थाको हम परमात्मासे बात-

चीत करना कहते हैं। ऐसी स्थिति होनेके बाद ही प्रभुकी महान कृपा होती है। और उसके बाद ही सच्चा कल्याण होता है। इसलिये भाइयो! जैसे जगतके बहुत आदमियोंसे तथा बहुतेरी वस्तुओंसे आपको बातचीत करना आता है वैसे अनंत ब्रह्माण्डके नाथसे बातचीत करना सीखिये। परमकृपालु पितासे बातचीत करना सीखिये और उससे परिचय रखिये। यही हमारी प्रार्थना है।

२—बाहरसे भक्त होना सबको आता है, परन्तु भीतर से भक्त होना कठिन है।

तिलक करना, भस्म लगाना, माला पहनना, मूंड़ मुंडाना और कपड़ा रंगाना एकदिनमें हो सकता है परन्तु हृदयमें जमा हुआ पाप छोड़ने और प्रभुमय होनेमें बहुत दिन लगते है। याद रहे कि भक्तिके बाहरी चिन्ह धारण करनेसे ही कोई भक्त नहीं हो जाता, जब भीतरके पापका नाश होता है और सर्वशक्तिमान महान परमात्माका पूर्ण प्रेम हृदयमें आजाता है तभी आदमी सच्चा भक्त हो सकता है। इसलिये भक्तिके बाहरी चिन्हका धारण करना आजानेसे ही खुश मत हो जाना, बल्कि हृदयसे भक्त बननेका यत्न करना।

कितने आदमी यह समझते है कि जो परमार्थके बड़े बड़े काम करे वही भक्त कहलाता है। जैसे—कुआ खुदवावे, तालाब बनवावे, धर्मशाला उठवावे, सदावर्त चलावे, मंदिर बनवावे और इसी प्रकारके दूसरे काम करे तभी आदमी भक्त कहलाता है। सन्त लोग कहते हैं कि अवश्य इस प्रकारके काम

करना बहुत अच्छी बात है लेकिन ऐसा काम करनेसे ही कुछ सच्ची भक्ति नहीं हो सकती। संयोगवश ऐसे काम होजाना और बात है और "ताला कुंजी प्रेमकी" लगी हुई सच्ची भक्ति और बात है। दूसरे यह भी याद रखना चाहिये कि इस प्रकारके परमार्थके काम करनेका सुबीता सब भक्तोंको नहीं है; ऐसे काम किसी किसी आदमीसे ही हो सकते हैं, कुछ सबसे नहीं हो सकते। इसलिये यह नियम नहीं बांधा जा सकता कि जो भारी काम करे वही सच्चा भक्त कहलाय। तो प्रश्न यह है कि हृदयसे भक्त किसको समझना? इसके उत्तरमें भक्त कहते हैं कि जो सच्चा भक्त होता है, जो "ताला कुंजी प्रेम की" लगा हुआ भक्त होता है, जो प्रभुप्रेमी भक्त होता है और जो प्रभुप्रेममें शराबोर भक्त होता है उसके हर रोजके कामोंमें विशेषता होती है। वह नहाते समय भी भक्त होता है, खाते समय भी भक्त होता है, बाजारमें रोजगार धंधा करते समय भी भक्त होता है, हित मित्रोंके साथ बर्ताव करनेमें भी भक्त होता है, बीमारी आजानेपर भी भक्त रहता है, नुकसान होजाने पर भी भक्त रहता है और कुछ अधिक काम हो जानेपर भी वह भक्त ही रहता है। अर्थात् इन सब प्रसङ्गोंमें तथा सब जगह जो सच्चे भक्त होते हैं, वे शान्ति रख सकते हैं, आनन्द में रह सकते हैं और अच्छे बुरे सबपर प्रेम रख सकते हैं। इतना ही नहीं, क्षमा, दया भलमनसत, पवित्रता, आदि अनेक प्रकारके महान सद्गुण उनमें खिले हुए होते हैं। इस प्रकार जिनके हृदयमें विशेषता आजाती है उनको हम हृदयसे भक्त कहते हैं। इसलिये भाइयो और बहनो! कोरी बाहरी भक्तिमें मत रहजाना, इस प्रकार हृदयसे भक्त बनना।

३-दूसरोंसे अपनी सेवा करानेमें असली बड़प्पन नहीं है, स्वयं दूसरोंकी सेवा करनेमें ही असली बड़प्पन है।

इस जगतमें जो बड़े आदमी है और बहुत लोग जिनकी सेवा करते हैं वे आदमी बड़े कैसे हुए है यह आपको मालूम है? दूसरोंसे अपनी सेवा कराके वे बड़े नहीं हुए, वरंच दूसरोंकी सेवा करके ही वे बड़े आदमी हुए है।

जो जातिका मुखिया होता है उस सरदारका हुक्म सब जातिवाले मानते हैं और लोग उसकी बड़ी इज्जत करते हैं तथा हर काममें उसको अगुआ रखते हैं और उसको बारंबार आदर मिलनेका मौका आता है। यह सब देख कर कितने आदमी समझते हैं कि यह मुखिया दूसरे बिरादरोंसे अपनी सेवा कराता है, परन्तु असलमें वैसा नहीं है। जातिके मुखियाको जो इज्जत मिलती है उसके लिये वह कितने ही गरीब बिरादरोंकी पहले सेवा किये रहता है और पीछे भी समय आनेपर अपने भाइयोंकी सेवाके काम किया ही करता है।

वह अपना अनमोल समय नष्ट कर बिरादरीकी भलाईमें लगा रहता है। विरुद्ध पक्षके लोग उसके नाम पर तरह तरहके कलंक लगाते हैं उन सबको वह बरदाश्त करता है। अपनी मिहनतकी कमाई जातिके कल्याणके काममें खर्च करता है और गरीब विद्यार्थियों तथा अनाथ बुढ़ियोंकी खोज खबर लेता है तथा ब्याह शादीमें उलझन पड़ जानेपर उसे सुलझाता है। यह सब करनेमें उसका कितना समय जाता है, कितना पैसा लगता है, कितनी मिहनत पड़ती है और कितनी बुद्धि उसमें खर्चनी पड़ती है इसका ख्याल आपने किया है? अगर इन सब बातोंपर

विचार करें तो जरूर यह समझमें आजाय कि जातिके सरदारने जातिकी जो सेवा की है उसीके बदलेमें उसकी इज्जत होती है और उसीके बदलेमें उसकी सेवा होती है।

इसी प्रकार जब किसी समर्थ गुरुका आदर मान होता है, उसके चरणोंमें लक्ष्मी आती है, लाखों आदमी दण्डवत् करते हैं और उसके ऊपर फूलोंकी वर्षा होती है तो यह देख कर कितने आदमी सोचते है कि यह गुरु लोगोंसे अपनी बड़ी सेवा कराता है। परन्तु भाइयो! इस दरजेपर पहुंचनेसे पहले इसने धर्मके कैसे कैसे कड़े नियम पाले होंगे, शास्त्रका गहरा अभ्यास करनेके लिये उसने कितना बड़ा परिश्रम किया होगा, अपने हजारों चेलोंको सुमार्ग दिखानेके लिये उसे कितनी युक्तियां रचनी पड़ी होंगी और अपने मनको इतना सुधारनेके लिये उसे कितना मानसिक युद्ध करना पड़ा होगा तथा अपने शिष्योंके कल्याणमें उसकी जिन्दगीका कितना बड़ा भाग खर्च हुआ होगा इन सब बातोंका ख्याल आपने किसी दिन किया है? अगर यह सब देखिये तो तुरत ही आपकी समझमें आजाय कि लोग उसकी जितनी सेवा करते हैं उससे कहो अधिक सेवा वह लोगोंकी करता है। उसे जो आदर सम्मान तथा दान मिलता है वह कुछ सेवा करानेसे नहीं, बल्कि दूसरोंकी सेवा करनेसे ही मिलता है; इसमें कुछ भी सन्देह नहीं है। बिना ऐसी योग्यताके भी कितने ही गुरु बहुत कुछ आदर प्रतिष्ठा पाजाते हैं, यह बात दूसरी है। परन्तु असल बात यही है कि जो बड़े गुरु हैं और जो प्रभुके कृपापात्र गुरु हैं वे सेवा करके ही प्रसन्न होते हैं और सेवा करनेसे ही बड़े होते हैं। क्योंकि सेवा करनेमें ही असली खूबी और असली बड़प्पन है इसका उन्हें पूरा पूरा अनुभव रहता है, इससे वे सेवाको ही मुख्य मानते हैं।

अब प्रभुकी ओर देखिये । वह अपने भक्तोंका कितना अधिक ख्याल रखता है, भक्तोंको संकटके समय किस तरह अचानक मदद करता है, भक्तोंको ज्ञान देनेके लिये कैसा सुवीता कर देता है और जीवोंके कल्याणके लिये प्रभुके हृदयमें कितनी बड़ी कृपा है यह आप जानते हैं ? उसके आगे उस सेवाके बदले हम क्या कर सकते है ? जरा कहिये तो ! हमारे फल फूल, हमारी मेवा मिश्री और वाणीविलासका गुणगान क्या प्रभुकी सेवाका बदला देने योग्य है ? नहीं । तोभी प्रभुकी ऐसी छोटी छोटी सेवा होते देख कर कितने ही कहते है कि प्रभु भी सेवा कराता है । परन्तु भाइयो ! सच बात यह है कि प्रभु जितनी सेवा कराता है उससे अनन्तगुनी सेवा वह करता है । इसीसे वह प्रभु कहलाता है ।-जो आदमी दूसरोंकी सेवा करते हैं वे ही जगतमें बड़े हो सके है हो सकते हैं और हो सकेंगे इसलिये अगर सच्चे भक्त होना हो तो सेवा करानेकी इच्छा मत रखिये, बल्कि आप जिस तरह बन सके उस तरह सेवा करनेकी इच्छा रखिये और जितनी हो सके उतनी सेवा कीजिये। अच्छी तरह याद रखिये कि असली बड़प्पन सेवा करानेमें नहीं सेवा करनेमें ही है । इसलिये सेवा करना सीखिये। सेवा करना सीखिये ।

बहुधा कितने ही भक्तोंकी प्रार्थना पूरी नहीं होती ; इसका कारण ।

कितने ही समय कितनी ही जगह ऐसा होता है कि बेचा

भक्त तड़पते रहते है और फिर भी कितनी ही चीजें उन्हें समय पर नहीं मिलतीं। जब उनकी इच्छा होती है तब नहीं मिलतीं और कितनों हीको ऐसा लगता है कि उनकी प्रार्थनाएं व्यर्थ जाती हैं। इससे सकाम भक्त निराश हो जाते है और कितने ही अकलके पूरे यह देख कर भक्तोंकी दिल्लगी उड़ाते हैं। इसलिये हरिजनो को जानलेना चाहिये कि कुछ प्रार्थनाएं किस कारण से सफल नहीं होतीं। कारण जानलेने से प्रार्थना सफल न होनेपर भी एक प्रकारका बल रहता है। इस विषयमें सन्त कहते है कि—

कोई बाप बहुत नेक हो, मायालु हो, दयालु हो, समृद्धिमान हो और अपने पुत्रको बहुत चाहता हो तोभी वह अपने छोटे लड़केको कभी कभी मिठाई खानेको नहीं देता। यद्यपि छोटे लड़केको मिठाई बहुत रुचती है और वह बार बार मिठाई मांगता है परन्तु मिठाई खाने से नुकसान होता है इसका ख्याल उस बालकको नहीं होता। उसका बाप समझता है कि मिठाई खानेसे बालककी जठराग्नि मन्द होती है और उसका शरीर बिगड़ता है। इससे चतुर बाप नादान लड़केको उसकी इच्छानुसार मिठाई खाने नहीं देता। इसी तरह परमदयालु परमात्मा अपार सामर्थ्यवाला है, अनन्त-समृद्धिवाला है और दयाका सागर है; तोभी वह अपने भक्तोंको उनकी इच्छानुसार हर एक चीज नहीं देता। क्योंकि अगर भक्तोंकी सब इच्छाएं ठीक ठीक पूरी हों तो वे फूल जाते है और उनमें अभिमान आजाता है; इससे उनकी खराबी होती है। ऐसा न होने देनेके लिये, जैसे नेक पिता अपने प्यारे लडकेको बार बार मिठाई खाने नहीं देता वैसे, सर्वशक्तिमान महान ईश्वर अपने अज्ञान भक्तोंकी हर एक इच्छा ठीक ठीक पूरी नहीं

करता। क्योंकि जो सकाम भक्त होते हैं उनकी इच्छामें कुछ स्वार्थ होता है, उनकी इच्छामें अभिमान होता है, उनकी इच्छा श्रेयकी अपेक्षा प्रेमकी तरफ अधिक झुकती है और उनकी इच्छा उन्हें भले ही अच्छी लगती हो परन्तु प्रभुकी नजरमें बेजरूरतकी या नुकसान करनेवाली होती है ; इससे उनकी इच्छाको प्रभु पूर्ण नहीं करता । ऐसी इच्छा पूरी करनेसे आगे जाकर भक्तोंकी उल्टे खराबी होती है । उस खराबीसे बचानेके लिये दयालु प्रभु भक्तोंकी कितनी ही इच्छाएं पूरी नहीं करता । इसलिये भाइयो ! जब आपकी प्रार्थनाएं पूरी न हों तब दिलगीर न हो कर यही सोचना कि हमारी मांग हमारा कल्याण करनेवाली नहीं है अथवा उसे पानेलायक योग्यता अभी हममें नहीं है, इसीसे हमारी प्रार्थना सफल होनेमें देर लगती है । यह समझ कर प्रार्थना सफल न हो तोभी अपने ऊपर ईश्वरकी कृपा जानना और उसका उपकार मानना । क्योंकि वह भविष्यकी किसी बड़ी खराबीसे आपको बचा लेता है । जब प्रार्थना पूरी न हो तोभी ईश्वरका उपकार मानना सीखिये, यही हमारी सलाह है । जब मनचाही न हो तब प्रभु मनसोचीसे कुछ बढ़ कर देना चाहता है यह समझ कर सदा सन्तोष और शान्तिसे रहना ।

—इस संसारका सुख सपनेके ऐसा है, इस स्वप्नसुखके लिये ईश्वरी आनन्दके सुखको लात मत मारना ।

एक गरीब आदमी था । उसकी जीविकाका कोई उपाय

न था और वह शरीरसे बीमार रहता था इससे कोई रोजगार धंधा उससे नहीं हो सकता था। एक धर्मार्थ खातेसे हर महीने दस रुपये उसे मिलते थे। उससे वह अपना गुजारा करता था। एक दिन वह गरीब आदमी सबेरेके पहर सोया था। उसे सपना आया कि लाख रुपये मिलगये। वह सोचने लगा कि मैं बड़ा अमीर हो गया हूं। अब मैं धमार्थका पैसा क्यों खाऊं? अब तो इस लाख रुपयेसे बहुत कुछ मौज शौक हो सकेगा। अब एक अच्छा बंगला लेना होगा। सोचने लगा कि बंगला कहांपर लिया जाय। फिर वह हिसाब लगाने लगा कि उसमें फरनीचर किस रीतिसे सजाया जाय, नौकर चाकर कितने रक्खे जायं और उनसे क्या क्या काम कराया जाय तथा उनसे किस रोबके साथ बर्ताव किया जाय। इसकी कल्पना करने लगा। इतना ही नहीं, बाइसिकल, मोटर, पसंस, चश्मा, अखबार, खिताब, जुलूस, नाचपार्टी, नाटकशाला आदि बहुत बहुत बातोंका विचार करने लगा। परन्तु इन सबके विचारसे अधिक जरूरी काम उसे यह लगा कि पहले रुपयेको हाथमें कर लूं। वह रुपये गिनने लगा और हजार हजारके नोटोंका बंडल बना कर अलग धरने लगा और गिनियोंकी थैली खोलने लगा। इतनेमें बाहरसे दरवाजा खुला और धर्मार्थ खातेके नौकरने आ कर कहा कि यह लो अपने दस रुपये, तब उस गरीब आदमीने आधे सपने और आधी नींदमें-जवाब दिया कि अब मुझे तुम्हारे रुपयेकी जरूरत नहीं है, मेरे पास बहुत रुपये आगये हैं इसलिये अब मेरा नाम इस खातेसे निकाल दो। मैं अब सेठ बनगया हूं। यह देखो रुपयेका ढेर लगा है। तुम सवेरे आना तो तुम्हें भी कुछ इनाम दूंगा अभी फुर्सत नहीं है। नींदमें ऐसा जवाब देदिया इससे वह आदमी चला गया और उसने जाकर

धर्मार्थ खातेके मनेजरसे कहा कि यह आदमी रुपये लेनेसे इन-कार करता है और कहता है कि मेरे पास बहुत धन आगया है इसलिये मेरा नाम काट दो। मनेजरने उसका नाम काट दिया और वह रकम किसी और गरीब आदमी को दे दी।

इसके बाद जब गरीबराम सपनेसे जागे तब सोचने लगे कि आज पहली तारीख हो जानेपर भी अभीतक धर्मार्थ खातेका आदमी क्यों नहीं आया? रसोईवालेका देना है, दूधवालेका देना है, भाड़ेवालेका भी आज ही का वादा है। अबतक रुपया क्यों नहीं आया? शायद आज किसी काममें आदमी फंस गया होगा यह सोचकर उसने वह दिन राह देखनेमें बिता दिया। दूसरी तारीख भी दस रुपयेकी राह देखनेमें बितायी परन्तु रुपया नहीं आया। तीसरी तारीख भी इसी तरह निराशामें बीती। तब वह गरीब आदमी बहुत दिलगीर हुआ और सुस्त पड़गया। चौथी तारीखको वह धर्मार्थ खातेके आफिसमें पूछने गया और कहा कि आपके यहां यह कैसा अंधेर है? आज चार दिन हो गये मुझे रुपया क्यों नहीं मिला? धर्मार्थ खातेके मनेजरने कहा कि पहली तारीखको सबेरे सात बजे हमारा आदमी तुम्हें रुपया देने गया था परन्तु तुमने लेनेसे इनकार कर दिया और कहा कि मेरे पास बहुत रुपये आगये हैं अब मुझे रुपयेकी जरूरत नहीं है इसलिये मेरा नाम काट देना। मैंने तुम्हारा नाम काट दिया और तुम्हें जो रुपया मिलता था वह किसी दूसरे गरीब को दे दिया।

यह सुनकर वह गरीब आदमी बड़ा चकित हुआ। फिर उसे याद आया कि मुझे लाख रुपये मिलनेका सपना हुआ था इससे मैंने नींदमें ही इनकार कर दिया होगा। अब क्या हो? धर्मार्थखातेके मनेजरने कहा कि अब इस समय कुछ नहीं हो

सकता। कमी जगह खाली होगी तो कुछ होगा। यह सुन कर वह गरीब आदमी बहुत दुखी हुआ। सपनेके धनके भरोसे रह कर सच्चा धन-काम आनेवाला धन, नकद रुपया उसने गंवा दिया था इससे वह बहुत पछताने लगा।

यह दृष्टान्त दे कर एक भक्तराज महाराज हरिजनोंको समझाते कि भाइयो। इस संसारका सुख उस गरीब आदमीके सपनेके ऐसा है। और भक्तिका जो सुख है, धर्मका जो सुख है, अपना कर्तव्य पालनेका जो सुख है और प्रभुप्रेमका जो सुख है वह सच्चे सुखके ऐसा है। इस सच्चे सुखको संसारके सपने समान मायिक सुखके लिये हम खो देते हैं। फल यह होता है कि संसारका सुख भी नहीं मिलता। इस प्रकार सपनेके सुखके भरोसे रहनेसे आदमी दोनोंसे हाथ धोता है। ऐसी भूलसे सम्हलना और भक्तिके आनन्दका सच्चा सुख भोगनेका उपाय करना यही हमारी सलाह है।



६—प्रभुका नाम स्मरण करनेसे लाभ।

एक सन्तसे किसी नास्तिकने पूछा कि तुम राम राम जपते हो इससे तुमको क्या लाभ होता है? तुमने किसी दिन रामको देखा है? सन्तने कहा कि तुमने खट्टापन देखा है? मिठास देखी है? खारापन देखा है? कड़वापन देखा है? कहो कि नहीं? ये सब आंखसे नहीं दिखाई देते और न दूसरोंको दिखाये जा सकते, परन्तु स्वाद लिया जाता है और दूसरोंको भी चखाया जाता है। इसी तरह हमने भगवानको नजरसे नहीं देखा है, परन्तु जब हम उसका नाम स्मरण करते हैं और

उसका गुण गाते है तब हमारे हृदयको बड़ा ही आनन्द होता है। अजी, इस नामकी महिमा क्या बतावें ! हमारे प्रभुके पवित्र नामका जब स्मरण होता है तब हमारे अन्दर अनेक प्रकारके सद्गुण आजाते है। मनको संतोष, तृप्ति और उत्तम प्रकारका ढारस मिल जाता है। इसके बाद शुभ विचार हुआ करते हैं और सद्बुद्धि खिलती जाती है। इसके सिवा कभी कभी अनसोची सहायता मिल जाती है, मनकी शंकायें मिट जाती हैं, उलझन सुलझ जाती है और अनेक प्रकारकी उचित इच्छायें आपसे आप पूरी होती जाती हैं। यह सब नामस्मरणसे होता है, इसका प्रत्यक्ष अनुभव हम करते हैं। परन्तु तुम भजन करनेसे जितना समझ सकोगे उतना यह सब वर्णन सुननेसे नहीं समझ सकोगे। इसलिये हम तुम्हें सलाह देते हैं कि अगर हमारी तरह आनन्द लूटना हो और हृदयका कूड़ा ककेंट निकाल कर फूल समान हलका बने फिरना हो तो जैसे हम प्रभुका नाम स्मरण करते हैं वैसे तुम भी सर्वशक्तिमान परमात्माका पवित्र नाम स्मरण किया करो। तब तुमको भी यह सब लाभ सहजमें मिलने लगेगा। बातोंसे कुछ नहीं मिलता। यह स्वाद तो "जो चक्खे सो याद रक्खे" और यह स्वाद चखनेके लिए राम-नाम स्मरण करना पड़ता है। इसलिये व्यर्थके वादविवादमें न पड़े रह कर भक्तोंके साथ मिल जाओ और उनके साथ प्रभुका गुण गाने लगो तथा नाम स्मरण करने लगो। तब स्मरणकी खूबी समझ जाओगे। इस में तनिक सन्देह नहीं है।

७—ईश्वरको बाहरसे मानना और बात है और भीतरसे मानना और बात है; इसका खुलासा ।

भगवानकी कथा सुनना, उसके भजन गाना, दर्शन करने जाना, तीर्थ करना, माला पहनना, तिलक लगाना अपनी अपनी सम्प्रदायके रिवाजके अनुसार कपड़ा पहनना, भस्म रमाना जटा रखना या मूंड मुड़ाना, दाढी रखना, नख बढ़ाना, दण्ड रखना, आग रखना, या आगसे दूर रहना, लाल पीला हरा या नीला वस्त्र पहनना और कितने ही तरहके व्रत करना यह भगवानको बाहरसे मानना कहलाता है।

अब हृदयसे प्रभुको माननेवाले भक्तोंका लक्षण जानना चाहिये। इसके लिये सन्त कहते हैं कि प्रभुको हृदयसे माननेवाले जो भक्त होते हैं उनका पुराना स्वभाव बदल जाता है, पुरानी टेव बदल जाती है और पुराने पाप छूट जाते हैं। इतना ही नहीं, उनमें अतिशय प्रेम आजाता है, उनमें दया बढ़ जाती है, उनकी क्षमा देखने योग्य होती है, वे सत्यपर चलनेवाले होते हैं, वे अपनी इन्द्रियोंपर अधिकार रख सकते हैं, वे अपने मनमें उठनेवाले विकारो तथा संकल्प विकल्पोंको रोक सकते हैं, वे महात्माओंके कदम ब कदम चल सकते हैं, वे शास्त्रके सिद्धान्तोंको पूर्ण श्रद्धासे मानते हैं और उनके हृदयमें एक प्रकारका आनन्द तथा सन्तोष आजाता है। ऐसी स्थिति जिस भक्तकी हो समझना कि वह भक्त हृदयसे प्रभुको भजता है।

बाहरसे प्रभुको भजनेवाले और हृदयसे प्रभुको भजनेवाले भक्तोंमें मुख्य भेद यह होता है कि पहली श्रेणीके भक्त

अपनी शुभ इच्छाओंके अनुसार वर्तते है इससे वे व्यवहारके तथा परमार्थके कितने ही अच्छे अच्छे काम करते हैं परन्तु उन शुभ कामोंके करनेमें उनकी इच्छा ही मुख्य होती है। अपनी इच्छाके वशमें हो कर ही वे चलते हैं । जो दूसरी श्रेणी के अर्थात् हृदयसे प्रभुको भजनेवाले भक्त है। वे अपनी इच्छापर जोर नहीं देते, केवल प्रभुकी इच्छापर ही रहते हैं। वे अपनी लगाम प्रभुको सौंपे रहते है और प्रभु जैसे रक्खे वैसे रह कर प्रसन्न होते हैं।

बाहरसे प्रभुको भजनेवाले जो भक्त हैं वे कोई अड़चल आ पड़नेपर निराश हो जाते है और उनकी भक्ति ढीली पड़ जाती है। जो भक्त हृदयसे प्रभुको भजनेवाले हैं वे सदा आनन्दमें रहते हैं । बाहरकी अड़चलोंसे उनकी भक्ति ढीली नहीं पड़ती और न उनके हृदयका आनन्द जाता। छोटी छोटी अड़चलें तो क्या अगर उनका सर्वस्व भी चला जाय तो वे यही समझते है कि हमारा प्रभु तो हममें है और वह रहे तो यही सबसे बड़ी बात है । यह जान कर हजार नुकसान होनेपर भी वे आनन्द में रह सकते है।

जो बाहरसे प्रभुको भजनेवाले है उनको समय समयपर देश कालका धक्का लगा करता है। कभी आसपासके संयोगोंका असर होता है, कभी प्रारब्धके कारण कुछ सरस नरस हो जाता है और कभी प्राकृतिक दुर्घटनाओंके कारण अड़चलें आजाती हैं। ऐसे समय बाहरसे प्रभुको भजनेवाले भक्तोंको बड़ा धक्का लग जाता है। बाहरसे भजनेवाले भक्त ऊपरसे पानी भरे हौजके समान है और हृदयसे भजनेवाले भक्त मूरवाले कुंएके समान हैं। अधिक उलीचनेसे हौजका पानी घट जाता है और चुक जाता है परन्तु गहरी मूरवाले कुंए का पानी नहीं चुकता।

इसी तरह जो बाहरसे भजनेवाले भक्त हैं उन्हें बाहरकी अड़चलें बाधा डालती हैं परन्तु जो हृदयसे प्रभुको भजनेवाले हैं उनपर इसका बहुत असर नहीं पड़ता।

प्रभुको हृदयसे भजते हैं या बाहरसे यह समझनेकी एक सहज रीति है। अपना हृदय टटोल कर देखे कि हमारे व्यवहारमें और हमारे स्वभावमें कुछ प्रपंच है कि नहीं? हमारे मनमें किसी प्रकारके विकारकी कोंपल फूटती है या नहीं? और हमसे किसी तरहका पाप होता है कि नहीं? इन बातोका विचार करना। अगर ऐसा लगे कि अभी इन सब विषयोंमें जैसी चाहिये वैसी सफाई नहीं है तो यह समझ लेना कि प्रभु अभी हमसे बाहर है। अभी प्रभु हमारे हृदयमें नहीं पधारा है। हृदयमें प्रभुके पधारनेपर पाप नहीं ठहर सकता।

जब राजा आनेको होता है तो पहले उसके सिपाही और कर्मचारी आने लगते हैं। वैसे हृदयमें प्रभुके पधारनेकी सबसे बड़ी एक निशानी है। वह यहकि

जिस भक्तके हृदयमें प्रभु पधारता है उसके भीतर प्रभुके गुण आजाते है। सद्गुण प्रभुके मुसाहिब हैं। इससे प्रभुके साथ उसके गुण आजाते हैं। दया, क्षमा, शान्ति, पवित्रता, उदारता, धीरज, सत्य, ब्रह्मचर्य, सह लेना और सदा सब दशामें आनंदसे रहना आदि गुण आजाते है। जब ये गुण आजायं तब समझना कि हृदयमें प्रभु पधारा है और भीतरसे प्रभुको भजना आता है।

बन्धुओ! जिस भक्तके हृदयमें प्रभु पधारता है वह भक्त उसी समय कुछ सबसे बड़ा विद्वान या समर्थ धनवान नहीं हो जाता, परन्तु जिसके हृदयमें प्रभु पधारता है वह भक्त सबकी इज्जत करनेवाला होजाता है, सबके ऊपर प्रेम रखनेवाला होजाता है, बुराई करनेवालेको भी माफ करनेवाला हो जाता है, बिना

सबका हो जाता है, सब के साथ निबाह ले जानेवाला हो जाता है, सबका कल्याण चाहनेवाला हो जाता है और सदा आनन्दमें रहनेवाला बन जाता है। जो सिर्फ बाहरसे प्रभुको भजनेवाले हैं उनमें ये सब गुण नहीं होते। इसलिये भाइयो! बाहरकी भक्तिके आडम्बरमें ही मत रह जाना। हृदयसे भजनेवाला भक्त बननेकी कोशिश करना। हृदयसे भजनेवाला भक्त बननेकी कोशिश करना।

८—मन्दिरोंमें देवताका दर्शन करने जानेकी जरूरत।

अमीरोंके मन बहलानेके कितनेही साधन होते है। जैसे–नाच तमाशा, नाटक गानेके जलसे, सर्कस, फेन्सीफेयर, जिमखाने, क्लब, घुड़दौड़, कसरत, चायपार्टी, प्रदर्शनी, क्रिकेटमैच और सफरके सुबीते आदि। परन्तु गरीबोंको ऐसा कोई साधन नहीं होता, क्योंकि गरीबीके कारण वे ऐसी बातोंमें पैसा नहीं खर्च सकते और उनको इतना समय भी नहीं मिलता। इससे ऐसा खर्चीला मौज शौक उनसे नहीं होता। तोभी साधारण मनुष्योंका यह स्वभाव है कि उन्हें कुछ बाहरी आनन्द चाहिये। ऐसा आनन्द न मिले तो वे सुस्त पड़जाते है और उन्हें अपनी जिन्दगी दूभर लगती है। ऐसा न हो और गरीब आदमियोंको सदा आनन्द मिल सके इसके लिये धर्ममन्दिरोंकी जरूरत है। धर्ममन्दिरोंमें सुन्दर मूर्त्तियां होती है, फूल चन्दन तथा धूपकी सुगन्ध होती है, भिन्न भिन्न उत्सवोंपर नये नये ढङ्गके सुन्दर दृश्य होते हैं, गहनों तथा बढ़िया बढ़िया कपड़ोंका ठाटबाट होता है, माहात्माओंके चित्र होते है, नये नये ढंगके हिंडोले, पारन, अन्नकूट तथा दीपावली होती है। विद्वान कथा बांचते हैं,

उस्ताद गवैये ताल सुरसे प्रभुके गुण गाते हैं तथा सितार, मृदंग, झांझ आदि बजाते हैं, कितने ही भाग्यवान सज्जन वहां भीख मांगने आये हुए गरीबोंको दान देते हैं, छोटे बड़े सब दरजेके लोग सजधज कर मन्दिरोंमें दर्शन तथा प्रार्थना करने जाते हैं। इससे वहां मेलेके ऐसा सुन्दर दृश्य बना रहता है। यह सब देख कर तथा उन सबकी प्रार्थनाओंका अच्छा असर वहां जमा होनेसे मन्दिरोंमें पवित्र प्रभाव फैला रहता है। इस पवित्र प्रभाव से तथा वहांके सदाके आनन्दसे धर्ममन्दिरोंमें उत्तम प्रकारका वायुमण्डल फैला रहता है। दुनियासे ऊबे हुए मनुष्योंकी ऊब मन्दिरोंमें दर्शन या प्रार्थना करने जानेसे मिट जाती है। वहां दुखिया अपना दुःख भूल जाते हैं, रोगियोंका रोग घट जाता है, निराश हुए आदमियोंको नयी आशा हो जाती है, निर्बलोंमें बल आजाता है, दरिद्री अपनी दरिद्रता भूल जाते हैं, बूढ़ोंमें नया उत्साह आ जाता है, शोकमें पड़े हुए अपना शोक भूल जाते हैं, पापी अपना अपराध स्वीकार कर अपने पापकी माफी मांगने लगते हैं, अमीर अपनी अमीरी को अलग रख देता है, हाकिम अपने अधिकारका मद भुलादेता है, वहां ऊधमी भी अदबमें आजाते हैं, जो बहुत भावुक नहीं हैं उनके मनमें भी उस जगह भाव आजाता है। कंजूस भी वहां थोड़ी देरके लिये अपनी कंजूसी घटा कर पैसा खर्चने लगते हैं और उस जगह अज्ञानियोंमें भी आपसे आप स्वाभाविक तौरपर कुछ न कुछ गुण आजाता है। मन्दिरोंमें पवित्र असर फैला रहता है, उसके बलसे हमारी समझमें न आने योग्य अचानक रूपसे आपसे आप हर एक जनको उसकी प्रकृतिके अनुसार कुछ न कुछ फायदा हुआ करता है। इसलिये हमें अपने भीतरके प्रभुप्रेमको पुष्ट करनेके लिये और बाहरकी भक्ति करनेके लिये मन्दिरोंमें दर्शन तथा प्रार्थना करने

ज़रूर जाना चाहिये। गरीब धनी, मूर्ख विद्वान, प्रजा और राजाके लिये मन्दिर शान्तिका स्थान है और उसमें भी रोजगारके कारण दिनभर एक ही जगह बैठे रहनेवाले सुनार, दरजी, कारखानोंके मजदूर, कम फुरसतवाले नौकर, घरसे कुढ़े हुए बूढ़े, दुकानदार, किसान इत्यादि गरीबश्रेणीके लोगों तथा बहुत करके हमेशा घरमें रहनेवाली स्त्रियोंको भगवानका मन्दिर एक आशीर्वाद समान है, क्योंकि वहां जाकर प्रेमपूर्वक प्रभुकी प्रार्थना करनेसे हृदयका बोझ हलका होता है, घड़ीभरके लिये सब दुःख भूल जाता है और गरीबीके कारण अपने घर नसीब न होने योग्य देखने, सुनने, जानने, सीखने तथा अनुभव करनेकी सामग्री मन्दिरोंमें मिलती है, इससे उनको बहुत लाभ और बहुत आनन्द होता है। इसके सिवा प्रभुके मन्दिरमें जानेसे यह भी लाभ होता है कि वहां धनवान और निर्धन, विद्वान और मूर्ख, मालिक और नौकर, राजा और रंक तथा स्त्री और पुरुष सब एक ही दरवाजेसे आते जाते हैं एक ही जगह बैठते हैं, एक ही किसमकी क्रिया करते हैं और एक ही प्रकारका ज्ञान सुनते हैं तथा सब साथ मिलकर प्रभुके गुण गाते और दर्शन करते हैं। इससे उनमें एकता बढ़ती है, भाईचारा बढ़ता है और वे परस्पर मदद करना सीखते हैं। इतना ही नहीं गन्दे आदमी भी मन्दिरोंमें आकर सफाई रखना सीखते हैं, विना शिष्टाचारके आदमी दूसरोंकी देखादेखी शिष्टाचार सीखते हैं, हलकी चालके मनुष्य अच्छा चालचलन सीखते हैं, गंवार अदब सीखते हैं, बातूनी चुप रहना सीखते हैं, प्रेमीजन भजन सीखते हैं। किसीके काम न आनेवाले मनुष्य भी कुछ सेवा करना सीखते हैं और जिनको ईश्वरसम्बन्धी कुछ ज्ञान नहीं होता वे अगड़बम भी रोजके सत्संगसे धीरे धीरे कुछ

भगवानका ज्ञान पाजाते हैं। इसलिये सब भाई बहनोंको दर्शन तथा प्रार्थना करनेके लिये भगवानके पवित्र मन्दिरमें जानेका नियम रखना चाहिये।

९–हम किसलिये जन्मे हैं? हम सब ईश्वरके लिये जन्मे हैं, इसलिये हमें ईश्वरके निमित्त जीना चाहिये।

याद रखना कि हम सिर्फ खाने पीनेके लिये, पहनने ओढ़नेके लिये और मौज शौक करनेके लिये उत्पन्न नहीं हुए हैं। इसी तरह नौकरी करने, व्यापार करने, लड़ाई करने, खेती करने, खान खोदने, वकालत करने या किस्म किस्मकी शिल्पकला सीखनेके लिये ही हम नहीं जन्मे हैं। इस जगतमें अच्छी रीतिसे व्यवहार चलाने तथा अपना कर्तव्य पालनेके लिये संयोग वश ये सब काम करने पड़ें तो यह जुदी बात है और ऐसा करना कुछ बुरा नहीं है, परन्तु इस तरहके काम करनेके लिये ही हम इस जगतमें पैदा नहीं हुए हैं; वरंच परम कृपालु परमात्माको पहचाननेके लिये, उसके गुण गानेके लिये तथा उसकी सेवा करनेके लिये हम इस जगतमें जन्मे हैं। प्रभुकी सेवा करना, प्रभुका प्रेम बढ़ाना, प्रभुकी महिमा समझना और प्रभुको पहचाननेकी कोशिश करना ही हमारा मुख्यकाम है। गुज़ारेके उपायके लिये दुनियाके व्यवहारी काम करना उसके पेटे छोटीसी बात है। इसलिये सच्चे हरिजनोंको छोटी बातोंपर बहुत जोर नहीं देना चाहिये, वरंच जिस मुख्य विषयके लिये जन्म हुआ उसी विषयपर विशेष जोर देना चाहिये। वह मुख्य विषय है ईश्वरकी

महिमा समझना और उसे पहचानना । ऐसा करनेके लिये हमें पहलेके महान भक्तोंकी तरह अपना चरित्र सुधारना चाहिये, अतिशय दयालु होना चाहिये, सब जीवोंपर ईश्वरके लिये प्रेम रखना चाहिये, उदार विचार रखना चाहिये, ऊंचे दिलका होना चाहिये, दूसरे लोगोंका दोष माफ करना चाहिये और हृदयमें शान्ति रखना सीखना चाहिये । इन सबकी सबसे उत्तम कुंजी यह है कि पूर्ण प्रेमसे सर्वशक्तिमान महान प्रभुके गुण गावे और सदा यह समझे कि हम कुछ इस जगतकी झूठी मौज शौक बढ़ानेके लिये ही नहीं आये हैं बल्कि अपनी आत्माके कल्याणके लिये और अपने पवित्र पिता परमात्माको रिझानेके लिये ही जन्मे हैं । इसलिये उनकी सेवाके काम करना ही हमारा मुख्य कर्तव्य है । यह समझ कर ऐसा करना चाहिये जिससे भक्ति बढ़े तथा अपना चरित्र सुधरे । अगर इस सिद्धान्तपर चला जाय तो ईश्वरकृपासे बहुत थोड़े समयके भीतर जीवन बदल जाता है । इसलिये यह भावना रखना सीखिये कि ईश्वरके लिये ही हमारा जन्म हुआ है ।

१०—ईश्वरी ज्ञानकी महिमा ।

बहुत आदमियोंको धर्मका ज्ञान प्राप्त करनेकी इच्छा होती है और ईश्वरसम्बन्धी ऊंची ऊंची बातें जाननेकी जिज्ञासा होती है; परन्तु उनके पास इसके लिये पूरा साधन नहीं होता । इस विषयमें उनका सच्चा हौसला भी नहीं होता । सिर्फ कभी कभी ऐसी बातें जाननेकी इच्छा होती है । इतनेमें कोई पड़ोसी या मित्र कहता है कि ईश्वरी ज्ञानका पार नहीं पाया जा सकता और

इसमें अपनी चोंच डूबनेकी नहीं। थोड़ा बहुत समझें भी तो इससे बहुत फायदा नहीं होता और हम तो उपाधिमें पड़े है यह सब समझनेका समय कहां? यह तो उसका काम है जिसके पास खूब पैसा हो और जिसको बहुत समय मिलता हो। ऐसे अमीर और निठल्ले आदमी अथवा त्यागी बने हुए साधु इन बातोंपर जोर डाला करें और धर्मकी बातें किया करें तो उनको शोभा देता है, हमसे कुछ नहीं हो सकता। कुछ थोड़ा बहुत जानें भी तो उससे विशेष लाभ नहीं होता। यह समझ कर बहुतेरे आदमी भगवानका ज्ञान प्राप्त करनेके बारेमें लापरवा रहते हैं। परन्तु हरिजन कहते हैं कि—

भगवानका ज्ञान प्राप्त करनेके विषयमें लापरवाही रखना बड़ा ही खराब है। प्रभुका ज्ञान बहुत थोड़ा मिलता हो तोभी वह व्यर्थ नहीं जाता। सूर्यका उजाला बहुत थोड़ा हो तोभी उससे रास्ता सूझता है और थोड़े उजाले में भी बहुत तरहके काम हो सकते हैं। इसी तरह ईश्वरी ज्ञान थोड़ा हो तोभी उससे बहुत लाभ हो सकता है और जिन्दगीको चलानेका रास्ता दिखाई देता है। इसलिये ईश्वरी ज्ञान को छोटा मत समझना। यह थोड़ा मिले तोभी ले लेना। ईश्वरी ज्ञान क्या है यह आपको मालूम है? इसके लिये महात्मा लोग कहते हैं कि—

ईश्वरी ज्ञान जिन्दगी सुधारनेकी कुंजी है; ईश्वरी ज्ञान मायाके अन्धकारमें प्रकाशरूप है; ईश्वरी ज्ञान ईश्वरी रास्तेमें लानेकी सीढ़ी है; ईश्वरी ज्ञान पापसे बचानेवाला गुरु है; ईश्वरी ज्ञान आत्माकी अमरता देनेवाला कल्पवृक्ष है; ईश्वरी ज्ञान प्रभुप्रेमका मूल है; ईश्वरी ज्ञान भक्तिकी नींव है; ईश्वरी ज्ञान जगतके सब ज्ञानसे उत्तम है और ईश्वरी ज्ञानमें ईश्वरका प्रकाश है। ऐसे ज्ञानसे भक्तोंको लाभ होना आश्चर्यकी बात

नहीं है इसलिये भाइयो ! धर्मका ज्ञान, नीतिका ज्ञान, भक्तिका ज्ञान, ईश्वरका ज्ञान थोड़ा मिले तोभी उसे लेनेकी कोशिश करना और इस बातका ख्याल रखना कि प्रभुका ज्ञान लेनेका कोई मौका व्यर्थ न जाय। अगर जरा जरा भी भगवानका ज्ञान लिया करेंगे तो आगे जा कर महान भक्त हो सकेंगे। इसलिये प्रभुका ज्ञान प्राप्त कीजिये। प्रभुका ज्ञान प्राप्त कीजिये।

११—संसारी भक्तोंका सच्चा धर्म।

अपनी आत्माके कल्याणके लिये परम कृपालु परमात्माका नाम स्मरण करना, उसके वचनों का पाठ करना, उसके किये हुए कौल याद रखना, उसमें प्रेम आने के लिये मन्दिरोंमें जाना, नाचना, गाना, अपनी अपनी सम्प्रदायके अनुसार माला तिलक आदि धारण करना इत्यादि बहुत जरूरी हैं। इसलिये हर एक भक्तको ये सब नियम पालने चाहियें। परन्तु याद रहे कि इतना ही करनेसे पूरा पूरा धर्मपालन नहीं कहलाता। क्योंकि धर्ममें सिर्फ यही एक विषय नहीं है; उसमें मुख्य तीन विषय हैं—

(१) आत्माके प्रतिकर्तव्य, (२) बुद्धिके प्रतिकर्तव्य और (३) शरीरके प्रतिकर्तव्य।

ये तीन काम जब ठीक तौरसे कियेजायं तभी असली धर्मपालन कहलाता है। परन्तु धर्मके इन तीन अंगोंको बिना समझे ही हमारे देशके बहुतेरे आदमी अपनी रुचिके अनुसार किसी एक अंगमें ही रह जाते हैं और बाकी दो अंगोंसे लापरवाही दिखाते हैं जैसे—

वार वार नहाने धोने दिनभर पूजा पाठ करने, घंटों स्मरण करने, वार वार दर्शन करने, माला तिलकमें खूब ध्यान रखने, मन्दिरोंमें धन देने, सत्सङ्गकी मण्डलियोमें पड़े रहने, उपवास करने, तीर्थोंमें घूमने, भजन करने या सुननेके लिये रतजगा करने, तरह तरहके व्रत करने, कितने ही तरहके नियम पालने और इसी तरह आत्माके कल्याणके ओर कितने ही विषयोमें कितने ही भक्त बहुत ध्यान देते हैं परन्तु दूसरी ओर अपनी बुद्धिको चमकाने तथा शरीरको तन्दुरुस्त रखनेके विषयमें लापरवा रहते हैं। इससे उनका धर्म अधूरा रह जाता है। जबतक शरीर अच्छा न रहे तबतक आत्माका ठीक ठीक कल्याण नहीं साधा जा सकता। इसलिये आत्माके कल्याणके कामोके साथ शरीर सुधारने तथा बुद्धि बढ़ानेके काम भी करना चाहिये।

आजकलके जमानेमें कितने ही नौजवान कालेजकी डिग्रियां हासिल करने और बुद्धि बढ़ानेमें ही अपनी शक्तियोका उपयोग करते हैं, इससे वे बुद्धिमें दूसरोसे बहुत आगे बढ़ जाते है परन्तु आत्माके कल्याणके बारेमें लापरवा होते है और उनका शरीर देखनेसे तो दया आती है। इसीसे कहा जाता है कि—

मेट्रिक मांदा रातदिन, बी. ए. का वेहाल, एम. ए. मरनेके निकट यह विद्याका हाल।

बुद्धि बढ़ाना परन्तु शरीरका यह हाल होने देना और आत्माके कल्याणके बारेमे कोरे रहना क्या उचित है? और क्या इसीका नाम धर्म है?

अब उनका हाल देखिये जो सिर्फ शरीरको हट्टा कट्टा बनाये रखनेके ऊपर ध्यान देते है और बुद्धि बढ़ाने तथा आत्माके कल्याणपर ध्यान नहीं देते। मथुराके चौबे तथा उत्तर-हिन्दुस्थानके कितने ही जवान अपने शरीरका बल बढ़ानेपर

विशेष ध्यान देते हैं। इसके लिये खूब कसरत करते हैं, अखाड़ोंमें कुश्ती लड़ते हैं, खूब खानेके लिये बहुत भंग पीते हैं और दिनभर खाने पीनेकी ही बातें किया करते हैं। यजमानोंसे वारंवार माल उड़ाने और चकाचक करानेकी ही फरमाइश किया करते हैं। इतना ही नहीं वे इस विषयपर इतना अधिक ध्यान देते हैं कि उनकी जठराग्नि तथा उनकी कसरत देख कर लोगोंको आश्चर्य होता है। वे पांच सात आदमियोंकी खुराक अकेले खा जाते हैं और हमारे जैसे आदमी एक महीनेमें भी जितनी कसरत नहीं कर सकते उतनी कसरत वे एक दिनमें कर सकते हैं। दोसौ दण्ड पेलना और एक हजार बैठकी करना उनके लिये खेलवाड़ सा है। इतना अधिक शरीरका बल होनेपर भी वे बुद्धिके बलमें शून्य रहते हैं और आत्माके कल्याणके विषयमें तो दूरसे ही नमस्कार करने योग्य होते हैं।

भाइयो! एक मकानमें तीन कमरे हों और उनमें से एक ही कमरेमें जरूरतसे ज्यादा सामान भर दें और बाकी दो कमरोंको शून्य रखें तो वह मकान शोभा नहीं देता। इसी तरह शरीर बुद्धि और जीवात्मा ये तीन धर्मके दरवाजे हैं, ये तीन धर्मके भण्डार हैं, ये तीन धर्म प्राप्त करनेके साधन हैं और ये तीन सत्य धर्मके खास अंग हैं। इसलिये सच्चा धर्म पालना हो तो शरीरको सम्हालना चाहिये, मनको सुधारना चाहिये और आत्माके कल्याणके विषयोंका ध्यान रखना चाहिये। जब ये तीनों विषय ठीक तौरपर पाले जायं तभी असली धर्म पाला जा सकता है। नहीं तो धर्म अधूरा रह जाता है और अधूरा धर्म पूरा पूरा फल नहीं दे सकता। ऐसे अधूरे धर्ममें क्यो रहें? इसलिये भाइयो और बहनो! धर्मके सब अंगोमें यथाउचित ध्यान दीजिये। तब प्रभु-कृपासे सच्चा, ऊंचा और पूरा धर्म पाल सकेंगे।

१२—हरिजन मरते समय भी आनन्दसे रह सकते हैं।

इस जगतमें जो अनेक प्रकारके दुःख है उनमें मौत सबसे बड़ा दुःख है। क्योंकि मौतके समय शरीरकी स्थिति पराधीन होती है; मौतके समय मन घबराहटमें होता है और मौतके समय जीव बेचैन रहता है। इससे बहुत आदमियोंको मरनेके समय बहुत दुःख होता है। इस प्रकार शरीर तथा मनकी खराब हालतके कारण मौतके समय मनको दुःख होता है, इतना ही नहीं वरंच इस जगतसे अपना जो सम्बन्ध है, सगे कुटुम्बियोसे अपना जो सम्बन्ध है और अपनी मानी हुई चीजोंसे अपना जो सम्बन्ध है उससे तथा अपने करनेके कितने ही काम बाकी रह जानेसे आदमीको मरना नहीं रुचता। इससे मरनेके समय बहुतेरे जीवोंको बहुत दुःख होता है। परन्तु जो सच्चे हरिजन होते है, जो सच्चे सन्त होते हैं, जो महान भक्त होते हैं और जो वस्तु स्थितिको समझे हुए तथा प्रभुके आनन्दमें लवलीन रहनेवाले ज्ञानी महात्मा हैं उन्हें मौतके समय भी दुःख नहीं होता। ऐसे प्रभुप्रेमियोंको तो मौतके समय उल्टे बहुत आनन्द होता है। वे सोचते हैं कि—

जो लड़का परदेशमें खूब कमा कर समय आने पर अपने बापके घर, बापके पास जाता है उसे क्या रंज होता है? नहीं। उस समय तो उसे अतिशय आनन्द होता है और यह इच्छा रहती है कैसे झटपट बाबूजीके पास पहुंच जाऊं। क्योंकि वह परदेशमें रह कर खूब कमाई किये रहता है, उस कमाईके कारण उसके चित्तमें एक प्रकारका आत्मिक सन्तोष होता है और दूसरी ओरसे बापके खुश होनेका आनन्द तथा बापके इनामका आनन्द उसके हृदयमें उछला करता है। इससे परदेशसे घर जाते समय कमाऊ लड़केकी उमंग कुछ और ही ढंगकी होती है और उसका

आनन्द भी कुछ अलौकिक ही होता है। इसी तरह जब भक्त इस दुनियामें अपना कर्तव्य ठीक ठीक पालन करके प्रभुका हुक्म आने तथा प्रारब्धका भोग पूरा हो जानेपर ईश्वरके हजूर जाते हैं तो उस मौतके समय—यह स्थिति बदलनेके समय—और इस जगतके दुःखभरे जंजालको हमेशाके लिये आखिरी रामराम करनेके समय वे अतिशय आनन्दमें रहते हैं। उनका यह आनन्द कैसा होता है यह आपको मालूम है? इसके लिये सन्त कहते हैं कि

किसी देहातके रहनेवाले गरीब आदमीकी लड़कीसे किसी बड़े अमीरकी शादी होती है तो उस समय उस लड़कीको जैसा आनन्द होता है उससे भी अधिक आनन्द परम कृपालु परमात्मासे जुड़े हुए महान भक्तोंको अपने मरनेके समय होता है। क्योंकि वे अपने मौतके दिनको अपने ब्याहका दिन समझते हैं। उनके जीमें यह भरोसा रहता है कि अब प्रभुसे हमारा ब्याह होगा अर्थात् हम प्रभुसे जुड़ जायंगे, प्रभुके हजूर पहुंच जायंगे और प्रभुके प्यारे बन जायंगे, इस भरोसेसे वे मरनेके समय उल्टे विशेष आनन्दमें रहते हैं। विचारिये कि देहातकी गरीब लड़कीके लिये कहां गोबरकी खांची उठाना और कहां मोटरगाड़ीमें बैठ कर सैर करना? कहां गाय भैंसका गोबर मूत उठाना तथा झाड़ू देना और कहां इत्र गुलाबकी सुगंधमें डूबे रहना तथा फूलके सेजपर सोना? कहां छोटी छोटी लड़कियोंके साथ कंकड़ पत्थर लेकर खेलना और कहां बाबुआइनजी बाबुआइनजी कहलाना और हीरे मोती तथा नोटोंके बंडलोंके साथ खेलना? कहां भाभी, काकी आदिका मेहना ओठर सुनना और कहां करोड़पतिकी बहू हो कर उसके घरकी मालकिन बन बैठना और मनमानी करना कितना अन्तर है? इसी तरह सच्चे भक्त सोचते हैं कि कहां इस जगतकी उपाधियां और कहां प्रभुका

आनन्द ? कहां व्यवहारका प्रपच और कहां ईश्वरी शान्ति ? कहां इस जगतकी छोटी छोटी घडीभरकी रम्मत गम्मत तथा मौज शौक और कहां ईश्वरके मोक्षधामका अपार वैभव ? कहां इस देहके रोग और कहां आत्माका अमरत्व ? कहां भिन्न भिन्न स्वभावके मनुष्योंका प्रसन्न रखना तथा उनकी कृपा पानेको मिहनत करना और कहां दयाके सागर, कृपाके भंडार भक्तवत्सल अनन्त ब्रह्माण्डके नाथकी कृपामें उसके चरणोंमें पड़े रहना ? ऐसा आनन्द देनेवाली मृत्यु है यह सोच कर सच्चे भक्त मौतके समय भी महा आनन्दमें रहते है और यह समझ कर अपार हर्ष पाते हैं कि जिसको धन्यभाग्यका दिन समझते थे वह दिन आज आपहुंचा है, इससे बढ़ कर आनन्दकी बात और क्या है ?

भाइयो ! जब किसी बड़े अमीरको आनन्द लूटनेके लिये, हवा खानेके लिये या तन्दुरुस्ती सुधारनेके लिये सुहावने स्थानमें जाना होता है तब वह पहलेसे अपनी जरूरतका सब तरहका सामान वहां भेज देता है। जैसे — रसोइया, नौकर, फल, गाड़ी घोड़ा आदि। इससे जब वह वहां जाता है तब वह सब तरहके आरामका बन्दोवस्त पहलेसे किया हुआ पाता है जिससे उसे किसी तरहकी तकलीफ नहीं उठानी पड़ती वरंच घरसे भी अधिक आराम और सुबीता परदेशमें होता है। इससे वह वहां जानेसे बहुत खुश होता है। इसी तरह याद रखना कि भक्त भी अपना सामान पहलेसे स्वर्गमें भेज दिये रहते हैं, इससे उनके लिये वहां हर तरहकी तय्यारी रहती है और वह भी कामचलाऊ नहीं वरंच बहुत पक्का और बढ़ियासे बढ़िया सुबीता उनके लिये होता है। आप जानते हैं कि वे जिसके घर मेहमानके तौरपर जाते हैं वह कितना बड़ा है और उसका वैभव कैसा महान है ? जो अनन्त ब्रह्माण्डका नाथ अनंत कालसे अनन्त ब्रह्माण्डको निबाहता आता है, जिसने सूर्यको

तेज दिया है, जिसने चन्द्रमाको शीतलता दी है, जिसने ग्रहोंको गति दी है, जिसने बिजलीको प्रकाश दिया है, जो वर्षा करनेवाला है और जो सृष्टिकी उत्पत्ति तथा पालन करनेवाला है उसके घर भक्त मेहमान होते हैं। उसकी साहबी कैसी है जरा ख्याल तो कीजिये। ऐसा आनन्द मरनेके समय होता है इससे मौतके समय जहां संसारी जीव हाय हाय करते हैं वहां भक्त आनन्दके समुद्रमें मग्न होते हैं।

भाइयो! आपको मालूम है कि भक्तोंके लिये मौत क्या है? भक्तोंके लिये मौत इनाम लेनेका दिन है। जैसे—किसी अच्छे नौकरने भारी बादशाहकी बहुत अच्छी सेवा की हो जिससे खुश हो कर बादशाह उसे बड़ा इनाम देनेवाला हो तो उस दिन अपनी कदर होनेके लिये और बादशाहकी कृपाके लिये उस नौकरको जैसा आनन्द होता है उससे भी अधिक आनन्द जब सर्वशक्तिमान परमात्माका इनाम मिलनेको होता है तब—मौतके समय होता है। क्योंकि भक्त यह समझते हैं कि हमने अपनी जिन्दगीभर अपने नाथकी जो सेवा की है उसका बदला मिलनेका अब समय आया है। अपने प्रभुके लिये हमने जो दुःख भोगा है, अपने प्रभुके लिये जो त्याग किया है, अपने प्रभुके लिये जो मनको दबाया है और अपने प्रभुके लिये परमार्थके जो काम किये हैं उन सबका इनाम लेनेका दिन आज आया है। तब इससे बढ़ कर अच्छा दिन और क्या है? इससे बढ़ कर कीमती दिन और क्या है? सचमुच इससे बढ़ कर अच्छा दिन इस जगतमें दूसरा कोई नहीं है, यह सोच कर सच्चे भक्त अपनी मौतके समय बड़े आनन्द में रहते हैं।

भाइयो! मौतके दिन सच्चे भक्तोंकी स्थिति जैसी होती है उसका सच्चा हाल जब हम जानते हैं तब हमारी जिन्दगीमें भी

कुछ नयी रोशनी आजाती है। इसलिये आज जब यह प्रसङ्ग छिड़ा है तब मौतके समयके भक्तोंके आनन्दकी कुछ और उपयोगी और असरकारक बातें जान लीजिये। इसके लिये सन्त कहते हैं कि-

किसी पंछीको जबरदस्ती छोटेसे पींजरेमें बंद कर रखा हो और वह उसमें से निकलनेके लिये छटपटाता हो इतनेमें पींजरेका द्वार खुल जाय और पंछी जोरसे उड़ जाय तो उस समय उसको जैसा आनन्द होता है उससे भी अधिक आनन्द इस जगतके पींजरेसे, मायाके पींजरेसे, जगतके जंजालके पींजरेसे और व्यवहारके चक्रके पींजरेसे भक्तोंकी जीवात्मा जब उड़ जाती है तब उसको बड़ा आनन्द होता है। क्योंकि जो गले हुए भक्त हैं, जो ताली लगे हुए भक्त हैं, जो शराबोर हुए भक्त हैं, जो गद्गद हुए भक्त हैं और जो प्रभुके प्रेममें डूबे हुए भक्त हैं उन्हें इस जगतके खटपट और व्यवहारका प्रपंच एक छोटेसे पींजरेके जैसा लगता है। उस पींजरेमें उनकी आत्मा अट नहीं सकती, इससे उससे छूटनेके लिये अपने हृदयसे छटपटाया करती है और कभी कभी तो इसके लिये उसे बड़ी जबरदस्त उकताहट होती है। क्योंकि पींजरा आखिरको पींजरा ही है। वह सोनेका हो तोभी पींजरा ही है। उस पींजरेमें अनेक प्रकारका सुबीता हो तोभी वह पींजरा ही है। और पींजरा तो एक तरहका कैदखाना है। उसमें पुष्ट जीवात्मा कैसे रह सकती है? कहां जगतके बन्धनका पींजरा और कहां अखण्ड स्वतंत्रतावाला मोक्षधाम? इसलिये भक्त जो पींजरेसे उड़ जाते समय अतिशय प्रसन्न होते हैं इसमें कुछ आश्चर्य नहीं है।

सारांश यह कि कई वर्ष तक काशीमें पढ़ कर बड़ा विद्वान बना हुआ ब्राह्मण जब अपने घरको लौटता है तो उसे जो आनन्द होता है, युद्धमें वीरतासे शत्रुको जीत कर सहीसलामत अपने घर आने

समय क्षत्रिय योद्धाको जो आनन्द होता है और परदेशमें जाकर खूब धन कमा इज्जतके साथ घर लौटते समय व्यापारीको जो आनन्द होता है उससे कहीं बढ़ कर आनन्द भक्तोंको मरते समय होता है। वे अपना कर्तव्य पूरा करके मरते हैं वे अपना धर्मपालन कर मरते हैं और वे अपने हृदयमें भगवदावेश भर कर मरते हैं। इससे मरते समय वे भारी आनन्दमें रह सकते हैं। इसलिये भाइयो! मौत जैसे दुःखदायक प्रसङ्गपर भी अगर असली आनन्द लेना हो तो सच्चे भक्त बनिये। सच्चे भक्त बनिये।



१६- ईश्वरके स्मरण करनेके विषयमें।

सर्वशक्तिमान परम कृपालु सच्चिदानन्द परमात्माका स्मरण करना धर्मका मुख्य कर्तव्य है। क्योंकि प्रभुने कहा है कि "सब यज्ञोंमें जपयज्ञ मै हूं" इससे जगतके सब बड़े भक्तोंने ईश्वरके पवित्र नामका स्मरण किया है। इसलिये हमें भी अपनी जिन्दगी सुधारनेके लिये तथा मोक्ष पानेके लिये ईश्वरके नामका स्मरण करना चाहिये। और इसे लाभदायक रीतिसे करनेके नियम जानना चाहिये। पहला नियम यह है कि - जैसे राजाके सामने बेअदब नहीं बना जाता वैसे ईश्वरका स्मरण करते समय बड़े अदब और इज्जतसे बड़े प्रेमके साथ पूरे आसन पर बैठना चाहिये और फिर ईश्वरकी महिमाका विचार करना चाहिये। जैसे—

हे प्रभु! तुम एक ही हो, सबसे प्रथम हो; तुम विना आदि अन्तके हो, तुम अखंड हो, तुम व्यापक हो, तुम सब प्रकारके

ऐश्वर्यवाले हो, तुम प्राणीमात्रके स्वामी हो, तुम देवताओंको देवत्व देनेवाले हो, तुम योगियोंके ईश्वर हो, इसलिये हे परमकृपालु पवित्र पिता सच्चिदानन्द परमात्मा ! तुम अपने महामंगलकारी पवित्र नामका स्मरण करनेकी सद्बुद्धि हमें दो।

इस प्रकार ईश्वर की महिमा समझ कर तथा इस प्रकार प्रार्थना करके फिर ईश्वरका स्मरण करनेमें मनको लगाना। इससे मन ठहरता है और अच्छी रीतिसे स्मरण होता है। इसलिये स्मरण करते समय पहले ईश्वरके स्वरूपका तथा ईश्वरकी महिमाका विचार करना और वह स्वरूप नजरके सामने रख कर तथा उस महिमामें शराबोर हो कर भजन करने बैठना। इससे बहुत ऊंचे दरजेका शांतिदायक और आनन्ददायक भजन हो सकता है।

दूसरे ईश्वरका नाम जपते समय यह सोचना चाहिये कि भगवान हमारे आगे है, भगवान हमारे पीछे है, भगवान हमारे ऊपर है, भगवान हमारे नीचे है, भगवान हमारे आजुबाजू है, भगवान हमारे अन्दर है, भगवान हमारे बाहर है, भगवान हमारी वाणीमें है, भगवान हमारे मनमें है, हम जो मंत्र जपते हैं उसमें भगवान है, हम जिस जगह बैठे हैं वहां भगवान है और हम जो जप करते हैं उसे भगवान देखता है और सुनता है। क्योंकि वह अन्तर्यामी है। यह सोच कर स्मरण करने बैठे तो आत्माको शान्ति मिलने और ईश्वरके प्रसन्न होने लायक स्मरण हो सकता है। इसलिये स्मरण करते समय मनमें और कोई विचार न आने देना वरंच ईश्वरकी सर्वव्यापकताका विचार करना। इससे हृदयको शान्ति मिलने योग्य उत्तम प्रकारका स्मरण हो सकता है। इसलिये स्मरण करते समय पहले ईश्वरकी सर्वव्यापकताका विचार करना चाहिये।

लोहा जैसे अग्निमें पड़नेसे नरम होता है और अग्निके रंगके ऐसा लाल हो जाता है तथा उसमें गरमी आदि अग्निके गुण आजाते हैं वैसे जो हरिजन भगवानके साथ ऊपर लिखे अनुसार तार लगाते हैं उनका अन्तःकरण शुद्ध होता है, उनका पुराना पाप कट जाता है और दया, शान्ति, प्रेम, परोपकार, ज्ञान, आनन्द आदि ईश्वरके महान गुण उनमें आते जाते हैं। इन गुणोंसे आगे जा कर वह महात्मा बन सकते हैं। जैसे पीपर अधिक घोटनेसे उसकी कीमत बढ़ती जाती है वैसे प्रभुके नामका स्मरण जितना अधिक होता है उतनी ही भक्तकी कीमत बढ़ती जाती है और उसमें भी जो शुभ आचरणके साथ भगवानका स्मरण करता है उसको बहुत बड़ा लाभ होता है। उसको ऐसा लगता है कि—

जबसे मैं परम कृपालु महान परमात्माके मंगलकारी नामका स्मरण करने लगा हूं तबसे मेरे मनमें कुछ अधिक शान्ति रहने लगी है; तबसे मेरे विकार कुछ घटने लगे हैं; तबसे दुनियाके तुच्छ प्रपंचोंसे मेरा ध्यान हटने लगा है; तबसे जरा जरा कड़वा घूंट पीते अर्थात् सहज बातें सह लेते बनता है, तबसे मनमें ऐसा मालूम होने लगा है कि अब ऐसा वैसा काम मुझे शोभा नहीं देता और तबसे मुझे कुछ मानसिक आनन्द होने लगा है। इसके बाद गहरे उतरनेसे अधिक नाम स्मरण करनेसे ऐसा जान पड़ता है कि जबसे मेरे हृदयमें पवित्र पिताका शान्तिदायक नाम जमा तबसे मेरे व्यवहारमें सरलता आती जाती है; तबसे दुनियासे मेरा भाईचारा बढ़ता जाता है; तबसे कितने ही काम मेरी इच्छानुसार होते जाते हैं, तबसे मेरे विचार कुछ ऊंचे रहते हैं और तबसे खाने पीनेका, घूमने फिरनेका, जाति बिरादरीके

आगया है। इसके बाद धीरे धीरे नाम स्मरणका बल बढ़नेसे यह समझमें आता है कि अब मै भक्त बनता जाता हूं; अब मुझसे बुरा काम नहीं हो सकता; अब मै प्रभुके लिये कितने ही तरहका त्याग कर सकता हूं। नाम स्मरणसे इतना बल हृदयमें आजानेके बाद देखनेमें आता है कि किसी चमत्कारिक रीतिसे अपना काम आसानीसे होता जाता है, मैं सदा आनन्दमें रह सकता हूं, बहुत दुःखमें भी मुझे भारी धक्का नहीं लगता और व्यवहारके अटपट जालमें रहनेपर भी परमात्मासे मेरा तार नहीं टूटता, यह सब नाम स्मरणके बलसे थोड़े समयमें आसानीसे हो सकता है।

१४–ईश्वरका स्मरण करनेसे लाभ।

जिस हरिजनको इस प्रकार स्मरण करना आता है उसको पहले समझमें आने योग्य नीचे लिखे फायदे होते हैं।

(१) ईश्वरका स्मरण करनेमें जिसे सच्चा प्रेम हुआ हो वह आदमी व्यर्थ दूसरोंकी पंचायतमें नहीं रहता और ऐसी पंचायत करनेकी आदत भी हो तो छूट जाती है।

(२) स्मरणमें जिसका चित्त लग जाता है उसको नाटक सर्कस, रमत गम्मत और खेल तमाशा तथा दूसरे अजायब देखनेका शौक नहीं रहता। क्योंकि ऐसी चीजोंसे जो आनन्द मिलता है उससे अधिक आनन्द ईश्वर स्मरणमें मिलता है।

(३) जिसे ईश्वर भजनका रंग लग जाता है वह हरिजन अपनी इन्द्रियोंको जहां तहां भटकने नहीं देता, बल्कि उन्हें वशमें रखता है।

(४) जिसके अन्तःकरणमें ईश्वर स्मरणका आनन्द जम जाता है उसे स्त्री, पुत्र, मित्र, कुटुम्ब आदिका मोह घट जाता है। इससे वह ऐसे सम्बन्धोंमें आसक्ति नहीं रखता वरंच उनके बीचमें रहते हुए भी निःस्पृहता रख सकता है।

इसके बाद जब ईश्वर स्मरणका बल बहुल बढ़ जाता है तब उस हरिजनमें और कई प्रकारसे फेरबदल होता है और उसकी रहन सहन तथा आहार विहार बदल जाता है। जैसे—

(१) जैसे मछलीको पानीसे बाहर निकलना नहीं रुचता वैसे आगे बढ़े हुए भक्तोंको ईश्वर स्मरण छोड़ना नहीं रुचता।

(२) कितने ही कीड़े जिस किस्मके पत्ते खाते है उसी रंगके बनजाते है। वैसे ही जिस भक्तका ईश्वरस्मरण बहुत बढ़ जाता है उसमें ईश्वरके गुण आजाते हैं और फिर आगे आ कर वे गुण सबको प्रत्यक्ष दिखाई देते है।

(३) सुन्दर बगीचेमें फिरनेवालेको जैसे मजेकी सुगन्ध मिला करती है वैसे ईश्वरस्मरण करनेवालेको महा आनन्दकी बहार मिला करती है।

(४) जिसे प्रभुभजनकी पूरी पूरी ताली लग जाती है उसको फिर बिना ईश्वरकी सभी चीजें फीकी लगती हैं। क्योंकि ऐसे हरिजनका आनन्द कुछ जगतकी क्षणभंगुर वस्तुओंमें नहीं होता वरंच उनका आनन्द अनन्त ब्रह्माण्डके नाथमें ही होता है। इसलिये जगतका मिथ्यापन उनकी समझमें आजाता है और ईश्वरके अमरत्वका उन्हें अनुभव होता है।

(५) आइनेमें मुंह देखनेसे जैसे दाग हो तो दिख जाता है वैसे जो हरिजन बहुत स्मरण करता है उसे अपनी भूलें दिख जाती हैं। इससे वह उन्हें सुधारता जाता है और दिन दिन अधिक पवित्र होता जाता है।

(६) जिस हरिजनका स्मरण बहुत बढ़ जाता है वह फिर अपना हर एक छोटा बड़ा काम खास कर प्रभुके लिये ही करता है और उसका फल पानेकी इच्छा नहीं रखता। इससे बहुत निःस्पृही हो जाता है और सच्चे प्रेमसे स्मरण कर सकता है।

(७) जो मनुष्य बहुत स्मरण करता है उसका अज्ञान मिटता जाता है और उसमें आपसे आप प्राकृतिक तौरपर ज्ञान आता जाता है। इससे अन्धेरेसे उजालेमें आया हुआ आदमी जैसे सावधानीसे काम करता है वैसे अज्ञानके बन्धनसे छूटा हुआ हरिजन भी बहुत उत्तम रातिसे अपना कर्तव्य पालता है।

(८) लोगोंके हृदयमें काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार और डाह आदि अनेक प्रकारके दुर्गुण मौजूद हैं। इन सब दुर्गुणोंको संसारी मनुष्य नहीं जीत सकते। परन्तु जो हरिजन बड़े प्रेमसे ईश्वरके नामका खूब स्मरण करता है उसे हृदयमें मौजूद इन शत्रुओंको हरानेका उपाय प्रभु बताता है तथा उनसे लड़नेका बल देता है।

(९) ईश्वर आत्मारूप है और आत्मा ईश्वरसे निकली है, ईश्वरका अंश है और ईश्वर जैसी है। इसलिये आत्माकार होकर परमात्माका चिंतन करना चाहिये। कर्मेन्द्रिय, वाणी, मन या बुद्धि भगवानके पास नहीं पहुंच सकती; आत्मा ही परमात्माको पकड़ सकती है। इसलिये आत्मासे परमात्माको पकड़ना चाहिये। यह भेद बहुत गूढ़ है। व्यवहारी लोग नहीं जानते कि आत्मासे परमात्माको कैसे पकड़ना होता है। परन्तु बहुत स्मरण करनेवाले भक्तकी समझमें यह भेद आजाता है और इसकी कुंजी मिलजाती है, इससे वह अनन्य भावसे ईश्वरका चिंतन कर सकता है और ईश्वरमें तन्मय हो सकता है।

(१०) जैसे प्राणी सांस लिये विना नहीं रह सकते और

घड़ीभर सांस बन्द रहनेसे जी घबरा जाता है वैसे प्रभुके नाम-स्मरणमें आगे बढ़े हुए महात्मा एक क्षण भी बिना स्मरणके नहीं रह सकते और अगर कभी थोड़ी देरके लिये स्मरण छोड़ देना पड़े तो उनका जी छटपटाने लगता है।

(११) संसारी जीव जैसे अपने रोजगार धन्धेमें, उसीके सम्बन्धकी बातचीत तथा प्रपंचमें सारा दिन बिताता है वैसे नामस्मरणमें आगे बढ़ा हुआ भक्त भजन करनेमें सारा दिन बिताता है। कोई बाप बहुत नेक, बहुत इज्जतदार, बहुत धनी और बहुत प्रेमवाला हो तो उसका लड़का अपने बापकी तसवीर जेबमें लिये फिरता है और बार बार उसे देखा करता है तथा मनमें यह समझा करता है कि मुझे ऐसा करना चाहिये कि ऐसे बड़े पिताकी इज्जतमें बट्टा न लगे बल्कि उनकी कीर्ति बढ़े। वैसे ही स्मरणमें आगे बढ़ा हुआ भक्त सर्वशक्तिमान अनन्त ब्रह्माण्डके नाथ परमकृपालु परमात्माको अपना पिता समझ उसकी महिमा अपनी नजरके सामने रख कर भजन किया करता है। और ऐसा काम करता है कि उसका यश जगतमें फैले तथा उसके गुण घर घर गाये जायं।

(१२) सारांश यह कि उस भक्तको अपना सर्वस्व ईश्वरमें ही दिखाई देता है और धन मान, तन्दुरुस्ती, कुटुम्बसुख आदि जिन्दगीकी जरूरतके सब विषय पूरा करनेवाला मेरा नाथ ही है यह समझ कर वह किसी चीजमें आसक्त नहीं होता बल्कि यह समझ कर कि मेरा योग क्षेम करनेवाला मेरा धनी समर्थ है, निर्भय बन जाता है और भगवानमें ही अपना सर्वस्व मान कर अपनी डोर उसके हाथमें सौंप देता है। याद रहे कि जब ऐसी ऊंची स्थिति होती है तभी आत्माका उद्धार होता है, तभी जन्म मरणके बंधनसे छुटकारा मिल सकता है और तभी सबसे

अच्छी रीतिसे जगतका अधिक कल्याण किया जा सकता है। इसलिये भाइयो! ऐसे भक्त होनेकी कोशिश कीजिये, कोशिश कीजिये और ऐसे भक्त होनेके लिये नाम स्मरण कीजिये, नाम स्मरण कीजिये।

भाइयो! ईश्वर के नाम स्मरणकी कीमत कितनी बड़ी है यह आप जानते हैं? इसके लिये पुराणोंमें कहा है कि देवताओंने समुद्रमथन किया तब पहले उसमेंसे कितने ही अमूल्य रत्न निकले। अन्तमें हालाहल विष निकला। यह विष किसीसे बरदात होने योग्य नहीं था। ऐसा था कि धरतीपर गिरे तो धरती फट कर रसातळको चली जाय। इससे सब देवताओंके प्रार्थना करने पर देवोंके देव महादेवने यह विष पान किया। परन्तु महादेवको भी यह विष पचाना कठिन हो गया। उसे पचानेके लिये महादेव श्मशानमें गये; उन्होंने तप किया अपने सिरपर शीतल चन्द्रमाको रखा और अपनी जटामें गंगाजीको रखा। तोभी विषकी जलन नहीं मिटी। अन्तको जब ईश्वरका नाम स्मरण करने लगे तब उस नामके बलसे, महादेवजीके पिये हुए विषकी आग बुझी। ऐसा महान बल प्रभुके पवित्र नाममें है। इसलिये हमें सदा प्रेमपूर्वक भगवानके नामका स्मरण करना चाहिये, देवोंके देव महादेवका भी जब भगवानके नामका भजन किये विना नहीं चला तब हम किस गिनतीमें हैं? और जब भगवानके नामके बलसे हालाहल विषकी शान्ति हो सकती है तब हमारे छोटे मोटे दुःख किस गिनतीमें है? ऐसे दुःखोंके मिटते कितनी देर लगती है? इसलिये भइयो! अगर सुखी होना हो; जिन्दगीको सार्थक करना हो और जन्म मरणके फेरेसे छूट कर अनन्त कालका मोक्षसुख लेना हो तो महान ईश्वरके पवित्र नामका सदा स्मरण कीजिये, स्मरण कीजिये।

१५—ईश्वरस्मरणसे लाभ (२)

(पद)

सुमिरन बिन सुख नहिं पावेगा।
नहिं पावेगा नहिं पावेगा ॥ (टेक)
भवसागरमें भटक मरेगा।
जो गुरु वाक्य विसारेगा ॥ सुमि० ॥
कुम्भीपाक आदि नरकनमें।
यमकिंकर ले जावेगा।
अजपा जाप नाव भवजलमें।
पलमें पार पहुंचावेगा ॥ सु० ॥
भाव धरी भज निर्गुन चेतन।
फेर जन्म नहिं पावेगा॥
विमल विशद नित श्रीसद्गुरुको।
देवकृष्ण यश गावेगा ॥ सुमिरन० ॥

जिसके घरमें दीया जलता हो उसके घरमें चोर नहीं आ सकता। वैसे जिसके हृदयमें प्रभुस्मरण होता हो उसको काम क्रोधादि बहुत नहीं सता सकते।

बटका बीज देखनेमें सरसों के दानेसे भी छोटा होता है परन्तु उससे जब पौधा निकलता है तब धीरे धीरे एक बहुत बड़ा वृक्ष हो जाता है। वैसे हमें भगवन्नाम कदाचित शुरूमें छोटा दिखाई देता हो परन्तु परिणाममें बटके वृक्षकी तरह बहुत बड़ा लाभदायक हो जाता है।

जिसके घरमें चौकीदार चौकी देता हो उसके घरमें चोर नहीं पैठ सकता। वैसे ही जो प्रभुका नाम लेता है उसके हृदय में आसानीसे पाप नहीं घुस सकता।

जैसे लड़का बापके सामने, नौकर मालिकके सामने और विद्यार्थी शिक्षकके सामने खराब काम नहीं कर सकता, वैसे जो हरिजन हमेशा हरिनाममें लगा रहता है उससे बड़ा पाप नहीं हो सकता।

जिस जंगलमें बाघ या शेरका वास रहता है वहांसे कितने ही छोटे छोटे जानवर जैसे दूर भाग जाते हैं वैसे जिसके हृदयमें प्रभुस्मरणकी टेव पड़ती आती है उसमें बड़ा दुर्गुण या खराब व्यसन नहीं रह सकता।

जैसे लोभीको धन प्यारा लगता है, कामीको काम प्यारा लगता है, गायका चित्त अपने बछड़ेमें लगा रहता है और जैसे पनहारिनका मन अपने सिरकी गागरमें लगा रहता है वैसे हरएक हरिजनको इसी तरह स्मरणमें मन लगानेकी जरूरत है। जिसके बहुतसे लाभ हैं जैसे—

दोहा।

नाम बराबर कुछ नहीं
तप तीरथ व्रत योग।
नामे पातक छोड़िये
नामे नासे रोग ॥ १ ॥
नाम लिया सो सब लिया
सकल शास्त्रको भेद।
नाम विना नरके गया
पढ़ पढ़ चारो वेद ॥ २ ॥
नीसरणी निज नामकी
धर्म गगन विच पंक।
रामनामकी टेकसे
चढ़ गये संत अनेक ॥ ३ ॥

पढ़नेकी हद समझ है
समझनकी हद ज्ञान।
ज्ञान-हद हरिनाम है
यह सिधान्त उर आन ॥ ४ ॥

लश्करका सिपाही जैसे अपना हथियार अपने साथ रखता है वैसे प्रभुके भक्त सदा स्मरण किया करें।

जैसे बार बार कसरत करनेसे शरीर सुधरता है वैसे बार बार स्मरण करनेसे जीव सुधरता है।

जैसे हवा अग्निको धधकाती है वैसे स्मरण जीवको नया जीवन देता है।

चोरको घरमें न आने देना हो तो रातभर दीया जलाना और सावधानीसे रहना चाहिये। वैसे पापसे दूर रहना हो तो सदा हरिस्मरण करना चाहिये।

मनुष्यकी अधिक संगत उसका दोष दिखाती है और ईश्वरकी अधिक संगत उसके गुण दिखाती है और उनको बढ़ाती है।

किसी बड़े महात्माके मरते समय उसके चेलोंने हाथ जोड़ कर कहा कि महाराज! हमें कुछ गुप्त बात कहते जाइये। गुरुने कहा कि लड़को! मै भी राम राम करता था; तुम भी राम राम करते रहना।

अगर आपको मोक्षके मार्गमें जाना हो तो अच्छा और सहज रास्ता यही है कि राम राम राम राम राम राम राम राम करते रहिये।

१६—गृहस्थाश्रममें रहना सबसे बड़ी बात है। प्रभुको रिझानेके लिये साधू बननेकी जरूरत नहीं है।

बम्बई बन्दरसे एक ही दिन दो जहाज खूब माल लाद कर विलायतको रवाना हुए। रास्ते में बड़ा भारी तूफान आया। बड़े जोरसे हवा चलने लगी। पहाड़ समान लहरें उठने लगीं और ऐसा भय होने लगा मानो जहाज डूब जायंगे। ऐसे समय एक जहाजके कप्तानने सोचा कि ऐसे तूफानमें जहाज बच नहीं सकेगा; अगर मालको समुद्रमें फेंक दें तो जहाज हल्का होनेसे बच जायगा। यह सोच कर उसने जहाजका सब माल समुद्रमें डाल दिया। बड़ी कीमती चीजें लदी थीं सो सब समुद्रमें फेंक दीं और जहाजको खाली कर दिया।

दूसरे जहाजका कप्तान बड़ा बहादुर था वह तूफानसे हारनेवाला कायर नहीं था। इससे उसने सोचा कि तूफान बड़ा भारी है, अगर जहाज डूबनेको होगा तो माल लदा रहनेपर भी डूबेगा और माल न रहनेपर भी डूबेगा। इसलिये माल फेंकनेकी जरूरत नहीं है। जहांतक बने सावधानी रखना मेरा काम है, माल फेंक देना मेरा काम नहीं। यह सोच कर उसने माल नहीं फेंका।

इसके बाद थोड़ी देरमें तूफान शान्त हो गया। कितनी देर रह सकता है? वह तो बीच बीचमें कभी कभी थोड़ी देरके लिये आजाता है, कुछ हमेशा नहीं रहता। प्रभुको शान्ति पसन्द है कुछ तूफान नहीं रुचता। इससे तूफान तो कभी कभी थोड़ी देरके लिये आजाता है नहीं तो बहुधा शान्ति ही रहती है। यही नियम है। इस नियमके अनुसार थोड़े समयमें तूफान शान्त हो गया। इसके बाद दोनो जहाज विलायतके किनारे

पहुंचे तब जिस जहाजमें माल भरा था और तूफानसे सहीस-लामत बच आया था उसका स्वागत करनेके लिये बन्दरगाहसे तोपें छूटने लगीं। उस जहाजने अपने ऊपर सुन्दर झंडा उड़ाया और लाखों आदमी उसको देखनेके लिये बन्दरपर जमा हुए और हिप हिप हुर्रेकी आवाजसे उसके कप्तानको धन्यवाद देने लगे। परन्तु जिसने अपना माल समुद्रमें फेंक दिया था वह कप्तान चुपके चुपके अपना जहाज रातके समय बन्दरमें ले आया। कुछ भी धूमधाम नहीं हुई। वह मन ही मन शरमाता था कि माल समुद्रमें फेंक कर जहाज बचानेमें कोई बहादुरी नहीं है। लोग भी इसे कुछ नहीं समझेंगे। ऐसे डरपोक कप्तानकी विशेष इज्जत नहीं हो सकती उस कप्तानके जहाजका पहले जहाजकी तरह आदर मान नहीं हुआ और इसमें कुछ आश्चर्य भी नहीं है।

भाइयो! इसी तरह जो भक्त अपनी स्त्रीको छोड़ दे, घर छोड़ दे, लड़कोंको रोता छोड़ दे, रोजगार धंधेकी परवा न करे और आप अकेला मस्त बन कर फिरा करे तथा दूसरोंके भरोसे पड़ा रहे और उस स्थितिमें थोड़ा बहुत भजन करे तो कोई बड़ी बात नहीं है, परन्तु जब मनुष्य सब माल कायम रख कर अर्थात् गृहस्थाश्रमकी उपाधियां भोगते हुए भी परमार्थ करे तो वही खूबीकी बात है।*

इस प्रकार गृहस्थाश्रमके धर्म पाल कर प्रभुको भजना बहुत बड़ी बात है। इसीसे हमारे शास्त्रोंमें कहा है कि गृहस्थाश्रम सबसे बड़ा आश्रम है और ब्रह्मचर्य, वानप्रस्थ और सन्न्यास गृहस्थाश्रमके आश्रयसे हैं। सबको पोसने पालनेवाला गृहस्थाश्रम है। इसलिये गृहस्थाश्रमका जंजाल भोगने और फिर भी भजन करने तथा उत्तम चरित्र रखनेमें खूबी है और इसीमें बहादुरी

है। इसीसे दूसरे कितने ही माहात्माओसे जनक विदेहका अधिक बखान हुआ है। इसलिये संसारके जंजालसे हार कर साधु मत बन जाइये वरंच गृहस्थाश्रमकी उपाधियां सहते हुए भक्ति कीजिये, यही हमारी सलाह है।

१७-हम भक्तिमें आगे बढ़ते हैं कि नहीं यह जाननेकी युक्ति।

बहुत आदमी वर्षों भक्ति किया करते है तथा धर्मके बाहरी नियम पाला करते है और फिर भी जहांके तहां रहते हैं। वे जरा भी आगे नहीं बढ़ते। और कितने भक्त ऐसे होते है जो बहुत जल्द प्रभुके रास्तेमें बहुत आगे बढ़ जाते हैं और फिर भी भीतरसे छटपटाते रहते है कि जितना आगे बढ़ना चाहिये उतना आगे अभी हम नहीं बढ़ सके। जो आदमी वर्षके वर्ष गंवा देने-पर भी तनिक आगे नहीं बढ़ते उनमें भी कितने ही अपने मनमें यह सोचा करते हैं कि हम खूब भक्ति करते हैं और अपनी शक्तिभर हमसे धर्म पालन ठीक ठीक होता है। परन्तु सच पूछिये तो वे जरा भी आगे नहीं बढ़ते। हम ज्ञानमें, भक्तिमें और धर्ममें आगे बढ़ सके है कि नहीं यह निश्चय करनेकी कोई युक्ति होनी चाहिये। वह युक्ति क्या है आपको मालूम है? इसके लिये अनुभवी सन्त कहते है कि हमलोगोंके भीतर अनेक प्रकारकी बुरी वासनाएँ रहती हैं। जैसे–किसीको धनकी वासना अधिक होती है; किसीको इज्जत पानेकी वासना अधिक होती है; किसीमें अभिमानका जोर होता है; किसीके अन्दर डाहके

कीड़े चलबलाया करते है ; किसी आदमीमें क्रोध अधिक होता है ; किसीको झूठ बोलनेकी टेव होती है; कोई अपने मनमें अनेक प्रकारके प्रपंच सोचा करता है; कोई अपने मनमें विषयवासनाको दौड़ाया करता है, कोई खाने पीनेकी वासनामें अपने मनको लगाये रहता है, किसीको कड़वा वचन बोल देनेकी आदत होती है और जहां नरम मीठे शब्दसे चलने लायक है वहां भी कड़वा जहरसा कठोर शब्द फेंक देता है ; कोई आदमी बहुत छोटी छोटी बातोंके लिये अपने जीवको रकटाया करता है और कोई आदमी अपने पास जरूरतसे ज्यादा धन होनेपर भी और अधिक पानेकी तृष्णा रखता है। इस प्रकार हर आदमीमें कुछ न कुछ वासना होती है। इसके सिवा कितने आदमियोंमे कितनी ही प्रकार की बुरी टेव तथा बुरा व्यसन होता है, जैसे-कितनोंका चाय विना नहीं चलता, कितनोका बीड़ी विना नहीं चलता, कितनोंका पान विना नहीं चलता, कितनोंका तमाखू विना नहीं चलता, कितनोंका कपड़ा पहननेमें खास खास फैशन विना नहीं चलता, कितनोका खास वक्तपर खास खुराक विना नहीं चलता, कितनोको खास समयपर खास जगह गये विना चैन नहीं पड़ता, कितनोको नहाने धोने तथा सोनेमें भी खास खास आदत होती है और कभी इसके विरुद्ध चलना पड़े तो उनसे जरा भी नहीं सहाजाता क्योंकि। बहुतेर अपनी वासनाओंमें फंसे रहते हैं तथा अपनी टेवके गुलाम बने रहते है। तिसपर भी अपनेको भक्त समझा करते है।। वे ऐसी वासनाएं और ऐसी टेव रहनेपर भी धर्मकी कितनी ही बाहरी क्रियाएं करते हैं। इससे समझते हैं कि हम अपनी रीति और शक्तिके अनुसार कुछ न कुछ किया करते हैं। यह सोच कर वे खुश रहते हैं। परन्तु सच बात यह है कि जबतक मनमें रहनेवाली वासनाओंपर

तथा पुरानी बुरी टेवोंपर अंकुश न रखा जाय तबतक वास्तवमें कोई आगे नहीं बढ़ सकता जब आप बुरी टेव तथा बुरी वासनाओंको दबा सकें तभी समझें कि आप एक कदम आगे बढ़े हैं। जबतक इन वस्तुओंको वशमें न रख सकें तबतक अपनी भक्तिको बाहरी ही समझना। इसलिये भक्तिमार्गमें आगे बढ़े हैं या नहीं यह जाननेकी युक्ति यह है कि अपने मनमें रमती वासनाओंको देखा करे और जांचा करे कि उनपर कितनी विजय हुई है। इसमें अगर यह मालूम हो कि हम अपनी वासनाओंको धीरे धीरे वशमें करते जाते है तथा अपनी लत सुधारते हैं तब समझना कि हम अपनी भक्ति और धर्ममें आगे बढ़ते है और एक एक सीढ़ी चढ़ते जाते हैं। अगर ऐसा सुधार न दिखाई दे तो समझना कि बाहरकी कितनी क्रियाएं करनेपर भी अभी हम जहांके तहां हैं। अन्त तक जहांके तहां न रह जानेके लिये, भाइयो! इस युक्तिके अनुसार अपने हृदयकी जांच करना सीखिये। तब आगे जाकर अच्छे और ऊंचे भक्त हो सकेंगे।

१८– किसीके हृदयमें आये हुए उत्साह तथा प्रेमको उड़ा देना और उसे निरुत्साह बनाना बहुत बड़ा पाप है। खबरदार! ऐसा मत करना।

पहले जमानेमें जब लड़ाइयां होतीं तब सिपाहियोंका जोश बढ़ानेके लिये भाट चारण महाभारतसे बहादुरीका वर्णन सुनाते थे और उसे ऐसे जोशीले रोमांचकारी सिधुड़ा रागमें गाते थे

कि निरुत्साहमें भी उस समय उत्साह आजाता था। इसके सिवा बहादुरी बढ़ाने और लड़नेको जोश लानेवाले जुझाऊ बाजे बजाये जाते थे। आज भी युरोपियन सेनाके साथ उसे सावधान रखने और उसकी बहादुरी बढ़ानेके लिये जंगी बैंड बजाया जाता है। क्योंकि इस जगतमें किसी आदमीको येन मौकेपर हिम्मत देना बहुत अच्छी बात है।

उत्साही मनुष्योंका उत्साह बढ़ाना, प्रेमीजनोंका प्रेम बढ़ाना, विद्यार्थियोंका विद्याभ्यास बढ़ानेके विषयमें सहारा देना और धर्मके विचारोंको बढ़ानेके लिये हिम्मत देना बहुत अच्छी बात है और इसमें प्रभु बहुत प्रसन्न रहता है। क्योंकि इससे बहुतोंकी जिन्दगी सुधर जाती है और यह सिर्फ थोड़ेसे अच्छे शब्दोंके व्यवहारसे होता है। परन्तु अफसोस है कि हमारे बहुतेरे भाई बहनोंको सच्चे विषयोंमें उत्साह देनेका परमार्थ करना भी नहीं आता इतना न हो तोभी चल सकता है परन्तु बहुतेरे आदमी तो इससे भी आगे बढ़ कर गहरा पाप करते हैं और वह यों कि उत्साही आदमियोंको भी वे निरुत्साह बनाते हैं और भयके विचार उनके मनमें घुसाया करते हैं। जैसे-किसी विद्यार्थीको पढ़नेकी इच्छा हो तो उसको बढ़ावा देनेके बदले कहते हैं कि पढ़नेमें क्या रखा है? पढ़नेवाले बहुत हो गये हैं, आजकलके जमानेमें विद्याकी इज्जत नहीं रही, इसलिये अब कुछ काम करो। यह कह कर आगे बढ़ सकने लायक विद्यार्थियोंकी भी हिम्मत तोड़ देते हैं। कितने आदमी किसी बीमारको देखने जा कर कहते हैं कि हाय हाय! यह तुम्हें क्या हो गया? तुम ऐसे सूख क्यों गये? हमें तो तुम्हारी जिन्दगी अन्देशेमें जान पड़ती है। यह रोग अच्छा नहीं। हाल ही में हमारा एक मित्र इसी रोगमें चलबसा। दूसरा एक नातेदार भी इस रोगसे कष्ट

पा रहा है, डाक्टरोंने उसे भी जवाब देदिया है। ऐसे रोगसे कोई ही कोई बचता है इसलिये तुम गफलतमें मत रहना। ऐसी ऐसी बातें करते हैं और बीमारको घबराहट बढ़ाते हैं, इतना ही नहीं थोड़ा भी रोग हो तो उसे बहुत बड़ा बना देते हैं। परन्तु इस प्रकार मनमानी बातें करनेवाले मनुष्य यह नहीं जानते कि हम निर्दोष आदमियोंके हृदयमें ऐसीमूर्खतामरी बातोंसे कितना जहर डालते हैं।

बहुत लोग धर्मके विषयमें बड़ी रुचि रखते हैं और उन्हें जब बढ़ावा मिले तो वे बहुत आगे बढ़ सकते हैं। परन्तु ऐसे प्रभु-प्रेमी मनुष्योंको तथा जिनके हृदयमें प्रेरणा हुआ करती है कि हम धर्मके अमुक काम करें तो अच्छा, उन लोगोंको भी बेहिम्मत करनेवाले तथा अच्छे काममें भांजी मारनेवाले लोग कहते हैं कि धर्म धर्म क्या किया करते हो? अबके जमानेमें तो धर्मको दूर रखना चाहिये। ऐसे धर्मासक्त बनोगे तो किसी काममें सफलता नहीं पा सकोगे। ऐसी छोटी उमरमें इतना अधिक धर्म किससे होता है? बूढ़े होनेपर और कोई काम न रहनेसे धर्मकी बात कहना चाहिये। यह जवानी तो मौज उड़ानेकी है। अभी उपवास, जप तीर्थ आदि थोड़े हो सकता है? तुम भी निठल्ले आदमियोंके साथ रहने लगे हो नहीं तो बूढ़ोंकी तरह धर्मके विचार तुममें कहांसे आते? अभी मौज करनेका समय है। इस तरह बीजसे फूटते हुए अंकुरको दबा देना, बहते हुए झरनेको रोक देना और सोनेकी खानको मूंद देना जितना खराब है उससे भी अधिक खराब प्रभुप्रेमके विचारोंको तोड़ डालना है। बहुतेरे गुरु आप बहुत ऊंचे दरजेके होते हैं परन्तु वे अपने शिष्योंको वहांतक ऊंचे नहीं चढ़ाते। उनके सामने यही कहा करते हैं कि धर्म पालना बड़ा कठिन है,

धर्म पालना तलवारकी धारपर नाचनेके समान है और जो सिर देता है वह माल पाता है। यह तुमसे नहीं हो सकता। भगवानका प्रेम पाना कुछ खेलवाड़ नहीं है; बड़ा कठिन काम है। देखो उस भक्तको पहचानते हो? वह बहुत जप करने लगा इससे गरीब हो गया है। मालूम है? वह बुढ़िया भगतिन बदरीनारायण करने गयी तो रास्तेमें ही रह गयी। ऐसी ऐसी बातें करके तथा कठिनाई बता कर वे आसपासके लोगोंको प्रभुप्रेममें ढीला कर देते हैं और जिन आदमियोंको बढ़ावा देना चाहिये उन्हींको उल्टे पीछे हटाते हैं। तिसपर भी यह भारी भूल उनकी समझमें नहीं आती।

भाइयो! इस प्रकार हम सब जान कर और बेजानमें बार बार निराशाकी बातें किया करते हैं और रस्सीको सांप बनाया करते हैं तथा तिलका ताल कर देते हैं, रजका गज कर दिखाते हैं। इससे परिणाम यह होता है कि प्रेममें, भक्तिमें, समृद्धि पानेमें, विद्याभ्यासमें, कला कौशलमें, ज्ञानमें और ईश्वरी रास्तेमें बहुत आसानीसे आगे बढ़ सकने योग्य मनुष्योंकी भी हिम्मत तोड़ देते हैं। फिर भी नहीं जानते कि यह कितना बड़ा पाप है। इसलिये किसी हरिजनको दूसरोंको निरुत्साह करनेवाला विचार न फैलाना चाहिये बल्कि जैसे बने वैसे उत्साहके और व्यवहार तथा परमार्थमें उपयोगी होनेवाले विचार प्रगट करनेकी आदत डालनी चाहिये। यही हरिजनोंका लक्षण है, यही महात्माका उपदेश है, यही शास्त्रकी आज्ञा है और इसीमें हम सबका कल्याण है। किसीको पस्तहिम्मत मत कीजिये वरंच सम्पर्कमें आनेवाले सब मनुष्योंमें उत्साह और प्रभुप्रेम फैलाइये। यही हमारी विनती है।

१९—भक्तोंके प्रकार; सकाम और निष्काम भक्तोंका भेद ।

इस जगतमें अनेक प्रकारके भक्त होते हैं परन्तु उनमें मुख्य दो प्रकार हैं । एक प्रकारके भक्त प्रभुको पाना चाहते हैं और दूसरे प्रकारके भक्त प्रभुका इनाम पाना चाहते हैं। जिन भक्तोंको इनामकी जरूरत नहीं है सिर्फ प्रभुकी जरूरत है वे निष्काम भक्त कहलाते है । जिन भक्तोंको प्रभुकी जरूरत नहीं है बल्कि इनामकी जरूरत है वे सकाम भक्त कहलाते हैं। इस बातको ठीक तौरपर समझानेके लिये एक भक्तराज महाराज कहते थे कि—

हमारे महल्लेमें एक स्त्री थी; उसके दो लड़के थे । एक लड़केका स्वभाव ऐसा था कि जो कोई आदमी उसे खानेको या खिलौना देता वह उस आदमीके पास चला जाता। उस समय उसे अपनी माकी परवा न होती । ज्योंही खिलौना देखता त्योंही अपनी माकी गोदसे उतर आता और खिलौनेके लिये अनजान आदमीके पास भी दौड़ जाता। परन्तु जो दूसरा लड़का था वह खिलौने, खाने पीनेकी चीज या दूसरे आदमियोंके हाव भावकी परवा न करता। वह सब बातोंसे अपनी माके पास रहनेमें ही अधिक प्रसन्न होता। माके पाससे हटना उसे नहीं रुचता था ।

इसी तरह कितने भक्त अपने पिता परम कृपालु परमात्माकी गोदमें बैठनेवाले होते हैं। वे किसी तरहके लालचमें पड़ कर अपने पिताकी गोदसे नहीं उतरते । वे निष्काम भक्त कहलाते हैं । और जो भक्त खिलौनेसे अर्थात् ऋद्धि सिद्धिसे, आदरमानसे या कुदरती इनामसे खुश हो जाते हैं और उसीमें प्रसन्न रह कर प्रभुके ऊपरका प्रेम कम कर डालते हैं वे सकाम भक्त कहलाते हैं ।

परन्तु याद रहे कि सकाम भक्तोंसे निष्काम भक्तोंकी स्थिति बहुत ऊँची होती है, सकाम भक्त ईश्वरी इनामसे प्रसन्न होनेवाले हैं। परन्तु निष्काम भक्तोंको इनाम बखशिशकी जरूरत नहीं होती, उनको खास भगवानकी जरूरत होती है। उनका भरोसा भगवानमें ही होता है, उनका प्रेम भगवानमें ही होता है और उनके सब काम भगवानके लिये ही होते हैं। इससे ऐसे निष्काम भक्त महात्माओंकी नजरमें तथा भगवानकी नजरमें श्रेष्ठ हैं। सकाम भक्त तो लालची कहलाते हैं ' कृपण कहलाते हैं। इसलिये भाइयो और बहनो! जैसे बने वैसे ऊंचे गुणवाले निष्काम भक्त बननेकी कोशिश कीजिये। निष्काम भक्त बननेकी कोशिश कीजिये।

२०—निष्काम भक्तके विषयमें।

एक बड़ा भारी सेठ था। उसका जो मुनीम था उसको बहुत वेतन मिलता था। उसी कोठीमें और एक आदमी बहुत काम करता था और मुनीमसे भी अधिक काम काजमें ध्यान देता था। यह देख कर एक परदेशी अढ़तियेने पूछा कि महाशय! आपको क्या तनखाह मिलती है? मुनीमजी वक्तसे आते हैं और जरूरतभर काम करते है। तोभी उन्हें दो सौ रुपये तलब मिलती है। आप मुनीमसे भी बहुत अधिक काम करते हैं। इससे आपको और अधिक तलब मिलती होगी।

यह सुन कर उस आदमीने कहा कि मुझे कुछ तलब नहीं मिलती। मै तलबके लिये काम नहीं करता। बापका काम करनेमें तलबकी क्या जरूरत है? तलब तो नौकरकी होती है। लड़केको तलब थोड़े होती है? भाइयो! यह दृष्टान्त दे कर एक भक्तराज

महाराज अपने हरिजनोंको समझाते थे कि जो निष्काम भक्त हैं वे प्रभुके पुत्र समान हैं। इसलिये उन्हें तलबका लालच नहीं होता। वे यह समझकर अपना कर्तव्य पालते हैं कि सब हमारे पिताका है। जो सकाम भक्त हैं अर्थात् मनमें किसी प्रकारकी इच्छा रखकर भक्ति करनेवाले हैं वे प्रभुके तनखाहदार नौकर समान हैं। याद रहे कि नौकर और लड़केमें जितना अन्तर है उतना ही अन्तर सकाम भक्त और निष्काम भक्तमें है। सकाम भक्तको अपनी नौकरीके लिये तलबकी चाह होती है। जैसे किसीको भक्तिके बदलेमें धन दरकार है, किसीको अपनी भक्तिके बदलेमें लड़का चाहिये, किसीको भक्तिके बदलेमें इज्जत चाहिये, किसीको अपने शत्रुपर विजय चाहिये, किसीको अच्छा मालिक चाहिये, किसीको अच्छी नौकरी चाहिये, किसीको चमत्कारवाली विद्या चाहिये, किसीको राजा महाराजके यहां मान मर्तबा चाहिये, किसीको तन्दुरुस्ती चाहिये, किसीको अपने मनकी इच्छाएं पूरी करनेके साधन चाहिये और किसीको देवी देवता चाहिये। इस तरह किसी न किसी ढंगकी तलब उन्हें चाहिये। इससे वे सकाम भक्त कहलाते हैं। परन्तु निष्काम भक्त होते हैं वे ऐसी कोई इच्छा नहीं रखते, बरंच भगवानकी महिमा समझ कर, भगवानकी खातिर भगवानको भजते हैं और बापका घर समझ कर काम करते हैं। इससे वे प्रभुके प्यारे होते हैं। भाइयो और बहनो! तनखाहदार सकाम भक्त मत बनिये बरंच सच्चा भक्त होना हो तो बापका घर समझ कर निष्काम भक्त हूजिये। निष्काम भक्त हूजिये।

२१-नेक हो कर भगवानके हजूर जाना खूबी की बात है।

परम कृपालु परमात्मा अतिशय दयालु है, इससे वह कितनी ही बार कितने ही पापी मनुष्योंको भी अपनी कृपाके बलसे तार देता है। इसमें कुछ आश्चर्य नहीं है। क्योंकि ऐसा करना प्रभुकी प्रभुता है। परन्तु सारी जिन्दगी आप अच्छे रहने, अपना धर्म भली भांति पालने और अपना चरित्र उत्तमसे उत्तम रख कर प्रभुके हजूर जानेकी खूबी कुछ और ही है। यह बात समझानेके लिये एक महात्मा कहते थे कि

एक बड़े राजाके दरबारमें बहुतसे अमीर उमरा थे। सबकी सभा बैठी थी। उसमें किसी दूसरे देशके अमीरने पूछा कि आप लोगोंको जो इतना बड़ा दरजा मिला है और आपलोग बादशाहके दरबारमें बैठते हैं तथा इतने शोभायमान हैं इसका क्या कारण है? आपको किस कामसे अमीरी मिली है? कृपा करके बताइये।

यह सुन कर सबसे ऊपर बैठे हुए एक अमीरने कहा कि हमारे बापदादोंने पहले जमानेमें यह राज्य प्राप्त करते समय राजाके लिये अपना सिर दिया था, उस नौकरीके बदलेमें हमें अमीरका पद मिला है। किसीने कहा कि पहले जमानेमें हमारे खान्दानकी एक गुणवती स्त्रीका राजासे ब्याह हुआ था उस सम्बन्धसे हमें अमीरीका दरजा मिला है। तीसरेने कहा कि हमारे बापदादेके पास

अपार धन था। उस समय भारी अकाल पड़ा तो उन्होंने लाखों आदमियोंको जिलाया था। उस उदारताके कामके लिये हमें अमीरका दरजा मिला है। चौथेने कहा कि एक वार राजा शिकार खेलने गये तो जंगली जानवरके झपेटेमें आगये; उस समय मेरे दादाने उस जानवरको अपनी वहादुरीसे मार कर राजाको वचाया था इसीसे मुझे अमीरकी पदवी मिली है। पांचवेंने कहा कि एक वार बड़ी भयंकर लड़ाई लगी थी उस समय मेरे बापदादेने रुपयेकी तंगीमें करोड़ों रुपये राजाको दिये थे इससे मुझे उमरावका दरजा मिला है। छठेने कहा कि कई वर्ष हुए जव अफ्रीकामें लड़ाई हुई तव मैंने मुल्क जीता था; उस सेवाके लिये मुझे यह ओहदा मिला है। सातवेंने कहा कि मैंने जगतमें उथल पुथल करदेनेवाला और दुनियाको बहुत फायदा पहुंचानेवाला रसायन शास्त्रका आविष्कार किया है उसीके इनामके तौरपर मुझे यह दरजा मिला है। इस प्रकार भिन्न भिन्न मनुष्योंने भिन्न भिन्न कारण बताये। उस समय एक अमीर बहुत शान्तभावसे जरा अफसोसके साथ गम्भीर मुख बनाये सिर नीचा किये बैठा था। उसे देख कर उस अमीरने पूछा कि क्यो साहव! आप क्यों नहीं बोलते? ये सव अमीर वहुत उत्साहित हो कर अपने अपने पराक्रमका बखान करते हैं परन्तु आप क्यो चुप बैठे है? और नीचे क्यों देख रहे हैं? आपको अमीरी कैसे मिली? जरा बताइये तो सही।

उस अमीरने कहा कि भाई साहब! इन सब अमीरोंने तो कुछ कुछ पराक्रम किया है परन्तु मैंने ऐसा कोई पराक्रम नहीं किया है; वरंच मैने तो बहुत बुरा किया है। राजाकी दयासे ही मुझे अमीरी मिली है। तब मैं क्या कह सकता हूं? बात यह हुई कि राजा एकवार जंगलमें शिकार खेलने गये थे। रास्तेमें

भूलसे अचानक मेरे खेतपर चले आये। उस समय उनको दूरसे शिकारी पोशाकमें देख कर मैंने समझा कि यह कोई बदमाश आदमी है और मेरे पास खानेको मांगने आता है। ऐसे बदमाशोंको खाना देना ठीक नहीं। यह सोचकर मेरे पास जो रोटी थी उसे मैंने तुरत ही बैलको खिला दिया और गगरेमें जो पानी था उसे मैंने ढरका दिया। इतनेमें राजाजी आ पहुंचे। उनको देख कर मैं बहुत शरमा गया। उन्होंने मुझसे खानेको तथा पानी मांगा मैंने कहा कि महाराज! अभी मैंने दोनों चीजें चौपट कर दी है। राजाने कहा कि मेरी इच्छा थी कि तुझसे पानी पीऊं और रोटी खाऊं और उसके बदलेमें तुझे इनाम दूं। परन्तु तूने रोटी जानवरोंको खिला दी और पानी गिरा दिया; इसके बदलेमें मैं चाहे जो सजा तेरी कर सकता हूं। परन्तु मैं राजा हूं इससे अपनी प्रजाको दिखाना चाहता हूं कि भूल करनेवालेको भी मैं चाहूं तो माफ कर सकता हूं और अपने दरबार में बिठा सकता हूं। लोगोंको यह विश्वास दिलाने और अपनी दयादृष्टि बतानेके लिये मैं तुझे यह गांव पीढ़ी दर पीढ़ीके लिये इनाममें देता हूं और आजसे तुझे अपना अमीर बनाता हूं। उस समय क्या मेरा सिर ऊंचा रह सकता था? मैं उनके पैरोंपर गिर पड़ा और कृतज्ञताके आंसुओंसे उनके पैर धोने लगा। यह मेरा हाल है। तब मैं क्या मुंह ले कर बात करूं? मुझसे कोई अच्छा काम नहीं हुआ। सिर्फ राजाकी कृपासे मैं उमरावोंका दरजा पा गया हूं।

यह दृष्टान्त दे कर वह महात्मा समझाते थे कि प्रभुके हजूर तो कंस, हिरण्याक्ष, रावण, जरासंध, शिशुपाल, पूतना आदि आदि पापी भी गये है; परन्तु जैसे ध्रुव, प्रह्लाद, अम्बरीष, जनक, हरिश्चन्द्र, शिवि, परीक्षित, नरसिंह मेहता, मीराबाई, तुकाराम, तुलसीदास, सूरदास आदि शोभते हैं वैसे कंस या

कालयवन थोड़े शोभते है ? नहीं। इसलिये याद रखना कि प्रभुकी कृपासे मोक्ष पा लेना दूसरी बात है और अपना आचरण सुधार कर पवित्र बन कर मोक्ष पाना दूसरी बात है। प्रभुकी कृपासे मोक्ष पानेमें कोई खूबी नहीं है, अपनी पवित्रताके बलसे मोक्ष पानेमें खास खूबी है। भाइयो! भूल और पापमें न पड़े रह कर जैसे बने वैसे प्रभुके निकट रहनेकी कोशिश कीजिये और सद्गुण, पवित्रता तथा ज्ञान ध्यानके बलसे आगे बढ़नेकी कोशिश कीजिये। तब प्रभु आपका सहायक होगा और आप प्रसन्न हो कर मोक्षसुख भोग सकेंगे तथा हरिके हुजूर जा सकेंगे। इसलिये चरित्र सुधारने और नेक होनेका विशेष खयाल रखिये।

२२-ईश्वरमें जिनको आनन्द मिल गया है वे भजनानन्दी भक्त बाहरकी दुनियवी बातोंमें बहुत नहीं लगे रहते।

इस जगतमें कितने ही आदमी ऐसे होते हैं जो हमें कुछ भी नहीं देते तोभी उनपर हमें बेहद प्रेम हुआ करता है। इस प्रेममें अपना किसी तरहका स्वार्थ नहीं होता तोभी जब ऐसे आदमियोंको हम देखते हैं तब खुश हो जाते हैं और उनके गुण गाने लगते हैं। इसी तरह ईश्वर हमें कुछ भी न देता हो तोभी उसपर हमारा अतिशय प्रेम रहे तभी सच्ची भक्ति समझना।

किसी प्रकारके स्वार्थके लिये या किसी प्रकारकी आशा रख कर भक्ति करनेमें कुछ बहुत बड़ाई नहीं है । स्वार्थ ऐसा है कि बहुत आदमियोंसे न करनेके काम भी कराता है। तब स्वार्थके कारण अच्छे आदमियोंसे भक्ति होना कोई नयी बात नहीं है। परन्तु इस प्रकारकी भक्तिमें प्रभुका प्रेम मुख्य नहीं रहता बरंच स्वार्थ ही मुख्य होता है, इससे इस प्रकारकी भक्ति हलकी मानी जाती है। बिना किसी स्वार्थके सिर्फ ईश्वरके लिये ईश्वरको चाहना उत्तम प्रकारकी भक्ति है।

जो सच्चे हरिजन है, जो निष्काम भक्त है और जो वस्तुको समझे हुए ज्ञानी है उनको ईश्वरसे और किसी चीजकी जरूरत नहीं होती, सिर्फ ईश्वरकी जरूरत होती है। उसे पानेके लिये धन, इज्जत या प्राणकी परवा उन्हें नहीं होती। ये सब विषय उन्हें ईश्वरके सामने खेलवाड़से लगते है। इसके विरुद्ध जो कच्चे भक्त होते है, जो स्वार्थी भक्त होते है और जो प्रभुसे प्रभुकी बनायी वस्तुओंको बड़ी समझनेवाले है वे प्रभुका भजन करके किसी मंत्र या योगसे किसी प्रकारकी सिद्धिकी इच्छा रखते है। और ऐसी छोटी बातके लिये प्रभु जैसे उत्तमसे उत्तम विषयको छोड़ देते हैं। ऐसा न होने देनेके लिये भाइयो! जरा विचार करना कि इन दो प्रकारके भक्तोंमें हम किस प्रकारके भक्त हैं। हृदयमें समझ लीजिये कि हम किसी प्रकारके स्वार्थके लिये भक्ति करते हैं या प्रभुकी महिमा समझ कर प्रभुके लिये प्रभुको भजते है। इस बातका विचार करेंगे तो असल बात समझमें आजायगी। इसलिये सच्चा भक्त होना हो तो छोटे छोटे स्वार्थमें मत पड़े रहिये बरंच जैसे सच्चे भक्त सर्वशक्तिमान महान परमात्मापर धन, इज्जत, प्राण आदि सब कुछ न्योछावर कर देते है वैसे आप भी परमकृपालु परमात्मासे इन सब

चीजोंकी अधिक इज्जत न करें और उनके मोहमें न पड़े रहें। प्रभु सीधे तौरपर उसी वक्त कुछ न दे तोभी उसकी मित्रतासे आगे जा कर अतिशय लाभ हो सकता है। उसका स्नेह कभी व्यर्थ नहीं जाता। इसलिये खिलौनेसी जगतकी वस्तुओंमें न फंस कर अनन्त ब्रह्माण्डके नाथकी भक्ति निष्कामभावसे कीजिये, निष्कामभावसे कीजिये।

२३- मरनेके समय संसारी जनोंको बहुत दुःख होता है और भक्तोंको बहुत आनन्द होता है। इसका क्या कारण है?

भाइयो! इस जगतमें अनेक प्रकारके दुःख हैं उनमें मौतका दुःख आदमियोंको सबसे बुरा लगता है। क्योंकि मरनेपर इस संसारसे सदाके लिये वियोग होता है, मरनेपर अपने सम्बन्धियोंसे सदाके लिये बिछोह होता है और मरनेपर मनुष्योंकी आशा तृष्णापर पानी फिर जाता है। इससे जगतमें जो खराबसे खराब चीजें हैं उनसे भी संसारी जनोंको मौत बहुत खराब लगती है। इसीसे मौतका नाम सुन कर भी ऐसे आदमी डर जाते हैं और थोड़ी देर मौतके पंजेसे छूटनेके लिये हर तहरसे सिर पटकते हैं।

बन्धुओ ! हम सब मौतसे बहुत ही डरते हैं और मरनेके समय बहुत दुःखी होते हैं इसका क्या कारण है, आप जानते है ? इसका कारण जानना चाहिये । इसके लिये सन्त जन कहते हैं कि—

जिनको सगे सम्बन्धियोंका बहुत मोह होता है उनको मरना नहीं सोहाता ; जिनको धनका बहुत मोह होता है उनको मरना नहीं रुचता ; जिनको इस जगतका विभव भोगनेकी बड़ी प्रबल इच्छा होती है उनको मरना नहीं रुचता ; जिनको अपनी इन्द्रियोंके विषय भोगनेकी बड़ी आकांक्षा होती है उनको मरना नहीं रुचता ; जिनमें धर्मका बल नहीं होता उनको मरना नहीं रुचता ; जिन्होंने किसी प्रकारका बड़ा सत्कर्म नहीं किया है उनको मरना नहीं रुचता ; जिन्होने अपनी आत्माका स्वरूप और प्रभुकी महिमा नहीं समझी है उनको मरना नहीं रुचता ; जो छोटी छोटी बातोंमें उलझ गये हैं और जिन्होंने उन्हींमें अपने मनको बांध रखा है उनको मरना नहीं रुचता ; जिन्होंने अपनी जिन्दगीमें कोई भारी पाप किया है उनको मरना नहीं रुचता , जो अज्ञानतामें रहे हैं और मायाके मोहमें रच पच गये हैं उनको मरना नहीं रुचता ; जिनको अनन्त ब्रह्माण्डके नाथसे और मोक्षधामके सुखसे भी इस जगतकी वस्तुएं अधिक प्यारी लगती हैं उनको मरना नहीं रुचता । आत्मा क्या है, परमात्मा क्या है, और इस जगतसे हमारा सम्बन्ध कितनी देरका है तथा इस जगतकी वस्तुएं कहांतक काम आती है इन विषयोंका जिन्हें ठीक ख्याल नहीं होता उन्हें मौत नहीं रुचती , जो अभिमानी होते है और सब अपनी ही इच्छानुसार करना चाहते है उनको मरना नहीं रुचता और जो प्रभुसे विमुख हैं तथा दुनियादारीकी आसक्तिमें अपने मनके तथा जगतकी

तुच्छ वस्तुओंके गुलाम बन गये हैं उनको मरना नहीं रुचता। इतना ही नहीं इस प्रकारके संसारी मनुष्योंको मौतके समय बहुत दुःख होता है। इससे वे मौतका नाम सुन कर थर्रा उठते हैं और मौत शब्दको भी अशुभ गिनते हैं तथा मौतसम्बन्धी कोई बात सुनना नहीं चाहते।

बन्धुओ! जहां संसारी लोग मौतसे इतना डरते हैं और मौतको असगुनभरा समझते है, खराब समझते है और दैवका कोप मानते हैं वहां जो हरिजन है, जो भक्त है, जो सन्त हैं और जो महात्मा हैं वे कहते हैं कि—

मौत ईश्वरका आशीर्वाद है, मौत पुरानी स्थितिसे नयी स्थितिमें ले जानेवाला दूत है, मौत स्वर्गके द्वार खोलनेवाली कुंजी है, मौत अनेक प्रकारके दुःखोंसे छुड़ानेवाला देवता है; मौत मनुष्य जातिपर उतरी हुई ईश्वरकी दया है; मौत आत्माकी स्वतंत्रता तथा आत्माका अमरत्व देनेवाला फिरिश्ता है, मौत ईश्वरी मार्ग है और मौत एक ऐसा ख्याल है जिसके अन्दरका पता महात्माओंको ही होता है।

भाइयो! भक्त मौतका ऐसा ऐसा स्वरूप समझते हैं, इसलिये जब मरनेका समय आता है तब वे बड़े आनन्दमें आजाते हैं। क्योंकि जो सच्चे भक्त हैं उनका मोह इस जगतकी जड़ वस्तुओंमें नहीं होता, जो सच्चे भक्त हैं उनका मोह शरीर तथा उसके लहू मांस या विकारपर नहीं होता, जो सच्चे भक्त है उनका मोह कुछ अपनी इन्द्रियोंको सन्तुष्ट रखनेमें नहीं होता और जो सच्चे भक्त है उनका सुख कुछ जगतकी वस्तुओंमें नहीं होता; वरंच उनका सुख परम कृपालु परमात्माके अन्दर होता है। इससे ऐसे भक्त जबतक इस जगतमें जीते हैं तबतक हमेशा प्रभुके रास्ते-

पर चलते हैं और उनको विश्वास होता है कि इस रास्ते हमारे पहले लाखों भक्त भगवानके हजूर चले गये हैं, वैसे हम भी इस रास्ते ईश्वरके हजूर पहुंच सकेंगे। यह उन्हें भरोसा होता है; इससे मौत उनको आनन्दरूप लगती है। दूसरे, ऐसे भक्त भजनमें, ध्यानमें और ज्ञानमें अपनी जिन्दगी विताये रहते है इससे उनको मौत आनन्दरूप हो जाती है। ऐसे भक्त ईश्वरकी इच्छाके अधीन रहते है इससे उनको मौत आनन्दरूप हो जाती है। ऐसे भक्त प्रभुके लिये ही जीते हैं इससे जब प्रभु उनको खींच लेता है तब वे उल्टे अधिक आनन्दमें आजाते हैं। ऐसे भक्त अपनी जिन्दगीका हर एक काम भगवानके अर्पण किये रहते हैं जिससे किसी काममें उन्हें मोह नहीं होता, इससे उन्हें मरनेके समय भी आनन्द होता है। ऐसे भक्त भगवानके नियमानुसार चलते है इससे उनका शरीर तथा मन मजबूत बना रहता है इस कारण मरनेके समय भी वे आनन्दमें रह सकते हैं और ऐसे भक्त जगतकी वस्तुओंसे भगवानकी कीमत अनन्तगुनी समझते हैं इससे उनको मौतके समय प्रभुके पानेकी आशासे विशेष आनन्द होता है।

इस प्रकार संसारियों और हरिजनोंमें अन्तर है। अब विचार कीजिये कि जगत जिसको सबसे बड़ा दुःख समझता है वह मौत भी जब भक्तोंके लिये आनन्दरूप हो जाती है तब छोटे छोटे घड़ीभरके दूसरे दुःखोंकी बात ही क्या है ? इसलिये अगर सब तरहके दुःखोंसे छूटना हो और मौतके समय भी महा आनन्द भोगना हो तो भक्त हूजिये, भक्त हूजिये।

२४- ईश्वरकृपा अर्थात् अपने हृदयमें ईश्वरके प्रति जगा हुआ प्रेम ।

बन्धुओ ! भक्तिमार्गमें ईश्वरकृपा बहुत बड़ा अंग है और यह अङ्ग जिसकी समझमें भलीभांति आजाता है उसका बहुत काम हो जाता है। हम देखते हैं कि किसी अच्छे आदमीकी कीसी गरीब आदमीपर कृपा हो जाती है तब उस आदमीको बहुत लाभ हो जाता है । जैसे किसी धनवानकी कृपा हो तो वह गरीबी मिटादेता है, किसी विद्वानकी कृपा हो तो वह बड़ी आसानी से बड़ी बड़ी विद्या दे देता है, किसी महात्माकी कृपा हो तो कुछ चमत्कारिक ऋद्धि सिद्धि दे देता है और किसी राजाकी कृपा हो तो वह पीढ़ी दर पीढ़ीके लिये गांव जागीर दे देता है। इस प्रकार मनुष्यकी कृपासे भी बहुत लाभ हो सकता है । तब अगर अनन्त ब्रह्माण्डके नाथकी कृपा हो जाय तो उससे कितना बड़ा लाभ होगा यह समझना कुछ कठिन नहीं है ।

बन्धुओ ! आप जानते हैं कि प्रभुकी कृपा क्या है ? इसके लिये सन्त कहते हैं कि—

बिना बोये उजाड़ जंगलमें आपसे आप गुलाबका पौधा उग जाय तो उसे हम प्रभुकृपा कहते हैं ।

जिस जगह बेर, बबूल, हिंगुआ आदि कांटेदार पौधे होते हैं वहां अचानक लंगड़ा आम जम जाय तो उसे हम प्रभुकृपा कहते हैं ।

सर्वशक्तिमान परम कृपालु परमात्मापर अतिशय प्रेम आजाय तो उसको हम प्रभुकृपा कहते हैं ।

प्रभुकी ओर जानेका अन्तःकरणमें नया नया उत्साह आवे तो उसे हम प्रभुकृपा कहते हैं।

गरम मुल्कमें गरमीके समय अचानक ठंढी लहर चली आवे तो उसको हम प्रभुकृपा कहते हैं।

जीवका स्वरूप बदल जाय और दूसरा नया स्वरूप हो जाय अर्थात् संसारी जीवनसे पवित्र जीवन हो जाय तो उसे हम प्रभुकृपा कहते हैं।

खारे समुद्रमें मीठे पानीका सोता बहने लगे तो उसको हम प्रभुकृपा कहते हैं।

द्विज होने अर्थात् फिरसे नया जन्म होनेको हम प्रभुकृपा कहते हैं।

दूसरे देशके नये नये बीज अपने देशमें आपसे आप उग जायँ तो हम उसे ईश्वरकृपा कहते हैं।

एक ओर बहुत जोरसे नदी बहती हो और दूसरी ओर ढल पड़े वैसे अपनी मनोवृत्ति मायासे निकल कर भगवानकी ओर जाय तो उसे हम प्रभुकृपा कहते हैं।

मिट्टीकी खानसे अचानक कीमती हीरा निकल आवे उसको हम प्रभुकृपा कहते हैं।

मतलब यह कि जब ईश्वरकी कृपा होती है तब जीव भगवानकी तरफ ढलता है, इतना ही नहीं, उसमें भगवद्धर्म पालनेकी शक्ति आती है। इसके बाद धीरे धीरे पापसे बच सकता है और फिर प्रभुकृपासे कृपाप्राप्त भक्तकी जिन्दगी बदल जाती है। जैसे खराब आदमी भलामानस बन जाता है, मोहवादी संसारी भक्त बन जाता है, बहुत लोभी बड़ा दानी बन जाता है, मायामें बंधा हुआ स्वतंत्र बन जाता है, जंजाली-

आदमी शान्तिवाला बन जाता है और बडा पापी भी पुण्यात्मा बन जाता है। इस प्रकार ईश्वरकी कृपासे ज़िन्दगी बदल जाती है। इसलिये कृपा बहुत बड़ी बात है।

बन्धुओ! महात्मा कहते हैं कि सारी दुनियाके धन और तीनों लोकके राज्यसे भी ईश्वरकी कृपाका मूल्य बहुत अधिक है। साधारण लोग नहीं जानते कि प्रभुकी कृपा क्या है; परन्तु हरिजन जानते है कि–

राजा अपने समूचे राज्यका मालिक कहलाता है किन्तु उसका वास राजमहलमें ही होता है। वैसे ही सर्वशक्तिमान महान ईश्वर अपनी सर्वव्यापकतासे सब जगह और अनन्त ब्रह्माण्डमें मौजूद हैं, तोभी भगवत्‌कृपा पाए हुए भक्तोंके हृदयमें उसका विशेष वास होता है। इस प्रकार कृपाके समय भक्तोंके हृदयमें भगवान स्वयं रहता है, इसलिये कृपावाली स्थिति बहुत ही ऊंची मानी जाती है। क्योंकि जिसे पानेके लिये अनेक प्रकारके तप किये जाते हैं; जिसे पानेके लिये अनेक प्रकारके व्रत किये जाते है, जिसे पानेके लिये अनेक प्रकारका दान किया जाता है और जिसे पानेके लिये अनेक प्रकारका कष्ट सहा जाता है तथा जिसके मिलनेसे ही जीवनकी सार्थकता होती है वह सर्वशक्तिमान महान ईश्वरकी कृपाके समय भक्तोंके हृदयमें पधारे रहता है। इससे बढ़कर उत्तम लाभ और क्या है? और भगवानके हृदयमें पधारनेसे बढ़कर आनन्दकी घड़ी दूसरी कौन है? यह समझ कर सच्चे सन्त भगवत्‌कृपापर बहुत जोर देते हैं।

बन्धुओ! ऐसी उत्तम कृपा पानेकी योग्यता प्राप्त करना चाहिये और ऐसी योग्यता पानेके लिये तथा प्रभुकृपा बढ़ानेके लिये हर एक भक्तको निष्काम वृत्तिसे परमार्थके काम करना चाहिये, जैसे बने वैसे अधिक अधिक सेवा स्मरण करना

चाहिये और प्रभुकी महिमा समझनेका ज्ञान प्राप्त करना चाहिये। ऐसा करनेसे कृपा बढ़ती जाती है।

किसी बड़े अमीर या बड़े राजासे मित्रता करनेके लिये और उसकी कृपा पानेके लिये बहुत मिहनत करनी पड़ती है, बहुत खर्च करना पड़ता है और बहुत हैरानी उठानी पड़ती है तथा बहुत समय खोना पड़ता है। तब प्रभुकी कृपा पानेके लिये कितना करना पड़ेगा यह तो सोचिये। फिर भी प्रभुकी कृपाके लिये हम कितना थोड़ा करते हैं। यह देखनेसे अपनी नालायकी और अपनी कमजोरी मालूम हुए बिना नहीं रहती। इधर तो प्रभुकी कृपा और उधर हमारी लापरवाही। इसकी तुलना करनेसे भक्तोंके हृदयमें घबराहट मच जाती है। अपनी भक्तिको जागृत रखनेके लिये अपने धर्मकी ऐसी ऊंची और उत्तम बातें जाननेकी जरूरत है।

प्रभुकृपाकी बातें सुन कर कोई नास्तिक कह सकता है कि यह क्या सम्भव है कि प्रभु किसीपर खास कृपा करे? इसके उत्तरमें सन्त कहते हैं कि राजा अपनी सब प्रजापर समान प्रेम रखता है, फिर भी जो आदमी राजाकी भलाईके काम करता है और जो आदमी जगतको सुधारने बढ़ानेके काम करता है तथा जो आदमी आत्माके कल्याणके महान काम करता है उसके ऊपर राजा दूसरे लोगोंसे अधिक स्नेह रखता है और ऐसे बड़े आदमीको नेक राजा इनाम देता है, वर्षाशन देता है। जागीर देता है और अपना अमीर बनाता है। इसी तरह परम-कृपालु भगवानका सब चीजोंपर समान स्नेह होता है तोभी जो भक्त प्रभुके नियम पालता है और प्रभुके अर्थ परमार्थके काम करता है, उसको प्रभु अपना प्यारा भक्त समझता है और उसके ऊपर विशेष कृपा करता है।

हरिजनो! ईश्वरकी कृपामें इतनी बड़ी खूबी है, इसलिये जैसे बने वैसे ईश्वरी कृपा प्राप्त करनेकी चेष्टा कीजिये और मिली हो तो उसे यत्नसे रखने तथा बढ़ानेकी चेष्टा कीजिये क्योंकि भगवत्कृपाके अन्दर सर्वस्व आजाता है। इसलिये कृपा प्राप्त कीजिये, कृपा प्राप्त कीजिये।

२५–जिसका तिसका संग मत करना, संग करना हो तो प्रभुप्रेमियोंका ही करना।

इस दुनियामें रह कर विना किसीका संग किये मनुष्यका नहीं चल सकता। दुनियाकी रचना ही ऐसी है और मनुष्योंका स्वभाव ही ऐसा है कि वे विना किसी प्रकारके संगके नहीं रह सकते। इससे किसी न किसी का संग तो करना ही पड़ेगा। उसके साथ यह बात भी याद रखना कि संगका असर बहुत बलवान है। जिसका संग किया जाता है उसका रंग लग जाता है इसलिये जिसका तिसका संग मत करना। सोच विचार कर ऐसे आदमियोंका संग करना जिनसे अपना कल्याण हो। किसका संग कल्याणकारक होगा? इसके उत्तरमें महात्मा कहते है कि जिनके हृदयमें भगवानका प्रेम जगा हो उन हरिजनोंका संग करना। उनके संगसे उनके अन्दरके सद्गुण अपनेमें भी आते जाते है। इसलिये भक्तोका संग करना चाहिये।

महात्मा कहते है कि भक्तोका संग करना चाहिये परन्तु बहुतेरे भक्तोंका बाहरी भेष बहुत असर करनेवाला नहीं होता इससे उनका संग कितने ही अलहड़ अजानोंको नहीं भाता। क्योकि कितने ही भक्त बहुत गरीब हालतमें होते है; कितने ही भक्त बहुत सादगीसे रहनेवाले और विना टीमटामके होते हैं; कितने ही भक्त कई तरहके दुःख भोगते हुए जान पड़ते हैं; कितने ही भक्त उदास से दिखाई देते है; कितनेही भक्त शरीरसे बहुत दुबले पतले बीमार होते है; कितनेही भक्त आजकलके सभ्य कहलानेवालोकी रुचिके विरुद्ध विषयोंको बड़ी श्रद्धासे मानते हैं; कितनेही भक्त विरक्त रहते है, कितनेही भक्त अपनी भावनाके

अनुसार चलनेसे विचित्र स्वभावके होते हैं; कितनेही भक्त बहुत बेपरवा होते हैं और कितनेही भक्तोंको बहुत ज्ञान नहीं होता। इस कारण बहुत आदमियोंको ऐसे भक्तोंकी सगत नहीं रुचती। परन्तु याद रखना कि जो भक्त आपकी नजरमें ऐसे गरीव उदासीन और लापरवा दिखाई देते हैं तथा बाहरसे बहुत सीधे सादे और जैसे तैसे चला ले आनेवाले जान पड़ते हैं वे भी अपने हृदयमें बहुत सुखी होते हैं, वे बहुत सन्तोषी होते हैं, वे अपने मनको बहुत शान्तिमें रख सकते हैं, वे विश्वासकी डोरपर चल सकते हैं और भगवदिच्छाके अनुसार चल सकते हैं। इसके सिवा उनमें पवित्रता आजाती है, उनका संशय मिट गया होता है, उन्हें एक प्रकारकी प्राकृतिक तृप्ति मिली होती है, उन्हें अपने प्रभुमें अतिशय आनन्द मिला होता है। इससे वे बाहरसे बौड़म से और ढीलेढाले मालूम होनेपर भी भीतरसे बड़े आनन्दमें रहते हैं। उनका संग करनेसे उनके समान सद्गुण मिल सकते हैं और उनके ऐसा आनन्द आताजाता है। परन्तु भक्तोंमें मौजूद ये सब महान गुण बाहरी नजरसे देखनेवाले लेभागू अजानोंको नहीं दिखाई देते इससे वे भक्तोंकी कीमत नहीं समझ सकते। परन्तु जो प्रभुप्रेमी होते हैं, जो सच्चे जिज्ञासु होते हैं और जो सच्ची वस्तुको ढूंढ़ते हैं वे धीरे धीरे ऐसे भक्तोंको पहचान सकते हैं और उनके संग रहनेकी कोशिश करते हैं।

बन्धुओ! भक्तिकी, धर्मकी और ईश्वरकी बातें कहनेवाले घनेरों मिलते हैं। पण्डितोंको, शास्त्रियोंको, कथा बांचनेवालों व्यासोंको, भाषण करनेवालों वक्ताओंको और इस प्रकारके दूसरे बहुतसे लोगोंको धर्मकी बातें करना बहुत आता है परन्तु याद रखना कि धर्मको हृदयमें उतारना जुदी बात है और रटाये तोतेकी तरह धर्मकी बातें कहदेना जुदी बात है। भक्तिकी

बातें करना और बात है और भक्ति कर दिखाना और बात है। ईश्वरकी बातें करना और बात है और ईश्वरकी महिमा समझ प्रेमपूर्वक उसे अपने हृदयमें पधराना कुछ और ही बात है। इसलिये धर्मकी तथा भगवानकी बातें करनेवाले मनुष्योंमें और सच्चे भक्तोंमें बहुत अन्तर रहता है। इस अन्तरको समझानेके लिये एक भक्तराज महाराज कहते थे—

एक आदमी किसी अमीरसे मिलने उसके घर जाय पर ड्योढ़ीसे लौट आवे, अमीरसे भेंट न करे और दूसरा आदमी अमीरके घर जाकर उससे बातचीत कर आवे और अपनी जरूरत अमीरसे पूरी करा ले तो इन दोनो आदमियोंमें जितना अन्तर है उतना अन्तर धर्मकी बातें करनेवाले आदमियों और धर्म पालनेवाले भक्तोंमें है। जो मनुष्य सिर्फ धर्मकी बातें करते हैं वे बिना अनुभवके हैं। और जो ऊपरी दृष्टिसे देखनेमें थोड़ेसे लगते हैं और बहुत पढ़े लिखे नहीं होते वे भक्त सच्चा धर्म पालनेवाले होते हैं इससे वे अनुभवी होते हैं। ऐसी बातें करनेवाले पण्डितों तथा दूसरे ब्राह्मण साधुओंकी अपेक्षा अपने हृदयमें भगवानका अनुभव करनेवाले भक्तोंके संगसे कहीं अधिक लाभ होता है। इसलिये प्रभुके रास्तेमें आगे बढ़े हुए सच्चे और ऊंचे भक्तोंके संगमें रहना चाहिये।

भक्तों और पण्डितोंमें क्या अन्तर है यह समझनेके लिये और सन्तोंके सत्संगमें रहना सीखनेके लिये भिन्न भिन्न महात्मा भिन्न भिन्न दृष्टान्त देते हैं। जैसे—एक महात्मा कहते थेकि गल्ला बेचनेवाले व्यापारी अपनी दुकानमें बढ़िया बढ़िया अनाज रखते हैं। जैसे—कानपुरी रहरकी दाल, खंडवाका गेहूं, बंगालेका चावल इत्यादि ऊंची दरजेका अन्न उनके गोदामोंमें भरा रहता है परन्तु वे स्वयं हररोज वही अन्न नहीं खाते। वे तो हमेशा सस्ती

दरका अनाज खाते है और बढ़िया बढ़िया माल दूसरोंके हाथ बेचनेके लिये ही रखते हैं। बढ़िया अन्न खानेवाले अमीर दूसरे ही होते हैं। इसी तरह जो मनुष्य सिर्फ धर्मकी और भगवानकी बातें करना जानते है परन्तु जैसा चाहिये वैसा धर्मका पालन नहीं करते वे गल्लेके व्यापारी जैसे है। जैसे व्यापारियोंकी दुकानमें बहुत माल भरा रहता है परन्तु उनके उपयोगमें बहुत थोड़ा ही आता है वैसे जो पंडित कवि, वक्ता और उपदेशक धर्मकी बातें करनेवाले होते हैं उनकी जीभमें और उनके मगजमें बहुत माल भरा रहता है परन्तु उनकी आत्माकी भूख मिटानेमें वह माल काम नहीं आता। ऐसोंके संगसे कुछ नहीं होता। जो सच्चे भक्त होते हैं वे बढ़िया बढ़िया माल खानेवाले अमीरोंके समान हैं। क्योंकि धर्मके सिद्धान्त और ईश्वरकी कृपा तथा ईश्वरका प्रेम उनके हृदयमें उतरा होता है इससे उनके संगसे बेहद लाभ होता है। इसलिये संग करना तो भक्तोंका ही करना, यही हमारी सलाह है।

जिस बन्दूकमें गोली न भरी हो वह बन्दूक सिर्फ बारूदके जोरसे आवाज कर सकती है परन्तु खाली आवाजसे, बिना गोलीके, साधा हुआ निशान नहीं मारा जा सकता। याद रखना कि जो स्वयं धर्म नहीं पालते, जो स्वयं प्रभुप्रेमी नहीं और जो स्वयं अपने हृदयसे द्रव नहीं गये हैं वे आदमी धर्मकी और भगवानकी जो जो बातें करते है वे सब बातें बिना गोलीकी बन्दूककी आवाजसी होती हैं। परन्तु प्रभुप्रेमी भक्त जो उपदेश देते है उसमें, उनकी वाणीरूपी बन्दूकमे प्रभुप्रेमरूपी गोली होती है, इससे उनकी आवाज व्यर्थ नहीं जाती, वे साधा हुआ निशाना मार सकते है। अर्थात् सामनेके आदमीपर अपनी मरजी मुताबिक असर कर सकते हैं। इसलिये खाली आवाज

करनेवालेकी संगतमें मत पड़े रहना, वरंच जिनकी वन्दूकमें गोली भरी हो अर्थात् जिनके हृदयमें प्रभुप्रेम हो उनका संग करना, उनकी संगतमें रहना और ऐसा करना कि उनका रंग लगे।

कोई छोटामोटा बालक रास्ता भूल गया हो और अपनी माके पास जानेके लिये रोता हो तो उस लड़केको रास्तेमें खड़े हुए आदमी बहुत बहुत तरहसे समझाते हैं, मीठे मीठे शब्द कहते हैं, कुछ खानेको देते हैं और पुचकारते दुलारते हैं परन्तु उससे लड़का खुश नहीं होता और किसीके साथ प्रेमसे बात नहीं करता। जब उसकी मा मिल जाती है तब बालक बहुत खुश हो जाता है और बड़े प्रेमसे उसके साथ बात करने लगता है। इसी तरह जो सच्चे हरिजन हैं उनको उड़नछू मनुष्योंके उपदेशसे या संगसे तृप्ति नहीं होती। जब सच्ची ताली लगे हुए भक्तोंका संग उन्हें मिलता है तभी वे खुश होते हैं और तभी तृप्ति पाते हैं। इसलिये याद रखना कि जिस तिसके संगसे कुछ काम नहीं होनेका और न हृदयकी तृप्ति आनेकी। आत्माको जैसा संग चाहिये वैसा संग जबतक उसे नहीं मिलता तबतक वह छटपटाती रहती है। भाइयो! अपनी आत्माको छटपटाती मत छोड़िये, वरंच जैसे बने वैसे ऐसा कीजिये कि उसे किसी प्रेमी भक्तका संग मिल जाय।

२६—जिसका तिसका संग मत करना, संग करना हो तो प्रभुप्रेमियोंका ही करना। (२)

बिना संगके आदमी नहीं रह सकता इससे भूलमें तथा अज्ञानतामें चाहे जिसका संग हो जाता है और उससे बहुधा बुरा परि-

णाम निकलता है। यहांतक कि अच्छे अच्छे आदमी भी बुरे संगसे बिगड जाते हैं। ऐसा न होने देनेके लिये सत्संगके विषयमें हम जोर देकर बहुतसी बातें कहना चाहते हैं। क्योंकि सत्संग धर्मकी पहली सीढ़ी है और सत्संग धर्मका बहुत बड़ा अंग है। जितनी अधिक व्याख्या की जाय उतना ही अच्छा। इसलिये इस विषयके कुछ और दृष्टान्त सुननेकी कृपा कीजिये। और उसे याद रख कर उसके अनुसार चलनेकी कृपा कीजिये। यही हमारी विनती है।

पानी बिलोनेसे मक्खन नहीं निकलता और कुशाको पीसनेसे आटा नहीं होता। इसी तरह जिनके हृदयमें प्रभुप्रेम नहीं है उन आदमियोंकी बातें सुननेसे आत्माका कल्याण नहीं होता। ऐसोंकी संगतमें समय बिताना समय खोनेके समान है यह समझ कर सच्चे हरिजन बिना प्रभुप्रेमके मनुष्योंकी संगतमें नहीं रहते।

कोई भक्त अनपढ़ हो, बिना टीमटामके हो, एकदम सादा हो, टूटी फूटी मोटी बोली बोलनेवाला हो, बिना व्यावहारिक चतुराईके हो, और बिना दिखाऊ शिष्टाचारके हो तोभी वह दूसरे भक्तको बहुत भाता है। क्योंकि वे एक दूसरेके हृदयको टटोलते हैं और दोनोंके विचारमें एक ही प्रकारका तार लगा रहता है। सच्चे भक्तोंको ऐसे ऐसे सीधे सादे अनपढ़ भक्त भी स्वदेशी सरीखे लगते हैं, इससे उनपर प्रेम होता है और उनका संग करना अच्छा लगता है। उनके अन्दर प्रभुप्रेमका झरना बहता रहता है। परन्तु जिन मनुष्योंके अन्दर प्रेमका झरना नहीं बहता वे सूखे काठ जैसे और विदेशी समान लगते हैं। इससे उन्हें उनके संगमें रहना नहीं रुचता। प्रभुप्रेमसे तरबतर भक्तोंको दूसरे देशके, दूसरे धर्मके और दूसरी भाषा बोलनेवाले प्रेमी भक्त

मिलें तो वे भी उनको प्यारे लगते हैं और वे उनको भी स्वदेशी समझते हैं। और अपने ही सगे सम्बन्धी हों; अपने ही कटके रहनेवाले हों या अपने पड़ोसी हों परन्तु उनमें प्रभुप्रेम न हो तो वे उनको परदेशी समझते हैं और उनके संगमें रहना उन्हें नहीं रुचता। ऊपरी कपड़ेसे, या रहनेकी जगहसे वे देशी या परदेशी नहीं समझते वरंच हृदयमें प्रभुप्रेमका प्रवाह जारी है कि नहीं यह देख कर वे देशी-परदेशीपन समझते हैं। इसलिये बन्धुओ! अगर संग करना हो तो ऐसे देशियोंका करना, परदेशियोंके संगमें मत पड़े रहना। अर्थात् जिनमें भगवानका प्रेम न हो उनकी संगतमें मत पड़े रहना।

कोई राजा किसी किसी कैदी पर भी कृपा रखता है इससे उसके पैरमें बेड़ी होती है तोभी उसे अपने शहरमें घूमने फिरनेकी आज्ञा देता है। इससे कितनेही बेडीवाले कैदी शहरमें घूमा करते हैं। ऐसे कैदीको जेलके कैदियोंसे अधिक आनन्द मिलता है इसमें सन्देह नहीं परन्तु जो आदमी बिलकुल स्वाधीन हैं और जिनके पैरमें बेड़ी नहीं है उनको जैसा आनन्द मिलता है वैसा आनन्द बेड़ीवाले कैदियोंको नहीं मिलता वे शहरमें भले ही फिरें परन्तु बेड़ी बेड़ी ही है और कैदी कैदी ही है। याद रखना कि जो प्रभु-प्रेमी अभय और स्वतंत्र भक्त हैं वे शहरमें बसनेवाले भारी गृहस्थ समान हैं, और जो मायाके बन्धनमें फंसे हुए हैं तथा काम, क्रोध, लोभ इत्यादिकी गुलामीमें पड़े हुए हैं वे पण्डित तथा कथा कहनेवाले, वे ब्राह्मण तथा साधु शहरमें छूटसे घूमनेवाले परन्तु पैरमें बेड़ीवाले कैदी समान हैं। इसलिये स्वतंत्र भक्तोंके ऐसा आनन्द उनको नहीं हो सकता। भाइयो! अगर संग करना हो तो ऐसे छुट्टे भक्तोंका करना कि जिससे वे आपको बन्धनसे छुड़ा सकें। परन्तु जो आप ही कैदमें पड़े हैं, जिनके पैरमें आप ही बेड़ी है

वे दूसरोंको कैसे छुड़ा सकते हैं ? अगर मायाके मोहके बन्धनसे छूटना हो तो जो उसमें से छूट चुके हैं उन सच्चे भक्तोंका संग करना। यही हमारी सलाह है।

बन्धुओ ! एक छोटीसी डेंगीमें बैठकर कुछ लड़के उसे चलानेकी मिहनत करते थे परन्तु डेंगी चलती नहीं थी। यह देख कर किनारे खड़े एक चतुर आदमीने उन नादान लड़कोंसे कहा कि इस डेंगीकी रस्सी किनारे बंधी है इससे यह नहीं चलती। पहले डेंगी खोलडालो तब चलेगी। बिना रस्सी खोले कैसे चल सकती है ? व्यर्थ मिहनत क्यों करते हो ? पहले रस्सी खोलो तब पीछे डांड खेओ। लड़कोंने ऐसा ही किया। तब नाव चलने लगी।

यह दृष्टान्त दे कर एक सन्त यह समझाते थे कि उपदेश देनेवाले या उपदेश सुननेवाले चाहे जैसे हों जबतक वे अपना बन्धन न काट चुके हों तबतक आगे नहीं बढ़ सकते। इसलिये अगर प्रभुके रास्तेमें बढ़ना हो तो जिनकी रस्सी खूंटेसे बंधी हो और जिनका लंगर नदीमें–तलहटीमें पड़ा हो उन डेंगियोंमें मत बैठना; जिन डेंगियोंका लंगर उठा हो और जिनकी रस्सी खुल गयी हो अर्थात् जिनका मोह कट गया हो और जिनकी भीतरकी गांठें खुल गयी हों उनका उपदेश सुनना और उनके सत्संगमें रहना। उनके साथसे, उनके प्रतापसे आपका काम भी हो जायगा।

हरिजनोंको भक्तोंके संग बिना नहीं सुहाता यह बात खूब अच्छीतरह समझानेके लिये और खुलासा करनेके लिये एक महात्मा अपने हरिजनोंसे कहते थे कि भाइयो ! किसी छोटेसे बच्चेको बहुत भूख लगी हो जिससे वह रोता हो परन्तु उस समय घरमें दूध न मौजूद हो इससे उसे फुसलानेके लिये दूध पिलानेका

खाली चम्मच उसके मुंहमें डाला करें तो उससे उस बालकका पेट थोड़े भरता है ? और उससे उसकी तृप्ति थोड़े होती है ? नहीं होती। एक बार वह चम्मचसे धोखा खाता है परन्तु फिर और जोरसे रोने लगता है। याद रखना कि विना प्रभुप्रेमके जो पण्डित हैं उनकी बातें वेदूधके खाली चम्मच मुंहमें डालनेके समान है। परन्तु प्रभुप्रेमसे शराबोर भक्तोंके मुंहसे जो वाणी निकलती है उस वाणीमें उस चम्मचमें प्रभुप्रेमका अमृत भरा रहता है इससे यह प्रसादी लेनेवालेको बड़ा लाभ होता है इसमें तनिक सन्देह नहीं, इसलिये भाइयो ! जैसे बने वैसे प्रभुप्रेमी भक्तोंका संग कीजिये।

हरिजनोंको भक्तोंके सिवा और किसी आदमीका संग नहीं रुचता यह बात अच्छी तरह समझानेके लिये एक भक्तराज महाराज यह कहते थे कि मक्खियां कई किस्मकी होती हैं परन्तु इनमें मुख्य दो किस्में हैं एक मधुमक्खी और दूसरी मामूली मक्खी। मामूली मक्खी चाहे जिस चीजपर बैठ जाती है परन्तु मधुमक्खी वहीं बैठती है जहां मधु रहता है। मामूली मक्खियां गन्दी जगह तथा गन्दी चीजोंपर बैठ जाती हैं परन्तु मधुमक्खियां गन्दी जगह या गन्दी चीजोंपर नहीं बैठतीं। वरंच असली मधुमक्खियां तो जिस चीजमें मधु होता है उसीपर बैठती हैं। वैसे ही जो सच्चे हरिजन होते हैं वे चाहे जिसके संग नहीं मिल जाते, वरंच जहां प्रभुप्रेमी मिलते हैं और जहां भक्तिरसका पूरा लाभ मिलता है वहीं जाते हैं और ऐसे प्रभुप्रेमी भक्तोंके संगमें ही रहते हैं। ऐसे सच्चे भक्त जहां तहां भटकते नहीं फिरते और न जिसके तिसके संग मिल जाते। जहांसे अपनी आत्माको मिठास मिलती है वहींपर वे जाते हैं। इसी तरह हे हरिजनो ! अगर आपको सच्चा संग करना हो और

सत्संगका असली स्वाद चखना हो तो जिसके तिसके संग मत मिल जाना वरंच मधुमक्खीकी तरह, जहां मधु हो अर्थात् जिससे आपके आत्माको सन्तोष हो, जिससे आपकी जिन्दगी सुधरे और जिससे आपके हृदय का पाप कटे उसके सत्संगमें रहना यही हमारी सलाह है।

सत्संगका प्रभाव कितना बड़ा है यह समझानेके लिये एक सन्त कहते थे कि लोहेमे कुछ गर्मी नहीं है, लोहेका टुकड़ा हाथमें ले कर देखें तो वह ठंढा जान पड़ता है, इसके सिवा लोहेका रंग सोनेके ऐसा नहीं होता, काला होता है। परन्तु जब लोहेसे अग्निका साथ होता है तब उसमें अग्निका गुण आजाता है और रंग भी अग्निकासा हो जाता है। इसी तरह खराब आदमी भी जितने समय तक सत्संगमें रहते हैं उतनी देर भले आदमी बन-जाते है। जैसे अग्निके संगसे लोहेको अग्निका गुण लेना पड़ता है वैसे खराब आदमी भक्तोंके संगसे उतनी देर भक्त हो जाते है। और ऐसा ही करते करते सच्चे भक्त हो सकते हैं। इसलिये अगर किसी आदमीमें कोई दुर्गुण हो तोभी उसे सत्संगसे डरकर भागना नहीं चाहिये वरंच जैसे बने प्रभुप्रेमी भक्तोंके सत्संगमें पड़े रहना चाहिये। ऐसा करनेपर धीरे धीरे सत्संगके बलसे अनेक प्रकारके दुर्गुण मिटजाते हैं। इसलिये प्रभुप्रेमी भक्तोंके सत्संगमें पड़े रहिये, प्रभुप्रेमी भक्तोंके सत्संगमें पड़े रहिये।

बन्धुओ! इन सब दृष्टान्तोंका यह सार है कि जो सच्चे भक्त हों, जो द्रवीभूत भक्त हों और जिनके हृदयमें प्रभु पधारता हो उन महान भक्तोंके संगमें रहना, उनकी सेवा करना और उनके उपदेश सुनना। तब उनके साथ आपका काम भी हो जायगा। मोहवादी वातूनियोंके संगमें रहेंगे तो आप भी वैसे ही बन

जायंगे। और आगे जा कर उल्टे खराबी होगी। ऐसा न होने देनेके लिये जैसे बने वैसे सच्चे भक्तोंका संग कीजिये, सच्चे भक्तोंका संग कीजिये।

२७–कुछ भक्त परमार्थके काम करके प्रभुको प्रसन्न करना चाहते हैं और कुछ भक्त भगवानका भजन करके उसे प्रसन्न करना चाहते हैं।

बहुतसे भक्तोंको परमार्थके काम करना बहुत रुचता है और कितनेही भक्तोंको भजन करना बहुत रुचता है। इन दो प्रकारके भक्तोंको देख कर बहुत लोग विचारमें पड़ते हैं कि इनमें उत्तम कौन है। इसके समाधानमें सन्त कहते हैं कि—

प्रभु हमसे अच्छा काम कराना चाहता है परन्तु उससे पहले यह चाहता है कि हम उसके हो जायं। क्योंकि बहुतेरे भक्त भगवानको अपना सर्वस्व दे सकते हैं परन्तु स्वयं उसके नहीं हो सकते। भक्तिकी सच्ची कुंजी तथा असली खूबी यह है कि हम हृदयसे सचमुच भगवानके ही बनजायं और फिर परमार्थके काम करें। ऐसा करना आवे तो इसका मूल्य बहुत अधिक है परन्तु बिना प्रभुके हुए परमार्थके काम करने लगें तो उन कामोंमें कुछ दम नहीं होता और न कुछ तत्त्व होता। स्वयं प्रभुके हो जानेपर जो काम करते हैं उसमें कुछ अजब तरहकी खूबी आजाती है। प्रभुको हृदयमन्दिरमें पधरा कर पीछे जो शुभ काम होता है उसका असर कुछ और ही होजाता है। प्रभुका हो जाना प्रभुको बहुत रुचता है। यह बात बहुत अच्छी तरह समझानेके

लिये एक भक्तराज महाराज कहते थे कि—

किसीको अपना पुत्र बहुत प्यारा हो और लड़का कहे कि बाबूजी मैं धन कमाने परदेश जाता हूं तो उसका समृद्धिवान बूढ़ा और नेक बाप कहता है कि नहीं बेटा ! तू मेरे पास रह इसीसे मैं अधिक खुश हूं, तेरी कमाईकी मुझे जरूरत नहीं है मुझे तेरी हाजिरी दरकार है। बूढ़े बापको लड़का पास रहनेसे जितना सन्तोष होता है उतना सन्तोष दूर जानेसे नहीं होता। क्योंकि बापका प्रेम कुछ और वस्तु है और बाहरकी भेंट सौगातकी वस्तु कुछ और बात है। इसी तरह जो भक्त प्रभुकी इच्छानुसार उसके सानिध्यमें रहते हैं और उसको अपने हृदयमन्दिरमें पधराते हैं तथा स्वयं उसके हो कर रहते हैं उनके ऊपर प्रभु जितना प्रसन्न होता है उतना दूर रह कर परमार्थके काम करनेवाले भक्तोंपर प्रसन्न नहीं होता। इसलिये परमार्थके काम करनेपर भी स्वयं प्रभुका होजाना बहुत बड़ी बात है।

बन्धुओ ! प्रभु कहता है कि मुझे तुम्हारे काम नहीं चाहिये मुझे तो तुम्हारा हृदय चाहिये। इसलिये तुम मुझे फल, फूल, वस्त्र और सेवा सिंगार तथा धूप नैवेद्य अर्पण करनेसे पहले अपना हृदय अर्पण करो। हृदय अर्पण करनेके बाद ये सब चीजें अर्पण करोगे तो ऐसे छोटे छोटे अर्पणोंसे भी बहुत बड़ा काम हो जायगा। परन्तु प्रभुको हृदयमें पधराये बिना इस प्रकारके अर्पणकी कुछ बहुत कीमत नहीं है। यह तो बिना एकके शून्य बराबर है। इसलिये भाइयो ! बिना एकके शून्यमें ही मत रहजाना वरंच प्रभुको हृदयमें ला कर तथा उसके हो कर पीछे अपनी शक्तिके अनुसार शुभ काम करना। तब आपके छोटे कामोंको भी दयालु प्रभु बहुत बड़ा मान लेगा और समय आनेपर आपको तार देगा। इसलिये प्रभुके हो जाइये, प्रभुके हो जाइये।

२८–बहुधा अच्छी तरह भक्ति करनेके बाद ईश्वरकी महिमा समझमें आती है।

जब लड़के पहले पहल पढ़ना सीखते हैं और पहाड़े पढ़ते हैं तथा गणितके गुर घोखते है तब उनका उसमें मन नहीं लगता। उस समय इतिहास, भूगोल, व्युत्पत्ति, व्याकरण, गणित आदि सभी विषय ऊसठ मालूम होते है और कुछ समझमें नहीं आता। पीछे विद्यार्थी जब सयाने होते है और विद्या की खूबी समझने लगते हैं तथा उसका शौक होता है तब तरह तरहके ग्रंथ पढ़ कर प्रसन्न होते हैं और उनकी खूबी समझमें आनेसे हृदयसे आनन्दकी उमंगें निकलने लगती हैं। उस समय पुस्तक छोड़नेको जी नहीं चाहता। उसको छोड़कर दूसरे किसी काममें ध्यान देना पड़े तो बड़ा अनकस लगता है। इसी तरह भाइयो! याद रखना कि जब कोई आदमी पहले पहल भक्ति करने लगता है तब उसको भजनमें, ध्यान मे, जपमें और तपमें कठिनाई लगती है। उस समय वह थक जाता है, शंकित होता है, बीच बीचमें छोड़ देनेका मन होता है और मनमें अनेक प्रकारके संकल्प विकल्प हुआ करते है। पीछे ज्यो ज्यो भक्तिकी खूबी समझमें आती जाती है और ईश्वरकी महिमा समझते जाते हैं। त्यो त्यों, धीरे धीरे उसमें आनन्द आता जाता है। जैसे कोई अनजान आदमी हमारे समागममें आता है तब पहले उसकी असली खूबी हम नहीं जानते परन्तु जब खूब जान पहचान होजाती है, बार बार उससे काम पड़ता है और गहरी मित्रता हो जाती है तब उसके गुण, स्वभाव तथा रुचि ठीक ठीक समझ सकते हैं। इसी तरह भगवानकी भक्तिसे

क्या लाभ है यह हम अभी ठीक ठीक नहीं जानते क्योंकि अभी हम नवसिख भक्त हैं, अभी हम प्रभुसे दूर रहनेवाले हैं, अभी हम कच्चे भक्त हैं और अभी प्रभुसे हमारी ठीक तौरपर जान पहचान नहीं हुई है, इससे प्रभुके गुणगानसे क्या लाभ है, परमार्थके काम करनेसे क्या लाभ है, प्रभुकी इच्छाके अधीन होजानेसे क्या लाभ है, प्रभुमयी जिन्दगी करदेनेसे क्या लाभ है, प्रभुका नाम स्मरण करनेसे क्या लाभ है और प्रभुकी सेवा करनेसे तथा प्रभुके नामपर दान देनेसे क्या लाभ है यह हम नहीं जानते। धीरे धीरे जब हमारी भक्ति बढ़ जायगी तब इन सब विषयोंके लाभ देख कर हमें आश्चर्य हुए विना नहीं रहेगा। भक्तिके जो जो अंग हैं वे सब अंग मनुष्यकी जिन्दगी बदल दे सकते हैं, सिद्धि दे सकते हैं। परन्तु हम अभी अधूरे भक्त हैं इसलिये इन सब विषयोंकी सच्ची खूबी नहीं समझ सकते। याद रहे कि ईश्वरकी भक्ति करना बहुत बड़ी बात है इससे सब तरहका लाभ हो सकता है और व्यवहार तथा परमार्थ दोनो भक्तिसे सुधर सकते हैं। इसलिये बन्धुओ! हिम्मत न हार कर, कायर न होकर तथा शंका न करके भक्तिमें लगे रहिये तब धीरे धीरे सर्वशक्तिमान महान परमात्माकी महिमा समझियेगा, फिर तो उसमें ऐसा महा आनन्द आजायगा कि जिसका वर्णन नहीं किया जा सकता। ऐसा अलौकिक अखण्ड आनन्द लेना हो तो भक्तिमें लगे रहिये, भक्तिमें लगे रहिये।

२९–कितनेही लड़कोंको मिठाई लेना पसन्द है परन्तु उसका दाम देना पसन्द नहीं। वैसे कितनेही आदमियोंको धर्म चाहिये परन्तु धर्म लेनेके लिये जो दाम देना चाहिये वह देना पसन्द नहीं।

दुनियाके सब धर्मशास्त्र कहते है कि धर्म लेने और प्रभुको प्रसन्न करनेके लिये कुछ त्याग करना चाहिये। विना त्याग किये कोई काम नहीं हो सकता। त्यागका दूसरा नाम यज्ञ है और त्यागका तीसरा नाम दान है। इसलिये शास्त्रोंमें दानकी महिमा वारंवार आया करती है। तोभी हम देखते हैं कि बहुत आदमी कितनेही समय देने योग्य अनेक प्रकारका दान नहीं देते। इससे वे पीछे रह जाते है। व ऐसी स्थितिमें चाहे जो दान कर सकते है, फिर भी आलसके कारण, मनकी कमजोरीके कारण, मौज शौककी इच्छाके कारण, स्वार्थके कारण, भयके कारण और अज्ञानताके कारण वे समयपर योग्य रीतिसे दान नहीं कर सकते। कितने आदमी समझनेपर भी और मनमें देनेकी इच्छा होनेपर भी कई किस्मका दान नहीं दे सकते। फिर भी उनको धर्म चाहिये तथा प्रभु चाहिये। यह बात ठीक तौरपर समझानेके लिये एक भक्तराज महाराज कहते थे कि–

एक छोटे लड़केको मिठाई खानेका बड़ा शौक था। वह लड़का अपने बापके साथ बाजारमें गया तो हलवाई की दुकान सामने आनेपर अपने बापसे कहने लगा कि बाबू! मुझे हलवा लेदो, बापने हलवा लेदिया और लड़केसे कहा कि इसका दाम अपनी जेबसे निकाल कर दो। लड़का बोला कि मेरे पास पैसा नहीं है। तब उसके बापने कहा कि मैंने कल तुम्हें दो आने पैसे दिये थे देखो तुम्हारी जेबमें होंगे। लड़केने देखा कि सच-

मुच जेबमें दो आने पैसे हैं परन्तु उसे देनेका मन न होता था। यह देख कर हलवाईने कहा कि पैसा दो तो हलवा दूं, परन्तु पैसा नहीं दिया इससे हलवाईने उसको हलवा नहीं दिया। लड़का रोने लगा। तब उसके बापने कहा कि यह कैसे होगा कि पैसा न दो और मिठाई खाओ! हलवा लेना हो तो पैसा दो। हलवा खाना पसन्द है और पैसा देनेके वक्त रोते हो इसके क्या माने? मुफ्त हलवा कौन देगा? उसका दाम तो देना ही पड़ेगा। इस प्रकार जब उस लड़केको बहुत समझाया तब मन मसोसते मसोसते लाचार होकर उस अज्ञान लड़केने हलवाईको पैसा दिया; परन्तु बापके साथ थोड़ा लड़ झगड़ कर।

इसी तरह कितने हरिजनोंको धर्म लेना पसन्द है परन्तु धर्म लेनेके लिये उसकी कीमतके तौरपर जो दान देना चाहिये वह नहीं देते। यह सुन कर कोई कोई कहेंगे कि सब आदमी दान कहांसे दे सकते हैं? जो अमीर है वह दान दे सकता है परन्तु गरीब मुश्किलसे अपना पेट भरते हैं वे दान कहांसे देंगे? इसके उत्तरमें महात्मा कहते हैं कि—

दान दिये बिना नहीं चलनेका। प्रभुका कर चुकाये बिना उसके मार्गमें आगे जा नहीं सकते। व्रजकी नाजुक प्रेमिली, प्रभुकी प्यारी गोपियोंको भी दान देना पड़ा था अर्थात् प्रभुका कर चुकाना पड़ा था। तब प्रभुसे दूर पड़े हुए प्रभुका कर चुकाये बिना व्यवहारी मनुष्योंका कैसे चलेगा? प्रभुके मार्गमें जानेके लिये दान तो देना ही पड़ेगा। दान दिये बिना प्रभुके मार्गमें नहीं जा सकते। परन्तु दान शब्द सुन कर और कर शब्द सुन कर हट जानेकी जरूरत नहीं है। क्योंकि सिर्फ पैसे का दान नहीं किया जाता। दान अनेक प्रकारसे किया जा सकता है। जैसे—

शरीरसे परिश्रमका दान किया जा सकता है, वाणीका दान

किया जा सकता है, क्षमाका दान किया जा सकता है, शान्तिका दान किया जा सकता है, इन्द्रियनिग्रहका दान किया जा सकता है। कितने ही जीवोंको अभयदान किया जा सकता है। बुद्धिका दान किया जा सकता है, स्वार्थत्यागका दान किया जा सकता है, मीठे शब्दोंका दान किया जा सकता है, ज्ञानका दान किया जा सकता है, हास्यका दान किया जा सकता है और अंतरात्माका दान भी किया जा सकता है। यों अनेक प्रकारका दान किया जा सकता है। इसमें से जो दान जिस समय देना चाहिये उस समय वह दान देनेसे मनचाहा फल मिल सकता है। इसके लिये हमारे शास्त्रोंमें कहा है कि भिन्न भिन्न तीर्थोंमें भिन्न भिन्न दानका माहात्म्य है। जैसे किसी तीर्थमें गोदानका फल अधिक होता है, किसी तीर्थमें अन्नदानका फल अधिक होता है, किसी तीर्थमें भूमिदानका फल श्रेष्ठ कहा है, किसी तीर्थमें सुवर्णदानका बखान है और किसी तीर्थमें ज्ञानदान श्रेष्ठ माना जाता है, इसी तरह भिन्न भिन्न पर्वपर भिन्न भिन्न वस्तुओंका दान करनेका विधान है। जैसे—किसी समय तिलका दान अच्छा गिना जाता है; किसी समय घीका दान अच्छा माना जाता है, किसी समय लड्डूका दान अच्छा माना जाता है, किसी समय वर्तनका दान अच्छा माना जाता है, किसी समय मधुका दान अच्छा माना जाता है, किसी समय दूधका दान अच्छा माना जाता है और किसी समय लोहेका तथा सिलका दान भी अच्छा समझा जाता है।

यह सब विषय हमें यह सिखाते हैं कि सिर्फ धनका दान ही सब कुछ नहीं है, जिस समय जिस जगह जिस किस्मके दानकी ज़रूरत होती है उस समय उस जगह उस वस्तुका दान करनेसे अधिक पुण्य होता है; यह नियम समझ कर अपनी

स्थितिके अनुसार और आसपासके संयोगोंके अनुसार हमें दान करना सीखना चाहिये। और परम कृपालु परमात्माने हमें जिस किस्मका इनाम दिया हो उसका अधिक दान करना चाहिये। जैसे—शरीर अच्छा हो तो आप मिहनत करके सेवाका काम करना चाहिये। बुद्धि विशाल हो तो उसका लाभ—उसका दान लोगोंको देना चाहिये। धन अधिक हो तो उसका दान करना चाहिये। वाणीसे किसीका भला हो सके तो अच्छी बात बोलना चाहिये। इस तरह जिससे जो बने वह दान करना ही चाहिये। दान किये बिना आगे नहीं बढ़ सकते। यह नहीं हो सकता कि मिठाई खायं और पैसा न दें। इसलिये अगर धर्म पालना हो और प्रभुको पाना हो तो अपनी शक्ति और स्थितिके अनुसार किसी न किसी प्रकारका दान तो देना ही पड़ेगा। धनके दानसे क्षमाका दान, शक्तिका दान, ढारसका दान, ज्ञानका दान, अभयदान और हृदयका दान उत्तम है। इसलिये बन्धुओ! सत्यधर्म लेना हो और परम कृपालु परमात्माका प्यारा होना हो तो धनके दानके साथ इस प्रकारका दान करना सीखिये। तब प्रभुके रास्तेमें आसानीसे आगे बढ़ सकेंगे।

३०—गुरु बनानेका उपाय।

एक बड़े जेलखानेमें बहुतसे कैदी थे, उन सबने अपराध किया था इससे उन्हें कैदकी सजा हुई थी। उनमें एक बूढ़ा और पुराना कैदी था। बहुत कैदी उसके पास आकर बैठते और वह हररोज उनसे नयी नयी बातें कहता। किसी दिन कहता कि आज हमारे महाराजा साहब दिल्ली जानेवाले हैं; किसी दिन कहता कि आज हमारे नगरसेठके यहां ब्याह है; किसी

दिन कहता कि आज नगरमें फलाना बड़ा आदमी गुजर गया इससे स्कूल बंद है; किसी दिन कहता कि आज ज्योनार है। इसतरह वह हररोज कुछ न कुछ नयी खबर कहा करता। इससे सब कैदियोंको बड़ा आश्चर्य होता और उसपर निगरानी करनेवाले जलके सिपाही भी आश्चर्य करते। सब कैदी सोचते कि जैसे हम कैद है वैसे यह आदमी भी कैद है; जैसे हमने पाप किया है वैसे इसने भी पाप किया है, जैसे हमारे हाथमें बेड़ी है वैसे इसके हाथमें भी बेड़ी है। तोभी यह कैदी सब बात कैसे जान जाता है? इसके पास अखबार नहीं आता, चिट्ठी नहीं आती और न कोई आदमी कैदखानेमें आकर इससे बात कर सकता है तब यह शहर की खबर कैसे रखता है? इसके लिये सब अपने मनमें हैरान होते और आश्चर्य मानते। एक दिन एक चौकीदारने उस बूढ़ेसे पूछा कि तू इस तरह गुप बन बैठा है और जो खबर दूसरे कैदी नहीं जानते उसे तू जान जाता है इसका क्या कारण है?

उस बूढ़े कैदीने कहा कि महाशय! मैं जिस कोठरी में रहता हूं उसमें एक खिड़की है। उस खिड़कीसे मुझे खबर मिला करती है। उसके पास खड़े होनेसे रास्तेकी सब चीजें दिखाई देती हैं। इससे जब मौका मिलता है तब उस खिड़कीके पास जाकर खड़ा रहता हूं और उधरसे जो आदमी जाता है उससे रोज कुछ खबर पूछ लेता हूं या उसकी बात सुन लेता हूं और फिर वही अपने साथियोंको कह सुनाता हूं। इससे बहुतसे कैदी मुझे मानते हैं और बातें सुननेके लिये मेरी पास चले आते हैं। परन्तु इसमें मेरा कोई चमत्कार नहीं है। यह तो मुझे जो कोठरी मिलगयी है उसकी खूबी है क्योंकि उसीसे मैं सब हाल जान सकता हूं।

बन्धुओ ! यह दृष्टान्त देकर एक महात्मा अपनी सत्संग मंडलीमें कहते कि भाइयो ! मुझमें कुछ तत्व नहीं है। मैं तो तुम्हारे ही ऐसा कैदी हूं, कुछ कैदसे यानी कर्मके वन्धनसे छूट नहीं गया हूं। परन्तु तुमसे जो ऐसी बाते करता हूं। उसका मुख्य कारण यह है कि मुझे एक छोटीसी कोठरी मिल-गयी है वह कोठरी क्या है यह पूछते हो? वह कोठरी श्रद्धा है। वह कोठरी प्रभुके ऊपरका प्रेम है। वह कोठरी अपने भाइयोकी सेवा है। वह कोठरी हमारा उत्तम धर्मशास्त्र है वह कोठरी प्रभुका नामस्मरण है। वह कोठरी भक्तकी महिमा समझना है। वह कोठरी प्रभुका गुण गाना है। वह कोठरी ईश्वरका उपकार मान-ना है। वह कोठरी अन्तःकरणकी शुद्धि है। इस तरह तरह तरहकी कोठरियां भिन्न भिन्न जिनको मिल जाती हैं वे गुरु बनजाते है। इसलिये बन्धुओ ! अगर आपको भी आगे बढ़ना हो और बहुत आदमियों पर गहरा असर डालना होतो ऐसी एकाध बड़ी कोठरी लेलीजिये। आगे जाकर उससे आप बहुत कुछ जान जायंगे और गुरुत्व प्राप्त होजायगा। भाइयो ! गुरुओंसे डाह करनेमें ही मत पड़े रहिये वरंच गुरु बननेकी कुञ्जी लेलीजिये और ऐसा परिश्रम कीजिये कि आगे जाकर दूसरे बड़े गुरुओंके समान श्रेष्ठ बन सके। यही हमारी विनती है।

३१—जो मा बाप अपने लड़कोंको ईश्वरी ज्ञान देनेकी मिहनत नहीं करते वे अपने लड़कोंका बहुत बुरा करते हैं यह जान लीजिये।

ईश्वरी ज्ञान कितनी बड़ी ऊंची बात है यह बहुत आदमी

नहीं जानते; इससे ज्ञान फैलानेके विषयमें लापरवा रहते हैं। जंगली आदमी ऐसी भूल करें तो यह दूसरी बात है परन्तु हमने देखा है कि अच्छे गिने जानेवाले मनुष्य तथा कितने ही हरिजन भी इस विषयमें लापरवाही रखते हैं और आप नियमसे चलते हैं मगर अपने लड़कोंमें उस प्रकारका ज्ञान बढ़ानेके लिये कुछ भी विशेष परिश्रम नहीं करते। ऐसा करना बहुत खराब है। इसके लिये ताली लगेहुए भक्त कहते हैं कि—

कोई लड़का माबापकी भूलसे गिर पड़े तो उससे वह लूला या लँगड़ा होता है अथवा मा बापकी लापरवाहीसे बच्चोंकी बीमारी बढ़ जाय और उससे वह अंधा, काना या बहरा हो जाय या और किसी तरह अंग भंग हो जाय तो वह जितना खराब है उससे ज्यादा खराबी अपने बालकोंको अज्ञान रखने, अनपढ़ रखने और मूर्ख रखनेमें है।

क्योंकि अज्ञानताके कारण ही उनकी सारी जिन्दगी दुःखमें बीतती है; अज्ञानताके कारण ही वे अनेक प्रकारके पापमें फंसते हैं और अज्ञानताके कारण ही वे मानसिक आनन्द नहीं भोग सकते तथा बुद्धिबलका आनन्द भी नहीं पा सकते। इससे उनका सुख बहुत छोटी सीमामें आजाता है। इसलिये अपने बालकोंको अज्ञान रखना उनकी जिन्दगी बिगाड़ देनेके बराबर है। अपने बालकोंको ईश्वरी ज्ञानके बिना रखना उन्हें पढ़ा लिखा ब्याह करा और मौज मजा कराकर नरकमें डालनेके बराबर है। जिस मनुष्यमें ईश्वरी ज्ञान नहीं होता उसको नरकमें जाना ही पड़ता है। इसलिये अपने बालकोंको ईश्वरी ज्ञान न देना बहुत ही खराब है। ईश्वरी ज्ञानके बिना मनुष्योंकी जिन्दगी बेसत्तकी होती है; ईश्वरी ज्ञानके बिना मनुष्योंकी जिन्दगी पोलमपोल होती है; ईश्वरी ज्ञानके बिना मनुष्योंकी जिन्दगी लोस और

लालचसे भरी होती है; ईश्वरी ज्ञानके विना मनुष्योंकी जिन्दगी ऊंचे उद्देश्योंसे शून्य होती है; ईश्वरी ज्ञानके विना मनुष्योंकी जिन्दगी निस्तेज होती है; ईश्वरी ज्ञानके विना मनुष्योंकी जिन्दगी पापकी तरफ़ झुकने वाली होती है और ईश्वरी ज्ञानके विना मनुष्योंकी ज़िन्दगी अंधकारमय होती है। ऐसी अधम ज़िंदगीमें अपने बालकोंको डाल रखना और नरकके यमदूतोंके हाथमें उनको सौंपना क्या बहुत बड़ी भूल नहीं है? यह क्या, भयंकर अपराध नहीं है? और यह क्या हमारे बालकोंकी, सबसे बड़ी खराबी नहीं है? बंधुओ! अपने बालकोंको सबसे [illegible] और सबसे ऊंचा ईश्वरी ज्ञान देनेकी कोशिश कीजिये कि जिससे वे ऐसी भयंकर खराबीमें न रहजायं और उनकी यह जिन्दगी सुधरे तथा परलोक सुधरे।

१२–हृदयमें जमे हुए पापको निकालनेके विषयमें।

इस दुनियामें बहुत आदमी भक्ति करते हैं; इतना ही नहीं; बहुत करके सबके चित्तमें धर्मकी तथा ईश्वरकी रुचि होती है तो भी भक्तोंके मुख्य दो प्रकार होते हैं। एक तो वे जो भक्तिके बाहरी चिन्ह धारण करके ही प्रसन्न होजाते हैं और अंत तक बाहरी क्रियाएं करनेमें ही पड़े रहते हैं; अपना अंतर सुधारनेकी तरफ़ ध्यान नहीं देते। वे कच्चे भक्त कहलाते हैं, वे ऊपरी भक्त कहलाते हैं और वे व्यावहारिक रीतिसे भक्त गिने जाते हैं; परन्तु जो प्रभुके प्यारे भक्त होते हैं वे कुछ और ही प्रकारके होते हैं। क्योंकि वे जबसे भक्तिमें लगते हैं और प्रभुको शरण लेते हैं तबसे धर्मके बाहरी मुख्य मुख्य नियमोंको पालते हैं परन्तु इतनेसे उनको

तृप्ति नहीं होती। वे अपने हृदयको देख सकते हैं और उसको देखनेसे उन्हें जान पड़ता है कि हमारे मनमें तो अभी अनेक प्रकारकी पापवासनाएं मौजूद हैं जब तक ये पाप-वासनाएं नहीं जातीं तब तक मोक्ष नहीं मिल सकता। इसलिये अपने अन्तरमें मौजूद पापोको निकाल डालना चाहिये। ऐसा मालूम होनेसे वे अपना मानसिक पाप छोड़नेके लिये बहुत कोशिश करते हैं परन्तु अक्सर उनका वह पाप नहीं जाता। क्योंकि मुद्दतसे ऐसा पाप करनेकी उनमें लत पड़ी रहती है, इतना ही नहीं मनका स्वभाव ही मोहकी तरफ, लालचकी तरफ, आशाओंकी तरफ, तृष्णाकी तरफ और स्वार्थकी तरफ दौड़ जाता है। इससे इच्छा न होनेपर भी अनेक प्रकारके पाप बहुत आदमियोंसे हो जाते हैं। परन्तु जब शुद्ध होनेकी इच्छा रखनेवाले भक्तसे अपने मरजीके विरुद्ध इस प्रकारका पाप हो जाता है तथा पापके विचार मनमें दौड़ते हैं तब उनको बड़ा कष्ट होता है। वे अपने मनको धिक्कारा करते हैं कि मैं अब भक्त होना चाहता हूं, सत्संगमें रहता हूं, सद्गुरुका उपदेश सुनता हूं, यथाशक्ति भजन ध्यान करता हूं और हृदयसे नेक होना चाहता हूं तिसपर भी मेरे मनमें पापकी वासनाएं क्यों रहती हैं? मैं मुद्दतसे पाप छोड़नेके लिये मिहनत करता हूं और मानसिक लड़ाई लड़ता हूं, फिर भी मेरे हृदयका पाप अभीतक क्यों नहीं जाता? क्या यह पाप नहीं ही जायगा? ऐसी लड़ाई मुझे कबतक करनी पड़ेगी? इस प्रकार अपने मनमें तड़पा करते हैं। तोभी अनेक भक्तोंमें किसी किसी किस्मका बड़ा पाप रहता है, वह नहीं जाता। इससे वे बहुत दुखी होते हैं; कितने ही समय ऐसे हठीले पापको बारंबार होते देख कर वे निराश हो जाते हैं और निराश होनेसे अपने उद्योगमें ढीले पड़

जाते हैं। ऐसा न होने देनेके लिये जिन सच्चे भक्तोंको अपने भीतरके पापके लिये लड़ाई करनी पड़ती है उनको महात्मा लोग कहते हैं—

बन्धुओ! जब हम शुद्धभावसे प्रेमपूर्वक प्रभुकी शरण जाते हैं उसी समय हमारे पहलेके सब पाप जलजाते हैं। परन्तु हमारे अन्तरमें पापकी जो जो वासनाएं हैं वे नहीं जातीं, वे तो बनी ही रहती हैं। जैसे—जमीनके अन्दर पड़े हुए बीजपर जब वर्षा होती है तब वह उग आता है वैसे हमारे भीतर पापकी जो वासना होती है उसको जब कोई अनुकूलता मिल जाती है तब वह पाप प्रगट होजाता है। क्योंकि वह पाप मर नहीं जाता। उसका बीज हृदयमें पड़ा रहता है। इससे जब मौका मिलता है तब उसमें से अंकुर फूटता है। जो भक्त जागे हुए होते हैं वे इस पापको रोकदेते है और उसके अंकुरको काट डालते हैं, परन्तु जब मौका मिलता है तब पाप फिरसे अंकुरा जाता है, इस तरह बार बार हुआ करता है। क्योंकि ऐसे आरम्भके भक्त पाप त्यागनेके लिये जो जो निश्चय करते है वे निश्चय अभी कच्चे होते हैं और पापका जोर बढ़ा रहता है इससे ऐन मौकेपर पाप न करनेका निश्चय भाग जाता है और पाप होजाता है। ऐसे समय ऐसे उत्तम बननेकी इच्छा रखनेवाले भक्तोंको बड़ा पछतावा होता है और तिसपर भी बारबार वही पाप प्रसङ्गवश होजाता है और पाप न करनेका नियम टूट जाता है।

बन्धुओ! आप सच्चे भक्त होना चाहते हैं फिर भी ऐसा क्यों होता है और दयालु प्रभु ऐसा क्यो होने देता है? यह आप जानते है? इसका कारण सुनिये।—

पाप करनेकी हमारी इच्छा नहीं है, हम पाप कभी न करनेका

निश्चय करचुके हैं तोभी हमसे पाप हो जाता है और जब इस तरह पाप हो जाता है तब हमको बड़ा दुःख होता है। यह सब हाल परम कृपालु परमात्मा जानता है तोभी हमारे कल्याणके लिये जानबूझ कर ऐसा होने देता है। हमसे कुछ पाप होजाता है तो हममें दीनता रहती है, हममें छटपटाहट रहती है और अपनी कमजोरी समझमें आती है इससे प्रभुप्रेम बना रहता है। अगर भक्तिमें लगनेके साथ ही तुरत सब पाप जाता रहे तो उस आदमीको अपने थोड़ेसे छोटे छोटे कर्मोंका भी अभिमान होजाता है और उसे यह खुमारी चढ़जाती है कि मैं बड़ा बहादुर हूं। इससे उलटे वह भ्रष्ट होजाता है। ऐसा न हो बल्कि धीरे धीरे आगे बढ़ा जाय इसके लिये कितने ही भक्तोंको पापसे लड़ना पड़ता है और उनकी इच्छाके विरुद्ध पाप होजाता है। परन्तु याद रखना कि जो लोग अपने स्वार्थके लिये, पापपर प्रेम होनेके कारण पाप करते हैं उनको उनका पाप जितना सताता है उतना छटपटाते हृदयसे लाचारीसे पापके जोरसे पाप करनेवालेको नहीं सताता। इन दो प्रकारके पापके परिणाममें बड़ा अन्तर है। अज्ञानियोंके पापमें और भक्तोंके पापमें बड़ा अन्तर रहता है। अज्ञानी अपनी खुशीसे तथा पापपर प्रेम होनेसे पाप करते हैं और भक्त अपनी लाचारीसे तथा पापको धिक्कारते धिक्कारते और डरते डरते पाप करते हैं। इसलिये अज्ञानियोंका पाप जैसा जोरावर होता है वैसा जोरावर भक्तोंका पाप नहीं होता। इन दोनोंके पापके फलमें अन्तर होता है।

अगर कोई तमाशगीर तमाशा दिखाने आया हो और उसका तमाशा अच्छा लगता हो तो कुछ और देरतक तमाशा देखनेकी इच्छासे हम उसको पैसा देनेमें विलम्ब लगाते हैं। इसी तरह

प्रभु जब हमें बहुत बड़ा भक्त बनाना चाहता है तब वह हमसे बहुत अधिक भजन, ध्यान, तप, दान आदि कराना चाहता है। याद रहे कि जबतक हृदयका पाप न जाय और पापके लिये हृदयमें चिन्ता रहे तभीतक ये सब विषय ठीक ठीक हो सकते हैं। जब हृदयका पाप जाता रहता है तो इन सब विषयोंमें ढिलाई आ-जाती है इससे भक्तिमें आगे नहीं बढ़ सकते। इसलिये पाप होजानेका जो दुःख होता है वह दुःख भगवान तुरत ही नहीं दूर करता। अगर वह दुःख दूर होजाय तो हम अपनी भक्तिमें वहीं रुक जायें और महान भक्त न हो सकें, ऐसी खराबी न होने देने, हमें जागृत रखने और प्रभुसे तार लगाये रहने तथा दीनता बनाये रखनेके लिये वह हमारे हृदयका पाप उसी समय नहीं निकाल देता, वरंच धीरे धीरे निकालता है।

सांपके शरीरपर जब अन्दरसे नया चमड़ा आता है तब उसका पुराना चमड़ा यानी केंचुल आप ही उतर जाती है। वैसे ही जब हमारी भक्ति परिपूर्ण होगी तब सब पाप आप ही जाते रहेंगे। इसलिये हे हरिजनो! आप पापकी चिन्तामें मत पड़े रहें बल्कि जैसे बने वैसे दीनता रख कर तथा भगवद् आश्रयका बल रखकर भजन ध्यानमें आगे बढ़ते जाइये, समय आनेपर पाप आपसे आप जाता रहेगा।

हृदयका पाप छोड़नेका सबसे सहज उपाय यह है कि अपने हृदयमें प्रभुको पधरावें। जैसे शेरकी गुफामें स्यार नहीं जा सकता वैसे जिसके हृदयमें प्रभु पधारता है उसके पास किसी किस्मका पाप नहीं आसकता। इसलिये अगर सहजसे सहज रीतिपर पापको दूर करना हो तो पापकी फिकर करनेमें मत लगे रहिये और यह न कहा कीजिये कि पाप नहीं जाता, पाप नहीं जाता। इसके लिए निराश भी मत हूजिये कि पाप नहीं जाता

तो हम क्या करें ? श्रद्धासे, प्रेमसे और ईश्वरकी महिमा समझकर ईश्वरको अपने हृदयमें लाइये तब पापकी हिम्मत नहीं कि वह थोड़ी देर भी वहां रहसके, इसलिये पापसे हिम्मत न हार कर यह उपाय आजमानेकी कोशिश कीजिये ।

३३—हृदयमें जमे हुए पापको निकालनेके विषयमें (२)

पापको त्यागनेके विषयमें यह बात भी ध्यानमें रखने योग्य है कि हम सिर्फ अपने बलसे पापको काढ़ना चाहते हैं परन्तु अकेले अपने बलसे पाप नहीं जानेका । पापको निकालनेके लिये जब प्रभुकी मदद लेंगे तभी वह दूर हो सकेगा । प्रभुकी मदद लेनेकी रीति यह है कि उसपर दृढ़ विश्वास रख कर प्रार्थना करते रहना चाहिये कि हे प्रभु ! जो पाप मुझे नहीं रुचता वही पाप मुझसे बारंबार क्यों होता है ? हे नाथ ! इस महादुःखसे अब हमें छुड़ा। इस तरह दिलके हौसिलेसे, सच्ची छटपटाहटसे, सच्ची दीनतासे और असली श्रद्धासे अगर बारंबार प्रार्थना की जाय तो इससे भी धीरे धीरे भीतरका पाप मिटता जाता है । इसलिये हरिजनोंको यह अक्सीर उपाय भी आजमाना उचित है । प्रभुकी मदद लेनेसे उसके बलसे पाप दूर किया जा सकता है, यह बात अच्छी तरह समझानेके लिये एक संत कहते थे कि—

एक बुढ़िया थी, उसके एक लड़का था जो बहुत ही खराब चालचलनका था, उसको सुधारनेके लिये उस बुढ़ियाने बहुत उपाय किये परन्तु वह लड़का नहीं सुधरा । इसके बाद वह बुढ़िया हार कर एक महात्माके पास गयी और बोली कि

महाराजजी ! मैने अपने लड़केको सुधारनेके लिये बहुत उपाय किये । जैसे—उसे डांटा, मारा, लालच दिया, शरमाया, कैदमें रखवाया, भले मानसोंकी सलाह दिलवायी और जो कुछ बना सब किया परन्तु लड़का नहीं सुधरता अब मैं क्या करूं ? इसका कोई रास्ता बतानेकी कृपा कीजिये। उस महात्माने कहा कि माताराम ! तुमने बहुतेरे उपाय किये परन्तु इसको सुधारनेके लिये उस अनन्त ब्रह्माण्डके नाथसे प्रार्थना नहीं की, उसकी प्रार्थना किया करो और उससे मदद मांगा करो, उसके बलसे लड़का सुधर जायगा। जहां तुम्हारा बल नहीं काम आवेगा वहां उसका बल काम आवेगा । इसके बाद अपने लड़केको सद्बुद्धि देनेके लिये वह बुढ़िया प्रेमपूर्वक प्रभुकी प्रार्थना करने लगी । इससे थोड़े दिनोंमें उसका उपद्रवी लड़का सुधर गया । इस प्रकार जहां अपना कुछ वश नहीं चलता वहां भी प्रभुकी मददसे काम बन जाता है । इसलिये अगर तुम्हारे हृदयका पाप न जाता हो तो प्रभुकी मदद लेनेकी कोशिश करो ।

बन्धुओ ! पाप हमारा शत्रु है इससे प्रभु स्वयं पापका नाश नहीं करता, बल्कि वह हमारे हाथसे पापका नाश कराना चाहता है ; वह पापका नाश करनेके साधन हमें जुटा देता है । जैसे-एक गांवमें चोर आते और वहांके लोगोंको हैरान करते थे । गांववालोंने राजासे फरयाद की कि हमको चोर लूट लेते हैं । राजाने कहा कि मैं तुमलोगोंको हथियार देता हूं उनका सामना करो । गांववालोंने कहा कि हम चोरोंसे पार नहीं पासकते इसलिये आपकी मददकी जरूरत है। राजाने कहा कि मैं तुम्हारी मदद करनेको तय्यार हूं, तुमको रुपये और हथियार देता हूं ; तुमलोग अपने गांवका किला बांधलो तब चोर नहीं आसकेंगे । इसके बाद उनलोगोंने किला बनाया और हथियार चलाना

सीखा ; इससे चोरोंके ज़ुल्मसे बच गये । इसी तरह भाइयो! हमारे पापरूपी शत्रुका नाश करनेके लिये दयालु प्रभु हमें साधन जुटा देता है और अच्छे अच्छे मौके देता है। इन सबका उपयोग पापसे लड़नेमें करना चाहिये। मतलब यह कि अगर हम हमेशा अच्छे अच्छे काम करें, धर्मके काम करें और भजन ध्यान किया करें तो ये सब पुण्यके काम हमें पापसे बचानेके लिये भारी किले समान हो जाते हैं जिससे आगे जाकर हम पापसे बच सकते है। अगर हृदयके पापसे बचना हो तो शुभ काम के किले बनाइये और भजन, ध्यान, कथा, कीर्त्तन, जप, तप इत्यादि हथियार लगाना सीखिये। तब पापरूपी दुश्मनका नाश कर सकेंगे।

कितने ही किस्मके पौधोंको किसान ऊपर ही ऊपरसे वर्षों काटा करते हैं परन्तु वे पौधे थोड़े ही दिनोंमें फिर पनप जाते है। अगर एक बार उनकी जड़में नमक भर दिया जाय तो वे फिर न उगें। जड़में नमक डालनेसे जड़का नाश हो जाता है इससे पौधा फिर नहीं पनप सकता। इसी तरह हमारे भीतर पापके रहनेकी जो जगह है तथा पापके उठनेकी जो जगह है वहां पर अगर प्रभुप्रेमको भर रखें और प्रभुके नामस्मरणका जोर रखें तो अंतको पाप निर्मूल हो जाता है। जब तक पापकी जड़में प्रभुप्रेमरूपी नमक नहीं पड़ता तब तक पापका जहरीला कांटेदार पौधा बार बार उगा करता है। उसको रोकनेका उपाय यही है कि हृदयमें प्रभुप्रेम बढ़ावे और प्रभुके नामका स्मरण बढ़ावे। तब पापका पौधा फिर नहीं उग सकेगा।

बंधुओ! याद रखना कि महाराजाधिराज कहीं अकेले नहीं जाते, वह जहां जाते हैं वहां बड़े बड़े अफसर उनके साथ रहते हैं। वैसे ही जिसके हृदयमें प्रभुप्रेम आता है उसके

हृदयमें प्रभु स्वयं आता है। और यह बात सहज ही समझमें आसकती है कि प्रभु कभी अकेला या खालीहाथ किसीके यहां नहीं जाता। प्रभुके साथ तथा प्रभुप्रेमके साथ अनेक प्रकारके सद्गुण होते हैं। इससे जहां प्रभुप्रेम होता है वहां सद्गुण बढ़ जाते हैं और दुर्गुणको तथा पापको आपसे आप भाग जाना पड़ता है इस तरह सद्गुणोंको बढ़ा कर पापका नाश कर सकते हैं। अगर भीतर उठते हुए पापोंसे बचना हो तो प्रभुप्रेमी बनिये और सद्गुणोंको खिलने दीजिये।

जैसे किसी आदमीकी कमरमें रस्सी बांध कर दो आदमी इधर उधर खींचते हों वैसे पुण्य और पाप हमारे मनको भिन्न भिन्न दिशामें खींचते हैं। इसमें जब पापका जोर बढ़ जाता है तब हम पापकी तरफ खिंच जाते हैं और जब पुण्यका जोर बढ़ जाता है तब पुण्यकी तरफ खिंच जाते हैं। इन दोनोंके खिंचावका मूल हमारे मनमें ही है। इसलिये अगर पापके खिंचावमें न जाना हो तो मनमें पापकी जो जो वासनायें उठें उनके साथ मनको खेलने मत देना; बल्कि जैसे बने वैसे पापके विचारको मनसे धकेला कर दूर भगादेना और उस समय किसी दूसरे काममें लगजाना। ऐसा करना आवे तो पापके खिंचावसे बच सकते हैं। मनका ऐसा स्वभाव है कि जिस प्रकारके विचार बार बार करें, जिस प्रकारके विचार बहुत गहरे डूब कर किया करें और जिस प्रकारके विचार बड़े प्रेमसे किया करें उस प्रकारके काम किसी न किसी समय हमको करने पड़ते हैं। इसलिये पापके विचारोंसे मनको रमने मत देना; बरंच जब पापके विचार मनमें आजायें तो तुरत ही उनको रोक देना। अगर उन विचारोंको उसी समय आसानीसे रोक न सकें तो अपनी रुचिलायक किसी दूसरे काममें लगजाना। ऐसा करनेसे भी धीरे धीरे

पापके खिंचावसे बच सकते हैं और भीतरका पाप घटता है। इसलिये पापके विचारोंके साथ न खेलना और शुभ काममें लगे रहना भी पापसे बचनेका बढ़िया उपाय है।

छोटा बालक जब पहले पहल चलना सीखता है तब बार बार गिर पड़ता है। किसी समय चोट लगजाती है और किसी समय कुछ अधिक हैरान भी होना पड़ता है। तोभी वह फिरसे उठ कर चलने लगता है। जब ऐसा करता है तभी वह आगे जाकर अच्छी तरह चलना और दौड़ना सीखता है। इसी तरह याद रखना कि जब हम भक्त बनना आरम्भ करते हैं तब बहुत पवित्रतासे रहना चाहते हैं तोभी कभी कभी किसी किसी किस्मका पाप होजाता है। परन्तु ज्यों ज्यों हमारी भक्ति बढ़ती जाती है, ज्यों ज्यों हमारा निश्चय दृढ़ होता जाता है, ज्यों ज्यों प्रभुकी महिमा समझमे आती जाती है और ज्यों ज्यों प्रभुप्रेममें आनन्द आता जाता है त्यों त्यों हृदयमें उठनेवाले पाप आपसे आप दूर होजाते हैं जैसे कोई बालक एकदम पहली ही बार चलना नहीं सीखजाता वैसे किसी भी भक्तका पाप भक्तिमें घुसते ही नहीं जाता रहता, वरंच धीरे धीरे ज्यों ज्यों प्रभुप्रेम बढ़ता जाता है त्यों त्यों दूर होजाता है। इसलिये पाप निकालनेमें मिहनतकी तथा धीरजकी भी जरूरत है यह बात याद रखना।

एक राजाके सिपाही दुश्मनसे लड़ते थे परन्तु दुश्मनका जोर बहुत ज्यादा था इससे वे सिपाही बार बार हार जाते थे और हारके कारण कितने ही सिपाही निराश होजाते थे। यह देख कर उनके कमाण्डरने कहा कि ऐ बहादुर योद्धाओ! हारनेसे अफसोस मत करो क्योंकि हमलोग सिपाही बच्चे हैं इसलिये अपनी जिन्दगीकी आखिरी घड़ीतक अपने दुश्मनसे लड़ना हमारा कर्तव्य है। याद रखना कि हमारा मालिक बहुत बड़ा है

इसलिये अन्तको उसीकी जीत है । अभी एकाधवार हारगये तो क्या हुआ डरो मत, हिम्मत रख कर, लड़ा करो। तुम्हारी हारसे तुम्हारी मिहनतका इनाम कहीं जानेवाला नहीं है । यह सुनकर उसके सिपाही बहादुरीसे लड़े और अन्तको जीतगये। यह दृष्टान्त दे कर एक भक्तराज महाराज पापसे हारे हुए अपने हरिजनोंसे कहते कि भाइयो ! तुम अफसोस मत करो, उस राजाके सिपाहीकी तरह हम भी प्रभुके सिपाही हैं और आसुरी सम्पत्तिसे दैवी सम्पत्तिको लड़ाना हमारा कर्त्तव्य है । इसके सिवा यह युद्ध हमारी जिन्दगीभर चलेगा और उसमें ईश्वरकी कृपासे अन्तको हमारी ही विजय है ; क्योंकि परम कृपालु परमात्माने हमें वचन दिया है कि "न मे भक्तः प्रणश्यति", मेरे भक्तोंका बुरा होता ही नहीं। इतना ही नहीं श्रीमद्भगवद्गीतामें श्रीकृष्ण भगवानने यह भी कहा है कि पाप जल्द सुलग जाने-वाला काठ है और भगवानका ज्ञान अग्नि है। काठ जलाते अग्निको क्या देर ? इसी तरह सच्चे ईश्वरी ज्ञानके सामने पाप किसी हिसाबमें नहीं है। इसलिये याद रखना कि अभी पाप हमें चाहे जैसा जबरदस्त लगता हो परन्तु अंतको जीत हमारी ही है। यह निश्चय करके पापसे भक्तिके हथियार लेकर लड़ते रहिये। लड़ते रहिये।

३४—हृदयमें जमे हुए पापको निकालनेके विषयमें । (३)

कितनी ही बार कितने ही भक्तोंमें पापका जोर बहुत ज्यादा रहता है। जब उन्हें सच्ची भक्ति होती है तब पापकी दुष्टता उनसे

सही नहीं जाती, इससे अपने अंदर के छोटे छोटे पापको देख कर भी उनका जी दुखी होता है और उसके लिये वे बहुत अफसोस किया करते हैं। क्योंकि इस विषयमें उनका हियाव बहुत नाजुक होजाता है और शुद्ध अन्तःकरणसे वे बहुत ही अच्छे होना चाहते हैं; इससे थोड़ासा पाप भी उनको बहुत बड़ा लगता है जिससे वे पापके विरुद्ध बड़ा कोलाहल मचाते हैं और अपने पापको याद करके बहुत अफसोस किया करते हैं। ऐसे भक्तोंको आगे बढ़े हुए संत कहते हैं कि—

हे हरिजनो! पापको वार वार याद करने और जो पाप हो गया उसके लिये अफसोस करते रहने तथा रोया करनेमें समय खोना उचित नहीं है और यह ऊंचे भक्तोंका लक्षण नहीं है। उत्तम बात तो यह है कि जहां तक बने पाप करना ही नहीं और इस बात पर विशेष ध्यान रखना कि किसी तरह पाप न हो जाय। तिसपर भी कभी पाप होजाय तो तुरत ही उसका पछतावा करलेना और फिर वैसा पाप न करनेका ठहराव करना और प्रभुकी तरफ ढलजाना। ऐसा करनेसे पापका सामना करनेका बल मिलता है। ऐसा न करके अगर पापसे दबजायं और जो पाप होगया उसीके अफसोसमें पड़े रहें तो उस पापका जोर उल्टे बढ़ता जाता है। ऐसा न होने देनेके लिये जो पाप होगया उसको वार वार याद मत करना बल्कि उसका विधिपूर्वक पछतावा करलेना और फिर तुरत ही प्रभुकी तरफ ढलजाना। इससे यह बात वहीं रुक जाती है, इसलिये पापको वार वार याद करके दिलगीर मत हुआ करो बल्कि उसका पश्चाताप करके तुरत ही प्रभुकी तरफ ढल जाओ। तब धीरे धीरे पापसे बच सकोगे।

बंधुओ! मेट्रिककी, बी. ए. की, वकालतकी, डाक्टरीकी, इंजीनियरीकी, कृषिविभागकी, रसायनशास्त्रकी या बिजलीकी

परीक्षाओंमें पास होना हो तो चटपट पास नहीं होजाते वरंच जब बहुत समयतक बहुत मिहनत करते हैं तब पास हो सकते हैं। इसीतरह याद रखना कि एक ही दिनमें कोई भक्त नहीं हो सकता और न थोड़े समयमें भक्तिकी परीक्षा पास कर सकता। सच्चा भक्त होनेके लिये और अन्तःकरणसे पवित्र होनेके लिये बहुत मिहनत करनी पड़ती है और बहुत धीरज रखना पड़ता है, इसलिये पापसे हार मत जाओ और उससे लड़ाई करनेसे ऊब मत जाओ; वरंच धीरज धर कर लगे रहो, प्रभु तुम्हारा मद्दगार होगा और तुम भीतरके दुःखोंसे छुटकारा पा सकोगे।

एक छोटा लड़का था। उसे उसके उपद्रवी पड़ोसियोंने डराया इससे वह डरगया परन्तु इसके बाद लड़का अपने बापकी गोदमें बैठगया। तब उसमें हिम्मत आगयी। इसके बाद कोई डराता तो वह नहीं डरता था।

इसी तरह पाप हमको डराता है तब हम उससे डरजाते हैं। अगर हम अपने प्रभुकी गोदमें बैठजायं तो हमारा डर मिट जाता है। उस समय पाप हमें डरा नहीं सकता। इसलिये भीतरके पापसे बचनेका रामबाण उपाय यह है कि अपने प्रभुकी गोदमें बैठ जायं। उसकी गोदमें बैठनेकी रीति यह है कि उसकी शरण पकड़ लें, उसका विश्वास रखें, उसे अपनी इच्छाकी लगाम सौंपदें और सब तरहसे उसके होजायं। इसका नाम प्रभुकी गोदमें बैठना है। ऐसा होजानेपर फिर पापका भय नहीं रहता। इसलिये पापके भयसे बचनेके लिये इस प्रकार प्रभुकी गोदमें बैठना सीखिये। प्रभुकी गोदमें बैठना सीखिये।

एक साधु वर्षोंसे तप करता था और पहाड़के ऊपर एकान्तमें रह कर ब्रह्मचर्य पालता था। उसके जीमें एक दिन विषय-वासनाका बुरा विचार आया। इससे वह बहुत दिलगीर हुआ।

उसने सोचा कि इतने वर्षसे इतनी मिहनत करनेपर भी मेरे अन्तःकरणमें ऐसी खराब वासना क्यों उपजी ? इसका उसे अफसोस हुआ और इसी अफसोसमें आत्महत्या करनेके विचारसे यह उठ कर चला, इतनेमें सामनेसे एक सन्त आनिकला । उसने पूछा—कहां जाते हो ? साधुने सन्तको सब हाल कह सुनाया और कहा कि पापका विचार आजानेसे मैं मरने जाता हूं। संतने कहा कि भाई ! आजतक तुम्हारे मनमें यह अभिमान था कि मै अपने तपके बलसे पवित्र रह सकता हूं, इसीसे तुम्हारा यह हाल हुआ है। अब इस अभिमानको निकाल डालो और परम कृपालु परमात्मासे प्रार्थना करते रहो कि हे प्रभु ! मुझे पापसे बचानेकी कृपा कर। तब वह तुमको पापसे बचनेका बल देगा और तुम पापसे बच सकोगे। उसने ऐसा ही किया और भीतरके पापसे बचसका।

भीतरका पाप छोड़ने के विषयमें यह बात भी ध्यानमें रखने योग्य है कि यह कुछ जल्दीका काम नहीं है बल्कि धीरे धीरे समय आनेपर हो सकता है। जैसे कोई आदमी सीढ़ीपर चढ़ना चाहे तो एकदम सब सीढ़ियो पर नहीं चढ़ सकता; धीरे धीरे एक एक सीढ़ी चढ़ सकता है। वैसे कोई किसान खेतमें अन्न बो कर तुरत ही कुठला भरलेना चाहे तो ऐसा नहीं हो सकता; परन्तु जब खाद डाले, पानी सींचे, बेड़ा बांधे और धीरजसे इन्तजारी करे तभी मौसिम आनेपर फसल खलिहानमें आती है। इसी तरह भक्तिमें लगनेके साथ ही भीतरका पाप जाता नहीं रहता, वरंच जब रात दिन भक्ति कियाकरें और पाप छोड़नेका पूरा ख्याल रखें तभी भक्ति दृढ़ होती है और इसके बाद ही पाप जाता है। इसलिये इस विषयमें बहुत उतावले मत होना, यथाशक्ति प्रयत्न करते जाना और जागते रहना तथा प्रभुकी

मदद् मांगा करना। तब धीरे धीरे भीतरका पाप दूर होता जायगा।

कोई विद्यार्थी स्कूलमें पढ़ने बैठे तो तुरत ही पंडित नहीं हो जाता, वरंच महान पंडित होनेके लिये कितने ही वर्ष लगते हैं। वैसे ही कोई आदमी भक्तिमें लगे तो तुरत ही उसके सब पाप जाते नहीं रहते, धीरे धीरे जब वह सच्चा भक्त होता है और महान भक्त होता है तभी उसके सब पाप दूर होते हैं। इसलिये नौसिख भक्तमें कुछ कुछ पाप दिखाई दे तो उसका तिरस्कार नहीं करना वरंच यह देखना सीखना कि वह अपना पाप दूर करनेके लिये अपने मनमें कितनी लड़ाई करता है। जैसे वह भक्त अपने अन्तःकरणका पाप त्यागनेके लिये सच्चे दिलसे छटपटाता है वैसे हमें भी अपने पापसे कुढ़ना चाहिये और उन पापोंको दूर करनेके लिये यथाशक्ति उद्योग करना चाहिये तथा उचित धीरज रखना चाहिये।

बन्धुओ! याद रखना कि बाहरसे भक्तिका वेश धारण कर लेना और बात है और भीतर का पाप छोड़ कर भक्त होना कुछ और ही बात है। आजके जमानेमें हम बहुतसे साधुओंको देखते हैं कि वे सिर्फ बाहरका वेश बदल कर फिरनेवाले होते हैं, भीतरसे पाप त्यागनेका परिश्रम नहीं उठाते। इससे वे आगे नहीं बढ़ सकते। जो भक्त जो त्यागी अपने भीतरके पापको नहीं देखते और उसे दूर करनेका परिश्रम नहीं करते वे किसी समय बहुत बड़े पापमें फंस जाते हैं। पाप ऐसी बुरी वस्तु है कि इसने बड़े बड़े ऋषियोंको भी नीचा दिखा दिया और पवित्र जीवन बितानेवाले स्वर्गके कितने ही देवताओंको भी भीतरके पापने नचा दिया। पापके अन्दर इतना बड़ा बल है। अब विचार कीजिये कि जब जंगलमें रहनेवाले और फल फूल खानेवाले पवित्र ऋषियोंको तथा स्वर्गमें रहनेवाले देवताओंको भी पाप नचाता

है तब इस संसारके मायामें सने हुए मनुष्योंको नचाना उसके लिये कौन बड़ी बात है ? इसलिये पापसे तनिक गफलत न करना चाहिये, बल्कि जैसे बने वैसे उसे दूर करनेका उपाय करना चाहिये और उसे दूर करनेके लिये सर्वशक्तिमान महान ईश्वरकी मदद लेना चाहिये।

भीतरका पाप दूर करनेमें ईश्वरकी कृपा बहुत मदद करती है। यह बात अच्छी तरह समझानेके लिये एक संत कहते थे कि किसी अमीरके घर मिलने जाते हैं तो कितनी ही जगह उसी कमरे में बड़े बड़े कुत्ते बैठे रहते हैं। वे हमें अनजान आदमी समझ कर भीतर नहीं जाने देते परन्तु जब मकानका मालिक स्वयं कुत्तोंको कहता है कि चुप तब वे तुरत सिर झुका लेते है और हमें मकानमें जाने देते हैं। इसी तरह पाप त्यागनेके लिये हम जब प्रभुकी मदद मांगते है तब वह अपनी मायाको खींचलेता है, और हम उसके हजूरमें जाने पाते हैं। माया यों तो बड़ी है परन्तु प्रभुके सामने किसी गिनतीमें नहीं है। इसलिये भीतरका पाप त्यागनेके लिये अपनी भक्तिके साथ प्रभुकी सहायता प्राप्त करना चाहिये।

बन्धुओ! भीतरका पाप त्यागनेके विषयमें बहुत कुछ कहा गया और अभी बहुत कुछ कहा जा सकता है। परन्तु सारांश यह है कि जो डाली पेड़से जुड़ी रहती है उसमें फल फूल होता है और जो पेड़से अलग होजाती है वह सूख जाती है, उसमें कुछ फल फूल नहीं लगता। वैसे ही जो हरिजन, जो भक्त और जो साधु सत्संगसे बिछुड़ जाते है उनका पाप नहीं जाता। परन्तु जो सत्संगमें लगे रहते हैं और प्रभुसे जुड़े रहते हैं उनका पाप धीरे धीरे जाता रहता है। इसलिये अन्तमें हमारी यही सलाह है कि भाइयो! सत्संगमें लगे रहना और प्रभुपर प्रेम

बढ़ाते जाना। उसकी कृपासे आपके भीतरके पाप दूर होजायंगे और आप सच्चे भक्त होकर असली शान्ति और महा आनन्द भोग सकेंगे। हम चाहते हैं कि परमकृपालु परमात्मा आपको ऐसा अवसर शीघ्र दे।

३५–ईश्वरने हमें जो दिया है वह दूसरोंको देना चाहिये। अगर न दें तो पाप लगता है क्योंकि हम परोसनेवाले हैं जिमानेवाला तो कोई और ही धनी है।

इस जगतमें बहुतेरे आदमियोंके पास बहुत धन होता है; बहुत आदमियोंको बड़े बड़े अधिकार होते हैं, बहुत आदमियोंमें शरीरका बल होता है; बहुत आदमियोंमें बुद्धिका बल होता है; बहुत आदमियोंमें धर्मका बल होता है; बहुत आदमियोंमें अनेक प्रकारके चमत्कार करनेका बल होता है; बहुत आदमियोंमें कोई कोई बड़ा सद्गुण होता है और बहुत आदमियोंपर अनेक प्रकारसे प्रभुकी कृपा उतरी होती है। ये सब चीजें अपनी जरूरतसे जितनी ज्यादा हो वे अपने भाई बन्दोंकी मदद करनेके लिये ही होती है। क्योंकि परम कृपालु परमात्माकी इच्छा ऐसी है कि जगतके सब जीव जैसे बने वैसे अधिक अधिक सुखी हो। इसके लिये वह कितने ही आदमियोंमें कितने ही प्राणियोंमें और कितनी ही वस्तुओंमें कुछ खास खूबी दिये रहता है। उन खूबियोंका, गुणोंका तथा शक्तियोंका उपयोग करनेसे अनेक जीवोंको अनेक प्रकारसे सहायता की जा सकती है और अनेक

जीवोंका अनेक प्रकारसे सुख बढ़ाया जा सकता है। इससे हरएक आदमीको जरूरतसे कहीं ज्यादा शक्ति दी है और यह हुक्म दिया है कि तुम्हारे पास जो अधिक शक्ति है, तुम्हारे पास जो अधिक ऐश्वर्य है और तुम्हारे पास जो अधिक ईश्वरकी कृपा है उसका लाभ जैसे बने वैसे दूसरोंको दो। तुम्हारे पास तुम्हारे कामसे जो कुछ अधिक शक्ति है वह निकम्मी बनाये रखनेके लिये नहीं है, वरंच तुम उस शक्तिका उपयोग करके आगे बढ़ो और अपने भाइयोंको उसका लाभ दे कर प्रभुके कृपापात्र बनो इसके लिये तुम्हें वह शक्ति दी गयी है। इसलिये तुममें जो गुण हो या तुममें जो शक्ति हो उससे दूसरोंको लाभ पहुँचानेमें जरा भी कंजूसी मत करना। तत्त्व समझनेवाले महात्मा कहते हैं कि—

बन्धुओ! तुम परोसनेवाले हो, माल तो किसी औरका ही है। जैसे कोई बड़ा अमीर बिरादरीभोज कराता हो और भोजनकी अनेक सामग्रीमें से कोई जलेबी परोसता हो, कोई मोहनभोग परोसता हो, कोई रबड़ी परोसता हो, कोई बरफी परोसता हो, कोई पूरी परोसता हो, कोई निमकी परोसता हो, कोई तरकारी परोसता हो, कोई जल देता हो और कोई पानबीड़ा देनेका काम करता हो जो आदमी परोसनेमें गफलत करता है और जीमनेवालोंको जरूरतकी चीज नहीं देता वह बहुत बुरा करता है। वैसे ही प्रभुके कृपापूर्वक दिये हुए गुणों तथा शक्तियोंका लाभ जो आदमी अपने भाइयों को नहीं पहुँचाता वह बड़ी भूल करता है। ऐसा करना भूल ही नहीं बहुत बड़ा पाप है, क्योंकि अपनेमें जो कुछ गुण है, जो कुछ लियाकत है या जो कुछ समृद्धि है वह सब प्रभुका माल है और वह परोसनेके लिये प्रभुने हमें हुक्म दिया है, इसलिये हमें अपने पासके मालके अन्दाजसे जी खोल कर परोसना चाहिये। अगर ऐसा न करके

जमानेमें सच्चा भक्त होना बहुत मुश्किल है। भक्तोंकी निन्दा करनेवाले मनुष्योंको यह सब याद रखना चाहिये और उसके साथ यह भी समझ लेना चाहिये कि पहले बाहरसे भक्त होते हैं और पीछे धीरे धीरे भीतरसे भक्त होते हैं। जैसे—

कितने ही गृहस्थ अपने लड़कोंको अच्छे अच्छे कपड़े गहने पहना कर गृहस्थ समान बना कर अपने साथ फिराते हैं और दूसरोंको बताते है कि हमारे लड़के भी बहुत अच्छे गृहस्थ है परन्तु सच बात यह है कि बारह चौदह वर्षकी उमरमें पगड़ी अंगरखा पहनानेसे उन लड़कोंमें गृहस्थपन नहीं आजाता। थोड़ी देर बाहरी शिष्टाचार दिखाना आवे और खूबसूरतीके साथ हाथ मुहसे जयगोपाल करना आवे तो इससे उसी समय उनमें गृहस्थपन नहीं आजाता। सुन्दर किनारीदार चादर, सफेद चमचमाता कपड़ा, नया बूट, इत्रकी सुगंध और साबुनसे धोया मुखड़ा होने तथा गाड़ीमें बैठकर बड़े बूढ़ोंके साथ घूमनेसे उस समय उन लड़कोंमें गृहस्थपन नहीं आजाता। सच्चा गृहस्थ होनेमें बहुत समय लगता है। जैसे—

सच्चा गृहस्थ (जेण्टलमैन) होनेके लिये अनेक प्रकारका अनुभव चाहिये, ब्याह करना चाहिये, कुटुम्बकी सम्हाल चाहिये, देशाटन करना चाहिये, सुख दुःख भोगनेमें बहुत धीरज चाहिये, बहुत अच्छी तरह व्यापार चलाना या रोजगार धंधा करना आना चाहिये, अपना कर्त्तव्य भलीभांति पालना चाहिये। सब लोगोंका प्रेम प्राप्त करना चाहिये, प्रजाके लाभके कामोंमें मुखिया बन कर शामिल होना चाहिये, हाकिमोंमें इज्जत हासिल करना चाहिये, देश कालके अनुसार न्यायके रास्ते पैसा कमाना चाहिये, यथाशक्ति जहां तहां उचित मदद करना चाहिये और अपना धर्म भलीभांति पालना चाहिये।

जब ये सब गुण हों और पीढ़ी दर पीढ़ी हों तब आदमी गृहस्थ कहलाता है। झूठा गृहस्थ बन कर बाबुओंके साथ फिरनेवाले उनके छोटे लड़कोंमें ये सब गुण क्योंकर हो सकते हैं? नहीं होते। परन्तु इससे क्या उन लड़कोंको उस समय गृहस्थकी सी पोशाक न पहनावें और गृहस्थके ऐसा शिष्टाचार न सिखावें? जरूर सिखावें। उनको यह सब सिखाना ही चाहिये। ऐसा करते करते ही पीछे वे सच्चे गृहस्थ हो सकेंगे।

भाइयो! जब गृहस्थ होना भी कठिन बात है तब जरा विचार कीजिये कि थोड़े दिनमें एकदम ऊंचे दरजेका भक्त कैसे हो सकते हैं? भक्त होनेके माने क्या यह आप जानते हैं? इसके लिये संत लोग कहते हैं—

भक्त होनेके माने दयालु होना, भक्त होनेके माने क्षमावान होना, भक्त होनेके माने न्यायी होना, भक्त होनेके माने परमार्थी होना, भक्त होनेके माने मनमें उठनेवाले विकारोंपर पहरेदार होना, भक्त होनेके माने गम खाना सीखना, भक्त होनेके माने विश्वासके तार पर चलनेवाला होना, भक्त होनेके माने नम्रतावाला होना, भक्त होनेके माने सबका शुभचिंतक होना, भक्त होनेके माने अपना कर्त्तव्य पालनेमें न चूकना, भक्त होनेके माने प्राणीमात्रका कल्याण चाहना, भक्त होनेके माने इन्द्रियोंकी गुलामीसे छूटना, भक्त होनेके माने उदार होना, भक्त होनेके माने भगवानका हुकम माननेवाला होना, भक्त होनेके माने संतोंके कदम ब कदम चलनेवाला होना, भक्त होनेके माने शास्त्रका रहस्य अनुभव करनेवाला होना, भक्त होनेके माने हृदयमें ईश्वरी ज्योति प्रगटाना, भक्त होनेके माने शान्तिके राज्यमें जाना, भक्त होनेके माने खूब पवित्र होना, भक्त होनेके माने एक बार मर कर भी फिर जीवित होना और भक्त होनेके माने मनुष्य

रूपमें होने पर भी भीतरसे देवता बनना है। मतलब यह कि इस संसारमें रह कर भी स्वर्ग भोगनेको हम भक्ति कहते हैं और उसीको भक्तपन कहते हैं। विचार कीजिये कि यह सब क्या घड़ी भरमें, थोड़े दिनमें या थोड़े समयमें, होने लायक है? नहीं। यह तो धीरे ही धीरे होता है। इसलिये भाइयो! जो भक्त अभी आपको झूठे, ढोंगी, ढकोसलावाले या कच्चे लगते हैं उनकी सच झूठ बातें करनेमें, उनकी कचाई ढूंढ़नेमें, उनसे द्वेष करनेमें, उनकी निन्दा करनेमें और उनको नीचा दिखानेके विचारमें ही मत पड़े रहिये; वरंच आप स्वयं भक्त होनेकी चेष्टा कीजिये तब आपको मालूम होगा कि भक्त होना कितना मुश्किल है। यह मुश्किल जाननेके बाद भक्तोंकी मददमें रहनेका मन करेगा और आप इन्हें सच्चा रास्ता बता सकेंगे। तब धीरे धीरे आगे जाकर वे पवित्र और महान भक्त हो सकेंगे। इसलिये भक्तोंका दोष ढूंढ़नेमें ही मत रह जाइये वरंच उनकी कठिनाइयां समझ कर उनके मददगार बनिये तब ईश्वरकृपासे उनके साथ आपका काम भी बनेगा।

३७—भगवद् इच्छाके अधीन हुए भक्तोंके विषयमें।

एक बड़ा जहाज विलायतसे अमेरिका जाता था। वह जहाज बहुत बड़ा, चौमंजिला था। उसके भीतर चार बड़े बड़े इंजिन चलते थे। उन इंजिनोंको चलानेके लिये एक चतुर इंजीनियर वहां हाजिर रहता था, एक मुसाफिर उन इंजिनोंको देखने गया। उसने इंजीनियरसे बात करते करते पूछा कि यह

अगिनबोट यहां खड़ा क्यों हो गया ? इंजीनियरने कहा कि इसका कारण मैं नहीं जानता; ऊपरसे कप्तानने हुक्म दिया इससे मैंने खड़ा कर दिया। इसके बाद जहाजको बहुत तेजीसे चलानेका हुक्म हुआ और इंजीनियर उसे तावरतोड़ चलाने लगा। तब फिर उसी मुसाफिरने पूछा कि अगिनबोटको इतनी तेजीसे क्यों चलाते हो ? इंजीनियरने जवाब दिया कि इसका कारण मैं नहीं जानता, मैं तो हुक्मके अनुसार काम करता हूं। इसके बाद जहाजने दिशा बदली। पूर्व दिशामें जाता अब उत्तरको जाने लगा। उस मुसाफिरने पूछा कि यह क्यों ? इंजीनियरने कहा कि मुझे खबर नहीं। यह सब कप्तानको मालूम है। जिम्मेवारी उसके ऊपर है। उसके हुक्मपर इंजिन चलाना मेरा काम है। उसका रोकना, रुख फेरना और चाल घटाना बढ़ाना मेरे इखितयारकी बात नहीं है, यह कप्तानकी इच्छापर है। मैं अगिनबोटके भीतर कोठरीमें हूँ और कप्तान ऊपर है। इससे वह जहाजके बचानेकी सब कुंजियां जानता है; मैं उसके इतना नहीं जानता। इसके बाद जहाजको बहुत धीरे धीरे चलानेका हुक्म हुआ; इंजीनियरने चाल धीमी कर दी। यह देख कर उस मुसाफिरने पूछा कि अब इतनी धीमी चाल क्यों ? इंजीनियरने उत्तर दिया कि कप्तानका हुक्म; इसके सिवा और कोई कारण मैं नहीं जानता।

इसके बाद जांचनेपर उस मुसाफिरको मालूम हुआ कि जहाजसे कोई आदमी समुद्रमें गिर पड़ा था उसे बचानेके लिये कप्तानने जहाजको खड़ा कर दिया था। फिर ठीक वक्तपर निश्चित स्थान पर पहुंचनेमें देर न होने देनेके लिये जहाजको तेजीसे चलानेका हुक्म दिया था। रास्तेमें सामने बर्फके ढोके तैरते आते थे उनसे जहाजकी टक्कर बचानेके लिये कप्तानने दिशा

बदलनेको कहा था। फिर रास्तेमें खराब पानी आजानेसे जहाजकी चाल बहुत धीमी करनेका हुक्म दिया था। ये सब बातें जान कर उस मुसाफिरको बड़ा आश्चर्य और बड़ा हर्ष हुआ। वह कप्तानकी बुद्धिमानी पर कृतज्ञता प्रगट करने लगा।

यह दृष्टान्त दे कर एक भक्तराज महाराज अपने हरिजनोंको समझाते थे कि हम तो इंजीनियर हैं परन्तु हुक्म चलानेवाला कप्तान परम कृपालु परमात्मा स्वयं है। इसलिये वह जो हुक्म करे उसके अनुसार हमें जगतके व्यवहारका कामकाज करना चाहिये। वह तेजीसे आगे बढ़ावे तो तेजीसे आगे बढ़ना चाहिये; वह एक जगह खड़ा रहनेका हुक्म दे तो वैसा करना चाहिये, वह हमारी दिशा बदले तो हमें अपनी बदली हुई दिशाके अधीन होना चाहिये और वह खराबीमें लेजाय तो वैसा ही करना चाहिये। क्योंकि हमारे कल्याणके लिये ही यह सब होता है। हम अन्दरकी कोठरीमें हैं अर्थात् अज्ञानतामें हैं; इससे वह सब भेद नहीं समझते परन्तु हमारा कप्तान हमारा मालिक ऊपर प्रकाशमें है और सब तरफसे गुप्त सन्देशा उसके पास चला आता है इससे वह सर्वज्ञ है। हम जितनी अपनी भलाई समझते हैं उससे कहीं अधिक हमारी भलाई वह समझता है। इसलिये हमें जहाजका इंजिन चलानेवाले इंजीनियरकी तरह बहुत सावधानीसे काम करना चाहिये और कप्तानके हुक्मके अनुसार ही चलना चाहिये, क्योंकि इसीमें सच्चा कल्याण है। इसके विरुद्ध, कप्तानके हुक्म बिना इंजीनियर अगर अपनी मरजीपर अगिनबोट चलाया करे तो उस अगिनबोटका नाश हुए बिना न रहे। इसी तरह हम प्रभुकी इच्छाको ताक पर रख कर सब मनमानी करें तो हमारा भी नाश हुए बिना न रहे। हमें अपने कल्याणके लिये सर्वशक्तिमान महान ईश्वरकी इच्छानुसार

चलाना चाहिये । और उसको अपने अगिनबोटका कप्तान बना कर आप उसका इंजीनियर बनना चाहिये । इसीका नाम सच्चा धर्म है । जिसको इस तरह इंजीनियर बनना आवे वही असलमें निष्काम भक्त कहलाता है । इसलिये भाइयो और बहनो ! अगर इस दुनियामें सुखी होना हो और मरनेके बाद मोक्ष पाना हो तो भगवद् इच्छाके अधीन रहनेवाला ऐसा निष्काम भक्त हूजिये । निष्काम भक्त हूजिये ।

निष्काम भक्त हूजिये अर्थात् अपनी हैसियतका धर्म कीजिये, हमेशा हरिस्मरण कीजिये, भगवद् ध्यानमें लगे रहिये जिसमें प्रभु रखे उसमें आनन्दसे रहिये और उस इंजीनियरकी तरह हमेशा अपना काम किया कीजिये । उसका परिणाम क्या होगा इसका विचार परम कृपालु परमात्माको सौंपिये, हमारा कल्याण किसमें है-यह हमसे हमारा सर्वशक्तिमान कप्तान अच्छी तरह समझता है । उसके हाथमें लगाम सौंपदेने और उसकी इच्छामें अपनी इच्छा मिलादेनेका नाम ही निष्कामपन है । ऐसा निष्काम भक्त हूजिये । ऐसा निष्काम भक्त हूजिये ।

३८–भक्तिके कितने ही अंग हैं उनमेंसे एकाध अंग हर भक्तमें बहुत खिला हुआ होता है और बाकी अंग कमजोर होते हैं । यह देख-कर भक्तोंको दूसरे भक्तोंकी निन्दा न करना चाहिये ।

बहुतेरे भक्त बड़े सद्गुणी होते हैं, बहुत पवित्र होते हैं,

बहुत नम्र होते है, बड़े त्यागी होते हैं, बड़े अनुभवी होते हैं, बहुत तप करनेवाले होते है और बड़े प्रेमी होते हैं। तो भी कितने ही भक्तोंमें एक प्रकारका बहुत बड़ा दुर्गुण होता है, वह यह कि उनमें जिस किस्मका गुण होता है तथा उनका जैसा आचार विचार होता है वैसे गुणवाले भक्तोंको ही वे सच्चे भक्त समझते हैं, उन्हे छोड़ कर दूसरे भक्तोंकी निन्दा करते हैं। जैसे-

किसी भक्तमें त्याग बहुत होता है, वह त्यागियोका ही बखान करता है। अगर किसी भक्तमें त्याग कम हो और उसके बदले भजनका जोर ज्यादा हो तो भी वह उसको नहीं भाता। कोई भक्त ज्ञानी होता है वह ज्ञानियोंको ही भक्त समझता है, कितने ही भक्त ज्ञानमें अधूरे होते है और ध्यानमें बहुत आगे बढ़े हुए होते हैं। परन्तु ज्ञानी भक्त ध्यानियोंकी कीमत नहीं समझता। कितने ही भक्त तीर्थोंमें घूमा करते हैं तथा बार बार यात्रा करते हैं और जो इस तरह तीर्थयात्रा किया करते है उन्हीं भक्तोंको वे सच्चे भक्त समझते है और उन्हींपर प्रेम रखते हैं, परन्तु जो भक्त एकान्तमें रहते हैं और एकान्तकी मौज लूटते है उनको वे पूरा भक्त नही समझते। कितने ही भक्त खास देवता, खास गुरु, खास धर्म या खास शास्त्रको ही मानते है और जो उनके मतके अनुसार चलता है उसीको भक्त समझते हैं। जो उसको नहीं मानता उसे भक्त नहीं समझते। किन्तु उनको जानना चाहिये कि जो यह सब न मानता हो और कुछ दूसरा ही मानता हो वह भी भक्त हो सकता है। क्योंकि इस जगतमें घनेरे धर्म हैं; घनेरे शास्त्र हैं; घनेरे देवता हैं और घनेरे गुरु है। और वे सब अच्छे उद्देश्यसे ही हुए है; इसलिये उनको माननेसे भी भक्त हो सकते हैं।

यह खयाल बहुतेरे भक्तोंको नहीं होता, इससे वे अपनेसे भिन्न प्रकारके आचार विचारवाले सच्चे भक्तोंको भी भक्त नहीं मानते, इतना ही नहीं, उल्टे उनकी निन्दा करते हैं। कितने ही भक्त बड़े उद्योगी होते हैं। और दिन भर परमार्थके काममें ही लगे रहते हैं। उनको निवृत्तिपरायण भक्त ओछे लगते है; इससे वे कहते हैं कि गुफामें या कोठरीमें बैठ कर माला फेरनेमें क्या मिलता है? इसमें तो एक किस्मका आनन्द आता है इसलिये यह सबको रुचता है; परन्तु अपना स्वार्थ त्याग कर जीवोंका कल्याण करना ही भारी बात है। इस खयालके कारण वे निवृत्तिपरायण भक्तोंका दरजा बहुत छोटा समझते हैं। जो मूर्तिपूजक भक्त हैं वे मूर्ति न पूजनेवाले भक्तको भक्त नहीं समझते और जो मूर्तिकी पूजा न करनेवाले भक्त हैं वे मूर्तिपूजकोंको सच्चे भक्त नहीं समझते। परन्तु असलमें देखें तो जो भक्त मूर्त्ति पूजते हैं वे भी प्रभुको रिझानेके लिये पूजते हैं, कुछ मूर्त्ति पर प्रेम होनेसे उसको नहीं पूजते। और जो मूर्त्ति नहीं पूजते वे भी प्रभुको प्रसन्न रखनेके लिये मूर्त्ति पूजा नहीं करते, कुछ मूर्त्तिसे द्वेष होनेके कारण उसका तिरस्कार नहीं करते। इस तरह दोनों पक्षवाले भक्त प्रभुके लिये ही एक दूसरेसे उल्टे रास्ते चलते हैं। कितने ही भक्त जीवदयापर ही बहुत जोर देते है परन्तु ईश्वरपर बहुत जोर नहीं देते। कितने ही भक्त ईश्वरपर ही विशेष जोर देते है और जीव दयाको गौण मानते हैं। कितनेही भक्त अपने कर्मके बलपर ही भरोसा रखते हैं और कितनेही भक्त ईश्वर कृपापर ही अपने उद्धारका भरोसा रखते है। कितने भक्त यह समझते हैं कि प्रेमसे ही मुक्ति मिलती है और कितने भक्त ज्ञानसे मुक्ति मिलना मानते हैं।

इस तरह भिन्न भिन्न भक्तोंके भिन्न भिन्न अंग होते हैं

और सबके अङ्ग भिन्न भिन्न होना कुछ आश्चर्यकी बात नहीं है। जिसका जो अंग बलवान हो उसको उस अङ्गके पालनेसे लाभ होना भी कुछ आश्चर्यकी बात नहीं है। परन्तु अपनेमें जो मुख्य अङ्ग है उसी अङ्गवालेको सच्चा भक्त मानना और बाकी सब भक्तोंको अधूरा समझना भूल है। अपने जैसे आचार विचार न रखनेवाले भक्तोंकी निन्दा करना तो बहुत ही बुरा है। इसलिये जो भक्त हैं उनको तो खास करके यह विचार करना चाहिये कि—

जब वर्षा होती है तब जमीनमें जिस किस्मका बीज होता है उसी किस्मका पौधा जमता है। वैसे ही जब प्रभुकी कृपा उतरती है—प्रभुकी कृपारूपी वर्षा होती है तभी आदमी भक्त होता है। परन्तु इस कृपावृष्टिसे जिस भक्तमें जिस किस्मकी मुख्य रुचि होती है, मुख्य भावना होती है, मुख्य संस्कार होता है या मुख्य संयोग होता है उसीके अनुसार उसकी भक्तिका अंग खिलता है। इस कारण एक ही गुरु हो, एक ही शास्त्र पढ़ा हो, एक ही मन्दिरमें सब साथ जाते हो और एक ही सत्संगमें बैठते हो तो भी अलग अलग भक्तोंमें भक्तिके अलग अलग मुख्य अंग होते हैं। जैसे—

किसी भक्तमें दया अधिक होती है, किसी भक्तमें ज्ञान अधिक होता है; किसी भक्तमें त्याग अधिक होता है; किसी भक्तमें परमार्थ अधिक होता है; किसी भक्तमें दीनता अधिक होती है; किसी भक्तमें प्रभुप्रेम अधिक होता है; किसी भक्तमें शान्ति अधिक होती है; किसी भक्तमें उपदेशक वृत्ति अधिक होती है; किसी भक्तमें मौनभाव अधिक होता है; किसी भक्तमें ध्यान अधिक होता है और किसी भक्तमें इन्द्रियनिग्रह अधिक होता है। इस प्रकार

एक ही गुरु, एक ही शास्त्र, एक ही मन्दिर तथा एक ही सत्संगमें अलग अलग भक्तोंके अलग अलग मुख्य अंग होते हैं। तब इस संसारमें तो अलग अलग देश हैं, अलग अलग गुरु हैं और अलग अलग शास्त्र है; इसलिये अलग अलग भक्तोंका अलग अलग आचार विचार होना कुछ आश्चर्यकी बात नहीं है। अगर सच्चा भक्त होना हो तो यह मत सोचिये कि सभी मेरे जैसे ही भक्त हों। क्योंकि ऐसा कभी नहीं होनेका। अलग अलग भक्तोंमें अलग अलग गुण रहेंगे ही। इसलिये जो आपके ऐसे आचार विचारके न हो उन भक्तोंकी निन्दा करके पापमें मत पड़ना, वरंच उनकी ओर उदारतासे देखना और यह समझना कि भगवानने उनको यह अंग दिया है। सारांश यह कि आप अपना धर्म मत छोड़ना और दूसरोंके धर्मकी निन्दा मत करना।

३९–हम अपनेसे काम पड़नेवाले बहुत थोड़े ही भक्तोंको पहचानते हैं; जितने भक्तोंको हम जानते हैं उनसे कहीं अधिकको नहीं जानते।

मन्दिर बनानेवाले, सदावर्त चलानेवाले, धर्मशाला उठवानेवाले, कुआ तालाब खुदवानेवाले, विद्यालय स्थापित करनेवाले, ब्राह्मणोंको भोजन करानेवाले, तीर्थ करनेवाले, कथा बाँचने वाले, गुरु बने हुए, देवताओंके सामने नाचनेवाले तथा गानेवाले और त्यागी बने हुए तथा बहुत प्रसिद्धि

पाये हुए सज्जनोंको ही हम भक्त समझते हैं । क्योंकि उनके कामोंको हम देखते हैं और उनके नाम हमारे कानमें पड़ते रहते हैं, वे मशहूर हो गये हैं इससे उनको हम बड़ा भक्त समझते हैं परन्तु याद रहे कि इनसे कहीं ऊंचे आचार विचार वाले भक्त इस जगतमें और भी बहुतेरे हैं तो भी वे गुप्त हैं। उनमें कितने तो हमारी नजर के सामने होते हैं तथा हमारे कुटुम्बमें और पड़ोसमें ही होते हैं परन्तु हम उनको भक्त नहीं समझते। जैसे—

जो आदमी मन्दिर बनाता है उसको हम भक्त कहते हैं परन्तु जो गरीब आदमी अपने घरमें शान्तिसे रहता है और सदा भजन किया करता है उसको भक्त नहीं समझते। जो आदमी मन्दिरो में कथा बाचता है उसको हम भक्त समझते हैं परन्तु जो आदमी झगड़ा मिटानेके लिये पंच बुला जाता है और मध्यस्थके तौरपर काम करके निबटेरा करादेता है उसको हम भक्त नहीं मानते। जो स्त्रियां धर्मके विशेष विशेष नियम पालती हैं उनको हम भक्त समझते है परन्तु जो स्त्रियां बहुत गरीबीमें भी बड़ी शान्तिसे रहती हैं और अपने पति तथा बाल बच्चोंकी बहुत प्रेमसे सम्हाल रखती हैं तथा उन्हें सुधारती है उनको हम भक्त नहीं समझते। धर्मकी पुस्तकें लिखनेवाले या वक्तृता देनेवालेको हम भक्त मानते हैं परन्तु कुटुम्बके जो बड़े बूढ़े अपने हित नातोंके घर जा जा कर बिना मांगे अच्छी सलाह देते हैं तथा जवानोंको दाबमें रखते हैं और उन्हें सुधारते है उनको भक्त नहीं समझते। धर्मशाला उठवानेवालेको हम भक्त समझते है परन्तु धर्मशालामें पड़े हुए दूसरेका सदावर्त खानेवाले, शरीरसे दुखी बने हुए, बिना साधनके, परन्तु भीतरसे प्रभुप्रेमकी धारा बहानेवाले

तथा आशीर्वादकी लहरें निकालनेवाले गरीबोंको हम भक्त नहीं मानते। पबलिकमें धन देनेवाले तथा चन्देमें मोटी रकम लिखनेवाले अमीरोंको हम भक्त मानते हैं परन्तु जो गरीब अनेक झंझट होनेपर भी जिन्दगी भर रोज नियमसे मन्दिरमें जाते है उनके नाम अखबारोंमें नहीं छपते इससे लोग उनको बड़ा भक्त नहीं मानते। कथाके समय आगे बैठनेवाले और पुराणकी बातें करनेवाले बोलकड़ आदमीको हम भक्त समझते है परन्तु जो कथामें सबसे पहले आता है, जगह साफ करता है, चिराग बत्ती जलाता है और श्रद्धासे कथा सुनता है उस गरीबको हम बड़ा भक्त नहीं समझते। जो गृहस्थ पबलिकमें विद्यार्थियोंको वृत्ति देता है उसको हम बखानते हैं परन्तु जो गृहस्थ संस्कृत पढ़नेवाले विद्यार्थियोंको चुपके चुपके भोजन तथा पुस्तकें देता है उसका नाम हम नहीं जानते। जो आदमी दवाखाना खोलता है उसकी हम इज्जत करते है परन्तु जो आदमी दूरके रिश्तेदारों या मित्रोंको अपने घर आश्रय देता है और उनकी पुरानी बीमारीमें धीरजसे सेवा किया करता है उसकी कीमत हम नहीं समझते और उसका नाम नहीं जानते, स्कूल खोलनेवालेको हम पहचानते है और उसका बखान करते हैं परन्तु अपने शुद्ध चरित्रसे, निस्पृहतासे और नेक सलाहसे आसपासके मनुष्योंको अजीब रीतिसे सुधार देता है उस देहाती सीधे सादे गरीब आदमीको हम नहीं पहचानते और न पहचाननेकी जरूरत समझते।

बन्धुओ! जगतमें जितने प्रसिद्ध भक्त हैं उनसे कहीं अधिक इस तरह गुपचुप रहनेवाले भक्त है। इतना ही नहीं, उन अपरिचित भक्तोंमें कितने ही तो बहुत ही प्रसिद्धि पाये हुए भक्तोंसे भी बहुत ऊंचे दरजेके होते है। इसलिये ऐसे आदमियोंकी भी

कीमत समझना तथा कद्र करना सीखिये। और ऐसा होनेकी कोशिश कीजिये। यह याद रहे कि टीमटाम रख कर और थोड़ेको बहुत दिखा कर प्रसिद्ध होनेकी अपेक्षा शान्त रीतिपर छुपके छुपके यथाशक्ति भलाई करने और भीतरसे भक्त होनेका मूल्य कहीं अधिक है और यही प्रभुको प्रिय है।

४०–भक्तोंपर सबको आपसे आप प्रेम होता है; उसका वर्णन।

अक्सर हम कितनेही भक्तोंकी निन्दा सुनते हैं तथा कहीं कहीं यह भी सुननेमें आता है कि भक्तिमें कुछ नहीं है यह सब ढोंग है। तो भी हमें भक्ति और भक्त रुचते हैं।

अपनी जान पहचानका पड़ोसमें कोई गरीब भक्त हो तो कितनेही आदमी उसकी दिल्लगी उड़ाते हैं तथा बेपसन्दकी बातें करते हैं। परन्तु उस समय भी आगे बढ़ा हुआ मनुष्य बहुत धीरज रखता है, कड़ुए वचन भी सहलेता है और कोई कुछ कह दे तो उलटे हँस देता है। अन्तको परिणाम यह होता है कि जो लोग भक्तकी दिल्लगी उड़ाते हैं वे भी ऐसे भक्तपर प्रेम रखते हैं और खाने पीने या धन सम्बन्धी लाभका प्रसङ्ग आने· पर उस भक्तको याद करते हैं तथा उसकी दिल्लगी उड़ाते हुए भी उसको माल दिलाते हैं।

बन्धुओ! ऐसा क्यों होता है यह आप जानते हैं? इसका कारण यह है कि भक्तोंको बड़ा साथी मिला होता है इससे उनके आचरणमें अनेक प्रकारकी खूबियाँ आजाती हैं जिससे वे सबको

जाते हैं। जैसे—दूसरे संसारी मनुष्योंसे भक्त अधिक शान्ति-वाले होते हैं; दूसरोंका अपराध क्षमा करनेका बल उनमें होता है, कोई कुछ कहजाय तो उसकी चोट अपने दिलपर न लगने देना या उस बातको ऊपर ही ऊपर उड़ा देना उन्हें आता है। थोड़े खर्चमें चलालेने और जो मिले उसीमें सन्तुष्ट रहनेका गुण उनमे होता है। भक्ति सम्बन्धी कुछ अच्छी अच्छी बातें कहना उनको आता है। उनके विश्वासमें कुछ विशेष बल होता है। प्रभुके लिये वे शरीर तथा मनका कष्ट सह सकते हैं और दुःख तथा आफतके समय दूसरोंसे कहीं अधिक धीरज रख सकते हैं। यह सब देख कर उनके आसपास के मनुष्योंको उनके ऊपर आपसे आप स्नेह हुआ करता है। उसमें भी अगर वे भक्त बेढ़ंगे न हों, विवेकी हों, शान्त स्वभावके हों और सबसे उदारताका बर्ताव करते हों तो सब लोग उनके प्रति बहुत पूज्यभाव रखते हैं। ये सब गुण उनमें खिले न हों तो भी साधारण संसारी आदमियोंसे भक्तोंको लोग अच्छा समझते हैं और उनपर प्रेम रखते हैं कि उनके हृदयमें भगवान होता है। इससे वे सबको प्यारे लगते हैं। प्रभुप्रेममें और भक्तिमें ऐसी खूबी है। इसलिए भाइयो! भक्त होनेकी कोशिश कीजिये, भक्त होनेकी कोशिश कीजिये।

४१–बहुतेरे आदमी मण्डलीमें भक्त बने फिरते हैं परन्तु घरमें झगड़ा करते हैं। उन्हें सच्चा भक्त मत समझना।

भाइयो! मन्दिरोंमें थोड़ी देर भक्त होना, सभाओंमें थोड़ी देर भक्त रहना और अपरिचित आदमियोंसे बातचीत करते समय जिससे कुछ सम्बन्ध न हो उस विषयमें अपनी भक्ति दिखाया करना कोई बड़ी बात नहीं है। क्योंकि यह तो थोड़ी देरका काम है, इससे उतनी देर अपने बखानके लिये या सभ्यताके कारण भक्ति दिखाना कुछ आश्चर्यकी बात नहीं है परन्तु अपने घरमें अपने सगे सम्बन्धियोंसे बर्ताव करनेमें भक्ति रखना बहुत बड़ी बात है। जिन लोगोंसे विशेष काम नहीं है, जिनसे बार बार काम नहीं पड़ता, जिनसे स्वार्थका सम्बन्ध नहीं है और जिनसे सिर्फ दूरकी साहबसलामत है उन लोगोंसे अच्छा बर्ताव करना कोई बड़ी बात नहीं है, परन्तु जिन लोगोंसे अपना रात दिन काम है, जिनसे अपना स्वार्थ जुड़ा हुआ है जिनके स्वभाव तथा आचार विचार अपनेसे भिन्न प्रकारके हैं उनके साथ निबाह लेजाना, उनको प्रसन्न रखना और अपने मनको धक्का न लगने देना ही खूबी की बात है और इसीका नाम सच्ची भक्ति है। भक्तिकी कसौटीकी जगह कुटुम्ब और सगे सम्बन्धी हैं। क्योंकि बाहरके लोग हमारी जितनी इज्जत करते हैं उतनी इज्जत घरके आदमी बहुधा नहीं कर सकते। उनको कभी कभी किसी किसी बातमें हमारे दोष दिखाई देते हैं। इसके सिवा उनसे बार बार हमारा काम पड़ता है और उनमें कितनेही आदमी ऐसे हठीले होते हैं, ऐसे अज्ञानी होते हैं, ऐसे कठोर होते हैं और ऐसे कड़े शब्द

बोलनेवाले होते हैं कि उनपर प्रेम रखना बहुत आदमियोंके लिये बहुत कठिन हो जाता है। इससे बाहर भक्त मानेजानेवाले मनुष्योंके घरमें भी झगड़ा होता है। फिर भी इस विषय पर बहुतेरे हरिजनोंका ध्यान नहीं जाता। इसका कारण यह है कि इसको वे भारी बात नहीं समझते और कितने यही समझते हैं कि घरमें तो ऐसा होता ही है। ऐसे ऐसे कारणोंसे मन्दिरोंमें और मण्डलियोंमें भक्त बननेवाले मनुष्य अपने घरके अन्दर भक्त नहीं रह सकते। परन्तु जरा विचार तो कीजिये कि यह क्या उचित है ? निकटके सगे सम्बन्धियोंसे ऐसा बर्ताव करके तथा घरमें कलह रखकर क्या सच्चे भक्त हो सकते हैं ? बेशक यह सच है कि बहुतेरे भक्तोंको बहुत ही विरुद्ध प्रकृतिके मनुष्योंमें रहना पड़ता है ; बहुतेरे भक्तोंको किसी किसी बातमें बड़े हठी सम्बन्धियोंसे काम पड़ता है और कितने ही समय धर्म सम्बन्धी एक दूसरेसे उल्टा विचार रखनेवाले अपनायतोंमें रहना पड़ता है। इससे बहुत इच्छा होनेपर भी कई तरहका विरोध मिट ही नहीं सकता। परन्तु ऐसे समय भी जो सच्चे भक्त हैं वे अपने सगे सम्बन्धियोंके ऊपरसे प्रेम नहीं घटाते या न उनके प्रति अपना कर्त्तव्य पालनेमें भूलते। दूसरे लोग उनके साथ टेढ़ा बर्ताव करें तो भी वे उनकी भलाई ही करते हैं। दूसरे नातेदार कड़ुए वचन कहजायं तो भी भक्त उन्हें सह लेते हैं और दूसरे हलकी बातें कह कर भक्तकी इज्जतपर धक्का लगावें तो भी सच्चे भक्त उनके गुणोंका बखान ही किया करते हैं। वे यह समझते हैं कि हम जब सबपर स्नेह प्रीति रखें तभी हमारी भक्ति सफल हो सकती है। और इसमें भी हमारे सगोंका तो हमारे ऊपर अधिक हक है, इसलिये उन्हें सुखी रखनेके लिये हमसे जहांतक बने परिश्रम

करना चाहिये और उनके लिये जितना सहते बने उतना सहना चाहिये, यह समझ कर वे अपने घरके तथा निकटके नातेदारोंसे बहुत अच्छा बर्ताव करते है। वे खूब समझते है कि अगर घरमें रोज कलह हो तो भक्ति टिक ही न सके। कलहके कारण मनमें विक्षेप हुआ करता है और जी झल्ला उठता है। अधिक समय घरमें ही रहना पड़ता है तथा सगे सम्बन्धियोंसे ही अधिक काम पड़ता है; इसलिये उनको प्रसन्न रखना बहुत जरूरी है। उन लोगोंके अनुकूल होनेसे हमारी भक्तिको बहुत पुष्टि मिलजाती है और विरुद्ध होनेसे धक्का लगता है इससे भक्ति ढीली हो जाती है। इसलिये भाइयो! आप मन्दिरोंमें और मंडलियोंमें ही भक्त न रहिये वरंच घरमें तथा सगे सम्बन्धियोंमें भी भक्त बने रहनेका उद्योग कीजिये। अगर ऐसा नहीं करेंगे और कुटुम्बमें कलह रख छोड़ेंगे तो आपकी भक्ति ढीली पड़ जायगी। याद रहे कि जरा गम न खानेके कारण ही भक्तिका उड़ जाना ठीक नहीं है। जैसे बाहर भक्त रहते हैं वैसे कुटुम्बके शामिल भी भक्त बने रहिये और ऐसा कीजिये कि वहां भी भक्ति टिके। यही हमारी सलाह है।

४१—भक्तिके बाहरी साधन रखना और बात है और भीतरसे प्रभुसे परिचय कर लेना और बात है।

बहुत आदमी ईश्वरको सबसे अच्छा, बड़ा और पवित्र मान कर उसकी कथा कहते हैं, उसका कीर्तन करते हैं, उसका स्मरण करते है, उसका गुण दूसरोंको सुनाते हैं और हमेशा नियमसे मन्दिरमें दर्शन करने या प्रार्थना करने जाते हैं; तो

भी ऐसा नहीं मालूम होता कि उन्होंने प्रभुको पहचाना है। कितने ही भक्त बहुत माला पहनते हैं तिलक करते हैं, भस्म लगाते हैं, भगवा वस्त्र पहनते हैं, जटा रखते है या मूंड़ मुड़ाते हैं, अग्नि रखते हैं और अनेक प्रकारका बाहरी टीमटाम रखते है तथा यह करके जगतको जनाना चाहते हैं कि हम प्रभुके है और प्रभु हमारा है, परन्तु असलमें वे वैसे नहीं होते। बाहरका बहुत ठाट बाट होनेपर भी हृदयमें वे प्रभुसे बहुत दूर होते हैं। कितनेही आदमी भगवानके लिये अनेक प्रकारके परमार्थके काम करते है, जैसे कोई सदावर्त चलाता है, कोई पाठशाला खोलता है, कोई कुआ तालाव खुदवाता है, कोई ग्रंथ रचवाता है, कोई विद्यार्थियोंको स्कालरशिप देता है; कोई गरीब आदमियोंको मदद देता है, कोई अन्नक्षेत्र चलाता है, और कोई पींजरापोलमें मदद करता है। इस तरह वे परमार्थके काम करते है और लोगोंको यह दिखाते हैं कि हम ऐसे ऐसे परमार्थके काम करते है इसलिये भक्त है। परन्तु परमार्थके ऐसे काम करने पर भी बहुतेरे आदमी भीतरसे भक्त नहीं होते क्योंकि प्रभुसे उनका परिचय नहीं होता। याद रहे कि जब तक प्रभुसे पूरी पूरी जानपहचान न होजाय तबतक कोई आदमी सच्चा भक्त नहीं हो सकता। कितनेही भक्त लोगोंमें ज्ञान फैलानेके लिये धर्मका उपदेश करते हैं और धर्मके दूसरे आदमियोंसे धर्म सम्बन्धी बड़ी बहस करते है तथा जहां जाते हैं वहां धर्मकी ही चर्चा करते है तो भी वे प्रभुको नहीं पहचानते। बाहर ही बाहर रह कर भी प्रभुसे दूर ही दूर रह कर भी ऐसी बातें बहुत आदमियोंको कहना आ सकता है। इसलिये ईश्वर सम्बन्धी वाद विवाद करनेसे भी यह न समझना कि भगवानको पहचान लिया। भगवानको पहचाननेके लिये

उसका मित्र या सच्चा सेवक बनना कुछ और ही बात है।

बहुत आदमी भगवानके निमित्त व्रत करते हैं, उपवास करते हैं, तीर्थ करते हैं और देहको कष्ट देनेवाले अनेक प्रकारके तप करते हैं तो भी यह नहीं जान पड़ता कि वे भगवानको पहचानते है। कितने ही आदमी ईश्वरके लिये घर छोड़ते हैं, बालबच्चोंको छोड़ते है, धन दौलत छोड़देते हैं और त्यागी होकर जंगलमें चले जाते है या संन्यास ले लेते हैं और बड़ी कठिनाईसे वैराग्यके कड़े नियम पालते है; तो भी ऐसा नहीं मालूम होता कि वे भगवानको पहचानते हैं। जो भगवानको पहचानते हैं। उनका रंग ढंग कुछ और ही होता है।

बन्धुओ! यह सब सुनकर आप सोचेंगे कि ऐसा क्यों कर होसकता है? इतना करनेपर भी भगवान न चिन्हाय तो फिर भगवानको चीन्हनेके लिये क्या करना चाहिये? और उसको कैसे पहचानना चाहिये? इसके उत्तरमें संत कहते हैं कि—

जिस गरीब आदमीको कोई बड़ा सेठ साथी मिलजाय उसकी स्थिति थोड़े समयमें बदल जाती है। बड़े सेठका मुनीब होनेके बाद उसके आचार विचार और रीति भांतिमें बहुत फेर बदल होजाता है। और जो आदमी राजाका मुसाहिब बन जाता है उसमें भी दूसरे साधारण मनुष्योंसे बहुत विशेषता आजाती है। वैसे ही जो आदमी अपने भीतरसे सच्चा भक्त हो जाता है और जिसका प्रभुसे ठीक ठीक परिचय हो जाता है उस भक्तकी रहन सहन भी बदल जाती है। जिससे हररोज भगवानसे काम पड़ता है उस भक्तकी तेजी ही कुछ और प्रकारकी होती है। जिसकी प्रभुसे जान पहचान हो जाती है। उस भक्तमें एक प्रकारकी स्वाभाविक खुमारी आजाती है। इससे वह व्यवहारकी छोटी छोटी कितनी ही बातोंमें लापरवाही दिखा सकता

है। जिस भक्तसे प्रभुका परिचय हो जाता है और जो अपने हृदयमें प्रभुको पधराता है तथा आप प्रभुके हृदयमें चला जाता है उसमें अनेक प्रकारकी तृप्ति आजाती है; उसका प्रपंच जाता रहता है; उसका मन स्थिर होजाता है, उसमें दीनता आजाती है, जगतकी झुठाई उसको समझमें आजाती है। जिससे उसका सब प्रकारका मोह मिट जाता है; उसमें स्वाभाविक शान्ति आजाती है; उसके हृदयमें प्रभुका प्रेम झरा करता है, उसके चेहरेपर प्रभुका तेज छाया रहता है और उसकी आंखोंसे ऐसा मालूम होता है कि वह प्रभुकी महिमा देख रहा है। प्रभुसे परिचय किये हुए ऐसे भक्तोंकी दशा कुछ और ही होती है। वे सदा आनन्दी होते हैं, उनके हर एक काममें तत्व होता है, उनकी बातोंमें अद्भुत मिठास होती है। उनपर लोगोंका बहुत अच्छा भाव होता है। उन्हें किसी प्रकारकी इच्छा न हो तो भी अनेक प्रकारके वैभव उनके पैरोंमें आ पड़ते हैं। वे बहुत ज्ञानी न हों तो भी उनके वचनसे शास्त्रोंका सिद्धान्त मालूम होता है और उनके आसपासका वायुमण्डल ही विशेष असर करनेवाला बन जाता है तथा जिन आदमियोंका उनसे काम पड़ता है उन सबको कुछ न कुछ लाभ हुआ ही करता है। ऐसी स्थिति दिखाई दे तब समझना कि यह भक्त प्रभुको पहचानता है। जब तक यह सब न हो और सिर्फ भक्तिके बाहरी साधन हों तब तक ऐसे भक्तोंको कच्चा समझना। इसलिये बन्धुओ! झूठी भक्तिमें न रह जाना और प्रभुप्रेमवाला तथा प्रभुको पहचाननेवाले सच्चा भक्त होना। प्रभुको पहचाननेवाला सच्चा भक्त होना।

४२–दुखी भक्त प्रभुको नहीं भाते, उपकार मानने वाले भक्त ही प्रभुको भाते हैं।

एक महात्मा कहते थे कि दुखी भक्त प्रभुको नहीं रुचते। भक्त माने क्या और दुःख माने क्या यह तुम जानते हो? अनन्त ब्रह्माण्डके नाथसे जिसका स्नेह हो सकता नाम भक्त है; जिसका अनेक जन्मका पाप कट गया हो उसका नाम भक्त है; जिसपर प्रभुकी कृपा बरस रही हो उसका नाम भक्त है; जिसका हृदय पिघल गया–हो द्रवीभूत हो गया हो उसका नाम भक्त है; जिसके हृदयमें प्रभुप्रेमकी धारा बहती हो उसका नाम भक्त है; जिसमें सच्ची समझ आगयी हो और जिसका ज्ञान जम गया हो उसका नाम भक्त है; जिसके विचार खिलगये हो और जिसके हृदयमें प्राकृतिक शान्ति आगयी हो, उसका नाम भक्त है, जिसकी वाणीमें मिठास आगयी हो, जिसके चेहरे पर एक प्रकारका स्वाभाविक तेज छाया हुआ हो और जिसके नेत्र नीचे ढल गये हों उसका नाम भक्त है, जिसके मनसे शंकाएं मिट गयी हों और जिसके संकल्प विकल्प वश में आगये हो उसका नाम भक्त है; जिसको सहना आता हो उसका नाम भक्त है, जिसके हृदयके बगीचेमें अनेक प्रकारके सद्गुणोंके फूल खिले हों उसका नाम भक्त है; जो सुख दुःखमें समता रख सके उसका नाम भक्त है। जिसके आस पासकी हवा भी शुद्ध हो गयी हो और जिसके अन्दर कुछ विशेष प्रकारका आकर्षण आगया हो उसका नाम भक्त है और प्रभुप्रेममें जो शराबोर हो गया हो तथा उसमें गोता लगा चुका हो और फिर उसमेंसे निकलना न चाहता हो उसका नाम भक्त है। अब मुझे बताओ कि ऐसे भक्तोंमें दुःख कहां रह सकता है? दुःख क्या है यह तुम जानते हो? इसके लिये सन्त कहते हैं कि–

दुःख माने अज्ञान, दुःख माने पाप, दुःख माने हृदयसे ज़्यादा स्वार्थ, दुःख माने इच्छाओंकी गुलामी, दुःख माने एक प्रकारका अंधकार, दुःख माने झूठा मोह, दुःख माने प्रभुकी पहचान बिना स्थिति, दुःख माने मैंपनकी बढ़ीहुई भावना, दुःख माने विकारों तथा वासनाओंका जोर, दुःख माने आत्माका अज्ञान, दुःख माने मानसिक दुर्बलता, दुःख माने पराधीनता और दुःख माने ईश्वरसे विमुखता। जीवकी ऐसी स्थितिको हम दुःख कहते हैं। यह क्या भक्तोंमें हो सकता है? कहो कि नहीं। और जिसमें यह सब या इसमें से कुछ भी हो वह आदमी क्या बड़ा भक्त कहला सकता है? नहीं। क्योंकि भक्तसे दुःखकी दुश्मनी है। इससे भक्तके पास दुःख नहीं रह सकता और दुःखमें भक्त नहीं रहसकता। यह महानियम होनेसे महात्मा कहते हैं कि दुःखी भक्त प्रभुको नहीं भाते, वरंच उपकार माननेवाले भक्त ही प्रभुको भाते हैं। इसलिये जरा अपने सामने तो देखिये कि हम किस किस्मके भक्त हैं।

हमें तो अभी बात बातमें दुःख लगजाता है। जैसे—खाने पीनेमें दुःख, सोने बैठनेमें दुःख, पहनने ओढ़नेमें दुःख, बात चीतमें दुःख, मिलने जुलनेमें दुःख और ऐसे ही ऐसे दूसरे छोटे बड़े अनेक प्रकारके दुःख हमको बाधा देतेरहते हैं। इतना ही नहीं, जिनकी परवा करनेकी जरूरत नहीं उन छोटे छोटे दुःखोंको भी बड़ा बड़ा बनाकर हम बढ़ा चढ़ा कर दुःखकी बातें किया करते हैं। तिसपर भी मनमें समझते हैं कि हम भक्त हैं। परन्तु जरा ख्याल तो कीजिये कि यह कितनी बड़ी भूल है। भाइयो, ऐसी भूलमें न पड़े रहकर दुःखका तथा भक्तका असली स्वरूप समझ कर जैसे बने वैसे सर्वशक्तिमान महान परमात्माका उपकार मानना सीखिये, महान परमात्माका उपकार मानना

सीखिये, जो सच्चे भक्त है वे हर जगह और हर प्रसङ्गमें प्रभुकी कृपा तथा प्रभुकी महिमा समझा ही करते है। पेड़ में फूल लगा देख कर भक्तोंकी प्रभुका उपकार माननेका मन होजाता है। छोटे बालकोंको हंसते खेलते देख कर उनपर उतरा हुआ ईश्वरका आशीर्वाद भक्तोंको दिखाई देता है जिससे उन्हें ईश्वरका उपकार माननेका मन कर जाता है। जगतमें कुछ अच्छा काम हो तो सुन कर वे प्रसन्न हो कर प्रभुका उपकार माना करते हैं। अपनेको जब कुछ फायदा हो तब वे प्रभुका उपकार मानते हैं और जब कुछ नुकसान होता है तब भी प्रभुका उपकार मानते हैं इस डरसे कि इतने ही नुकसानसे छुटकारा हुआ अगर इससे अधिक नुकसान हुआ होता तो हम क्या कर सकते ? हमारे प्यारेने इतने ही नुकसानसे हमें बचा लिया यह समझ कर नुकसान होनेपर भी सच्चे भक्त तो प्रभुका उपकार ही मानते हैं। इस तरह हरएक विषयमें भक्तोंको तो उपकार ही मानना होता है। असली दुःखकी बात तो कहीं दिखाई ही नहीं देती। भक्तोंका जीवन ऐसा होता है। इसलिये संत कहते है कि जो दुःखमें पड़ा हुआ हो और उसीमें हैरान होता हो वह सच्चा भक्त नहीं है और ऐसा दुखी भक्त प्रभुको नहीं भाता। जो ईश्वरका उपकार माननेवाला भक्त है वही प्रभुको प्यारा लगता है। इसलिये अगर सच्चा भक्त होना हो तो जैसे बने दुःख दूर करो और जिसकी कृपा हर घड़ी हर जगह बरस रही है उस परम कृपालु परमात्माका उपकार मानना सीखो। परम कृपालु परमात्माका उपकार मानना सीखो।

४३–भक्त लोग अन्दरसे आनन्द लेते हैं और व्यवहारी लोग बाहरसे आनन्द लेते हैं।

व्यवहारी लोगोंके बीचमें ही भक्त रहते हैं तोभी व्यवहारी लोगोंकी रीति भांतिमें तथा भक्तोंकी रीति भांतिमें बहुत अन्तर होता है। इसका कारण यह है कि साथ रहनेपर भी उनके आचार विचार एक दूसरेसे अलग होते हैं। जैसे—व्यवहारी आदमियोंको भी आनन्द दरकार है और भक्तोंको भी आनन्द दरकार है। परन्तु दोनोंके आनन्दमें अन्तर है और आनन्द पानेकी रीतिमें भी अन्तर है। जैसे—

व्यवहारी लोगोंको खाने पीनेमें आनन्द चाहिये; उनको सोने बैठनेमें आनन्द चाहिये; उनको नाटक, सरकस, बायस्कोप, गाना बजाना आदि मनरञ्जनके तथा मौज शौकके साधनोंमें आनन्द चाहिये, उनको गहनेमें और कपड़ेमें आनन्द चाहिये; उनको मकान, बंगले और बगीचेमें आनन्द चाहिये; उनको गाड़ी घोड़े, मोटर और बाइसिकिलमें आनन्द चाहिये; उनको कुत्ते बिल्ली तोते और बंदरमें आनन्द चाहिये, उनको सुन्दर फरनीचर और पलंग बिछौनेका आनन्द चाहिये, उनको चांदी सोनेके बर्तनोंसे आनंद चाहिये,उनको मिठाई फल और शरबतसे आनन्द चाहिये और उनको दूसरे मनुष्योंसे आनन्द चाहिये। इस प्रकार व्यवहारी लोगोंका आनन्द बाहरी वस्तुओंमें होता है इससे उनको आनन्द मिलनेमें विलम्ब लगता है और वह आनन्द थोड़ी देरमें दुःखरूप हो जाता है। यह बाहरका आनन्द लेनेमें बहुत समय लगता है, बहुत पैसा खर्चना पड़ता है और बहुत मिहनत करनी पड़ती है, तो भी यह आनन्द पराधीन है इसलिये यह हलके दरजेका आनन्द कहलाता है।

है; मनुष्यके अन्दर जो ज्ञान है वह अनुपम ज्योति है और मनुष्यके अन्दर जो सद्गुण है वह दीपक है। इस प्रभुप्रेमके चिरागको जब पापके पवनका झकोरा लगता है तब वह बुझ जाता है और उसको पवन लगना कुछ आश्चर्यकी बात नहीं है। क्योंकि एक तो मनुष्यका मन बिगडेल है, दूसरे विरुद्ध प्रकारकी दुनियामें उसे रहना पड़ता है और उसके अन्दर प्रभुप्रेमकी जो ज्योति होती है वह अभी आरम्भकी होती है, बचपनमें होती है और सहजमें बुझ जानेवाली होती है। पापके पवनका झकोरा बहुत जोर पर होता है तोभी उस छोटे दीपकको बचावें तो वह जिन्दगी बचा देता है। अगर वह छोटासा दीया बुझजाय तो फिर अंधकार हो जाता है और चारों ओरसे जंगली भयंकर प्राणी डराने लगते हैं। इसलिये इस संसारमें यात्रा करने वाले हरिजनोंको इस बातका पूरा ख्याल रखना चाहिये कि अन्दरका प्रभुप्रेमका दीया पापके पवनसे बुझ न जाय। वह दीया बना रहेगा तो यह संसार सुखरूप हो जायगा, अगर प्रभुप्रेमका दीया बना रहेगा तो जिन्दगीमें मिठास आवेगी और प्रभुप्रेमका दीया हृदयमें बना रहेगा तो अंतको मोक्षधाम मिल सकेगा। इसलिये यह ख्याल रखना कि पापके पवनसे प्रभुप्रेमका दीया बुझ न जाय।

४५–आलसी तथा ढोंगी भक्तोंके विषयमें।

बहुत आदमियोंको काम करना नहीं रुचता सब कुछ आसानीसे मिलजाना चाहिये और तिसपर भी खूब लाभ होना चाहिये। परन्तु याद रखना कि भक्तिमें ऐसी पोल नहीं चलती।

बहुत आदमी ऐसे होते है कि उन्हें खेत जोत कर उसमें अन्न बोनेकी मिहनत करना पसन्द नहीं तिसपर फसल काटनेका मन करता है। बहुत आदमी खाने पीनेमें बड़े चटोर होते है परन्तु उनको राधना नहीं सुहाता। कितने ही बीमारोको भला चंगा होजानेका बड़ा शौक है परन्तु उन्हे परहेज नहीं सुहाता। ऐसे बहुतेरे विद्यार्थी हैं जो पण्डित होना चाहते हैं परन्तु पढ़ना नहीं पसंद करते। बहुत लोगोंको मालदार होना पसन्द है मगर धन कमानेके लिये जो लियाकत चाहिये उसे हासिल करनेकी मिहनत वे नहीं करते। ऐसे लोगोंको विना खान खोदे सोनेकी सिल्ली चाहिये; ऐसे आदमियोंको समुद्रमें गोता लगाये विना मोती चाहिये, ऐसे आदमी नीव दिये विना मकान बनानेकी इच्छा रखते हैं; ऐसे आदमियोंको जाति बिरादरीका कोई बड़ा काम किये विना सरपंच बनना पसन्द है, ऐसे आदमी परमार्थका काम किये विना सरकारी खिताब लेनेको ललचते हैं; ऐसे कायर आदमी लड़ाईमें गये विना सिर्फ हथियार बांध कर बहादुर कहलाना चाहते हैं, ऐसे निर्बल आदमियोंको विना परीक्षा दिये इनाम लेनेका मन करता है और ऐसे आदमियोको भक्ति किये विना भक्त कहलाना बहुत अच्छा लगता है। परन्तु याद रखना कि इस दुनियामें थोड़ी पोल चलती है इससे विना तप किये कितने ही आदमी तपसी कहलाते हैं, विना त्याग किये कितने ही आदमियोको लोग त्यागी समझा करते हैं। धन दिये विना कितने आदमी उदार कहलाते है, अन्दरसे पवित्रता रखे विना कितने आदमी बाहरसे पवित्र होनेका ढोंग करते है; सच्ची विद्या जाने विना कितने आदमी विद्वान बननेका हौसला रखते है; वैद्यकके ज्ञान विना कितने आदमी वैद्य कहलाते है; माकिसे वास्ता न

होनेपर भी कितने आदमी भक्त कहलाया करते है ; मन अति-शय चंचल हो और प्रपंचमें पड़ा रहता हो तोभी कितने आदमी अपनेको ब्रह्मनिष्ठ और निवृत्तिपरायण कहते हैं और अपने पास किसी किस्मका सच्चा साधन न हो तोभी बहुत आदमी भोले भाले लोगोंको यह दिखाया करते है कि हमें कुछ सिद्धि हो गयी है। भाइयो ! इस प्रकारकी पोल इस दुनियामें थोड़े समय-तक थोड़े आदमियोंमें चल सकती है परन्तु प्रभुके घर यह पोल किसी काम नहीं आनेकी। वहां तो जो सिर देगा वह माल लेगा। अपने तनकी धनकी और मनकी सच्ची मिहनत बिना ईश्वरी रास्तेमें कभी आगे नहीं बढ़ सकते। जब भीतर सदा भगवानका स्मरण हुआ करे, भगवद् इच्छासे आपड़े हुए सुख दुःखके समय शान्ति रहा करे, किसी किस्मका बड़ा पाप हृदयमें घर बनाकर न रहे, जो कुछ करे सब केवल भगवतके लिये कियाकरे और सब तरहसे निष्कपट होकर पूर्ण पवित्रतासे बरता जाय तब सच्चे भक्त हो सकते है। इसके बिना कोई भक्त नहीं हो सकता। मन मारे बिना, इन्द्रियोंको वशमें किये बिना, धन तथा मनकी वासनाओंको त्यागे बिना और सर्वशक्तिमान महान ईश्वरपर प्रेम रखे बिना कोई आदमी भक्त नहीं हो सकता। इसलिये अगर सच्चा भक्त होना हो और भीतरसे भक्त होना हो तो प्रभुके लिये और अपनी आत्माके कल्याणके लिये सीधे रास्ते जितनी बने उतनी मिहनत कीजिये और खूब पुरुषार्थ कीजिये। ढील मसील रह कर कोई महान भक्त नहीं हो सकता।

४६—दुःखसे दब कर रोया मत कीजिये बल्कि यह समझना सीखिये कि दुःखसे भी बहुत लाभ होता है।

सब जीव प्राकृतिक तौरपर ही सुख चाहते हैं। आत्मा और परमात्मा आनन्द स्वरूप है। इससे सब जीव आनन्दको ढूंढ़ते रहते हैं। किसी जीवको दुःख नहीं भाता। तिसपर भी प्राणियोंके स्वभावकी रचना ही इस प्रकारकी है तथा सृष्टिकी रचना ही इस प्रकारकी है कि प्रसंग वश उनको दुःख हुए बिना नहीं रहता। बहुत सावधानीसे रहिये; बहुत धीरज रखिये, बहुत गम खाइये और बहुत विचार विचार कर चलिये तो भी कुछ न कुछ दुःख हो ही जाता है। क्योंकि दुःख अपनी हालकी भूलोंसे ही नहीं होता, उसके होनेके कितने ही कारण है। जैसे—

(१) कितने ही दुःख प्रारब्धके कारण होते हैं।

(२) कितने ही दुःख, बिजली, भूडोल आदि दुर्घटनाओंसे होते हैं।

(३) कितने ही दुःख वंशपरम्परासे होते आते है।

(४) कितने ही दुःख अपनेको पसन्द न आनेवाले कानूनके कारण होते हैं।

(५) कितने ही दुःख समाजके बंधन तथा बिरादरीके रिवाजके कारण होते हैं।

(६) कितने ही दुःख मा बाप, लड़के तथा दूसरे सगे सम्बन्धियोंके दबावके कारण या उन्हें खुश रखनेके लिये होते हैं।

(७) कितने ही दुःख न पढ़नेके कारण होते है तथा कितने दुःख बहुत ज्यादा पढ़नेके कारण होते हैं।

(८) कितने ही दुःख देहके साथ आये होते हैं।

(९) कितने ही दुःख मनसे लगे रहते हैं।

(१०) कितने ही दुःख ऋतुओंके फेर बदलसे सम्बन्ध रखते हैं।

(११) कितने ही दुःख विना विचारे अपनी स्थितिके विरुद्ध धर्म पालनेसे होते हैं।

(१२) कितने ही दुःख खराब शब्द बोलने या सुननेके कारण होते हैं।

(१३) कितने ही दुःख गाड़ी, घोड़े, रेलवे, स्टीमर वगैरहकी दुर्घटनाके कारण होते है।

(१४) कितने ही दुःख नौकरी चाकरी या रोजगार धंधेके कारण होते है।

(१५) कितने ही दुःख अकालके कारण होते हैं।

(१६) कितने ही दुःख आस पासके रोगियोंकी छूत लगनेसे होते है।

(१७) कितने ही दुःख भयसे होते है।

(१८) कितने ही दुःख जैसे होते है उससे अधिक बड़ा और ज्यादा खराब मान लेनेसे होते हैं।

(१९) कितने ही दुःख जगतमें होते ही नहीं परन्तु हम अपने संकल्प विकल्पसे खड़ा किया करते है।

(२०) कितने ही दुःख समझम न आने योग्य अदृश्य कारणोंसे होते है।

(२१) कितने ही दुःख सगे सम्बन्धियोंकी मृत्युके कारण होते है।

(२२) कितने ही दुःख अपना कर्त्तव्य पालनेमें प्रवीणता न रहनेसे होते हैं।

(२३) कितने ही दुःख वृद्धावस्थाके कारण होते हैं।

इन सब दुःखोंको सब आदमी पूरा पूरा रोक नहीं सकते; चाहे जितनी सावधानी रखें तोभी किसी न किसी प्रकारका दुःख आपड़ता है। ऐसे समय दुःखमें दब न जाने और हैरान न होनेके लिये दुःखका दूसरा पहलू भी देखना चाहिये और दुःखका लाभ समझनेकी भी कोशिश करनी चाहिये क्योंकि दुनियासे दुःखको घटाना धर्मका मुख्य काम है और यह हरिजनोंका मुख्य कर्त्तव्य है। इसलिये दुःखसे होनेवाला लाभ हमें जान लेना चाहिये कि जिससे ऐसे समय धीरज रह सके और शान्तिमें रहा जासके। इसके लिये भक्त कहते हैं कि दुःखने जगतको जितना सुधारा है उतना सुखने नहीं। दुःखमें प्रभुका जितना गुण गाया गया है उतना सुखमें नहीं। दुखियोंने जितना आविष्कार किया है उतना सुखियोंने नहीं और भगवानके धाममें भी जितने दुखिया गये हैं उतने सुखिया नहीं। इसलिये बंधुओ! दुःखसे रोया मत करना, बल्कि यह समझना कि हमें आगे बढ़ानेके लिये और ऊंचे चढ़ानेके लिये ही थोड़ा दुःख आता है। दुःखमें एक ऐसी खूबी है कि सुखकी अपेक्षा वह बहुत तेजीसे आगे बढ़ा सकता है। इसका कारण यह है कि सुखसे धक्का नहीं लगता परन्तु दुःखसे बहुत बड़ा धक्का लगता है इससे बहुत जल्द आदमी आगे बढ़ जाता है। इसलिये दुःखसे कायर मत हो जाना और हिम्मत मत हारना बरंच लाभ लेना आवे तो यह समझना कि हमारी मदद करनेके लिये ही दुःख आया है। क्योंकि दुःखके साथ और दुःखके पीछे सुख ही है इसमें कुछ भी सन्देह नहीं। इसके सिवा कितने ही किस्मके दुःख तो दुनियामें रहेंगे ही इस-

लिये मनको मजबूत रख कर दुःख सहलेनेका अभ्यास करना चाहिये और ऐसा करना चाहिये कि दुःखमें ढारस रहे तथा दुःखसे भी कुछ लाभ लिया जा सके। ऐसा करनेमें ही खूबी है और यह हरिजनोंसे ही हो सकता है। इसलिये अगर सच्चा भक्त होना हो तो दुःखके समय धीरज रखना सीखिये तथा दुःखका फायदा समझ कर उससे लाभ उठाना सीखिये। तब अनेक प्रकारके दुःख भी सुखरूप हो जायंगे।

४७—सब भक्तोंके अन्दर कभी कभी विना बुलाये भगवान आपसे आप पधारता है।

बन्धुओ! अनन्त ब्रह्माण्डका नाथ सर्वशक्तिमान पवित्र पिता परमात्मा ऐसा दयालु है कि उसको सब भक्तोंके पास बारंबार जाना पड़ता है। वह ऐसा कृपालु है कि हमारे न्योतेकी भी बाट नहीं देखता और हम न बुलावें तब भी कभी कभी वह हमारे हृदयमें आ बैठता है। उस समयकी हालत जानने योग्य होती है और उसके जाननेसे गहरे उतरे हुए भक्तोंको बड़ा आनन्द होता है। इसलिये आज यह विषय तुमलोगोंसे कहता हूं। यह कह कर एक भक्तराज महाराजने अपना मंडलीके हरिजनोंसे कहा—

जिस धर्मशालामें गरीबोंकी बड़ी भीड़ लगजाती है वहां बड़े आदमियोंको उतरनेकी जगह नहीं मिलती। इसी तरह परम कृपालु परमात्मा हमारे हृदयमें आनेको सदा तय्यार ही है परन्तु हमारे हृदयमें दुनियादारीके जञ्जालकी बड़ी भीड़ लगी होती है इससे वहां उसे उतरनेकी जगह नहीं मिलती। हमारी

ऐसी भूलके कारण ही वह हमारे हृदयमें नहीं आता।

प्रभु तो हमारे पास आनेको तय्यार है परन्तु जैसे हम किसी नये अपरिचित आदमीको अपने घरके दरवाजेसे ही बातचीत करके विदा कर देते हैं उसको भीतर नहीं लेजाते वैसे प्रभुको भी हम अलग अलग रख कर उससे थोड़ी देर बात करलेते हैं, उसको अपने हृदयमन्दिरमें पैठने नहीं देते। यद्यपि वह हमको पसन्द है तथापि हम दुनियादारीकी मोहवाली वस्तुओंमें इतने अधिक फंसगये है कि नये आदमीकी तरह प्रभुको बाहर ही रखते हैं, उसकी इच्छा है तोभी हम उसे अपने हृदयरूपी घरके अन्दर नहीं आने देते।

हमलोग अपनी अज्ञानताके कारण तथा अपने मनकी कमजोरीके कारण ऐसी भूल करते हैं तिसपर भी हमारे नाथमें इतनी अधिक दया है कि जैसे कोई नेक मालिक या अच्छा राजा किसी समय अपने नौकरके घर बिना बुलाये अचानक चला जाय वैसे कितनी ही बार प्रभु बिना बुलाये भक्तोंके हृदयमें अचानक पधारता है। उस समय जैसे गरीब मुसाहिबके चित्तमें अपने घर पधारे हुए महाराजाधिराजको देख कर आनन्द होता है वैसे प्रभुको अपने हृदयमें पधारा देख कर सच्चे भक्तोंको महा आनन्द होता है। बिना प्रभुके पधारे हम जो भक्ति करते हैं उसमें और प्रभुके पधारनेपर जो भक्ति होती है उसमें बहुत फर्क है। इसके लिये सन्त कहते हैं कि किसी प्यारे आदमीका अपने नेक मालिकका या न्यायी राजाका चित्र देखकर जितना आनन्द होता है उससे कहीं अधिक आनन्द अपने प्यारेको, मालिकको या राजाको सदेह देखनेपर होता है। इसीतरह प्रभुके पधारे बिना जो भक्ति है वह प्रभुका फोटो देखनेके समान है परन्तु जिस समय प्रभु अपनी खुशीसे भक्तोंके हृदयमें पधारता है उस समय भक्तोंको

ऐसा जान पड़ता है कि अभी ईश्वरका साक्षात्कार हुआ है। ऐसा अनुभव होनेसे उनके आनन्दकी सीमा नहीं रहती। उस समय ऐसे भक्तोंमें बहुत फेर बदल होजाता है और उनकी स्थिति बदल जाती है। कोई भला आदमी घरमें आता है तो वह भी भाड़ा दिये विना नहीं जाता तब स्वयं प्रभु हृदयमें पधार कर विना हमारा कल्याण किये कैसे रह सकता है? वह अवश्य कल्याण करेगा। जब प्रभु आपसे पधारता है तब उस भक्तकी सब कल्पनाएं बन्द होजाती हैं। जैसे महलमें राजाके आनेसे नौकर चुप मार जाते हैं वैसे प्रभुके पधारनेपर हमारी मनोवृत्ति ठहर जाती है। उस समय क्रोध, डाह, लोभ, स्वार्थ आदि सब दुर्गुण जाते रहते हैं और जैसे समुद्रमें नदी गुप्त होजाती है वैसे हमारी अहंभाववाली वृत्ति ईश्वरमें गुप्त होजाती है। उस समय ऐसे भक्तको अवर्णनीय आनन्द होता है। वह आनन्द ऐसा है कि इसका वर्णन करना हमें नहीं आता। बन्धुओ! जब ईश्वर कृपा करके विना बुलाये आपके हृदयमें पधारे तब आप लापरवाही न दिखावें और उस अनमोल अवसरको न गंवावें वरन ऐसी चेष्टा करें कि ऐसा अवसर आपको वार वार मिले। ऐसा अवसर वार वार पानेके लिये उन महान भक्तोंके सत्संगमें रहना। जिनके अंदर प्रभु आपसे आप वार वार पधार-ता हो। उनके संगसे आपपर भी नया रंग चढ़ेगा। जिन महान भक्तोंके हृदयमें वारंवार प्रभु पधारता है वे भगवानके आस पास इस तरह फिरते हैं जिस तरह कमलका रसिक भौंरा कमलके आस पास गुंजता फिरता है। भक्त उसके प्रेममें शराबोर रहते हैं। इससे गरीबी, दुःख, लोकलाज आदि उन्हें बाधा नहीं देती। वे हमेशा आनन्दमें रहते हैं और ऐसे आनन्दी महात्माओंके सत्संगसे आनन्द मिलना आश्चर्यकी बात नहीं है।

अगर अपने हृदयमें वारंवार प्रभुको आपसे आप पधरवानेकी इच्छा हो तो जिसके हृदयमें प्रभु पधारता हो उस भक्तके सत्संगमें रहना और जब आपके हृदयमें प्रभु पधारे तब जैसे बने वैसे उससे भली भांति लाभ उठाना। यही हमारी विनती है।

४८—ईश्वरका भजन करनेमें कभी बहुत आनन्द आता है और कभी बड़ी कुफ्त मालूम होती है; इसका समाधान।

हरिजन सदा अपनी अपनी सम्प्रदायके रीति रिवाजपर तथा अपने नियमसे पाठ, पूजा, दर्शन, जप, ध्यान इत्यादि करते हैं। उस समय ऐसा होता है कि किसी दिन भक्ति करनेमें बड़ा आनन्द आता है और अधिक देर बैठे रहनेकी इच्छा होती है। इतना ही नहीं, अपने नियमके अनुसार पाठ पूजा जप इत्यादि होती रहती है तब ऐसी स्थिति होती है मानो हृदय हलके फूलसा होगया हो, मानो मनमें बहुत पवित्रता आगयी हो और मानो कोई महा आनन्द पालिया हो। इससे उस समय भजन करना बहुत रुचता है। परन्तु किसी किसी दिन इससे उल्टी ही दशा होजाती है। जैसे भजन करने बैठनेपर भी उसमें मन नहीं लगता, मनमें अनेक प्रकारके तर्क वितर्क हुआ करते हैं। ऐसा जी चाहता है कि जल्द उठजायँ तो ठीक। अन्दरसे मन घबराता है और बहुत कुफ्त मालूम होती है। ऐसी स्थिति शुरूमें सब भक्तोंकी वारंवार हुआ करती है और जब ऐसी कुफ्त भरी दशा होती है तब बहुतेरे भक्त अपने मनमें बहुत अफसोस किया करते हैं, उनको ऐसा लगता है कि ऐसी कुफ्तकी

हालतमें अच्छी तरह भजन नहीं हो सकता, इससे वे भजन अधूरा छोड़ कर उठ जाते हैं। कितने ही भक्त अपने नियमके अनुसार रोज ठीक समयपर भजन करते हैं तोभी मनमें यह समझते हैं कि हमारी आजकी भक्ति प्रभुकी सेवामें मंजूर नहीं हुई क्योंकि हम आज अच्छी तरह भजन नहीं कर सके। और इन बातोंमें आज हमारा मन नहीं लगा। इसलिये इस भक्तिसे भगवान प्रसन्न नहीं होता। यह सोच कर वे दिलगीर होते हैं और कितने तो ऐसी दशासे हार मान कर भजन छोड़देते हैं। ऐसी स्थितिमें आ पड़े हुए भक्तोंको समझानेके निमित्त अनुभवी संत कहते हैं कि—

बन्धुओ! भजन करते समय तुम्हे कुफ्त जान पड़ती हो और फिर भी जबरन तुम भजन करते हो तो तुम्हारा वह भजन व्यर्थ नहीं जाता, वरन्च उस समयके भजनकी कीमत प्रभुकी सेवामें और अधिक होती है। जिस काममे आनन्द आता है उसको तो सभी करते है उसमें नयी बात क्या है? जिस समय भजनमें मन नहीं लगता, जिस समय मन डांवाडोल रहता है, जिस समय हृदयमें अनेक प्रकारके संकल्प विकल्प होते है और जिस समय मायाका जबरदस्त हमला होता है और वह कहती है कि भजन छोड़दे, छोड़दे, उस समय इन सब प्रतिकूलताओंका सामना करना, उसमें ठहरना और भजन करते रहना ही बहुत भारी बात है। वही असली परीक्षाका समय है और वही बहादुरीका समय है, इसमें जिसको ठहरना आता है उस भक्तका काम हो जाता है। इसलिये जब भजन करते समय ऐसी कुफ्तकी दशा आवे तब दिलगीर होकर भजन मत छोड़देना बल्कि भजनमें लगे रहना। इससे आगे जाकर अमूल्य लाभ होगा।

यह विषय बहुत अच्छी तौरपर समझानेके लिये महान भक्त यह भी कहते हैं कि दूधको जब गर्म करते हैं तब बाहरकी गर्मीके कारण उसमें उफान आता है, उस समय दूध ज्यादा मालूम होता है परन्तु असलमें वह बढ़ नहीं जाता, जितनेका तितना ही रहता है। वैसे ही भक्ति करते समय आनन्दका उफान आजाय तो बहुत अच्छी और ज्यादा भक्ति दिखाई देती है परन्तु उस आनन्दके उफानसे भक्ति जितनी रहती है उससे बढ़ नहीं जाती। इसलिये यह मत मान लेना कि भक्तिमें बहुत आनन्द आजाय तभी सच्ची भक्ति होती है। क्योंकि कितनेही समय कितनेही भक्तोंको भक्तिमें आनन्द मिलनेसे लाभ होता है और कितनेही समय कितनेही भक्तोंको भक्ति करनेमें कुफ्त होती है तोभी वे भक्तिमें लगे रहें तो उससे उन्हें और अधिक लाभ होता है।

आरम्भके कच्चे भक्तोंको भक्ति करनेका मन हो और भक्तिमें मन लगे तो इसके लिये भगवान उन्हें पाठ, पूजा, जप, ध्यान तथा कीर्तन इत्यादि विषयोंमें आनन्द देता है। परन्तु याद रहे कि सच्चे भक्त कुछ आनन्दके गुलाम नहीं होते और आनन्द लेनेके लिये ही भक्ति नहीं करते वरंच भक्तिकी खातिर भक्ति करते हैं, प्रभुकी खातिर भक्ति करते हैं और भक्तिसे आनन्द मिले या कुफ्त हो इसकी कुछ परवा नहीं करते वे तो अपना कर्त्तव्य समझ कर तथा अपनी जिन्दगीकी सार्थकता समझ कर भक्तिमें लगे रहते है। इस प्रकार किसी किस्मके स्वार्थकी इच्छा न रख कर भक्ति करनेका नाम सच्ची भक्ति है।

बन्धुओ! याद रखना कि भक्ति किसी किस्मकी थोड़ी देरकी रुचि नहीं है, यह तो एक सच्चा व्यसन है। जैसे कितने ही नशेबाजोंको विना किसी नशेके नहीं चलता और नशा न

मिले तो उन्हें बेकली पड़जाती है वैसे व्यसन दशावाले भक्त विना भक्ति किये रही नहीं सकते। किसी कारणसे किसी दिन भक्ति न होसके या रोजके नियमसे कम भक्ति हो तो उनका जी दुखी होता है, मन अकुलाता है और उन्हें ऐसा ज्ञान पड़ता है कि आजका दिन जिन्दगीमें व्यर्थ गया। ऐसी व्यसनदशाका नाम सच्ची भक्ति है। सिर्फ थोड़ी देर भजन गालेने, नाच कूद लेने, प्रसाद पालेने, किसी जगह हो आने, कोई तीर्थ नहाआने या कुछ छोटा मोटा काम करके थोड़ी देर खुश हो जाने ही का नाम सच्ची भक्ति नहीं है। हमेशा जीवको ईश्वरके साथ प्रेमपूर्वक जोड़ रखनेका नाम ही सच्ची भक्ति है। इसलिये याद रखना कि आनन्द या कुफ्तसे भक्तिका सम्बन्ध नहीं है वरंच प्रभुसे जुड़े रहनेसे भक्तिका सम्बन्ध है।

यह सब जान कर आप समझ गये होंगे कि भक्तिके किसी प्रकारके साधनसे थोड़ी देर मजा ले लेनेका नाम सच्ची भक्ति नहीं है। यह क्या आप जानते हैं? इसके लिये संत कहते हैं कि बड़े तालाबसे चोंच भरमें पानी लेकर चकवा जैसे फूला करे और यह समझा करे कि मैंने बहुत पानी पीलिया वैसी ही यह दशा है। प्रभुके आनन्दकी कोई सीमा नहीं है और भक्तिकी व्यसन-दशाका सुख कहने योग्य नहीं है। परन्तु यह सब विना देखे और वहांतक विना पहुंचे सिर्फ किसी किस्मके साधनसे थोड़ी देर प्रसन्न हो जाना और उसीमें फूला करना कोई बड़ी बात नहीं है यह तो बहुत मामूली बात है। भक्तिके हर एक अंगमें आनन्द है और प्रभु दया करके अपनी कृपा उतारता है इससे आरम्भमें जिसको जो अंग पसन्द आया हो उसमें कुछन कुछ आनन्द मिलता ही है। उस आनन्दके आवेशमें ही जो भक्ति होती है उसकी कुछ बहुत कीमत नहीं है। इसलिये अगर सच्चा भक्त

होना हो तो भक्तिके एकाग्र साधनके क्षणिक आनन्दमें मत रह जाइये और न कुफ्तमें पड़ कर भक्तिको छोड़िये, जैसे बने वैसे इस किस्मकी भक्ति कीजिये कि प्रभुसे एकताका अनुभव हो। तभी असली सार्थकता होगी।

४९–ईश्वरका भजन करते समय कभी बड़ा आनन्द आता है और कभी बड़ी कुफ्त मालूम होती है इसका समाधान। (२)

इस प्रसङ्ग पर यह बात भी समझ लेना कि जब भक्ति करनेमें कुफ्त मालूम हो और फिर भी उसमें लगे रहें तो प्रभुकी ओरसे उसका बहुत बड़ा इनाम मिलता है; इसमें कुछ सन्देह नहीं है। परन्तु बात यह है कि किसी समय किसी भक्तको वह नगद इनाम देदेता है और किसी समय किसी भक्तको पीछेसे इनाम देता है। जो इनाम पीछेसे मिलता है वह अक्सर ज्यादा होता है। इसलिये याद रखना कि भजन करते समय ही जो आनन्द आवे वह नगद इनाम है, उतना ही बस होजाता है। भक्ति करनेमें कुफ्त होने पर भी जो भजन करे उसको प्रभुकी ओरसे पीछे इनाम मिलता है और वह इनाम बहुत बड़ा होता है। इस-लिये भजन करनेमें कुफ्त हो तब दुखी मत होना और यह मत समझना कि प्रभुकी हमपर कम कृपा है बल्कि यह समझना कि हमको बहुत बड़ा इनाम मिलनेवाला है ऐसा ही भरोसा रखना।

हे हरिजनो! जरा विचार तो कीजिये कि भजनसे आनन्द मिलनेपर ही भक्ति करनेमें बड़ाई है या भजनमें कुफ्त मालूम

होनेपर भी भजन करते जाना बड़ाईकी बात है ? इन दोनोंमें खूबीकी बात कौन है ? इसका जरा ख्याल तो कीजिये । सच्ची खूबीकी बात यह है कि भजनमें आनन्द न आता हो तोभी भजन करनेका नियम न छोड़े और चाहे जितनी कुफ्त मालूम हो, मनमें चाहे जितने संकल्प विकल्प हों और भजन छोड़देनेकी बड़ी प्रबल इच्छा हो तोभी यह समझ कर भजनमें लगा रहे कि यह सब हमारी परीक्षा है और इसका इनाम बहुत बड़ा है। यह बहुत बड़ी और ऊँची बात है ।

भजन करना बहुत अच्छा काम है और भक्तिके अंगोंमें आनन्द होता है तोभी कितनीही बार भजन करनेमें बड़ी कुफ्त मालूम होती है । इसका कारण क्या है ? यह जाननेकी बहुतेरे हरिजनोंको इच्छा होती है । उसका समाधान करते हुए सन्त कहते हैं कि—

हमलोग आठोंपहर मायाके घेरेमें रहते हैं और भजन बहुत थोड़ी देर करते हैं । इससे जब मायाको छोड़कर ईश्वरसे जीवको जोड़ना चाहते हैं तब माया दूने जोरसे हमपर हमला करती है । मायाको यह नहीं रुचता कि हम उसे छोड़ दें । इससे वह बड़े जोरसे हमपर हमला करती है और हमारे कल्याणके मार्गमें अड़चल डालती है । इतनाही नहीं, कितनीही बार माया ऐसी हठीली बनजाती है कि कितनेही भक्तोंको इस दशामें बहुत हैरान कर डालती है । जैसे हठीली मक्खीको मुंहपरसे उड़ाते हैं तोभी वह वारवार आकर बैठती है वैसे कितनेही हलके विचारोंको मनसे निकाल डालें तोभी वे विचार वार वार भजन करते समय मनमें आया करते हैं । परन्तु इससे दुखी मत होना, इससे हिम्मत मत हारना और भजन मत छोड़ना बल्कि यह समझना कि ऐसी लड़ाई करनेसे आगे जाकर बहुत लाभ होगा।

उस समय भी समझमें न आने योग्य कुछ कुछ लाभ हुआ ही करता है। ऐसा समझ कर भजनमें लगे रहनेमें ही असली खूबी है। इसलिये हमारी यह सलाह है कि कभी कभी आपकी ऐसी दशा होजाय तोभी भजन मत छोड़ देना वरंच उस समय माया और मनमें लड़ाई करते रहना। तब परमकृपालु परमात्मा आपको आगे जा कर अवश्य आनन्द और विजय देगा।

बन्धुओ! भजनमें कुफ्त मालूम होनेका एक कारण महात्मालोग यह भी कहते हैं कि जब छोटे लड़केके साथ बाप खेलता है तब बाप कभी कभी छिप जाता है और कभी कभी सामने आजाता है। इसी तरह प्रभु भी कभी अपने भक्तोंको आनन्द देनेके लिये दर्शन देता है और कभी अपने भक्तोंमें छटपटी डालनेके लिये छिपजाता है। इससे भजनमें कुफ्त मालूम होती है। परन्तु बाप अपने बेटेको खेलानेके लिये ही छिपता है, वैसे विश्वास रखना कि प्रभु अपने भक्तोंको ऊँचे चढ़ानेके लिये, पवित्र बनानेके लिये तथा उनको बहुत ऊँचे दरजेका महाआनन्द देनेके लिये ही भजनमें कुछ कुछ विघ्न होनेदेता है। इसलिये भजन करनेमें कुफ्त मालूम होनेपर हिम्मत मत हारना और भजन मत छोड़ देना, वरंच ऐसी स्थितिमें जो भजन होता है उसका मोल ईश्वरके दरबारमें कहीं अधिक है यह समझ कर जप, ध्यान, पाठ, पुजा, कीर्तन नामस्मरण आदि साधनोंमें लगे रहना, यही हमारी विनती है।

५०—इस जगतमें अनेक प्रकारके अच्छे अच्छे काम हैं परन्तु वे सब हमसे नहीं हो सकते हमें तो अपनी हैसियतके अनुसार करना चाहिये।

बन्धुओ! हलवाईकी दुकानपर अनेक प्रकारकी मिठाई होती है और सबका स्वाद तथा गुण अलग अलग होता है। उसमें बहुतसी मिठाई हमें रुचती है परन्तु वह सब हम नहीं ले सकते; जिस किस्मकी मिठाईकी खास कर जरूरत होती है वही जरूरत भर लेते है। उसी तरह धर्मके भी बहुतसे काम हैं और वे सब काम बहुत सुन्दर तथा बहुत कीमती लगते हैं परन्तु एक आदमीसे सब काम नहीं हो सकते। इसलिये हमें अपनी हैसियतके अनुसार जिसकी खास जरूरत हो वह काम करना चाहिये।

बजाजेमें जाते है तो वहां हर दुकानमें अनेक प्रकारके कपड़े रखे पाते हैं; वे सब कपड़े बहुत अच्छे होते हैं और कितनेही कपड़े हमारी पसंद लायक होते है; उनमें सूती, ऊनी, रेशमी वगैरह कई भेद होते है। परन्तु उन सबको हम नहीं लेते ; जिस किस्मका कपड़ा पहननेकी जरूरत है वही ऋतुके अनुसार जरूरत लायक लेते हैं। वैसे ही परमार्थके भी अनेक काम है और उनसब कामोंको करनेके लिये शास्त्रमें कहा है। किसी किसी महात्माको उनमेंसे कोई कोई काम हम करते भी देखते हैं इससे वैसे काम करनेकी हमारी इच्छा भी होती है। परन्तु जब ऐसी इच्छा हो तब हमे अपनी हैसियतका विचार करना चाहिये और जो काम अपनेसे आसानीसे होसके तथा प्रभुकी इच्छाके अनुसार हो वह काम हमें करना चाहिये। अगर हैसियतसे बाहरका

काम करने जायँ तो उल्टे धर्ममें अधर्म होता है और कठिनाईमें गिरना पड़ता है । जैसे—कितने आदमी देवदर्शनमें, नहाने धोनेमें, व्रत उपवासमें, तीर्थयात्रामें और तिलकमालामें बहुत ध्यान देते हैं और इसमें इतना अधिक समय लगाते हैं कि अपने रोजगार धंधेमें भी उचित ध्यान नहीं देसकते । इसका फल यह होता है कि आगे जा कर उन्हें बहुत बड़ा घाटा उठाना पड़ता है । इससे देवदर्शन और तीर्थयात्राका काम भी धसक जाता है और अपनी भी बेइज्जती हो जाती है तथा कुटुम्ब दुखी होता है। इन सबका कारण यही है कि वे लोग हैसियतका धर्म नहीं समझते । प्रभुकी इच्छा कुछ और करनेकी होती है और वे इससे उल्टा कुछ औरही किया करते हैं । इस कारण ऐसा बुरा परिणाम होता है और ऐसा बुरा परिणाम देख कर कितने आदमी धर्मकी निन्दा किया करते हैं तथा ऐसे आदमियोंका दृष्टान्त देकर कहते हैं "जो बहुत धर्म करता है उसका तो दीवाला निकल जाता है ।" परन्तु यह बात झूठ है । सच्चा धर्म पालनेसे कभी किसी आदमीको कुछ भी नुकसान होता ही नहीं । जब अपनी हैसियतके विरुद्ध तथा भगवदिच्छाके विरुद्ध धर्म किया जाता है तभी खराबी होती है। इसलिये भगवद् इच्छा तथा अपनी हैसियतके विरुद्धके धर्ममें न फंस जाना।

कोई वैद्य या डाक्टर कथा सुनने बैठा हो, वहां खूब आनन्द जमा हो और भगवान ही की कथा होती हो उस समय किसी बीमार आदमीको वैद्यकी बहुत जरूरत हो और तुरतकी सहायता दरकार हो तथा बीमारी बड़ी भारी हो तोभी अगर वह वैद्य कथामें बैठा रहे और अपने रोगीके घर ठीक वक्तपर न जाय तो उसको पाप लगता है । यद्यपि कथा सुनना बहुत अच्छी बात है और कथासे उठ जाना बहुत बुरा है तोभी ऐसे जरूरी

मौकेपर अगर वह वैद्य कथासे न उठे तो समझना कि वह भारी भूल करता है और अपनी स्थितिको नहीं समझता। आदमीको जिन्दगीके प्रश्नके सामने उसे अपने कथाके आनन्दका त्याग देना चाहिये। परन्तु बहुत आदमी ऐसी बातें नहीं समझते; इससे इस किसमकी भूल करते हैं। उसका बुरा फल होता है।

कोई आदमी एकान्तमें पाठ पूजा या प्रार्थना करते बैठा हो और उसने मनमें यह सोचा हो कि एक घंटे तक यहासे नहीं उठूंगा; परन्तु इतनेमें कोई नन्हासा बच्चा खेलते खेलते कहींसे अचानक नीचे गिरजाय और दूसरा कोई आदमी वहां मौजूद न हो तो उस आदमीको चाहिये कि उस लड़केको उठाले और उसकी झाडफूंक करे। ऐसा न करके अगर वह आदमी पूजामें ही बैठा रहे और बालकके गिर पड़नेपर भी न उठे तो यह उसकी बड़ी भारी भूल है। ऐसी भूल समय समयका धर्म न समझनेके कारण होती है। इसलिये अगर सच्चा धर्म पालना हो और प्रभुको प्रसन्न करना हो तो हमें अपनी स्थितिका धर्म समझ लेना चाहिये।

बन्धुओ! याद रखना कि हम अपनी हैसियतका धर्म पालनेको बाध्य हैं, परन्तु हैसियतसे बाहर अनेक अच्छे काम होते हैं उन्हें करनेको हम बाध्य नहीं हैं। इसलिये भलीभांति समझ लेना चाहिये कि हमारी हैसियतका धर्म क्या है। अगर यह न समझे तो बहुत बड़ी गड़बड़ होजाती है। अगर सच्चा भक्त होना हो तो इन सब विषयोंका विचार करना और अपनी स्थितिका धर्म भूल कर दूसरोंकी हैसियतके बड़े बड़े कामोंका विचार करनेमें व्यर्थ समय मत गंवाना। दूसरोंकी हैसियत लायक बड़े कामोंसे आपका उद्धार नहीं होनेका; वरंच अपनी हैसियतके अनुसार ईश्वर इच्छासे आप जो छोटे छोटे काम करेंगे उन्हींसे आपका कल्याण

होगा। क्योंकि उन कामोंको प्रभुने आपको सौंपा है और आपसे छोटे छोटे काम करानेकी उसकी इच्छा है, इसीसे उसने छोटे काम आपकी हैसियत लायक कर दिये हैं। भाइयो! स्थितिका धर्म छोड़ कर बहुत बड़े काममें पड़नेका लोभ मत करना नहीं तो अतोभ्रष्ट ततोभ्रष्ट होजाओगे और "धोबीका कुत्ता न घरका न घाटका," वाला हाल हो जायगा। अपनी हैसियतके कामोंको छोटा समझ कर आप नहीं करेंगे तो वे काम भी रह जायंगे और आपकी हैसियतके बाहरका काम भी पूरा पूरा नहीं होसकेगा। तब दोनोंसे चूकियेगा और हाथ मलते रह जाइयेगा। ऐसा न होने देनेके लिये दूसरोंकी हैसियतके अच्छे अच्छे कामोंको देखनेमें ही मत रह जाइये वरंच भगवदिच्छासे जो अपनी हैसियत हो उसके अनुसार काम कीजिये। यही बात श्रीकृष्ण भगवानने श्रीमद्भगवद्गीतामें अर्जुनसे कही है। इसलिये उसका रहस्य समझ कर अपनी हैसितका धर्म कीजिये। अपनी हैसियतका धर्म कीजिये।

५१—हरएक धर्मके गुरु अपने मनमें डरते रहते हैं कि हमारे चेले कहीं हमें छोड़ न दें। इस डरके मारे वे अपने चेलोंसे कहते हैं कि तुम दूसरे धर्मगुरुओंके पास मत जाना, परन्तु उनका यह डर झूठा है।

जंगलमें कुए तालाब, नदी या बावलीके किनारे जहां पानी पीनेकी जगह होती है वहां दोपहरको बहुतसे चरवाहे अपनी

गाय भैंस और भेड़ बकरी लेकर जमा होते हैं। उस समय वहां हजारों पशु रहते हैं। यह देख कर अनजान आदमी सोचते हैं कि ये सब पशु अपने मालिकको कैसे पहचानेंगे ? और चरवाहे अपने गाय भैंस और भेड़ बकरियोंको कैसे पहचानेंगे ? क्योंकि उनमें ऊपरसे देखनेपर कुछ बहुत फर्क नहीं जान पड़ता।

बन्धुओ ! पशुओंको ऊपरसे देखनेपर पहली नजरमें कुछ फर्क नहीं जान पड़ता तोभी उन सबको उनके रखवार पहचानते हैं और वे पशु भी अपने मालिकको पहचानते हैं। वे नजरसे देख कर ही नहीं वरंच आवाजसे भी पहचानते हैं। अंधेरी रातको रखवारोंकी आवाजपर उनकी भेड़ बकरियां, गाय भैंस, घोड़े कुत्ते और गधे चले जाते हैं। उनमें आवाज पहचाननेकी ऐसी तीक्ष्ण शक्ति होती है कि उसे देख कर आश्चर्य हुए बिना नहीं रहता। विचार कीजिये कि जब इस किस्मके पशु भी अपने मालिक और अपने रखवारको पहचानते हैं तब क्या लायक चेले अपने सच्चे गुरुको नहीं पहचान सकते ?

पशुओंको धोखा देनेके लिये अगर कोई आदमी उनके रखवारकीसी आवाज निकाले तोभी पशु धोखा नहीं खाते वे नकली आवाजको तुरत ताड़जाते हैं। वैसे ही कोई दूसरा गुरु दूसरोंके चेलोंको अपनी ओर खींचनेके लिये चाहे जैसी युक्ति करे परन्तु सच्चे चेले उनकी उस युक्तिसे नहीं भूलते और अपने सच्चे गुरुको नहीं छोड़ते।

जो संगीतके रसिक होते हैं और जो इस विद्यामें आगे बढ़े होते हैं वे उस्ताद गवैयेके रागको तुरत पहचान लेते हैं। वैसे ही सच्चे गुरुके पक्के चेले अपने सद्गुरुके उपदेशको पहचान लेते हैं।

कोई स्त्री किसी लड़केकी माताकीसी साड़ी पहने या

कोई आदमी किसी लड़केके बापको ऐसी पगड़ी बांधे तो इससे लड़का अपने असली मा बापको भूल नहीं जाता। अपनी माकी आंखमें जो प्रेम होता है उस प्रेमकी झलक बालकको और किसी स्त्रीकी आंखमें नहीं दिखाई देती। वैसे ही जो सच्चे गुरु हैं उनको उनके पक्के चेले कभी नहीं भूलते या न छोड़ते। इसलिये सच्चे गुरुओंको इस किस्मका डर रखनेकी जरूरत नहीं है। परन्तु जिसका घर कमजोर है, गिरने पर है और जो आप डरपोक है उसे अपने पुराने घरको थूनी देनी पड़ती है। वैसे ही जो बेचारे धर्मगुरु भोले होते हैं, अधूरी समझवाले होते हैं और लस्टम पस्टमवाले होते है वे अपने मनमें डरते रहते हैं। इससे अपने चेलोंसे कहते है कि तुम दूसरे किसी गुरुका ज्ञान सुनने मत जाना, दूसरोंकी कथा सुनने मत जाना, दूसरे धर्मवालोंके साथ धर्मचर्चा मत करना नहीं तो तुम्हें बहुत पाप लगेगा। ऐसा कह कर डराया करते है। परन्तु उन्हें जान लेना चाहिये कि असली सोनेको अगर हजारों आदमी मिलकर कहें कि यह खोटा सोना है तो खरा सोना खोटा नहीं होजाता। इसलिये हे पवित्र गुरुओ! आप व्यर्थ दूसरे धर्मगुरुओंसे मत डरिये, मत डरिये, आप जहांतक बने अपने धर्ममें मस्त रहिये और अपने चेलोंको भी सच्चा प्याला पिला दीजिये। फिर निश्चय जानिये कि वे आपको छोड़ कर और कहीं नहीं जा सकते। झूठे डरमें मत रहिये वरंच अपने चेलोंको सत्यज्ञानका प्याला पिलाइये और सत्यप्रेमका प्याला पिलाइये। फिर तो वे आपके ही हैं और आप उन्हींके हैं।

५२-भगवानका यश बढ़ानेके लिये हम इस जगतमें जन्मे हैं, इसलिये अपने शुभ-कर्मोंका यश आप न ले कर प्रभुको देना चाहिये ।

बन्धुओ ! एक दुकानमें दो साझीदार हों एकका धन लगा हो और दूसरा मिहनत करता हो तो उनमें जो बड़ा हिस्सेदार होता है और जिसकी पूंजी होती है उसीका दुकानमें नाम चलता है, कुछ मिहनत करनेवाले छोटे हिस्सेदारका नाम प्रसिद्ध नहीं होता । याद रखना कि परमकृपालु परमात्मा हमारा बड़ा साझी-दार है, हम तो उसके पास काम करनेवाले निमित्तमात्र हैं । हम तो उसके हथियार समान हैं । इसलिये अपने धन, मन और शरीरसे जो कुछ शुभ काम हो उन सब कामोंका यश सर्वशक्तिमान परम कृपालु पिता परमात्मा को देना चाहिये । ऐसा न करें और अपने कामोंका सब यश आप ही लेलें तो उससे क्या परिणाम होता है यह आपको मालूम है ? इसके लिये एक महात्मा कहते थे कि

एक अंधा भिखारी था । वह रास्ते पर बैठा बैठा भीख मांगता था । दयालु आदमी कुछ पैसे देदेते थे । भिखमंगा पैसे जेबमें रखता जाता था । इस तरह उसने बहुत पैसे जेबमें रखे । इसके बाद वह भिखारी अपने घर गया और वहां पैसे निकालनेके लिये जेबमें हाथ डाला परन्तु देखता क्या है कि एक भी पैसा जेबमें नहीं है । इसका कारण यह है कि जेबमें छेद था उसमेंसे सब पैसे रास्तेमें गिर गये थे और भिखारीको इसकी कुछ खबर नहीं थी । इससे बहुत पैसे कमानेपर भी

जब घर आकर जेबमें पैसा न देखा तब वह बहुत अफसोस करने लगा।

भाइयो! उसी तरह, अंधे भिखारीकी तरह आप अगर पैसा जेबमें रहने देंगे अर्थात् अपने शुभ कामोंका यश आप अभी लेलेंगे और लोगोंकी वाहवाहीसे ही खुश हो कर मनमें फूलाकरेंगे, उस सर्वशक्तिमान परम कृपालु ईश्वरको बिसार देंगे तो आपके कामोंकी कीमत ईश्वरके दरबारमें कुछ भी नहीं होगी और बहुत कमानेपर भी आप घर पहुंचेंगे तो जेबको खाली पावेंगे। ऐसा न होने देनेके लिये हे भाइयो! जो जो सत्कर्म कीजिये उसका यश प्रभुको दीजिये और वे कर्म प्रभुको अर्पण कीजिये। तब वह टिकेगा और बड़ा लाभ देसकेगा।

इस जगतमें आप चाहे जितना बड़ा काम करें और सारी दुनियाका कल्याण करनेवाला सत्कर्म करें परन्तु सिर्फ अपने नामके लिये तथा कीर्त्तिके लिये करें ईश्वरके लिये न करें तो उसका कुछ भी मोल नहीं है। प्रभुको बिना साथ रखे और बिना अर्पण किये जो काम करते हैं वह इस समय आपको चाहे जितना बड़ा और चाहे जितना अच्छा लगता हो परन्तु अन्तको वह बिना इकाईके शून्य बराबर है। इसमें कुछ भी सन्देह नहीं है। इसलिये सब कर्म ब्रह्मार्पण विधिसे करना सीखना चाहिये।

काम चाहे छोटेसे छोटा हो परन्तु सर्वशक्तिमान अनन्त ब्रह्माण्डके नाथके लिये किया हो तो वह काम उसे बहुत प्रिय लगता है। अपने नामके लिये किये हुए बड़े यज्ञ, बड़ा दान और दूसरे पुण्यके काम उसको उतने प्यारे नहीं लगते। यह भलीभांति याद रखना।

बन्धुओ! जैसे पारसके स्पर्शसे लोहा भी सोना हो जाता है

वैसे भगवानके लिये करनेसे घर गृहस्थीके और देहके काम भी बड़े यज्ञके समान हो जाते है। शरीरके तथा घरके छोटे छोटे कामोंको भी परम कृपालु प्रभु अपना काम मान लेता है और प्रभु जिसको अपना मान ले उस कामसे कितना बड़ा लाभ है यह समझना कुछ मुश्किल नहीं है। इसलिये जैसे बने वैसे अपने नामका ख्याल छोड़ कर ऐसा कीजिये कि प्रभुका यश बढ़े। ऐसा कीजिये कि प्रभुका यश बढ़े।

५३—बहुत आदमियोंमें एक दूसरेसे नहीं पटती; इससे कलह होता है। ऐसे समय शान्तिसे रहनेका उपाय।

हम देखते हैं कि कितनी बहुओंकी अपनी साससे नहीं पटती; कितने नौकरोंकी अपने मालिकसे नहीं बनती; कितने आदमियोंकी अपने पड़ोसियोंसे नहीं पटती; कितने आदमियोंकी अपने हितनातोंसे नहीं बनती, कितने आदमियोंकी बिरादरीवालोंसे नहीं पटती, कितने विद्यार्थियोंकी अपने मास्टरोंसे नहीं पटती और कितने शिष्योंकी अपने गुरुसे नहीं बनती। इससे सब एक दूसरेकी निन्दा करते है और कहते हैं कि ये हमें बेकारण बहुत दुःख देते हैं, हमारा कुछ दोष नहीं है तोभी हमको बारंबार सताते हैं। यह सोच कर वे अपने मनमें बहुत झीखते हैं और दुखी हुआ करते हैं। ऐसे आदमी लाखो करोड़ों है। इसलिये ऐसा उपाय बतानेकी जरूरत है जिससे उनका दुःख घटे। इसके लिये सन्त कहते हैं कि—

भाइयो! आप दूसरोंके दोष ढूंढ़ते हैं और उनकी भूलें देखते है। इससे पहले जरा विचार करना कि इसमें कुछ आपकी भूल तो नहीं है? ऐसा तो नहीं है कि आप अपने स्वभावमें ही कुछ सुधार न करते हों? आपके बारेमे कोई कुछ सच्ची बात कहे तो ऐसा तो नहीं है कि आप सुन न सकते हों? ऐसा तो नहीं है कि कोई अदनीसी बात हो उसमें आप तिलका ताड़ कर बैठते हों और व्यर्थ मनमे कुढ़ते हों? ऐसा तो नहीं है कि किसी दूसरेकी बात होती हो और आप अपने ऊपर ओढ़ लेते हों? आपकी प्रकृति लजौनीघासकीसी तो नहीं है कि जरा हाथ लगाते ही सिकुड़ जाती हो? ऐसा तो नहीं है कि आपकी मनमानी न हो तो आप जलकर खाक हो जाते हो? ऐसा तो नही है कि दूसरेके अधीन रहना न रुचता हो इससे दागे हुए सांडकी तरह अपनी गर्दन पर किसीको हाथ रखने ही न देते हों और ऐसा तो नहीं है कि आपको काम काज करना न आता हो और आप अपना कर्त्तव्य पालनेमें चूकते हों? भाइयो और बहनों! जरा सोचिये तो सही। हम तो समझते हैं कि इनमेंसे कोई न कोई अवगुण आपमें है और इसीसे आपकी दूसरोंसे नहीं पटती सदा दोष ढूंढनेसे पहले जरा अपनी प्रकृति तो देखिये; दूसरोंका दोष निकालनेसे पहले जरा अपने स्वभावकी ओर तो देखिये, दूसरोंका ऐब निकालनेसे पहले जरा अपनी काम करनेकी रीति तो देखिये। यह सब देखियेगा तो आपकी समझमें आजायगा कि दूसरोंकी भूल निकालनेमें आधी भूल अपनी ही है और आधी भूल सामनेके आदमीकी है। उससे बचनेके लिये थोड़ी उपयोगी सूचनाएं याद कर लेना चाहिये और उनके अनुसार बर्ताव करनेकी कोशिश करना चाहिये। जैसे—आपके विरोधी जो बात कहें

उसको आप अपने ऊपर मत मान लेना और आनके माथे होने-वाली वातकी, दूसरोंसे सुनी वातकी और किसी कारणसे नमक मिर्च लगायी हुई बातकी परवा मत करना। इतनी मजबूती रखना आवे तो अनेक प्रकारका कलह घट जाता है और मनकी बहुत कुछ उलझन मिट जाती है।

दूसरे यह विचार करना कि इस संसारमें अनेक प्रकृतिके मनुष्य होते हैं। उन सब मनुष्योंका स्वभाव जुदा जुदा होता है, उनके आसपासके संयोग भिन्न भिन्न होते हैं, उनकी शिक्षा जुदी जुदी क़िस्मकी होती है और आदमी आदमीके आचार विचारमें भी कुछ कुछ भिन्नता होती है। विभिन्नता और विचित्रता मनुष्यके स्वभावमें और प्रकृतिमें रहती ही है। अगर आप अपने मनमें यह सोचें कि सभी हमारे जैसे विचारवाले हो जायं तो ऐसा कभी होनेका नहीं। हमारी खातिर कोई दूसरा आदमी अपना आचार विचार, अपनी रीतियां और अपनी आदत नहीं बदलनेका, वह जिस रास्ते जाता होगा उसी रास्ते जायगा और जैसा करता होगा वैसा ही करता रहेगा। इसलिये अगर मेल जोल रखना हो और भीतरसे शान्ति भोगनी हो तो हमें अपने स्वभावमें फेरबदल करना चाहिये। क्योंकि हम दुनियाको नहीं बदल सकते परन्तु अपने स्वभावको बदल सकते हैं और उसे बदलनेसे ही हमारी भलाई हो सकती है। इसलिये अगर व्यर्थके झगड़ेसे बचना हो तो अपने स्वभावको वशमें रखना सीखना चाहिये और अपने चालचलनमें सुधार करना चाहिये।

इसके सिवा इस प्रसङ्ग पर यह बात भी समझ लेना चाहिये कि छाते पर चाहे जितना पानी बरसे सब बाहर ही चला जाता है, छातेके भीतर नहीं आता। वैसे ही आपको भी

अपने विरुद्धकी सब टीका टिप्पणी तथा दूसरी बातें बाहर और दूर ही रखनी चाहियें। ऐसी बातोंको बहुत तुच्छ समझ कर हृदयके भीतर न घुसने देना। अगर ऐसा करना आवे तो इससे भी मनकी बहुत कुछ उलझन घट जाती है। भाइयो और बहनो! याद रखना कि इस जगतमें बहुत बातें ऐसी होती हैं जो अपनेको नहीं रुचतीं; बहुतसी घटनाएं ऐसी होती हैं जो अपनेको नहीं रुचतीं और बहुत आदमी ऐसे होते हैं जो अपनेको नहीं भाते। ऐसा नहीं हो सकता कि इन सबको हम इस दुनियासे निकाल डालें। ये सब तो रहेंगे ही, अपनी अपनी रीतिपर चलेंगे ही। इसलिये हमें अपनी आदत सुधारना चाहिये और ऐसा छाता बन जाना चाहिये कि इन सबका असर अपने ऊपर न हो। तभी सुखसे रह सकते हैं और शांति भोग सकते हैं। ऐसा बननेकी कोशिश कीजिये कि दुनियाकी छोटी बड़ी घटनाओंका धक्का अन्तःकरण तक न पहुंचे।

५४—बाहरसे मनुष्य चाहे जितने अच्छे हों परन्तु भीतरसे सभी थोड़े बहुत बिगड़ैल होते हैं।

एक अंचारवाला था उसके यहां बहुत किस्मके अंचार थे। इन अंचारोंको उसने अलग अलग बर्तनमें रखा था, कोई बर्तन पीला था, कोई सफेद था कोई नीला था, कोई बैंगनी रंगका था, कोई काला था और कोई लाल था। इसके सिवा कोई बर्तन चीनी मिट्टीका था, कोई फरासीसी पालिशवाला था, कोई विलायती

था, कोई जर्मनीका बना था, कोई काशीका था। और कोई वर्तन जापानका था। ये सब वर्तन एक दिन यों झगड़ा करने लगे।

एकने कहा कि मैं चीनका बना हूं इसलिये उत्तम हूं। दूसरेने कहा कि तू तो जंगली जैसा लगता है मेरे ऊपरकी पालिश देख, मैं पेरिसका बना हूं। तीसरेने कहा कि मैं काचका बना हूं और जर्मनीसे यहां आया हूं। चौथेने कहा कि मेरे ऊपरके चित्रोंको तो देखो और मेरा सुन्दर रंग तो निहारो। मैं जापानसे यहां आया हूं। पांचवेंने कहा कि तुम सब तकरार क्यों करते हो? तुम तो घड़ी भरमें टूटनेवाले हो। मैं काला हूं मगर मुझमें मज-बूती कितनी है यह तो जरा देखो। और तुम सब परदेशी हो परन्तु मैं इसी देशका हूं, इसलिये तुमसे श्रेष्ठ हूं। इस तरह वर्तन भीतर ही भीतर झगड़ा करने लगे। वर्तनोंका यह झगड़ा सुन कर अंचारवालेको क्रोध आया। उसने कहा—

निगोड़ो! बाहरकी सफाई सुघराईके लिये क्यों लड़रहे हो? जरा भीतर तो देखो। तुम सबके भीतर अंचार भरा है। अंचारमें नमक, मिर्च, तेल, खटाई आदि चीजें हैं। उनको नहीं देखते और बाहरकी सफाईपर मरते हो? अरे जरा भीतर तो जांचो! भीतर देखोगे तो सबकी कलई खुल जायगी। इसलिये अपने भीतरके तेल, मिर्च, नीबू, हींग और नमकको देखो। यह सुन कर सब वर्तन शर्मा गये और चुप हो गये।

यह दृष्टान्त दे कर एक महात्मा हरिजनोंको यों समझाते थे कि बन्धुओ! कितने आदमी मूंड़ मुड़ानेसे अपनेको बड़ा समझते हैं; कितने आदमी जटा रखनेसे अपनेको बड़ा समझते हैं; कितने आदमी बड़ी बड़ी मालाएं पहननेसे ही अपनेको पवित्र समझते हैं; कितने आदमी खूब गोपीचन्दन चुपड़नेसे ही समझते हैं कि हममें कुछ आगया है; कितने आदमी खास

ढंगका तिलक लगानेसे ही समझते हैं कि हम श्रेष्ठ है; कितने आदमी साधुपनेका अभिमान रखते है और कितने आदमी जप, व्रत, तीर्थ या दान करने या कोई पुस्तक या स्तोत्र पढ़नेसे ही अपनेको बड़ा भक्त समझते हैं। परन्तु वे अपने भीतरकी ओर नहीं देखते; अगर भीतरकी ओर देखें तो उन्हें तुरत पता लगजाय कि जैसे किस्म किस्मके बर्तनोंके अन्दर खटाई, तेल, हींग, नमक, मिर्च आदि चीजें भरी रहती है वैसे ही हमारे अन्दर भी काम, क्रोध, लोभ, मद, मोह, डाह आदि अनेक प्रकारके दुर्गुण भरे हैं। तिसपर भी अपने वाहरी आडम्बरपर, बाहरी भेषपर, वाहरी फेर बदलपर वाहरी दृश्यपर व्यर्थका अभिमान करते हैं। जैसे बाहरकी सफाईवाले बर्तनोंमें भी तीता मीठा अचार भरा होता है वैसे हमारे भीतर भी नमक, मिर्च, तेल और खटाईरूपी काम, क्रोध, लोभ, मोह आदि विकार मौजूद हैं। इसलिये हरएक साधुको, फकीरको, संन्यासीको, यतीको, ब्राह्मणको, पण्डितको, भक्तको, पुजारीको, गुरुको और इस प्रकारके दूसरे आदमीको याद रखना चाहिये कि बाहरसे चाहे जैसे अच्छे दिखाई देते हों परन्तु जबतक भीतरके विकार नहीं जाते तबतक सब समान ही हैं। तिसपर भी हम अच्छे तुम खराब, हम ऊंच तुम नीच, हम पुराने तुम नये और हम पवित्र तुम अपवित्र कह कर, उन बर्तनोंकी तरह व्यर्थ लड़ते झगड़ते हैं। बन्धुओ! खबरदार रहना कि ऐसी भूल न हो। यह समझ लेना कि बाहरसे चाहे जितने आकार प्रकारके हों जबतक भीतरके विकार नहीं हटते तबतक सब समान ही है। यह समझ कर जैसे बने वैसे ऐसी चेष्टा करना कि आपसका झगड़ा मिटे और भीतरके विकार घटें। यही हमारी विनती है।

५५–भाइयो ! जगतमें अनेक सुन्दर वस्तुएं पड़ी हैं ; उन्हें छोड़ कर कोने अंतरे पड़े हुए कूड़े कर्कटको क्यों देखते हो ?

एक अमीरने बहुत रुपये लगाकर एक बड़ा सुन्दर मकान बनवाया। अपने एक मित्रको वह मकान दिखानेके लिये बुला लेगया वह मित्र किवाड़की बगलमें अपना छाता रखने गया। वहां कुछ कूड़ा कर्कट दीखपड़ा। टहलुआ झाड़ू दे रहा था इतनेमें उसकी मालकिनने बुलाया; इससे उसने बैठकका कूड़ा एक कोनेमें डाल दिया था और उठानेका उसे समय नहीं मिला था। वहां छाता रखते समय मित्रकी नजर उस कूड़ेपर पड़ गयी। इसके बाद वह अमीर अपना मकान अपने मित्रको दिखाने लगा और उसकी खूबियां समझाने लगा। उसने कहा – देखो यह बिलियार्डकी टेबुल खास विलायतसे मंगवायी है। यह बिजलीका पंखा और बिजलीकी रोशनी हरएक कमरेमें लगवायी है। इस मकानमें फरनीचर है वह सब बहुत कीमती और नकाशीदार हैं। देखो ये फूल रखनेके गमले पेरिससे मंगाये हैं। ये पर्दे दक्खिन पूनेके हैं। ये गालीचे काश्मीरी हैं। यह खिलौनो का बक्स देखो। हमारा मुन्ना भी बड़ा शौकीन है। जहां बढ़िया खिलौना देखता है वहांसे ले आता है। यह दुनियाके नकशेके गोले देखो। इनके आसपासका ग्रहमण्डल भी देखने योग्य है। युरोपियन भी बड़ी अच्छी अच्छी युक्तियां लड़ाते हैं। इस टेबुलके ऊपरकी सुनहली जापानी मछलियां देखीं कि नहीं ? इन मछलियोंका नाच दिनभर होता रहता है। इसके देखनेसे भी चित्त बहलता है। इस दरवाजेमें लगा हुआ काच देखा ? उसमें यह खूबी है कि इस तरफकी आवाज उस

तरफ नहीं जाने देती । इस बैठकमें जो चित्र हैं वे सब बड़े बड़े प्रसिद्ध चितेरोंके हाथके है। इनमें बड़ा दाम लगा है। इस बगलके कमरेमें लाइब्रेरी है; उसमें चुनी हुई अच्छी अच्छी पुस्तकें संग्रहीत हैं। इस ढंगसे सजायी गयी हैं कि जो पुस्तक चाहिये बटन दबानेसे १६ सेकेण्डमें टेबुलपर आजाय। इस कुर्सीपर बैठनेसे आदमीका वजन हो जाता है और वह वजनका अंक कह सुनाती है; अंक देखनेकी मिहनत नहीं उठानी पड़ती। आजकल तरह तरहका सुबीता हो गया है। यों कितनी ही बातें हुई और कितनी नयी नयी सुन्दर चीजें उस सेठने अपने मित्रको दिखायीं। यह सब देख कर उस मित्रने कहा कि यह सब तो ठीक है परन्तु उस किवाड़के पीछे थोड़ा कूड़ा पड़ा है यह ठीक नहीं।

यह सुन कर उस सेठने कहा कि भाई! इन सब सुन्दर चीजोंको छोड़ कर तुम्हारा चित्त कोनेमें पड़े हुए जरासे कूड़ेपर क्यों गया? यों कोने अंतरे तो कहीं कहीं कूड़ा रहता ही है। इसे मगजमें क्यों घुसने देते हो? मुझे क्षमा करके कहने दो कि तुम्हारी यह रीति मुझे पसन्द नहीं आयी। यह कह कर उस अमीरने जरा अपना मुंह बिगाड़ा और यह देख कर वह मित्र भी जरा शरमा गया।

बन्धुओ! यह दृष्टान्त देकर एक भक्तराज महाराज समझाते थे कि बहुत बड़े सुन्दर मकानमें बहुत चीजें अच्छी हों और कहीं किसीकी भूलसे जरा कूड़ा रह गया हो तो हम उसे क्यों देखें? वैसे ही हमसे काम पड़नेवाले अनेक आदमियोंमें अनेक प्रकारके गुण होते हैं; कोई आदमी बहुत उदार होता है, कोई अच्छी रुचिवाला होता है, कोई बड़ा भजनानन्दी होता है, कोई बड़ा पवित्र होता है, कोई बड़ी शान्तिवाला होता है,

कोई बड़ा सन्तोषी होता है, कोई बड़ा गमखोर होता है, कोई अपनी इन्द्रियोंको अपने वशमें रखनेवाला होता है, कोई अपने स्वभावको बदल सकता है, कोई आसपासके आदमियोंकी तरह तरहसे मदद करता है, कोई आदमी बहुत छोटे पापसे भी डरा करता है और उससे सावधान होता है, कोई आदमी बड़ा बुद्धिमान होता है, कोई आदमी बड़ा दयालु होता है, कोई आदमी बड़ा कामकाजी होता है और कोई आदमी बड़ा प्रेमी होता है। इस तरह भिन्न भिन्न मनुष्योंमें किस्म किस्मके गुण होते है। उन गुणोंको न देखें और उनके दिखजानेवाले एकाध दोषको ही देखा करें तो क्या यह उचित है? और क्या यह धर्म है? जो संकीर्ण विचारके मनुष्य होते है, जो ओछी दृष्टिवाले होते हैं और जिनको और कोई कामकाज नहीं होता वे दूसरोंका दोष देखनेमें पडे रहते हैं। सच्चे भक्त उसपर क्यों ध्यान देने लगे? दूसरोंका दोष देखते रहनेसे और दोषका ही विचार करते रहनेसे आगे जा कर अपनी ही खराबी होती है। इसलिये हरिजनोंको किसीका दोष देखनेमें नहीं लगे रहना चाहिये; वरंच जैसे बने वैसे सारग्राही दृष्टि रखना चाहिये। इससे आगे जाकर बड़ा लाभ होता है। हरिजनो! किसीका दोष मत देखा कीजिये, सबका गुण देखा कीजिये। सबका गुण देखा कीजिये।

५६–गुलाबके पेड़में कांटा होता है उसको बहुत आदमी देखा करते हैं, परन्तु उसमें जो सुगन्ध होती है उसपर नजर नहीं डालते।

किसी आदमीकी या किसी वस्तुकी त्रुटि देखनेमें देर

नहीं लगती। बहुत छोटी त्रुटि हो तोभी वह तुरत ही दिख जाती है। इसका कारण यह है कि त्रुटि देखनेकी ओर मन बहुत जल्द दौड़ जाता है। परन्तु उसी आदमीमें या उसी वस्तुमें जो बहुतसी खूबियां होती हैं उनकी ओर ध्यान नहीं जाता। बहुत आदमियोंका ऐसा स्वभाव होता है, इससे बहुत खराबी होती है। दूसरोंका अवगुण देखते रहनेसे अपना मन भी ओछे दरजेका होजाता है और दूसरोंका गुण देखनेसे अपनेमें गुण आजाता है। क्योंकि जैसी भावना रखे वैसा फल मिलता है। इसलिये जिसको सच्चा हरिजन होना हो उसे गुणग्राहक होना चाहिये, उसे सारग्राही होना चाहिये और उसे उदार-बुद्धि होना चाहिये। परन्तु यह बात भलीभांति समझमें न आनेके कारण बहुत आदमी दूसरोंका दोष देखनेमें ही रह जाते हैं। गुलाबके पेड़का कांटा अपने मनमें गड़ाया करते हैं; परन्तु गुलाबके फूलमें जो सुगंध होती है उसका लाभ नहीं लेते। जैसे—

जब बहुत वर्षा होती है तब हम शिकायत करते हैं कि अब तो बहुत ठंढी हवा चलती है, बहुत सरदी होगयी है और वर्षाके दुःखसे हैरान होना पड़ता है। इस तरह अधिक वर्षाके कारण हमलोग बड़बड़ाते हैं परन्तु अधिक वर्षासे कुओंमें, तालाबोंमें और नदियोंमें दो तीन वर्ष तक चलने लायक जो पानी भर जायगा और उससे अनेक प्राणियोंको जो सुख होगा तथा जो नयी नयी फसलें उपजेंगी उस लाभकी ओर हम नहीं देखते।

इसीतरह गरमीमें जब कड़ी गरमी पड़ती है तब हम हाय हाय करते हैं और कहते हैं कि गरमीके मारे बड़ी आफत मच गयी है, बदन पसीना पसीना होरहा है और जी घबरा रहा है, इस तरह गरमीकी शिकायत करते हैं परन्तु उसी गरमीसे

फल पकते हैं; फूल खिलते हैं और खेतोंमें अन्न पकता है; इसको हम नहीं देखते।

इसीतरह जब तूफान चलता है तब हम तोबानिहुः मचाते है और कितनी गड़बड़ कर डालते है; परन्तु चारों ओरसे तूफानी हवा चलनेपर हमारे गांवकी, महल्लेकी तथा मोरियोंकी जो बदबू दूर होजाती है उसको हम नहीं देखते ।

बन्धुओ! इसप्रकार कांटेकी तरफ, दुःखकी तरफ, कमजोर पहलूकी तरफ और त्रुटि तथा अड़चलोंकी तरफ ही हमारी निगाह रहती है परन्तु इनसे जो बहुत बड़ा लाभ होता है उसकी तरफ हमारा ध्यान नहीं रहता। अगर यह दृष्टान्त दूर जा पड़ता हो तो इसीप्रकारकी अपने घरमें रोज होनेवाली घटनाओंको लीजिये। जैसे—

हमारा कोई नौकर किसी वक्त कोई भूल करता है तो उसका अगला पिछला कसूर याद करके हम उसे डांटते है; कितनी बार कितने आदमी तो छोटीसी भूलके लिये भी अपने नौकरसे नाक रगड़वाते हैं; परन्तु उसी नौकरने पहले बहुत मिहनत की हो, बहुतसी खूबियां दिखायी हों और बहुत नमकहलाली की हो तोभी उसको उसकी छोटीसी भूलके सामने कुछ नहीं गिनते।

हमारा लड़का जब परीक्षामें फेल होजाता है तब हम मुँह भिचकाते हैं और उसको ताना मारते हैं। कितने ही क्रोधी आदमी तो मूर्ख, गधा, लुच्चा आदि खिताब देने लगते हैं, परन्तु उसी लड़केने पढ़नेमें जो मिहनत की है और परीक्षामें बैठनेके लिये जो योग्यता प्राप्त की है उसकी ओर हम नहीं देखते। उतने बड़े और उससे बड़े अच्छे सुबीतेवाले दूसरे सैकड़ों लड़के इतना भी कहां करते हैं? इसको हम नहीं देखते; सिर्फ फेल

होनेको ही देखा करते है और उसीके लिये ताने मारा करते हैं तथा आप भी दुखी होते हैं। इस तरह कचाई देखनेमें ही रह जाना कितनी बड़ी भूल है इसका जरा विचार करना चाहिये।

घरमें स्त्रीसे किसी दिन रोटीकी कोर जरा कच्ची रह जाय तो उसके लिये चसे बात कहनेको तय्यार होजाते हैं परन्तु उसने कितने दिन अच्छी रोटी बनायी और खिलायी है उसका ख्याल नहीं रहता। जली रोटी बनानेमें भी उसको कितनी कठिनाई पड़ी होगी तथा रोटी जलनेके क्या क्या कारण होंगे और इसके लिये उसका मन कितना दुखी हुआ होगा यह सब बिना जाने बूझे हम झटपट उसे डांटनेको ही बहादुर बनजाते हैं। हरिजनोंको विचार करना चाहिये कि ऐसा बर्ताव करना और ऐसी दोषदृष्टि रखना क्या उचित है?

बन्धुओ! मनुष्यसे भूल तो होती ही है। कितनी पुस्तकें तथा कितने विचार हमें नहीं रुचते तोभी वे जगतमें रहते ही हैं। इसलिये इन सब विषयोंका दोष ढूंढ़नेमें ही न रह जाना चाहिये, परन्तु उनमें जो गुण हो उस तरफ ध्यान देना चाहिये और किसी आदमीकी कुछ कचाई दिखाई दे तो उसपर नुक्ताचीनी न करना चाहिये वरंच मीठी बातोंमें उसे सलाह देना चाहिये।

भाइयो! अगर इस विषयपर ध्यान दिया जाय तो जितने आदमियोंसे काम पड़ता है उनमेंसे बहुतोंसे झगड़ा घट जाता है और वे प्रसन्न रहते है तथा अपने हृदयमें भी आनन्द आता है। इसलिये हरिजनो! दूसरोंका दोष देखनेमें ही मत रह जाना बल्कि सब वस्तुओमें, सब घटनाओमें और सब मनुष्योंमें गुण ढूंढ़ना सीखिये। गुण ढूंढ़ना सीखिये।

५७–जप करने तथा ध्यान धरनेकी जरूरतके विषयमें।

बन्धुओ! पहले जमानेमें हमारे बापदादे सर्वशक्तिमान, परमकृपालु परमात्मा का नाम सुमिरने, गुण गाने तथा ध्यान करनेमें हररोज बहुत समय बिताते थे। परन्तु अफसोस है कि आजके जमानेमें इन बातोंसे लोग बहुत ही लापरवा बनते जाते हैं। इसका कारण यह है कि आजके जमानेमें जंजाल बहुत बढ़ता जाता है और मौज शौकके साधन भी बहुत बढ़ते जाते है इससे लोग उनमें फँसते जाते है और ईश्वरी ज्ञानके विषयमें कोरे पड़ते जाते है। जैसे गहरी नदी ज्यों ज्यों सूखती है त्यों त्यो उसकी गहराई घटती जाती है; वैसे ज्यों ज्यों हमारे मनमें प्रपंच आता जाता है और जगतका मोह तथा लालसा बढ़ती जाती है त्यो त्यों प्रभुप्रेमके विषयमें लोग ढीले पड़ते जाते है और ईश्वरीज्ञानसे लापरवा बनते जाते हैं। परन्तु याद रखना कि ऐसा होना बहुत बुरा है और इससे बड़ी खराबी होती है। हम जो कुछ जप ध्यान आदि करते है उससे ईश्वरको कुछ लाभ नहीं होता और वैसा न करें तो ईश्वरका कुछ नुकसान नहीं होता, यह सब अपनी आत्माके कल्याणके लिये करते है अगर इसमें लापरवाही रखें तो अपनी ही आत्माका अनिष्ट होता है। इसीलिये प्रभुका भजन ध्यान करनेमें लापरवाही नहीं रखना चाहिये बल्कि जैसे बने वैसे ऐसा करना चाहिये कि ईश्वरका भजन, स्मरण तथा ध्यान अधिक हो।

बन्धुओ! यह बात नहीं है कि संसारी आदमी ही भजनमें ढीले होरहे हैं, आजके जमानेमें कितने ही भक्त भी भजनमें ढीले पड़गये हैं और बहुत थोड़े समयतक जप ध्यान करते हैं। इसके

लिये वे यह कहते हैं कि हम परमार्थके काम करनेमें लगे रहते हैं; भजन, जप, ध्यान आदिके लिये बहुत समय नहीं मिलता। इससे हम उसमें अधिक समय नहीं लगा सकते। परन्तु इसके उत्तरमें महात्मा लोग कहते हैं कि—

दूसरेका घर सम्हाल देना बहुत अच्छी बात है परन्तु ऐसा न होना चाहिये कि दूसरोंका घर सम्हालनेमें ही रहजायं और अपना घर लुटजाय। पहले अपना घर सम्हालना चाहिये और पीछे दूसरोंके घरकी खोज खबर लेना चाहिये। वैसे ही पहले अपनी आत्माके कल्याणकी बातपर ध्यान देना चाहिये और उसके बाद परमार्थका काम करना चाहिये। जिसमें आत्मिक बल आजाता है वही आदमी सबसे अधिक कल्याण कर सकता है। सो परमार्थ करनेके लिये पहले आत्मिकबल प्राप्त करनेकी जरूरत है। जब खूब भजन हो, खूब जप हो और खूब ईश्वरका ध्यान हो तभी आत्मिकबल बढ़ सकता है। वह बल जप तथा ध्यानसे ही मिल सकता है। इसलिये जप तथा ध्यान करनेकी जरूरत है।

जो पौधा बहुत ऊँचा जाता और लम्बा होता है वह पतला और कमजोर होता है। वैसे ही याद रखना कि जिस मनुष्यकी वृत्तियां बाहर बहुत फैल जाती हैं उसको भीतरसे आत्माका आनन्द ठीक ठीक नहीं मिलता। परमार्थके काम करनेके लिये जो भक्त अपनी वृत्तियोंको बाहर फैलाते हों उनको जप ध्यान आदि करनेकी और भी ज्यादा जरूरत है। अगर उनको भीतरसे सच्चा आनन्द न मिले और वे सच्ची वस्तुतक न पहुँच सकें तो कोई भी बड़ा परमार्थ नहीं कर सकेंगे उल्टे छोटी छोटी ऊपरी बातोंमें ही रह जायंगे। ऐसा न होने देने और सच्चा परमार्थ करनेके लिये परमार्थी भक्तोंको भी जैसे बने वैसे अधिक भजन

करनेकी जरूरत है।

बहुतेरे आदमी परमार्थकी बातें करते हैं परन्तु सबसे सच्चा और बड़ा तथा प्रभुको प्यारा लगनेवाला परमार्थ क्या है यह आप जानते हैं? इसके लिये सन्त कहते हैं कि मायाके जालमें फँसे-हुए मनुष्योंको भगवानका ज्ञान देना और उनके काम, क्रोध, लोभ, मोह आदि विकार घटाना तथा उनके हृदयमें शान्ति लानेका काम करना ही सबसे बड़ा परमार्थ है। याद रहे कि धनसे शान्ति नहीं मिलती, गाड़ी घोड़ेसे, बड़े बड़े महलोंसे, उत्तम प्रकारकी मिष्टान्नसे और अनेक प्रकारके वैभवसे भी भीतरकी शान्ति नहीं मिलती। जब भीतरके विकार घटें और हृदयमें प्रभुप्रेम आवे तभी सच्ची शान्ति मिल सकती है। इसलिये किसी आदमीकी जिन्दगी सुधारने, किसी आदमीके हृदयमें प्रभुप्रेम जगाने और किसी मनुष्यको सच्ची शान्ति देनेका नाम ही बड़ा परमार्थ है। ऐसा ऊंचा परमार्थ उन्हींसे हो सकता है जो भक्त खूब भजन ध्यान करते हों और भगवानके साथ एकरस हो गये हों। इसलिये इस प्रकारका सच्चा परमार्थ करनेके निमित्त भी भजन, जप तथा ध्यान बढ़ानेकी जरूरत है।

जैसे छोटे बालकको दूध पिलानेवाली माताके लिये अच्छी खुराककी जरूरत पड़ती है वैसे ही जो भक्त परमार्थके काम करना चाहते हैं तथा दूसरोंको उपदेश देनेका काम करते हैं उनको और अधिक भजन करनेकी जरूरत है। वे दूध पिलाने-वाली माताके समान हैं। उनके आसरे अनेक बालकरूपी अज्ञान मनुष्य पड़े हुए हैं। उनके पोषणके लिये जप, तप, ध्यान, दान आदिकी अधिक आवश्यकता है। इस कारण परमार्थी भक्तोंको तो और अधिक भजन करना चाहिये। वे ऐसा करें तभी परमार्थके काम अच्छी तरह कर सकते हैं। अगर वे भजन ध्यानमें लापर-

बाहरी रखें तो उनके परमार्थके कामोंमें भी शून्यता आजाती है। इसलिये परमार्थी सज्जनोंको भजन ध्यान छोड़ कर केवल बाहरी परमार्थके कामोंमें ही न रह जाना चाहिये बरंच बाहरका परमार्थ भलीभांति करनेके लिये हृदयसे जागते रहना चाहिये और ऐसी जागृति रखनेके लिये, अधिक भजन करना चाहिये।

कितने आदमी नदी किनारे रहते हैं और लोगोंको पार उतारनेका काम करते हैं। उनका मुख्य काम यह होता है कि जब नदीमें बाढ़ आती है तब लोगोंका हाथ पकड़ कर तथा अपने कन्धेपर लेकर पार उतारते है। उन्हें अपने पैर तथा शरीरको बहुत मजबूत रखना पड़ता है। ढीलेसीले रहनेसे वे दूसरे आदमियोंको नदी पार नहीं कर सकते। याद रखना कि जो महात्मा हैं, जो भक्त हैं, जो संत हैं, जो हरिजन हैं और जो परमार्थका काम करनेवाले सज्जन हैं वे भी वैसे ही हैं। क्योंकि वे दूसरे आदमियोंको तारने तथा मदद देनेका काम करते है। इसलिये उन्हें जैसे बने वैसे अपना आत्मिकबल बढ़ानेका उपाय करना चाहिये। वह उपाय यही है कि जैसे बने वैसे परम कृपालु परमात्माके पवित्र नामका जप अधिक हो, प्रभुके प्रीत्यर्थ परमार्थके काम अधिक हों, भगवानकी महिमा अधिक समझमें आवे और उस सर्वशक्तिमान पवित्र पिताका गुण अधिक गाया जाय तथा उस निरंजन निराकारका ध्यान अधिक धरा जाय। ये सब आत्मिक बल पाने के सच्चे उपाय हैं। जिनको गुरु बनना हो, जिनको उपदेशक होना हो और जिनको धर्मका अगुआ होना हो उन्हें चाह कर जैसे बने वैसे अधिक भजन करना चाहिये।

५८–जप करने तथा ध्यान धरनेकी जरूरतके विषयमें। (२)

पहलेके हमारे पूर्वज तथा दुनियाके दूसरे कितने देशोंके आदमी भी प्रभुभजनमें इतने लीन रहते थे कि उन्हें भगवानके ध्यानसे बाहर निकालना और दुनियवी कामकाजमें लगाना बहुत मुश्किल होता था। हम कितनी बातोंमें सुनते हैं तथा कितने पुराणोंमें पढ़ते हैं कि कितने ही ऋषियोंको तपसे हटानेमें बड़ी कठिनाई पड़ती थी। इसका कारण यह है कि महा आनन्दके आनन्दसागर भगवानका आनन्द ऐसा है कि उनमें चित्त लग जानेपर फिर उसे छोड़नेका मन नहीं करता। इससे ध्यानकी स्थितिसे नीचे उतरना उन्हें बड़ा जब्र मालूम देता है। परन्तु अब ऐसा जमाना आया है कि ध्यानकी दशामें जाना ही लोगोंको जब्र मालूम देता है। इसके सिवा बहुतेरे आदमी बहुत मिहनत करते हैं तो-भी ऊंचे दरजेका ध्यान नहीं लगा सकते। यह बहुत खराब बात है। ज्ञान ध्यानमें, कथा कीर्त्तनमें, जप तपमें और इसी प्रकार आत्माके कल्याणके दूसरे कामोंमें ढीला पड़जाना ईश्वरसे विमुख होनेके बराबर है। यह विमुखता बहुत ही खराब है। इस जगतमें जन्म लेनेका हेतु ही है ईश्वरको पहचानना, जैसे बने वैसे उसके निकट रहना, उसके साथ एकरस होना, उसके आनन्दका भागी होना, उसके प्रेमसे प्रेम लेना और उसके अमरत्वसे अमरत्व पाना। ऐसा करनेके लिये ही हमारा जन्म है और ऐसा कर सकें तभी जीवन सार्थक होता है। इसके बदले मायाके मोहवाले पदार्थोंमें ही वृत्तियोंका खिंचा रहना और अपनेको उत्पन्न करनेवाले अनन्त ब्रह्माण्डके नाथकी ओरसे लापरवा होना क्या बड़ीसे बड़ी भूल नहीं है? यह क्या बड़ीसे बड़ी

खराबी नहीं है ? दूसरे सब विषयों तथा बहुतेरे मनुष्योंसे जान पहचान हो और अपने भलेसे भले, बड़ेसे बड़े और सगेसे सगे पितासे जान पहचान न हो तो इससे बढ़ कर नालायकी क्या है ? बन्धुओ ! ऐसी भूलमें न पड़े रहनेके लिये जैसे बने वैसे ऐसा करना कि भगवानके नामका जप खूब हो तथा उसका ध्यान खूब हो।

प्रभुके पवित्र नामका जप करना तथा उसका ध्यान धरना क्या है यह आप जानते हैं ? इसके लिये सन्त लोग कहते हैं कि ईश्वरके साथ बात करनेको या ईश्वर स्वयं हमसे जो बात करे उसे सुननेको, उसकी प्रेरणाएं पकड़ने और उसके अनुसार चलनेको हम जप तथा ध्यान कहते हैं और यही करनेका नाम सच्चा भजन है। भगवानकी इच्छा जाननेके लिये, अपने हृदयके बोझ उतारनेके लिये, अपने कर्म ईश्वरको अर्पण करनेके लिये और ईश्वरमें जो अलौकिक अपार आनन्द है उसे लेनेके लिये पहलेसमयके मनुष्य पवित्र नदियोंके किनारे जाते, पहाड़की गुफामें रहते, जंगलमें वास करते और समुद्र किनारे जाते थे। गांवमें बड़ी घड़ी हो तो उसका घंटा दिनमें शोर गुलके कारण ठीक ठीक सुनाई नहीं देता, परन्तु रातको जब शान्ति होती है तब उस घड़ीका घंटा ठीक ठीक सुनाई देता है। वैसे ही मनुष्योंका मन जब जगतके जंजालमें लिपटा रहता है तब उन्हें प्रभुकी आवाज सुनाई नहीं देती परन्तु जब वे एकान्त चित्त-वाले बन जाते है और अपने मनसे सब तरहका जंजाल तथा वासनाएं निकाल डालते है तब उन्हें ईश्वरी आवाज सुनाई देती है। इसलिये एकान्त जीवन बिता कर प्रभुसे तन्मय होनेके लिये वे जंगलमें तथा पहाड़की गुफाओंमें जाते थे। परन्तु बन्धुओ ! याद रखना कि आजके जमानेमें वैसा करना उचित नहीं है

क्योंकि जमाना बदल गया है। अब साधन बढ़गये हैं, सुवीते बढ़गये हैं और अब मनुष्यजातिके ज्ञानमें पहलेसे बहुत अधिक बढ़ती हुई है। इसलिये श्रीकृष्ण भगवानने यह सिखाया है कि—"तुम अपनी स्थितिका धर्म करो और उसीसे मोक्ष पाओ तभी तुम्हारी बड़ाई है।" जंगलमें भाग कर या गुफामें बैठ कर ईश्वरको भजना कोई बड़ी बात नहीं है परन्तु जगतके जंजालमें रह कर घर गृहस्थी चलाते चलाते और जीवनका कर्तव्य पालते पालते भगवानको भजें, उसका जप ध्यान करें और उसकी प्रेरणा समझ कर उसके अनुसार चलें तब आपकी खूबी कहलायगी यह बात भलीभांति समझानेके लिये एक भक्तराज महाराज कहते थे कि—

जो बहादुर लड़ाका है वह दुश्मनसे डर कर भाग नहीं जाता; क्योंकि भागनेवाला कायर कहलाता है। सच्चा शूर वीर चारों ओरसे शत्रुओंसे घिरा हो तोभी युद्ध करता है और सबको जीत लेता है। जो ऐसा बड़ा योद्धा होता है उसीको कीर्त्ति तथा विजय मिलती है। जो आदमी दुश्मनसे डर कर भाग जाता है उसको कुछ विजय या कीर्त्ति नहीं मिलती। वैसे ही याद रखना कि भजन करनेके लिये जंगलमें भाग जाना और फिर भगवानका ध्यान धरना कोई बड़ी बात नहीं है, बरंच संसार व्यवहारके बीचमें रह कर अपना कर्त्तव्य पालते हुए भीतरसे एकान्त समझना और किसी प्रकारके विकार या किसी तरहके हानि लाभका धक्का भीतर न पहुंचने देना और अपने नियमके अनुसार भजन ध्यान करना तथा भगवानसे सच्ची बातें करना तथा भगवानकी बातें सुनना बड़ी भक्ति कहलाती है और ऐसा करनेवालेको ही हम बड़ा भक्त समझते हैं, सच्चा भक्त समझते हैं। इसलिये बन्धुओ! अगर प्रभुका प्यारा होना हो

और सच्ची भक्ति करनी हो तो इस प्रकारके एकाग्र भक्त बनिये। इस प्रकारके एकाग्र भक्त बनिये।

५९–जप करने तथा ध्यान धरनेकी जरूरतके विषयमें। (२)

बन्धुओ! जब हमारे घर कोई बड़ा अमीर या अफसर आनेको होता है तब हम घरमें बड़ी सफाई रखते हैं और जब नगरमें राजा आनेको होता है तब सारे नगरकी सफाई की जाती है। वैसे ही जब हमें अपने हृदयमें प्रभुको पधराना हो तब अपने हृदयको खूब साफ रखना चाहिये। उस समय उसमें प्रभुके सिवा और किसी प्रकारका विचार न आने देना चाहिये; और सब विचारोंको दूर कर देना चाहिये। जबतक और किसी प्रकारके विचार हृदयमें रमते रहते हैं तबतक उसमें प्रभु नहीं पधारता। इसलिये प्रभुको हृदयमें लेना हो तो सब तरहके निकम्मे तथा स्वार्थके विचारोंको दूर करना चाहिये। जब इस तरह और सब विचारोंको दूर करना आवे तब एकाग्रता कहलाती है। ऐसी एकाग्रतामें जो जप ध्यान या भजन होता है वह उत्तमसे उत्तम है और वह भजन प्रभुको बड़ा प्रिय लगता है। इसलिये अगर सच्चा भक्त होना हो और प्रभुको प्रसन्न करना हो तो इस किस्मका एकाग्रभक्त बनना सीखिये। तब आपकी भक्ति शीघ्र फलीभूत होसकेगी और आप उससे अपूर्व आनन्द भोग सकेंगे। अगर दिनभर एकाग्रता न रहे तो कुछ फिकर नहीं परन्तु भजन करते समय एकाग्र होनेके लिये भरपूर उद्योग करना

चाहिये। अगर ख्याल रखें तो इतना बहुत आसानीसे हो सकता है। जबतक इस तरह अन्तःकरणको एकाग्र करना नहीं आवेगा तबतक वास्तवमें भक्तिमें आगे नहीं बढ़सकेंगे। जबतक भक्तिमें आगे न बढ़ेंगे तबतक सच्चा आनन्द नहीं भोग सकेंगे। यह सब करनेके लिये हृदयसे एकाग्रभक्त होनेकी कोशिश कीजिये। हृदयसे एकाग्रभक्त होनेकी कोशिश कीजिये।

समुद्रमें तूफानसे जब लहरें उठती है और पानी इधर उधर हिलता डोलता है तथा ऊपर नीचे होता है तब उसमें चेहरा नहीं दिखाई देता परन्तु जब पानी स्थिर रहता है तब उसमें चेहरा दिखाई देता है। वैसे ही याद रखना कि जबतक मन चंचल रहता है और हृदयमें तरह तरहकी वृत्तियां उठा करती हैं तबतक सच्चा भजन नहीं हो सकता, जब मन शान्त होता है, हृदय ठहरता है और वृत्तियां अपने अपने घरमें शान्तिसे बैठती हैं तभी असली भजन हो सकता है। इसलिये प्रभुको प्रसन्न करनेवाला भजन करनेके लिये अन्तःकरणको एकाग्र बनाना चाहिये और एकाग्रता लानेके लिये हृदयको शान्तिमें रखनेका अभ्यास करना चाहिये। अन्तःकरण शान्त हो, उसमें किसी प्रकारकी कल्पना न होती हो तथा किसी प्रकारका संकल्प विकल्प न उठता हो तभी असली भजन हो सकता है। एकाग्र भक्त होनेके लिये ऐसा कीजिये कि सांसारिक विषयोंका धक्का अन्तःकरणको न लगे। तब अंतःकरण शान्तिमें रह सकेगा और उसमे प्रभु पधार सकेगा। अन्तःकरणमें प्रभुके पधारनेपर जैसा आनन्द होता है उसका वर्णन नहीं हो सकता उसे अनुभवी जन ही समझ सकते हैं। हम चाहते हैं कि आपको ऐसा ऊंचा अनुभव लेनेका सौभाग्य प्राप्त हो।

अपने मित्रसे जब कोई गुप्त बात करनी होती है, तब अगर

वहां मनुष्योंकी भीड़ होती है तो कुछ दूर हट कर अलग एकान्तमें चले जाते हैं और वहां उससे बातचीत करते हैं । मनुष्योंकी भीड़में बात करनेसे आनन्द नहीं मिलता। वैसे ही जब हमें सर्वशक्तिमान-अनन्त ब्रह्माण्डके नाथसे बात करना हो तब ऐकान्तिक बनना चाहिये, तब भीड़भड़केसे अलग हट जाना चाहिये और तब ऐसी जगह जाना चाहिये जहां कुछ भी रुकावट न पड़े। जितना ही एकान्त होगा ,उतना ही अपने प्यारेके साथ आनन्द भोग सकेंगे। ऐसे एकान्तका आनन्द लेनेके लिये प्रपंची वृत्तियोंके प्रपंचको भजनके समय दूर करलेना चाहिये, व्यवहारका जंजाल उस समय भूल जाना चाहिये और सांसारिक खटपटको भजनके समय भीतरसे निकाल देना चाहिये। इस भीड़भाड़से निकल कर एकान्तमें चले जानेपर ही सच्ची भक्ति हो सकती है, तभी सच्ची शान्ति भोगी जासकती है और तभी प्रभु प्रसन्न होता है । इसलिये जगतका कर्तव्य पालते हुए भी ऐकान्तिक रहनेकी चेष्टा कीजिये।

बन्धुओ! याद रखना कि जंजाल भोगते हुए भी ऐकान्तिक बनना कुछ कठिन नहीं है। पहले जमानेमें कितने भक्त घर गृहस्थीका जंजाल सहते हुए भी अपनी जीवात्माको ऐकान्तिक दशामें रख सकते थे। रोजगार धंधा छोड़ कर तथा घर बार त्याग कर भक्त होना कोई बड़ी बात नहीं है; परन्तु रोजगार धन्धा करते हुए भक्त होना ही बड़ी बात है। इसीसे पहलेके कितनेही महात्मा अपना धंधा करते थे। जैसे-महात्मा तुकाराम बैल लादनेका काम करते थे। महात्मा कबीरदास कपड़ा बुननेका काम करते थे। इनके सिंवा और भी बहुतसे भक्त अपना अपना रोजगार धंधा करते थे और तिसपर भी बहुत बड़े भक्त होगये थे। रोजगार धंधा करते हुए भी उन्हें अपने हृदयमें

ऐकान्तिकता रखना आता था इससे वे बड़े भक्त हो सके थे तथा प्रभुप्रेमका लाभ लेसके थे। हमें भी उनके कदम ब कदम चल कर घर गृहस्थीका कर्त्तव्य पालते हुए भीतरसे ऐकान्तिक भक्त होनेकी कोशिश करना चाहिये। अगर कोशिश करते रहें तो थोड़े समयमें ऐकान्तिक बनना आजाता है। फिर जैसे जैसे जप और ध्यानका जोर बढ़ता जाय वैसे वैसे ऐकान्तिकतामें सच्चा आनन्द लिया जासकता है। इसलिये जगतका जंजाल सहते हुए भी अन्तःकरणको शान्तिमें रखना सीखिये और उसमें प्रभुको पधराना सीखिये। यही हमारी सलाह है।

६०–जप करने तथा ध्यान धरनेकी जरूरतके विषयमें। (४)

जो आदमी बाहरसे माला तिलक भस्म जटा आदि भक्तिके चिन्ह धारण करता है और उसे धारण करनेसे ही अपनेको बड़ा समझता है; परन्तु जिसके हृदयमें अनेक प्रकारकी वासनाएं भरी हैं, जिसके मनमें अनेक प्रकारका मोह है और जो सब कुछ दिखानेके लिये ही करता है तथा अपनी आशा तृष्णाको पोसनेके लिये ही भक्तिका ढोंग रचता है वह बहुत ठगा जाता है। क्योंकि ऐकान्तिक हुए बिना सच्ची शांति या सच्चा आनन्द नहीं मिलता। इसलिये भाइयो! खाली बाहरके ढोंग ढकोसलेमें ही न रह जाना, बरंच जैसे बने वैसे हृदयसे उपाधि घटाने और ऐकान्तिक बननेका उपाय करना।

जिस आदमीके मनसे धनकी, इज्जतकी, सुख विलासकी,

कुटुम्बसुखकी तथा बहुत दिन जीनेकी वासनायें नहीं गयी हैं और फिरभी जो बाहरसे त्याग और वैराग्यका ढोंग किये फिरता है समझना कि उसका अन्तःकरण एकाग्र नहीं हुआ है। इसके सिवा जो आदमी अपनी स्थितिमें सन्तोष नहीं पाता और जो आदमी बाहरसे आपड़नेवाले सुख दुःखके समय शान्ति नहीं रखता वह चाहे जितना ज्ञान और भक्तिका ढोंग दिखावे यह हरगिज मत समझना कि वह अन्तःकरणसे एकाग्र हुआ है। बन्धुओ ! इस तरह बाहरसे त्यागका ढोंग करनेवाले इस दुनियाके कुछ भोलेभाले मनुष्योंको शायद ठगलें परन्तु अपनी आत्माको नहीं ठग सकते। इसलिये वे बाहरसे हजार वेश बनावें परन्तु उनकी आत्मा भीतरसे छटपटाती रहती है, उनकी आत्मा भीतरसे दुखी ही रहती है और उसे शान्ति मिलती ही नहीं। ऐसी स्थितिमें रहना क्या उचित है ? ऐसा न होने देनेके लिये भूलभरे बाहरके ढोंगी त्याग वैराग्यमें मत फंस जाना बरंच जगतका जंजाल भोगते हुए भी अपनी स्थितिमें आनन्दी रह कर भीतरसे एकाग्रचित्त होनेका उपाय करना, बाहरके त्यागियोंसे भीतरसे एकाग्र होनेवाले संसारी श्रेष्ठ हैं। इसलिये भीतरसे एकाग्र होनेकी कोशिश कीजिये।

जगतका सारा जंजाल भोगते हुए भी भीतरसे ऐकान्तिक या एकाग्र होना बहुत उत्तम बात है। ध्रुव प्रह्लाद, विदुर, अक्रूर, सुदामा इत्यादि महात्मा घर गृहस्थी या राज्य सम्बंधी अपना कर्त्तव्य पालन करते थे और फिर भी प्रभुप्रेमका ऐकान्तिक आनन्द भोगते थे। इसीसे वे दूसरे कितनेही साधु सन्तोंसे श्रेष्ठ गिने जाते हैं। उन्होंने अपने दृष्टान्तसे जगतको सिखाया है कि प्रभुकी भक्ति करनेके लिये घर गृहस्थी छोड़ देनेकी कुछ जरूरत नहीं है, प्रभुने अपनेको जिस दशामें रखा हो उस

स्थितिका धर्म पालन कर उसीमें एकाग्र भक्त होना वड़ी बात है। जो ऐसा कर सकता है वही प्रभुका सबसे प्यारा भक्त हो सकता है। इसलिये बन्धुओ! हमें भी ऐसे माहात्माओंका पदानुसरण करके अपनी स्थितिका धर्म पालना चाहिये और उसके साथ ही हृदयसे एकाग्र भक्त होना चाहिये। जब ऐसा करें तभी खूबी कहलायगी। आपको हमारी यही सलाह है कि जगतका जंजाल सहते हुए हृदयसे निर्लेप रहना सीखिये।

इस जगतमें घनेरे आदमी ऐसे मोहवादी होते हैं कि वे अपने पालतू कुत्ते, बिल्ली, घोड़े, बन्दर, हरिण, तोते मैना आदि जानवरोंपर इतना अधिक स्नेह रखते हैं कि देख कर आश्चर्य हुए बिना नहीं रहता। वे ऐसे जानवरोंको अपने साथ खिलाते हैं, अपने साथ सुलाते हैं और अपने साथ गाड़ी में घुमाते हैं। यहांतक कि उन जानवरोंके बिना वे थोड़ी देर भी नहीं रह सकते। सारा समय उन्हींके ध्यानमें बिताते हैं तथा ऐसी ही बातोंमें अपना धन समय और शक्ति खोते हैं। ऐसे आदमी बहुत लोगोंकी दृष्टिमें अच्छे नहीं जचते। वैसे ही जिन साधुओंने संसारका त्याग किया है परन्तु जगतकी वस्तुओंका मोह करते हैं वे भी जगतके लोगोंकी दृष्टिमें अच्छे नहीं जचते। एक वार संसार छोड़ कर फिरसे संसारकी वासना रखना थूक कर चाटनेके बराबर है। इसलिये उत्तम त्यागियोंको संसारकी कोई मलिन वासना अपने हृदयमें न आनेदेना चाहिये। परन्तु हम देखते हैं कि आजकलके त्यागी संन्यासियोंमें से वासना नहीं गयी है। वे बहुत छोटी छोटी चीजोंके लिये भी बहुत दौड़धूप करते हैं और जिन वस्तुओंका त्याग करदिया है उन्हीं वस्तुओंके पीछे हैरान होते हैं तथा अपने कर्त्तव्यमें चूकते हैं। ऐसा करना बहुत बुरा है यह वे नहीं जानते।

इसका कारण यह है कि उन्होंने भीतरसे एकाग्र भक्त हुए बिना ही बाहरकी वस्तुओंका त्याग किया है। इसीसे उनका यह हाल होता है। अगर पहलेसे ही वस्तु समझ ली हो और स्थितिका धर्म करना आता हो तथा इस ढंगसे रहना आता हो कि किसी विषयका धक्का भीतर न पहुंचने पावे तो उनका ऐसा हाल न हो। सच्चा त्याग सीखनेके लिये भी हृदयसे ऐकान्तिक भक्त होनेकी जरूरत है।

बन्धुओ! इन सब बातोंसे आपको विश्वास होगया होगा कि सच्चा भक्त होनेके लिये घर गृहस्थी त्याग देनेकी जरूरत नहीं है; वरंच सच्चा भक्त होनेके लिये हृदयसे जगतकी बुरी वासनाओंको निकाल डालनेकी जरूरत है और इन दुःखदायी वासनाओंको हृदयमे निकालनेके लिये जैसे बने वैसे जप ध्यान तथा प्रभुका गुणगान अधिकसे अधिक करनेकी जरूरत है। इस-लिये हे हरिजनो! जैसे बने वैसे प्रभुके पवित्र नामका स्मरण तथा ध्यान खूब कीजिये और अपनी हैसियतका धर्म पाल कर हृदयमे एकाग्र भक्त होनेकी कोशिश कीजिये। यही हमारी विनती है।

६१—हर मनुष्यको भक्त होनेकी जरूरत है परन्तु राख लपेट कर साधू बन जानेकी जरूरत नहीं है।

भक्त होनेके लिये और सर्वशक्तिमान परमकृपालु परमात्माको प्रसन्न करनेके लिये तथा अतिशय धर्म पालनेके लिये बहुतेरे आदमी संसार छोड़ कर साधू बनजाते हैं और मनमें यह समझते हैं कि घरबार छोड़नेसे, बाल बच्चोंको छोड़नेसे और जंगलमें

भाग जानेसे अधिक धर्म कर सकते है और बहुत बड़े भक्त हो सकते हैं। यह सोच कर वे साधू बन जाते हैं। परन्तु जो सच्चे भक्त है, जो ज्ञानी भक्त है, जो अनुभवी भक्त हैं और जो प्रभुके प्यारे भक्त है वे कहते हैं कि भक्त होनेके लिये साधू बननेकी जरूरत नहीं है, भक्त होनेके लिये जो जरूरी बातें हैं वे कुछ और ही हैं।

"जो अपनी स्त्रीका प्यारा पति है वह भक्त है; जो अपने लड़केका नेक बाप है वह भक्त है; जो अपने मालिकका सच्चा नौकर है वह भक्त है; जो अपने मा बापका चतुर लड़का है वह भक्त है; जो अपने राजाकी राजभक्त प्रजा है वह भक्त है; जो अपने गुरुका विश्वासी शिष्य है वह भक्त है, जो अपने कुटुम्बियोंका हितचिन्तक है वह भक्त है; जो अपने शिष्यका पवित्र गुरु है वह भक्त है; जो अपने पड़ोसियोंका मददगार है वह भक्त है और जो अपने नौकरोंका उदार मालिक है वह भक्त है। इसके सिवा अपनेसे काम पड़नेवाले किसी आदमीने भूल की हो तो भी उसे क्षमा करनेका नाम भक्ति है; अच्छे सन्तोंकी यथाशक्ति सेवा करनेका नाम भक्ति है, जिनसे लोकव्यवहार पड़े उनकी भलाई करनेका नाम भक्ति है, धर्मके सिद्धान्तोंका असली स्वरूप समझने तथा पालनेका नाम भक्ति है; भगवानपर दृढ़ विश्वास रखनेका नाम भक्ति है, अपना आचरण सुधारनेका नाम भक्ति है और जगतके सब जीवोंसे बहुत अच्छा सलूक करनेका नाम भक्ति है। ऐसी ही भक्तिवाले भगवानके प्यारे होते हैं तथा वे ही संसारसागरसे तर सकते हैं। इसके विरुद्ध आजके जमानेमें हमारे बहुतेरे भाई बहनोंमें धर्मसम्बन्धी तथा भक्तिसम्बन्धी बहुत टेढ़ेमेढ़े विचार घुसगये हैं। वे यह समझते हैं कि सारादिन माला फेरते रहनेका नाम भक्ति है; कोई यह

समझता है कि बार बार देवताके दर्शन करनेका नाम भक्ति है; कोई यह समझता है कि गलेमें बहुत माला डाल रखने और तिलक लगाया करनेका नाम भक्ति है; किसीका यह विश्वास है कि बार बार नहाने धोने और बात बातमें छूत माननेका नाम भक्ति है; कोई यह समझता है कि हदसे ज्यादा व्रत उपवास करनेका नाम भक्ति है; कोई यह समझता है कि अपना शरीर अच्छा न हो तथा घरमें सुबीता न हो तो भी तीर्थोंमें फिरते रहनेका नाम भक्ति है; कोई यह समझता है कि कर्ज करके भी साधुओंको भोजन करानेका नाम भक्ति है; कोई यह समझता है कि तरह तरहसे देहका कष्ट भोगनेका नाम धर्म है और कोई यह समझता है कि रोजगार धंधेकी परवा छोड़ कर तथा बाल बच्चोंकी फिकर न करके धर्मके कामोंमें लगे रहनेका नाम भक्ति है। इस प्रकार भक्तिके विषयमें तथा भक्त होनेके विषयमें लोगोंके भिन्न भिन्न विचार होते हैं। जो सच्चे महात्मा हैं वे कहते हैं कि भक्त होनेके लिये कुछ भी अधिक करनेकी जरूरत नहीं है वरंच अपनी हैसियतके अनुसार धर्म पालना चाहिये। जो अपनी हैसियतसे बाहरका धर्म पालते हैं वे उलटे दुखी होते हैं। याद रखना कि वे सच्चे भक्त नहीं हैं; वे झूठे भक्त हैं। जो चीज जरूरतसे ज्यादा करनेमें आती है वह बहुत अच्छी हो तोभी उससे खराबी होती है। भक्ति बहुत अच्छी बात है परन्तु वह हदसे ज्यादा की जाय तो उलटे दुःखरूप हो जाती है। यह विषय समझानेके लिये एक महात्मा कहते थे कि—

किसी गांवमें कोई उत्सव था इससे गांवभरकी ओरसे भोज होनेवाला था, गांवके सब मुखिया जमा हुए और विचार करने लगे कि आजके उत्सवमें क्या रसोई बने। किसीने कहा कि हलवा पूरी बने, किसीने कहा कि लड्डू पेड़ा बने और किसीने कहा कि

मोहनभोग बने। यों सब अलग अलग राय देनेलगे। यह सुन कर एक बड़ा जमींदार कह उठा कि नहीं, नहीं, आज खीर बने क्योंकि सबके घर गाय भैंस लगती हैं और दूध आजकल खूब होता है। जमींदारकी यह बात सबके दिलमें जंचगयी। एकने कहा कि खीरमें खूब शक्कर पड़ना चाहिये। दूसरोंने कहा-जरूर जरूर; आज उत्सव है और गांवकी ओरसे खर्च है तब कंजूसी क्यो हो? आज खीरमें खूब शक्कर पड़े। खूब पड़े। जमींदारने कहा कि रसोइयासे पूछना चाहिये कि कितनी शक्कर चाहिये। वह पासही था, उसने कहा कि बाबूजी हम तो एक मन दूधमें पांचसेर शक्कर डालते हैं। जमींदारने कहा कि आज बहुत बढ़िया खीर पकाना है। तुम ब्राह्मण गरीब होते हो इससे कम शक्कर डालते हो यहां शक्करकी कमी थोड़े है। पांचसेर क्यो? दससेर शक्कर डालना। तब एक दूसरे आदमीने कहा कि, दसही सेर? इतनेसे क्या होगा? मन दूधमें आध मन तो शक्कर डालो। यह सुनकर वहां जो थोड़ेसे किसान बैठे थे वे बोल उठे कि इतनी थोड़ी शक्कर डालोगे तो हम लोग नहीं खायंगे। खर्च तुम्हारे ही सिर थोड़े है? हम भी तो उसमें पैसा देंगे। मनभर दूधमें मन भर शक्कर डालो यह सुनकर जमींदारने कहा कि हां हां आज होने दो, खर्च तो खर्च ही सही। दो, मने मन शक्कर। यह सुनकर पुरोहितजीने कहा कि बौड़हे! तुम क्या जानो। कहीं इतनी ज्यादा शक्कर पड़ती है? तब गांववालोंमें से एकने कहा कि महाराज! तुम क्या जानो। थोड़ी शक्कर डालनेसे थोड़ी मिठास मालूम होगी, इसमें कुछ अवगुण तो नहीं है न? दूसरेने कहा कि अजी ब्राह्मण बड़े कंजूस होते हैं, कोई कुछ अच्छा करता हो तो उसमें भी भांजी मारते हैं। हम थोड़ी ज्यादा शक्कर खायंगे तो तुम्हारा क्या बिगड़ता है कि काटते हो?

जमींदारने कहा कि पंडितजी ! जो सबकी राय है वही होने दीजिये। पुरोहितजी चुप हो गये। एक मन दूधमें एक मन शक्कर डाल कर खीर पकायीगयी। इतनी ज्यादा शक्करवाली खीर कैसी हुई होगी और उसमें चावल कैसे पका होगा यह समझना कुछ मुश्किल नहीं है। निदान खीर बहुत ही खराब बनी।

बन्धुओ ! शक्कर कुछ खराब चीज नहीं है, बहुत मीठी लगती है, सोभी अन्दाजसे हो तभी रुचती है और तभी सच्चा स्वाद देती है। अन्दाजसे ज्यादा हो जाय ; जरूरतसे ज्यादा हो जाय और हदसे ज्यादा हो जाय तो उल्टे चीज बिगड़ जाती है। वैसे ही भक्ति बहुत ही अच्छी वस्तु है, धर्म बहुत ऊंची बात है और भक्त होना बहुत बड़ी बात है परन्तु वह जरूरतसे ज्यादा हो, अपने बूतेसे बाहर हो और ईश्वरकी आज्ञासे अधिक हो तो वह भक्ति भी उल्टे दुःखरूप हो जाती है। ऐसी अति भक्तिसे अपनी घर गृहस्थीकी खराबी होती है तथा मनमें भी कष्ट हुआ करता है। ऐसा न होने देनेके लिये भक्तिके विषयमें भी सावधानताके नियम पालने तथा सीमामें रहनेकी जरूरत है, अपनी शक्तिके अनुसार, देश कालके अनुसार और भगवदिच्छाके अनुसार जो भक्ति होती है वही भक्ति निबह सकती है, वही भक्ति आनन्द देसकती है और उसी भक्तिसे अन्तको सार्थकता होती है। इसलिये भाइयो ! बेजरूरतकी बहुत ज्यादा और हैसियतसे बाहर झूठी भक्तिमें न पड़नेका ख्याल रखना। जैसे बने वैसे ऊपर कहे अनुसार सच्चा भक्त बनना। यही हमारी सलाह है।

६२–जो गुरु अपना धर्म अच्छी तरह पालते हैं वे विना बोले भी, उपदेश देनेवाले गुरुओंसे अधिक उपदेश देसकते हैं।

बहुत आदमी यह समझते हैं कि धर्मगुरु लोगोंको उपदेश दिया ही करें तो ठीक। इसी समझके कारण जो गुरु धर्मका उपदेश नहीं करते उनके विरुद्ध वे बहुत कानाफूसी करते हैं और कहते हैं कि जो उपदेश न दे वह गुरु किस कामका? इसके उत्तरमें सन्त कहते है कि—

जो महात्मा होते हैं, जो पवित्र पुरुष होते हैं और जो भीतरसे गले हुए प्रभुप्रेमवाले भक्त होते हैं वे कभी कुछ उपदेश न देते हो तोभी उनके पास जानेसे बहुत लाभ होता है। प्रकृतिका यह नियम है कि जैसी वस्तु होती है वैसी उसकी छाया पड़ती है। जो पवित्र महात्मा होते है उनके आसपास पवित्र छाया होती है उनकी छायामें बैठनेसे या उनके सत्संगमें जानेसे भी बहुत उपदेश मिलता है और आदमी सद्गुणी हो सकता है। वे न बोलते हो तोभी उनके आचरणमें बहुत कुछ सीखने लायक़ बात होती है; इसलिये विना बोले भी वे अपने आचरणसे बहुत कुछ उपदेश देसकते हैं। इसके लिये एक किस्सा है कि

एक गांवमें मौनव्रतधारी एक महात्मा थे। उनके पास बहुत आदमी जाते और तरह तरहकी बातें पूछते; परन्तु वह कुछ उत्तर नहीं देते थे। वह अपने अध्ययनमें, पाठपूजामें और कर्त्तव्यमें ही दिनभर लगे रहते थे। उस महात्माके सामने एक जिज्ञासुने बहुत बड़ी भेंट रख कर कहा कि महाराज!

मुझे कुछ उपदेश देनेकी कृपा कीजिये। महात्माने इशारेसे एक पाटी दिखायी जिसपर लिखा था—" हम जैसा कहते हैं वैसा मत करना, बल्कि जैसा करते हैं वैसा करना।" यह लिखा पढ़ कर उस गृहस्थको सन्तोष नहीं हुआ। वह कहने लगा कि महाराज! दया कीजिये और कुछ उपदेश दीजिये। महात्माने इशारेसे समझाया कि हमें करते देख कर भी जो नहीं समझता वह हमारे कहनेसे क्या समझेगा? यों समझानेपर भी उस आदमीका जी नहीं भरा। इससे वह बार बार उनसे कहने लगा कि गुरुजी! मुझे कुछ कहिये या लिख कर समझाइये। उसका बहुत हठ देख कर महात्माने इशारा किया कि अच्छा, खड़िया और कागज कलम लेकर आना। वह जिज्ञासु खड़िया कलम और कागज लेकर महात्माके पास गया। महात्माने कागजके एक ओर खूब स्याही लपेटी और कागज काला करके उस गृहस्थके हाथ में देकर कहा कि यह ज्ञान है। यह देख कर उस आदमीने कहा कि महाराज! इससे मैं क्या समझूं? यह तो सब काला है, इसमें अक्षर कहां है? इसमें मैं क्या बाचूं? महाराजजीने कहा कि इससे बढ़ कर ज्ञान मैं नहीं जानता।

महात्माके एक चेलेने उस गृहस्थको समझा कर कहा कि इस काले कागजसे गुरुजी तुमको यह समझाना चाहते हैं कि इसीके ऐसा तेरा हृदय अभी मलीन है। उसे धोकर साफ कर और कागजके दूसरी ओर जैसा सफेद है वैसा अपना अन्तः-करण स्वच्छ कर तब तेरा काम होगा।

बन्धुओ! जो उत्तम गुरु होते हैं वे बहुत थोड़े में, बहुत न बोल कर इसी प्रकार ज्ञान देते हैं। इसलिये यह मत देखिये कि गुरु कितना उपदेश देते हैं, थोड़ा बोलते हैं या अधिक, और बात करते हैं या मौन रहते हैं। वे जो कर्त्तव्य कर रहे हैं और

जो आचार विचार कर रहे हैं उसको देखिये और उससे उपदेश लीजिये। जब इस तरह उपदेश लेना आवेगा तभी वह उपदेश टिक सकेगा और वह उपदेश कीमती हो सकेगा। सो सद्गुरुके पवित्र आचरणसे उपदेश लेना सीखिये। सद्गुरुके भलमनसत-वाले कर्त्तव्यसे उपदेश लेना सीखिये।

६३–बहुत आदमी भक्तिमार्गमें आगे बढ़ना चाहते हैं परन्तु उसका उपाय नहीं जानते, इससे मनहीमन झीखा करते हैं। इसका समाधान।

प्रभुओ! बहुतेरे हरिजनोंका भक्ति करनेका मन करता है परन्तु भक्ति करते समय कितनोंको जप करनेमें कुकस मालूम होती है, कितने आदमियोंका परमार्थ करनेका मन करता है परन्तु परमार्थ करनेके लिये पैसा नहीं होता; कितने आदमियोंका देवदर्शन तथा तीर्थयात्रा करनेका मन करता है परन्तु इसके लिये उनको समय नहीं मिलता। कितने आदमियोंका अपने जीवका पाप धोने तथा छोड़नेका उपाय जाननेकी इच्छा होती है परन्तु दूसरोंसे अपना पाप कहदेनेकी हिम्मत नहीं होती। यों किसी न किसी कारणसे बहुतेरे लोग मनहीमन हैरान हुआ करते हैं। उनसे हमें यह कहना है कि भाइयो! जरा भी हैरान मत हूजिये, इन सब विघ्नोंका समाधान महात्माओंने कर रखा है। उसे सुननेकी कृपा कीजिये, फिर आपकी बहुत कुछ हैरानी घट जायगी।

छोटे बालकको देख कर उसका बाप बहुत प्रसन्न होता है। परन्तु वह बड़ा न हो और बुद्धिमें, बलमें तथा शरीरमें भी सदा बालक ही बना रहे तो वह अपने बापको पसन्द नहीं आता। वैसे ही जो भक्त भक्ति और ज्ञानमें आगे नहीं बढ़ते और इन दोनो विषयोंमें सदा बालक ही बने रहते है वे प्रभुको नहीं रुचते। इसलिये ज्ञान और भक्तिमें बालक मत रहजाना वरन्न जैसे बने वैसे ऐसा उपाय करना कि ज्ञान और भक्ति बढ़ती जाय।

भक्तिमें आगे बढ़े हैं कि नहीं यह जानने की रीति।

एक गुरुने अपने शिष्यसे पूछा कि बच्चा! तू भक्तिमें बढ़ता है या घटता है? चेलेने कहा कि महाज। मै तो जहां था वहीं हूं, बढना घटना मुझे मालूम नहीं होता। गुरुने कहा कि तेरी यह बात ठीक नहीं है। समुद्रमें या तो ज्वार होता है या भाठा; ऐसा नहीं होता कि कभी इन दोनोंमें से कोई न हो। भक्तिमें भी वैसा ही होता है। या तो आगे बढ़ते हैं या पीछे हटते हैं, जहांके तहां नहीं पड़े रहते। जैसे जहाज समुद्रमें मजबूत लंगर डालदेता है तोभी एक जगह खड़ा नहीं रहता। वैसे भक्तिमार्गमें एक ही जगह पड़े नहीं रहसकते। इसलिये हे भाई! अगर तू भक्तिमार्गमें आगे न बढ़ा हो तो यह जानना कि पीछे हटा है यह न समझना कि जहांका तहां है। क्योंकि जहांके तहां रहना नहीं होसकता।

भक्तिमें आगे बढ़ते हैं या घटते हैं यह समझनेकी युक्ति।

बहुतसे भक्त यह समझते हैं कि भक्तिमें अपनी हैसियतसे कुछ अधिक करें तभी आगे बढ़ना कहलाता है यह समझ कर जो लोग ऐसा कोई काम नहीं करसकते वे यह सोचलेते हैं कि हम

अपनी भक्तिमें घटे हैं, परन्तु ऐसा न समझना। आगे बढ़े हुए भक्तोंने कहा है कि तुम इस समय जिस स्थितिमें हो उसीमें सन्तोष रखसको और अपनी शक्तिके अनुसार तथा समयके अनुसार चलो तो समझलेना कि तुम भक्तिमें आगे बढ़ते जाते हो।

दूसरे, अगर तुम्हें यह मालूम हो कि हममें फलाने किस्मका पाप है और उस पापको दूर करनेके लिये अगर तुम्हें फिकिर होती हो और उस पापको दूर करनेके लिये तुम प्रयत्न करते हो तो समझना कि हम अपनी भक्तिमें आगे बढ़ते जाते हैं।

बन्धुओ! भक्तिमें आगे बढनेके विषयमें यह बात भी जानने योग्य है कि हरएक आदमी तथा हरएक पेड़ हररोज और हरघड़ी जरा जरा बढ़ते हैं परन्तु यह बढन्ती उसी वक्त नहीं दिखाई देती, चार छः महीने या वर्ष दो वर्ष बीतनेपर वह बढन्ती समझमें आसकती है। इसलिये हे हरिजनो! भक्तिमें आगे बढनेके लिये आपको गुरु बदलनेकी जरूरत नहीं है, मंत्र बदलनेकी जरूरत नहीं है और मन्दिर बदलनेकी जरूरत नहीं है; आप इस समय भक्तिका जो काम कर रहे है उसे और प्रेमसे करना, और उमंगसे करना, जैसा करते हैं वैसा करते रहना और अपने हृदयके प्रेमको ढीला मत पड़ने देना। ऐसा करेंगे तो अपनी भक्तिमें आगे बढ़ सकेंगे।

भक्तिमें आगे बढ़नेके लिये एक खास उपाय यह है कि आप जिस सत्संगरूपी नदीके किनारे खड़े हैं वहीं खड़े रहना, उसको छोड मत देना। अगर सत्संगके किनारे खड़े रहेंगे तो वहांसे ठंढक मिला करेगी, जैसे नदी किनारे जमे हुए पेड़ोंको आपसे आप पानी मिला करता है वैसे सत्संगमें रहनेसे आपकी भक्तिको आपसे आप पोषण मिला करेगा और आप भक्तिमें बढते जायंगे।

कितने भक्त यह समझते है कि जब भक्तिका फल मिलता है तभी भक्ति आगे बढ़ी कहलाती है; परन्तु ऐसा समझना भूल है। क्योंकि पौधा लगाते है तो उसी समय या उसके थोड़े समयमें ही फल फूल नहीं लगता। जब फूल लगानेका मौसिम आता है तभी लगता है। वैसे भक्तिका फल मिलनेका भी कोई समय होता है वह समय जब आजाता है तब आपसे आप लाभ होता है। इससे भक्तिका फल मिलनेमें देर लगे तो निराश मत होना और यह मत समझना कि फल मिले तभी भक्ति बढ़ी कहलाती है। भक्ति बढ़नेके लिये ऊपर जो जो साधन बताये है उनको ध्यानमें रख कर उसीके अनुसार चलनेकी कोशिश करना तब ईश्वरकृपासे आपकी भक्ति बढ़ती जायगी।

याद रखना कि प्रभुके लिये हम जो कुछ करते हैं वह सब ज्योंका त्यों हमारे हिसाबमें जमा होता है। इतना ही नहीं, जब हमसे अधिक भक्ति करानेकी प्रभुकी इच्छा होती है तब वह हमें उस किस्मका योग मिला देता है। इसलिये इस विषयकी चिन्ता मत करना। वरंच आजकल जैसा करते हैं वैसे ही प्रेम-पूर्वक भक्ति किया करना उसमें ढिलाई मत करना। ऐसा होता हो तो यह जानना कि भक्तिमें आगे बढ़ते जाते हैं।

हे हरिजनो! अगर सदा अपनी शक्तिके अनुसार, अपनी हैसियतके अनुसार और आसपासके संयोगके अनुसार भक्ति करते रहनेपर भी आपके अन्तःकरणको सन्तोष न मिलता हो और मनमें यह असन्तोष रहता हो तथा ऐसा लगता हो कि अभी हमसे कुछ नहीं होता अभी और अधिक करना चाहिये— हृदयमें ऐसी छटपटाहट होती हो तो प्रेमपूर्वक प्रभुसे प्रार्थना करना कि हे प्रभु! तू मुझे अपने मार्गपर ला। हे नाथ! ऐसा कर कि मुझमें तेरे ज्ञानका प्रकाश अधिक हो और हे प्रभु! ऐसी

कृपा कर कि तेरे नामका जप करनेके लिये तथा तेरा दर्शन करनेके लिये और तेरी प्रसन्नता प्राप्त करनेके लिये मुझे अधिक समय तथा अधिक अनुकूलता मिले। इस प्रकार प्रार्थना करते रहनेसे आगे जाकर भक्तिमें आगे बढ़नेका उत्तम अवसर अवश्य मिलेगा। इसलिये भाइयो! यह सब नियम समझबूझ कर ऐसा कीजिये कि जिससे आप भक्तिमें आगे बढ़ें।

६४—इस दुनियामें बहुत जगह अक्सर ऐसा होता है कि दूसरेकी मिहनतका फल कोई दूसरा लेलेता है और दूसरेकी मिहनतका यश दूसरा कोई लेलेता है; परन्तु भगवानके घर ऐसा नहीं होता।

बन्धुओ! इस जगतमें हम देखते हैं कि लड़ाईमें पलटनिया सिपाही मरते हैं और जीतका यश उनके अफसरको मिलता है। कितनेही सेठ साहूकार बहुत मिहनत करके तथा बड़ी कंजूसीसे रह कर पैसा बटोरते और बचाते हैं, अपनी जिन्दगीमें छूटसे पैसा नहीं खर्चते और न अपनी मिहनतका लाभ उठाते। वे लोभके मारे न तो आप धन भोगते और न परमार्थ ही करते। इससे वे ज्यों ज्यों ज्यादा पैसा बटोरते हैं, त्यों त्यों घरके आदमियोंमें, सगे सम्बन्धियोंमें, हिस्सेदारोंमें और अपने नौकर चाकरों तथा मित्रमण्डलमें अधिक अप्रिय होते जाते हैं। क्योंकि सब लोग उनसे कुछ कुछ आशा रखते हैं परन्तु कंजूसीके मारे वे किसीकी कुछ मदद नहीं करते इससे सबकी आंखोंमें खटकते हैं और अपमान

सहते सहते मर जाते हैं । इसके बाद उनके ट्रस्टी उनका धन परमार्थके भिन्न भिन्न कामोंमें लगाते हैं इससे ट्रस्टी नाम पाते हैं। इस प्रकार धन किसीका होता है, उसके उपार्जनके लिये मिहनत और कोई किये रहता है और उसका यश दूसरा कोई पाजाता है। इसी तरह बहुतेरे जमींदार दूसरे किसानोंसे अपना खेत जोतवाते हैं, दूसरोंसे बीज बोवाते हैं और जो कुछ पैदावार होती है उसका इनाम आप लेलेते हैं। किस्मकिस्मके कारखाने तथा मिलें चलती हैं उनमें मजदूरों तथा कारीगरोंकी मिहनतसे नफा होता है परन्तु यह नफा कारखानोंके मालिक खाजाते हैं, मजदूरोंको तो बहुत थोड़ी मजदूरी मिलती है। कितनी बार ऐसा भी होता है कि पुस्तक लिखनेवाला बुद्धिमान मनुष्य कोई और ही होता है परन्तु गरीबी, तंगी और साधनकी कमी तथा अपने नामके लिये आग्रह न होनेसे उससे पुस्तक लेकर दूसरा कोई नामका भूखा आदमी अपने नामसे प्रकाशित करदेता है। पुस्तक रचने की बड़ाई आप मारलेता है और पुस्तककी प्रशंसा सुन कर मनहीमन फूला करता है। इस प्रकार अक्सर बहुत जगह एकके परिश्रमका लाभ दूसरा उठालेता है। प्रतिष्ठाका असली हकदार दूसरा ही होता है और उसकी प्रतिष्ठा और ही आदमीको मिलजाती है। यही बात नये आविष्कारोंके विषयमें भी होती है, आविष्कार करनेवाला कोई और ही होता है और उसके लिये दुनियामें जिसका नाम प्रसिद्ध होता है वह आदमी कोई और ही होता है। इस जगतमें ऐसा ही चला करता है परन्तु याद रखना कि भक्तिमें ऐसा नहीं होता।

भक्तिमें तो, जो भक्ति करता है उसीको फल मिलता है। मनुष्य भूलता है और एकके परिश्रमका यश दूसरे को दे देता है, परन्तु सर्वशक्तिमान भगवान ऐसी भूल नहीं करता। प्रभु तो

सर्वशक्तिमान है उसके ध्यानसे परे कोई भी चीज नहीं है, छोटेसे छोटे परमाणुमें जो फेर बदल होता है, पृथ्वीके नीचे जो हरएक रजकण नाचता है, आकाशके अन्दर शून्यमें हर परमाणुके अन्दर जो वस्तु रम रही है और ग्रहोंकी किरणोंके परमाणुओंमें तथा समुद्रके अन्दर तलहटीमें जो फेर बदल होता रहता है उन सबका हाल साक्षीरूप ईश्वर जानता है। उससे कुछ भी छिप नहीं सकता। तब उसके आगे भक्तोंकी की हुई भक्ति कैसे छिपी रहसकेगी? और उसका फल दूसरा कैसे लेजासकेगा? ऐसा कभी नहीं होसकता। इसलिये अगर सच्चा भक्त होना हो और प्रभुको रिझाना हो तो आप भक्ति करना चाहिये। बाप दादेकी भक्तिपर, गुरुकी भक्तिपर, चेलेकी भक्तिपर सगे सम्बन्धियोंकी भक्तिपर या पैसा खर्च कर दूसरोंसे करायी हुई भक्तिपर भरोसा नहीं रखना चाहिये। जो दवा खाता है उसका रोग मिटता है। ऐसा कभी नहीं होता कि दवा कोई और खाय और रोग किसी औरका मिटे। ऐसा भी नहीं होसकता कि तुम्हारे लिये और कोई घोखे और तुम पंडित होजाओ। वैसे ही ईश्वरके घर ऐसा अन्धेर नहीं चलता, कि भक्ति कोई करे और उसका फल किसी औरको मिले। इसलिये अगर जीवन सार्थक करना हो, जन्म मरणके फेरेसे छूटना हो और ईश्वरके प्यारे बनना हो तो आप स्वयं प्रेमपूर्वक भक्ति कीजिये। दूसरेके खानेसे हमारा पेट नहीं भरता। ऐसे ही दूसरा कोई भक्ति करे तो उससे हमें मोक्ष नहीं मिलता। ईश्वरके समक्ष मोक्षधाममें सुख भोगना हो तो आप स्वयं भक्ति कीजिये।

६५–दुःखका रोना न रोनेके विषयमें ।

हरिजनोंको सदा यह बात याद रखना चाहिये कि हमारा पिता परमकृपालु परमात्मा आनन्द स्वरूप है और उसे सदा आनन्द ही रुचता है । इससे उसने मनुष्योंका अन्तःकरण ऐसा बनाया है कि जिस अन्तःकरणमें आनन्द होता है उसीमें प्रभु रहसकता है और जिसमें आनन्द नहीं होता उसमें प्रभु इस रीतिसे नहीं रहता कि प्रत्यक्ष तौरपर दिखाई दे । अगर प्रभुको अपने अन्तःकरणमें पधराना हो तो स्वयं सदा आनन्दमें रहना सीखना चाहिये । आनन्द माने क्या यह आप जानते हैं ? इसके लिये सन्त कहते हैं कि–

आनन्द फैलानेके लिये ही हमारा जन्म है क्योंकि आनन्द आत्माका विकास है ; आनन्द ईश्वरकी कृपा है ; आनन्द जीवनकी सार्थकता है ; आनन्द स्वर्गकी वस्तु है ; आनन्द सद्गुणोंकी खान है ; आनन्द भक्तिका पाया है ; आनन्द ज्ञानका रहस्य है ; आनन्द जीवात्माका सबसे प्रिय पदार्थ है ; आनन्द धर्मका फल है और आनन्द ईश्वरका स्वरूप है । इसलिये हरएक हरिजनको हर स्थितिमें आनन्दमें रहना चाहिये । इसके बदले आजकल हम देखते हैं कि बहुत अच्छे कहलानेवाले भक्त भी चेहरा बहुत उतारे फिरते हैं और सबके सामने दुखड़ा रोयाकरते हैं । जैसे हमें रास्तेमें कोई जान पहचानका बीमार मिले तो उससे पूछते हैं कि क्यों भाई ! अब तबीयत कैसी है ? तो वह जान बूझ कर मुँह बिचका कर कहता है कि अभी तो मै बड़ा हैरान हूं ; कोई दवा काम नहीं करती और कमजोरी बढ़ती जाती है । यों कहते कहते उस समय तलमलाहट न आती हो तो भी जबरन तलमलाहट दिखाते हैं और असलमें जितनी बीमारी रहती है उसका दुगुना तिगुना करके दिखानेमें उसको मजा मिलता है । स्त्रियोंमें

यह बात खास कर ज्यादा होती है । वे विना कारण अपनी छोटी बीमारीको भी बहुत बड़ा बनादेते हैं; बदन जरासा गर्म होगया हो या ज़रा सिर दर्द करता हो तो उसको भी बहुत बहुत बढ़ा कर कहती हैं कि जब दस बीस आदमियोंके सामने अपना दुःख नहीं रोलेती है तब उन्हें कल पड़ती है । जबतक उनका दुखड़ा सुननेवाला कोई नहीं मिलता तबतक उनका पेट फूला करता है । बचपनमें दूसरोंकी देखादेखी उन्हें ऐसी आदत पड़ जाती है, परन्तु याद रखना कि दुःखका रोना पापका काम है, दुःखका रोना मोहवादी नास्तिकोंका काम है । दुखड़ा रोया करना कमजोर मनकी निशानी है ; दुखड़ा रोया करना धर्मबलकी कमी है ; दुखड़ा रोया करना अज्ञानता है ; दुखड़ा रोना नरकमें जानेका उपाय है और दुखड़ा रोना प्रभुसे विमुख होनेका उपाय है । भक्त तथा विद्वान तो यहांतक कहते हैं कि अपने दुःखके विचार दूसरोंके मनमें घुसानेका हमें कुछ भी हक नहीं है । किसी आदमीके मनमें दुःखके विचार भरनेसे बढ़ कर खगवी और क्या है ? और इससे बढ़ कर पाप दूसरा क्या है ? किसी जीवको कभी दुःख नहीं सुहाता ; तोभी दूसरेके मनमें, अपने दुःखकी वेदना घुसाना, अपने दुःखका दाग दूसरेके मनपर डालना और अपने दुःखका संस्कार दूसरेके मनमें दाखिल करना क्या अपराध नहीं है ? निःसन्देह यह बहुत बड़ा अपराध है । इसलिये कभी किसी हरिजनको दुःखका रोना न रोना चाहिये । जैसे गुलाबका फूल जहां रहता है उसके आस पास बहुत दूरतक सुगन्ध फैलाया करता है वैसे हरएक भक्तको अपने आस पास सदा आनन्दके विचार फैलाना चाहिये और कभी बीमारी या और किसी तरहका कोई दुःख आपड़े तो बहुत नरमीसे, जहां कहे बिना न चले वहीं उसकी बात कहना चाहिये और वह भी ऐसे विश्वासके साथ कि-

ईश्वरकृपासे अब जल्द अच्छा होजायगा, इसके लिये कुछ चिन्ताकी जरूरत नहीं है, भगवानकी जो मरजी। हम उसकी इच्छाके अधीन हैं और वह हमारी भलाई ही करेगा। ऐसी बातें कहना चाहिये। यह भी बहुत धैर्यसे, बहुत हिम्मत रख कर, बिना चेहरा उतारे सिर्फ ऐसे स्नेहियोंसे कहना चाहिये जिनसे कहे बिना न बने। मतलब यह कि दुःखको बढ़ा कर न कहना बरंच जितना हो उससे बहुत कम बताना चाहिये। क्योंकि दुःख फैलानीवाली बात नहीं है बरंच दबादेने लायक है। दूसरे यह भी याद रखना कि ज्यों ज्यो दुःख को बढ़ावें त्यों त्यो दुःख बढ़ता जाता है और ज्यों ज्यों दबावें त्यो त्यों दुःख घटता जाता है। इसलिये भूले चूके भी दुःखको न बढ़ाना बरंच जैसे बने वैसे ऐसा करना कि दुःख घटे। दुःख घटे।

दुःखका रोना न रोनेके विषयमें यह बात भी ख्यालमें रखने योग्य है कि कोई अज्ञानी आदमी अपने दुःखकी बात आपके सामने कहे तो सुन कर उसको भड़का न देना, निराश न होजाना, उसको बेहिम्मत मत बनाना बल्कि ढारस देना कि यह कौन बड़ा रोग है, कल सवेरे अच्छा होजायगा। दिन बीततेक हीं देर लगती है ? भगवानके घर कुछ कमी है ? दो दिन ऐसे भी हुए तो क्या हर्ज ? इस तरह हिम्मत क्यों हारते हो ? तुमसे भी बड़े बड़े दुखिया दुनियामें पड़े हैं। तुमपर तो ईश्वरकी कृपा है। तुम्हें तो कई तरहका सुबीता है। उसको देखो। दुःखको क्यो देखा करते हो ? यह कह कह कर उसको दिलासा देना चाहिये। परन्तु इसके बदले आजकल बहुत लोग रोगीको देख कर कहते हैं— च च च ! यह क्या होगया ? तुम्हारा शरीर तो सूख कर हड्डी हड्डी होगया है। जल्द चेतो नहीं तो आफत हो जायगी। ओहो ! इतनी बड़ी बिपद ! गजब होगया ! अब क्या करोगे ?

हमें तो कोई उपाय नहीं दिखाई देता, बड़ी मुश्किलकी बात है। यह कह कर मुंह बिचकाते हैं और जो आदमी दिलासा लेनेको आया रहता है उसे उल्टे निराश करते हैं। यह नहीं कि ऐसा कहीं कहीं होता हो, वरंच हम सब अमीतरू इसी किसमकी भूलें किया करते हैं और फिर भी यह नहीं समझते कि ऐसी भूलें करके हम पाप करते है। इसलिये हे हरिजनो! इस तरहकी भूलोंसे बचना और कभी दुःखको बढ़ा चढ़ा कर मत कहना बल्कि ऐसा करना कि दुःख घटे और दबे क्योंकि अनन्त ब्रह्माण्डके नाथको दुःख नहीं रुचता, आनन्द रुचता है। हमारी बिनती है कि सदा आनन्दमें रहनेकी कोशिश करना।

६६—बीमारीके समय धीरज तथा शान्ति रखनेके विषयमें।

बहुतसे बीमारोंकी मदद करनेवाला कोई नहीं होता परन्तु आपके लिये कितना यत्न होता है इसका तो जरा ख्याल कीजिये।

इस जगतमें ऐसे कंगाल आदमी बहुतसे हैं जिनके रहनेको घर नहीं है; पहननेको कपड़ा नहीं है, खानेको अन्न नहीं है और पानी पीनेको लोटा या गिलास भी नहीं है। यहांतक कि बीमार पड़नेपर उनके सोनेका कहीं ठिकाना नहीं; उनको कोई दवा देनेवाला नहीं, उनकी कोई सेवा करनेवाला नहीं और वे कैसे हैं यह कोई पूछने या दिलासा देनेवाला भी नहीं है। ऐसे आदमियोंको जब ठंढ लग जाती है तब उनके पास ओढ़नेको कुछ नहीं होता। भूख लगी

हो तो खानेको नहीं मिलता और दाहके कारण प्यास लगती हो तो पानी भी पीनेको नहीं मिलता। तोभी वे यह सब दुःख सहते हैं। एक ओर ऐसे लोगोंकी हालत देखिये और दूसरी ओर अपनी हालत देखिये, आपके बीमार पड़नेपर ईश्वरकी कृपासे कितनी दवादारू होती है यह तो देखिये। आपके लिये दवाका कैसा अच्छा प्रबन्ध है, कैसे अच्छे डाक्टरोंकी मदद है, आपके परिवारके आदमी तथा आपके मित्र आपके लिये कितना ध्यान रखते हैं और ओढ़ने, बिछाने और पहननेके कपड़े तथा रहनेके मकानके लिये आपको कितना बड़ा सुबीता है यह तो जरा देखिये। क्या ये सब आपकी बीमारीका दुःख घटानेवाले साधन नहीं हैं? और यह क्या आपके ऊपर ईश्वरकी दया नहीं है? यह सब देख कर यह विचार करना सीखिये कि हम कैसे भाग्यवान हैं कि हमें बीमारीके दुःखके समय दिलासा देनेके लिये तथा दुःख घटानेके लिये इतने अधिक साधन हैं। लाखो आदमियोंको ऐसा कोई साधन नहीं है। इसलिये हमारे ऊपर ईश्वरकी कृपा है। हमें उसका लाभ लेना चाहिये और बीमारीके समय शान्ति रखना चाहिये। यह सब सोचना और अपने चित्तको शान्तिमें रखना सीखना।

बन्धुओं! बीमारीके वक्त ढारस तथा शान्ति रखनेके ऐसे अनेक उपाय हैं; उनमें जो उपाय आपको जंचे उसे ग्रहण कर लेना और उसके अनुसार विचार वर्त कर बीमारीके दुःखके समय धीरज रखना तथा शान्ति रखना। यही हमारी सलाह है। ऐसे समय शान्ति रखनेसे भगवान बहुत प्रसन्न होता है और भक्ति चमक उठती है; ऐसे समय शान्ति रखनेसे जीवन सार्थक होता है और ऐसे समय शान्ति रखनेसे मोक्षका सुख भोगा जासकता है। इसलिये ऐसी परीक्षाके समय शान्ति

रखना और बीमारीकी इस कड़ी परीक्षामें पास होना, यही हमारी विनती है। हम प्रार्थना करते हैं कि परम कृपालु परमात्मा आपको ऐसे समय सच्ची शान्ति रखनेका बल हृदयमें दे-हम आशा रखते हैं कि आप भी हमारी इस प्रार्थनामें शामिल होंगे तो जरूर आपको यह बल प्राप्त होगा। तब आप धीरज रख सकेंगे और शान्तिसे रह सकेंगे।

बहुत अफसोस करनेसे बीमारी घट नहीं जाती वरंच उलटे बढ़ती है।

बहुत आदमी ऐसे होते हैं कि उन्हें जितना रोग रहता है उससे ज्यादा बताते हैं और बीमारी से जितना कष्ट होता है उससे ज्यादा कष्ट बताते हैं। परन्तु याद रखना कि ऐसा करना बहुत बुरा है। बीमारीका अफसोस किया करनेसे बीमारी घट नहीं जाती और बीमारी बढ़ा कर बतानेसे भी नहीं घटती बल्कि उलटे बढ़ती जाती है। यह बात भली भांति समझानेके लिये एक सन्त कहते थे कि—

किसी आदमीको एक कांटेकी बाड़में कांटा गड़ गया। इससे उसे बड़ी तकलीफ होने लगी और कांटेकी बाड़ पर उसे बड़ा क्रोध आया। वह बाड़ पर बार बार पैर पीटने लगा। परन्तु ऐसा करनेसे फल यह हुआ कि उलटे उसे और कांटे गड़े। कांटेकी बाड़ जोरसे लात मारने पर हट नहीं जाती बल्कि लात मारनेवालेको हां हैरान होना पड़ता है। वैसे ही जो आदमी बीमारीके दुःखसे कादर हो जाता है तथा दूसरोंके आगे उसीका रोना रोया करता है उसका दुःख उलटे बढ़ता जाता है और दिन दिन उसकी खराबी होती जाती है। कांटेकी बाड़में लात न मार कर जो कांटा गड़ गया हो उसे धीरेसे निकाल देनेकी कोशिश करना चाहिये। वैसे ही बीमारी मेटनेका उपाय करना

चाहिये नकि उसे बढ़ानेका उपाय करना चाहिये, अफसोस करनेसे, कादर होनेसे तथा हिम्मत हार जानेसे बीमारी उलटे बढ़ जाती है। इसलिये बीमारीके वक्तमें जान बूझ कर धीरज रखना सीखना चाहिये। वैद्यकशास्त्रका यह सत्य सिद्धान्त है कि जो बीमार शान्तिमें रहसकता है और अपने मगजको समतूल रखसकता है वह जल्द आराम होता है। और जो बीमार बात बातमें चिढ़ता है, जो अपनी बीमारीसे निराश हो कर हिम्मत हार जाता है और जो अपनी बीमारीके लिये बहुत अफसोस किया करता है उस बीमारके अच्छे होनेमें बहुत देर लगती है। धीरजवाले तथा शान्त स्वभाववाले बीमारोंको बहुत जल्द लाभ पहुँचाता है। इसलिये बीमारीके समय मनको शान्त रखना सीखिये, मनको शान्त रखना सीखिये। यह वैद्योंकी और सच्चे सन्तोंकी सलाह है। यह क्या बात कि सब बातोंमें तो बहुत पक्के परन्तु बीमारीमें बिलकुल कच्चे!

पहले जमानेमें स्पार्टन नामक जातिके लोग बड़े वीर होते थे। वे लड़नेमें ऐसे बहादुर थे कि उनकी वीरता देख कर दुनिया भरके लोग चकित होते थे। मरना तो उनके आगे कोई चीज ही न थी, भूखों रहना पड़े, पहाड़पर चढ़ना पड़े, वर्फका तूफान सहना पड़े और बहुत गरमी सहना पड़े तोभी वे कुछ परवा नहीं करते थे। मतलब यह कि बहादुरीके लिये तथा अपने दुश्मनोंका नाश करनेके लिये वे अनेक प्रकारके दुःख सहसकते थे। परन्तु वही लोग जब बीमार पड़ते तब छोटे बच्चोंकी तरह फूट फूट कर रोते थे। जरा भी बीमार होते तो बहुत कदरा जाते थे। वैसे ही हम सब रोजगार धंधेमें दुःख भोगते हैं, कड़क-मिजाज मालिकका क्रोध सहते हैं; स्त्रियोंकी अज्ञानताके कारण

कुटुम्बमें कलह मची रहती है उसका कष्ट भोगते हैं; गरीबीका दुःख भोगते हैं, दुश्मनोंका दुःख भोगते हैं और जहां असलमें दुःख न हो वहां भी कल्पनासे दुःखको खड़ा कर देते हैं और उसे भोगते हैं। यह सब भोगते समय बड़ी चतुराई रखते हैं परन्तु जब बीमारीका दुःख आपड़ता है तब हमारी सारी चतुराई चली जाती है, जब बिमारीका दुःख आपड़ता है तब हमारी सारी बुद्धिमानी गुम होजाती है और जब बीमारीका दुःख आपड़ता है तब हमारा सारा ज्ञान और सारा भक्तिभाव हवा-होजाता है। हम और सब बातोंमें बड़े सयाने हैं परन्तु वह सयानप बीमारीके समय किसी काम नहीं आता। उस समय हम ढीले पड़ जाते है और बहुत अफसोस किया करते हैं। रोगसे बचनेका, भविष्य जीवनमें सुखी होनेका और मौतको भी आनन्दरूप बनानेका सच्चा उपाय यह है कि जैसे हम और सब बातोंमें बड़े पक्के हैं वैसे बीमारीके समय भी मजबूती रखना सीखें और बीमारीके समय भी शान्तिमें रहना सीखें।

बीमारीके बारेमें हमारी आजकलकी स्थिति कैसी है यह बात अच्छी तरह समझानेके लिये एक भक्तराज महाराज कहते थे कि बीमारीमें हमारी दशा गरार बैलकी सी होती है, गरार बैलको जब नीचे उतरना होता है तब वह बड़ी तेजीसे दौड़ जाता है परन्तु जब चढ़ावपर चढ़ना होता है तब जरा भी आगे नहीं बढ़ता; उस समय बैठ जाता है और तनिक नहीं टसकता। वैसे जब सुखका समय होता है तब हम भी फूल जाते हैं और मौज शौक तथा हंसी दिल्लगीमें पड़े रहते हैं। ऐसे ढालुए रास्तेमें लुढक जाना और दौड़ना हमें बहुत आता है परन्तु जब टेकरीकी चढ़ाईका रास्ता आता है यानी बीमारीका दुःख भोगनेका समय आता है तब हम गरार बैल बन

जाते हैं। उस समय उस रास्ते हम नहीं चल सकते। यहां तक कि जब बीमारीका वक्त आजाता है तब हम हिम्मत हार जाते हैं और अफसोस किया करते हैं। परन्तु याद रहे कि ऐसा करना बहुत बुरा है; ऐसा करना एक तरहकी नालायकी है, ऐसा करना धर्मके बलकी कचाई है; ऐसा करना सच्चे ज्ञानकी कमी है और ऐसा करना मनकी कमजोरी है। इसलिये ऐसी खराबियोंमें न पड़े रह कर बीमारीमें उल्टे अधिक हिम्मत रखना चाहिये, अधिक शान्ति रखना चाहिये और अधिक भक्तिभाव रखना चाहिये। ऐसा करनेमें ही सच्ची खूबी है और तभी असली धर्म पालन कहलाता है। भाइयो! बीमारीके समय दृढ़ता रखना सीखिये। बीमारीके समय दृढ़ता रखना सीखिये।

६७—बीमारीमें धीरज तथा शान्ति रखनेके विषयमें (२)। बीमारीसे बड़ा लाभ है।

बन्धुओ! आप यह सोचेंगे कि हम यह कैसी नयी बात कह रहे हैं। बीमारीसे बड़ा लाभ! यह कैसे? भला बीमारीसे कहीं लाभ होता है? बहुत आदमी ऐसा सोचते हैं परन्तु जो प्रभुके प्यारे भक्त हैं वे कहते हैं कि बीमारी आनेसे बहुत बड़ा लाभ होता है। बहुत जीवोंको बीमार डाल कर प्रभु अपनी तरफ खींचता है। बहुत आदमी ऐसे होते हैं जो सुखमें नहीं सुधरसकते और प्रभुकी तरफ नहीं ढलसकते उल्टे दिन दिन मायामें फंसते जाते हैं और अपने पैदा करनेवाले परमकृपालु परमात्माको भूलते जाते हैं। ऐसे मोहवादी संसारियोंको नरकसे

बचानेके लिये प्रभु उनपर दया करके बीमार डालता है। और थोड़े दिन उनकी भूख प्यास छीन लेता है। उनका पढ़ना लिखना छुड़ा देता है; उनकी ओछे शरजेकी दिल्लगी और दूसरोंकी पंचायत छुड़ा देता है और उनके चलने, बोलने तथा देखने आदिकी शक्ति थोड़े समयके लिये खींचलेता है। इससे रोगी आदमी कादर होजाते हैं और सुख तथा वैभवसे जो बात नहीं समझते उसे रोगके दुःखसे समझ जाते हैं। दयालु प्रभु जब देखता है कि इस आदमीको जो सुख दिया उसका लाभ लेना इसे नहीं आता, यह आदमी गुरुओंसे नहीं समझता और शास्त्रोंसे भी नहीं समझता, तब उसे जगानेके लिये रोग भेजता है। रोगके दुःखसे वह तुरत जागजाता है, प्रभुकी ओर ढलजाता है और नरकके महाभयंकर दुःखसे बचजाता है। इसतरह नरकके महाभयंकर दुःखसे बचानेके लिये और जीवको प्रभुकी ओर लगानेके लिये थोड़े दिनकी बीमारी आती है। इसलिये बीमारीसे दिलगीर मत होना, बीमारीसे हिम्मत न हारना और बीमारीका अफसोस मत किया करना, वरंच बीमारीके समय विश्वासपूर्वक यह समझना कि बड़े दुःखसे बचानेके लिये ही हमारे ऊपर यह छोटासा दुःख आया है। सूलीका संकट सुईसे पटा देनेके लिये ही यह रोग आया है। बीमारीके समय प्रभुका और उपकार मानना चाहिये। बीमारीमें खाटपर पड़े रहना पड़ता है और दूसरा कोई काम काज नहीं होसकता, इसलिये प्रभुके पवित्र नामका स्मरण किया करना चाहिये। इससे बीमारी जल्द दूर होजाती है और जितनी देर प्रभुमें मन लगा रहता है उतनी देर बीमारीके कष्टसे जान बची रहती है और शान्तिमें रहती है।

बन्धुओ! अब विचार कीजिये कि जीवका प्रभुकी तरफ जाने और नरकके दुःखसे बचनेसे बढ़कर दूसरा लाभ क्या है? ऐसा महान

लाभ बीमारीके कारण होता है। इसलिये हरिजन बीमारीको भी ईश्वरकी कृपा समझते हैं। इस जगतमें दूसरी अनेक चीजोंकी तरफ मनुष्य खिंचता है परन्तु प्रभुकी ओर वही खिंचता है जिसका धन्यभाग्य है। हम देखते हैं कि बहुत आदमियोंको बहुत तरहका सुबीता होता है। बहुत आदमियोंके पास बहुत धन होता है, बहुत आदमियोंको बड़े बड़े अधिकार होते हैं, बहुत आदमियोंके शरीरमें बहुत बल होता है, बहुत आदमियोंकी बुद्धि बड़ी तीव्र होती है, बहुत आदमियोंमें कोई न कोई अद्भुत शक्ति होती है और बहुत आदमियोंमें अनेक प्रकारके गुण होते हैं। तोभी, वे इन सब साधनों द्वारा भी प्रभुकी तरफ नहीं ढलते। परन्तु रोग एक ऐसा साधन है कि जीवको तुरत ही प्रभुकी ओर लगा देता है। इससे बढ़ कर दूसरा लाभ क्या है।? इसलिये सन्त कहते हैं कि बीमारीमें बहुत बड़ा लाभ है। कभी किसी आदमीको सारी पृथिवीका राज्य मिलजाय भी तो क्या? कभी कोई आदमी लाखों आदमियोंको जीतने लायक महाबलवान हो भी तो क्या,? कभी किसी आदमीके पास कुबेरके इतना धन हो भी तो क्या? कभी कोई आदमी जगतमें उथल पुथल करनेवाला महान आविष्कार करे भी तो क्या? कभी कोई आदमी आकाशमें उड़नेकी शक्ति पाले भी तो क्या? कभी कोई आदमी पृथिवीके पेटमें पड़ा हुआ सारा खजाना निकाल ले भी तो क्या? और कभी कोई इस जगतमें सबसे भारी आदमी होजाय भी तो क्या?, ये सब वस्तुएं तो बहुत सहज हैं; परन्तु अनन्त ब्रह्माण्डके नाथकी तरफ खिंचना और उसका सच्चा भक्त बनना ही सबसे कठिन बात है और यही सबसे बड़ी बात है। जगतमें हजार वैभव होते हुए भी जीव अगर नरकमें जाय तो वह वैभव किस कामका? बहुत

वैभव होनेपर भी अगर प्रभुका परिचय न हो और हृदयकी शान्ति न मिले तो यह सब किस कामका ? याद रहे कि जीव जब ईश्वरकी तरफ ढलता है और उसके नियम पालता है तभी उसका परिचय होता है तथा उसके बाद ही हृदयकी शान्ति मिलती है । यह सब सुखके समय भली भांति नहीं हो सकता । सुखके समय तो जो महाभाग्यशाली होता है वही प्रभुकी तरफ ढल सकता है । परन्तु दुःखके समय बहुत आदमियोंको प्रभुकी ओर ढलनेके लिये लाचार होना पड़ता है और उसमें भी बीमारीका दुःख तो जरूर जीवको प्रभुकी तरफ ढालता है । इसीसे सन्त कहते हैं कि बीमारीमें बड़ा फायदा है ।

हरिजनोंके ऐसा कहनेका दूसरा कारण यह है कि बीमारीके दुःखसे चेत कर आदमी अगर प्रभुकी ओर ढलजाय तो उसके जीवको नरकका दुःख भोगना नहीं पड़ता। और नरकका दुःख न भोगना पड़े तो यह कितना बड़ा लाभ है उसे हम अभी नहीं जानते परन्तु नरकके दुःखका पूरा ख्याल हो तो वह तुरत ही समझमें आजाता है । नरकका दुःख पुराणोंमें बताया है, उसमें कहा है कि उस समय पानीकी इतनी जोरसे प्यास लगती है कि सात समुद्र पीजायं परन्तु एक बूंद पानी पीनेको नहीं मिलता । इस दुनियामें जो सबसे बड़ी अग्नि है वह प्रलयकालकी है; परन्तु प्रलयकालकी अग्नि भी नरककी अग्निके सामने किसी गिनतीमें नहीं । यमदूतोंके चेहरे और हावभाव ऐसे भयंकर होते हैं कि देख कर बहादुरसे बहादुर आदमीकी छाती दहल जाती है । सिर्फ उनको देखने या उनका ख्याल आनेसे ही जी थर्रा उठता है । उनकी सजाका वर्णन सुनने और उनके सजा देनेके हथियार देखनेसे क्या असर होता है सो हम नहीं समझा सकते । ऐसे नरकके महान दुःखसे बीमा-

रीसे जीव प्रभुकी ओर ढलजाता है इससे नरकके दुःखसे बच जाता है। ऐसा महान लाभ बीमारीसे होता है। इसीसे सन्त कहते हैं कि बीमारीमें भी ईश्वरकी कृपा मौजूद है। इसलिये बीमारीसे दिलगीर मत होना, बीमारीसे निराश मत होना और बीमारीसे कायर मत होना वरंच जैसे बने वैसे बीमारीके समय भीतर शान्ति रखना और प्रभुकी ओर ढलना। तब जल्द बीमारी दूर हो जायगी।

बीमारीके कारण पापसे बच सकते हैं।

हम सब यही समझते हैं कि बीमारीमें दुःख ही है। परन्तु याद रखना कि बीमारीके कारण भी अनेक प्रकारका लाभ हो जाता है। उसमें एक खास लाभ यह है कि बीमारी जबतक रहती है तबतक अनेक प्रकारके पापसे बच सकते हैं। मनुष्य जब भलाचंगा होता है और शरीरमें बहुत बल रहता है तब उसे पाप करनेका मन होता है। परन्तु जब बीमारी आजाती है तब अनेक प्रकारके पाप स्वभावतः नहीं होते। और दूसरा कोई खास पाप करनेका भी उस समय मन नहीं होता। क्योंकि बीमारीके वक्त जीव ढीला बन जाता है, डरपोक बनजाता है, अधीर बनजाता है और इस भयमें पड़जाता है कि अब मेरी क्या दशा होगी। उसे मौतका डर लगता है। इससे पाप करनेका मन नहीं होता, बल्कि यथाशक्ति धर्मके काम करनेका मन करता है। इस तरह जीवका पापमें न जाना बीमारीके कारण एक खास फायदा है। पाप एक ऐसी खराब वस्तु है कि उसकी जितनी खराबियां हैं सब थोड़ी हैं, ऐसे भयंकर पापसे बच सकते हैं। इसलिये जो सच्चे हरिजन हैं वे बीमारीको भी उत्तम समझते हैं। जिस पापसे

और किसी तरह नहीं बच सकते। उस पापसे बीमारीके कारण बच सकते हैं। इसीसे बीमारीको भी वे उत्तम समझते है। ऐसा हरिजन एक पलड़े पर बीमारीका दुःख रखते हैं और दूसरे पलड़े पर नरकका दुःख रखते हैं; फिर दोनोंकी तुलना करते है और अपने मनसे पूछते हैं कि दोनों प्रकारके दुःखमें कौन बड़ा है? फिर उसको समझाते हैं कि बीमारीका दुःख बहुत सीधा और थोड़ी देरका है, परन्तु जो पापका दुःख है वह अनन्तकालका है और बड़ा भयंकर है। इसलिये पापसे बचना बहुत जरूरी बात है और बीमारीके वक्त पापसे बच सकते हैं। इसीसे हरिजनोंको बीमारीमें भी ईश्वरका आशीर्वाद दिखाई देता है। इसलिये भाइयो! यह मत समझना कि बीमारीमें सब तरहसे दुःख ही है वरंच बीमारीसे भी अनेक प्रकारका लाभ होता है और उसमें भी कितना लाभ तो इतना बड़ा होता है कि बीमारीके सिवा और किसी हालतमें मिल ही नहीं सकता। यह सब हाल जान कर बीमारीमें धीरज रखना सीखना और बीमारीमें भी प्रभुकी कुछ दया समझ कर उससे कदरा मत जाना, हिम्मत मत हार जाना और दुखी मत होते रहना; वरंच उसके फायदे समझ कर उसमें भी शान्ति तथा आनन्द रखना सीखना, यही हमारी सलाह है।

६८—बीमारीमें धीरज तथा शान्ति रखनेके विषयमें (३) बीमारीका दुःख हमारी भलाईके लिये ही होता है।

अज्ञान बालकों तथा बहुत नाजुक प्रकृतिकी स्त्रियोंको जब ज्वर आता है तब रोग दूर करनेके लिये डाक्टर उन्हें कड़वी दवा पिलाते हैं। वह कड़वी दवा देख कर अज्ञानी अफसोस करते है और मनहीमन झीखा करते हैं तथा डाक्टरसे कहते हैं कि कुनैन हमसे नहीं खायाजाता है, कोई दूसरी दवा दीजिये। कुनैन बड़ा कड़वा है परन्तु उसमें ज्वर उतारनेकी जो महान शक्ति है उसे ये लोग नहीं जानते। उन्हें कड़वी दवा नहीं रुचती परन्तु उस कड़वासके कारण ही ज्वर दूर होता है। वैसे बीमारीके दुःखसे भी अनेक प्रकारका लाभ होता है और बीमारीके कारण काम, लोभ, मोह डाह आदि अनेक प्रकारका ज्वर उतर जाता है परन्तु इस बातकी खबर लोगोंको नहीं होती। इससे बीमारीके वक्त लोग अफसोस किया करते हैं। ये सब बातें अच्छी तरह समझमें आजायं और यह भरोसा होजाय कि बीमारीके कारण भी अनेक प्रकारसे अनसोचा लाभ होजाता है तो फिर बीमारीके वक्त धीरज रखनेमें कुछ मुश्किल नहीं पड़ती। इसलिये अबसे समझ लीजिये कि जैसे वैद्यकी कड़वी दवा रोगीकी भलाईके लिये ही होती है वैसे प्रारब्धके भोगसे या दैवकी इच्छासे बीमारी आजाती है या दूसरा कोई दुःख आपड़ता है तो उसमें भी अपना कुछ कल्याण ही होता है। ऐसे समय उतावले मत होजाना; कदरा मत जाना, दिलगीर मत होना और तोबातिल्ला मत मचाना, वरंच जैसे बने वैसे धीरज रखना और शान्तिमें रहना। यही हमारी सलाह है। ऐसी शान्ति रखनेका परिणाम बहुत अच्छा है। आप जितना

समझ सकते हैं और हम जितना कह सकते हैं उसका परिणाम उससे कहीं अच्छा है। उस परिणामकी ओर देख कर शान्ति रखना सीखिये। शान्ति रखना सीखिये।

बीमारीमें हरिजनोंके शान्तिसे रहनेका कारण।

एक हरिजन था। उसने वर्षोंतक बहुत ज्ञान प्राप्त किया था, बहुत भक्ति की थी और खूब भगवानका ध्यान धरा था। बुढ़ापेमें वह भक्त अंधा होगया और उसकी गांठोंमें बाई धरगयी। इससे उसे खाटपर पड़ा रहना पड़ता था। इसके सिवा उसके पैरोंमें बड़ा दर्द होता था। परन्तु वह भक्त बड़ी ही शान्तिसे रहता था। उससे मिलनेके लिये एक दिन कोई और भक्त आया। वह कहने लगा कि हे हरिजन! तुम तो आजकल बहुत दुःखी दिखाई देते हो। बीमार भक्तने कहा कि भाई! भगवानने जो किया है वह बहुत ही अच्छा है। भगवानने मुझे आंखें दी थीं इससे मैंने वर्षों अच्छी अच्छी पुस्तकें पढ़ीं और अच्छी अच्छी चीजें देखीं। मेरे पैर भी भगवानने ही दिये थे, इससे मैं बहुत जगह घूम आया हूं और बहुतेरे काम किये है। यह सब उसीने दिया था और फिर उसीने ले लिया है, इसमें मेरा कुछ न था। इसलिये मेरे अफसोस करनेका कोई कारण नहीं है। हम भगवानसे अच्छी अच्छी चीजें पा कर प्रसन्न होते हैं तब उसकी इच्छासे या प्रारब्ध वश कुछ समयके लिये बीमारी आजाय तो उसे भी शान्तिसे भोगलेना चाहिये। इससे नाराज न होना चाहिये और जैसे भगवान रखे उसीमें प्रसन्न रहना चाहिये और ऐसा विचार करना चाहिये कि हम जैसे प्रभुसे अच्छी अच्छी चीजें बहुत उमंगसे लेते है वैसे न रुच-नेवाली बीमारी या मौत आजाय तो उसे भी उसकी इच्छासे आयी हुई जान कर प्रसन्नतापूर्वक भोगलेना चाहिये। यही

हरिजनोंका सच्चा धर्म है और यही भक्तोंकी परीक्षाका समय है, ऐसे समय जान बूझ कर अवश्य धीरज रखना चाहिये और यथाशक्ति शान्तिसे रहना सीखना चाहिये। यह सुन कर मिलनेको आया हुआ भक्त कहने लगा कि तुम धन्य हो कि ऐसे दुःखके समय भी ऐसा धीरज रखते हो। तुम्हारी भक्ति भी धन्य है। भाइयो! बीमारीके दुःखमें हमें भी धीरज रखना चाहिये और शान्तिसे रहना सीखना चाहिये।

बीमारीसे मनुष्योंकी प्रकृतिका पता लगता है।

सोना जब खानसे निकलता है तब उसमें मिट्टी लगी रहती है। उसे जब धोधाकर साफ करते हैं और आगमें तपाते हैं तब उसकी असली कसौटी होती है। वैसे जब मनुष्य सुदिनमें भक्ति करते हैं तब उनके अन्दरकी त्रुटियां ठीक ठीक नहीं मालूम पड़तीं, अनेक प्रकारकी अनुकूलताएं होनेसे उनकी त्रुटियां छिप जाती है। जब बीमारीका वक्त आपड़ता है तब उनकी त्रुटियां दिखाई देती हैं। उस समय वे दुबेदबाये नहीं रह सकते और अपनी प्रकृति तथा स्वभावको छिपा नहीं सकते इससे शान्ति या अशान्ति, धैर्य या अधैर्य, आनन्द या कुफ्त और गम खाने या क्रोध करनेकी बात साफ तौरपर मालूम होजाती है। इस तरह बीमारीके वक्त मनुष्योंके स्वभावकी बहुत असानीसे परीक्षा होजाती है। इसीसे बहुतेरे हरिजन कहते हैं कि बीमारी परीक्षा का समय है। सोनेकी परीक्षा जैसे अग्निमें होती है वैसे हरिजनोंकी परीक्षा बीमारीमें होती है। यह बात समझानेके लिये एक भक्त कहते थे कि—

एक सन्त बीमार पड़ा। उसका रोग बहुत दुःखदायक था और बहुत पुराना होगया था। उस सन्तके पास एक सरा

भक्त गया और उससे बोला कि महाराज ! तुम तो बहुत दुःखी दिखाई देते हो बहुत दिन होगये तुम्हारी बीमारी नहीं जाती। यह देख कर मुझे बड़ा अफसोस होता है। भगवान तुम्हें शीघ्र आराम करे। तुम्हारा यह दुःख मुझसे देखा नहीं जाता।

यह सुन कर उस बीमार सन्तने कहा कि भैया ! इसका भेद तुम नहीं जानते। तुम्हारे देखनेका चश्मा दूसरे रंगका है और मेरी दृष्टि कुछ और ही है। इसलिये इस विषयमें तुम्हारे और मेरे विचार मिल नहीं सकते। तुमको यह जान पड़ता है कि इस बीमारीके कारण मै बहुत दुखी हूं। परन्तु मैं समझता हूं कि हम भगवानके है इसलिये भगवान हमें दुःख नहीं देता। परन्तु यह जो रोग उसने भेजा है वह मेरी परीक्षाके लिये है। प्रभु यह देखना चाहता है कि इसको माला ही पहनने आना है या दुःखमें धीरज धरना भी आता है; इसको तिलक लगाना ही आता है या बीमारीमें भी मुझे याद करना आता है; इसको नहाना धोना ही आता है या दुःखके समय कादर न होना भी आता है; इसको अच्छे समयमें देवदर्शन करना ही आता है या भगवदिच्छाके अधीन होना भी आता है; इसको तीर्थयात्रा करना ही आता है या दुःखके समय अपनी प्रकृतिको सम्हालना भी आता है और इसको बाहरकी भक्तिही आती है या भीतर भी कुछ भक्ति है। इसकी परीक्षा लेनेके लिये प्रभुने यह रोग भेजा है। अगर इस वक्त मै दिलगीर होऊं; कदराजाऊं, निराश होऊं और अफसोस किया करूं,तो फिर मेरी भक्ति किसे कामकी ? जो धर्म बीमारीमें ढारस नहीं देसकता, जो धर्म दुखमें शान्ति नहीं देसकता, जो धर्म किसी हालतमें धीरज रखनेका बल नहीं देता और जो धर्म किसी दशामें भगवानकी महिमा और भगवानकी कृपा नहीं समझाता वह धर्म ही काहेको ? और वह

भक्ति ही काहेकी ? इसलिये भाई ! बीमारीके कारण मुझे कुछ दुःख नहीं है वरंच इसको अपनी परीक्षाका समय समझ कर मैं तो शान्ति में रहता हूं और धैर्यसे बीमारी भोगलेता हूं ।)

सन्तकी यह बात सुन कर उस भक्तको बड़ा आश्चर्य हुआ, वह उसका बखान करने और कहने लगा कि महाराज ! तुमने तो गजब किया, तुम्हारी बातोंसे मुझे बहुत लाभ हुआ है और तुम्हारे आचरणसे मैंने यह सीखा है कि मुझे भी बीमारीमें तुम्हारी तरह धीरज रखना चाहिये और इस बातका खास ख्याल रखना चाहिये कि इस परीक्षामें उतावला हो कर फेल न होजाऊं । यह बात मैंने आज तुमसे सीखा है । मैं चाहता हूं कि यह पाठ मेरे दिलमें जमजाय और आशा रखता हु कि तुम्हारे जैसे सन्तके प्रतापसे मुझमें बीमारीमें शान्ति रखनेका बल आवेगा ।

सन्तने कहा कि प्रभु दयालु है। अगर तुम ऐसी भावना रखोगे तो जरूर तुमको ऐसा बल मिलेगा । इसके बाद वे एक दूसरेसे अलग होगये ।

६९–बीमारीमें धीरज तथा शान्ति रखनेके विषयमें (४)

बहुतसे कड़े दिलके आदमियोंका हिया भी बीमारीसे कोमल होजाता है।

एक बड़ा राजा था । उसने राजकुमारको एक भारी पण्डितके पास पढ़ने भेजा । पंडितने उस राजकुमारको अनेक विद्या

सिखायीं। जैसे—राज्य करने और हुकूमत चलानेकी विद्या सिखायीं, प्रजाके साथ न्याय करनेकी विद्या सिखायी, सेनाको वशमें रखनेकी विद्या सिखायी, पिताकी आज्ञा पालन करना सिखाया। इस तरह राजनीति सम्बन्धी सब विद्या सिखायी। सिखा चुकनेपर वह युवराजको राजाके दरबारमें लेगया और बोला कि महाराजाधिराज ! आपके कुमारको सब विद्या आगयी है, आप परीक्षा कर लीजिये। राजाने युवराजकी परीक्षा ली। उसमें वह उत्तमताके साथ उत्तीर्ण हुआ। तब राजाने पंडितसे पूछा कि कुमारको और कुछ सिखाना बाकी है ? पंडितने कहा-जी हां, अभी एक चीज बाकी है। राजाने पूछा कि वह बाकी क्यों रखते हो ? सब पूरा पूरा सिखादो तब तुमको इनाम देंगे। तब पण्डितके हातमें जो वेतकी छड़ी थी उसे उसने कुमारकी पीठपर तीन चार वार जमादिया। यह देख कर सब अमीर उमरा चकित होगये। कुमारकी आंखोंमें आंसू आगये और राजा भी सोचमें पड़गया कि यह क्या ? उसको क्रोध भी आया कि भरे दरबारमें मेरे सामने मेरे कुमारको पीटता है। इसके क्या माने ? पंडितका सिर फिर गया है क्या ? यह सोच कर राजाने पंडितसे पूछा कि यह तुमने क्या किया ? इसका तुम्हें जवाब देना पड़ेगा। तुम्हारा यह जुल्म मैं बरदाश्त नहीं कर सकूंगा। पंडितने सिर नवा कर कहा कि महाराज ! यही एक चीज सिखानेको बाकी थी। वह आपके हुक्मसे मैंने आज सिखा दी है। कुमार साहब आगे जा कर राजा होनेवाले हैं। उस समय वह कुछ भी अपराध देख कर अपराधियोंको बड़ी सजा देंगे। किसीको चाबुक या तमाचा मारनेपर उसे कितना कष्ट होता है इसका ख्याल कुमार साहबको नहीं था। परन्तु अब जब उन्होने देखा कि वेंत लगानेसे इतना कष्ट होता है तब

वह दूसरोंको सजा देते समय सोच विचार सकेंगे तथा दया रख कर सजा देसकेंगे। इससे वह प्रभुके कृपापात्र होसकेंगे। इसलिये उन्हें इस कष्टके अनुभवकी जरूरत थी। इसीसे मैंने इस समय उन्हें पीटा है। यह सुन कर राजाने उस पण्डितको बहुत इनाम दिया और कुमारको भी विश्वास होगया कि बांधो, मारो, कैद करो, फांसी दो कह देना बहुत सहज है परन्तु जिसके ऊपर ऐसा जुल्म होता है उसे कितना कष्ट होता है इसका सच्चा अनुभव अब हुआ। वह सजा देनेमें सम्हाल कर काम करता गया। इससे बहुत अच्छा राजा कहलाया।

यह दृष्टान्त देकर एक सन्त यह समझाता था कि मनुष्योंका हिया कोमल बनानेके लिये दुःखकी जरूरत है और दूसरे दुःखसे बीमारीका दुःख इस विषयमें बहुत अच्छा असर करता है, इसीसे बीमारीका दुःख आता है। इसलिये ऐसे दुःखसे दिलगीर न होना चाहिये, वरंच ऐसे समय शान्तिसे रहना सीखना चाहिये।

यह बात और अच्छी तरह समझनेके लिये एक डाक्टरका दृष्टान्त जानने योग्य है। एक डाक्टर बहुत बड़ा आदमी था और बहुत बड़े ओहदेपर था, उसके पास हररोज बहुत से बीमार आते थे। उनमें कितने ही रोगियोंको भयंकर बीमारीके कारण बहुत कष्ट होता था। इससे वे डाक्टरसे कहते कि डाक्टर साहब! हमें बड़ा कष्ट होरहा है। आप कृपा करके दवा बदलिये। परन्तु डाक्टर सब रोगियोंसे सूखे संठके ऐसा वर्ताव करता। रोगियोंको शान्तिका शब्द न कहता; हंसते हंसते उनकी बातें सुना करता और जरामी उतावला न होकर हमेशेकी तरह काम किये जाता। इसके बाद डाक्टर स्वयं बहुत बीमार पड़ा। उसका पेट बड़े जोरसे दर्द करने लगा और कई दिनतक अच्छा नहीं हुआ

मुद्दतके बाद उसका रोग मिटा। इससे उस डाक्टरकी प्रकृति बदल गयी। अब वह सब रोगियोंके साथ बड़े प्रेमसे, धैर्यसे और शीघ्रतासे काम लेनेलगा। यह देख कर उसके एक मित्रने पूछा कि डाक्टर साहब! आपमें ऐसा फेर बदल कैसे हो गया? पहले तो आप सब रोगियोंके साथ निर्मोही जैसा बर्ताव करते थे और उनकी बातें सुन कर हंसते थे। अब उनसे ऐसी सहानुभूति क्यों दिखाते हैं? डाक्टरने जवाब दिया कि पहले मैं कभी बीमार नहीं पड़ा था इससे मुझे मालूम नहीं था कि बीमारीमें क्या क्या कष्ट होता है। मैं यही समझता था कि सब बीमार कमजोर दिलके होजाते हैं। इससे वे झूठमूठ हाय हाय किया करते हैं और जल्द अच्छा करो, जल्द अच्छा करोकी पुकार डाक्टरके आगे मचाया करते हैं असलमें कुछ नहीं होता। यह समझ कर मैं उनसे लापरवाही दिखाता था। परन्तु जब मैं बीमार पड़ा और मेरे पेटमें बड़े जोरसे दर्द होने लगा तब मेरी आंखें खुलीं कि ओहो! इतना अधिक कष्ट होता है? और तिसपर भी मैं बीमारोंसे ऐसी लापरवाही दिखाता हूं। सचमुच यह मेरी बड़ी भारी भूल है। यह बात समझमें आजानेपर बीमारी के बाद मेरा हिया कोमल होगया है। इससे अब मैं बीमारोंको बड़ी सहानुभूति दिखाता हूं और बड़े प्रेमसे बर्ताव करता हूं। मुझे यह बीमारी न होती तो मैं दूसरोंका दुःख समझ न सकता और मेरे हियेकी कठोरता न मिटती। मेरे पेटके दर्दने मेरा चित्त बदल दिया है और उसी समयसे मैं सच्चा डाक्टर होगया हूं।

बन्धुओ! इसीतरह बीमारीके कारण भी बहुत मनुष्योंको बहुत तरहका फायदा होजाता है। इसलिये बीमारीसे दुःख मत मानना बल्कि बीमारीमें भी प्रभुका कुछ अच्छा उद्देश्य समझ

कर शान्तिसे रहना सीखना यही हमारी सलाह है।

रोग मिटानेका एक अद्भुत उपाय।

किसी किस्मका रोग मिटानेके लिये हम जब किसी अच्छे वैद्यकी सलाह लेते हैं तो वह मुख्य दो उपाय बताता है। एक संयम और दूसरे दवा करना। संयममें हम जानते हैं कि किसी रोगीको मिर्च तेलकी मनाही की जाती है; किसीको चीनीकी मनाही की जाती है, किसीसे कहा जाता है कि घी मत खाना; किसीसे कहा जाता है कि दूध मत खाना और किसी रोगीको दही मठा आदि खट्टी चीजोंकी मनाही होती है। इस तरहका संयम या परहेज हम जानते हैं। इसके सिवा कितना ही मानसिक संयम होता है। परन्तु यह बात सब रोगी या बहुतेरे वैद्य नहीं जानते। जो आगे बढ़े हुए सन्त या सच्चे गुरु हैं अथवा जो मनुष्य प्रकृतिके अनुभवी वैद्य हैं वे ही यह बात जान सकते हैं। खाने पीनेका संयम तो बहुत छोटी बात है और इससे बहुत थोड़ा लाभ होसकता है। परन्तु जो सच्ची बात है, जो मार्केकी बात है और जो जल्द लाभ पहुंचा सकती है वह कुछ और ही है। उसके लिये सन्त कहते हैं कि-

जिस आदमीसे तुम्हारा वैर हो, जिस आदमीकी तुम बुराई चाहते हो जो आदमी तुम्हारे मनमें बारबार खटकता हो और जो अरुचिकर आदमी तुम्हारी आंखपर नाचता रहता हो उसको-अपने दुश्मनको तुम क्षमा करदो और उससे वैरभाव त्याग दो तो तुरत ही तुम्हारा रोग मिटने लगता है। और पहलेसे बीमारीमें भी तुम अधिक शान्तिसे रहसकते हो परन्तु दुश्मनको सचमुच माफ कर देना बहुत मुश्किल है। यह कर दिखाना आवे तो उसका फायदा भी बहुत है। इसके सिवा और एक संयम होता है। भिन्न भिन्न अनुष्योंमें छिपे हुए किस्म किस्मके

बड़े बड़े पाप होते हैं। जैसे—किसीमें चोरी करनेका पाप होता है; किसीमें व्यभिचारका पाप होता है; किसीमें झूठ बोलनेका पाप होता है; किसीमें लोभका पाप होता है; किसीमें क्रोधका पाप होता है और किसीमें डाहका पाप होता है। जिस पापमें आदमी स्वयं फंसा हो उस पापको छोड़ देनेकी प्रतिज्ञा अपनी बीमारीके वक्त करे तो उसको बीमारीमें बहुत बड़ा ढारस मिल जाता है और वह शान्तिमें रहता है तथा उसका रोग बहुत फुर्तीसे मिटने लगता है। परन्तु इसमें शर्त यह है कि पाप त्यागनेकी प्रतिज्ञा पालन करना चाहिये और जिन्दगीभर उसका ख्याल रखना चाहिये। ऐसा किया जाय तो बीमारीमें बड़ी शान्ति मिल सकती है। इसलिये जिनसे बन पड़े उनको चाहिये कि प्राकृतिक उपायसे इस सत्यको आजमावें और इससे बहुत लाभ उठावें तथा यह विषय अपने सगे सम्बन्धियों और मित्रोंको समझावें। ऐसा करनेमें बड़ा पुण्य है। सो बीमारीमें शान्तिसे रहनेके लिये पाप त्यागनेकी प्रतिज्ञा करो। पाप त्यागनेकी प्रतिज्ञा करो।

पुण्य करनेसे पाप हटता है और आयु बढ़ती है यह हम लोग मानते हैं। इससे जब कोई आदमी बीमार पड़ता है तब उसके सगे सम्बन्धी उससे दान कराने लगते हैं। जैसे—उससमय गोदान करते हैं, ब्राह्मणभोजन कराते हैं, कुटुम्बके सगे सम्बन्धी, यथाशक्ति मदद करते है, गायोंको चारा देते हैं, बालकोंको खिलाते है मन्दिरोंमें सीधा तथा दक्षिणा भिजवाते हैं और गुरुको भेट निकालते है। यह सब करनेका मूल उद्देश्य यह है कि पुण्य करनेसे पाप घटता है और पाप घटनेसे बीमारी मिट जाती है।

बन्धुओ! यह कुछ नया विचार नहीं है, यह तो बहुत पुराने समयका सिद्धान्त है। इसी उत्तम सिद्धान्तके आधारपर महान

भक्त कहते हैं कि पाप त्यागनेसे बीमारी मिट सकती है और आयु बढ़ सकती है। अपने हृदयमें पड़ा गुप्त पाप त्यागनेसे या जिस आदमीने हमारी बुराई की है उसको क्षमा करदेनेसे बीमारी घट जाती है और बीमारीमें भी आदमी शान्तिसे रहसकता है। सो बीमारीमें शान्तिसे रहनेके लिये पाप त्यागनेकी प्रतिज्ञा करना चाहिये। सैकड़ों दवाएं जितना फायदा करसकती है उससे अधिक फायदा पाप त्यागनेसे होसकता है। अगर बीमारीको जल्द मिटाना हो और बीमारीमें भी सच्ची शान्ति पानी हो तो जैसे बने वैसे अपने हृदयमें मौजूद पापको त्यागनेकी प्रतिज्ञा कीजिये तथा शत्रुको क्षमा कीजिये और यथाशक्ति परमार्थ कीजिये। तब बहुत जल्द बीमारी दूर होसकेगी।

७०–संसारी लोग छोटी छोटी बातोंमें भी बहुत ममता रखते हैं; परन्तु जो भक्त हैं वे झूठी ममता नहीं करते वरंच दूसरोंसे मिलजाते हैं।

भक्तों और सांसारिक मनुष्योंमें बहुत कुछ अन्तर होता है। जैसे—जो संसारी आदमी है वे छोटी छोटी बातोंके लिये वाद-विवाद किया करते हैं, छोटी छोटी बातोंमें लड़ पड़ते हैं और जिसमें कुछ दम नहीं होता उसमें भी अपनी जिद रखना चाहते है। परन्तु जो भक्त होते हैं वे भीतरसे पिघले हुए होते हैं; जो भक्त होते हैं वे सबके साथ सलूक रखते हैं; जो भक्त होते है वे सच्ची वस्तुके परखैया होते हैं; जो भक्त होते है वे आदर मानकी इच्छाको

अंकुशमें रख सकते हैं; जो भक्त होते हैं वे बड़ी और छोटी वस्तुका विचार करसकते हैं; जो भक्त होते हैं वे संसारी लोगोंकी अनेक प्रकारकी भूलें माफ करसकते हैं; जो भक्त होते हैं उनके हृदयमें कुछ बड़ी खूबियां आजाती हैं और जो भक्त होते हैं उनका मन बहुत ऊंची वस्तुओंमें ही लगा रहता है । इससे जगतके छोटे छोटे विषयोंके लिये वादविवाद करने या ममता रखनेको उन्हें फुर्सत ही नहीं होती । और ऐसे कामोंमें कुछ दम भी नहीं जान पडता । परन्तु जो संसारी लोग हैं, जो मोहवादी लोग है, जो अज्ञानी लोग हैं और जो अपने शौककी छोटी छोटी बातोंमें ही लिपटे रहनेवाले हैं तथा उन्हींमें आनन्द माननेवाले हैं वे लोग छोटे छोटे मतभेदके कारण लड़ जाते हैं । इसका कारण यह है कि व्यवहारमें बहुत चतुराई होने पर भी मतभेद सहलेनेमें दूसरोंके संग निबाह ले जानेमें, सच झूठ समझनेमें तथा गम खानेके विषयमें वे ठीक बालकके ऐसे होते हैं । इससे छोटी छोटी बातोंमें भी अभिमान किया करते हैं और छोटे मतभेदके कारण भी वे एक दूसरेसे अलग हो जाते हैं । यह बात अच्छी तरह समझानेके लिये एक भक्तराज महाराज कहते थे कि—

एक छोटासा लड़का था । वह सदा अपने बापके साथ खाने बैठता था । एक दिन उस लड़केने अपने बापसे कहा कि आज तुम मुझे अपने साथ घूमने नहीं लिवा लेगये इससे अब मैं तुम्हारे साथ बैठ कर नहीं खाऊंगा । लड़केकी यह बात सुन कर बापने कहा कि आज एक बहुत जरूरी काम था और वहां तुम्हें ले जाना ठीक नहीं था । कल तुम्हें जरूर ले चलूंगा । लड़केने कहा कि नहीं आज तुम मुझे अपने साथ नहीं लेगये इसलिये मैं तुम्हारे साथ नहीं खाऊंगा । पिताने उसको बहुत समझाया

परन्तु हठी लड़केने कुछ नहीं समझा। तब उसके बापने कहा कि तुम मेरे साथ नहीं बैठते हो तो लो मै तुम्हारे साथ बैठता हूं। यह कह कर उसने लड़केको अपनी जगह पर बिठाया और आप जहां लड़का बैठता था वहां बैठा। लड़का राजी हो गया। उसने समझा कि बाबूजी मेरे साथ बैठे हैं मै हमेशेकी तरह बाबूजीके साथ नहीं बैठा हूं। यह समझ कर वह खुश हुआ और झगड़ा मिट गया।

इसी तरह जो उदारचित्तके आदमी है, जो भले आदमी है और जो शान्ति चाहनेवाले है वे कुछ अपनी ही बात नहीं रखना चाहते बल्कि यही चाहते है कि जैसे हो वैसे अच्छा काम आगे बढ़े यश चाहे किसीको मिले। वे अपनी प्रतिष्ठाके भूखे नहीं रहते। प्रतिष्ठाका खिलौना वे दूसरोंके लिए रहने देते है और स्वयं अपने प्रभुके लिये अपना कर्त्तव्य भलीभांति पालन करते है।

भाइयो! अगर इस तरह निबाह ले जाना आवे, इस तरह सुलझा कर लेना आवे, इस तरह गम खाना आवे और इस तरह मनकी उदारता रखना आवे तो अपने घरमें, पड़ोसमें, महल्लेमें, गाँवमें, बिरादरीमें और देशमें कितनेही झगड़े मिट जायं और कितनी शान्ति फैली रहे जरा इसका तो विचार कीजिये। इन सबकी कुंजी यही है कि अपना मैंपन घटावे, सामनेके आदमीको बड़प्पन दे, उसको अगुआ बनावे और आप अपनी ममता छोड़ कर उससे मिलजाय। अगर इतना करना आवे तो अपनी और दूसरे बहुत आदमियोंकी भलाई होसकती है और इससे प्रभु प्रसन्न रहता है। इसलिये भाइयो! छोटे छोटे मतभेद दूर करके दूसरोंके साथ मिल जाइये और उनको बड़ा बनाइये। तब जगतसे बहुत कुछ झगड़ा घट जायगा, इसमें तनिक सन्देह

नहीं। लड़का आपके पास खाने न बैठे तो आप उसके पास खाने बैठ जाइये। मतलब यह कि किसी तरह कलह कम कीजिये। यही प्रभुकी इच्छा है और यही हरिजनोंका धर्म है।

७१–सच्चे भक्तोंके लक्षण।

सच्चे भक्तोंके लक्षण जानलेनेसे हमारी भक्ति बलवान होती है और भक्तिके रास्तेमें किसी जगह कोई छोटी मोटी भूल होती हो तो महान भक्तोंके लक्षण, जाननेसे किसी वक्त अपनी भूल पकड़ी जासकती है। इसलिये ऊंचे दरजेके भावुक भक्तोंके लक्षण जानलेना चाहिये। इसके बारेमें सन्त कहते हैं कि—

जो ईश्वरके अनन्य भक्त होते हैं वे कभी अपने मनमें झीखते नहीं और न किसी प्रकारकी बड़ी चिन्ता करते। इसके सिवा हर दशामें सन्तोषसे रहसकते हैं। व्यवहारकी कठिनाइयोंसे वे अपने मनको असन्तोषी नहीं होनेदेते, हर जगह और हर हालतमें आनन्दसे रहते हैं और कभी कुछ बुरा होजाय तोभी यही समझते हैं कि हमारा नाथ जो करता है वह अच्छा ही करता है। ऐसी समझ होनेके कारण अगर कभी धन बिलाजाय, कोई कुटुम्बी मरजाय या अपनी देह पड़जाय तोभी उनको अफसोस नहीं होता। ऐसी आफतके प्रसङ्गमें भी वे आनन्दसे रह सकते हैं, वे अपने मनमें यह समझते है कि इन सब दुःखोंका कारण अभी हमारी समझमें नहीं आता परन्तु इसमें हमारे नाथका कोई अच्छा उद्देश्य होगा। हम अपनी भलाई जितनी समझते हैं उससे अधिक वह समझता है। इसके सिवा अनन्त ब्रह्मांडका नाथ सर्वशक्तिमान आनन्दस्वरूप प्रभु कभी अपने भक्तोंका

बुरा नहीं करता। इसलिये अभी इस किस्मके दुःख अगर दुःख-दायी लगें तोभी असलमें वे दुःखदायी नहीं हैं वरंच हमारी भलाईके लिये ही है और हमारे प्रभुकी इच्छासे ही हमारे ऊपर आये हैं। इसलिये हमें माथे चढ़ा लेना चाहिये। ऐसी समझ होनेसे ऐसे बड़े दुःखके समय भी महान भक्त आनन्दमें रहते हैं। वे भगवद्इच्छाको बदलना नहीं चाहते। वरंच भगवद्-इच्छाके अनुसार अपनी इच्छाको बदलना चाहते है। सारांश यह कि जैसे गेंद खेलनेवाला आदमी अपनी इच्छानुसार गेंद उछालता है वैसे सच्चे भक्त प्रभुके हाथके गेंद बन जाते है और जैसे प्रभु उनको चलाता है वैसे चलते हैं। ऐसे ऊंचे भक्त इस प्रकार प्रभुकी इच्छाके अधीन होते हैं, यहा तक कि प्रभुकी इच्छा ही उनकी इच्छा होती है। इसके सिवा अपने मतलब की कोई इच्छा उनके मनमें उठती ही नहीं। ऐसे सच्चे भक्तोंकी वासनायें क्षय हो जाती हैं और उनका अहंकार मरजाता है। इससे ऐसे भक्तोंको हरिजन मरजीवा कहते हैं तथा कितने आदमी ऐसे भक्तोंको अर्पितभक्त कहते हैं। ऐसोंको ही हम सच्चा भक्त कहते हैं।

ऐसे सच्चे भक्तोंकी रीति भांति, लक्षण तथा आचार विचार समझनेसे हमारी आंखों का परदा उघड़ जाता है। इसलिये ऐसे सच्चे भक्तोंके हृदयकी स्थिति कुछ और समझनेकी कृपा कीजिये।

नमकहलाल नौकर जैसे अपने मालिकके हुकमकी बाट देखा करता है वैसे सच्चे भक्त अपने प्रभुके हुकमकी बाट देखा करते हैं और समर्थ प्रभु जो सुख दुःख भेजे उसे भोगनेको सदा तय्यार रहते है। ऐसी स्थितिको कितने आदमी अधीनता कहते हैं। ऐसी सच्ची अधीनता सच्चे भक्तोंमें ही होती है।

चितेरेके हाथकी तूली जैसे वह फेरता है वैसे फिरती है

और घुड़सवार घोड़ेको अपनी मरजी मुताबिक चलाता है। वैसे सच्चे भक्त सदा ईश्वरकी इच्छाके अधीन रह कर अपनी जिन्दगी बिताते हैं।

बीमार आदमी जैसे वैद्यकी कड़वी दवा भी खुशीसे खाते हैं वैसे सच्चे भक्त अपने जन्म जन्मान्तरका पाप कटनेके लिये भगवानके भेजे हुए दुःखको खुशीसे भोग लेते हैं। वे दुःखको दुःख नहीं मानते वरंच भगवदूइच्छा समझते हैं। इससे जैसे अच्छे होनेकी आशासे बीमार आदमी कड़वी दवा पी जाते हैं वैसे सच्चे भक्त भी अपने ऊपर आपड़े हुए दुःखको खुशीसे भोग लेते हैं।

ऐसे महान भक्त अपने हृदयमें खूब अच्छी तरह यह समझते हैं कि जैसे सोना आगमें तपाये बिना ठीक ठीक नहीं जाना जाता वैसे दुःखमें होकर गये बिना भक्तिकी असली परख नहीं होती। यह समझ कर वे बड़े बड़े दुःखोंसे भी निराश नहीं होते।

बढ़ई लकड़ीपर बसुला चलाता है तो हर छेदमें कुछ खूबी होती है और हर वारसे लकड़ी अधिक साफ होती जाती है तथा अधिक उपयोगी बनती जाती है। वैसे जो उत्तम भक्त हैं वे यह समझते हैं कि हमपर दुःखकी जो चोटें पड़ती हैं वे हमारे सुखके लिये ही होती है। क्योंकि हम जड़ लकड़ीसे उत्तम मनुष्य हैं और अज्ञान बढ़ईसे हमारा प्रभु सर्वज्ञ है तथा सर्वशक्तिमान है। इसलिये उसकी चोटमें अतिशय खूबी होगी ही। यह समझ कर सच्चे भक्त भगवदूइच्छासे आपड़े हुए दुःखसे कभी दिलगीर नहीं होते।

उलटी हवा हो तो दूसरोंको सयय लगती है परन्तु वह हवा पंछियोंको ऊंचे उड़नेमें उलटे मददगार होजाती है। वैसे

अज्ञान लोगोंको दुःखसे अफसोस हो तो दूसरी बात है परन्तु भक्तोंको तो भगवदिच्छासे आपड़ा हुआ दुःख और प्रभुके निकट लेजानेवाला बनजाता है । इससे वे दुःखसे अफसोस नहीं करते बल्कि आनन्द लेते जानपड़ते हैं ।

बन्धुओ ! हममें जो अभी ऐसा गुण नहीं दिखाई देता इसका कारण यह है कि हमारा विश्वास अभी ढीला है और हम, प्रभुके लिये जप तप ध्यान दान आदि जितना करना चाहिये उतना नहीं करते । इससे हममें यह महान् गुण खिलने नहीं पाता । अगर सच्चा भक्त होना हो और ऐसे महान् गुणको चमकाना हो तो सदा ईश्वरके निकट रहना सीखना चाहिये और ईश्वरके निकट रहनेके लिये उत्तम भक्तोंकी संगतमें रहनेकी कोशिश करना चाहिये । ऐसे महान भक्तोंके बलसे, उनके संगसे हमारा जीव भी ईश्वरसे जुड़ा रहता है । इससे जप, ध्यान, दान, क्षमा आदि भक्तिके साधन बढ़ते जाते हैं और आगे जा कर महान भक्त होसकते है । हमारी प्रार्थना है कि आप सच्चे भक्तोंके लक्षण समझ कर वैसे ही होनेकी कोशिश कीजिये ।

७२–भक्त होनेके माने क्या ?

भक्त भक्त सब लोग कहते हैं परन्तु यह बात बहुत कम आदमी समझते है कि भक्त माने क्या ? भक्त कैसा होता है और भक्त होनेके लिये क्या करना चाहिये । यह समझानेके लिये सन्त कहते हैं कि–

भक्त होनेके माने पुराने सांसारिक विचार त्याग कर प्रभुके

नये विचारमें आना; भक्त होनेके माने पान तमाखू चाय भांग गांजा आदि पुराने व्यसन छोड़ कर भजन, कीर्तन, नामस्मरण, पाठ पूजा आदि नये व्यसनोंमें जाना; भक्त होनेके माने पहलेकी बुरी टेव तथा खराब स्वभाव छोड़ कर अच्छी टेव तथा अच्छे स्वभाव-वाला बनना ; भक्त होनेके माने मोहकी बातें सुनानेवाले तथा दुनियादारीके ऊपरी मौज शौकमें रखछोड़नेवाले मित्रोंको विदा करके हरिजनों, भक्तो, सन्तों तथा महात्माओंसे मित्रता करना ; भक्त होनेके माने फिसलाहटके तथा गढ़े कीचड़के प्रपंची रास्तेसे निकल कर सीधी सड़क समान ईश्वरी राजमार्गपर चलना; भक्त होनेके माने थोड़ा दे कर बहुत कहने, घालमेल करने और पानी पिलाकर चीकस निकालनेवाले पुराने मालिकको छोड़ कर कृपाकी वर्षा करनेवाले उदार मनवाले नये मालिककी नौकरीमें दाखिल होना ; भक्त होनेके माने देहाती ठाकुरके हांहजूरके भयसे निकल कर राजाओंके महाराजाधिराजके राज्यमें रहना और उसके कानून मानना, भक्त होनेके माने दुनियाको छोड़ना नहीं, वरंच दुनियामें रह कर उसमें लिप्त न होना ; भक्त होनेके माने पुराने कर्मोंके बंधनसे छूटजाना और फिर नये कर्मोंके बंधनमें न पड़ना ; भक्त होनेके माने देहमें रहते हुए भी उससे आत्मिक बलसे छुट्टा होजाना; भक्त होनेके माने जैसे चौकीदार बाहर पहरा देता है, वैसे भीतर पहरा देना और अन्तःकरणमें निकम्मे विचारोंको घुसने न देना, भक्त होनेके माने खराब जगहसे होकर जानेपर भी ऐसा बने रहना कि आंच न लगे; भक्त होनेके माने जगतके व्यवहारी आदमियोंसे अनेक विषयोंमें अधिक बल प्राप्त करना; भक्त होनेके माने अनेक प्रकारके दुःखोंसे छूटना; भक्त होनेके माने जगतकी हरएक वस्तुसे ऊंचे दरजेका आनन्द लेना; भक्त होनेके माने सब जीवोंको अपने

समान समझना; भक्त होनेके माने सब तरहके पापोंसे दूर रहना; भक्त होनेके माने शरीरपर, इन्द्रियोंपर और मनपर स्वामित्व चलाना; भक्त होनेके माने प्रभुके नियमानुसार चलना; भक्त होनेके माने महात्माओंके कदम ब कदम चलना; भक्तहोनेके माने जगतमें शान्ति फैलानेवाला बनना; भक्त होनेके माने अनेक वस्तुओंमें और अनेक प्रसंगोंमें गम खाना सीखना; भक्त होनेके माने पुराने जमानेकी कुढंगी रहन सहन बदल डालना; भक्त होनेके माने जगतमें सबके मित्र होना; भक्त होनेके माने भगवानकी इच्छानुसार चलनेवाला होना; भक्त होनेके माने संसारी लोगोंके न निगल सकने योग्य कड़वा घूंट पीजाना; भक्त होनेके माने दूसरोंके दुःखसे दुखी होना; भक्त होनेके माने जगतमें प्रभुकी महिमा बढ़ाना और भक्त होनेके माने प्रभुके ज्ञान और प्रेमसे शराबोर होना और उनमें मग्न रहना। ऐसी स्थिति वालेको, ऐसे वर्ताववालेको और ऐसी रहन सहन वालेको हम भक्त कहते हैं और हे भाई बहनो! ऐसे प्रभुप्रेमी भक्त होनेके लिये हम आपसे विनती करते हैं।



७३–व्यवहारी लोगों और भक्तोंमें जो अन्तर है उसका खुलासा।

जो व्यवहारचतुर सयाने आदमी होते हैं वे अपनी हर बातका हिसाब ठीक ठीक रखते हैं। जैसे—व्यापारी अपने खर्चेका हिसाब लिखते हैं। उसमें लिखते हैं कि आज अढ़ाई आनेकी तरकारी चार आनेके केले, दोआने ट्रामगाड़ीमें, एक रुपया धर्मार्थ खाते, आठ आनेका तेल, अढ़ाई रुपयेका घी, छः आनेकी

चोली, डेढ़ रुपयेकी धोती, सवा रुपये सिलाई मद्धे, बारह आने घड़ीकी मरम्मत। इस तरह अपना रोज रोजका खर्च लिखते हैं।

जैसे व्यापारी हिसाब रखते हैं वैसे विद्वान भी अपना काम काज टांकनेकी डायरी रखते हैं। उसमें रोजनामचा लिखते हैं कि—

आज रमाबाई कन्याशाला देखने गये थे। वहांका काम ठीक ठीक चलता है। अगले रविवारको सोशल कानफरेंसमें जाना है वहां शर्माजीका व्याख्यान होगा। दूसरे दिन लिखते हैं कि आजकलकी शिक्षापर एक निबन्ध लिखना है उसके प्वाइण्ट—

(१) शिक्षासे उद्धतपन बढ़ताजाता है।

(२) शिक्षासे झूठी नजाकत आतीजाती है।

(३) शिक्षासे अभिमान या झूठी शेखी बढ़तीजाती है।

(४) शिक्षासे कुटुम्बस्नेह घटताजाता है।

(५) शिक्षासे शिक्षा मिलनेपर भी रोजगार धंधेकी लियाकत नहीं आती।

(६) शिक्षासे मगज खिलता है मगर हृदय नहीं खिलता।

(७) शिक्षासे बहुतसे फुटकर विषय जानेजाते हैं परन्तु किसी एक विषयमें पूरी पूरी जानकारी नहीं होती।

(८) शिक्षाके बोझसे शरीर दब जाता है और उससे थोड़ी उमरमें मृत्यु होती है।

यह सब आजकलकी शिक्षामें दोष है, उसपर एक निबन्ध लिखना है। इस प्रकार अपनी डायरीमें टांक रखते हैं। फिर तीसरे दिन डायरीमें लिखते हैं कि—

आज अनाथालय देखने गये थे। हमारी समझमें ऊपरसे जैसा दिखाया जाता है वैसा भीतरसे डटकर काम नहीं होता। इसके

लिये स्वामीजीसे कहना होगा। पीछे किसी और दिन लिखते हैं कि लोग श्रद्धा श्रद्धा चिल्लाया करते हैं परन्तु अभी तक श्रद्धाकी बात ठीक ठीक मेरी समझमें नहीं आयी। इसलिये श्रद्धा-सम्बन्धी पुस्तकें पढ़नी चाहियें।

ऐसे ऐसे नोट विद्वान किया करते हैं। सबको अपने अपने ज्ञानके अनुसार और कामके अनुसार हिसाब रखना आता है।

पण्डित तथा व्यवहारचतुर मनुष्य जहां ऊपर-लिखे अनुसार नोट करते हैं वहां अज्ञानी और मोहवादी मनुष्य कैसे और कहां हिसाब रखते हैं यह आपको मालूम है?

वे कागजपर नहीं वरंच अपने अन्तःकरणमें नोट कर रखते हैं और खास करके अच्छे कामोंकी नहीं बल्कि बहुत करके खराब कामोंको नोट करते हैं। जैसे—

कोई कोई स्त्रियां अपने मनमें यह याद रखती हैं कि हमारी बिरादरीकी फलानी औरत, जब मेरा लड़का गुजर गया तब पुकार करने नहीं आयी थी। मेरा पति जब समधिनके लड़का होनेकी बधाई देने गया था तब वहांवालोंने दालमें पूरा घी नहीं परोसा था, छुलका दिया था। मैं जब अपनी सासले लड़ती थी तब सासका पक्ष लेकर मेरी पड़ोसिनने मुझे कड़ी बात कही वह मैं जन्म भर नहीं भूलूंगी। मेरा लड़का तीन वर्षका था तब पड़ोसिनके धक्केसे सीढ़ी परसे गिरपड़ा था; इस बातको आज तीस वर्ष हुए परन्तु अभीतक मेरे मनसे वह दाग नहीं गया। मैं जब ब्याहे आयी थी तब मैंने साड़ी एक दिन अपनी ननदको पहननेके लिये दी थी। उसमें तेलका दाग पड़गया। मैंने उलहना दिया तो वह कृतज्ञ होनेके बदले मुझसे लड़-बैठी। तबसे कई युग बीत गये परन्तु उस साड़ीमें पड़े हुए दागकी बात मैं नहीं भूली। एक दिन मेरे यहां ब्रह्मभोज था उसमें खीरका

तसला उलट गया और लड्डूकी थालीमें चीटियां चढ़गयीं। उस समय मैं छः सात वर्षकी थी परन्तु ये बातें मुझे अभीतक याद है। ऐसी ऐसी याददाश्तें अपने अन्तःकरणमें नोट कर रखती हैं। परन्तु इसका परिणाम क्या है? और ऐसा कूड़ा कर्कट हृदयमें क्यों भर रखाजाय इसका विचार उन्हें नहीं आता इसका कारण यह है कि वे इसकी खराबियोंको नहीं समझतीं।

देखियें कि विद्वान कुछ और ढङ्गकी याद रखते हैं और संसारी लोग कुछ और ढंगकी याद रखते हैं; परन्तु जो सच्चे भक्त हैं वे किसी प्रकारकी याद नहीं रखते क्योंकि उससे कभी न कभी किसी न किसी तरह अड़चल पड़जाती है।

ऐसी यादसे कर्मका बन्धन उलझताजाता है; ऐसी यादसे मोह बढ़ताजाता है; ऐसी यादसे हृदयको धक्का लगता जाता है; ऐसी यादसे मैंपन बढ़ताजाता है और ऐसी यादसे रागद्वेष बढ़ताजाता है। इससे भक्त अपने खर्चेका हिसाब बही नहीं लिखते और न अपने अच्छे कामों तथा दूसरोंके बुरे कामोंकी याददाश्त अपने अन्तःकरणमें रखते। वे तो अपने शुभ कर्मोंको प्रभुके दरबारमें नोट होने देते है; चित्रगुप्तके बहीखातेमें अपने कामोंको नोट होने देते है; वे निर्लेप रहते हैं। वे अपने शुद्ध अन्तःकरणसे यह सोचते हैं कि हमारी औकात क्या है, हम क्या कर सकते हैं और कभी कुछ कर भी सकें तो इसमें आश्चर्य क्या है? हम जो कुछ करते हैं अपने नाथकी सत्तासे ही करते हैं और उसकी इच्छासेही करते हैं। इसमें हमारा क्या है कि हम अपनी ओरसे नोट करें? दूसरे जो ऐसे गहरे उतरे हुए शान्तिप्राप्त तथा पक्के भक्त हैं वे किसीकी बुराई तो करते नहीं, इससे उन्हें इसकी याददाश्त रखनेकी जरूरत ही नहीं पड़ती और कुछ भलाईका काम अपने हाथसे हो जाय तो वह ईश्वरके लिये ही होता

है । इससे उसको नोट करनेकी भी कोई जरूरत नहीं पड़ती, भक्त रुपये पैसेकी या अपने भले कामोंकी याददाश्त नहीं रखते इससे उनका हृदय उत्तम रहता है । उनके कामका हिसाब ईश्वरके दरबारमें रख आता है । इसलिये भाइयो ! अगर सच्चा भक्त होना हो तो ऐसा कीजिये कि आपके काम ईश्वरके दरबारमें लिखे जायं और आप निर्लेप हो कर फिरें। तभी सच्ची भक्ति होसकेगी और आप तभी सच्चे भक्त बन सकेंगे। छोटी छोटी बातोंकी याद मगजमें भर रखने से कोई भक्त नहीं होसकता यह बात याद रखना । इसलिये इस बातकी सम्हाल रखना कि छोटी छोटी बातें ढांकने की भूलमें ही न रह जायं ।

७४—भक्तिमें एकही जगह न पड़े रह कर हररोज आगे बढ़ना चाहिये।

जो आरम्भके भक्त है वे बहुत थोड़ी देर जप करसकते हैं, थोड़ी देर ध्यान धर सकते हैं, थोड़ा दान देसकते हैं और अपने मनको थोड़ी देर वशमें रख सकते हैं । इससे उनको अफसोस न करना चाहिये और यह न समझना चाहिये कि प्रभुकी हमारे ऊपर थोड़ी कृपा है । बापको जैसे कमाऊ बड़ा लड़का प्यारा लगता है वैसे न कमानेवाला छोटा लड़का भी प्यारा लगता है । बल्कि बड़े लड़केसे छोटे लड़केपर ही बापका प्रेम अधिक होता है । इसी तरह याद रखना कि जो नये भक्त हैं, जो शुरूके भक्त है और जो कच्चे भक्त है

उनपर प्रभुकी अधिक कृपा होती है और वे प्रभुको अधिक प्यारे लगते हैं। जो बहुत आगे बढ़े हुए भक्त हैं उनको भक्तिमें आनन्द मिल गया होता है, उनको भक्तिका व्यसन हुआ रहता है, वे प्रभुकी महिमा समझे रहते हैं और वे भक्तिके चमत्कारका अनुभव किये रहते हैं। इससे वे बहुत जोर शोरसे और बहुत प्रेमसे भक्ति करें तो उसमें कुछ आश्चर्य नहीं है। परन्तु जो नौसिखे भक्त हैं वे दुनियादारीका मोह घटा कर भक्ति करें तो यही बहुत है; वे अपने जंजाल तथा अज्ञान साथियोंसे छुटकारा पाकर भक्ति करें तो यही बहुत है और अभी नये नये होनेसे भक्तिमें आनन्द न मिलता हो तोभी जबरन भक्तिको पकड़ रखें और थोड़ी बहुत भी भक्ति करें तो यही बहुत है। ऐसे नये भक्तों पर प्रभु अधिक प्रसन्न रहता है। इसलिये अगर आरम्भ में थोड़ा भजन होता हो तो यह न समझना कि हम प्रभुके कम प्यारे हैं वरंच यह समझना कि इस समय भी प्रभुकी हमपर बहुत बड़ी कृपा है। परन्तु उसमें एक शर्त है। बालक सदा बालक बना रहे, बुद्धिमें, कदमें और आचार विचारमें भी बालक ही रह जाय तो वह लड़का बापको नहीं भाता बल्कि ज्यों ज्यों समय जाय त्यों त्यों बड़ा होता जाय और चतुर होता जाय तो वही लड़का बापको भाता है। वैसे ही जो भक्त अपनी भक्ति और ज्ञानमें हररोज़ आगे बढ़ते जाते हैं वे ही प्रभुको सोहाते हैं। इसलिये जैसे बने वैसे ऐसा करना चाहिये कि हर रोज, हर महीने और हर वर्ष अपनी भक्तिमें कुछ वृद्धि होती जाय और अपने चरित्रमें कुछ सुधार होता जाय।

जो भक्तिमें आगे नहीं बढ़ते और सदा चलऊ रिवाजपर चलते हैं तथा एकही जगह पड़े रहते हैं वे बाहरी ढोंगट-

कोसलेमें रह जाते हैं। जो हर रोज प्रभुप्रेममें बढ़ते जाते हैं उनके हृदयमें श्रद्धा बढ़ती जाती है, उनका प्रभुप्रेम बढ़ता जाता है, उनका ज्ञान बढ़ता जाता है और उनका ध्यान जमता जाता है।

बन्धुओ! जिन भक्तोंकी भक्ति सदा बढ़ती जाती है उनमें और जिनकी भक्ति नहीं बढ़ती उनमें क्या फर्क है यह आप जानते है? इसके बारेमें सन्त कहते हैं कि जो भक्त अपनी भक्तिमें आगे नहीं बढ़ते वे गमलेमें लगाये हुए पौधोंके समान हैं। वे पौधे पानी न मिलनेसे सूख जाते हैं। ऐसे पौधोंको बाहरके पानीपर ही भरोसा रखना पड़ता है। परन्तु जिन भक्तोंकी भक्ति हर रोज बढ़ती जाती है वे जमीनमें जमे हुए बड़े पौधोंके समान हैं। उनकी जड़ पृथिवीके अन्दरके पानी तक पहुंची रहती है, इससे जप, तप, ध्यान, दान आदि जरूरी गुण आपसे आप उनको मिल जाते हैं। वे ढीले नहीं पड़ते बल्कि दिन दिन फलते फूलते जाते हैं।

जो भक्त सदा भक्तिमें आगे बढ़ते रहते हैं वे धीरे धीरे ईश्वरके निकट पहुंच जाते है और ईश्वरकी जान पहचान वाले बनजाते हैं। ईश्वरके साथ बहुत समय तक रहनेसे फल यह होता है कि जैसे सदा एक साथ रहने वाले दो मित्रोंमें कमजोर भी अपने बड़े मित्रकी चाल सीख जाता है और धीरे धीरे बड़े मित्रकी कपड़ा पहननेकी, बोल चाल और बातचीत करनेकी रीति भांति उसमें आतीजाती है। वैसे जो भक्त भगवानके साथ अधिक रहते हैं उनमें भी ईश्वरी गुण आतेजाते हैं और दिन दिन वे गुण खिलतेजाते हैं।

बन्धुओ! भक्ति बढ़नेसे ऐसे ऐसे बहुतसे फायदे होते हैं। परन्तु जो जहांके तहां पड़े रहते हैं उनको ऐसा अनमोल लाभ नहीं मिलता। इसलिये भक्ति तथा ध्यान ज्ञानमें जहांके तहां न

पड़े रह कर जैसे बने वैसे हमेशा आगे बढ़नेकी कोशिश करना चाहिये। यही कल्याणका सच्चा रास्ता है।

७५–अनजानमें होजानेवाले पापके विषयमें।

जहां बहुत हवा या जरूरत लायक रोशनी न आती हो वहां अपने बूढ़े मास्टरोंको बिठाकर उनसे लिखवाया करना और उनकी आंखोंको जो नुकसान पहुंचाता है उसकी बखान करना पाप है।

अपने कारखानेमें जो आदमी काम काज करने आते हों उन कारीगरों तथा मजदूरोंकी तन्दुरुस्तीका ख्याल न रखना और उनके खराब हवा पानीमें देरतक रहनेको लाचार करना तथा उनके काम करनेकी जगहमें सफाई न रखना एक तरहका पाप है। अपने घोड़े या बैल शक्तिभर काम करके थक गये हों तोभी अपने थोड़ेसे लाभके लिये उनको बार बार गाड़ीमें जोतना और उनसे शक्तिसे बाहर काम लेना एक तरहका पाप है।

अपने घरमें कोई विधवा भोजाई या भवह या चाची या बहन हो तो उससे रात दिन काम कराना और उसको कुछ भी आराम न देना तथा यह सोचना एक किस्मका पाप है कि यह हमारा काम नहीं करेगी तो जायगी कहां? मर जी कर इसे करना ही पड़ेगा हम उसको आराम क्यों दें? जहां तक चलता है वहां तक तो चले।

सास ननदका पतोहूपर दरनाथा चलाना या बुढ़ापेमें बहूका सास ससुरको सताना बड़ा भारी पाप है।

बहुत तंग जगहमें ज्यादा लड़कोंको बिठाकर पढ़ाना और थोड़ेसे भाड़ेके लोभसे लड़कोंकी तन्दुरुस्ती बिगड़ने देना तथा उनके अध्ययनमें अड़चल पड़ने देना पाप है।

जानते हो कि घरमें स्त्री बीमार रहती है फिर भी उसकी दवा दारूका ख्याल न रखे और जहां तक चले उससे काम कराया करें और अन्तको उसकी तन्दुरुस्ती बिगाड़ डालें परन्तु समय रहते न चेतें या उसको कुछ आराम न दें तो इसका नाम पाप है।

कितनेही अफसरोंके पास कितने किसान तथा दूसरे गरीब आदमी छोटे छोटे कामोंके लिये बार बार धक्के खाया करते हैं परन्तु कितने ही अफसर कारिन्दे तथा दूसरे अमले कभी कभी अपने मनमें यह समझते है कि इसमें हर्ज क्या है? अपनी गरजसे आते हैं। ऐसे आदमियोंके लिये क्या हम अपना आराम छोड़दें? यह सोचकर उनके काममें लापरवाही दिखाते हैं और समझते है कि ये हमारा क्या कर सकते हैं? यों जान बूझ कर उन्हें धक्का खिलाते रहनेका नाम पाप है।

जो वैद्य या डाक्टर जल्द आराम होने योग्य बीमारको देरसे आराम करे, दवा तय्यार करनेमें टालमटोल किया करे और ऐसे बीमार योंही अच्छे होते हैं यह समझ कर लापरवाही दिखाया करे तथा अपने भरोसे पड़े हुए रोगियोंसे मतलब गांठा करे तो यह एक तरहका पाप है।

किसी वकीलने किसीका मुकदमा अपने हाथमें लिया हो और फिर कोई बड़ा मुक़दमा मिल जाय या हवा खानेवाला कोई अमीर या मित्र मिल जाय तो उसके लिये पहले आदमीके मुकदमेमें मुहलत लेना और कुछ न कुछ बहाना निकालते जाना तथा मनमें यह समझ कर कि अब यह मुझे मुकदमा सौंप कर

कहां आ सकता है; उसके मुकद्दमेमें लापरवाही दिखाना पाप है।

रेलगाड़ी या आगिनबोटमें जितनी जगह हो उससे अधिकके मुसाफिरोको टिकट बांटना और फिर उनमें धक्कामुक्की होने देना तथा उन्हें असुबीतेमें डालना और मनमें यह समझना कि इसमें मेरा क्या दोष है ये लोग अपनी गरजसे हैरान होते हैं; यह समझ कर उनके आरामपर उचित ध्यान न देना मतलब साधना है और यह पाप है।

चेले गुरुकी इज्जत करते हों, उनको आराम पहुंचाते हों और मनमें आशा रखते हो कि गुरुजीकी ओरसे कुछ विशेष लाभ मिलेगा; परन्तु गुरुजी अपने विलासमें पड़े रहें और मनमें यह सोचा करें कि हमें इनकी क्या परवा है? ऐसे तो घनेरों पड़े हैं; हम उन्हींपर थोड़े हैं? ऐसोंके लिये कौन मगज-पच्ची करे? अपनी गरजसे आते हैं और देते हैं इसमें कौन बड़ी बात है? अपने गुरुको नहीं देंगे तो किसको देंगे? यह समझ कर उनकी ओरसे लापरवाही दिखानेका नाम पाप है।

बन्धुओ! ऐसे ऐसे अनेक विषयोंमें अच्छे अच्छे आदमी तथा बड़ी बड़ी कम्पनियां भी कई तरहसे अनुचित लाभ उठाती हैं और तिसपर भी यह नहीं जानतीं कि हम-यह पापका काम कर रहे हैं। इसलिये खबरदार रहना कि ऐसी भूल न हो और अनजानमें होजानेवाले पापसे बचना तथा ऐसे पापोंकी तरफ अपने स्नेहियोंका ध्यान खींचना। यही हमारी सलाह है।

७६—मरनेके समय बाल बच्चोंकी या मा बापकी फिकर होती है इससे बीमारीमें दुःख होता है; उस दुःखसे छूटनेका उपाय।

जब अन्त समयकी बीमारी आजाती है तब बहुत आदमियोंको अपने बाल बच्चोंकी बहुत चिन्ता होती है या किसी आदमीके बूढ़े मा बाप जीते रहते हैं तो उनकी बहुत फिकर होती है। इससे वे दुखी होते है और अन्तको इसी दुःखमें मरते है। आनन्दसे मरना वे नहीं जानते । वे अपनी अज्ञानताके कारण यह समझते हैं कि आज तक हमने इन सबको निबाहा है अब हमारे बिना इन बेचारोंकी क्या दशा होगी । यह सोच कर वे बहुत दुखी होते हैं ऐसी फिकर करनेवाले मनुष्योंको समझ लेना चाहिये कि हमारे जो सगे सम्बन्धी है उनसे थोड़े दिनोंका वास्ता है। वे प्रभुके जीव है और प्रभु अपने जीवोंको कभी भूल नहीं जाता। जरा विचार तो कीजिये कि जो प्रभु अनन्त कालसे अनन्त ब्रह्माण्डको निबाह रहा है वह प्रभु क्या आपके बालबच्चोंको या आपके मा बापको नहीं निबाह सकता। जो प्रभु धरतीके अन्दरके जीवोंको पानीके जीवोंको और आकाशके जीवोंको भी निबाह रहा है वह प्रभु क्या मनुष्योंकी मदद नहीं करेगा ? अवश्य करेगा। इसलिये मरते समय ऐसी झूठी फिकर मत कीजिये वरंच अपने सगे सम्बन्धियोंको ईश्वरके जीव जान कर ईश्वरको सौंप दीजिये और हृदयमें पक्का विश्वास रखिये कि सबका आधार भगवान है। वह इन निराधार जीवोंको अपने राज्यमें भूखों नहीं रखेगा; जरूर उनका मददगार होगा। यह समझ कर अपने स्त्री बच्चों या मा बापको प्रभुके हवाले करदेनेसे अन्त समयकी बीमारीमें भी शान्ति रख सकते हैं। इसलिये अपने सगे सम्बन्धियोंका बोझ

प्रभुको सौंप देनेकी कुंजी सीख लीजिये । तब आप बीमारीमें शान्तिसे रह सकेंगे ।

बीमारीमें शान्तिसे रहनेके लिये दूसरी यह बात भी विचारना चाहिये कि हरएक जीवका अपना प्रारब्ध होता है और हरएक जीव अपना अपना कर्म लेकर ही इस जगतमें आता है । हमारे स्त्री बच्चे तथा हमारे भरोसे पड़े हुए दूसरे परिजन भी अपना अपना कर्म लेकर ही आते हैं और उनका कर्म बदल देनेकी हममें कुछ सामर्थ्य नहीं है । तब हम क्यो व्यर्थका अफसोस करके अपना जीवन बिगाड़ें ? यह सोच कर जीवको धैर्यमें रखना और ऐस मौके पर सगे सम्बन्धियोंका अफसोस मत करना ।

इसके सिवा यह भी विचार करना कि जिन गरीब लड़कोंके मा बाप मर गये हैं या जिन बूढ़े आदमियोंके जवान लड़के मर गये हैं उनको भी परमार्थी सज्जनोंकी ओरसे मदद मिला करती है । कितनी बार तो ऐसा होता है कि गरीब मा बापकी ओरसे बालकोको जितना सुबीता और जितनी शिक्षा मिलती है उससे अधिक सुबीता और अच्छी शिक्षा अनाथालयमें या ऐसेही और किसी आश्रममें मिलती है । क्योंकि जिनका कोई नहीं है उनका स्वयं भगवान है । प्रभु ऐसे औचक रूपसे अनाथोकी मदद करता है कि मालूम भी नहीं पड़ता । इसलिये मरते समय या भयंकर रोगके समय आसरे पड़े हुए बूढ़े मा बाप या छोटे बाल बच्चोंकी फिकर न करना चाहिये । ऐसी फिकर करने पर ऐसे समय ऐसे बीमारोंसे कुछ हो भी नहीं सकता । इसलिये उस फिकरका बोझ प्रभुपर सौंप देना और आप उसकी इच्छाके अधीन हो-जाना सबसे उत्तम बात है और यही हरिजनोंका सच्चा धर्म है ।

ऐसी ऐसी बातोंको पहले से समझ लेना चाहिये तथा अन्तकालकी बीमारीमें ऐसे हरिजनोंके सत्संगमें रहना चाहिये जो इस बातको याद दिलावें। ऐसा करनेपर बीमारीके कष्टसे बच सकते हैं। जो सच्चे सन्त हों और जगतके झूठे मोहसे छूट गये हों उनसे शान्ति पानेकी ऐसी युक्ति सीख लीजिये और उसे हृदयमें बिठा लेनेकी कोशिश कीजिये। यही हमारी सलाह है।

बन्धुओ! हमारे सगे जितने हमारे नजदीकी हैं उससे कहीं अधिक प्रभुके नजदीकी हैं। हमने तो खींचतान कर अपना सम्बन्ध जोड़ा है, हमारा जो कुछ सम्बन्ध है वह सच्चा सम्बन्ध नहीं है। हमारा यहांका सम्बन्ध सिर्फ इस भवका सम्बन्ध है और उसमें भी कितनाही सम्बन्ध तो हमने जबरदस्ती रखा है। हिलनातोंसे जो सम्बन्ध है वह अनन्त कालके लिये नहीं है। कौन जानता है कि इस जन्मके हमारे मा बाप पिछले जन्ममें क्या थे और इस जन्मके हमारे लड़केबाले पिछले जन्ममें क्या थे। इसी तरह आगेके जन्ममें हमारे मा बाप न जाने क्या होंगे और हमारे बाल बच्चे भी न जाने क्या होंगे। यह सब सम्बन्ध कर्मके अनुसार मनुष्यके मरनेपर बदला करता है। ऐसे बदलनेवाले सम्बन्धकी कीमत कुछ बहुत नहीं होती। इससे यह घड़ीभरका और झूठा सम्बन्ध कहलाता है। परन्तु प्रभुका जीवसे जो सम्बन्ध है वह अनन्त कालका है और अनन्त कालतक रहने योग्य है। इस सम्बन्धमें किसी तरहका फेर बदल नहीं होता, इसलिये यही सच्चा सम्बन्ध है। अपने बदलते हुए सम्बन्ध पर हम जितना प्रेम रखते हैं उससे कहीं अधिक प्रेम परमकृपालु परमात्मा अपने सच्चे सम्बन्धवाले जीवोंपर रखता है। इससे हमारे सगे सम्बन्धियोंके लिये प्रभुको हमसे ज्यादा ख्याल है। इसलिये बीमारी जैसे समयमें सम्बन्धियोंकी फिकरमें मनको

हैरान न करना। एक तो रोगके कष्टसे मन व्यग्र रहता है उसमें और फिकर करनेसे उल्टे बीमारी बढ़जाती है। ऐसा न होने देनेके लिये ऐसे समय जैसे बने वैसे जान बूझकर फिकर घटा देना चाहिये। फिकर घटानेका सबसे अच्छा उपाय यह है कि परमकृपालु विश्वम्भरके विश्वासपर और उसके भरोसे अपने सगे सम्बन्धियोंकी लगाम छोड़ दे। विश्वम्भर माने क्या यह आप जानते हैं? विश्व माने वह जिसके अन्दर ऐसी अनेक पृथिवियां है। ऐसे अनेक विश्वोंका जो अनन्तकालसे पोषण किया करता है वह विश्वम्भर कहलाता है। यह विश्वम्भर ऐसा महान है कि उसके एक एक रोएंमें अनन्त ब्रह्माण्ड हैं। ऐसा समर्थ प्रभु जो छोटे छोटे जीवोंका भी पूरा पूरा ख्याल रखता है वह क्या उत्तम मनुष्यको भूल जायगा? नहीं ऐसा कभी नहीं होनेका। प्रभु किसीको नहीं बिसारता। किसी आदमीके लिये हम जितना ख्याल रख सकते हैं उससे कहीं अधिक ख्याल वह रखता है। इसलिये हमें अपने सगे सम्बन्धियोंकी फिकर उसे सौंप देना चाहिये और आप शान्तिसे रहना चाहिये। शान्तिसे रहनेसे बीमारी जल्द छूट जाती है। इसलिये बीमारीमें शान्तिसे रहना सीखिये।

७७—सत्संगसे लाभ।

बन्धुओ! मनुष्यजातिका स्वभाव ऐसा है कि उसको मित्रकी जरूरत पड़ती है। प्रभुने मनुष्यको ऐसा बनाया है कि जब उसके साथ उसके ऐसा कोई दूसरा आदमी होता

है, तभी उसे स्वाद मिलता है । जगतकी ऐसी रचना होनेके कारण किसी आदमीको अकेले रहना नहीं भाता। राजमहलमें रहनेवाले राजाको किसी दूसरे आदमीके संगकी जरूरत पड़ती है। इससे मालूम होता है कि आदमी बिना आदमीके संगके नहीं रहसकता । हरएक आदमीको किसी न किसी आदमीकी संगत चाहिये ही, मनुष्यका स्वभाव ही ऐसा है कि वह बिना किसीकी संगतके, अकेले कभी रह नहीं सकता ।

जैसे मनुष्य संग बिना नहीं रहसकता वैसे पशु पक्षी आदि जानवर भी बिना संगके नहीं रह सकते । जैसे-कबूतर, गाय, घोड़े, ऊंट, हाथी, मछली, बकरी, मुर्ग, बगुले और कवे भी अपनी अपनी जातिमें हिलमिल कर रहते दिखाई देते हैं और उनमें अपने समान किसी खाससे विशेष प्रकारकी मित्रता दिखाई देती है । मधुमक्खी तथा चींटी जैसे छोटे जीव भी अपनी जातिके जीवोंके साथ मिल कर रहते दिखाई देते हैं; वे भी बिना संगके अकेले रहते नहीं जान पड़ते । इसके सिवा, बाघ, भालू, चीता, शेर आदि खूंखार जानवर तथा विशाल आकाशमें उड़नेवाले बाज, गरुड़ आदि पक्षी भी अपनी अपनी जातवालोंकी संगतमें रहते हैं। जगतकी रचना ही ऐसी जान पड़ती है कि प्राणियोंसे बिना संगके रहा नहीं जाता । इसलिये मनुष्योंको संगकी जरूरत है ।

इस जरूरतके लिये बड़े बड़े राजा बड़े बड़े दरबार लगाते हैं; व्यापारियों का जत्था होता है; पण्डितोंकी सभा होती है; पलटनिया सिपाहियोंकी टुकड़ी होती है, साधुओंकी जमात होती है, ब्राह्मणोंकी बिरादरी होती है, गवैयोंकी मंडली होती है, खेलकूदके लिये अखाड़े, जिमखाने होते हैं और मौज शौक करने तथा कामकाजसे ऊबे हुए मनुष्योंके विश्रामके लिये तरह

तरहके क्लब होते हैं। वैसेही हरिजनोंके लिये सत्संगकी मण्डली होती है।

अच्छी संगत होनेपर बहुत तेजीसे आगे बढ़सकते हैं। इसके लिये भी संगकी जरूरत है। जैसे-

एकही कोयले या एकही लकड़ीको सुलगावें तो वह जल्द नहीं सुलगती परन्तु अंगीठीमें ज्यादा कोयले या चूल्हेमें ज्यादा लकड़ियां हों तो जल्द सुलगजाती हैं। वैसेही अकेले आदमीसे बहुत अच्छी तरह भजन पूजन नहीं बनता परन्तु जब उसे बहुत आदमियोंका संग मिलजाता है तब वह बहुत अच्छी तरह भक्तिमार्गमें आगे बढ़ता है।

जब अकेले यात्रा करना पड़े तो उदास लगता है रास्ता बहुत लम्बा होजाता है; परन्तु अच्छा साथ मिलजानेपर बड़ा आनन्द आता है और रास्ता जल्द तय होजाता है। इसी तरह जब किसी अच्छे आदमीका संग मिलजाता है तब ईश्वरका भजन करनेमें बड़ा आनन्द मिलता है। परन्तु जब संग नहीं होता तब नियम नहीं रहसकता, मनमौजी काम होता है। ऐसे मनमौजी काममें कुछ फल नहीं होता।

जब हम अपने घरमें या दूसरी जगह अकेले जीमने बैठते हैं तब उतना मजा नहीं आता, लेकिन जब अपने हितमित्रोंके साथ भोजमें जीमने जाते हैं तब वहां विशेष आनन्द होता है और उस समय बड़े आनन्दसे जीमन होता। वैसेही याद रखना कि अकेले आदमीसे ठीक ठीक भजन नहीं होता, परन्तु जब अपने विचारके हरिजनोंका संग मिलजाता है तब बहुत अच्छी तरहसे भजन होता है।

गाने बजानेमें भी अकेले आदमीको आनन्द नहीं आता परन्तु जब उसके साथ दूसरे गवैये तथा सुननेवाले होते हैं तभी

आनन्द आता है। वैसेही याद रखना कि अकेले आदमीसे ठीक ठीक भक्ति नहीं होती; जब अच्छा संग मिलजाता है तभी प्रेमपूर्वक भक्ति होती है।

कोई विद्यार्थी अकेला पढ़ता हो तो वह बहुत प्रेम और शीघ्रतासे नहीं सीख सकता; परन्तु जब वह स्कूलमें पढ़ने जाता है और बहुतसे विद्यार्थियोंके साथ बैठ कर पढ़ता है तब दूसरोंको पढ़ते देख कर तथा एक दूसरेसे आगे बढ़नेकी कोशिश होते देख कर उसका भी पढ़नेका हौसला बढ़ता है, इससे वह भी अधिक जी लगा कर पढ़ता है। वैसेही जो हरिजन सत्संगकी मंडलीमें जाते हैं उनमें भी एक दूसरेको देख कर ईश्वरी प्रेम जागता रहता है।

इस प्रकार हर विषयमें संगका असर होता है और अच्छा संग होनेपर बहुत तेजीसे काम किया जासकता है। इसलिये हरिजनोंको, वैष्णवोंको तथा भक्तोंको अकेले न रहना चाहिये वरंच अधिक हरिजनोंको इकट्ठे हो कर भगवद्रसका आनन्द लेना चाहिये। इस तरह बहुतेरे हरिजनोंके साथ मिल कर अपने अन्दर तथा दूसरोंके अन्दर प्रभुप्रेम जगानेको हम सत्संग कहते हैं सत्संगकी ऐसी मंडली बनानेसे बड़ा लाभ होता है। जैसे—

किसी कामके लिये सरकारके पास दरखास्त भेजना हो तो एक आदमीकी सही होनेसे उसपर विशेष ध्यान नहीं दिया जाता; परन्तु सैकड़ों हजारों आदमियोंकी सहीसे अरजी जाय तो उसपर सरकारको विशेष ध्यान देना पड़ता है और बहुत विचार करके उसका जवाब देना पड़ता है। वैसेही अगर अकेले प्रभुकी प्रार्थना करें तो उसका असर बहुत थोड़ा होता है परन्तु सैकड़ों हरिजन साथ मिल कर भगवानकी प्रार्थना करें

तो उसका असर बहुत जबरदस्त होता है और वह प्रार्थना जल्द सुनी जाती है।

सत्संगमण्डलीकी प्रार्थना प्रभु जल्द सुनता है, इतनाही नहीं बल्कि हमारे शास्त्रोंमें कहा है कि भगवानका वास भगवानके धाममें होता है, भगवानका वास भगवानके मन्दिरोंमें होता है, भगवानका वास सन्तोंके हृदयमें होता है और भगवानका वास हरिजन जमा हो कर जहां भगवानकी कथा वार्ता करते और उसका गुण गाते हैं उस सत्संगमें भी होता है। इस तरह सत्संगकी मण्डलीमें परमकृपालु परमात्माका वास होता है। इसलिये जैसे बने वैसे हमें अच्छे सत्संगका लाभ लेना चाहिये। ऐसा लाभ न लेना बहुत बड़ी भूल है। ऐसी भूल न होनेपावे इसका खयाल रखना।

७८–सत्संगसे लाभ। (२)

सत्संगका लाभ समझानेके लिये एक महात्मा कहते थे कि जिस शहरके पास मीठे जलकी बहुत बड़ी और सुन्दर नदी बहती है उस शहरके आदमी बड़ी सफाई से रहते हैं और उनका शरीर तथा उनका कपड़ा बहुत स्वच्छ दिखाई देता है। वैसेही जिस स्थलमें हरिजनोंकी बड़ी मण्डली जमा होती है और जहां बहुतसे स्त्री पुरुष तथा बड़े छोटे मिल कर अपना पाप त्यागदेनेकी कोशिश करते हैं तथा भगवत्‌रसका आनन्द लेते हैं वहां दूसरे स्थानोंसे अधिक पवित्रता, अधिक उत्तमता और अधिक आनन्द

मालूम होता है। इसलिये जिनसे बनसके उन मनुष्योंको सत्संगमें रहनेकी विशेष जरूरत है।

जहां सदा नियमपूर्वक सत्संग हुआ करता है उस स्थानकी तथा उसके आसपासकी हवाही बदलजाती है और वहांका वायुमण्डल बड़ी शान्तिवाला बनजाता है। जो आदमी वहां जाते हैं उनको एक प्रकारका प्राकृतिक आनन्द हुआ करता है। जिनको ऐसा आनन्द न हो उनको भी कुछ न कुछ थोड़ा बहुत अनसोचा लाभ हुआ करता है। इसलिये जैसे बने वैसे ऐसी पवित्र सत्संगमण्डलियोंका लाभ लेना चाहिये।

सत्संगमण्डलीमें आनेसे क्या लाभ होता है यह आप जानते हैं? इसके लिये सत्संगके अनुभवी हरिजन कहते हैं कि जो अच्छी सत्संगमण्डलियां हैं उनमें हमसे अधिक शास्त्रके अभ्यासी तथा अधिक प्रेमरसमें डूबे हुए हरिजन होते हैं। उनके संगसे हमें बहुत लाभ होता है। दूसरे जो भक्त ईश्वरकी सेवा तथा उसका स्मरण करनेमें ही अपनी जिन्दगीका बड़ा भाग बिताये रहते हैं उनके सत्संगसे हमपर नया रंग चढ़ता है। इससे भी बहुत बड़ा लाभ होजाता है। इसके सिवा भक्तिमार्गकी अनेक प्रकारकी शंकाओंका मनमुताबिक समाधान हो जाता है। अकेले घरमें बैठे बैठे मन ही मन जो तर्क वितर्क उठा करते हैं उनसे वैसा समाधान नहीं हो सकता। इसलिये सत्संगमें जानेकी हरएक हरिजनको खास जरूरत है।

सत्संग कभी मोक्षके सुखोंका वर्णन करके जीवात्माको ईश्वरके निकट लेजाता है; कभी नरकके दुःखोंका वर्णन करके पापसे दूर रहना सिखाता है; कभी सत्संग यह समझाता है कि यह जगत क्षणभंगुर है और उसमें जो विषयके सुख हैं वे सब स्वप्न समान हैं। इसलिये ऐसे मोहमें न पड़े

रहना चाहिये यों कह कर विराग सिखाता है और कभी कभी ईश्वरकी महिमा तथा उसके अनन्त गुणोका वर्णन करके हममें प्रभुप्रेमका नया रंग लगाता है। ये सब बातें सत्संगमें जिस खूबसूरतीसे होती हैं उस खूबसूरतीसे वैसी असर करनेवाली रीतिपर और कहीं नहीं होसकतीं। ऐसा अनमोल लाभ लेनेके लिये हमें नियमपूर्वक सत्संगमें जाना चाहिये।

हमारे अन्तःकरणके अन्दर कितनेही पाप इस किस्मके होते हैं जिनकी हमें खबर नहीं होती। परन्तु सत्संगमण्डलीमें अनुभवी भक्त इस किस्मके पापोंका वर्णन करते है इससे हमें अपने दोषोंका पता लगजाता है। वहां उन दोषोको छोड़नेका उपाय भी बताया जाता है इससे इस किस्मके गुप्त पापोंको भी छोड़सकते हैं। दूसरे बहुत आदमियोंका स्वभाव ऐसा होता है कि वे हमेशा खराब खराब चिन्ताएं किया करते हैं और विना कारण हैरान हुआ करते हैं तथा व्यर्थको दुखी हुआ करते है। ऐसे कमजोर मनके आदमियोंको, ऐसे मोहवादियोको और ऐसे अज्ञानियोंको भी अपना अफसोस मिटानेका उपाय सत्संगसे मिल जाता है। सत्संगमें बार बार तरह तरहसे वहीकी वही बातें होती है। सत्संगका उद्देश्य ही यह होता है कि जैसे बने वैसे पापको त्यागना और प्रभुको अन्तःकरणमें पधराना। इन दोनों कामोंके लिये सत्संगमें अनेक प्रकारके उपाय बतायेजाते हैं। उनमें जो उपाय जिस आदमीको जंच जाता है उसे वह पकड़ लेता है। इससे कितनोको तुरत ही बहुत लाभ होजाता है और कितनोंको आगे जाकर लाभ होता है। इस प्रकार सत्संगसे लाभ ही हुआ करता है। इसलिये जिन भाई बहनोसे बने उनको जरूर सत्संगका लाभ लेना चाहिये।

इस दुनियामें अनेक प्रकारके दुःख हैं। इसके सिवा बहुत

आदमी जितना दुःख होता है उससे अधिक बढ़ा देते हैं। इस कारण सब आदमियोंको किसी न किसी तरहकी कठिनाई होती है। जैसे— किसीको धनका दुःख होता है, किसीको लड़कोंका दुःख होता है, किसीको बिमारीका दुःख होता है, किसीको रोजगार धंधेका दुःख होता है, किसीको स्त्रीका दुःख होता है, किसीको नौकरका दुःख होता है, किसीको मालिकका दुःख होता है, किसीको अफसरोंका दुःख होता है, किसीको बिरादरीका दुःख होता है, किसीको बड़प्पनका दुःख होता है, किसीको अभिमानका दुःख होता है, किसीको अज्ञानताका दुःख होता है, किसीको वहमका दुःख होता है, किसीको धर्मकी झंझटका दुःख होता है, किसीको शिष्योंका दुःख होता है, किसीको गुरुका दुःख होता है, किसीको पढ़नेका दुःख होता है और किसीको दुर्घटनाका दुःख होता है। ये सब दुःख, जब सत्संगमें भगवानका गुण गायाजाता है जब सच्ची भक्तिका आनन्द जमता है तब थोड़ी देर बिसर जाते हैं। इसके सिवा सत्संग-मण्डलीमें दुखियोंको ढारस मिलता है, डरेहुओंको हिम्मत मिलती है, भूलेहुओंको रास्ता मिलता है, थकेहुओंको विश्राम मिलता है, आलसियोंको उत्साह मिलता है, अज्ञानियोंको ज्ञान मिलता है और पापियोंको पाप छोड़नेका उपाय मिलता है तथा ग़रीबोंको दान मिलता है। इससे सत्संगके समय बहुत आदमी अनेक प्रकारके दुःख भूलजाते हैं। सत्संगमें ऐसी खूबी है। इसलिये हरएक आदमीको जैसे बने वैसे सत्संगका लाभ लेनेकी कोशिश करना चाहिये। सत्संगका लाभ लेनेके लिये मनसूबा बांधना चाहिये और इसके लिये अपने अनुकूल नियम रखना चाहिये। ऊपर ऊपरसे या मनमौजी ढंगपर जो सत्संग होता है उसमें कुछ बहुत दम नहीं होता। जब नियमपूर्वक

सत्संग होता है तब उसमें विशेष आनन्द आता है और तब उसकी असली खूबी समझमें आती है। इसलिये हरएक हरि-जनको नियमपूर्वक सत्संगमें लगे रहना चाहिये।

७९—सत्संगसे लाभ। (२)

ईश्वरके विषयमें और ईश्वरके भक्तोंके विषयमें सत्संगमें जैसी चर्चा होती है वैसी और कहीं नहीं होती। जहां जहां अच्छा सत्संग होता है वहां भगवानके स्वरूप तथा भक्तके लक्षणोंपर विशेष प्रकाश डालाजाता है। भगवानकी महिमा और भक्तोंकी योग्यता सत्संगमें जिस खूबीसे समझायी जाती है उस खूबीसे और कहीं नहीं। दूसरे लोग पहलेके महान भक्तोंकी बड़े बड़े चमत्कारकी बातें किया करते हैं, परन्तु सत्सगमें यह समझायाजाता है कि ये सब चमत्कार किस नियमसे हुए। जो कोई कोई चमत्कार कहीं कहीं हालमें हुए हैं या होते हैं—उन सबकी चर्चा सत्संगमण्डलीमें होती है। इससे भक्तोंकी बड़ाई सम्बन्धी, भक्तोंके कर्तव्य सम्बन्धी, भक्तोंकी योग्यता सम्बन्धी, भक्तोंकी पवित्रता सम्बन्धी, भक्तोंकी सहनशीलता सम्बन्धी और भक्तोंपर बरसती हुई ईश्वरकी कृपा सम्बन्धी समाधान बहुत स्पष्ट होजाता है। इसके सिवा यह भी समझमे आता है कि बाहरके भक्त कैसे होते हैं और भीतरके भक्त कैसे होते हैं; एकाग्र भक्त कैसे होते हैं और केवल व्यवहारमें भक्त

कहलानेवाले, कैसे होते हैं तथा हृदयसे गले हुए भक्त कैसे होते हैं और भक्तिकी नयी बाढ़वाले भक्त कैसे होते हैं। इन सब बातोंका पता सत्संगमें मिलता है। इस प्रकार भक्तोंके सम्बन्धमें अनेक प्रकारका समाधान सत्संगमें होजाता है और सर्वशक्तिमान महान ईश्वरके स्वरूपके विषयमें भी बहुतसी जानने योग्य बातें सत्संगसे मालूम होती हैं और यह सब जान लेनेकी विशेष जरूरत है। भिन्न भिन्न मनुष्य ईश्वरके स्वरूपके सम्बन्धमें जुदी जुदी कल्पना किया करते हैं, भिन्न भिन्न सम्प्रदायवाले ईश्वरके स्वरूपके सम्बन्धमें, अन्धोंके हाथी देखनेके समान, जुदी जुदी बातें कहते हैं। यह सब सुन कर तथा एक दूसरेसे विरुद्ध बातें जान कर बहुतेरे जिज्ञासु हरिजन मन ही मन हैरान हुआ करते हैं और किसी साधु ब्राह्मणसे पूछते हैं तोभी सन्तोषदायक समाधान नहीं होता। परन्तु ऐसे आदमी जब सत्संगमें जाते हैं तब ईश्वर सम्बन्धी बहुतसी जानने योग्य बातें जानलेते हैं। इससे उनके मनका समाधान होजाता है, ईश्वरके स्वरूपके सम्बन्धमें उनके मनमें जो झूठी कल्पनाएं हुआ करती हैं वे निकल जाती हैं और ईश्वरका असली स्वरूप समझमें आता है। इससे विश्वासका बल बढ़ता है, धर्मका बल बढ़ता है, भविष्य मोक्षकी आशाका बल बढ़ता है और भक्तोंके चरित्र जाननेसे अपना लक्षण सुधारनेका बल बढ़ता है। इससे जिन्दगी सुधरती जाती है और आगे जा कर सच्चे भक्त होसकते हैं। याद रहे कि यह सब सत्संगसे होता है। इसलिये सत्संग करना बहुत बड़ी बात है, बहुत जरूरी बात है और बड़ी खूबीकी बात है। इसलिये भाइयो! सत्संगमें पक्के रहना। सत्संगको छोड़ मत देना, यही हमारी सलाह है।

सत्संगसे किसी आदमीको भीतरके पापके सम्बन्धमें समाधान होजाता है, किसी आदमीको स्वर्ग नरक सम्बन्धी खुलासा होजाता है, किसी आदमीको संसारकी झुठाईके सम्बन्धमें जानने योग्य बातें मालूम हो जाती हैं; किसी आदमीको तीर्थ-दानका माहात्म्य मालूम होजाता है; जीवनका उद्देश्य किसी आदमीकी समझमें आजाता है; किसी आदमीकी समझमें यह आजाता है कि मायाका स्वरूप कैसा है; किसी आदमीको अपने हृदयके विकारोंको दूर करनेकी कुंजियां मिल-जाती है; किसी आदमीको दूसरोंका अपराध क्षमा करना आजाता है; किसी आदमीको गम खाना आजाता है; किसी आदमीको नये नये भजन कीर्त्तन आजाते हैं; कोई आदमी किसी किसी प्रकारके उपयोगी नियम लेलेता है; कोई आदमी अपने धनका अच्छा उपयोग करना सीखजाता है; कोई आदमी अपनी स्थितिमें सन्तोष रखना सीखजाता है; कोई आदमी अज्ञानी मनुष्योंको समझानेकी युक्तियां सीखलेता है; कोई आदमी प्रभुप्रेमको पकड़ लेता है; कोई आदमी ढीला हो तो उत्साही बनजाता है, कोई आदमी वहमी हो तो उसका वहम दूर होजाता है; कोई आदमी नास्तिक हो तो उसकी नास्तिकता जाती रहती है; कोई आदमी मौतसे बहुत डरता हो तो उसका मौतका डर भागजाता है; कोई आदमी बाहरी भक्तिमें रहगया हो तो उसे भीतरकी भक्ति करना आजाता है; कोई आदमी झूठी सेवामें पड़ा हो तो उसे सच्ची सेवा करना आजाता है; कोई आदमी आलसी हो तो वह उद्योगी बन जाता है; कोई छोटे छोटे प्रपंचोंमें पड़ा रहता हो तो वह इसकी आदत छोड़ कर धर्म सम्बन्धी विषयोंमें अपने मनको लगाने लगता है; कोइ आदमी मन माना भोग विलास करता हो तो अंकुशमें

आजाता है तथा इन्द्रियनिग्रह करने लगता है और कोई आदमी ईश्वर सम्बन्धी कुछ भी न जानता हो तो वह भी सत्संगसे ईश्वरका महान भक्त बनजाता है। इस प्रकार सत्संगसे किसी आदमीको इस किस्मका समाधान होजाता है, किसी आदमीकी समझमें कोई बात आजाती है; किसी आदमीको किसी विषयमें हारस मिलजाता है; किसी आदमीको भक्तिका आनन्द मिलजाता है; किसी आदमीको हृदयकी पवित्रता मिलजाती है और किसी आदमीको हृदयकी शान्ति मिलजाती है। इस तरह सत्संगसे हरएक हरिजनको कुछ न कुछ मिला करता है। इसलिये सत्संग करना बहुत अच्छी बात है। सत्संग जिन्दगी सुधारने की चाभी है। सत्संगमें लगे रहिये। सत्संगमें लगे रहिये।

८०—सत्संगसे लाभ। (४)

हम इस जगतमें किसलिये जन्मे हैं, जीवनका उद्देश्य क्या है और आजके जमानेमें हमें क्या क्या काम करलेना चाहिये इन सब विषयोंका खुलासा सत्संगमें होजाता है। इसके सिवा इस बातका निश्चय भी सत्संगमें होता है कि जुदे जुदे स्वभावके मनुष्योंसे कैसा बर्ताव करना और उनसे कैसे निबाह लेजाना चाहिये। हम जानते हैं कि हमसे काम पड़नेवाले आदमियोंमें कोई बड़ा क्रोधी होता है, कोई बहुत

लोभी होता है, कोई बड़ा अनदेखना होता है, कोई बड़ा अभिमानी होता है, कोई बड़ा विषयी होता है, कोई बड़ा बातूनी होता है, कोई बड़ा निन्दक होता है, कोई बड़ा झगड़ालू होता है, कोई बड़ा हठीला होता है, कोई झगड़ा मोल लेनेवाला होता है, कोई दूसरोंको लड़ादेनेवाला होता है, कोई बहुत कम बोलता है, कोई बड़ा धूर्त होता है, कोई बड़ा मीसन होता है, कोई बड़ा बढबोला होता है, कोई आदमी बड़ा मसखरा होता है, कोई आदमी किसी किसी बातका बड़ा शौकीन होता है, कोई बड़ा कड़ाऊ होता है, कोई बड़ा वहमी होता है, कोई आदमी धर्मके नाम भड़क उठता है, कोई आदमी बड़ा सखीमिजाज होता है, कोई आदमी खुशामदी होता है, कोई आदमी दूसरोंपर हुकूमत चलानेकी टेववाला होता है, कोई डरपोक होता है, कोई मारपीट करनेवाला, जोशीला होता है और कोई अफीमची या शराबी या गंजेड़ी होता है। इन सब मनुष्योंके साथ निबाह लेजानेका ढङ्ग सत्संगसे मालूम होता है। ऐसे आदमियोंसे काम पड़नेपर कलह न करने और सबसे चला लेजाने तथा ऐसोंको भी प्रसन्न रखनेकी बात समझ लेनेकी जरूरत है। ये सब विषय घरमें बैठे रहनेसे नहीं आते बल्कि बारंबार सत्संगमें जानेसे इन सबका समाधान होसकता है। इसलिये सदा सत्संगमें जानेकी आदत डालना चाहिये।

मनका स्वभाव ऐसा है कि वह छोटे छोटे विचारोंमें भटका करता है। इस तरह भटकते हुए अपने मनको कैसे रोकें तथा किस किस्मके विचारोंमें लगावें यह सत्संगमें सीखसकते हैं। मनको भटकनेसे रोकनेके बहुतसे उपाय हैं। जैसे—जप करनेसे मन रुकसकता है, ध्यान धरनेसे मन रुकसकता है; किसी-प्रकारकी ऊंची भावनाओंमें लगजानेसे मन भटकनेसे रुक-

सकता है; ज्ञानके बलसे मन रुक सकता है ; प्रभुप्रेमके बलसे मन वशमें रहसकता है; योगविद्याकी प्राणायाम आदि क्रियाओंसे मन वशमें रहसकता है ; परमार्थके काममें लगे रहनेसे मन काबूमें रहसकता है ; वैराग्यके विचारसे मन रुकसकता है और प्रभुके साथ एकाकार होजाने तथा भगवत् इच्छाके अनुसार चलनेसे मन वशमें रहसकता है। इस प्रकार मनको रोकनेके घनेरों उपाय हैं। भिन्न भिन्न उपाय भिन्न भिन्न भक्तोंको मिल-जाते हैं; इससे वे अपने मनको वशमें रखना सीखजाते हैं। जिनका मन वशमें आजाता है उन्हें भक्तिमें आगे बढ़ते बहुत देर नहीं लगती। वे बड़ी आसानीसे प्रभुके रास्तेमें आगे बढ़-सकते हैं। जो भक्त भगवानके रास्तेमें आगे बढ़जाते हैं उनके सुखका वर्णन नहीं होसकता। यह सब सत्संगसे होता है। इसलिये सत्संग बहुत बड़ी बात है और चाह कर इससे लाभ लेना चाहिये। जिससे बने वह सत्संगका लाभ लेनेसे न चूके। यह हमारी सलाह है।

बन्धुओ! सत्संगका लाभ कितना बतावें? इस विषयमें जितनाही अधिक विचार करते हैं उतनाही सत्संगका नया लाभ मालूम होताजाता है। जैसे—सत्संगमें यह बात भी खास कर सीखनेमें आती है कि जगतके बहुत जीवोंमें एकही ईश्वर है; अन्तर्यामी रूपसे तथा व्यापक रूपसे परमकृपालु परमात्मा हर प्राणीके अन्दर है; इसलिये किसी जीवको दुःख न देना चाहिये। इसका जैसा खुलासा सत्संगमें होता है वैसा और कहीं नहीं। इसके सिवा बहुत आदमियोंका स्वभाव ऐसा होता है कि वे दूसरोंकी पंचायत किया करते हैं। परन्तु सत्संगमें आनेसे समझमें आसकता है कि हम दूसरोंका दोष देखने क्यों जायें? जिस बातसे हमारा कुछ भी सरोकार नहीं है उस बातमें हम क्यों

सिर खपावें ? जगतमें देखने योग्य, जानने योग्य समझने योग्य और अनुभव करने योग्य दूसरे विषय क्या कम हैं कि दूसरोंकी पंचायतमें पड़े रहें ? ऐसा असरदार खुलासा होजानेसे इस किस्मका बोझ भी हलका होजाता है। इसके सिवा सत्संगसे एक और लाभ होता है। ईश्वरकृपासे बहुत आदमियोंको धन मिला है, बहुत आदमियोंको शरीरका बल मिला है, बहुत आदमियोंको राज्याधिकार मिला है, बहुत आदमियोंमें खास खास गुण होते हैं; बहुत आदमियोंमें कुछ कुछ चमत्कार दिखानेकी शक्ति होती है और बहुत आदमियोंमें बुद्धिका बहुत बल होता है। परन्तु अपनेमें जिस प्रकारकी शक्ति है उससे आप लाभ लेना तथा उसका लाभ दूसरे भाई बहनोंको देना बहुत आदमियोंको नहीं आता। इससे वे अपने सुखका, अपने सुभीतेका तथा अपनी शक्तिका जैसा चाहिये वैसा लाभ नहीं लेसकते। सत्संगमें आनेसे उनकी समझमें आजाता है कि ये सब ईश्वरकृपासे मिली हुई शक्तियां खोने लायक नहीं हैं, इनसे अपना जीवन सार्थक करलेना चाहिये। यह समझ आनेके बाद उन सब शक्तियोंको लोगोंके कल्याणके काममें लगानेकी कुंजियां भी सत्संगमें मिलजाती हैं। इससे उनको बहुत फ़ायदा होता है। इसलिये सब भाई बहनोंको ऊंचे दरजेके सत्संगमें शामिल होना चाहिये। क्योंकि सत्संग स्वर्गकी सीढ़ी है और सत्संग प्रभुको प्रिय है।

बीमारी और मृत्यु मनुष्यजातिके लिये दो बहुत बड़ी आफतें हैं। कोई आदमी इनसे बच नहीं सकता। परन्तु बहुत आदमी नहीं समझते कि उस समय कैसे धीरज धरें और किस रीतिसे काम लें। इससे दोनों विषयोंमें वे बहुत दुखी होते हैं। सत्संगमें जानेपर वहांकी बातचीतसे सीखसकते हैं कि मृत्युका

अफसोस न करना चाहिये । क्योंकि मृत्यु कुदरती है, यह किसीके रोके नहीं रुकसकती, सृष्टिके उत्पन्नकर्ता ब्रह्मा तथा देवता और स्वर्गके राजा इन्द्रको भी कालके अधीन होना पड़ता है । तब कालके गालमें पड़े हुए हम मनुष्य किस हिसाबमें हैं । भगवानके अवतारोंको भी अपने असली स्वरूपमें समाजाना पड़ता है, अमर गिनेजानेवाले स्वर्गके देवताओंको भी गिरना पड़ता है और हजारों वर्षकी लम्बी आयुवाले ऋषि मुनियोंको भी मरना पड़ा है । तब हमारी क्या बिसात है ? इसलिये मौतके समय धीरज रखना चाहिये । दूसरे, आत्मा अमर है, वह मरती नहीं, इसलिये मौतका अफसोस न करना चाहिये । ऐसी ऐसी बातें सत्संगमें असरदार रीतिसे समझायी जाती हैं । इससे ऐसे समय ढारस धरना तथा मजबूती रखना आता है । इसी तरह सत्संगमें बीमारीके विषयमें भी बहुत समाधान बहुत हरिजन किया करते हैं और यह विश्वास दिला देते हैं कि कितनीही बार बीमारीसे भी कितनेही आदमी पापसे बच सकते हैं, बीमारीके कारण भी बहुत आदमियोंकी देहका अभिमान दूर होजाता है; बीमारीके कारण भी बहुत आदमी अच्छी रुचिवाले बनजाते हैं और बीमारीके कारण भी बहुत आदमी धर्मके मार्गमें आजाते हैं । इस तरह बीमारीसे भी बहुत फायदे होजाते हैं । ये सब बातें घरमें बैठे रहनेसे नहीं होतीं, सदा सत्संगमें जाते रहनेसे ही होती है । सब बातोंका मनमुआफिक समाधान होता है । इससे हृदयमें भक्ति ठहरती है, प्रभुप्रेम बढ़ता है और जिन्दगी सुधरतीजाती है । इसलिये सत्संगकी बलिहारी है और उसका जितना बखान करें सब थोड़ा है ।

सच्चे सत्संगमें किसीका समय व्यर्थ नहीं जाता । इसके लिये महात्मा लोग कहते हैं कि ईश्वरके पास पंहुचा हुआ

कोई भक्त कभी खाली हाथ पीछे नहीं लौटता। सबको उनकी योग्यता और भावनाके अनुसार दयालु ईश्वरकी ओरसे कुछ न कुछ मिलता ही है। वैसेही सच्चे सत्संगमें जो आदमी जाते हैं उनको भी कुछ न कुछ लाभ हुए विना नहीं रहता; जाने बेजाने प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष कुछ न कुछ लाभ हुआ ही करता है। यह लाभ लेनेके लिये सत्संगमें लगे रहिये। यही हमारा सिखावन है।

८१-सत्संगसे लाभ (५)

सत्संगसे इतना बड़ा लाभ होता है परन्तु यह सब उन्हींको मिलता है जो मनुष्य सदा सत्संगमें जाते हैं। जो आदमी सत्संगमें किसी दिन जाता है और किसी दिन नहीं जाता या जो पहले वर्ष छ महीने या दो चार वर्ष सत्संग करता है और फिर वर्षों छोड़ देता है उसको इतना अधिक लाभ नहीं होता। इसलिये अगर सत्संगका पूरा पूरा लाभ लेना हो और पूरा पूरा आनन्द लेना हो तो सदा नियमपूर्वक सत्संगमें रहना चाहिये। थोड़ी देर भी सत्संग छोड़देनेसे उसके फल और आनन्दमें बहुत फर्क पड़जाता है। यह बात ठीक तौरपर समझानेके लिये एक भक्तराज महाराज कहते थे कि जो फल पेड़से लगा रहता है वह बड़ा होता है और समय आनेपर पक कर मीठा होजाता है। परन्तु जो फल टूट कर नीचे गिर जाता है वह पकनेके बदले सड़जाता है। वैसेही जो आदमी सत्संगमें पड़ा रहता है उसीको असली लाभ होता है; परन्तु जो आदमी कुछ समय सत्संगमें जा कर पीछे उससे अलग हो-जाता है उसको असली लाभ नहीं मिलता। ऐसे आदमी कच्चे फलके समान हैं अर्थात् ज्ञानमें, अनुभवमें, भक्तिमें और प्रभुप्रेममें अपक्व हैं इससे उनको सत्संगका असली मजा नहीं मिलता। सत्संगका सच्चा आनन्द लेना हो और उसका महान फल चखना हो तो सत्संगसे बिछुड़ मत जाना बल्कि जैसे बने वैसे सदा सत्संगमें लगे रहना। तब उसका फल पके बिना नहीं रहेगा। आम, अंगूर, केला, जामुन आदि फल भी जब खूब पके रहते हैं तब उनमें बहुत मिठास आती है। फिर सत्संगका फल पकनेपर कितना कुछ न आनन्द आवेगा, जरा

विचार तो कीजिये। सत्संगका ऐसा परिपक्व आनन्द लेनेके लिये सदा सत्संगमें लगे रहना। सदा सत्संगमें लगे रहना।

किसी पौधेको गमलेमें रख कर बहुत दिनोंतक पानीसे सींचा हो और पीछे बहुत दिनोंतक न सींचें तो वह पौधा पहले कुम्हलाता है सूखने लगता है और अन्तको ठकठजाता है। वैसे ही हम भी अगर महीनों या वर्षों सत्संग करके फिर छोड़दें तो हमारा जीव प्रभुप्रेमसे हीन होजाता है, सूखने लगता है और उसपर सत्संगकी खुमारीके बदले व्यवहारके जंजालका अफसोस छाजाता है। मनका स्वभाव ही ऐसा है कि बहुत दिनोंतक सत्संग किये रहनेपर भी जब वह उससे छूटजाता है तब कमजोर होजाता है। मनमें ऐसी निर्बलता न आनेदेने और प्रभुप्रेमका आनन्द घटने न देनेके लिये सदा सत्संगमें पड़े रहना चाहिये।

जैसे मछलियां पानी बिना नहीं रहसकतीं वैसे सच्चे हरिजन सत्संग बिना नहीं रहसकते। मछलियां पानीके बाहर निकाल दीजायं तो वे बहुत छटपटाती हैं। वैसे सच्चे भक्तोंको सत्संगसे दूर रहना पड़े तो उनका जीव तड़पने लगता है। जब सत्संगका ऐसा नशा चढ़जाय तभी सत्संगका महान लाभ तथा अलौकिक आनन्द मिलसकता है। इसलिये ऐसा न हो कि थोड़े दिन सत्संगमें जायं और थोड़े दिन न जायं वरंच सत्संगका सच्चा आनन्द लेना हो तो सत्संगका नशेबाज होजाना। यही हमारी सलाह है।

हम वर्षोंसे सदा खाते पीते रहते हैं तोभी कुछदिन न खायं तो शरीरसे दुर्बल होजाते हैं, शरीरकी रचना ऐसी है कि उसे हर रोज नियमसे खाने पीनेको मिले तभी वह अच्छी हालतमें रहसकता है। अगर कोई आदमी यह सोचे कि मैं बहुत दिनोंसे खाता आया हूं अब खानेकी क्या जरूरत है तो यह ठीक नहीं। अगर वह हठ करके खाना पीना बन्द कर दे तो पहले

दुबलाता है, पीछे बीमार पड़ता है और अन्तको, अन्न पानी छोड़नेसे, मर जाता है। याद रखना कि मनका स्वभाव भी ऐसाही है। उसको सदा अच्छी संगतमें रखनेकी जरूरत है। वह इस तरह सत्संगमें रखाजाय तभी सुधर सकता है तथा पवित्र रह सकता है। इसके बदले अगर कोई आदमी यह सोचे कि हम बर्षों सत्संग कर चुके है इसलिये अब उसकी क्या जरूरत है और यह सोच कर सत्संगसे हटजाय तो उसका मन संसारी बनजाता है और फिर दिनदिन मायाका मोह बढ़ताजाता है। इससे जीव नीचेको गिरता जाता है। ऐसा न होनेदेनेके लिये सदा सत्संगमें जाना चाहिये और खास कर यही समझना चाहिये कि हमें जैसे सदा खाने पीनेकी जरूरत है वैसे सदा सत्संगकी जरूरत है। इसलिये छिटपुट सत्संग मत करना वरंच लगातार सत्संग करना। यही हमारी विनती है।

जो हरिजन सदा सत्संग करते है और सत्संगके लिये जिन्हें हृदयसे छटपटी रहती है उनको सत्संग करनेके कुछ मुख्य मुख्य नियम जानलेना चाहिये। यह नियम समझानेके लिये एक संत अपने सत्संगियोसे कहते थे कि बन्धुओ! सत्संग करनेके लिये जब तुम अपने घरसे निकलो तब रास्तेमें प्रभुका नाम स्मरण करते करते जाना। इससे प्रभुसे मिलाप होनेकी अधिक सम्भावना है। जब सत्संगसे घरको लौटना तब भी रास्तेमें प्रभुका नाम स्मरण करते जाना। ऐसा करनेसे तुम्हारे हृदयमें प्रभुका वास रहेगा। इस बातको भूल कर मन्दिरमें या सत्संगमें जाते या आते समय अगर पराया पचड़ा गाते रहोगे और किसीका दोष देखा करोगे तो ये सब दुनियादारीकी छोटी छोटी बातें तुम्हारे हृदयमें घुस जायंगी और ईश्वर उसमेंसे निकल जायगा। ऐसा न होनेदेनेके लिये हर एक हरिजनको यह बात याद

रखना चाहिये और सत्संगमें जाते या वहांसे लौटते समय प्रभुका नाम स्मरण करना चाहिये। ऐसा करनेसे सत्संगकी सफलता होती है। इसलिये विधिपूर्वक सत्संग करो। विधिपूर्वक सत्संग करो।

जो सच्चे वैष्णव हैं वे सत्संगकी असली महिमा जानते हैं। इससे वे अपने कुटुम्बियोंके साथ बैठ कर सत्संग करते हैं, मन्दिरोंमें सत्संग करते हैं और गुरुओं तथा हरिजनोंसे मिल कर भी सत्संगकी ही बातें किया करते हैं। कितने साधु सांझको इकट्ठे हो कर मन्दिरोंमें आरती करते हैं और उस समय बहुतेरे भजन गाते हैं। यह भी एक प्रकारका सत्संग है। इस तरह बहुत जगह छोटा बड़ा सत्संग हुआ करता है। और इसकी बहुत जरूरत है। सत्संग जिन्दगी सुधारनेकी चाभी है। इसलिये सत्संग जितना बढ़े लोगोंका उतनाही कल्याण है। इस विषयपर हम बहुत जोर देते हैं और चाहते हैं कि बहुत आदमी सत्संगकी खूबी समझें। आशा रखते हैं कि ईश्वरकृपासे इसका उचित लाभ लिया जायगा।

बन्धुओ! सत्संगके प्रभावके विषयमें विश्वामित्र तथा वसिष्ठजीका संवाद बहुत प्रसिद्ध है; उस लम्बी कथाको यहां कहनेकी जरूरत नहीं है परन्तु यहां वह बात याद कराके इतनाही जताना चाहते हैं कि सत्संगके बल और आनन्दकी हम जो जो बातें कहते हैं वे नयी नहीं हैं, वरंच सत्संगकी खूबी बहुत पुराने जमानेसे चली जाती है और जबतक दुनिया बनी रहेगी तबतक सत्संगकी महिमाका बखान हुआ ही करेगा। सत्संगका प्रभाव ही ऐसा है कि कोई हरिजन उसका बखान किये बिना नहीं रहसकता। स्वभावतः उसकी महिमा मुंहसे निकल पड़ती है, सत्संगमें ऐसा बल है। इसलिये सत्संगमें लगे रहिये।

सत्संगमें लगे रहिये।

सत्संगकी खूबीकी ये सब बातें कहनेके बाद सत्संग करानेवाले संतोंसे विनती है कि हम अगर मक्खीको बुलावें कि मक्खी बीबी यहां आओ, यहां आओ तो वह नहीं आवेगी। चींटीको बड़े आदरसे कहें कि चींटी देवी, चींटी देवी, यहां पधारनेकी कृपा करो तो ऐसा कहनेसे भी चींटी नहीं आती। परन्तु जरा चीनी मधु गिरादें तो चींटियां और मक्खियां तुरत आपही दौड़ आती हैं।

वैसेही सत्संग करानेवाले गुरु या भक्त साधारण लोगोंसे कहें कि भाइयो! आप यहां पधारनेकी कृपा करें तो रोज रोज बहुत आदमी नहीं आते। परन्तु भक्तोंमें मिठास हो अर्थात् तत्त्व हो, माल हो, प्रभुप्रेम हो, सत्य हो और समयके अनुसार ज्ञान देना आता हो तो आपसे आप सैकड़ों आदमी चले आते हैं। इस तरह लोगोंको खींचना हो तो सत्संग करानेवाले गुरुओंको स्वयं मालवाला, मिठासवाला और पवित्रतावला होना चाहिये। यह सब हो तभी सत्संग टिकसकता है और तभी सत्संग बढ़सकता है। सो सत्संग करानेवाले सज्जनोंको मिठासवाला, प्रभुप्रेमवाला और इर्दगिर्दका ज्ञान लेनेवाला होनेकी कोशिश करना चाहिये। ऐसा करनेसे ही सत्संग टिकसकता है और तभी उससे सच्चा लाभ मिलसकता है।

८२-बहुत आदमी परमार्थको बड़ा समझते हैं और बहुत आदमी भजनको बड़ा समझते हैं। इस विषयमें सन्तोंके विचार।

इस संसारमें जितने भक्त हैं उन सबके मुख्य दो विभाग होसकते हैं। एक परमार्थी भक्त और दूसरे भजनानन्दी भक्त। परमार्थी भक्त कहते हैं कि हमारी जिन्दगी परमार्थके लिये ही है। हम दूसरोंके किये हुए शुभ कामोंसे लाभ उठाते हैं इसलिये हमें भी कुछ शुभ काम करना चाहिये। जैसे—हम किसीके खुदवाये हुए तालावका पानी पीते हैं, किसीके बोये हुए पेड़का फल खाते हैं, किसीके बनाये मकानमें रहते हैं, किसीके पाले हुए पशुसे काम लेते हैं, किसीके बनाये रास्ते पर चलते हैं, किसीकी रची पुस्तकसे लाभ उठाते हैं, किसीकी चलायी गाड़ियोंमें हम सवार होते हैं, किसीके लगाये बगीचेमें हम टहलने जाते हैं, किसीका कीना हुआ बाजा हम सुनते हैं। इस प्रकार कितनीही बातोंमें दूसरोंकी बनायी बहुत बहुत चीजोंसे हम फायदा उठाते हैं, इसलिये हमें भी दूसरोंके लिये जहांतक बने भलाईके काम करने चाहियें।

इसके सिवा परमार्थी भक्त यह कहते हैं कि भजन करनेमें जो आनन्द मिलता है वह अकेले अपनेको मिलता है परन्तु परमार्थके काम करनेमें कई तरहका कष्ट सहना पड़ता है। प्रभुकी खातिर अपना आनन्द छोड़देना और दूसरेके दुःखमें हिस्सा लेना बहुत बड़ी बात है, इससे परमार्थीका मूल्य कहीं अधिक है। यह समझ कर हम भजनसे परमार्थको बड़ा मानते हैं और ऐसे कामोंमें लगे रहना चाहते हैं।

परमार्थी भक्त जहां ऐसा कहते हैं वहां भजनानन्दी भक्त

यह कहते हैं कि परमार्थ ऊंची बात है इसमें कुछ सन्देह नहीं। परन्तु परमार्थका काम करनेसे पहले उसकी योग्यता हममें आनी चाहिये। याद रखना कि पहले बिना खूब भजन किये परमार्थके काम करनेकी योग्यता मनुष्यमें नहीं आसकती। जितने प्रकारके महान सद्गुण है वे सब परमकृपालु परमात्मासे आते हैं। इसलिये जबतक प्रभुसे सब लेना हमें न आवे तब-तक हम दूसरोंके ठीक ठीक उपयोगी नहीं होसकते। जिसके पास कुछ होता है वह दूसरोंको देसकता है। परन्तु जिसके पास कुछ भी नहीं है वह दूसरोंको क्या देसकता है ? जैसे कुएमें ही पानी न हो तो डोलमें कहांसे आसकता है ? इसलिये परमार्थ करनेसे पहले अपने अन्दरके सद्गुणोंको विक-सित करना चाहिये ; अपनी योग्यता बढ़ाना चाहिये और कभी न घटनेवाले परमानन्दके पूर्ण तत्वसे, वैसे अटूट झरनेसे परमार्थका बीज लेना सीखना चाहिये। तभी वह परमार्थ अन्ततक टिकसकता है और वह अच्छेसे अच्छा फल देसकता है। जब-तक भजन करके परमकृपालु परमात्मासे सद्गुण तथा योग्यता न प्राप्त करलें तबतक महान परमार्थ नहीं होसकता। छोटे छोटे परमार्थके काम होते भी हैं तो वे अन्ततक नहीं टिकसकते और वे काम भी बेरसके होते है। ऐसे कामोंसे दुनियाको कुछ बहुत लाभ नहीं होता। इसलिये भजन द्वारा परमकृपालु परमात्मासे अनेक प्रकारके सद्गुणोंका खूब आकर्षण करके पीछे परमार्थके कामोंमें लगना चाहिये। परमार्थके काम करनेसे पहले यह बात भी याद रखना चाहिये कि परमकृपालु परमात्माके लिये जो परमार्थ होता है उसीकी कीमत है। जो परमार्थ अपने मतलबके लिये होता है, लोकलाजसे होता है, मान मर्यादाके लिये होता है, देखादेखी होता है, किसीके दबाव या लिफा-

रिशसे होता है या ऐसेही किसी दूसरे व्यवहारके कारण होता है उस परमार्थकी कीमत सच्चे भक्तोंके सामने या ईश्वरके दरबारमें कुछ बहुत नहीं है। सारांश यह कि जैसे दो पांख बिना पंछी नहीं उड़सकता और जैसे दो पहिये बिना गाड़ी नहीं चलसकती, वैसे भजन और परमार्थ इन दो अंगोंके बिना भक्ति फलीभूत नहीं होसकती इसलिये इन दोनो अंगोंकी आवश्यकता है। ऊंचे दरजेके महान भक्तोंमें ये दोनों अंग होते हैं। कितनेही भक्त ऐसे भी होते है जिनमें कोई एकही मुख्य अंग होता है। अर्थात् किसी भक्तमें परमार्थका अंग मुख्य होता है और किसी भक्तमें भजनका अंग मुख्य होता है। इसलिये स्वाभाविक तौरपर जिसमें जो अंग मुख्य हो उसको उसीके अनुसार चलना अच्छा है।

८३—हर मनुष्यको अपनी अवस्था देख कर धर्म करना चाहिये।

जगतमें परोपकार और दयाके अनेक काम है और वे सब धर्मके काम हैं इसमें कुछ भी सन्देह नहीं है। परन्तु कितनेही परमार्थके काम बहुत अच्छे होनेपर भी सब आदमियोसे नहीं होसकते। इसलिये धर्मका कोई काम करनेसे पहले यह विचारना चाहिये कि अभी प्रभु हमसे किस प्रकारका काम कराना चाहता है और किस प्रकारका काम नहीं कराना चाहता। इसकी खूब समझ होनी चाहिये। परन्तु अफसोस है कि यह समझ बहुत आदमियोंको ठीक ठीक नहीं होती। ऐसे आदमियोके धर्ममें बहुत गड़बड़ होजाती है। ऐसा

न होनेदेनेके लिये हरएक आदमीको खास करके विचार करना चाहिये कि हमारा धर्म क्या है और इस समय हमें क्या करना चाहिये। किसी स्त्रीके छोटे छोटे बच्चे हों और वह उन लड़कोंको ठीक ठीक न सम्हाले आप मन्दिरमें दर्शन करने जाया करे और लड़के पीछेसे रोया करें तथा ऊधम मचाया करें तो कहा जायगा कि उस स्त्रीने अपनी स्थितिका धर्म नहीं पाला। यद्यपि दर्शन करना बहुत अच्छी बात है इसलिये वह स्त्री श्रद्धावाली वैष्णव या शैव कही जासकती है परन्तु उसको निर्दोष बालकोंकी नेक माता होनेकी इज्जत नहीं मिलसकती। क्योंकि माताका जो कर्त्तव्य है उसे वह ठीक ठीक नहीं करती है। अपनी अवस्थाका धर्म न समझनेसे इसी प्रकारकी गड़बड़ होती है तथा आदमी धर्मके एक ही अंगमें रहजाता है। ऐसा न होनेदेनेके लिये हर मनुष्यको अपनी अवस्थाका धर्म जानलेना चाहिये।

कोई आदमी बालबच्चोंवाला होकर भी घर गृहस्थीके काममें मन न लगावे और बड़ी बड़ी मालाएं पहने लम्बा तिलक लगाये मन्दिरोंमें फिराकरे तथा अपनेको भक्त कहलवाया करे तो यह देखकर कितने आदमी उसे अच्छा भक्त समझते है परन्तु वह न तो प्रेमी कहलाता है और न योग्य पिता। क्योंकि वह भक्तिके कुछ बाहरी साधनोंको करता है परन्तु अपनी स्थितिका धर्म नहीं समझता। इससे वह अपनी स्त्री और बच्चोंकी ओर लापरवाही दिखाता है। ऐसा करना उचित नहीं है और न पूरा धर्म-पालन है।

कोई आदमी किसी अमीरके यहां नौकर हो परन्तु परमार्थी कामके लिये चन्दा उगाहने तथा दूसरे आदमियोंकी मदद करनेमें लगारहे और मालिकके काममें ध्यान न दे, उसकी तलब खा कर

अपना वक्त दूसरे काममें बितावे तो वह आदमी परमार्थी कहलाता है परन्तु अच्छा नौकर नहीं कहलाता। क्योंकि वह अपने मालिककी तरफका कर्तव्य पालनेमें लापरवाही दिखाता है और उसे छोड़कर दूसरे काममें सिर लड़ाता है। ऐसा करना अपनी स्थितिका धर्म पालना नहीं कहलाता। अगर ऐसाही करना हो तो अपने मालिककी नौकरी छोड़देना चाहिये। नहीं तो ठीक ठीक ध्यान दे कर नौकरी करना चाहिये।

कुटुम्बमें मा बाप या अपने आसरे पड़ा हुआ दूसरा कोई बहुत नजदीकी बीमार हो और उसको छोड़ कर कोई आदमी तीर्थोंमें फिराकरे तो उसका यह काम ठीक नहीं कहलाता। क्योंकि तीर्थ करना अच्छी बात है और यह भी धर्मका काम है परन्तु सगे सम्बन्धियोंको बीमारीमें दुःख पाते छोड़ कर तीर्थमें भागजाना अच्छा नहीं। बहुत आदमी अपनी स्थितिका धर्म नहीं समझते, इससे इस किस्मकी भूलें किया करते हैं। ऐसी भूल न होनेदेनेके लिये अपनी स्थितिका धर्म समझलेना चाहिये, और इसका विचार करना चाहिये कि अभी प्रभु हमसे क्या काम कराना चाहता है।

बन्धुओ! आपको ये दृष्टान्त दे कर हम यह समझाना चाहते हैं कि इस जगतमें बहुत काम अच्छे हैं और बहुत काम परमार्थके हैं तथा उन कामोंको करनेके लिये शास्त्रमें कहा है और उन कामोंके करनेसे बहुत तरहके फायदे भी होते हैं परन्तु वे अच्छे काम भी अगर अपनी अवस्थाके अनुकूल न हों और न होसकें तो इसमें कुछ पाप नहीं है। इसलिये यह काम परमार्थका है, यह काम बहुत अच्छा है और यह काम करनेको शास्त्रमें कहा है इतनीही बातें देख कर उस काममें हाथ लगादेना। वरंच इस समय हमारी स्थिति कैसी है और प्रभु हमसे क्या कराना चाहता

है, इसका विचार करके अपनी हालतके मुताबिक धर्म करना चाहिये। ऐसा करनेपर बहुत अच्छी तरह धर्म किया जासकता है और थोड़ेमें भी प्रभु बहुत लाभ देदेता है। अपनी स्थितिसे बाहरका धर्म करने जायं तो वह धर्म अधूरा रहजाता है और उसमें क्लेश होता है। ऐसा न होनेदेनेके लिये हैसियतका धर्म करना सीखिये।

८४–अच्छे आदमियोंके पास भक्त होना कोई बड़ी बात नहीं है, खराब आदमियोंसे भक्तकी तरह बर्ताव करना ही खूबीकी बात है।

माला, तिलक और कंठी लगाने, नाचने, गाने और एकाध परमार्थका काम करदेनेसे व्यवहारमें जो मनुष्य भक्त कहलाया करते हैं उनमें और जो मनुष्य भगवद्धर्मके अनुसार काम करनेवाले और भगवानके अनन्य भक्त हैं उनमें बहुत अन्तर होता है। जो दिखाऊ भक्त होते हैं वे जगतके बाहरी फेरबदलको बरदाश्त नहीं करसकते। परन्तु जो अनन्य भक्त है, जो हृदयसे भक्त है और जो ईश्वरकी महिमा तथा इस जगतकी रचना समझे हुए भक्त हैं उनपर जगतके फेरबदलका बहुत असर नहीं होता। इससे वे बुरे संयोगोंमें भी तथा बुरे आदमियोंके साथ भी अच्छा बर्ताव करते हैं। यह बात समझानेके लिये एक भक्तराज महाराज कहते थे कि गुलाबका फूल अगर गंदी जगहमें उगा हो तो वहां भी सुगन्ध दिये विना नहीं रहता। वैसेही जो सच्चे हैं, जो भक्ति-

रसमें गलगये हैं और जो प्रभुप्रेममें शराबोर हैं वे किसी मौकेपर नहीं झीखते। इतनाही नहीं, जब खराब आदमियोंसे काम पड़ता है तब उनकी और कसौटी परीक्षा होती है और वे उस कसारी परीक्षामें हर वार पास होते हैं। परन्तु जो दिखाऊ भक्त है, जो नामके भक्त हैं और आडम्बरी भक्त हैं वे ऐसे मौकों-पर नहीं टिकसकते। अच्छे आदमियोंके पास ही वे भक्त रह-सकते हैं। जैसे, वे कर्मकाण्डी ब्राह्मणोंके सामने भक्त रहते हैं, मन्दिरोंमें तथा मन्दिरोंके पुजारियोंके सामने भक्त रहते हैं, दान देनेवाले अमीरोंके सामने भक्त रहते हैं, अच्छे अच्छे अफसरोंके सामने भक्त रहते हैं, कोई परदेशी भलामानस आजाय तो उसके सामने भक्त रहते हैं; प्रसिद्ध बड़े आदमीके सामने भक्त रहते हैं; तीर्थमें वहांके पण्डोंके सामने भक्त रहते हैं; अपने गुरु या दूसरे नामी पुरुषोंके सामने भक्त रहते हैं और जिसके साथ अपना मन मिलजाता है उस आदमीके सामने भक्त रहते हैं। परन्तु जो हृदयसे गले हुए भक्त हैं, जो ईश्वरके अनन्य भक्त हैं और जो भगवानकी महिमा तथा मनु-ष्यकी कमजोरी समझे हुए भक्त हैं वे अच्छे मनुष्योंसे सलूक रखनेके सिवा उद्दण्ड मनुष्योंके साथ भी भक्तके तौरपर वर्ताव करते हैं; निठल्ले आदमियोंसे भी भक्तके तौरपर वर्ताव करते हैं, कड़वा वचन बोलनेवाले तथा परायी निन्दा करनेवाले मनुष्योंसे भी भक्तके तौरपर वर्ताव करते हैं; चिड़चिड़े स्वभावके, क्रोधी और होश हवासके साथ बातचीत न करने-वाले लोगोंसे भी भक्तके तौरपर वर्ताव करते हैं; व्यभिचारी शराबी लुच्चे बदमाश झूठे आदमियोंके साथ भी भक्तके तौरपर वर्ताव करते हैं। अनदेखने, उड़ाऊ, लोभी कंगाल और सनकी आदमियोंके साथ भी वे भक्तके तौरपर वर्ताव करते हैं; बदनामी

फैलानेवाले, पोलंपोल चलानेवाले दूसरोंको ठगनेवाले, मार-पीट करनेवाले, हल्के दरजेकी सोहबतमें पड़े रहनेवाले बात बातमें भड़क कर आमका इमली करडालनेवाले आदमियोंसे भी वे भक्तका ही बर्ताव करते हैं। इस तरह खराब आदमियोंसे भी निबाह लेजाना उन्हें आता है और ऐसे आदमियोंके पास भी अपनी भक्तिको टिकाये रखना उन्हें आता है। उनकी भक्ति ऐसी जमी हुई और परिपक्व होती है। इससे वे ऊंचे भक्त गिने जाते हैं। परन्तु जो कच्चे भक्त होते हैं, जो अधूरे भक्त होते हैं और जो नाममात्रके भक्त होते हैं वे ऐसे आदमियोंके सामने अपनी भक्ति बनाये नहीं रखसकते। इसलिये समझलेना कि कहे जानेवाले भक्तोंमें और सच्चे भक्तोंमें बहुत अधिक अन्तर होता है। इसके सिवा यह भी समझ लेना कि अच्छे आदमि-योंके सामने भक्त रहना कोई बड़ी बात नहीं है बुरे प्रसङ्गोंपर तथा बुरे आदमियोंके साथ भक्त रहना और ऐसे समय भी अपनी भक्तिको साबित रखना ही बड़ी बात है। इसलिये खराब आदमियोंके साथ भी भक्तके तौरपर बर्ताव करनेवाले भक्त बनिये। ऐसा बनियें कि अपने दुश्मनोंके साथ भी भक्तका बर्ताव करसकें। तभी ईश्वरके समक्ष सच्चे भक्त गिने जासकेंगे।

८५–कितनी ही बार छोटे छोटे काम करनेसे प्रभु जितना प्रसन्न होता है उतना बड़े बड़े काम करनेसे भी नहीं होता। इसलिये प्रभुको प्रसन्न करनेकी कुंजी जानलेना चाहिये।

इस जगतमें बहुत आदमी धनवान हैं, बहुत आदमी विद्वान हैं, बहुत आदमी शूर वीर हैं, बहुत आदमी आविष्कारक वृत्तिके हैं, बहुत आदमी कविता बनाने तथा व्याख्यान देनेकी शक्तिवाले हैं, बहुत आदमी लोगोंको वशमें करनेकी शक्ति रखते हैं और बहुतेरे आदमियोंकी बहुत लोग धार्मिक दृष्टिसे प्रतिष्ठा किया करते हैं। ये सब आदमी अपनी अपनी लाइनमें और अपनी अपनी सीमामें समयके अनुसार और आसपासके संयोगोके अनुसार अच्छे अच्छे तथा बड़े बड़े काम किया करते है। जैसे, कोई अमीर धर्मशाला बनवाता है, सदावर्त चलाता है, मन्दिर उठवाता है, दवाखाना खोलता है, स्कूल चलाता है, या अनाथालयमें मदद करता है। बहुतेरे हाकिम नये नये कायदे बना कर प्रजाके जानोमालकी रक्षाका उपाय करते हैं। कोई कोई राजा तथा दीवान प्रजाका अज्ञान दूर करनेके लिये शिक्षा फैलानेका काम करते हैं। कोई कोई गुरु धर्मका उपदेश देते हैं और लोगोकी धर्मभावना जागृत रखनेके लिये बहुत चेष्टा करते हैं। कितनही विद्वान समयके अनुकूल विचारोंकी पुस्तकें रचते है तथा व्याख्यान देते हैं और तरह तरहकी उपयोगी सभाएं स्थापित करते हैं। कितनेही आविष्कारक अपने फायदे तथा लोगोके लाभके लिये नये नये आविष्कार करते हैं। कितनेही चतुर कारीगर शिल्प कलाकी नयी नयी हिकमतें लड़ाया करते हैं। इस प्रकार हर लाइनमें कुछ कुछ अच्छे काम

हुआ करते हैं। तोभी इन सब कामोंके करनेमें अक्सर ऐसा होता है कि—

कितने काम खास अपने मतलबके लिये ही कियेजाते हैं; कितने काम इज्जत पानेके लिये कियेजाते हैं; कितने काम देखादेखी कियेजाते है; कितने काम लाचारी दरजे किये जाते हैं; कितने काम दूसरोंको खुश रखनेके लिये कियेजाते हैं; कितने काम जाति बिरादरीके रिवाजके कारण कियेजाते हैं; कितने काम अभिमानके कारण तथा अपना बड़प्पन दिखानेके लिये किये जाते है; कितने काम शरमा शरमी कियेजाते हैं, कितने काम बापके किये हुए वसीयतनामेके कारण कियेजाते हैं; कितने काम खिताब लेनेके लिये कियेजाते हैं और कितने काम पैसा पाकर मौज शौक करनेके लिये किये जाते हैं। परन्तु खास प्रभुके लिये ही किये गये काम तो कोई ही कोई होते हैं। इन कारणोंसे जो काम होते हैं वे चाहे कितनेही बड़े हो परन्तु सर्वशक्तिमान् महान ईश्वरके दरबारमें उनकी कुछ बहुत कीमत नहीं होती। काम चाहे छोटा हो लेकिन समर्थ ईश्वरके लिये किया गया हो तो उसकी कीमत बहुत बढ़जाती है। जैसे—

लाचारी दरजे तालाब खुदवानेवाले सेठको जितना पुण्य होता है उससे अधिक पुण्य प्रभुके लिये पेड़में पानी सींचनेवाले गरीब किसानको कभी कभी होता है। मशहूर फंडमें अधिक चंदा देनेवाले अमीरोंको ईश्वरकी ओरसे जितना लाभ मिलता है उससे, गरीबोंको चिटुकीभर आटा देनेवाली बुढ़ियाको, बालकोंको बताशा या जरा जरा गुड़ देनेवाले भाबुक भक्तको और ऐन मौकेपर गरीबोंको धेला छदाम देनेवाले गरीब आदमीको अधिक फायदा होजाता है। कोई अमीर अपने नामके लिये पाठशाला खोले तो वह काम प्रभुको जितना पसन्द आता है

उससे अधिक पुण्य उस गरीबको होता है जो अपनी फटी पुरानी पुस्तकें दूसरे लायक गरीब विद्यार्थियोंको ईश्वरके लिये देता है। जो आदमी अभिमानसे या धन कमानेके लिये नयी नयी चीजें ईजाद करता है उसे जितना लाभ होता है उससे ज्यादा लाभ उस भक्तको होता है जो उस ईजादसे लाभ उठाते समय ईश्वरको याद करके उसका उपकार मानता है। महात्माओंका वचन है कि सर्वशक्तिमान महान् ईश्वर तुम्हारे छोटे बड़े कामोंको ही नहीं देखता, क्योंकि छोटे बड़े काम तो संयोगके आधारपर होते हैं इससे उन कामोंके करनेवालेकी बलिहारी नहीं है। परन्तु मनमें ऊंचे दरजेकी भावना रखना बहुत बड़ी बात है। क्योंकि प्रभु हमारे अन्तःकरणकी भावनाको देखता है, जैसी भावना होती है वैसा फल मिलता है यह शास्त्रका सिद्धान्त है। इस कारण मनमें उत्तम भावना हो और ईश्वरके लिये भले काम किये जाते हों तो उन छोटे कामोंको भी प्रभु बड़ा मानलेता है और बड़ा फल देदेता है। बड़ा काम भी अगर अपने मतलबके लिये ही किया हो, अपने अभिमानके लिये ही किया हो, मन मसोसते मसोसते किया हो और मान मर्यादाकी इच्छासे ही किया हो तो उस बड़े कामकी भी ईश्वरके सामने कुछ बहुत कीमत नहीं होती। इसलिये भाइयो! अगर आप अपने छोटे कामोंको भी जगमगाना चाहते हों और छोटे कामोंसे भी बड़ा फल लेना हो तो भाव रख कर और लोभ लालच छोड़ कर सर्वशक्तिमान महान् ईश्वरके लिये शुभ काम कीजिये। तब थोड़ेसे भी बहुत होजायगा।

८६ – आनन्द, आनन्द और आनन्द ।

ओ हरिजनो! हमारा पैदा करनेवाला जो ईश्वर है वह आनन्द स्वरूप है, इतना ही नहीं, शास्त्रमें उसको आनन्दका भी आनन्द अर्थात् परमानन्द कहा है। ऐसे परमानन्द प्रभुसे हम उत्पन्न हुए हैं। इसलिये हमें भी आनन्दमें रहना सीखना चाहिये।

बन्धुओ! हमारे परम कृपालु आनन्दी पिता प्रभुने हमें जगतमें आनन्द भोगनेके लिये ही हमें उत्पन्न किया है। इतनाही नहीं, वरंच इसलिये हमें उत्तम मनुष्यजन्म दिया है कि मरनेके बाद भी हम मोक्षधाममें प्रभुका आनन्द भोगसकें। सारांश यह कि आनन्द हम सबके जीवका भी जीवन है। इसलिये हमें सदा ईश्वरी आनन्द भोगनेकी कोशिश करना चाहिये।

इतनाही नहीं कि हमारा ईश्वर आनन्दी है, वरंच उसने हमारे लिये जो धर्म बनाया है वह धर्म भी हमें आनन्दके रास्तेमें ही लेजानेवाला है। इसलिये जैसे बने वैसे अधिक अधिक आनन्द लेना चाहिये। ईश्वरी आनन्द भोगनेके लिये ही हमारा जन्म है।

ईश्वर आनन्दरूप है और धर्म भी हमें आनन्दके रास्तेमें ही लेजाता है, इससे भक्ति भी आनन्दके साथही साथ रहती है। इस कारण ईश्वरकी भक्ति करनेवाले भक्त सदा आनन्दी होते हैं। ईश्वर आनन्दस्वरूप है इससे उसकी भक्ति करनेवाले भक्त भी आनन्दरूप बनजाते है। जैसा इष्ट होता है वैसे भक्त बन-जाते हैं और जैसी भावना रखें वैसा फल मिलता है। यह शास्त्रका सिद्धान्त है। इसलिये जो भक्त अपने ईश्वरको आनन्दरूप समझ कर उसकी भक्ति करते है वे दिन दिन आनन्दी बनते जाते हैं। इतनाही नहीं वे दूसरोंको भी अपना आनन्द देतेजाते हैं तथा आनन्द लेनेकी कुंजी बतातेजाते हैं।

भक्तोंको भगवानका सच्चा आनन्द कैसे मिलता है और क्यों मिलता है यह आप जानते हैं ? इसका कारण यह है कि हृदयकी पवित्रताका दूसरा नाम आनन्द है और हृदयकी पवित्रता भक्तोंमें होती है इससे वे ईश्वरी आनन्द भोगते हैं। याद रखना कि आनन्दका अनमोल पौधा पवित्रताकी उत्तम भूमिमें ही उगता है और ऐसी पवित्रताकी उत्तम भूमि सच्चे भक्तोंका हृदय है। इसलिये असली आनन्द सच्चे भक्तोंके अन्तःकरणमें ही होता है।

जिसके हृदयमें अधिक पवित्रता होती है उसके हृदयमें अधिक आनन्द होता है। अधिक पवित्रता क्योंकर होती है यह मालूम है ? जो ईश्वरी नियम अधिक मानता है उसके अन्तःकरणमें अधिक पवित्रता रहती है इससे वह अधिक आनन्द भोगता है। इसलिये अगर नष्ट न होनेवाला अलौकिक ईश्वरी आनन्द भोगना हो तो प्रभुके नियमपर चलना चाहिये और जैसे बने वैसे अधिकसे अधिक पवित्र रहना चाहिये।

सूर्य उगनेसे जैसे चारों ओर उजाला फैलजाता है वैसे हृदयके पवित्र आनन्दी भक्त जहां जाते हैं वहां आनन्द फैलाया करते हैं।

जैसे गुलाबके फूलके आसपास बढ़िया सुगन्ध फैली रहती है वैसे पवित्र भक्त जहां रहते हैं वहां आनन्द फैलता है।

भगवद्भक्तोंके हृदयमें अटूट आनन्द भरे रहनेका क्या कारण है आप जानते हैं ? इसे समझानेके लिये सन्त कहते हैं कि हमारे घर जब कोई पाहुना आता है, बाहरी दोस्तीवाला मित्र आता है या कोई सद्गुणी बड़ा आदमी आता है तब हमें कितना अधिक आनन्द होता है ? विचार कीजिये कि जब ऐसे आदमियोंके भी घर आनेपर आनन्द होता है तब जिन

भक्तोंके हृदयमें भगवान् आप पधारता है उनको महाआनन्द होनेमें क्या आश्चर्य है ? इसलिये भक्तोंके आनन्दका खास कारण यह होता है कि उनके हृदयमें भगवान् पधारता है। इससे वे अखण्ड आनन्द भोगते हैं। ऐसा अखण्ड आनन्द दरकार हो तो ऐसा करना चाहिये कि हमारे हृदयमें प्रभु पधारे। यह आनन्द पानेकी युक्ति है।

जिस भक्तके हृदयमें भगवान पधारता है, जो भक्त ईश्वरका माहात्म्य समझता है और जिसने सर्वशक्तिमान अनन्त ब्रह्माण्डके नाथके महान सद्गुणोंका अध्ययन किया है उस मनुष्यको ईश्वरके ज्ञानका आनन्द मिलना और उस महा आनन्दके कारण छोटे छोटे दुःख भूलजाना क्या आश्चर्य है ? ऐसे ऐसे कारणोंसे भक्त आनन्दमें रहते हैं।

ईश्वरी आनन्द भोगनेसे भक्तोंको दूसरा लाभ यह होता है कि वे शुभ कर्मोंमें सदा आगे बढ़तेजाते हैं और उसमें कभी कदराते नहीं। ज्यों ज्यों शुभ कर्म करते जाते हैं त्यों त्यों उनका आनन्द बढ़ता जाता है। इससे और अच्छे अच्छे काम होतेजाते हैं तथा भक्त ईश्वरके निकट पहुंचतेजाते हैं।

आनन्दसे शुभ कर्म करनेमें कैसे आगे बढ़सकते हैं इस विषयको समझानेके लिये सन्त कहते हैं कि जब लड़ाई छिड़ती थी और पलटनमें जोश लाना होता था तब पहले जमानेके बहादुर राजपूतोंके पास चारण सिन्धुरा रागमें उनकी बड़ाईका गीत गाते थे। आजके जमानेमें अंगरेजी फौजमें जोश उभाड़नेके लिये तरह तरहके फौजी बाजे बजाये जाते हैं। इससे फौजको आगे बढ़नेमें मदद मिलती है। वैसे ही ईश्वरी आनन्द भक्तोंको सत्कर्म करनेमें आगे बढ़ाता है। आनन्दसे शुभ कर्म करनेमें उत्तेजन मिलता है इससे कितनेही शुभ कर्म किये जासकते हैं।

इतनाही नहीं, कितनीही बार बहुत छोटे छोटे तथा अनजान भक्त भी लोगोंके कल्याणके कितनेही बहुत बड़े काम कर डालते हैं। इसका कारण यह है कि उनके हृदयमें ईश्वरी आनन्द होता है। इससे दूसरोंसे न होसकने योग्य काम वे कर डालते हैं। ईश्वरी आनन्दमें ऐसी खूबी है। इसलिये हम सबको ईश्वरी आनन्द लेनेकी कोशिश करना चाहिये।

८७-आनन्द, आनन्द और आनन्द। (२)

इस समय जब कि आनन्द लेनेकी बात चल रही है तब उसमें यह भी समझ लेना चाहिये कि संसारियोंके सुख और भक्तोंके आनन्दमें बहुत बड़ा अन्तर होता है। संसारी लोगोंका जो सुख है वह जगतके बाहरी पदार्थोंमें रहता है और भक्तोंका जो आनन्द है वह ईश्वरको जानने तथा उसका भजन करनेसे होता है। उनका आनन्द भावनामें होता है। इससे कोई भक्त श्रद्धासे आनन्द पाता है, कोई भक्त ईश्वरका उपकार माननेसे आनन्द पाता है, कोई भक्त परोपकार करनेसे आनन्द पाता है, कोई भक्त सुमिरनसे आनन्द पाता है, कोई भक्त भजन गानेसे आनन्द पाता है, कोई भक्त भगवानकी महिमा गानेसे आनन्द पाता है और कोई भक्त भगवानके बड़प्पनसे आनन्द पाता है। इस प्रकार भिन्न भिन्न भक्त अपने अन्दरके भिन्न भिन्न गुणोंसे अपनी भावनाके अनुसार ईश्वरी आनन्द हासिल करते हैं। संसारी लोगोंको ऐसा आनन्द नहीं मिलता। उन्हें जब अपने मन लायक बाहरकी वस्तुएँ मिलती हैं तभी आनन्द मिल सकता है। और बाहरकी वस्तुएँ मिलनेमें बहुत पराधीनता रहती है। फिर

बाहरकी वस्तुओंसे जो आनन्द मिलता है वह देर तक नहीं रहता। इसके सिवा और भी अनेक विघ्न पड़ते हैं। परन्तु भक्त अपनी भावनाके अनुसार अन्तःकरणसे जो ईश्वरी आनन्द प्राप्त करते हैं उसमें ऐसा कोई विघ्न नहीं पड़ता। याद रखना कि संसारी लोगोंके सुखमें और भक्तोंके ईश्वरी आनन्दमें बहुत बड़ा भेद है। इसलिये भाइयो! हवासे हिलनेवाले पेड़के पत्ते सरीखे संसारी लोगोंके सुखमें मत रह जाना वरंच अखंड अविनाशी ईश्वरी आनन्द लेनेकी चेष्टा करना।

भक्तोंके हृदयमें मौजूद ईश्वरी आनन्द कितना महान और कितना दृढ़ होता है यह आपको मालूम है? इसके लिये सन्त कहते हैं कि बहुत मजबूत जड़वाला और अच्छी जगह जमा हुआ बड़ा पौधा जैसे हवाके झोंकेसे नहीं उखड़ता तथा समुद्रकी लहरोंसे जैसे बड़ी चट्टान नहीं गिरती वैसे भक्तोंके हृदयमें जो ईश्वरी आनन्द जमा होता है वह दुःखसे, रोगसे, कर्जेसे या इस तरहके और किसी कारणसे नहीं घटता। उनका यह आनन्द सदा बना रहता है। वह प्रभुप्रेमसे जन्मा रहता है। इससे जबतक उनके हृदयमें प्रभुका प्रेम रहता है तबतक उनके हृदयसे आनन्द नहीं जाता। बन्धुओ! इससे आप समझ सकेंगे कि भक्तोंके आनन्दमें और संसारी लोगोंके आनन्दमें कितना बड़ा फर्क है। संसारी लोगोंको तो जब सब उनके मनलायक हो तो आनन्द मिलता है। जैसे—शरीर नीरोग हो, पासमें खूब धन हो, रोजगार धंधा खूब चलता हो और मिलनसार आदमी मिले हों तब वे आनन्द भोग सकते हैं। अगर इसमें प्रतिकूलता हो तो वे आनन्द नहीं पासकते, बल्कि उल्टे उन्हें बहुत दुःख होता है। भक्तोंका आनन्द ऐसी बाहरी वस्तुओंमें नहीं होता। उनका आनन्द तो भगवानमें—जहां उनका

चित्त रहता है उसीमें रहता है। इससे वे अनेक प्रकारके दुःखोंमें भी ईश्वरी आनन्द भोगते हैं। इस तरह भक्तोंके आनन्दमें और सांसारिकोंके आनन्दमें बड़ा फर्क है। इन दोनों बातोंका फर्क समझ लेना अच्छा है। हरिजन कहते है कि आनन्द और सुख इन दो शब्दोंमें फर्क है। जो सुख है वह इर्द गिर्दके संयोगोंके आधारपर है और जो आनन्द है उसका सम्बन्ध अन्तःकरणसे है क्योंकि वह हृदयसे बाहर आता है। इससे समझा जासकता है कि संसारी लोगोंको जो सुख मिलता है उस सुखका सम्बन्ध बाहरकी वस्तुओंसे है उन वस्तुओंके घटने बढ़नेसे उनका सुख घट बढ़ सकता है। परन्तु भक्तोंके हृदयमें जो ईश्वरी आनन्द होता है उसका सम्बन्ध ईश्वरसे और अपने अन्तःकरणसे होता है इससे सब समय और सब जगह यह आनन्द एक समान होता है। इस प्रकार संसारियोंके सुखमें और भक्तोंके आनन्दमें बड़ा अन्तर है। इसलिये बन्धुओ! थोड़ी देरके और अड़चल भरे सुखकी ओर मत दौड़िये बरंच जैसे बने वैसे भक्तोंका ईश्वरी आनन्द हासिल करनेकी कोशिश कीजिये।

कितनीही बार कितने भक्तोंको कितने किस्मके दुःख होते हैं तो भी वे आनन्दमें रहते हैं। इसका क्या कारण है आप जानते हैं? इसे समझानेके लिये सन्त कहते हैं कि किसी किले पर दुश्मनकी पलटनने घेरा डाला है इससे पानी न मिलता परन्तु किलेके अन्दर कुआ हो तो उस पलटनको पानीका दुःख नहीं सहना पड़ता। वैसेही जिन भक्तोंके हृदयमें ईश्वरी आनन्दका झरना बहता है उनपर कभी बाहरी दुःख आपड़े और उस दुःखमें वे घिर जायँ तोभी वे रंज नहीं मानते, झींखते नहीं या हार नहीं जाते क्योंकि उनके हृदयने उनको ईश्वरी आनन्द मिला करता है। इससे बाहरके छोटे छोटे दुःखकी उन्हें परवा नहीं होती।

वे दुःख दूसरोंको चाहे भारी लगते हो परन्तु हृदयसे ईश्वरी आनन्द पानेवाले भक्तोके लिये किसी गिनतीमें नहीं। इसका कारण यह है कि वे घड़ीभरके बाहरी दःखोंको नहीं देखते। वे तो अपने हृदयमें मौजूद ईश्वरी आनन्दको ही देखा करते हैं। इससे दुःखके समय भी आनन्दमें रहते हैं।

ईश्वरी आनन्दका दूसरा महान फल यह है कि भक्त जब ऐसे महा ईश्वरी आनन्दमें होते हैं तब उनके हृदयमें पाप नहीं घुस सकता। इतनाही नहीं ऐसे ईश्वरी आनन्दके कारण भक्त अपना सुख तज सकते हैं और प्रभुके लिये जगतके जीवोंके कल्याणके महान काम कर सकते है। क्योंकि ईश्वरी आनन्दसे अपना स्वार्थ त्यागने तथा दुःख भोगनेका बल उनमें आजाता है। इससे वे दूसरे व्यवहारी मनुष्योंकी अपेक्षा बहुत अच्छी तरह प्रभुकी तथा जनसमुदायकी सेवा कर सकते हैं। याद रखना कि यह सब हृदयमें मौजूद ईश्वरी आनन्दके कारण होता है। हमें सच्चे भक्तोंके ऐसा ईश्वरी आनन्द हासिल करनेकी कोशिश करना चाहिये।

भक्तोंके चरित्रसे हम जानते हैं कि बहुतसे भक्तोंके सिरपर अनेक प्रकारके दुःख पड़े थे और बहुतेरे भक्तोंको अनेक प्रकारकी कठिनाइयोके बीच काम करना पड़ा था तथा बहुतसे भक्तोंको दरिद्रावस्थामें दिन काटने पड़े थे। तोभी उनके हृदयमें आनन्दका झरना बहता था; इससे उन्हें इन सब दुःखोंकी परवा नहीं होती थी। बाहरसे गरीब दिखाई देते हुए ये सब बड़े भक्त बड़े बड़े अमीरों या राजाओंसे भी अधिक सुखी रहते थे। क्योंकि दुनियादारीके दुःखसे ईश्वरी आनन्द उनके हृदयमें बहुत अधिक था। और इसका कारण यह था कि वे आनन्दभरी नीति और भक्तिके रास्तेमें

चलते थे। उससे वे अनेक प्रकारके बाहरी दुःख रहतेहुए भी आनन्द लेसकते थे। हमें भी ऐसा आनन्द लेना हो तोनीति तथा भक्तिके आनन्दी मार्गमें चलना चाहिये और ईश्वरी आनन्द हासिल करनेकी कोशिश करना चाहिये। ऐसा करें तभी पहलेके भक्तोंके ऐसा अलौकिक ईश्वरी आनन्द मिलसकता है। ऐसे अविनाशी ईश्वरी आनन्दके लिये चेष्टा करना चाहिये।

८८–सच्चे भक्त यह समझते हैं कि हमारा अनभल होता ही नहीं। इस विषयमें एक भक्तकी बात।

एक बहुत बड़ा भक्त था। उसकी आर्थिक दशा बहुत अच्छी थी और कुटुम्बसुखमें भी वह बड़ा भाग्यवान था। इस प्रकार हर बातका आराम होनेपर भी वह बड़ा ही प्रभुप्रेमी था और उसकी रहन सहन बहुतही ऊंचे दरजेकी थी। मतलब यह कि वह दुनियाको दिखानेके लिये भक्त नहीं हुआ था, लोकाचारपर चलनेके लिये भक्त नहीं हुआ था और देखादेखी या किसी किस्मके जोशमें आकर भक्त नहीं हुआ था, बल्कि अपना कर्तव्य समझ कर भक्त हुआ था, अपना जीवन सार्थक करनेके लिये भक्त हुआ था, जगतमें भक्तिसे बढ़ कर और किसी चीजको न जान कर भक्त हुआ था और प्रभुकी महिमा समझ कर भक्त हुआ था। इसके सिवा वह शरीर या इन्द्रिय या मनकी भक्तिमें ही नहीं रहगया था वरंच अपनी आत्मा द्वारा परमात्माको पकड़नेकी युक्ति जानता था। इससे वह भक्तिरसमें गलगया था और प्रभुप्रेममें डूब गया था। इस कारण उसकी भक्ति एक

समान चली आती थी। इतना ही नहीं बल्कि दिन दिन बढ़ती जाती थी। इस तरह कितनेही वर्ष बीतजानेपर एक दिन क्या हुआ कि उस भक्तने अपने बीस हजार रुपये जिस सेठके यहां ब्याजपर दिये थे उसका दिवाला निकल गया। उस भक्तके बीस हजार रुपये डूबगये। यह बात सुन कर उस भक्तके व्यवहारी हित मित्र बहुत अफसोस करने लगे और भक्तसे कहने लगे कि यह तो बहुत बुरा हुआ। तुम्हारी जीविकाका अवलम्ब टूटगया। इसीके सहारे तुम एकान्तमें भजन करते थे; उसके मारे जानेसे अब बड़ी कठिनाईमें पड़ोगे। यह कह कर सब लोग सहानुभूति दिखाने लगे।

भक्तने कहा कि भाइयो! तुम मेरी फिकर मत करो। मैंने जो बीस हजार रुपयेकी रकम ब्याजपर दी थी वही गयी है परन्तु अभी और बीस हजार रुपये मेरे घरमें मौजूद हैं। इसलिये मुझे गुजारेके लिये झीखना नहीं पड़ेगा। यह कह कर वह लोगोंको ढाढस देने और कहने लगा कि यह कौन भारी बात है? ऐसा तो होताही है। धन जानेसे मेरे हृदयका आनन्द नहीं चलागया, लक्ष्मी तो चंचल है उसका क्या भरोसा? वह तो दो दिन आगे पीछे जायगी ही। ऐसी बातोंका मुझे अफसोस नहीं होता। इस तरह उसने लोगोंको शान्त किया।

इसके दो वर्ष बाद भक्तके घर चोरी हुई और उसके बीस हजार रुपये चोरी चलेगये। उस समय भी भक्तके हित मित्र बहुत अफसोस करने और कहने लगे कि जो पेटके लिये था वह भी गया। अब तुम क्या करोगे? वर्षोंसे रोजगार छोड़े बैठे हो अब बड़ी मुश्किल होगी। भक्तने कहा कि यह कुछ अफसोसकी बात नहीं है। हमें भगवानकी इच्छानुसार चलना चाहिये, यह वस्तु मेरे कामलायक नहीं रही होगी इसीसे प्रभुने खींच ली होगी।

अब मै गुजारेके लिये यथाशक्ति परिश्रम करूंगा। धन गया तो क्या हुआ मेरा शरीर तो अच्छा है। मेरे हाथ, पैर, आंख, कान आदि इन्द्रियां तो अच्छी है; मेरा मन तो अच्छा है और मेरी बुद्धि तो अच्छी है। तबतक क्या चिन्ता है? थोड़े खर्चेमें चलाऊंगा और जरूरतभर पैदा कर लूंगा। यह बात कुछ बहुत मुश्किल नहीं है। इसलिये तुम मेरी चिन्ता मत करो।

इसके कुछ दिन बाद भक्तका इकलौता बेटा गुजरगया। तब उसके सगे सम्बन्धी तथा मित्र आदि बहुत शोक करने लगे। उस समय भक्त उल्टे उन्हींको ढारस बंधाने लगा और कहने लगा कि संसारकी माया ऐसीही है। लेनदेनका जितना सम्बन्ध होता है उतना लिया दिया जाता है। इस जगतका सब सम्बन्धही ऐसा है। दुनियामें कौन सम्बन्ध स्थिर रहा है? आगे या पीछे सब टूटता ही है। क्योंकि चार दिन आगे पीछे सबको जाना पड़ता है। इससे हम ऐसी बातोंका अफसोस नहीं करते। लड़का गया मगर हम स्त्री पुरुष तो बैठे है। भगवानकी मरजी होगी तो दूसरा लड़का आजायगा। इस तरह लोगोंको समझा बुझा कर ढारस देने लगा और अपने मनको धक्का नहीं लगने दिया। बाहरसे ऐसी व्यावहारिक अड़चलें आती थीं परन्तु उसके हृदयमें प्रभु-प्रेमके आनन्दका झरना बहा करता था। इससे वह भीतरसे शान्ति रखता था और ऐसे दुःखके समय भी भक्तिका आनन्द भोगता था।

इसके कुछ दिन बाद भक्तकी स्त्री बीमार पड़ी और कुछ दिनमें चलबसी। तब लोग कहने लगे कि भक्त! यह तो बहुतही बुरा हुआ। बुढ़ापेमें तुम्हें स्त्रीकी मददकी जरूरत थी। ऐसे मौकेपर स्त्री मरगयी! यह बड़ा भारी दुःख है। हाय! हाय! तुम्हारे ऐसा दुखिया कोई नहीं है। धन गया, लड़का गया और अन्तका

भक्तिमें मदद् करनेवाली नेक स्त्री जो थी वह भी चलीगयी, अब तुम क्या करोगे ? भक्त ! तुम बड़े दुखी हो ! ऐसी ऐसी बातें लोग भक्तसे कहते तो वह भक्त उनको समझाता और कहता कि दुनियाका चक्कर ऐसाही चलता है। जगतकी रचना ही ऐसी है कि सुख दुःख होता रहता है। ऐसे सुख दुःखका धक्का हृदयको न लगने देना ही खूबीकी बात है। मैं जीता रहूँगा और जरूरत पड़ेगी तो दूसरी स्त्री ब्याह लाऊँगा । यह कौन बड़ी बात है ? उस बेचारीको लड़का मरजानेसे बड़ा क्लेश होता था उससे वह छूटगयी यह अच्छा हुआ । उसने मेरी बड़ी सेवा की है और मेरे घर जो दूसरे हरिजन आते थे उनकी भी बहुत सेवा करती थी। इससे उसका स्वर्गमें भी भला होगा । ऐसे भले मानस अपना धर्म पालते हुए मरजायं तो उनके लिये अफसोस नहीं करना चाहिये। इस तरह वह भक्त उलटे लोगोंको ढारस देने लगा और अपने मनमें रंज नहीं लाया या न अपनी शान्तिको टूटने दिया।

इसके कुछ दिन बाद वह भक्त स्वयं बहुत बीमार पड़ा। तब लोग उसकी खबर पूछने आने लगे और कहने लगे कि भक्त ! तुम कहते थे कि भगवान भक्तोंका बुरा नहीं करता परन्तु लो अब तो तुम भी चलायमान हुए। धन गया, इस दुःखकी तुमने परवा न की, जवान लड़का मरगया इसको भी तुमने दुःख नहीं माना और बुढ़ापे तथा गरीबीमें घरराखन नेक स्त्री मर गयी-इसको भी तुमने दुःख नहीं समझा। परन्तु अब दुखी हो कि नहीं ? हाय हाय ! अब तुम भी चले ? यह तो बड़ा ही बुरा होता है। भक्तने कहा कि भाई ! भक्तोंका बुरा होताही नहीं। मेरा तो जो होता है भला ही होता है। देखो न, अब जो मौत आवेगी तो इस नष्ट होजानेवाले देहसे निकल कर नष्ट न

होनेवाली देहमें जाऊंगा। मौत आवेगी तो यहांके राग द्वेष और अज्ञानता भरे मनुष्योंके संगसे निकल कर स्वर्गके देवताओंके सत्संगमें जाऊंगा। मौत आवेगी तो मर्त्यलोकसे निकल कर अमरत्वका सुख भोगूंगा। मौत आवेगी तो इस समय मेरे और भगवानके बीच जो मायाका पर्दा है वह दूर हो जायगा और मैं ईश्वरके दरबारका महा आनन्द भोग सकूंगा। इसलिये मौतमें भी मेरा कल्याण ही है। किसी हालतमें रहनेसे भक्तका अनमल नहीं होता। सो तुम मेरी चिन्ता मत करो और मेरे लिये अफसोस मत करो। इसके बाद कुछ दिनमें यह भक्त हरिधामको पधार गया। उसका मरते समयका आनन्द ऐसा था कि देखकर जान पड़ाता था मानो वह अपना कर्तव्य पालन कर इनाम लेने जाता हो! ऐसे आनन्दमें बड़ी शान्तिसे उसने अपना शरीर छोड़ा।

बन्धुओ! जो सच्चे भक्त होते हैं उनके हृदयमें प्रभुप्रेमके आनन्दका झरना बहा करता है, इससे वे ऐसे ऐसे जगतके दुःखोंसे दिलगीर नहीं होते। क्योंकि ऐसे दुःखोंमें भी वे अपने हृदयकी शान्तिको बनाये रखते हैं और प्रभुके आनन्दमें रहते हैं। इससे वस्तु या संयोग बदलनेका दुःख उन्हें हैरान नहीं कर सकता। इस तरह ज्ञान तथा भक्तिके बलसे सब दशाओंमें ऊंचे भक्तोंको आनन्दही आनन्द मिला करता है और सब दशाओंमें तथा सब स्थितिमें ऐसा आनन्द भोगना ही भक्तिकी खूबी है और यही भक्तोंकी श्रेष्ठता है। इसलिये भाइयो और बहनो! अगर सच्चा भक्त होना हो तो ऐसा कीजिये कि सदा आनन्दमें रह सकें; दुःखके समय भी सदा आनन्दमें रह सकें।

८९—याद रखना कि इस दुनियाको छोड़ कर भक्त होना ठीक नहीं ; इस दुनियामें रह कर ही भक्त होना उचित है।

भक्तिके बारेमें बहुत लोग यह समझते हैं कि जबतक संसारमें रहें और घरका जंजाल सहा करें तबतक सच्ची भक्ति नहीं होसकती। वे कमजोर मनके होते हैं इससे सोचते है कि जगतके जंजालमें भक्ति कैसे की जा सकती है ? वे तुनुकमिजाज होते हैं इसले उनके हृदयमें छोटी छोटी बातोंका भी बहुत धक्का लग जाता है। जैसे—किसी दिन घरमें कोई आदमी बीमार हो तो वे झीखने लगते हैं, किसी समय मनलायक काम न हो तो किचकिचाने लगते हैं; किसी समय कुटुम्बियों या मित्रोंके विचारमें मतभेद हो तो उन्हें भारी आफत आन पड़ती है; किसी समय अपनी हालत नाजुक होजाय तो वे हाय हाय करने लगते हैं और सोचते हैं कि अब क्या करें ? अब हमारा कैसे निबहेगा ? यह सोच कर घबराजाते हैं । इस प्रकार हर बातमें उनको धक्का लगता है और इस दुनियाकी रचना ही ऐसी है कि कुछ न कुछ कठिनाई पड़े बिना नहीं रहती। इस जगतका सम्बन्ध ही ऐसा है कि कुछ न कुछ मतभेद हुए बिना नहीं रहता। परन्तु जो कच्चे मनके आदमी होते है वे इन सब बातोंको नहीं समझते उनमें कोई कोई कभी कुछ समझते भी हैं तो ऐसे वक्तपर मनको मजबूत रखना उन्हें नहीं आता तोभी उन्हें भक्ति करनेकी इच्छा होती है। उसका फल यह होता है कि ऐसे आदमी संसार त्याग कर भक्त होना पसंद करते हैं। परन्तु जो सच्चे हरिजन हैं वे कहते हैं कि संसार त्याग कर भक्त होनेमें कुछ बड़ाई नहीं है और ऐसी भक्तिकी कुछ बहुत कीमत नहीं है । संसारकी

कठिनाइयां सहते हुए भक्ति करना ही खूबीकी बात है। जैसे—
जहाज समुद्रमें रहते है और समुद्रमें समय समयपर तूफान उठा करता है। जो हिले डोले नहीं उसका नाम समुद्र ही नहीं। समुद्रमें तो सदा ज्वार भाटा हुआ ही करता है। परन्तु इन सब अड़चलोंसे जहाज किनारे नहीं पड़े रहते उन्हें तो समुद्र लांघना ही पड़ता है। तूफानसे डर कर जहाज किनारे पड़े रहें तो इसमें उनकी शोभा नहीं। तूफानके बीच रास्ता निकाल कर जब वे नियत बन्दरगाहमे पहुंचते हैं तभी उनकी खूबी कहलाती है। वैसेही अड़चल, उपाधि, जंजाल और कठिनाइयों से डर कर जो आदमी अपनी घर गृहस्थी त्याग देते है वे कायर है, वे कच्चे भक्त हैं, वे डरपोक भक्त हैं और ऐसे भक्तोंकी भक्तिकी कीमत हरिके हुजूर बहुत थोड़ी है। कठिनाइयोंके बीचसे गुजरते हुए भी भक्तिको न छोड़नेमें ही खूबी है। इसलिये याद रखना कि हमें इस संसारके सुख दुःख सह कर भक्ति करना है और उसीसे प्रभुको रिझाना है। कुछ साधू बन कर भक्ति नहीं करना है क्योंकि ऐसी एकअंगी भक्ति प्रभुको नहीं रुचती। भाइयो और बहनो! त्यागी होकर भक्ति करनेकी इच्छा मत रखना बल्कि जैसे बने वैसे अच्छी तरह अपनी घर गृहस्थीको चलाते हुए भक्ति करना। यही हमारी सलाह है।

९०—जो व्यवहार और परमार्थ दोनोंको चलाते हैं वे ही ऊँचे दरजेके भक्त गिने जाते हैं।

आजके जमानेमें हमारे देशमें साधू बहुत बढ़गये हैं इससे

जगह जगह साधु ही दिखाई देते हैं। ये साधू अपनेसे काम पड़नेवाले दूसरे मनुष्योंको भी ऐसा ही उपदेश दिया करते हैं कि साधू होनेसे सब तरहका कष्ट मिट जाता है इससे भक्ति बहुत होती है। जबतक घर गृहस्थीकी उपाधि रहती है तबतक भगवानमें ध्यान नहीं लगसकता; इसलिये सच्चा भक्त होना हो तो सन्न्यास लेना चाहिये। इस संसारमें कुछ तत्त्व नहीं है, इसमें कुछ सुख नहीं है। व्यर्थकी हाय हाय है। संसारमें रह कर किसको सुख मिला है? "भरथरी" और गोपीचन्द जैसे राजाओंने जब भक्त होनेके लिये अपना राज पाट छोड़ दिया था तब हमारा घर छोड़देना कौन बड़ी बात है। ऐसे ऐसे उपदेश देते है। इससे कितनेही कच्चे दिलके आदमी साधू बनजाते हैं। वे यह नहीं सोचते कि बहुतेरे आदमी किसलिये साधू बनते है तथा साधू बननेके बाद कितने दुखी होते है। परन्तु हमने बड़े ध्यानसे इस विषयकी जांच पड़ताल की है। उससे पता लगा है कि सब आदमी प्रभुप्रेमके कारण साधू नहीं होते। कितने आदमी तो पेटके दुःखसे साधू हो जाते है; कितने आदमी कुटुम्ब कलहके कारण साधू हो जाते हैं; कितने आदमी अकाल, भूडोल, मरकी आदि आफतोंके कारण निराश हो कर साधू बनजाते हैं; कितने आदमी कमानेकी शक्ति और काम काज करनेका शऊर न होनेसे साधू होजाते हैं; कितने आदमी अपराध करके छिपनेकी नीयतसे साधू बनजाते है; कितने आदमी साधुओंकी संगतसे साधू बनजाते हैं; कितने आदमी महन्त बन कर आदर प्रतिष्ठा पानेकी आशासे साधू बनजाते है, कितने आदमी संयोग वश दुनियासे ऊब कर साधू बनजाते हैं और कितने साधू छोटे बालकोंको चुरा ले जाते हैं या गरीब मा बापके लड़कोंको अपने पास रखकर उनकी अज्ञा-

नतामें ही उन्हें साधू बनादेते है। इसके सिवा कितनेही साधू अपने समान भटकती दुखिया स्त्रियोंसे व्याह करके उन्हें उल्टे और दुःखी करते हैं और उनके जो लड़के होते हैं वे भी साधू गिने जाते हैं। इससे साधुओंकी संख्या बहुत बढ़ गयी है। परन्तु याद रखना कि असली ज्ञान और सच्चे त्यागसे प्रभुप्रेमके लिये होनेवाले साधू हजारमें एक भी नहीं होते। संयोग वश बने हुए साधू बेचारे बहुत ही दुखी होते हैं। उनकी जिन्दगीकी गहराईमें उतरिये तो उनकी दयाजनक स्थिति देखकर डर लगता है। उनमें सैकड़े पंचानवे जनोंको तो खाने पीनेका महा-कष्ट होता है। बहुतोंको सदावर्तमें खाना पड़ता है। सदावर्तके भातमें कंकड़ होता है और दालमें छिलका भरा रहता है। सदावर्तमें तले ऊपर अन्नके बोरे रखेरहते हैं और अनाज बीन चुनकर साफ करनेके लिये जो बन्दोबस्त चाहिये वह नहीं होता, इससे वह अक्सर सड़जाता है। परन्तु सदावर्तोंकी स्थिति ऐसी गरीब होती है कि वे सड़े हुए अन्नको भी फेंक नहीं देते बल्कि वही साधुओं को खिलाते हैं। सदावर्त छोड़कर जो साधू बाहर घूमते हैं और टुकड़ा मांग कर खाते हैं उनका भी बड़ा बुरा हाल होता है। उन्हें जूनपर खानेको नहीं मिलता और पेटभर भी खानेको नहीं मिलता। ऐसे ही बहुतेरे साधू तीर्थयात्राके नामपर जगह जगह भटकते फिरते हैं उनकी जिन्दगी भी बहुत दुखिया होती है। बहुत जगह उन्हें ठहरनेको स्थान नहीं मिलता और पानीका आराम नहीं होता और बहुत जगह खानेको भी नहीं मिलता, इसके सिवा साधुओंमें सैकड़ों पंथ होते हैं। एक पंथके साधू दूसरे पंथके साधुओंसे डाह करते हैं इससे कितनी ही बार कितनी ही जगह लड़ पड़ते हैं। दूसरे बहुतेरे साधू गंजेड़ी होते है, बहुतेरे साधू भंगेड़ी होते हैं, बहुतेरे साधू अफीमची

होते हैं, बहुतेरे साधू शराबी होते हैं और ऐसे साधू तो कम ही हैं जो तमाखू न पीते हों। इसके सिवा हर एक साधूके विचारमें कुछ न कुछ विचित्रता होती है इससे वे सब अपने पंथवालोंसे भी कभी मिल कर नहीं रहते, बात बातमें लड़ पड़ते हैं। इतना ही नहीं, और भी अनेक प्रकारके दुर्गुण तथा दुःख उनमें होते हैं। तिसपर भी वे भोलेभाले लोगोंसे कहा करते हैं कि साधू बननेमें बड़ा आराम है। भाइयो! साधुओंकी यह सब दशा देख कर अब आप विचार कीजिये कि क्या साधू बननेसे धर्म किया जा सकता है? याद रखना कि आजकलके जमानेमें सुबीतेवाले गृहस्थाश्रमियोंसे जितना धर्म होता है उतना धर्म बिना किसी प्रकारके सुबीतेवाले साधुओंसे नहीं होता। सो धर्म करनेके लिये साधू बननेकी कुछ भी जरूरत नहीं है। जो ऊंचे भक्त हैं, जो सच्चे भक्त हैं और जो प्रभुके प्यारे भक्त हैं वे यह कहते हैं कि प्रभुप्रेमी सच्चे भक्त पवित्र नदियोंके समान हैं। नदियां अपने दोनों किनारोंको सींचती और उपजाऊ बनाती हैं जिन नदियोंके दोनो किनारे हरियाली होती है, जिनके दोनो ओर पेड़ोंकी बहार होती है, जिनके दोनों किनारे नहरें बहती हैं और उनसे खेतोंमें किसम किसमके फल फूल उपजते हैं वे ही नदियां श्रेष्ठ गिनी जाती हैं। वैसे ही जो भक्त व्यवहार और परमार्थ नामके दोनों किनारोंको सींचते हैं और उपजाऊ बनाते हैं वे ही भक्त श्रेष्ठ कहलाते हैं। परन्तु जो भक्त एक ही किनारेको तर रखते हैं और दूसरे किनारेकी परवा नहीं करते वे उत्तम नहीं गिने जाते। इसलिये जो सच्चे भक्त हैं और वस्तुको समझे हुए हैं वे अपनी घर गृहस्थीको आबाद करते हैं, अपने कुटुम्बको सुखी करते हैं; अपने स्नेहियोंकी मदद करते हैं, अपने पड़ोसियोंको सहारा देते हैं

और जैसे बनता है वैसे अपना व्यवहार खरा रखते हैं, उसी तरह धर्मके विषयमें भी बहुत ख्याल रखते हैं । धर्मका कोई मूख्य नियम चूकते नहीं । इस प्रकार व्यवहार और परमार्थ दोनो विषयोंमें जो एक समान रहते हैं वे ही भक्त प्रभुको पाते हैं । इसके विरुद्ध जो भक्त केवल व्यवहारमें सने रहते है वे प्रभुको नहीं भाते । वैसे ही जो आदमी दुनियादारी छोड़ कर अपना कर्तव्य पालनेसे पहले साधू हो जाते हैं और घर गृहस्थीका व्यवहार छोड़ देते है वे आदमी भी प्रभुको नहीं रुचते । क्योंकि ये दोनों किस्मके आदमी एक ही तरफ रह जाते हैं। एक ही तरफ ढलनेवाले आदमी सच्चे भक्त नहीं हो सकते, बड़े भक्त नहीं हो सकते, नदी जैसे दोनों किनारोंको सींचती और आबाद करती है वैसे जो भक्त अपनी घर गृहस्थी भी अच्छी तरह चलाते हैं और धर्ममें चौकस रहते हैं वे ही प्रभुके प्यारे होते हैं और उन्हींकी भक्ति जल्द मंजूर होती है, घर गृहस्थी छोड़ कर धर्मका एक ही अंग पालनेमें कुछ विशेष बड़ाई नहीं है और न उसमें कुछ बहादुरी है । दोनों अंग ठीक ठीक पालनेमें ही खूबी है । इसलिये भाइयो ! अगर सच्चा भक्त होना हो तो एक ही तरफ मत ढल जाना वरंच ऐसा करना कि आपकी घर गृहस्थी तथा धर्म दोनो सुधरें और दोनो फलें फूलें । साधू बननेसे पहले इन सब विषयोंका विचार करना । यही हमारी सलाह है ।

९१—यशके बहुत भूखे कैसे होते हैं इसका एक नमूना ।

सौ वर्ष पहले हमारे देशमें बहुत बड़े बड़े जंगल थे । उन

जंगलोंमें बाघ भालू आदि बहुतसे खूंखार जानवर रहते थे। उन जंगलोंके अन्दर दो दो चार चार कोस पर छोटे छोटे गांव थे। उन गांवोंमें बाघका उपद्रव बहुत होता था। अक्सर बाघ गांवमें घुस आते और किसीका बकरा, भेड़, बछड़ा या कुत्ता उठा ले जाता। उस समय कोई कोई बहादुर आदमी बाघको मार डालते या बहुत आदमी जमा हो कर उसे भगा देते।

एक बार ऐसे ही एक गांवमें एक बाघ आया और एक गड़ेरियेके घरमें बंधी भेड़ों पर झपका। उस समय गड़ेरिया अपने घरमें बैठा रोटी खाता था और उसकी जोरू आंगनमें खड़ी कुल्हाड़ीसे लकड़ी फाड़ती थी। उस स्त्री ने बाघको भेड़ों पर हमला करते देखा। बाघका सब जोर और सारा ध्यान अपने शिकार पर था। यह देख कर उस स्त्रीने बाघको तले ऊपर तीन चार बार कुल्हाड़ी मारी। बाघ नीचे गिर पड़ा। बाघको देख कर उस स्त्रीका पति डर गया इससे रोटी खाना छोड़ कर घरके छप्पर पर चढ़ गया और थर थर कांपने लगा। इस बीचमें उसने देखा कि उसकी स्त्री बड़ी बहादुरीसे बाघको कुल्हाड़ी कुल्हाड़ी मार रही है। यह देख कर उसने ऊपरसे ही डरते डरते और जांघ कंपाते कंपाते कहा कि शाबाश! शाबाश! तूने खूब हिम्मत की है और बड़ी बहादुरी दिखायी है। दो चार चोट और सिर पर लगा तब बाघ तुरत मर जायगा। उसकी कमर तो टूट गयी है अब सिर फोड़ दे। डर मत। लगा तीन चार कुल्हाड़ी। खूब जोरसे मार। इस तरह छप्पर पर खड़े खड़े कहने लगा। स्त्रीने सिर पर दो तीन बार कुल्हाड़ी चलायी, इससे बाघ मर गया, इसके बाद वह गड़ेरिया छप्परसे नीचे उतरा और बाघके सामने इस तरह देखने लगा मानो आपने बड़ी बहादुरी की है। फिर उसने बाघकी पूंछ और दोनों कान काट

लिये। पूंछ अपने गलेमें लपेट ली और कान हाथमें ले कर गांवमें फिरने चला। जो आदमी सामने मिलता उससे कहता कि देखो इतने बड़े बाघको मैंने अपने आंगनमें मारडाला है। यह सुन कर लोग उसका बखान करने लगे। इससे वह मन ही मन फूलने लगा और छाती फुला कर गांवके बाजारमें बाघकी पूंछ लेकर फिरने लगा।

बन्धुओ! जो आदमी नामके भूखे होते हैं परन्तु काम करनेका असली बल नहीं रखते वे इसी किस्मके होते हैं। वे दूसरे किसीके किये हुए अच्छे कामका यश आप खा जाते हैं। किसी औरकी कीहुई बहादुरीका टोकरा अपने ऊपर लेलेते हैं और अपनेसे कुछ न होता हो तोभी यह दिखाना चाहते हैं और ऐसा ढंग करते हैं कि सब हम ही करते हैं। परन्तु याद रखना कि ऐसा करना बहुत खराब है और बड़ा भारी पाप है। जैसे किसीका धन चुरा लेना पाप है वैसे किसीका यश चुरा लेना भी बहुत बड़ी चोरी है और पाप है। फिर भी हम सब थोड़ा बहुत इस किस्मका पाप करते हैं और नहीं जानते कि हमसे पाप होता है। याद रहे कि जाने वे जाने इस किस्मकी भूलें हम लोगोंसे बारबार हुआ करती हैं, इससे जो यश असली हकदारको मिलना चाहिये वह यश हम लेलेते हैं। जिस भलेमानसका बखान करना चाहिये और कराना चाहिये उसके बदले हम अपना बखान करते हैं और कराते हैं। जिस विषयसे सीधे तौरपर हमारा सम्बन्ध नहीं होता तथा जिस काममें हमने असलमें मिहनत नहीं की है उस कामका यश भी हमें मिले तो हम प्रसन्न होते हैं। परन्तु जरा विचार तो कीजिये कि ऐसा करनेका हमें क्या हक है? किसी औरका यश लेलेनेका हमें क्या हक है? ऐसा करना सचमुच बड़ी भारी चोरी

है। इसलिये ऐसी भूलसे बचना, झूठा यश लेनेसे बचना और यशकी भूखमें, यशके लोभमें और यशकी आशामें दूसरे पर अन्याय करनेसे बचना।

९२—हम अपने हित मित्रोंकी अनेक प्रकारकी मदद करते हैं यह बात सच है परन्तु उन्हें प्रभुके रास्तेमें लेजानेके लिये किसी दिन मिहनत करते हैं?

इस जगतमें बहुत आदमी बड़े नेक होते हैं। वे अपने अपने कुटुम्बको सुखी रखनेके लिये बहुत मिहनत करते हैं; अपने मित्रोंकी मदद करनेमें बड़ी उदारता दिखाते हैं; अपने पड़ोसियोंकी समय समयपर यथाशक्ति, सहायता किया करते हैं और निराधार गरीबोंकी तरफ भी उदारताका हाथ बढ़ाते हैं। जैसे—

वे अपनी स्त्रीके लिये यथाशक्ति गहने बनवाते हैं, कभी कभी बहुत तंगी सह कर तथा कर्ज करके भी उसे खुश रखनेके लिये गहने बनवा देते हैं; अपने लड़कोंके लिये जरीदार कुरता टोपी बनवाते हैं; अपने लड़कोंको घरपर पढ़ानेके लिये अच्छे अच्छे ट्यूटर रखते हैं; अपने लड़कोंका ब्याह अच्छी जगह करनेके लिये वर्षों बहुत कुछ परिश्रम किया करते हैं और तरह तरहसे खुशामद करते फिरते हैं। वे अपने मित्रोंके लिये भी यथाशक्ति करते हैं। किसीको अच्छी सलाह देते हैं, किसीको किसीसे उपदेश दिलाते हैं; किसीकी नौकरी लगा देते हैं, किसीका ब्याह करादेते हैं; किसीके लड़केके पढ़नेका प्रबन्ध कर देते हैं; किसीको पैसेकी मदद करते हैं, किसीके जामिन होते हैं और

किसीको और किसी तरह मदद करते हैं। इस तरह अपने पड़ोसियों तथा जात बिरादरीवालोंको भी मौके बे मौके मदद दिया करते हैं तथा गरीबोंको भी दान देते हैं, फटा पुराना कपड़ा लत्ता देते हैं और उनके लिये बहुत जगह बहुत अच्छी बात कहा करते हैं। यों हर जगह वे भलाई करते हैं। इसी तरह बहुतसे मालिक अपने नौकरों पर भी दया रखते हैं और ज्यों ज्यों उनका लाभ बढ़ता जाता है त्यों त्यों वे नौकरोंकी तलब बढ़ाते जाते हैं तथा नौकरीके लिहाजसे उनकी कदर समझ कर इनाम देते हैं। ये सब बातें बहुत ही अच्छी हैं और ये सब काम अच्छे आदमियोंसे ही होते हैं इसमें कुछ सन्देह नहीं। इसलिये ऐसे अच्छे काम करनेवाले नेक गृहस्थोंकी हम प्रशंसा और प्रतिष्ठा करते हैं। तोभी इतना कहना चाहिये कि ऐसे भले मानसोंमें भी एक प्रकारकी भूल रह जाती है। वह यह कि वे जैसे व्यवहारी विषयोंमें बड़े मनसे अपने स्नेहियोंकी मदद करते हैं वैसे उन्हें ईश्वरी रास्तेमें लानेके लिये मदद नहीं करते। इस विषयमें अच्छे अच्छे आदमियोंमें भी बड़ी कचाई देखनेमें आती है। याद रहे कि इस संसारमें और इस जिन्दगीमें सबसे बढ़कर जरूरी बात यह है कि यथाशक्ति अपने स्नेहियों तथा दूसरोंको ईश्वरी ज्ञान दें, उन्हें ईश्वरी रास्तेमें पहुंचावें और उनमें प्रभुप्रेम जगानेका उपाय करें। यह सबसे अधिक महत्त्वकी बात है। क्योंकि ईश्वरके ज्ञानसे ही जिन्दगी सुधरती है, ईश्वरीके ज्ञानसे ही हृदयकी शान्ति मिलती है और ईश्वरके ज्ञानसे ही मरनेके बादका जीवन भी सुधर सकता है। इसलिये ईश्वरी ज्ञान सबसे बड़ी चीज है और यह काम खास करके करने लायक है। इसके सिवा अपने आसरे पड़े हुए स्त्री पुत्र आदि कुटुम्बके मनुष्यों, नौकरों तथा अपनेसे बहुत बातोंमें सम्बन्ध

रखनेवाले भाइयों और मित्रोंको ईश्वरका रास्ता बताना हमारा विशेष कर्तव्य है। जब तक हम यह कर्तव्य न पालें तब तक अधूरे रहते हैं। जगतके और सब विषयोंके ज्ञानसे ईश्वरका ज्ञान श्रेष्ठ है और दूसरी तरह तरहकी व्यवहारी मददोंकी प्रभुके सामने जितनी कीमत हैं उससे ईश्वरी ज्ञानकी कीमत बहुत ज्यादा है। इसलिये जैसे बने वैसे अपने कुटुम्बमें, अनपढ़ स्नेहियोमें, पड़ोसियोंमें, नौकरोंमें और अपनेसे सम्बन्ध रखनेवालोंमें धर्मका ज्ञान फैलानेका उपाय करना चाहिये। सब तरहका कर्त्तव्य करने पर भी जब तक इस विषयमें अंधकार रहे तबतक सब कच्चा है और बिना इकाईके शून्य बराबर है। इसलिये भाइयो और बहनो! आप जैसे अपने स्नेहियोंकी कई तरहसे मदद करते हैं वैसे ईश्वरी रास्ता दिखानेकी मिहनत भी करना। ईश्वरी रास्ता दिखानेकी मिहनत भी करना। यही हमारी विनती है।

९३-कितने आदमी कहते हैं कि भक्ति करनेसे क्या होता है? ऐसोंसे कहिये कि भक्ति करनेका लाभ सामने देख लीजिये।

गुजरातके एक छोटेसे गांवमें एक आदमी रहता था। उसने बम्बई जाकर बहुत धन कमाया। इसके बाद उसने अपने गांवको सुधारने और पानीका कष्ट मिटानेके लिये एक बड़े कुए पर पनचक्की बिठायी। उसका बहुत ऊंचाईका चक्कर बड़े जोरसे गोलाईमें घूमता और बहुत दूरसे दिखाई देता था। यह देख कर आसपासके गंवार आदमी हंसने लगे और आपसमें कहने लगे कि यह सेठ कैसा मूर्ख है। बम्बई जाकर रुपया कमा लाया उसे

इस तरह बढ़ाता है ? इतनी ऊंचाई पर पहिया घुमानेसे क्या फायदा ? बेचारेने व्यर्थ मिहनत की है । ऐसे कहीं पानी मिलता है ? इस प्रकार बातें करते और उस चक्करको देख कर हंसते हंसते उस सेठकी दिल्लगी उड़ाते थे। इसके कुछ दिन बाद उन्होंने देखा कि बहुत ऊंचाईसे फिरते हुए उस चक्करसे बहुत पानी मिलता है, उस पानीसे हौज भरता है, बगीचेमें पानी जाता है और बहुतसे खेतोंमें उसका पानी पहुंचता है । इससे उस चक्करके आस पास बहुत दूर तक हरियाली है। इतना ही नहीं बल्कि जब आग लगती है तब भी टांकीका पानी बहुत काम आता है। यह सब अपनी आंखोंसे देख कर, जो देहाती उस सेठकी दिल्लगी उड़ाते थे वे शरमागये और कहने लगे कि बम्बई-वालेकी अकलको कोई नहीं पहुंच सकता ।

भाइयो ! यह दृष्टान्त दे कर एक सन्त महात्मा समझाते थे कि जैसे पनचक्कीके चक्करसे पानीका सम्बन्ध देहातियोंके ख्यालमें नहीं आता वैसे भक्तिका परम कृपालु परमात्मासे कैसा गाढ़ सम्बन्ध है यह बात बहुतेरे संसारी आदमी नहीं समझते। इससे वे कहते हैं कि भक्तिमें क्या रखा है ? परन्तु भक्तिके चक्करसे जो चाहे वह हो सकता है । जैसे-भक्तिसे हृदयमें शान्ति मिलती है, भक्तिसे पाप कटता जाता है, भक्तिसे आस-पासकी मण्डलीमें मेलजोल बढ़ता जाता है; भक्तिसे व्यर्थकी हाय हाय घटती जाती है; भक्तिसे एक प्रकारका सच्चा सन्तोष आता जाता है; भक्तिसे सद्गुणोंके बीज उगते जाते हैं; भक्तिसे जीवात्माको एक ऊंचे दरजेकी खुराक मिलती है; भक्तिसे जीवको पुष्टि मिलती है; भक्तिसे आनन्द मिलता है; भक्तिसे कितने ही बन्धन कट जाते है और कुछ स्वतन्त्रता आजाती है; भक्तके अन्दर एक नये किस्मका अलौकिक बल आजाता है;

भक्तिसे निकले हुए वचनमें कुछ विशेष प्रभाव होता है; भक्तिसे जगतके सब पदार्थ तुच्छ लगते है इससे बहुतेरी वस्तुओंका मोह घट जाता है; भक्तिसे कर्तव्य पालनेका बल आजाता है; भक्तिसे परमात्माकी तरफकी वृत्ति जागृत होती है; भक्तिसे आत्माका बल समझमें आता है; भक्तिसे ईश्वरके निकट तक आसकते है; भक्तिसे हृदय हलका फूलके ऐसा होजाता है; भक्तिसे अनेक प्रकारकी छोटी छोटी सिद्धियां आपसे आप मिल जाती हैं; भक्तिसे गम खाना आता है; भक्तिसे पुरानी लत तथा हलके दरजेके आचार विचार बदल जाते हैं; भक्तिसे भक्तोंका तेज बढ़जाता है; भक्तिसे अनेक प्रकारके दुर्गुण बिना किसी मिहनतके, आपसे आप छूटते जाते हैं; भक्तिसे महात्माओंके कदम बकदम चलना आता है; भक्तिसे शास्त्रोंका गूढ़ रहस्य समझमें आता है और भक्तिसे अनेक प्रकारके दुःख रोग मिट जाते हैं। इतना ही नहीं, भक्तिसे भगवानके अन्दर जो गुण हैं वे गुण आते जाते हैं। इससे आगे जाकर महात्मा, देवता, अवतार और फिर नरसे नारायण बन सकते है। भक्तिका ऐसा अलौकिक बल है; भक्तिका ऐसा चमत्कारी बल है और भक्तिका ऐसा प्रत्यक्ष बल है। इसलिये भाइयो! दूसरे अज्ञानियोंके कहनेकी ओर देखनेमें मत रहजाना बल्कि भक्तिका चक्कर चलाया करना और उससे महान लाभ लिया करना। महान लाभ लिया करना।



९४–हृदयकी पवित्रताके विषयमें। पवित्रता परमात्मासे आती है।

पवित्रता उत्तमसे उत्तम वस्तु है, पवित्रता अनमोलसे अनमोल है और पवित्रता प्रभुकी प्यारी वस्तु है। इससे पवित्रता प्राप्त करनेके लिये दुनियाके हरएक धर्ममें हुक्म दिया है। जगतमें जितने संत हुए हैं वे सब पवित्रता पर खास जोर देते थे। क्योंकि हृदयमें पवित्रता आनेके बाद ही धर्म सिद्ध होता है; हृदयमें पवित्रता आनेके बाद ही धर्मकी सब क्रियाएं पूरा पूरा फल दे सकती हैं, हृदयमें पवित्रता आनेके बाद ही भक्तिका सच्चा आनन्द भोग सकते हैं; हृदयमें पवित्रता आनेके बाद ही सत्य ज्ञान उत्पन्न होता है और वह हृदयमें ठहरता है, हृदयमें पवित्रता आनेके बाद ही चमत्कार करनेकी शक्तियां आपसे आप आती हैं, हृदयमें पवित्रता आनेके बाद ही दूसरे लोगोंपर गजबका असर किया जा सकता है और हृदयमें पवित्रता आनेके बाद ही जीवन सार्थक होता है तथा हृदयमें पवित्रता आनेके बाद ही मोक्षका सुख भोग सकते है। इसलिये सभी हरिजन पवित्रता रखनेके लिये बहुत परिश्रम करते हैं। तिसपर भी हम देखते हैं कि बहुत ही कम आदमी सच्ची पवित्रता रख सकते है। नहीं तो बहुतेरे आदमी बाहरकी पवित्रतामें ही रहजाते है। इसका कारण यह है कि वे हृदयकी सच्ची पवित्रता रखनेकी कुंजी नहीं जानते। इससे वे पवित्रताके लिये हांफ धुनते रहते हैं परन्तु असली पवित्रता नहीं पाते। इसलिये सच्ची पवित्रता रखनेकी कुंजी हासिल कर लेना चाहिये। इसके लिये सन्त कहते है कि–

परम कृपालु परमात्मा पूर्ण पवित्र है। इसलिये जगतमें भक्तोंके भीतर जो कुछ पवित्रता है वह सब परमात्मासे ही आयी

है। प्रभुके सिवा और किसी वस्तुसे पवित्रता नहीं आसकती। अगर पूरी पवित्रता रखनी हो तो पूर्ण पवित्रतावाले भगवानके अन्दर अपने जीवको लय करना चाहिये और उतनी देर जगतकी सुध भूल जाना चाहिये। ऐसी दशा होनेको शास्त्रमें लय योग कहा है। इस लय योगको हृदयकी पवित्रता कहते हैं। इस लय योगके समय जीवमें जैसी पवित्रता आती है वैसी पवित्रता और किसी समय नहीं आती। इसलिये अगर असली पवित्रता लेनी हो और उस पवित्रताको बनाये रखना हो तो परम कृपालु परमात्मामें जीवको जोड़ रखना और समुद्रमें जैसे नदी गायब हो जाती है वैसे पूर्ण पवित्र और महाआनन्दरूप भगवानमें अपने जीवको गायब कर देना अर्थात् प्रभुके अन्दर अपने जीवको लय करना। ऐसा करनेके लिये हररोज प्रेमपूर्वक तथा नियमपूर्वक सर्वशक्तिमान महान् ईश्वरका ध्यान करना, उसका नाम सुमिरना; उसकी सेवा करना, उसके गुण गाना, उसका उपकार मानना और उसकी महिमा समझ कर दीनतासे उसका दास बनना। ऐसा करनेसे आगे जाकर भगवानमें अपने जीवको लय करना आता है। इस तरह भगवानमें जीव लीन हो तभी हृदयकी पवित्रता आसकती है। सो हृदयकी पवित्रताके लिये प्रेमपूर्वक भक्तिमार्गके ऊपर बताये साधनोंमें लगे रहना चाहिये। ऐसे साधनोंमें लगे रहना कुछ कठिन नहीं है। ज्यों ज्यो हृदयमें पवित्रता आती है त्यो त्यो ऐसे साधनोंमें लगे रहनेसे अधिक आनन्द आता जाता है और जीवमें नया नया बल आता जाता है तथा अधिक अधिक ईश्वरकी कृपा आती जाती है। इसलिये प्रभुसे मिलनेवाली पूर्ण पवित्रता प्राप्त करनेके निमित्त भक्तिमार्गके साधनोंमें लगे रहना। यही हमारी सलाह है।

हृदयको पवित्र करनेके लिये अपनी स्थिति बदलनेकी जरूरत नहीं है।

अपना हृदय पवित्र करनेके लिये जाति बिरादरी छोड़नेकी जरूरत नहीं है; अपना हृदय पवित्र करनेके लिये रोजगार धंधा छोड़नेकी जरूरत नहीं है; अपना हृदय पवित्र करनेके लिये देश या वेश त्यागनेकी जरूरत नहीं है और अपना हृदय पवित्र करनेके लिये वनमें जानेकी जरूरत नहीं है। बल्कि पवित्र होनेकी कुंजी मिल जाय तो घरमें रह कर भी पवित्र रह सकते हैं; रोजगार धंधा करते हुए भी पवित्र रह सकते हैं और अच्छी तरह घर गृहस्थी चलाते हुए भी पवित्र जीवन बिता सकते हैं।

पवित्र होनेके लिये बहुत पढ़ना लिखना नहीं पड़ता; पवित्र होनेके लिये पण्डिताईकी जरूरत नहीं पड़ती; पवित्र होनेके लिये कुछ गूढ़ अध्ययन नहीं करना पड़ता और पवित्र होनेके लिये महा ज्ञानी होना नहीं पड़ता। हम देखते हैं कि बिलकुल अनपढ़ आदमी भी पवित्र होते हैं; बहुत कम पढ़े भी पवित्र होते हैं और बिना बाहरी चतुराईके भोलेभाले भक्त भी बहुत पवित्र होते हैं। इससे समझ सकते हैं कि पवित्र होने के लिये कुछ बहुत बड़े पण्डित होनेकी जरूरत नहीं है।

९५—हृदयकी पवित्रताके लिये अपनी स्थिति बदलनेकी जरूरत नहीं है।

भाइयो! पवित्रताका स्वरूप कैसा है, पवित्रता कहांसे मिलती है और पवित्रता कैसे मिलती है यह बात अच्छी तरह

समझमें न आनेके कारण बहुतेरे हरिजन यह समझते हैं कि अपनी स्थिति बदलनेसे पवित्रता मिलती है । ऐसी समझके कारण पवित्रता लेनेके लिये कोई आदमी अपना घर द्वार छोड़ देता है ; कोई कोई आदमी अपना वेश बदलता है, कोई अपना देश छोड़ता है, कोई अपना धर्म बदलता है और कोई आदमी अपने बूतेसे बाहर काम करता है । तोभी उन्हें सच्ची पवित्रता नहीं मिलती । क्योंकि स्थिति बदलनेके साथ पवित्रताका कुछ सम्बन्ध नहीं है । महात्माओं तथा शास्त्रोंका तो यही सिद्धान्त है कि परम कृपालु परमात्माने हमें जिस स्थितिमें रखा हो उसमें सन्तोषसे रह कर उसके अनुसार भलीभांति धर्म करनेसे हृदयकी पवित्रता मिल सकती है । इसलिये जो ऊंचे भक्त हैं, जो अच्छी समझके भक्त हैं और जो पवित्र भक्त हैं वे जो समय और जो मौका आपड़ता है उसमें राजी रहते हैं और प्रभु जैसे रखे वैसे रहते हैं । ऐसे अर्पण हुए भक्त किसी बातका अफसोस नहीं करते । किसी बातकी चिन्ता नहीं करते या न बूतेसे बाहर कोई काम करते हैं । प्रभुकी जैसी इच्छा होती है वैसे ही चलते है । इससे वे सदा शान्तिमें रहते है । उनके हृदयकी पवित्रता टिकती है तथा बढ़ती है । इसलिये अगर हृदयकी सच्ची पवित्रता लेना हो और उसे बनाये रखना हो तो अपनी स्थितिमें सन्तोषसे रह कर भगवत् इच्छाके अनुसार चलना चाहिये । पवित्रता लेने, उसे बनाये रखने तथा बढ़ानेकी यह सहजसे सहज कुंजी है ।

पवित्र और अपवित्र भक्तोंमें अन्तर ।

हम देखते हैं कि बहुत आदमी देवताओंके दर्शन करते फिरते हैं परन्तु वे अपने हृदयसे पवित्र नहीं हुए रहते । बहुत आदमी बार बार तीर्थ किया करते हैं परन्तु अपने हृदयसे

पवित्र नहीं होते। बहुत आदमी बड़ी उदारतासे बड़ा दान करते हैं परन्तु मनसे पवित्र नहीं होते। बहुत आदमी हर रोज ज्ञानकी बातें किया करते हैं परन्तु हृदयसे पवित्र नहीं होते। बहुत आदमी बाहरका वेश बदलते है, तिलक माला लेते हैं और कंठी किसका दिखाव करते हैं तथा कर्मकाण्ड करते हैं परन्तु उनका अन्तःकरण शुद्ध हुआ नहीं जान पड़ता। क्योंकि यह सब वर्षों करते रहनेपर भी वे बेचारे जहांके तहां रहते हैं। अर्थात् उनकी रहन सहन ज्योंकी त्यों रहती है। उनके विचार भी वैसेके वैसे होते है। इससे समझ सकते हैं कि वे धर्ममें आगे नहीं बढ़े। इसका कारण यही है कि वे अपने हृदयसे पवित्र नहीं होते। इससे उनके हृदयमें दोष रहगया है, उस दोषको वे दूर नहीं कर सकते, वे जहांके तहां रह जाते हैं। जो पवित्र होते है उनके हृदयसे दोष दूर हो जाता है इससे वे धर्मके मार्गमें हररोज आगे बढ़ते हैं। इस बातको भलीभांति समझानेके लिये एक भक्तराज महाराज अपने हरिजनोंसे कहते थे कि—

कितनेही अमीरोंकी बैठकमें बहुत सुन्दर कागजके पौधे सजे रहते है। वे पौधे बाहरसे देखनेमें बहारदार लगते है। क्योंकि उनमें किस्म किस्मके रंगवाले फूल होते हैं, उन फूलों तथा पत्तोंकी नकाशी और बनावट बहुत बढ़िया होती है तथा उनका रंग बड़ा चमकीला होता है। इससे बाहरसे देखनेमें वे पौधे बहुत भले लगते है परन्तु वे कागजके पौधे बढ़ नहीं सकते। जितने बड़े होते है उतने ही बड़े रहजाते है। उन्हीं अमीरोंके दरवाजेके सामने जमीनमें जो छोटासा पौधा उगा रहता है वह हररोज बढ़ता है और थोड़े दिनमें बहुत बड़ा होजाता है। इसका कारण यह है कि वह पौधा जीवित होता

है इससे बढ़ता है। और कागजका पौधा बेजीवका होता है इससे बाहरसे सुहावना लगता है परन्तु अन्दरसे नहीं बढ़ता। पवित्र भक्त, जमीनमें उगे हुए पौधेकी तरह, सदा अपनी भक्तिमें, ज्ञानमें और ध्यानमें आगे बढ़ते हैं। इसलिये हे हरिजनों! आप बाहरसे शोभावाले और भक्तिके ठाटबाटवाले परन्तु भीतरसे न बढ़ सकने योग्य कागजके पौधे समान मत रहजाना; बल्कि जैसे जमीनमें उगा पौधा रोज रोज बढ़ता है वैसे अपने धर्ममें हररोज आगे बढ़ने योग्य होना। यही हमारी सलाह है। जानदार होने तथा आगे बढ़नेके लिये प्रभुसे जुड़े रहना।

९६—हृदयकी पवित्रताके विषयमें। (२)

बहुत आदमी यह समझते हैं कि हम बाहरके कर्म करनेसे पवित्र होंगे परन्तु याद रहे कि बाहरके कर्मसे हृदय पवित्र नहीं होनेका।

कितने आदमी यह समझते है कि फलाने देवताकी पूजा करनेसे पवित्र हो सकते हैं। कितने ब्राह्मण यह समझते हैं कि गायत्रीका जप करनेसे पवित्र हो सकते हैं। कितने आदमी यह समझते है कि दान देनेसे पवित्र हो सकते है। कितने आदमी यह समझते हैं कि अपना धर्म छोड़ कर कोई नया धर्म ग्रहण करनेसे पवित्र हो सकते हैं। कितने आदमी यह समझते हैं कि स्नान लेनेसे पवित्र हो सकते है। कितने आदमी

यह समझते है कि अच्छा गुरु मिलनेसे पवित्र हो सकते हैं। परन्तु असली पवित्रता इन सब विषयोंसे बिलकुल अलग है। यद्यपि इन सब विषयोंसे लाभ होता है इसमें कुछ सन्देह नहीं, परन्तु हृदयकी सच्ची पवित्रता लेनेकी कुंजी कुछ और ही है। सर्व-शक्तिमान और सब बातोंमें परिपूर्ण भगवानका आश्रय लेनेसे, उसका नाम रटनेसे, उसका दास होजानेसे, उसके पास जानेसे और उसमें मिलजानेसे पूर्ण पवित्र हो सकते हैं। पवित्रता कुछ बाहरके कर्मोंसे नहीं आती, सच्ची पवित्रता तो अन्तःकरणसे निकलती है और प्रभुसे आती है। इसलिये अपना जीव जब भगवानके साथ तदाकार होता है और उसमें जुड़ जाता है तभी उसमें सच्ची पवित्रता आ सकती है। भगवानसे विना जुड़े सिर्फ बाहरके कर्मोंसे हृदयकी सच्ची पवित्रता नहीं आती। सच्ची पवित्रता लेनेके लिये तो जो पवित्रताका भंडार है और जो पवित्रताका महासागर है उसके साथ एकरस होना चाहिये। जब ऐसा करना आवे और ऐसी पवित्रताके महासागर में अपने जीवको मिलादेना आवे तभी सच्ची पवित्रता आ सकती है।

पवित्र अन्तःकरणवाले भक्तोंके लक्षण।

हृदयशुद्धिको महात्मा लोग पवित्रता कहते हैं इसलिये शुद्ध हृदयवालेके लक्षण जानना चाहिये। इसके लिये शास्त्रोंमें कहा है कि जिनका अन्तःकरण शुद्ध रहता है वे हरिजन सरल स्वभावके होते है; जिनका अन्तःकरण शुद्ध रहता है वे भक्त सीधे-रास्ते चलनेवाले होते हैं; जिनका अन्तःकरण शुद्ध रहता है उनमें ढोंग-ढकोसला नहीं होता; जिनका अन्तःकरण पवित्र रहता है उनमें दावपेंच या छल प्रपंच नहीं होता। इसके सिवा ज्यों ज्यों हृदयकी पवित्रता बढ़ती जाती है त्यों त्यों धनका मोह घटता जाता है, भोग विलासकी इच्छा घटती जाती है

और मान मर्यादाका लोभ घटता जाता है, इसके बाद आगे आ कर उनके अन्दर बुरा स्वार्थ नहीं रहता। शुद्धहृदय हरिजन बाहरी आडम्बरका कुछ मूल्य नहीं समझते और स्वयं ऐसा कोई ढोंग नहीं करते। दूसरे आडम्बरी लोगोंके चक्रमेंमें नहीं आते। मान अपमान या निन्दाकी भी परवा नहीं करते। ऐसे शुद्धहृदय भक्तोंको बाहर आनन्द नहीं ढूंढ़ना पड़ता। अपने हृदयसे ही उनको आनन्द मिला करता है। इससे वे बाहरी चीजोंकी बहुत परवा नहीं करते।

शुद्धहृदय हरिजनोंमें ऐसा बल होनेका कारण यह है कि वे प्रभुप्रेममें जीते हैं। इससे जैसे जीती मछलियां पानीकी धारामें बह नहीं जातीं वैसे वे साधारण लोगोंकी विचारधारामें बह नहीं जाते। क्योंकि उनमें प्रभुप्रेमका नया जीवन होता है। इसके विरुद्ध जो बिना शुद्ध हृदयके मनुष्य हैं वे बिना प्रभुप्रेमके होते हैं। इससे वे मरी मछलियोंके समान हैं। वे दूसरे अज्ञानियोंके विचारोंकी बाढ़में बह जाते हैं। कहनेको भक्त और पवित्र भक्तमें यह फर्क है। इसलिये याद रखना कि जिन भक्तोंका अन्तःकरण पवित्र हो गया है वे व्यवहारी लोगोंके बीचमें रह कर भी उनसे अलग हैं और उनसे श्रेष्ठ हैं।

हृदयकी पवित्रताकी पहचान।

जिन भक्तोंका हृदय पवित्र है वे सदा आनन्दमें रहते हैं। सुख दुःख आदि अच्छे बुरे प्रसङ्ग आपड़ने पर भी वे अपनी पवित्रता छोड़ना नहीं चाहते। मतलब यह कि पवित्र हरिजनोंको मरना रुचता है परन्तु पाप नहीं रुचता। जिन भक्तोंकी ऐसी स्थिति होती है और ऐसी रहन सहन होती है उन्हें हम हृदयसे पवित्र कहते हैं।

मन माने तौर पर अधिक अधिक कर्म करनेसे पवित्रता नहीं आती ; प्रभुकी इच्छानुसार चलनेसे ही सच्ची पवित्रता आती है ।

भाइयो ! बहुत या बड़ा काम करनेसे सच्ची पवित्रता नहीं आती, प्रभुकी आज्ञानुसार चलनेसे-ही सच्ची पवित्रता आती है। यह ठीक ठीक समझानेके लिये एक देहाती दृष्टान्त दे कर एक भक्तराज महाराज कहते थे कि कोई पुरुष अपनी स्त्रीसे कहे कि तू रोज चार रोटियां बनाना । उसकी स्त्री अपने मनमें अकल बधार कर सोचे कि मेरा पति जितना कहता है उससे कुछ अधिक कर दिखाऊं तभी मेरी खूबी कहलायगी । यह सोच कर वह हररोज आठ रोटियां बनाया करे तो इससे उसका पति खुश नहीं हो सकता । क्योंकि जहां चार रोटियोंकी जरूरत है वहां आठ रोटियां बनानेसे उल्टे घरमें बिगाड़ होता है और उसका समय व्यर्थ जाता है । पति नेक हो तो वह समझा देता है और फिर भी स्त्री न समझे और हररोज अधिक रोटियां बनाया करे तो उस स्त्री पर उसको गुस्सा आता है । वैसे ही प्रभुने हमें जिस स्थितिमें रखा हो और जो धर्म पालनेको कहा हो उसीके अनुसार हमें चलना चाहिये। इसके विरुद्ध अकल-मन्द बन कर अगर हम प्रभुकी इच्छाके उपरान्त अधिक करने जायं तो उल्टे दुखी होते हैं और प्रभुसे विमुख हो जाते हैं । ऐसा न होने देनेके लिये अपनी स्थितिमें रह कर धर्म साधना चाहिये और उसीसे असली पवित्रता लेना चाहिये । बाहरके किसी कर्ममें सच्ची पवित्रता नहीं है, सच्ची पवित्रता तो पवित्रताके महासागर महान प्रभुमें ही है । यह पवित्रता उसके

निकट रहनेसे ही मिल सकती है और अपनी स्थितिका धर्म पालनेसे ही ईश्वरके निकट रह सकते है। स्थितिके बाहर बड़ा काम करने जानेसे उल्टे प्रभुसे विमुख हो जाते हैं। जैसे—

जिस बावली या जिस नदी में बहुत सेवार लगी हो उसमें कोई आदमी पैठे तो वह सेवारसे बचनेके लिये जितना ही हाथ पैर हिलाता है उतना ही उसमें फंसता जाता है। वैसे ही पवित्रता लेनेके लिये जो आदमी उल्टा पल्टा उपाय करता है और झूठा पुरुषार्थ दिखाता है वह पवित्रता पानेके बदले अपने पासकी पवित्रता भी खो देता है। ऐसा न होने देनेके लिये, सच्ची पवित्रता लेनेके लिये जैसे बने वैसे प्रभुके निकट रहने तथा उसके साथ एकरस हो जानेकी कोशिश करना चाहिये। ऐसा करनेसे सच्ची पवित्रता मिल सकती है।

बन्धुओ! ये सब बातें कह कर हम आपको यह समझाना चाहते हैं कि सच्ची पवित्रता कुछ दूर नहीं है। और सच्ची पवित्रता अपनी सामर्थ्यसे बाहर काम करनेमें नहीं है। सच्ची पवित्रता प्रभुके अन्दर है और वह प्रभुकी तरफसे ही जीवोंको मिलती है। अगर सच्ची पवित्रता लेना हो तो अनन्त गुणवान पूर्ण पवित्र प्रभुका ध्यान धरना चाहिये, उसकी महिमा समझना चाहिये, उसके नियम पालना चाहिये और वह जिस स्थितिमें रखे उस स्थितिमें आनन्दसे रहना सीखना चाहिये। अगर ऐसा करना आवे तो आदमी हर जगह हर हालतमें पवित्र रह सकता है। पवित्रता लेनेके लिये बड़े कामोंका मोह मत रखना बल्कि सच्ची पवित्रता लेनेके लिये परम कृपालु परमात्माके साथ एकरस होना और उसमें लीन होना। यही महात्माओंका सिद्धान्त है और यही शास्त्रोंका गूढ़ रहस्य तथा गुप्त तत्व है। हमारी प्रार्थना है कि सच्ची पवित्रता लेनेके लिये पूर्ण पवित्रतावाले

सर्वशक्तिमान महान प्रभुके निकट रहना, महान प्रभुके निकट रहना और उसमें अपने जीवको लय कर देना।

९७-हृदयकी पवित्रताके विषयमें (३)। पवित्रता पानेके लिये क्या करना चाहिये?

पवित्रता ऐसी अनमोल वस्तु है, इसलिये आप सोचेंगे कि इसे हासिल करनेके लिये न जाने क्या करना पड़ेगा। परन्तु सन्त कहते हैं कि पवित्रता प्राप्त करनेके लिये कुछ बहुत अधिक मिहनत नहीं करनी पड़ती, वह सहजमें ही मिलती है। सच्ची पवित्रता और पूरी पवित्रता भगवानके सच्चे भक्तोंमें होती है इसलिये उनका संग करनेसे पवित्रता मिलती है। इस कारण पवित्रता लेनेके लिये कुछ खर्च या परिश्रम करना नहीं पड़ता, वह तो सेंतमें मिलती है। जैसे धमार्थ स्कूलके मास्टरको कुछ फीस नहीं देनी पड़ती बल्कि उससे सेंतमें पढ़ सकते हैं वैसे ही पवित्रता पानेके लिये भगवानके भक्तोंको कुछ भी फीस नहीं देनी पड़ती, वह तो बिलकुल मुफ्त ही मिलती है। परन्तु पवित्रता पा कर उसे बनाये रखना कठिन है। जैसे धर्मार्थ स्कूलमें पढ़नेके लिये कुछ फीस नहीं देनी पड़ती परन्तु उसमें जो सीखना होता है उसके लिये बहुत परिश्रम करना पड़ता है। वैसे ही पवित्रता सन्तोंसे पहले मुफ्त मिलती है परन्तु उसे बढ़ानेके लिये विशेष परिश्रम करना पड़ता है। मुफ्तका स्कूल मिलने पर भी जो विद्यार्थी मिहनत नहीं करता वह पास नहीं हो सकता। वैसे ही प्रभुके प्यारे संतोंके संगसे पहले मुफ्त पवित्रता मिलने

पर भी जो आदमी उसे बनाये रखनेकी कोशिश नहीं करते उनके अन्दर पवित्रता नहीं रह सकती। इसवास्ते पवित्रताको बनाये रखनेके लिये तथा उसे बढ़ानेके लिये उचित उपाय करना चाहिये।

मनुष्य कुछ शुरूसे ही भक्त नहीं होते, बल्कि पीछेसे धीरे धीरे भक्त होते हैं।

बन्धुओ! आज हम जो बड़े बड़े बैरिस्टर देखते हैं वे शुरूसे ही बैरिस्टर नहीं हैं, बल्कि विद्याभ्यास करके धीरे धीरे बैरिस्टर हुए हैं। इसी तरह आज हम जिन जंगी लाटोंको देखते हैं, वे आरम्भमें जंगी लाट नहीं थे बल्कि नौकरी करते करते और दरजा बढ़ते बढ़ते अन्तको कितने ही वर्षोंमें इस ओहदे पर पहुंचे हैं। वैसे ही जो महान गुरु हैं वे कुछ एक व एक भारी गुरु नहीं बन गये हैं बल्कि इसके लिये उन्होंने पहले बहुत परिश्रम किया है तब धीरे धीरे समय आने पर उन्हें यह पद मिला है। याद रखना कि हम भी अगर प्रभुके मार्गमें रहेंगे और आगे बढ़ते जायंगे तो कुछ दिनमें प्रभुके प्यारे पवित्र भक्त हो सकेंगे। इसलिये अभी आपकी स्थिति आपको दुर्बल जान पड़े, कच्ची जंचे या अधूरी मालूम हो तो उससे डर मत जाना और हिम्मत मत हार जाना वरन भक्तिमें लगे रहना तब धीरे धीरे सीढ़ी सीढ़ी चढ़ते चढ़ते पवित्र सन्त बन सकेंगे।

बन्धुओ! इस बातको बहुत अच्छी तरह समझनेके लिये देखिये कि जो छोटे बालक अपनी माताकी गोदमें सोये हैं या खेलते हैं अथवा अपनी माकी उंगली पकड़ कर चलना सीखते हैं तथा जो बालक स्कूलमें पढ़ते हैं पहाड़ा रटते हैं और ककहरा लिखते हैं उनमेंसे कोई दीवान होगा, कोई बड़ा भारी सेठ होगा,

कोई दुनियाको चकरानेवाला आदमी होगा। तोभी हम देखते हैं कि जब तक वे लड़के हैं तब तक किसीको साफ साफ बोलना भी नहीं आता; कोई दूसरेके भरोसे पड़ा है; कोई अनाथालयमें पड़ा है और कोई खराब आदमियोंके साथ तथा खराब संयोगमें पड़ा हुआ है। समय आने पर चक्र बदल जाता है और ऐसी कुढंगी स्थितिमें भी वे बड़े आदमी बन जाते हैं। वैसे ही भाइयो! अभी हम बार बार पापमें पड़ जाते हैं, धर्मके मार्गमें ठोकर खाया करते हैं और जैसा चलना चाहिये वैसा नहीं चलते तथा जितना करना चाहिये उतना नहीं करते तो भी अगर भगवानकी भक्ति किया करेंगे, सन्तोंके चरणमें रहेंगे और प्रभुका प्रेम रखेंगे तो आगे जाकर प्रभुके प्यारे भक्त हो सकेंगे इसमें कुछ भी सन्देह नहीं है। इसलिये अभी भक्तिके आरम्भके समय जैसी चाहिये वैसी पवित्रता न दिखाई दे तो उससे निराश न होना बल्कि प्रेमपूर्वक भजन करना। तब आगे जा कर हृदयकी सच्ची पवित्रता आ सकेगी। हमारी प्रार्थना है कि ऐसी उत्तम प्रकारकी महाआनन्दवाली अलौकिक पवित्र दशा परम कृपालु परमात्मा आपको दे।

जबतक हृदयसे पवित्र न हों तबतक आगे नहीं बढ़ सकते।

बन्धुओ! आपने देखा होगा कि जिस बन्दरकी कमरमें रस्सी बंधी रहती है और रस्सीको मदारी अपने हाथमें पकड़े रहता है वह बन्दर अपनी इच्छानुसार नहीं चल सकता। वह बन्दर जब रास्तेमें चला जाता है तब अगल बगलकी दुकानोंमें बहुतेरी सुन्दर चीजें देखता है। उन सबको लेनेकी उसे इच्छा

होती है। जैसे कहीं केला देखता है तो उसे लेनेको ललचता है; कहीं मिठाई देखता है तो उसे लेनेको ललचता है; कहीं कोई और फल देखता है तो उसे लेनेको ललचता है और कहीं दूध दही या पानी देखता है तो उसे लेनेको ललचता है। परन्तु उसकी कमरमें रस्सी बंधी रहती है और वह रस्सी मदारीके हाथमें होती है इससे अपने मन मुताबिक वह कुछ नहीं ले सकता। मदारी जिधर खींचता है उधर उसे जाना पड़ता है। वैसे ही याद रखना कि जो हरिजन हृदयसे पवित्र नहीं हुए रहते वे हृदयसे किसी न किसी वासनामें फंसे रहते हैं। इससे उन्हें इच्छा होती है कि हम धर्मके अमुक अमुक काम करें परन्तु वैसा वे कर नहीं सकते। इसका कारण यह है कि उनका हृदय पवित्र नहीं हुआ रहता इससे वे आशा, तृष्णाकी रस्सीमें बंधे रहते हैं और इच्छा रहने पर भी धर्मके मार्गमें जैसा चाहिये वैसा आगे नहीं बढ़ सकते।

यही बात और अच्छी तरह समझानेके लिये एक सन्त कहते थे कि मथुरामें दो चौबे थे। उन्होने एक दिन खूब भंग पी और फिर गोकुल जानेके लिये डोंगीमें बैठे, दोनों जन अपने हाथसे खूब डांड़ खेने लगे। नाव पानीमें डगमगाने लगी। भंगके नशेमें उन चौबोंने यह समझा कि हम खूब जोर लगाते हैं इससे हमारी नाव बड़ी तेजीसे जा रही है। ऐसा करते करते बहुत समय बीता और डांड खेते खेते वे थक गये परन्तु गोकुल नहीं नियराया। तब वे सोचमें पड़े कि अभी तक गोकुल नहीं दिखाई देता। तब किनारे खड़े किसी और आदमीने कहा कि अभी तो यह मथुराका ही घाट है, तुम यहांसे हटे हो कहां? यह सुन कर चौबेजी सोचने लगे। पहले तो उसकी बात नहीं मानी परन्तु पीछे भांगके नशेसे

जरा आंख खोल कर नजर गड़ा कर देखा तो मालूम हुआ कि उस आदमीने सच कहा है और वे मथुराके ही घाटपर हैं, यह देख कर वे विचारने लगे कि ऐसा क्यों हुआ । हमने इतना डांड खेया और इतनी मिहनत की तौभी जहांके तहां क्यों हैं ? पीछे जांच करनेपर पता लगा कि नावकी रस्सी किनारे बंधी थी, इससे डांड़ खेनेपर नाव पानीमें हिलती डोलती और जरा आगे पीछे होती थी परन्तु आगे नहीं बढ़ सकती थी ।

बन्धुओ ! इसी तरह बहुत आदमी धर्ममें आगे बढ़नेके लिये वर्षों हाथ पैर पीटा करते है परन्तु असलमें जहांके तहां रहते हैं। उनका जीव प्रभुमे लय नहीं होता। इसका कारण यह है कि उनके हृदयकी शुद्धि नहीं हुई रहती । इससे उनके हृदयका बन्धन नहीं कटता और वे प्रभुके रास्तेमें आगे नहीं बढ़ सकते । आजसे याद रखना कि हम जिसको पवित्रता कहते हैं वह कुछ और ही वस्तु है। हम नहाने धोनेको माला तिलकको, जटा भस्मको या बाहरके त्याग वैराग्यको पवित्रता नहीं समझते । हृदयका बंधन कटजानेको सच्ची पवित्रता समझते हैं और उस किस्मकी पवित्रता आपसे चाहते है । अगर सच्चा भक्त होना हो तो इस तौरपर प्रभुसे जुड़जाना सीखिये कि हृदयका बन्धन कट जाय । इस तरह प्रभुसे जुड़ जाना सीखिये कि हृदयका बंधन कटजाय ।



९८–हृदयकी पवित्रताके विषयमें (४) पवित्र होनेके बाद जो सत्कर्म किया जाता है उसकी कीमत बहुत ज्यादा है ।

बहुत आदमी यह कहते हैं कि शुभ कर्म करनेसे हृदयकी

शुद्धि होती है। परन्तु हम यह समझते हैं कि हृदय शुद्ध होनेसे पहले जो कुछ तप, दान आदि कर्म किये जाते है उनकी कुछ बहुत कीमत नहीं है। क्योंकि हृदय शुद्ध हुए विना जो कर्म किये जाते हैं उनको प्रभु अंगीकार नहीं करता इससे उन कर्मोंसे कुछ बहुत बड़ा फल नहीं मिलता। चित्तशुद्धि होनेके बाद जप, तप, तीर्थ, व्रत, दान, ध्यान आदि जो कुछ किया जाय उसका मूल्य बहुत अधिक होता है। क्योंकि चित्तशुद्धि होनेसे इन कर्मोंको करनेकी भावनाएं बदलजाती हैं। इसके सिवा चित्तशुद्धि होनेके बाद जो कर्म किये जाते हैं वे गंजबके बलसे होते हैं, इससे बहुत जल्द फल दे सकते हैं। सब हरिजनोंको चाहिये कि अपने जीवको भगवानमें जोड़कर अपने अन्त:करणको पवित्र बनानेकी चेष्टा करें।

प्रभुके रास्तेमें आगे बढ़े हुए सन्तों और नौसिख भक्तोंमें जो अन्तर है उसका खुलासा।

जो भगवानके बड़े भक्त हैं, महात्मा है और सन्त है वे धर्मके मकानमें ऊपरी मंजिलपर रहते हैं और जो नौसिख भक्त है वे धर्मके मकानमें निचले हिस्सेमें रहते है। मतलब यह कि जैसे किसी सुन्दर बंगलेमें अमीर ऊपर रहते हैं और दरवान, खिदमतगार, गाड़ीवान आदि नीचेके खण्डमें रहते हैं वैसे सन्त ऊपर रहते हैं और नौसिख छोटे भक्त नीचे रहते हैं। परन्तु इसमें ढारसकी बात यह है कि हम सब एकही मकानके रहनेवाले हैं। इसलिये अगर साधनसे रहेंगे और प्रेम रख कर सदा अपने साधनमें आगे बढ़ा करेंगे तो किसी न किसी दिन ऊपरकी मंजिलमें

भी जा सकेंगे और बड़े सन्तोंकी तरह पवित्र भी हो सकेंगे। सो, निराश न हो कर ईश्वरकृपासे जो साधन मिले है उनसे लाभ उठाना और उनमें आगे बढ़ते जाना। अफसोस करनेसे कुछ नहीं होता, भजन करनेसे होता है। अगर सच्ची पवित्रता दरकार हो तो जैसे बने वैसे भजनका जोर रखना यही हमारी विनती है।

कोई एकाएक पवित्र नहीं हो जाता ; इसलिये पवित्र होनेमें देर लगे तो निराश मत होना।

कोई जिज्ञासु हरिजन जब पहलेपहल भक्तिमार्गमें पैर रखता है तब उसे आसुरी सम्पत्तिसे लड़ाई करना पड़ता है। हम सब अभी इस लड़ाईके मैदानमें हैं ; इससे इस लड़ाईका कष्ट तो सहना ही पड़ेगा। जब यह लड़ाई हो जायगी और उसमें हम जीत जायंगे तब शान्तिका सुख भोग सकेंगे। इसलिये अभी जबतक लड़ाईका समय है तबतक अगर पूरी पूरी पवित्रता न आवे तो निराश मत हो जाना। क्योंकि अभी हमें देह है, इन्द्रियां है और मन है। फिर बुरा समय है, बुरी संगत है और दूसरे कितनेही बुरे संयोग हैं, इससे वारवार पापमें पड़जाते है और पूर्ण पवित्र नहीं होते। परन्तु इससे हिम्मत मत हारना और निराश मत होजाना। अगर हम सदा भगवानके हो कर रहेंगे, उसका आसरा रखेंगे और उसके बनाये साधन करते जायंगे तो उसकी कृपासे आगे जा कर अवश्य सच्ची पवित्रता पा सकेंगे। अभी धीरज धर कर आसुरी संपत्तिके साथ लड़ना चाहिये और मनमें जो बुरे विचार आवें उन्हें दूर करनेकी कोशिश करना चाहिये। अगर इस तरह वार वार हुआ करे तो धीरे धीरे पवित्रता बढ़ती जाती है।

दूसरे, यह बात भी याद रखना कि सांपके भीतरसे जब नया चमड़ा आता है तब उसकी पुरानी कैंचुल आपसे आप

उतर जाती है। वैसेही ईश्वरभक्ति साधते साधते बहुत दिन बाद जब उचित समय आवेगा तब आपसे आप सारी अनुकूलता आती जायगी, आपसे आप पाप घटता जायगा और पवित्रता बढ़ती जायगी। इतनी बात ध्यानमें रखना कि यह सब एकसाथ ही नहीं होजाता। जब सीढ़ीपर चढ़ना होता है तब सब पैड़ियों पर एकसाथ नहीं चढ़जाते वरंच क्रमक्रमसे और धीरे धीरे चढ़ते है। इसी तरह आम एक दिनमें नहीं पकजाता; जब उसका समय आता है तब पकता है। वैसेही भक्ति करनेसे हृदयका बंधन काटनेवाली पवित्रता एकदम नहीं आजाती वरंच ज्यो ज्यो भक्ति बढ़ती जाती है, ज्यों ज्यो प्रभुप्रेम बढ़ता जाता है और अच्छी समझ होती जाती है त्यो त्यो चित्तकी शुद्धि होती जाती है। इसलिये चित्तकी शुद्धि होनेमें समय लगे तो उससे निराश मत होना; बल्कि भगवानकी महिमा समझ कर भगवानकी भक्तिमें तथा सत्कर्मोंमें लगे रहना। परमकृपालु परमात्मा अवश्य कृपा करेगा और पवित्र बनावेगा। इसमें कुछ भी सन्देह नहीं है। पवित्र होनेके लिये निराश न हो कर भक्तिमें लगे रहना। भक्तिमें लगे रहना।

हृदयकी पवित्रता माने क्या?

जीव जब प्रभुसे जुड़ा रहता है तब प्रभुकी पवित्रता जीवमें उतरती है। उसको हम हृदयकी पवित्रता कहते है। हृदयकी पवित्रता लेनके लिये हरिजनोंको चाहिये कि अपने जीवको प्रभुके साथ जोड़ रखें। अपने जीवको प्रभुसे जोड़नेके लिये ईश्वरी ज्ञान तथा ईश्वरका ध्यान ये दो चीजें होनी चाहियें। ज्ञान और ध्यान विना जीव प्रभुसे जुड़ नहीं सकता। जीव जबतक प्रभुसे न जुड़े तबतक हृदयमें पवित्रता नहीं आसकती। सो हृदयको

पवित्र रखनेके लिये सर्वशक्तिमान महान ईश्वरकी महिमा समझने योग्य ज्ञान प्राप्त करना चाहिये और एकाग्र होकर अन्तःकरणसे प्रभुका ध्यान धरना सीखना चाहियें। ये दोनों बातें कठिन हैं। इन दोनोंको सिद्ध करनेके लिये धर्मके दूसरे कितनेही नियम पालना चाहिये। जैसे—प्रभुका नाम स्मरण करना चाहिये; अपना कर्म प्रभुके अर्पण करना चाहिये; प्रभुके लिये कर्म करना चाहिये; प्रभुके नियम पालना चाहिये; प्रभु जिस स्थितिमें रखे उस स्थितिमें आनन्दसे रहना चाहिये, सुख दुःखमें समभाव रखना चाहिये और उसको भगवत् इच्छा जान कर भोग लेना चाहिये तथा जैसे बने वैसे सब प्रकारके पापसे दूर रहना चाहिये। जब ऐसा करें तब ईश्वरका सच्चा ज्ञान मिलता है और पीछे सच्चा ध्यान धरा जा सकता है। जब ज्ञान तथा ध्यान जमता और दृढ होता है तब हृदयकी सच्ची पवित्रता आसकती है। ज्यों ज्यों प्रभुका ज्ञान तथा ध्यान बढ़ता जाता है त्यों त्यो हृदयकी पवित्रता बढ़ती जाती है। इसलिये याद रखना कि हम हृदयकी पवित्रताकी जो बात कहते हैं वह कुछ बाहरकी पवित्रताके लिये नहीं है; ऊपरी पवित्रताके लिये नहीं है और नहाने धोने या केवल शरीर शुद्ध रखनेकी पवित्रताके लिये नहीं है; वरंच प्रभुमें स्वभावतः जो पवित्रता मौजूद है उसे अपने जीवात्माके अन्दर उतारनेको हम हृदयकी पवित्रता कहते है। हम चाहते हैं कि आप ऐसी सच्ची पवित्रता पावें।

सारांश यहाकि जब पहली वर्षा होती है तब जैसे घरके छप्पर, रास्ने और पेड़के ऊपरसे सब कूड़ा कर्कट धुल जाता है और वे सब बहुत स्वच्छ और सुन्दर होजाते हैं वैसे जिन भक्तोंके हृदयमें पवित्रता आजाती है उनके हर काममें चमक

आजाती है ; उनकी हर वृत्तिमें आनन्द आजाता है, उनकी रहन सहनमें उग्रता आजाती है; उनकी भावनाओंमें बल आजाता है; उनकी वाणीमें मिठास आजाती है ; वे प्रभुकी इच्छाके अधीन हो कर अपना जीवन बिता सकते हैं और पवित्रताके महासागर सर्वशक्तिमान महान ईश्वरके स्वरूपमें अपने जीवात्माको लय कर सकते हैं तथा प्रभुप्रेमसे अलौकिक आनन्द भोग सकते हैं। यह सब अन्तःकरणकी पवित्रतासे होता है और ऐसी सच्ची पवित्रता प्रभुसे मिलती है। इसलिये अगर महान आनन्द भोगना हो तो सच्ची पवित्रता प्राप्त कीजिये। सच्ची पवित्रता प्राप्त करनेके लिये अपने जीवात्माको भगवानमें लीन कीजिये और अपने जीवात्माको भगवानमें लीन करनेके लिये प्रभुके नियम पालिये, प्रभुकी इच्छानुसार चलिये, प्रभुका स्मरण कीजिये, प्रभुका ध्यान धरिये, प्रभुका ज्ञान लीजिये और सब बातोंमें प्रभुके हो कर रहिये। तब आप सच्ची पवित्रता पावेंगे और उसका महान आनन्द भोग सकेंगे। हम चाहते हैं कि ऐसा महाभाग्यशाली अवसर परम कृपालु परमात्मा आपको शीघ्र दे।

याद रहे कि आप भक्त हो तो दूसरोंको हैरान करनेका आपको हक नहीं है ; अर्थात् मतलबी भक्त मत होना।

बहुत आदमी जब भक्त होते हैं तब उल्टे कुढ़ङ्गे स्वभावके बन जाते हैं। कितने भक्त निहंग लाड़ले हो जाते हैं; कितने भक्त दूसरोंकी ओर लापरवाही दिखानेवाले होते हैं; कितने भक्त मनके जोशमें आ कर अपने ही गुमानमें चूर रहते हैं; कितने भक्त मनमानी चाल पर चलते हैं, कितने भक्त अपने शरीरको तरह तरहसे कष्टमें डालनेको ही भक्ति समझते हैं और कितने भक्त कितने ही नियम न मानने और दूसरोंके अधीन न रहनेमें ही भक्ति समझते हैं। इसका परिणाम यह होता है कि बहुतसे

भक्तोको खाने पीनेकी बहुत परवा नहीं होती, इससे खाने पीनेमें अबेर सबेर हो तोभी उनका चल जाता है। परन्तु उनकी इस चालढाल्से घरके आदमियोको इन्तजारीमें बैठे रहना पड़ता है। दूसरे हित नातेके यहां भोज हो तो उनको भी हैरान होना पड़ता है। भक्त यह समझते हैं कि भजन कीर्तन करते हों, दर्शन करने गये हों या पूजा पाठ करते हों तो उसमें घंटे दो घंटे देर हो जानेमें क्या हर्ज है? खाने पीनेका इतना अधिक ख्याल कौन करे? हम तो किसी दिन दोपहरको जीमते हैं, किसी दिन तीसरे पहरको जीमते हैं, किसी दिन संध्याको जीमते हैं, किसी दिन रातको जीमते हैं और किसी दिन भक्तिकी लहर चढ़जाय तो बिना खाये भी रह जाते हैं। खाना है ही क्या? यह समझ कर वे खाने पीनेमें बड़ी लापरवाही रखते हैं। ऐसी लापरवाहीसे घरके आदमियोंको तथा आप जहां खाते हो वहांवालोको कितना हैरान होना पड़ता है इसका ख्याल इन्हें नहीं आता। परन्तु इसका ख्याल रखना बहुत जरूरी है। हरएक भक्तको इस बातकी पूरी सावधानी रखना चाहिये कि उसके लिये और किसी आदमीको कष्ट न हो। किन्तु यहां यह होता है कि अपनी मौजके लिये, अपने यशके लिये, अपनी खुमारीके लिये, अपनी लापरवाहीके लिये और अपनी बड़ाई या अभिमानके लिये दूसरे हैरान किये जाते हैं। कभी कभी नहीं, अक्सर ऐसा होता है। तोभी बहुतेरे भक्त इसमें अपनी भूल नहीं समझते उल्टे चतुराई और खूबी समझते हैं। इससे ऐसी भूलसे छुटकारा नहीं पाते। उनकी भूल सुधारनेके लिये यहां इस किस्मके कुछ और दृष्टान्त देना उचित जान पड़ता है।

कितने भक्त भजन गाने और सुननेमें ऐसे गर्क हो जाते हैं कि बड़ी रात तक जागते हैं और सबेरे बहुत देरसे उठते हैं तथा कितने भक्त बहुत सबेरे उठते हैं परन्तु उनकी इस चालसे उनके

बाल बच्चों तथा घरके दूसरे आदमियोंको कितनी अड़चन सहनी पड़ती है इसका ख्याल वे नहीं करते। कितने भक्त जब अपनी भक्तिमें लगे रहते हैं उस समय लड़के खेलते हों या बातचीत करते हों तो उनको नहीं सोहाता; इससे वे बार बार अपने लड़कोंको डांटते हैं। इसके सिवा छोटे बच्चोंको जो सुबीता करदेना चाहिये तथा जो स्वाधीनता देना चाहिये और उनपरें जो स्नेह रखना चाहिये वह नहीं रखसकते। इस विषयमें उनकी भक्ति उड़जाती है। भजन गाने, माला फेरने, सत्संग मण्डलीमें जाने और देवता पूजनेमें वे भक्त होते हैं परन्तु अपने बालकोंसे मायालुताका बर्ताव करनेमें भक्त नहीं होते और फिर भी यह भूल उनकी समझमें नहीं आती। यहांतक कि अपने लड़कोंसे लापरवाही दिखानेमें उलटे बुद्धिमानी समझते हैं और दूसरोंको दिखाते हैं कि हमें लड़कोंका मोह नहीं है। ऐसा करना एक किस्मकी बड़ी भारी भूल है इस बातको वे नहीं मानते इससे उनकी यह भूल सुधरने नहीं पाती। भक्तोंको इस भूलसे बचना चाहिये।

बहुतेरे भक्त समयकी पाबन्दीमें बड़े ही लापरवा होते हैं। वे किसी मित्रके यहां नौ बजे आनेका वादा करते हैं तो ग्यारह बजे जाते हैं। एक बजेका वादा हो तो तीन बज जाते हैं तीन बजेको कहा हो तो ६ बज जाते हैं और कभी कभी तो वादेके दिन जाते ही नहीं। जब दूसरे या तीसरे दिन उस आदमीसे भेंट होती है तो कहते हैं कि फलानी जगह बैठनेमें मन लग गया इससे नहीं आसके। याद था मगर कथामें ऐसा आनन्द आगया कि उठ नहीं सके। ऐसा कभी कभी नहीं, बहुधा हुआ करता है। इसका ख्याल नहीं होता कि इससे अपने स्नेहियोंको कितनी अड़चल पड़ती है। जो सच्चे भक्त हैं उन्हें यह सब समझ लेना चाहिये और इस

बातका बहुत ख्याल रखना चाहिये कि अपने कारण कोई आदमी दुखी न हो।

कितने भक्त अपने यहां बड़ी रात तक भजन कीर्तन कराते है। उस समय झांझ मंजीरे तबला ढोलक हारमोनियम आदिकी धूमधाम होती है। अगर कोई अच्छा गवैया मिल गया तो अक्सर रातके दो तीन बज जाते है। ऐसे कामको भक्त अच्छा समझते हैं और रात रात भर भजन गवानेमें बड़ाई मानते है परन्तु इस बातका ख्याल नहीं करते कि मकानके और पड़ोसके आदमियोंको कितना कष्ट होता है और मनुष्योंको जागनेसे कितनी हैरानी होती है। ऐसी ऐसी कितनी ही बातोंकी ओर उनका ध्यान नहीं जाता। परन्तु आजकलके जमानेमें कानून मानना चाहिये, लोगोंके विचार मानना चाहिये, अपने शरीरकी हालतका ख्याल करना चाहिये, अपने कुटुम्बके सुखकी तरफ देखना चाहिये और जैसे बने वैसे नियमसे रह कर भक्ति करना सीखना चाहिये। तभी आगे जा कर सच्ची भक्ति हो सकती है। जो इन विषयों पर ध्यान नहीं देते और अपनी धुनमें ही झूमते तथा मनमानी करते है और अपने कारण दूसरोंकी हैरानीकी परवा नहीं करते वे मतलबी भक्त कहलाते हैं, स्वार्थी भक्त कहलाते हैं, अज्ञानी भक्त कहलाते है और स्वेच्छाचारी भक्त कहलाते हैं। ऐसा करनेवाले सच्चे भक्त नहीं कहलाते। ऐसा मतलबी भक्त होनेसे बचना और इस बातका खास ख्याल रखना कि अपने कारण किसी आदमीको हैरान न होना पड़े तथा भक्ति बदनाम न हो।

९९—खरे और खोटे भक्तोंके विषयमें।

बहुतेरे आदमी भक्त कहलाते हैं परन्तु उनमें जैसी चाहिये वैसी भक्ति नहीं होती। सिर्फ बाहरसे नामके भक्त होते हैं और

तिलक माला भगवा आदि बाहरी आडम्बरके कारण भक्त कहलाते हैं। भक्त होनेके लिये अपने अन्तःकरणमें जो सुधार करना चाहिये और अपनी रहन सहनमें जो फेर बदल करना चाहिये वह नहीं करते। तोभी बहुत लोग उन्हें भक्त समझनेकी भूल किया करते है। ऐसा न होनेके लिये सब भाई बहनोंको जान लेना चाहिये कि सच्चे भक्त कैसे होते हैं और झूठे भक्त कैसे होते हैं। इस विषयमें संत कहते हैं कि–

खरे रुपये और खोटे रुपयेमें जितना फर्क होता है उतना ही फर्क सच्चे भक्त और झूठे भक्तमें होता है। खोटा रुपया जबतक असली सराफके हाथ नहीं पड़ता तबतक सच्चा रुपया समझा जाता है परन्तु जब कसौटीपर चढ़ता है तब तुरत ही उसका खोटापन मालूम हो जाता है। वैसे ही जो खोटे भक्त हैं वे खरे महात्माओंके यहां तुरत पहचान लिये जाते हैं।

घरमें स्त्रियोंके बहुतसे सुन्दर चित्र रंगे हों तो उन चित्रोंकी स्त्रियां घरके काम काज नहीं कर सकतीं। वैसे ढोंगी भक्तोंने भक्तिके बाहरी चिन्ह धारण कर लिये हो तो उससे उनके हृदयको सन्तोष नहीं होता।

अमीरोंके घर लड़कोंके खेलनेके लिये, खिलौनेके घोड़े होते हैं। उन घोड़ोंमें और उनके तबेलेमें बंधे अरबी घोड़ोंमें जितना अन्तर है उतना ही अन्तर झूठे और सच्चे भक्तोंमें है।

तजके पेड़की सिर्फ छाल काममें आती है उसका बीज किसी काम नहीं आता। वैसे ही जो झूठे भक्त हैं उनका सिर्फ बाहरी ढंग भक्तके ऐसा लगता है। वे दुनियाके किसी काम नहीं आते।

जलती मोमबत्ती और बेजलती मोमबत्तीमें जितना फर्क होता है उतना फर्क सच्चे भक्त और झूठे भक्तमें है। जलती मोम-

बत्तीसे बहुत आदमियोंको रोशनी मिलती है परन्तु बेजलती मोमबत्तीसे किसीको रोशनी नहीं मिलती। वैसे जो सच्चे भक्त हैं उनसे बहुत लोगोंको बहुत तरहका लाभ होता है; उनके हृदयमें शान्ति, आनन्द, तृप्ति और ईश्वरी ज्ञान आदि उत्तम वस्तुओंका प्रकाश होता है और वह उनके आसपासके लोगोंको भी मिलता है। परन्तु जो झूठे भक्त हैं उनमें यह कुछ नहीं होता, इससे वे बेजलती मोमबत्तीके समान हैं।

जमने लायक बीज और बेजमने लायक बीजमें जितना फर्क है उतना फर्क सच्चे और झूठे भक्तमें है। जो सच्चे भक्त हैं वे जमने लायक बीजके ऐसे हैं, उस बीजसे बहुत सुन्दर और बड़े पेड़ होते हैं और उसमें कीमती फल लगते हैं। जिस बीजकी जमनेकी शक्ति नष्ट हो जाती है वह जहांका तहां पड़ा रहता है और थोड़े दिनमें सड़ जाता है। वैसे जो ढोंगी भक्त हैं उनका भी थोड़े समयमें नाश हो जाता है उनमें कोई फल या फूल नहीं लगता अर्थात् वे दूसरे आदमीको भक्त नहीं बना सकते। जो सच्चे भक्त हैं वे सैकड़ों आदमियोंको अपने समान भक्त बनाते हैं।

घरमें लड़कोंके खेलनेके लिये कुत्ते, बिल्ली, तोता मैना आदि खिलौनेके जानवर होते हैं वे बिना बलके होते हैं इससे जैसेके तैसे रहते हैं। परन्तु महल्लेमें जो कुत्ते होते हैं, घरमें जो बिल्ली होती है, तबेलेमें जो गाय भैंस तथा पींजरेमें तोता मैना आदि जो जानवर होते हैं वे जानदार होते हैं इससे हरसाल उनसे नये नये बच्चे पैदा होते हैं और उनकी बढ़ती हुआ करती है। वैसे ही जो खोटे भक्त हैं वे मुर्दे समान हैं इससे उनसे नये भक्त नहीं हो सकते। सच्चे भक्त जीते जागते होते हैं इससे उनकी मददसे और कितने ही भक्त होते हैं।

बन्धुओ! इन सब दृष्टान्तोंसे आप अब समझ गये होंगे कि

सच्चे भक्त कैसे होते है और झूठे भक्त कैसे होते हैं। जो सच्चे भक्त हैं वे प्रभुकी कृपा पाये रहते हैं इससे उनमें प्रभुका प्रेम और प्रभुका ज्ञान होता है और ये दोनों सर्वोत्तम तथा सबसे बड़ी अलौकिक वस्तुएं दूसरोंको दे कर मरते हैं। परन्तु जो खोटे भक्त हैं उनमें ऐसी सच्ची वस्तुएं होतीं ही नहीं, इससे वे किसीको ऐसी अलौकिक वस्तु नहीं दे सकते, उनकी भक्ति नहीं बढ़ती। सच्चे भक्तोंका स्वर्गवास हो जानेपर भी उनके पीछे भक्ति बढ़ा करती है और वे भी जबतक जीते है तबतक इस संसारमें रह कर स्वर्ग भोगा करते हैं तथा प्रभुप्रेमसे तर रहते हैं।

बताइये, अब आप खरे और खोटे रुपयेका फर्क समझे कि नहीं ? और विश्वास हुआ कि नहीं कि खोटा रुपया बाजारमें नहीं चलता ? जो विश्वास हुआ हो तो अब सच्चे भक्त हो जाइये और सच्ची भक्ति करना सीखिये। यही हमारी भक्ति है।

१०० — सच्चे भक्तोंकी पहचान।

बहुत आदमी ऐसे हैं जो दुनियामें भक्त कहलाते हैं परन्तु भीतरसे भक्त नहीं होते। और कितने आदमी भक्तके नामसे बहुत प्रसिद्ध न होनेपर भी हृदयसे सच्चे भक्त होते हैं। इससे भक्तोंको पहचाननेमें अक्सर बहुत आदमी ठगे जाते हैं। जो भोलेभाले साधारण मनुष्य हैं वे आडम्बरी आदमियोंको तथा जिनके नाम बहुत प्रसिद्ध होगये हैं उन्हींको भक्त समझा करते हैं, सच्चे भक्तोंको जानते भी नहीं। ऐसी भूल न होनेके लिये यह बात जान लेना चाहिये कि सच्चे भक्त कैसे होते हैं और उन्हें कैसे पहचानना चाहिये। इसके लिये सन्त कहते हैं कि—

बहुत बड़े राजाके दरबारमें रहनेवाले मुसाहिब खराब लोगोंके साथ नहीं फिरते और न मिलते। वैसे ही जो भगवानके दरबारमें रहनेवाले भक्त है तथा जो भगवानको अपने हृदयके अन्दर रखनेवाले भक्त है वे कभी व्यवहारी जंजालवाले मनुष्योंसे नहीं मिलते और भगवानसे विमुख अज्ञानी आदमियोंसे मित्रता नहीं रखते। ऐसा जान पड़े कि यह भक्त मायिक लोगोंके साथ ही बहुत रहता है तो समझ लेना कि वह अभी कच्चा भक्त है। भगवानकी रसिकताका सच्चा आनन्द अभी उसे नहीं मिला है। भगवानके बडप्पन और भगवानके प्रेमका महा आनन्द उसमें आजाय तो वह जंजाली आदमियोंमें नहीं घूमता। इसलिये भक्तोंकी पहली पहचान यह है कि वे यथाशक्ति भगवानके साथ और भगवानके हरिजनोंके साथ ही रहते हैं, जगतके जंजाली आदमियोंसे बहुत नहीं मिलते।

जिन भक्तोंका जीव ईश्वरसे जुड़ा रहता है उनका मन बहुत बड़ा होजाता है इससे व्यवहारकी छोटी छोटी बातें उनपर बहुत असर नहीं कर सकतीं। इतना ही नहीं, बहुत बड़ा मन हो जानेपर दूसरे आदमियोंसे उनमें अनेक प्रकारकी विशेषता आजाती है। इससे वे हर विषयमें बहुत उदार होते हैं। जैसे–धन खर्चनेमें उदारता, सेवा करनेके काममें उदारता, विचारोंमें उदारता और ऐसी ही बहुत चीजोंमें उदारता आजाती है। जिनका मन ऐसा बड़ा हो गया हो उन्हें सच्चा भक्त समझना। जिनका मन बहुत छोटा है उन्हें महान भक्त मत समझना। क्योंकि जिनके मनमें भगवान रहता है उनका मन छोटा नहीं रह सकता। उनका मन दिन दिन बड़ा होता जाता है। इसलिये मनके बड़प्पनसे भी भक्तकी पहचान हो सकती है।

जो महान भक्त है, जो प्रेमकी ताला कुंजी लगे हुए भक्त है

और जो प्रभुके प्रेममें गले हुए भक्त हैं वे दुनियादारीका जंजाल अपने हृदयमें घुसने नहीं देते। क्योंकि उनके चित्तमें इस जगतके मायिक सुख और वैभवकी कीमत बहुत घट जाती है। इससे जगतका मोह उनके मनसे निकल जाता है तथा जगतकी विषयवासना सुख भोगनेकी आशा-तृष्णा मर जाती है। उनको अनुभव हो जाता है कि ईश्वरी आनन्दके आगे मायाके सुखके लिये हाथ पैर पीटना मलाई छोड़ कर मठा पीनेके समान है। ऐसा अनुभव होनेसे उनका जगतसे मोह घट जाता है और व्यवहारी मनुष्योंको जगतके जो सुख बहुत बड़े और अच्छे लगते हैं वे सुख ऐसे सच्चे भक्तोंको फीके और नीरस लगते हैं तथा यहांका बड़प्पन उन्हें पोल सा लगता है। इससे ऐसी बातोंमें उनका मन नहीं लगता। इस प्रकार वस्तु समझ कर जिसका मन जगतके मोहसे निकल जाय उसे सच्चा भक्त समझना।

व्यवहारी लोगोंको जिन बातोंमें बहुत सुख दुःख लगता है उन बातोंमें सच्चे भक्तोंको बहुत सुख दुःख नहीं लगता। इतना ही नहीं, जिस किस्मके दुःखसे तथा जिस किस्मकी अड़चलसे मोहवाले आदमी बहुत घबरा जाते हैं, छटपटाने लगते हैं और आकाश पाताल एक कर डालते हैं तथा अक्सर बहुत अफसोसमें रहते हैं उस किस्मके दुःखका भी उत्तम भक्तोंपर बहुत असर नहीं होता। क्योंकि वे भगवदिच्छाको समझे रहते हैं और उनको विश्वास रहता है कि दुःख भी कुछ मदद करने तथा आगे बढ़ानेके लिये ही आता है, इससे वे व्यवहारी लोगोंकी तरह दुःखसे घबरा नहीं जाते। इस प्रकार दुःखके समय धीरज रखना और दुःखका धक्का अपने दिलपर न लगने देना भी अच्छे भक्तका बड़ा लक्षण है।

बन्धुओ ! आप जानते है कि सच्चे भक्त ऐसी ऊंची स्थितिमें कैसे रह सकते है और सब वस्तुओंको अपने पैरके नीचे कैसे रख सकते हैं ? जैसे विमानपर बैठ कर आकाशमे उड़ते हुए मनुष्यको बड़ा शहर छोटे गांवके ऐसा लगता है, पहाड़ चट्टानसा लगता है और बड़ी नदियां चांदीके महीन तार सी लगती है वैसे जो भक्त भगवानके हजूर रहते हैं और प्रभुका महा आनन्द भोगते है उनके आगे जगत नीचे आजाता है। इससे जो वस्तुएं दूसरोंको बहुत बड़ी लगती हैं वे भी सच्चे भक्तोंको अदनी जान पड़ती है। जिनकी ऐसी ऊंची दशा हुई हो उन्हें सच्चा भक्त समझना।

बहुत आदमी भक्ति करते हैं और भगवानसे अपने हृदयमें पधारनेके लिये प्रार्थना करते है परन्तु भगवानको बहुत समय-तक हृदयमें बैठने नहीं देते। जो सच्चे भक्त होते है वे अपने हृदयमन्दिरमें बहुत समयतक भगवानको रहने देते है। इतना ही नहीं, वे हररोज बार बार अपने हृदयमें भगवानको पधराया करते हैं, इससे यह समझ लेना कि जिनके हृदयमें देरतक भग-वान विराजे वे महान भक्त हैं और जिनके हृदयमें भगवान आ कर तुरत ही लौट जाय वे कच्चे भक्त है। इसलिये सच्चे भक्तको पह-चानना हो तो इस बातकी जांच करना कि इस भक्तके हृदयमें भगवान कितनी देर रहता है और कै बार आता है। जिसके हृदयमें भगवान बार बार आवे और देरतक रहे उसको ऊंचा भक्त समझना। जिस भक्तके हृदयमें भगवान अधिक देरतक वास करता है उसके मुखड़ेपर भक्ति आ बैठती है, इससे उस भक्तके चेहरेका तेज बढ़ जाता है। उसके चेहरेपर भक्ति दिखाई-देती है और उसके मुखड़ेसे मालूम होता है कि इसके अन्दर पवित्रता, शान्ति और दीनताने घर बना लिया है। जिसके

चेहरेसे ऐसा जान पड़े उस भक्तको श्रेष्ठ समझना।

भक्तोंके चेहरेपर स्वाभाविक तौरपर ही भक्तिकी छाया आजाती है। बहुत आदमी भक्त नहीं होते तोभी वे अपने चेहरेसे भक्ति दिखाना चाहते हैं। चेहरेसे भक्ति दिखानेमें कई तरहका मतलब सधता है। ढोंगी भक्त तथा बनावटी साधु अपने चेहरेपर भक्ति दिखानेके लिये बहुत थोड़ा बोलते हैं और ऐसा दिखाते हैं मानो बड़ी शान्तिमें हैं। परन्तु याद रहे कि ऐसा झूठ ढोंग रचना और लोगोंको ठगना बहुत बड़ा पाप है। इसलिये भक्ति दिखानेके लोभमें पड़ कर दिखाऊ मत बन जाना।

अक्सर ऐसा भी होता है कि बहुत आदमी बहुत अच्छा काम करनेवाले होते हैं तथा बहुत तरहसे अपने भाइयोंकी सेवा करते हैं और प्रभुपर प्रेम भी रखते हैं। परन्तु उनके चेहरेपर जैसी चाहिये वैसी भक्ति नहीं दिखाई देती। इससे यह न समझना कि ऐसे आदमी भक्त नहीं हैं। बल्कि यह समझना कि भिन्न भिन्न भक्तोंमें भिन्न भिन्न स्थानोंपर भक्ति दिखाई देती है। जैसे—किसी भक्तके चेहरेपर भक्ति दिखाई देती है; किसी भक्तके लक्षणोंमें भक्ति दिखाई देती है, किसी भक्तके निष्काम कर्मोंमें भक्ति दिखाई देती है और किसी भक्तकी पवित्रता अथवा तपमें भक्ति दिखाई देती है। इस प्रकार भिन्न भिन्न भक्तोंमें भिन्न भिन्न स्थानपर भक्ति दिखाई देती है। इसलिये अगर किसी भक्तके चेहरे पर बहुत भक्ति न दिखाई देती हो तो उसे हलका समझनेकी भूल न करना; बल्कि उसके काम, उसके चरित्र तथा उसके ज्ञानको देख कर उससे उसकी भक्तिकी तुलना करना।

बन्धुओ! भक्तोंके सम्बन्धमें यह सब जान लेनेपर उन्हें पहचाननेमें भूल नहीं होती। यह भी समझमें आता है कि हम किस

किसमके हैं और आगे आ कर हमें क्या करना चाहिये। इससे लाभ उठाया जाय तो इन सब बातोंका जानना सार्थक होता है। हम चाहते हैं कि प्रभु आपको ऐसी सार्थकता करनेका बल दे।

१०१–नकली सिक्केपर राजाकी छाप हो तो वह राजाको पसन्द नहीं आता ; वैसे ही ढोंगी भक्त प्रभुको नहीं रुचते।

सच्ची भक्ति से यह लोक और परलोक दोनों सुधरता है तथा जीवन आनन्दरूप होता है और भक्तिके बलसे संसारमें स्वर्ग भोग सकते हैं, इसलिये भक्ति सबको पसन्द आना स्वाभाविक है। परन्तु जैसे भक्त होनेकी इच्छा स्वाभाविक है वैसेही मनुष्यके मनमें जो अतिशय स्वार्थ भरा हुआ है और उससे जो अनेक प्रपंच हुआ करता है वह भी स्वाभाविक है। इससे एक तरफ भक्त होनेका मन करता है और दूसरी तरफ विकार, मोह, स्वार्थ तथा लालच रोकता है। इस कारण भक्त होनेके लिये आसुरी सम्पत्तिसे बहुत बड़ी लड़ाई करनी पड़ती है। इस लड़ाईमें बहुत थोड़े आदमियोंकी जीत होती है बाकी अधिक आदमी मायाके मोहमें फंस जाते है। तिसपर भी उनको भक्त कहलाना पसन्द है। इससे वे जब मन्दिरमें जाते हैं या घरमें पूजा पाठ करने बैठते हैं तब थोड़ा बहुत भक्त रहते हैं। परन्तु जब दुकानपर, नौकरीपर, कारखानेमें, खानमें, जहाजमें या खेलमें जाते हैं तब वहां उनकी भक्ति बनी नहीं रहती। उस समय भक्ति उड़जाती है। ऐसे भक्तोंकी भक्ति बहुत हुई तो अपने घरके आदमियोंसे मेलजोल रखने तक होती है। जब

परधर्मियोंसे काम पड़ता है तब उनकी भक्ति उड़जाती है। जब परदेशियोंसे काम पड़ता है तब उनकी भक्ति उड़जाती है। उनकी भक्ति पाठ करनेमें, पुजा करनेमें, या माला फेरनेमें आजाती है परन्तु सब आदमियोंके साथ तथा सब तरहके व्यवहारी सम्बन्धमें उनकी भक्ति नहीं टिकती। बातचीतमें, स्वभावमें, चाल चलनमें पुरानी लतमें और इस तरहकी दूसरी कितनी ही बातोंमें जहां भक्ति खास करके रखना चाहिये वहां वे भक्तिको नहीं रख सकते। तिसपर भी उन्हें भक्त कहलाना अच्छा लगता है!! ऐसे आदमियोंको संत ढोंगी भक्त कहते हैं। ढोंगी भक्तोंका क्या हाल होता है यह अच्छी तरह समझानेके लिये साधुजन कहते हैं–

आदमिली नकली चांदीपर कोई आदमी राजाकी छाप लगादे और उसे सच्चे सिक्केके तौरपर चलावे तो यह बात राजाको पसन्द नहीं आती। क्योंकि नकली सिकेपर राजाका चेहरा होनेमें उसका अपमान है। इससे ऐसे खोटे सिक्कोंको बंकोंमें काट देते हैं और ऐसे नकली सिक्के बनानेवाले आदमियोंको राजा बहुत कड़ी सजा देता है, वैसे ही याद रखना कि जो ढोंगी भक्त हैं, जो बनावटी भक्त हैं, जिनका आचरण भीतरसे खराब है और बाहरसे भक्तिका स्वांग करते हैं तथा जो भक्त गिने जाते हैं परन्तु प्रभुके जीवोंका भला नहीं चाहते वे ढोंगी भक्त हैं। ऐसे आदमियों पर भक्तकी छाप हो तो वह महाराजोंके महाराज प्रभुको पसन्द नहीं आती। ऐसे ढोंगी भक्तोंको न्यायके समय प्रभुके दरबारमें बड़ी कड़ी सजा मिलती। ऐसा न होने देनेके लिये बन्धुओ! ढोंगी भक्त मत बने रहना। ढोंगी भक्त मत बने रहना; बल्कि हृदयसे सच्चे भक्त होनेकी कोशिश करना।

१०२-दूसरे आदमी दुःख देते हैं तोभी सच्चे भक्त दुखी नहीं होते। इसका कारण।

फल पकनेपर आता है तब पंछी उसपर चोच मारने लगते है। वैसे ही किसी आदमीमें जब भक्ति बढ़जाती है तब संसारी लोग उसे बहुत हैरान करने लगते हैं। कितने आदमी डाहसे उसे दुःख देते हैं, कितनोको भक्तोंकी मस्ती और बेपरवाही नहीं रुचती इससे उनपर तुहमत लगाते है। कितने यह समझते है कि यह भक्त ढोंगी है और दूसरोंको ठगनेके लिये यह सब ढंढकमंडल रचता है, यह सोच कर उनसे विरोध करते है, कितने आदमियोंमें श्रद्धा, भक्ति या ईश्वर सम्बन्धी कुछ भी ज्ञान नहीं होता इससे वे भक्तोके भीतरकी असली अवस्थाको नहीं समझ सकते। इस कारण भक्तोंसे वैरभाव रखते है। कितने जाति बिरादरीवाले तथा सगे सम्बन्धी यह सोचते हैं कि यह आदमी भक्त बन बैठा है परन्तु हमारी कुछ मदद नहीं करता और हमारा नियम नहीं पालता, इसे देख कर दूसरे भी बिगड़ेंगे यह सोच कर वे भक्तोंको हैरान किया करते हैं। भक्त अपने प्रभुप्रेमकी बाढ़में मग्न रहते है इससे घर गृहस्थी सम्बन्धी छोटे छोटे कामोमें विशेष ध्यान नहीं देते। इस कारण घरके आदमी भी भक्तोपर नाराज रहते हैं। ऐसे ऐसे कारणोसे बहुतेरे आदमियोंकी ओरसे कितने ही विषयोंमें भक्तोको बहुत कष्ट भोगना पड़ता है तोभी बहुतेरे भक्तोपर ऐसे कष्टका कुछ बहुत असर नहीं होता। ऐसे दुःखमें भी वे अपने ईश्वरी आनन्दमें ही विभोर रहते हैं और इस किस्मका दुःख होनेपर भी उनके हृदयमें अखण्ड शान्ति होती है। इसलिये अब भक्तोके जीवनमें हमें यह भेद जानलेना चाहिये कि बहुत आदमी बहुत तरहके दुःख देते

हैं तोभी उनको दुःख क्यों नहीं होता । यह भेद समझमें आजाय तो उससे अपनी जिन्दगी सुधारनेमें मदद मिलती है । क्योंकि बहुतेरे आदमियोकी ओरसे हमें भी ऐसे दुःख अड़चल डालते है, इसवास्ते ऐसा दुःख होनेपर भी इसका धक्का हृदयको न लगे और उससे अपने धर्ममें न चूकें इसकी युक्ति हमें जानलेना चाहिये । इसके लिये सन्त कहते हैं कि—

जो सच्चे भक्त होते है वे धर्मके बहुत ऊंचे विचारोंमें लगे रहते हैं इससे सांसारिक मनुष्योंकी छोटी छोटी बातोंपर ध्यान नहीं देते । जैसे आकाशमे उड़ते हुए पंछीको जमीनसे फेंका हुआ ढेला नहीं लगता वैसे हरिजनोपर संसारियोंके खराब वचनोंका असर नहीं होता वे ऊंचे उड़नेवाले पंछियोंके समान होते है इससे लोगोकी ओरसे आनेवाले कड़वे वचन तथा कड़ी टीकाको अपने ऊपर नहीं लेते । भक्त सदा क्षमाका बख्तर पहने रहते हैं । उस बख्तरमें कड़वे वचनोंके तीर नहीं घुस सकते इससे उनको दुखी होना नहीं पड़ता । इसीसे हम देखते है कि ध्रुव, प्रह्लाद, मीराबाई, तुकाराम नरसिंह मेहता आदि बहुतेरे भक्तोपर बहुत संकट पड़ा था तोभी वे कायर नहीं हुए थे और ऐसे दुःखोंको दुःख नहीं समझते थे । इतना ही नहीं, जैसे औंधे घड़े पर चाहे जितना पानी ढालें परन्तु वह घड़ा भरता नहीं वैसे सच्चे भक्त लोगोकी ओरसे आनेवाले दुखोंके लिये अपने हृदयको औंधे घड़ेकी तरह रखते है इससे उनके अन्दर किसी किसमका दुःख नहीं घुसता । सांसारिक लोगोंकी ओरसे जो दुःख आपड़ता है वह बाहर ही रहता है । वे भक्त उस दुःखको अपने हृदयतक पहुंचने नहीं देते । वे यह समझते है कि—परम कृपालु परमात्मा सदा हमारी

भलाई करता है। भगवानके भक्तोंकी बुराई हो ही नहीं सकती। जो होती है उससे कुछ लाभ ही होता है। इसलिये ये संसारी लोग जो हमें दुःख देते हैं उसमें भी सर्वशक्तिमान परमात्माका कुछ शुभ उद्देश्य ही होगा और हमारी भलाईके लिये ही यह दुःख आया होगा। यह समझ कर वे कभी अपने मनको दुःखित नहीं होने देते और न दुःखके असरसे दबते। इसलिये भाइयो! अगर इस किस्मके दुःखसे बचना हो तो महान भक्तोंसे यह युक्ति सीख लीजिये कि सदा ईश्वरी ज्ञानके विचारोंमें रहना चाहिये तथा मोहवादी लोगोंकी ओरसे जो अड़चल आ पड़े उसकी परवा न करना चाहिये। अगर कोई कुछ कड़वा वचन कह दे या मेहना ओठर मार दे तो उसे अपने ऊपर न ओढ़ लेना चाहिये बल्कि औंधे घड़ेकी तरह हृदयको बना कर इन सब दुःखोंसें दूर ही रखना। कभी कोई दुःख अखरनेवाला जान पड़े तो उस समय भी यही समझना चाहिये कि मेरी भलाईके लिये ही यह दुःख आया है। मुझे गिरादेनेके लिये नहीं, मेरे सिद्धान्तोंको ताड़ डालनेके लिये नहीं और मुझे अपनी भक्तिसे ढीला कर देनेके लिये नहीं वरंच मुझे आगे बढ़ानेके लिये, मेरे सिद्धान्तोंको पक्का करनेके लिये और मेरी भक्तिमें दृढ़ता लानेके लिये यह दुःख आया है। यह समझ कर संसारी लोगोंकी ओरसे आ पड़े हुए दुःखसे दुखी न होना वरंच सच्चा भक्त होना हो तो ऐसे समय धीरज रखना और क्षमाका बख्तर पहन लेना। तब अनेक प्रकारके दुःख घट जायंगे, इसमें तनिक सन्देह नहीं है। यह समझ लीजिये कि दुःखमें दबना नहीं चाहिये दूसरोंसे सताये जाने पर भी आनन्दमें रहना चाहिये।

१०३–विचार कर देखिये तो अमीरोंसे गरीब अधिक सुखी हैं ।

बन्धुओ ! बहुत आदमी यह समझते हैं कि जिसके पास बहुत धन होता है वह आदमी बहुत सुखी होता है । ऐसा समझनेका कारण यह है कि अमीरोंकी प्रतिष्ठा होती है; उन्हें अच्छा अच्छा खाना मिलता है, किस्म किस्मका फैशनदार बढ़िया कपड़ा पहननेको मिलता है; उनके गाड़ी घोड़े होते हैं और मौज शौककी चीजें होती हैं। यह सब बाहरी ठाठ बाट देख कर भोलेभाले आदमी समझते हैं कि अमीर बड़े सुखी हैं । परन्तु मनुष्यका स्वभाव तथा प्रकृति समझनेवाले महात्मा कहते हैं कि बहुतेरे अमीरोंसे कितने ही गरीब कहीं बढ़ कर सुखी होते हैं। क्योंकि गरीब जैसी हृदयकी शान्ति पा सकते हैं वैसी शान्ति अमीर नहीं पा सकते। गरीब अपना जीवन जैसा पवित्र रख सकते हैं वैसा पवित्र जीवन अमीर नहीं रख सकते। गरीब जैसे थोड़ेमें चला लेते हैं वैसे अमीर नहीं चला सकते। कितने ही अमीरोंको चीजोंका जितना मोह होता है उतना मोह गरीबोंको नहीं होता । इसलिये अमीरोंसे गरीब अधिक निरपराध भावसे जीवन बिता सकते हैं और अमीरोंसे गरीब श्रेष्ठ हैं। कभी किसी गरीबका जहाज डूबा है? किसी गरीबका माल जल गया है? किसी गरीबके कारखानेमें घाटा लगा है? किसी गरीबका लाखोंका दिवाला निकला है? किसी गरीबके जवाहिरात चोरी गये हैं? किसी गरीबकी जमींदारी नीलाम हुई है? और किसी गरीबका बंक फेल हुआ है? ये सब दुःख गरीबोंको नहीं होते और ऐसी गहरी चोट गरीबोंके नहीं लगती। इसलिये अमीरसे गरीब ज्यादा सुखी है ।

अमीरीका दुःख और गरीबीका सुख।

भाइयो! जो लोग ऊपरसे देखनेवाले हैं, जो बाहरसे देखनेवाले हैं, जो बाहरी ठाट बाटपर भूलनेवाले हैं और जिनको हृदयकी ऊंची वृत्तियोंका मानसिक आनन्द लेने नहीं आता वे अमीरीका बाहरी ठाट बाट देख कर तथा गरीबोंके पास कम सामान देख कर यह समझते हैं कि अमीर बड़े सुखी हैं और गरीब दुखी हैं। परन्तु असलमें देखनेपर, ध्यानसे देखनेपर, धर्मकी दृष्टिसे देखनेपर और दुनियाकी भलाईकी नजरसे देखनेपर हरिजनोंको यह मालूम होता है कि संतोषी वृत्तिवाले, थोड़ेमें चला ले जानेवाले, भगवदिच्छाके अधीन हो जानेवाले और पवित्र जीवन बितानेवाले गरीब ही अधिक सुखी होते हैं और प्रपंची जीवन बितानेवाले बहुत मोहमें फंसे हुए, अनेक प्रकारके लोभ लालचमें बंधे हुए और तमाचा मार कर अपना मुंह लाल रखनेवाले अमीर हृदयसे बड़े दुखी होते हैं। जैसे—

रहनेकी जगहका दुःख।

अमीरोंके रहनेके लिये बड़ा सुन्दर मकान होता है, बाग-बगीचा होता है, बड़ी बड़ी बैठकें होती हैं उनमें बढ़िया फरनीचर होता है और मौज शौककी कितनी ही चीजें मौजूद रहती हैं परन्तु क्या आप जानते हैं कि यह सब संग्रह करनेके लिये तथा यह सब ठाट बाट निबाहनेके लिये उन्हें कितनी ज्यादा मिहनत पड़ती है? अच्छे मकानके लिये उन्हें कितना प्रपंच फैलाना पड़ता है तथा उसके लिये उन्हें कितनी तरद्दुद उठानी पड़ती है? वे अपने घरके अन्दर भी अपना बूट साफ कराये बिना नहीं जा सकते। अगर वैसेका वैसा खराब बूट पहन कर बैठकमें चले जायं तो सैकड़ों रुपयेका गालीचा खराब हो जाता है। सो उनको अपने ही घरमें आगे बढ़नेमें पहले उसका बूट रोकता है और उसके लिये

बार बार जाना पड़ता हो उन सब स्थानोंमें वे ऐसे ऐसे बढ़िया मकान चाहते हैं । वह भी दूसरे किसीके लिये नहीं अपने ही लिये हो । इससे अच्छा मकान रहनेपर भी उन्हें तृप्ति या संतोष नहीं होता । उनके मनमें उल्टे भारी जंजाल भरा रहता है। भगवद् इच्छाके अधीन रहनेवाले हरिजन यह समझते है कि इतनी भारी झंझट सह कर अपने रहनेके लिये बड़ा मकान लेनेकी अपेक्षा शान्ति देनेवाले छोटेसे मकानमें रहना उत्तम है । इसके सिवा बड़े मकानमें रहनेके लिये कितना दुःख सहना पड़ता है इसका जब ख्याल आता है तब ऐसा लगता है कि बड़े मकानमें रहनेके लिये इतनी ज्यादा तरद्दद उठानेसे छोटीसी झोपड़ीमें शान्तिसे रहना बहुत अच्छा है । इससे हम कहते हैं कि जगहके लिहाज़से अमीरोंसे गरीब अधिक सुखी हैं ।

कपड़े और गहनेका दुःख ।

अमीरोंके भड़कीले कपड़े और कीमती गहने देख देख कर आप खुश होते है परन्तु अपने ही कपड़े और गहनेके लिये उन्हें कितना दुखी होना पड़ता है यह आप जानते है ? उनके नेकटाई कालर और कोट पतलून उन्हें कितनी अड़चलमे डालते हैं इसकी खबर आपको है ? बहुतसी बहुआइनें जब बहुतसे कपड़े गहने पहन कर ब्याह शादी या किसी उत्सवमें जाती है और वहां जरा देर होजाती है तब वे अपने कपड़े तथा गहनोंके बोझसे कितनी ऊबती है इसका पता आपको है ? इसके बाद घर आकर अपने कपड़े और गहने कितनी जल्दी जल्दी निकाल कर जहां तहां फेंकती हैं यह आपने देखा है ? उनके सिंगार पटार करनेमें कितना समय लगता है और इसमें उन्हें कितनी चीजोंकी मदद लेनी पड़ती है यह आपको मालूम है ? अजी ! पाव पाव आध आध घंटे तो उन्हें आइने से सलाह लेनी

पड़ती है। फिर जो कपड़े और गहने दूसरे लोगोंको बहुत अच्छे लगते हैं वे ही कपड़े और गहने बाबुओं और बबुआइनोंको कुफ्तमें डाल देते है। दूसरे लोग समझते हैं कि कपड़े गहनेमें आनन्द है परन्तु बहुतेरी बबुआइनोंको बार बार भारी कपड़ा पहनना पड़े और मोटे मोटे गहने डालने पड़ें तो बड़ा दुःखदायी होता है और कितनी ही नादान बबुआइनें तो कभी कभी गहने और कपड़ेकी कठिनाईके कारण ही बीमार पड़ती हैं और लगातार बीमार रहा करती है। अब विचार कीजिये कि जो गरीब अपनी गरीबीमें भी आनन्दसे रह सकते हैं और शरीर ढकने भर कपड़ेसे चला लेजाते है उन सन्तोषी तथा भगवदिच्छाके अधीन बने हुए गरीबोंको कपड़े और गहनेका ऐसा दुःख कहां भोगना पड़ता है? उन्हें किसी दिन भारी कपड़ेसे हैरान थोड़े होना पड़ता है? उन्हें नये नये कपड़े लेनेके लिये दुकान दुकान थोड़े भटकना पड़ता है? इसके लिये उन्हें सचमें झूठ थोड़े मिलाना पड़ता है? कपड़े गहनेमें ही उनकी जिन्दगीका अधिक भाग थोड़े बीतता है? कहिये कि नहीं। तब बताइये कि सच्चा सुखी कौन है? जो आदमी अपनी अनमोल जिन्दगी कपड़े गहनेके पीछे बितादेता है वह सच्चा सुखी कहलायगा या जो गरीब अपनी स्थितिमें सन्तोष रखता है और भगवदिच्छासे जैसा समय होता है उसके अनुसार चल कर अपनी गरीबीके लिये भी भगवानका उपकार मानता है वह अधिक सुखी कहलायगा? यह सब देख कर हरिजनोंको तो यही जंचता है कि कपड़े गहनेके हिसाबसे भी अमीरोंसे गरीब अधिक सुखी होते है।

१०४–विचार कर देखिये तो अमीरोंसे गरीब अधिक सुखी हैं। (२)

खाने पीनेका दुःख।

अमीरोंके यहां कई रसोइये होते हैं और वे हररोज किस्म किस्मकी कितनी ही चीजें बनाते हैं। जैसे—मोहनभोग, खीर, जलेबी, रबड़ी, रसगुल्ला, पकौड़ी, रायता, तरह तरहकी तरकारी, अचार, मेवा और फल देखे कर बाहरी वैभवपर लट्टू होजाने-वाले अनजान लोग यह सोचते है कि ऐसी ऐसी चीजें खानेवाले अमीर बहुत सुखी होंगे। परन्तु भाइयो! उनका ऐसा सोचना भारी भूल है। क्योंकि वे सिर्फ मेवा मिठाई और शरबतको ही देखते हैं और इसीसे अमीरोंको सुखी समझते हैं, परन्तु यह सब पचानेके लिये उनकी जठराग्निमें बल कहां है यह तो जरा देखिये। दूधका प्याला तय्यार है परन्तु दूध उन्हें रुचता कहां है? अनार अंगूर अंजीर आदि फल तय्यार है परन्तु उन्हें पचते कहां हैं? हलवा पेड़ा, मोतीचूरका लड्डू, रबड़ी आदि मिठाई हाजिर है परन्तु यह खानेके लिये डाक्टरका हुक्म कहां है? तोभी बरजोरी कभी कोई यह सब खा ले तो उसके शरीरकी क्या दशा होती है यह आपने कभी ध्यानसे देखा है?

अब गरीबोंकी तरफ देखिये। उन्हें बहुत सादा भोजन मिलता है। परन्तु उसमें भी उनको कितना अधिक आनन्द आता है, उन्हें कैसी अच्छी और मीठी भूख लगती है और जो भोजन मिलता है उससे उनके शरीरमें कैसा ताजा लहू बनता है यह आप जानते हैं? याद रहे कि अमीरोंकी तरह तरहकी मिठाई उन्हें जितनी तन्दुरुस्ती दे सकती है उससे ज्यादा तन्दुरुस्ती गरीबोंको हलकी खुराक देती है। इसलिये खानेपीनेके विषयमें

भी अमीरोंसे गरीब बहुत अधिक सुखी हैं।

बन्धुओ! यह बात अच्छी तरह समझनेके लिये एक राजाका दृष्टान्त जानने योग्य है। वह यह है कि—

एक राजा था। उसे सब चीजोंका आराम था। राजाके यहां बहुत चीजोंका अलमगंज होना कोई आश्चर्यकी बात नहीं है। उस राजाके खानेके लिये, भूख लगनेसे पहले ही दिनमें कई बार खास खास वक्त पर, खास खास चीजें हाजिर रहती थीं। जैसे—सवेरे उठनेके साथ चाय और दूध हाजिर होता। इसके बाद नाश्ता तय्यार होता। फिर दस बजे रसोई तय्यार होती। तीसरे पहर फल तय्यार रहते, सन्ध्यासमय नमकीन सेव, दालमोट आदि होता। फिर चाय तय्यार होती। रातको ब्यालू होता और सोते समय काफी या कोको तय्यार होता। इसके सिवा कहीं कहींसे कोई खास चीज आजाती तो वह भी जरा जरा चखा करता। इससे गरीब बेचारी जठराग्निको फुरसत ही न मिलती। इस कारण इन सब अच्छी अच्छी और स्वादिष्ट वस्तुओंमें भी उसे बहुत स्वाद न आता। एक दिन वह राजा शिकार खेलने जंगलमें गया था वहां कई कारणोंसे उसे बहुत भटकना पड़ा और बहुत अंधेर होगयी। मिहनत बहुत पड़ने और भोजनका समय बीत जानेसे उसे खूब कड़कड़ाकर भूख लगी। परन्तु उस समय उसके पास खानेकी कोई चीज न थी। इससे वह खानेकी चीज ढूंढ़ने लगा, ढूंढ़ते ढूंढ़ते राजा एक खेतमें पहुंचा। वहां एक गरीब किसान बाजरेकी लिट्टी खाता था। यह देख कर राजाने उससे कहा कि मुझे कुछ खानेको दो। किसानने कहा कि महाराज! आपके लायक मेरे पास कोई चीज नहीं है; सिर्फ यह बाजरेकी मोटी रोटी है। आपको रुचे तो हाजिर है। राजाको खूब भूख लगी थी वह बड़े प्रेमसे

लिट्टी खाने लगा। उस समय उस बाजरेकी बासी रोटीमें उसे इतना स्वाद मिला कि वह बड़ा चकित हुआ और कहने लगा कि ऐसी मीठी रोटी मैंने कभी नहीं खायी थी। हे भगवान! ऐसी उत्तम जायकेदार खुराकसे तूने मुझे आजतक वंचित क्यों रखा था? यह कह कर इतने दिनतक बाजरेकी लिट्टी न मिलनेके लिये अफसोस करने लगा।

अब विचार कीजिये कि क्या राजाके घरकी मिठाईसे उस गरीब किसान की बाजरेकी मोटी रोटीमें अधिक मिठास थी? नहीं; भाई! मिठास तो हरएक चीजमें है। परन्तु सबसे अच्छी मिठास सच्ची भूखमें है। ऐसी सच्ची भूख सादी खुराकसे, उचित मिहनतसे तथा विना जंजालकी पवित्र जिन्दगीसे गरीबोंको लग सकती है। बहुत उपाधिवाले, जरूरतसे ज्यादा खानेवाले, बहुत मसालेदार न पचने योग्य भारी खुराक खानेवाले और खाने पीनेके ही पीछे पीछे भटकनेवाले अमीरोंको ऐसी भूख नहीं लगती। इससे खाने पीनेकी अनेक वस्तुएं मौजूद रहनेपर भी वे उनसे सच्चा सुख नहीं पा सकते। परन्तु बहुत थोड़ी तथा सादी चीजोंसे भी सन्तोषी गरीब अधिक आनन्द पाते हैं और अच्छे तन्दुरुस्त रहते हैं। इसलिये हमें तो यही जान पड़ता है कि खाने पीनेमें भी अमीरोंसे गरीब बहुत ज्यादा सुखी होते हैं।

नींदका दुःख।

अमीरोंके मकानमें सोनेके लिये जो कोठरी होती है वह बहुत सुन्दर होती है; उसके भीतर बहुत बड़ा पलंग रहता है। उस पलंगपर बहुत मोटा और नरम रूईदार गुलगुल गद्दा होता है। सुन्दर मखमलका तकिया और चादर पड़ी रहती है। मंस मच्छड़से बचनेके लिये मसहरी लगी रहती है। सोते समय गरमीसे बचनेके लिये बिजलीका पंखा चलता

है। नींदमें खलल न पड़नेका बन्दोबस्त किया रहता है और वक्तसे सोनेका सुबीता रहता है। परन्तु ऐसे मुलायम बिछौनेपर भी बहुतेरे अमीरोंको सुखसे नींद नहीं आती, यह बात आपको मालूम है? क्या आपने देखा है कि नींद न आनेके कारण उनके पेटमें कब्जियत रहती है, जठराग्नि मंद रहती है; सिर दर्द करता रहता है और बात बातमें जल्द चिढ़ जानेकी आदत पड़ जाती है इससे वे सबके ऊपर गरम होजाया करते हैं और सबसे रार मचाया करते हैं? अब दूसरी ओर नींद सम्बन्धी गरीबोंका सुख देखिये। उनके सोनेकी जगह खराब हो तोभी उन्हें बड़े आरामकी नींद आती है। थोड़ी और तंग जगहमें भी बहुत अच्छी नींद आजाती है। बिछानेके लिये कुछ न हो तो जमीनपर, बालूपर, पत्थरपर तथा खेतमें भी उन्हें सुखकी नींद आती है। क्योंकि नींदका सम्बन्ध मनकी शान्तिसे है, नींदका सम्बन्ध शरीरकी आरोग्यतासे है और नींदका सम्बन्ध हृदयकी पवित्रतासे है। ये सभी बातें पवित्र गरीबोंमें होती हैं; अनेक प्रकारके प्रपंचोंसे भरे मोहवादी अमीरोंमें ये सब बातें ठीक ठीक नहीं होतीं। इससे तन्दुरुस्ती देनेवाली, शान्ति देनेवाली और एक प्रकारका प्राकृतिक आनन्द देनेवाली मीठी नींद उन्हें नहीं आती। इसलिये सन्त यह कहते हैं कि नींदके सम्बन्धमें भी अमीरोंसे गरीब कहीं बढ़ कर सुखी है।

सोनेके लिये बहुत बढ़िया सामान होनेपर भी कितने ही अमीरोंको आरामकी नींद नहीं आती इसका मुख्य कारण यह है कि उनके चित्तमें बहुतसा जंजाल भरा रहता है; उनके मनमें अनेक प्रकारका लोभ भरा रहता है; उनके मगजमें बहुत कुछ अलाबला पड़ी रहती है और उनके पेटमें जरूरतसे

ज्यादा बोझ पड़ा रहता है । इससे उन्हें सुखकी नींद नहीं आती, परन्तु गरीबोंकी सादी तथा सन्तोषी जिन्दगीमें ऐसी कोई कठिनाई नहीं पड़ती, इससे उन्हें प्राकृतिक मीठी नींद आती है । गरीबोंको सुखकी नींद आनेका एक कारण यह है कि वे अपने बूते भर दिनभर उचित परिश्रम किया करते है । परन्तु अमीर आलसमे अपना समय गंवाते हैं और काम काज करनेसे शरमाते हैं तथा कितने ही काम न करनेमें ही अपनी बड़ाई समझते है । इससे उन्हें परिश्रम नहीं पड़ता और न थकावट होती उलटे समय पहाड़सा लगता है। इससे उन्हें अच्छी नींद नहीं आती । सो नींदके सम्बन्धमें भी अमीरोंसे गरीब बहुत सुखी होते है ।

गरीब और अमीरमें फर्क ।

एक कसाईके यहां एक बकरा था और एक कुत्ता । कुत्ता घरकी रखवाली करता, अपने मालिक के साथ घूमता, लड़कोंके संग खेलता और एक टुकड़ा रोटी पानेसे भी खुश हो जाता तथा पूंछ हिला कर उपकार मानता । परन्तु जो बकरा था वह कुछ काम न करता तोभी कसाई उसे अच्छा अच्छा चारा खिलाकर मोटवाता । यह देख कर एक दूसरे आदमीने पूछा कि ऐसा क्यों करते हो ? कसाईने उत्तर दिया कि जो नमकहलाल कुत्ता है उसको जीना है ; परन्तु जो बकरा मोटा होता जाता है और किसी काम नहीं आता उसे थोड़े समयमें कटना है । इसी तरह जो अमीर पाप करके धनवान होते जाते हैं उनका अन्तको बुरा हाल होना है और जो गरीब भक्त अपने प्रभुके साथ नमकहलालीसे रहते है और जो टुकड़ा मिलता है उसपर सन्तोष करते हैं उनको हरिके हुजूर रहना है और सुखी होना है । इसलिये अमीरीके ठाटबाटमें भूल मत जाना बल्कि यह समझना

कि किसीके उपयोगमें आये बिना मोटाते हुए बकरेसे गरीब नमकहलाल कुत्तेकी स्थिति अच्छी है, उस कुत्तेको गरीबी सहनी पड़ती है परन्तु कसाईकी छुरीसे कटना नहीं पड़ता। वैसे ही प्रपंची जीवनवाले अमीरोंको यमदूतोंकी जैसी मार खानी पड़ती है वैसी मार अपनी स्थितिमें सन्तोष करके भगवदिच्छाके अनुसार रहनेवाले गरीब हरिजनोंको नहीं खानी पड़ती। इस तरह देखनेसे भी हरिजनोंको मालूम होता है कि अमीरोंसे गरीब अधिक सुखी है।

१०९-विचार करके देखिये तो अमीरोंसे गरीब बहुत अधिक सुखी हैं (२)।

प्रभुके अर्थ गरीब जितना त्याग कर सकते हैं उतना त्याग अमीर नहीं कर सकते।

संत यह कहते हैं कि गरीब बहुत थोड़े बंधनमें रहते हैं; परन्तु अमीर अनेक प्रकारके बन्धनमें पड़े रहते हैं। इससे गरीब किसी समय अपने कम बंधनसे छूट सकते हैं परन्तु अमीर अपने अनेक बन्धनोंसे कभी छूट नहीं सकते। इसके लिये एक महात्मा कहते थे कि गरीबोंके नरक जानेमें बड़ी मिहनत पड़ती है परन्तु अमीरोंके लिये नरकका सीधा रास्ता रहता है। सुईके छेदसे ऊँटका निकल जाना सम्भव नहीं है; यह चाहे हो जाय परन्तु अमीरोंका स्वर्ग जाना कभी सम्भव नहीं है। क्योंकि वे आशा तृष्णाकी रस्सियोंसे अनेक विषयोंमें बंधे होते हैं; इससे मोहसे छूट नहीं सकते। इस विषयमें

अमीरोंसे गरीब श्रेष्ठ हैं । और यही बात सबसे बड़ी है । पैसेका जो मोहवादी सुख है वह इसी दुनियामें काम आता है; परन्तु हृदयके सच्चे त्याग वैराग्यसे जो मानसिक आनन्द मिलता है वह बड़ा कीमती होता है और हरिके हज़ूर भी काम आता है। इसलिये इस विषयमें अमीरोंसे गरीब अधिक भाग्यशाली हैं । गरीब अपनी गरीबीके कारण थोड़े बंधनमें होनेसे बहुत जल्द और बहुत सहजमें तर सकेंगे परन्तु अमीर उनकी तरह बहुत जल्द और बहुत सहजमें नहीं तर सकेंगे; उनके ऊपर बहुत बोझ रहता है इससे उनके तरनेमें बहुत विलम्ब लगेगा । इस दृष्टिसे देखने पर भी अमीरोंसे गरीब बहुत अधिक सुखी हैं। गरीबोंको अपनी गरीबीके लिये अफसोस न करना चाहिये वरन यह समझना चाहिये कि अमीरोंको धनके कारण जैसा लाभ हो सकता है गरीबोंको गरीबीके कारण उससे बहुत ऊंचे दर-जेका लाभ हो सकता है। यह समझ कर अपनी स्थिति पर सन्तोष करके आनन्दसे रहना चाहिये ।

गरीबीमें आनन्दसे रहनेका उपाय ।

एक धनी था । उसने व्यापारमें बहुत गोलमाल किया था । इससे उसपर मुकदमा चला । उसका कसूर साबित हुआ । राजाने उसे देशनिकाल किया । यह देख कर वह बहुत अफसोस करने लगा । अन्तको वह जंगलमें गया । वहां एक साधुकी कुटी थी । वह वहां टिका और साधुसे अपनी दशा बता कर रोने कलपने लगा । साधुने उसे बहुत ढारस दिया और कुछ दिन अपने आश्रममें रखा । उसके मनको शान्ति देनेके लिये वह साधु हर रोज कुछ कुछ ज्ञानकी बातें सुनाने लगा; परन्तु उस व्यापारीके मनका कुछ समाधान न हुआ । यह देख कर उस साधुने पूछा कि बच्चा ! तेरी मिलकियत कितनेकी थी ? और तेरा कुटुम्ब

कितना बड़ा था ? उस धनी व्यापारीने कहा कि मेरे पास दो लाख रुपये थे। मेरे एक ढली उमरकी स्त्री और तीन लड़के हैं। बाप दादेका मकान है और दुकान चलती है। यह सब छुड़ाकर मुझे देशनिकाल किया है। तब मुझे शान्ति कैसे मिले? साधुने पूछा कि तू किस नगरमें रहता था और वहां कौन राजा है? व्यापारीने कहा कि मैं रामनगरमें रहता था। वहां आजकल चन्द्रसेन नामक राजा है। वह बड़ा खराब है, उसने मुझे देशसे निकाल दिया है। साधुने पूछा कि उस राजाके बापके बारेमें तू कुछ जानता है? उस धनीने उत्तर दिया कि हां महाराज। क्यों नहीं जानता? वह राजा बड़ा धर्मात्मा था और ऐसा निःस्पृही था कि अपना सब राजपाट कुंवरको सौंप कर तीर्थ करने चला गया। अभीतक लौट कर नहीं आया। वह बड़ा न्यायी था। वह राजा रहता तो मेरा यह हाल क्यों होता?

यह सुन कर उस साधुने कहा कि 'जिस राजाकी तू बात कहता है वह मैं ही हूं। मेरा ही नाम प्रतापसेन था और मैंने राजपाट छोड़ दिया था। तू बता कि तूने अधिक त्याग किया है या मैंने अधिक त्याग किया है? तेरे एक अधेड़ स्त्री थी, उसके छूटने पर तू इतना अफसोस करता है परन्तु मेरे कितनी रानियां थीं यह तू जानता है? मेरे सात रानियां थीं। तेरे तीन लड़के थे परन्तु मेरे सोलह लड़के थे। तेरे सिर्फ दो लाख रुपये गये हैं. परन्तु मेरी हरसाल बावन लाख रुपयेकी आमदनी थी। अब बता अधिक त्याग किसने किया है? तूने वा मैंने? फिर भी मुझे कुछ अफसोस नहीं होना। इतना बड़ा त्याग करनेसे ही मैं आनन्दसे रहता हूं। तुझे थोड़ासा त्यागना पड़ा है परन्तु इसीमें तू मरा जाता है; सो क्यों?

यह सुन कर उस अमीरने कहा कि त्याग तो आपकही।

पड़ा है परन्तु आपने अपनी खुशीसे सब त्यागा है इससे आपको आनन्द आता है, परन्तु मुझसे जबरदस्ती सब छीन लिया है इससे मुझे दुःख होता है। तब उस साधु महात्माने कहा कि तो क्या तू इसमें कुछ फेर बदल कर सकता है? या बहुत अफसोस करते रहनेसे तेरा दुःख मिटनेवाला है? उस गृहस्थने कहा कि नहीं महाराज! अफसोस करनेसे दुःख उलटे बढ़ता जाता है, मिटता कहां है? फिर मै उस राजाका भी कुछ नहीं कर सकता। अब तो जो सिरपर पड़ा है उसे भोगना ही पड़ेगा। उस साधुने कहा कि तो तू भी त्याग स्वीकार करले। फिर तुझे दुःख नहीं होगा। जो बात तुझसे सुधर नहीं सकती, जो बात तेरे वशकी नहीं है और जिसके लिये अफसोस करनेसे उल्टे दुःख होता है उस बातमें मन क्यों लगाता है? उसमेंसे मनको खींच ले। तब जैसे मै राज्य तजनेपर भी आनन्दसे रहता हूं वैसे देशनिकालका दण्ड भोगनेपर भी तू सुखसे रह सकेगा। भाई! याद रखना कि वस्तुओंमें सुख या दुःख नहीं है, अपने मनके विचारोंके साथ सुख दुःखका सम्बन्ध है। मनके विचारोंको बदल दें तो चाहे जैसे खराब संयोगमें भी सुखसे रह सकते हैं। इस-लिये अगर तुझे सच्चा आनन्द लेना हो तो अपने मनकी वृत्ति-योंको बदल डाल और जो त्याग लाचारी दरजे करना पड़ा है उसे अपनी खुशीसे त्याग दे। तब तेरी गरीबी तुझे आनन्द-दायक हो जायगी।

यह सुन कर उस धनीने कहा कि महाराज! यह बात तो सच है परन्तु अभी मन नहीं मानता। हां आशा है कि ईश्वर-कृपासे आप जैसे सन्तके संग रहनेसे थोड़े दिनमें यह कुंजी पकड़ना मुझे आजायगा।

भाइयो! अगर आप गरीब हों तो गरीबीके विचारोंमें पड़े

मत रहना, वरंच यह समझ कर गरीबीमें भी सन्तोषसे रहना सीखना कि प्रभुने हमे जो गरीबी दी है उसमें भी हमारा कुछ कल्याण ही होगा। समझना कि गरीबीमें भी बड़ा लाभ है। इसके अनुसार अपनी वृत्तियोंको बनादेना। तब गरीबीमें रहनेपर भी आप आनन्द पा सकेंगे।

१०६—विचार कर देखिये तो अमीरोंसे गरीब अधिक सुखी हैं (४)।

गरीबीमें ढारस रखनेका उपाय।

जिस गरीबके चित्तमें अपनी गरीबीके कारण खेद होता हो और कुछ चीजोंके अभावसे जिसका मन झीखा करता हो उस आदमीको अपने मनमें समझना चाहिये कि हमारी गरीबी तो बहुत ही थोड़ी है; हमारे पास अभी बहुत चीजें हैं और हमें बहुत तरहका सुबीता है। परन्तु पहलेके कितने ही महान भक्तोंको तो किसी तरहका सुबीता न था। वे इतनी गरीबीमें रहते थे कि उनके पास पानी पीनेका कोई बर्तन भी न था और शरीर ढकनेके लिये लंगोटी भी न थी; यहां तक कि कितने ही संतोको तो मरते वक्त कफन भी न था और उनके शरीरकी अन्तिम समाधि जंगली जानवरों तथा पक्षियोंके पेटमें हुई थी। ऐसी गरीबी होनेपर भी वे अपने चित्तमें अमीरी भाव रखते थे, इन्द्रके वैभवको भी तुच्छ समझते थे और अपनी गरीबीमें ही मस्त रहते थे। वे कहते थे कि—

जो सुख मिलता रामभजनमें
सो सुख नहीं अमीरीमें,

अमीरी क्या बेचारी है ?
गरीबी खुदाकी प्यारी है।

यह कहते हुए और ऐसी ही भावना रखते हुए वे अपनी गरीबीके आनन्दमें मस्त रहते थे।

अब विचार कीजिये कि क्या उनसे हम कुछ अधिक गरीब हैं। कहिये कि नहीं! तिसपर भी हम अपनी थोड़ीसी गरीबीके लिये अफसोस किया करते हैं यह क्या हमारी भूल नहीं है? हे हमारे गरीब भाइयो! हे गरीब हरिजनो! आप जरा ख्याल करना कि आपके ऊपर तो अभी प्रभुकी बहुत कृपा है। आपकी गरीबी तो किसी गिनतीमें नहीं है, आपसे बड़ी कंगाली की हालतमें भी सच्चे भक्तोंने महा आनन्द पाया है। इसलिये उनका दृष्टान्त देख कर शान्तिमें रहना सीखना चाहिये।

बन्धुओ! यह बात नहीं है कि गरीब सन्त ही गरीबीको पसन्द करते हैं; वरंच कितने ही समर्थ महान राजा भी यह कहते थे और हृदयसे यह चाहते थे कि हमें गरीबी मिली होती तो कैसा आनन्द होता। कितने ही तो प्रभुसे यह प्रार्थना करते थे कि हे प्रभु! हमें गरीबी देनेकी कृपा कर। सिर्फ प्रार्थना नहीं करते बल्कि कितने ही राजाओंने तो अपना राज्य भी त्याग दिया था और अनेक प्रकारके साधन होनेपर भी सबको लात मार कर गरीबी स्वीकार की थी। वे समझते थे कि—

अमीरी क्या बेचारी है ?
गरीबी खुदाकी प्यारी है।

ऐसी समझके कारण वे अपना राज पाट छोड़ कर गरीब हुए थे और गरीब होनेके लिये उन्हें अपने कर्मचारियोंसे लड़ना पड़ा था; गरीब होनेके लिये उन्हें अपने कुटुम्बसे कलह करनी पड़ी थी; गरीब होनेके लिये बहुतेरे पण्डितोंसे उन्हें

वाद विवाद करना पड़ा था और गरीब होनेके लिये उन्हें अपने हृदयमें बड़ी भारी लड़ाई करनी पड़ी थी। यह सब करके भी वे जान बूझ कर गरीब हुए थे। क्योंकि उन्हें विश्वास हो गया था कि—

जो सुख मिलता रामभजनमें
सो सुख नहीं अमीरीमें।
दिल लगा है राम फकीरीमें,
दिल लगा है राम फकीरीमें।
राम फकीरी अदल फकीरी
चारो खूंट जागीरीमें।

ऐसा ज्ञान होनेसे बड़े बड़े राजा महाराजोंने अपना राज पाट त्याग दिया था और लंगोटीकी भी परवा न रख कर पहाड़ोंमें, जंगलोंमें और गंगातट पर चले गये थे। इस प्रकार कठिनाई सह कर भी राजा और अमीर गरीब होते हैं। तब प्रभुने कृपा करके आपको जो थोड़ीसी गरीबी दी है उसके लिये आप क्यों झीखा करते हैं? और हैरान क्यों हुआ करते है। अबसे गरीबीके लिये अफसोस न करके यही समझना कि हमें आगे बढ़ानेके लिये और अनेक प्रकारके पाप तथा मोहसे बचानेके लिये ही प्रभुने कृपा करके गरीबी दी है। इस लिये गरीबीमें शान्तिसे रह कर उसका लाभ लेना चाहिये और प्रभुको प्रसन्न करने योग्य रीतिसे उसकी दी हुई गरीबी भोग लेना चाहिये। इसके अनुसार चलनेकी कोशिश करेंगे तो आप गरीबीमें भी दिलासा पावेंगे और सुखी होंगे। इसलिये सन्तोंके कदम बकदम चलिये और गरीबीका तिरस्कार मत कीजिये बल्कि गरीबीमें भी कुछ खास खूबी समझ कर उसे शान्ति और आनन्दसे भोग लीजिये। तब

आप गरीबीमें भी सुखी रह सकेंगे।

गरीबीसे शरमाना मत।

यह बात नहीं है कि गरीबीमें दुःख है इससे गरीब दुःखी होते हैं; परन्तु बहुतेरे गरीबोंको ठीक तौरपर गरीबी सहनी नहीं आती इससे वे दुःखी होते हैं। जैसे गरीबोंको कई तरहकी तंगी रहती है परन्तु तंगी रहनेसे कितने ही गरीब शरमाते हैं, इससे अपनी औकातके बाहर बनते हैं इस कारण वे और गरीब होते जाते हैं तथा और कठिनाईमें पड़ते जाते हैं। कोई आदमी आमदनी कम होनेसे बढ़िया भड़कीला कपड़ा नहीं पहन सकता परन्तु जान पहचानवालोंको बढ़िया कपड़ा पहनते देख कर उसका मन भी वैसा कपड़ा लेनेको ललचाता है। इसी तरह खाने पीनेमें, रहनेमें तथा लोगोंको भोज खिलानेमें बहुतेरे गरीब अपनी औकातसे बाहर उड़ाया करते हैं। इससे वे दुखी होते हैं। यों "हिसकन मरनेवाले" और दुखी होनेवाले गरीबोंको सन्त कहते हैं कि भाइयो! हिसका करनेकी कुछ भी जरूरत नहीं है और न अपनी औकातसे बाहर कुछ काम करनेकी जरूरत है।

इसके लिये एक कविने कहा है कि—

> शक्ति प्रमाने राखिये, अश्व ऊंट या बैल।
> शरम नहीं इस बातमें, शिवने की है पहेल॥

भाइयो! शिवने भी अपनी शक्तिके अनुसार बैल रखा है। तब हम अपनी शक्तिके अनुसार घरमें सामान रखें, खाने पीनेकी चीजें लें या अपनी हैसियतके अनुसार कपड़ा पहनें तो इसमें शरम क्या है? इसलिये झूठी लोकलाजमें पड़ कर बूतेसे बाहर खर्च न करना वरंच देवोंके देव महादेवके अनुकरणपर अपनी हैसियतके अनुसार सामग्री रखना। ऐसा करनेपर गरीबीमें भी आनन्दसे रह सकते हैं। गरीबीमें आनन्दसे रहनेका उपाय

जानते समय यह बात भी खूब अच्छी तरह समझ लेना कि अपनी स्थितिमें सन्तोषसे रहना और औकातसे बाहर खर्च न करना भी गरीबीमें सुखसे रहनेका उपाय है। इस उपायका मूल्य न समझनेके कारण भी बहुत आदमी दुखी होते हैं। सो हे गरीब भाइयो! गरीबीमें सुखी होनेके लिये यह उपाय भी ध्यानमें रखनेकी कृपा करना। तब आप अनेक प्रकारकी कठिनाइयोंसे बच सकेंगे और गरीबीमें भी आनन्द ले सकेंगे।

गरीबोंके हृदयमें प्रभु रहता है इससे उन्हें गरीबी नहीं सताती।

एक राजा था। वह अपने नौकरके साथ किसी कामसे जंगलमें गया। वहां खाने पीनेका सुभीता न था इससे नौकरको मनलायक भोजन नहीं मिला। जो कुछ थोड़ा बहुत मिला उसीसे उसने काम चलालिया। यह देख कर राजाने उस नौकरसे कहा कि आज तो तुम्हें बहुत कष्ट हुआ होगा क्योंकि भोजन ठीक तौरपर नहीं मिला। उस नमकहलाल नौकरने कहा कि नहीं महाराज! मुझे कुछ कष्ट नहीं हुआ। जो मिला है उसीमें मुझे आनन्द है। आप स्वयं मेरे साथ हैं तब खाना पीना किस गिन्तीमें है? आपके साथ रहनेका आनन्द बड़ा है या बढ़िया भोजनका आनन्द बड़ा है? ऐसा वक्त तो कभी ही कभी आता है कि आपके साथ रहते हुए भी कष्ट हो नहीं तो आपके साथ रहनेसे सदा बड़ा सुख मिलता है। तब आपका साथ हो तो ऐसे कष्टको कोई क्या समझता है।

भाइयो! यह दृष्टान्त देकर एक भक्तराज समझाते थे कि जो हरिजन भगवानके साथ रहते हैं अर्थात् जिनके हृदयमें प्रभु रहता है उन गरीबोंको गरीबीका दुःख नहीं सताता।

वे यह समझते है कि हमारी गरीबी इस दुनियारूपी जंगलमे थोड़ी देरके लिये है, जब हम राजधानीमें पहुंचेगे तब फिर अमीरी ही है। असली स्थान राजधानी ही है जंगल तो थोड़ी देरका है। इस दुनियाका दुःख थोड़ी देरका पड़ाव है ; हरिके हुजूरका अनन्त कालका सुख ही भक्तोंके रहनेकी असली जगह है। इसलिये यहां कभी कुछ दुःख उठाना पड़े तो कौन भारी बात है ? राजाके साथ होनेपर भूखो रहनेमें भी मजा है। वैसे ही अगर भगवान साथ हो तो गरीबीमें भी महा आनन्द है यह समझ कर सच्चे हरिजन अपनी बाहरकी गरीबीसे दुखी नहीं होते वरंच यह समझ कर कि, हमारा नाथ हमारे साथ है तो फिर हमें क्या फिकर है, सच्चे भक्त गरीबीमें भी सदा महा आनन्दमें मग्न रहते है।



१०७-विचार कर देखिये तो अमीरोंसे गरीब अधिक सुखी हैं। (९)

अपने अन्दरकी भक्ति बढ़ानेकी एक नयी युक्ति।

एक बहुत बड़े त्यागी महात्मा थे। वह जब किसी बड़े नगरमे जाते तब वहांकी फेंसी मालकी दुकाने देखते थे। कभी जहां तरह तरहकी चीजें नीलाम होतीं वहां जाते और कभी जहां बहुत बड़ा मेला लगता और सुन्दर सुन्दर चीजें बिकतीं वहां जाते। यह देखकर उनकी जान पहचानके एक अमीरने एक दिन पूछा कि महाराज ! आप ऐसी फेंसी दुकानों पर क्यों जाते हैं ? आपको क्या खरीदना है ? आपके पास पैसा नहीं है, आप

किसी दिन कोई चीज नहीं लेते तोभी ऐसी दुकानोंमें क्यों जाते हैं?

उस गरीब त्यागी महात्माने कहा कि भाई! मैं यह देखनेके लिये ऐसी दुकानोंमें जाता हूं कि मेरा प्रभु मुझे कितनी चीजों बिना निबाहता है और सुखसे रहना सिखाता है। मैं वैराग्यवृत्ति विकसित करनेके लिये ऐसी दुकानोंमें जाता हूं। अमीरने पूछा कि महाराज! ऐसी जगह जानेसे और मोह बढ़ता है और नयी नयी चीजें लेनेका मन होता है; इसके विरुद्ध भक्ति कैसे बढ़ेगी? यह मेरी समझमें नहीं आता। उस महात्माने कहा कि भाई! ऐसे बढ़िया मालके बाजारमें जा कर तथा वहांकी खरीद बिक्री देख कर मैं अपने मनमें यह सोचता हूं कि प्रभुने मुझे कैसा भाग्यशाली बनाया है कि इन सब चीजोंके बिना सिर्फ अन्न पानी और एक कमलीसे मैं चला लेजाता हूं। लोगोंको कितना तूल करना पड़ता है, कितनी झंझट उठानी पड़ती है, व्यर्थ कितनी चीजें लेनी पड़ती हैं, उन्हें लेनेके लिये कितनी कठिनाइयां सहनी पड़ती हैं, कितना तोबा तिल्ला मचाना पड़ता है और इसके लिये कितना सरसंनरस करना पड़ता है यह सब जब मैं देखता हूं और दूसरी ओर इस प्रकारकी कोई झंझट उठाये बिना ही बहुत थोड़ेमें थोड़ी रोटी और थोड़े पानीसे मैं अपनी जिन्दगी कैसे बिताता हूं यह देखता हूं तब अपने हृदयमें ऐसा बल देनेके लिये सर्वशक्तिमान परमात्माका उपकार मानता हूं। इसलिये आजसे समझ लेना कि मैं कुछ फेन्सी चीजोंके मोहसे ऐसी दुकानोंमें नहीं जाता वरंच अपने वैराग्यको दृढ़ करनेके लिये, अपनी भक्ति बढ़ानेके लिये और अपने नाथका उपकार माननेके लिये तथा गरीबीमें अमीरीसे कितना मजा है यह समझनेके लिये और दूसरोंको यह बात समझानेके लिये मैं फेन्सी बाजारमें घूमता हूं।

बन्धुओ ! सन्तकी यह बात सुन कर उस अमीरकी आँखें खुल गयीं । वह समझ गया कि सचमुच मेरी अमीरीसे इनकी गरीबीमें अधिक आनन्द है ; मेरी अमीरीसे इनकी गरीबीमें अधिक खूबी है ; मेरी अमीरीसे इनकी गरीबीमें अधिक मस्ती है ; मेरी अमीरीसे इनकी गरीबीमें अधिक मिठास है ; मेरी अमीरीसे इनकी गरीबीमें अधिक धर्म है ; मेरी अमीरीसे इनकी गरीबीमें अधिक रहस्य है ; मेरी अमीरीसे इनकी गरीबीमें अधिक पवित्रता है ; मेरी अमीरीसे इनकी गरीबीमें ईश्वरकी अधिक कृपा है और मेरी अमीरीमें ईश्वर विमुख दिखाई देता है परन्तु इनकी गरीबीमें ईश्वर निकट दिखाई देता है । इससे मेरी समझमें यह आता है कि मेरी अमीरीसे इनकी गरीबी बहुत श्रेष्ठ है । इतना ही नहीं मैं अपनी अमीरीसे जो सुख भोग सकता हूँ उससे कहीं अधिक आनन्द वे अपनी गरीबीसे पाते हैं । अहा ! मैं नहीं जानता था कि पवित्र गरीबीमें इतना अधिक स्वाद है । इस महात्माने मेरी आँखें खोल दी हैं । इससे अवतो मुझे भी यह प्रार्थना करनेका मन होता है कि हे प्रभु ! अमीरीकी झंझट, अमीरीकी माया और अमीरीकी उपाधियोंके बदले पवित्र गरीबीका आनन्द देनेकी कृपा कर ।

बन्धुओ ! पवित्र गरीबीमें अमीरीसे कहीं अधिक सुख है । इसलिये आप गरीब हों तो निराश मत होना या न दुखी होना वरंच गरीबीमें पवित्र रह कर उसमें मिलनेवाला अमीरीसे अधिक आनन्द भोगना । यही हमारी सलाह है ।

इस दुनियामें जितने अच्छे और बड़े काम हैं वे सब बहुत करके गरीबोंके ही किये हुए हैं ।

बहुत लोग यह समझते हैं कि गरीबीके कारण बहुतसी चीजें

नहीं मिलतीं इससे आदमी बहुत पीछे रह जाता है। परन्तु विद्वान, सन्त कहते हैं तथा हमारा अनुभव बताता है कि यह बात झूठ है। जो अमीर होते हैं वे अपने सुख विलासकी ओर देखनेमें ही रहजाते हैं; जो बहुत बड़े अमीर हैं वे बहुत माया और मौज शौकमें ही रहजाते हैं और जो सबसे बड़े अमीर हैं उनके इर्दगिर्द ऐसी हवा बंधजाती है कि वे कोई बड़ा काम नहीं कर सकते। क्योंकि उनकी प्रकृति बहुत नाज़ुक बनजाती है; उनका स्वभाव वशमें नहीं रहता, उनकी रहन सहन कुछ विचित्र ही होती है। उनकी जरूरतसे ज्यादा खातिर बात हुआ करती है और जो गुण उनमें नहीं होता वह गुण भी गरजी लोग उनमें साबित कर देते हैं। कितने ही स्वार्थी खुशामदी तो उनमें जो महादुर्गुण होता है उसे भी सद्गुण बताया करते हैं। इस कारण गरीबसे अमीर बहुत आसानीसे आगे नहीं बढ़ सकते। परन्तु गरीबोंको इन सब विषयोंकी पीड़ा नहीं सताती, इससे वे बहुत आसानीसे अपने बंधुओंकी मददके काममें तथा अपनी आत्माके कल्याणके काममें आगे बढ़ सकते हैं। इसलिये बहुतेरे गरीब बहुत आसानीसे अनेक प्रकारके बड़े और अच्छे काम कर सकते हैं। देखिये कि—

इस जगतमें जो अच्छीसे अच्छी पुस्तकें हैं उन्हें गरीब आदमियोंने लिखा है। इस जगतमें भारी उथल पुथल करनेवाले जो जो आविष्कार हुए हैं उनमें सैकड़े सत्तर आविष्कार गरीब आदमियोंने किये हैं। इस दुनियामें भिन्न भिन्न भाषाओंमें जो प्रसादपूर्ण कविताएं हैं उन्हें गरीब कवियोंने बनाया है। नामी नामी अजायबघरोंमें जो सुन्दरसे सुन्दर चित्र हैं वे गरीबोंके हाथकी कारीगरी है। समुद्र खोदनेका और नये नये देश ढूंढ़ निकालनेका महान कार्य गरीबोंने किया है। दुनियामें जो बड़े

शूर वीर पुरुष हुए हैं वे गरीबोंमें ही हुए हैं। अपने देशके लिये तथा अपने राज्यके लिये जो प्राण देनेवाले मनुष्य हैं उनमें सैकड़े नव्वे गरीब ही होते हैं। जो बड़े भक्त हुए हैं उनमें बहुधा गरीब मनुष्य ही थे। दुनियाके भिन्न भिन्न देशोंमें भिन्न भिन्न धर्मके जो पैगम्बर हुए हैं और जिन्होंने नया धर्म चलाया है वे सब महात्मा बहुधा गरीब ही थे। इस जगतके अन्दर जो अनेक प्रकारकी सुन्दर कारीगरी है उसके कारीगर गरीब ही हैं। इस जगतके जो धर्मार्थ काम चलते हैं उनकी प्रथम व्यवस्था करनेवाले तथा उनके चलानेवाले बहुत अंशोंमें गरीब आदमी ही होते हैं। जगतमें जो कुछ चमत्कार हुआ है उसके कर्ता गरीब ही हैं। स्वर्गमें जा कर देखिये या ईश्वरके दरबारमें जा कर देखिये तो वहां भी गरीबोंमें से गये हुए महात्मा ही अधिक मिलेंगे। इन सब बातोंसे समझ सकते हैं कि जगतकी हर लाइनमें आगे बढ़नेके लिये गरीबोंको खास सुबीता है। इसलिये गरीबोंको अपनी गरीबीसे दिलगीर न होना चाहिये। गरीबीके कारण आगे बढ़नेका और जोरसे अधिक काम करनेका अच्छा मौका मिलता है। इसलिये गरीबी मिलनेके लिये प्रभुका उपकार मानना चाहिये। जगतको सुधारनेमें अपने भाइयोंकी मददमें तथा अपनी आत्माके कल्याणमें अमीरोंसे गरीब ज्यादा काम कर सकते हैं। इसलिये परमार्थके तथा बड़े काम करनेमें अमीरोंसे गरीब अधिक भाग्यशाली हैं। इसमें भी अमीरोंसे गरीब बहुत अधिक सुखी होते हैं। सो गरीबीके कारण अफसोस मत करना, गरीबीसे अपना दुर्भाग्य मत समझना और यह मत सोचना कि हम गरीब होनेसे कुछ नहीं कर सकते। वरंच विश्वासदायक रीतिसे यही समझ लेना कि गरीबीमें सर्वशक्तिमान महान परमात्माकी परम कृपा है। इससे गरीबीके कारण बड़े बड़े काम किये जा सकते हैं।

जिसमें मौज-शौकके सिवा और कुछ नहीं हो सकता उस अमीरीसे अपने भाइयोंकी भलाई कर सकनेवाली तथा जिन्दगीके सार्थक बनानेवाली गरीबी अधिक श्रेष्ठ है। इसलिये गरीबीमें आनन्दसे रहना सीखिये, यही हमारी सलाह है।

१०८–भक्तिकी खूबी।

हमारे पवित्र शास्त्रोंमें बहुत जगह ऐसा कहा है कि प्राचीन कालके पवित्र ऋषि जब शुद्ध अन्तःकरणसे ईश्वरकी भक्ति करते थे तब आकाशसे देवता उनपर फूल बरसाते थे। भक्ति क्या है और भक्ति कितनी बड़ी बात है इसको मनुष्य ठीक ठीक नहीं समझते; परन्तु नारद, सनकादि देवता तथा ध्रुव प्रह्लाद आदि भगवानके महान भक्त ठीक तौरपर समझते हैं। इससे मनुष्य जब भक्ति करते हैं तब वे बहुत प्रसन्न होते हैं और भक्ति करनेवाले भक्तोंपर उनकी शुभ दृष्टि रहती है और ऐसे मुक्त, भगवानके समक्ष रहनेवाले तथा भगवानके साथ एकाकार होकर भगवद्रूप बने हुए मोक्षधामवासियोंकी शुभ दृष्टिमें कितना बड़ा बल होता है यह विचारना कुछ कठिन नहीं है।

ईश्वरकी भक्ति करनेसे स्वर्गके देवता तथा मोक्षधामके महात्मा ही नहीं, वरंच भक्तोंके पितर भी बहुत प्रसन्न होते हैं। क्योंकि जिसके कुलमें महान भक्त होते हैं उनकी आगेकी तथा पिछली पीढ़ियोंको बहुत लाभ होता है। भक्तोंके दादे परदादे तथा दूसरे पुरखोंकी जीवात्माको अपने वंशके भक्तकी भक्तिसे आगे बढ़ने और उच्चकोटिमें जानेका अवसर मिलता है। इससे वे अपने वंशमें भक्त उत्पन्न होनेपर उसे आशीर्वाद यादकोतिर

हैं और प्रसन्न होकर यह कहते तथा प्रार्थना करते हैं कि हमारे कुटुम्बमें ऐसा भक्त हुआ। पुत्र! तुझे धन्य है। हे प्रभु! तेरा महान उपकार है कि हमारे कुटुम्बमें तेरी महिमा समझनेवाला मनुष्य जागा। इस प्रकार पितर प्रसन्नता प्रगट करते है। यहां मनुष्यलोकमें भक्तिकी जितनी कीमत समझी जाती है उससे उसकी अधिक कीमत पितृलोकमें, स्वर्गलोकमें और उसके ऊपरके लोकोंमें समझी जाती है। ऐसे लोकोंमें स्थूल देह नहीं होती और भगवानको पहचाननेमें दुनियादारीमें जैसी अड़चलें पड़ती है वैसी अड़चलें उन लोकोमें नहीं पड़तीं। इससे भगवानको बहुत अच्छी तरह देख सकते हैं; समझ सकते है और अनुभव कर सकते है। इस कारण वे हमसे बहुत अच्छी तरह भक्तिकी कीमत समझ सकते हैं। इसलिये जो मनुष्य भक्ति करते है उनपर उनका प्रसन्न होना कुछ नयी बात नहीं है।

जो मनुष्य पूर्ण प्रेमसे भक्ति करते हैं, भगवानकी महिमा समझ कर भक्ति करते हैं और आत्मा द्वारा परमात्माको पकड़ सकते हैं उन भक्तोंमें ऐसा बल आजाता है कि अग्नि, वायु, जल, सर्दी, गरमी आदि प्राकृतिक तत्व भी उनके अधीन हो जाते हैं। ऐसे समर्थ तत्वोंपर भी उनकी हुकूमत चल सकती है। जैसे–प्रह्लादको अग्निने नहीं जलाया। शंकरको विष नहीं असर कर सका, पीपा भक्तको जल नहीं डुबा सका। इस प्रकार भक्तोंके चरित्रसे हम जान सकते हैं कितने ही बड़े बड़े तत्व भी कितनेही भक्तोंके वश होगये है। इससे वे अनेक प्रकारके चमत्कार कर सकते है और ऐसे तत्वोंके वश होनेसे कितनेही भक्तोंमें अनेक प्रकारकी ऋद्धि सिद्धि आजाती है। याद रहे कि ऐसी ऋद्धि सिद्धि पानेके लिये तथा प्राकृतिक तत्वोंको वशमें करनेके लिये

ऐसे महान भक्तोंको कुछ मिहनत नहीं करनी पड़ती। मिहनत करना तो दूर रहा, इस प्रकारकी इच्छा भी उनके मनमें नहीं होती। तोभी भक्तिके बलसे उनके भीतर स्वाभाविक रीतिसे ही ऋद्धि सिद्धिकी कुछ शक्ति आजाती है तथा तत्वोंको वशमें करनेका बल आजाता है। भक्तिमें इतना बड़ा बल है।

ये सब बातें सुन कर शायद आप सोचेंगे कि यह बहुत बड़े भक्तोंकी बात है। ऐसा सब भक्तोंसे नहीं हो सकता। आपकी यह बात सच है, परन्तु इसके साथ यह भी ध्यानमें रखना कि छोटे छोटे भक्तोंमें भी बहुतेरे व्यवहारी आदमियोंसे बहुत अधिक बल होता है। जैसे—भगवानके लिये बहुतेरे साधु गरमीके दिनोंमें पंचाग्नि लेते हैं; जाड़ेमें जब कड़ाकेकी सर्दी पड़ती है तब ठंढे पानीमें बैठ कर भजन करते हैं। इसके सिवा कितनेही भक्तोंको सांप बिच्छू बाघ भालू आदि हिंसक जन्तु भी हानि नहीं पहुंचाते। जहर मीराबाईको कुछ नहीं कर सका। इस तरह कितनेही भक्तोंमें अनेक प्रकारका बल आजाता है। इससे दुनियाके अनेक प्रकारके दुःख वे आसानीसे सह लेते हैं। जैसे—गरीबीका दुःख; अपमानका दुःख, बीमारीका दुःख और मृत्युका दुःख वे बहुत आसानीसे सह लेते हैं। भक्तोंके अन्दर ऐसी खूबी है कि व्यवहारी लोगोंसे उनमें अधिक बल आजाता है। इससे वे बहुत जोर और उत्साहसे भगवानके रास्तेमें आगे बढ़ सकते हैं।

अनेक प्रकारका बल मिलजानेसे भक्तोंको अनेक प्रकारकी अनुकूलता होजाती है। इसके सिवा जब किसी भक्तमें भक्ति बढ़जाती है तब भक्तिसे उसका धन बढ़जाता है, बल बढ़जाता है, सद्गुण बढ़जाते हैं, बुद्धि बढ़जाती है और रूप भी बढ़जाता है। सच्ची भक्ति अपना प्रभाव दिखाये विना रहती ही नहीं।

भक्तोंमें सिर्फ धन, बल, बुद्धि आदि ही नहीं बढ़जाती वरंच

उनके अन्दर महा अमूल्य पवित्रता जैसी एक ऐसी स्वर्गीय वस्तु आजाती है जिसकी कीमत और किसी वस्तुसे नहीं आंकी जा सकती या न किसी वस्तुसे उसकी तुलना हो सकती है। इससे उनका भाग्य खिलजाता है और पवित्रताके कारण उनका हर काम चमक उठता है तथा छोटा काम भी बड़ा लाभदायक हो जाता है। याद रहे कि यह सब लाभ भक्तिके कारण ही होता है और यह सब भक्तिकी ही खूबी है।

यही नहीं कि भक्तिमें सिर्फ रूप, गुण, बल, धन आदि बढ़ानेका गुण है वरंच कोई भक्त बहुत गरीब हो, बिना ज्ञानका हो, बदरूप हो और विचित्र रहन-सहनका हो तोभी वह दूसरे कितने-ही आदमियोंसे हरिजनोंको अधिक प्यारा लगता है। ऐसे मनुष्यके आसपास भी लोगोंकी भीड़ लगी रहती है तथा उनका बड़ा आदर मान करती है। भक्तिकी खूबीसे अपढ़ कुरूप और विचित्र रीति भांतिवाले भक्तोंपर भी जब लोगोंकी इतनी श्रद्धा रहती है तब ज्ञानी भक्त हों, अमीर भक्त हों, सद्गुणी भक्त हों, शिष्टाचारी भक्त हों और सुरूप भक्त हों तो वे लोगोंको कितना खींच सकते हैं और उनको कितना लाभ पहुंचा सकते हैं यह समझना कुछ कठिन नहीं है।

भक्तिके बारेमें शास्त्रोंमें जो जो बातें कही हैं वे सब अनुभवकी दृष्टिसे देखनेपर धीरे धीरे सच्ची मालूम होती हैं। इसलिये अब हमें खूब अच्छी तरह भक्तिकी खूबी समझना चाहिये। ज्यों ज्यों इसकी खूबी समझमें आती है त्यों त्यों और भक्ति करनेका मन होता है। परन्तु मनका स्वभाव ऐसा निकम्मा है कि भक्तिके ये सब फायदे जान कर भी उससे जैसा चाहिये वैसा लाभ नहीं उठाता। साधन रहते हुए भक्ति जैसी अमूल्य वस्तुसे लाभ न उठाना बहुत बड़ी भूल है। याद रहे कि यह

भूल पीछेसे कभी सुधर नहीं सकती। क्योंकि सब चीजें फिर मिल सकती है "परन्तु गया वक्त फिर हाथ आता नहीं।" करोड़ों रुपये खर्चिये तोभी गया वक्त फिर नहीं मिलता। ऐसा वक्त, ऐसा अवसर ऐसी अनमोल घड़ी व्यर्थ चली जाती है। ऐसा कीजिये कि वह व्यर्थ न जाय उससे लाभ हो। यही हमारी विनती ह।

बन्धुओ! भक्ति ऐसी अमूल्य, ऐसी अलौकिक वस्तु है और भक्तिमें भगवान आपरूप है। इसलिये भक्ति करनेके निमित्त अपने आसपासके सब लोगोंको तथा अपने हितनातोंको और मित्रोंको समझाना हमारा कर्त्तव्य है। यह कर्त्तव्य पालनेके लिये जिसको जैसा कहना उचित हो उसे वैसा कहना तथा इसके लिये जितनी चेष्टा हो, करना। फिरभी कोई अभागा मनुष्य न माने तो अपने मनमें पछतावा न करना। क्योंकि किसीको भक्ति देना अपने हाथमें नहीं है, यह तो जिसपर ईश्वरकी कृपा होती है उसे मिलती है। परन्तु इसके लिये अपना जो कर्त्तव्य है उसके पालनेमें कोताही न करना। हमारी मिहनतसे अगर कोई आदमी भक्तिमें लगे और भक्त हो तो उसकी आत्माको अतिशय आनन्द होता है और वह चौरासी लाखके फेरेसे छूटजाता है। इससे उसका आशीर्वाद हमें मिलता है। अपनी मिहनतसे दूसरे मनुष्योंमें भक्ति बढ़ते देख कर हमें भी बड़ा आनन्द होता है। भक्तिकी ऐसी ऐसी खूबियां देख कर इसे बढ़ानेका कोई मौका मत चूकना वरंच जैसे बने वैसे उससे अधिक लाभ उठाना। यही हमारी बिनती है।

१०९-भाइयो ! धर्म और भक्तिका काम जल्द कीजिये । उसे वादेपर मत रखिये ।

एक लहरी जवान था । वह बड़ा शौकीन और उड़ाऊ आदमी था । तिसपर क्वारा था । इससे जहां जी आता चला जाता । चाहे जब, अवेर सवेर घर आता और चाहे जैसे पड़ा रहता । उसे वक्त या पैसेकी परवा न थी न वह उसका मूल्य समझता था । यों वह वक्त, पैसा और जवानी ओछी रीतिसे बुरे मौज शौकमें बिताता था । वह मुफलिस जवान एकदिन बड़ी रातको रोते रोते अपने घर गया, उस समय उसने अपने बुरे मित्रोंके साथ भंग पी ली थी जिसका ज़रा ज़रा नशा चढ़ा था । उस नशेकी खुमारीमें वह अपने घर पहुँचा तो वहां दो चिराग जलते देखे । वह नौकरको गाली देने और कहने लगा कि वह बड़ा गधा है । दो दीये क्यो जलाता है ? क्या किसीकी ब्याह शादी पड़ी है ? ज्यादा तेल जलनेमें उसके बापका क्या जाता है ? ऐसे उजाले घरमें दो दीयेकी क्या जरूरत थी परन्तु इतनी अकल कहांसे हो ? सवेरे आवेगा तो उस हरामखोरको देखूँगा । यह कह कर दीयेपर पखा हिला दिया । दीया बुझगया और घरमें घोर अंधकार छागया । फिर दियासलाई ढूंढ़ने लगा पर मिली नहीं । सारी रात मस मच्छड़की भनाहटमें बितानी पड़ी और बहुत हैरान होना पड़ा ।

बन्धुओ ! यह दृष्टान्त दे कर एक संत यह समझाता कि असलमें दो चिराग न थे, एक ही चिराग जलता था । परन्तु वह दीया जिस मेजपर रखा था उसके सामने एक आइना टंगा था । उसमें उस दीपकका प्रतिबिम्ब पड़ता था । इससे उस भंग

पिये हुए बौड़मको दो दीपक दिखाई देते थे। असलमें एक ही दीपक था। उसको बुझादेनेसे उस शौकीन जवानको सारी रात कष्टसे बितानी पड़ी। वैसे ही याद रखना कि हम भी मोहरूपी मदिरासे मत्त हो गये हैं इससे हमें ऐसा लगता है कि अभी वक्त थोड़े गया है? पीछे करलेंगे। यह समझ कर हम इस समयका दीया बुझा देते हैं अर्थात् इस समयकी अपनी जिन्दगी गँवा देते हैं। परन्तु याद रहे कि इस दीपकके बुझा देनेपर फिर दूसरा दीपक नहीं है। अजी! अगर अभी वक्त खो दोगे और जो करनेको है उसे न करके वादेपर रख दोगे तो रोओगे। क्योंकि यह जीवन क्षणभंगुर है, यह देह पानीके बबूले समान है और समय जाते देर नहीं लगती। इसलिये उत्तमसे उत्तम, करोड़ों रुपये देनेपर भी न मिलनेवाली अनमोल जिन्दगी व्यर्थ मत गंवाओ, व्यर्थ मत गंवाओ; बल्कि जैसे बने वैसे उससे लाभ उठाओ और उसे सार्थक कर लो, सार्थक कर लो।

११०—आदमी अपने मनमें जैसा विचार करता है आगे जा कर वैसा ही हो जाता है, इसलिये किसी ओछे विचारके साथ मत खेलना।

बन्धुओ! मनुष्योंकी प्रकृति ही ऐसी है कि वह एक क्षण भी विना सोचे नहीं रह सकता। मनका स्वभाव ही ऐसा चंचल है कि वह किसी न किसी प्रकारका विचार हमेशा किया करता है। विना विचारकी दशामें मनको रहना आता ही नहीं।

इससे हर मनुष्यका मन किसी न किसी किस्मके विचारमें दौड़ जाता है। मनुष्य जैसा विचार करता है वैसा ही बन जाता है। विचारमें इतना बड़ा बल है। इसलिये हर एक हरिजनको भली भांति समझ लेना चाहिये कि विचार क्या है, विचारसे क्या होता है और किस प्रकारका विचार करना चाहिये। विचारसे ही जिन्दगी बनती या बिगड़ती है। तोभी अफसोस है कि विचारोंके बल सम्बन्धी कुछ भी हाल हम नहीं जानते और न कोई उसे समझनेकी विशेष चेष्टा करते। फिर भी हम मोक्ष चाहते है! परन्तु याद रहे कि मनको वशमें रखनेकी कुंजी ही है विचारोंका बल समझना तथा किस किस्मका विचार करना चाहिये इसका भेद जानना। यह सब समझानेके लिये आगे बढ़े हुए भक्त कहते हैं कि जैसे समुद्रमें एकके बाद एक लहरें उठती हैं वैसे हमारे मनमें विचारोंकी लहरें उठा करती हैं और उन विचारोंका चित्र हमारे अन्तःकरणमें पड़ जाता है, वे ही विचार बाहर जाते हैं और दूसरे मनुष्योंपर असर डालते हैं तथा हमारे अन्तःकरणके अन्दर बार बार वापस आते हैं। विचारमें इस प्रकारकी शक्ति है। इसलिये हमें अपने मनमें किसी प्रकारका विचार करनेसे पहले बहुत सम्हलना चाहिये। हम जिस किस्मका विचार बार-बार करते है वैसी आदत पड़ती है। और मनुष्यका स्वभाव ऐसा है कि किसी बातकी आदत पड़ जानेपर उसका छूटना कठिन होता है। सो पहले विचार करते समय ही विचारपर अंकुश डालना सीखना चाहिये।

जो मनुष्य सदा अच्छे विचार करते हैं वे अच्छे होते हैं और जो मनुष्य सदा बुरे विचार करते हैं वे दुर्गुणी होते हैं। जैसे—पहले किसीको गाली देनेका विचार हुआ था, किसीपर

क्रोध करनेका विचार हुआ और वैसा किया, कई वार ऐसा हुआ तो उसके अनुसार इन्द्रियोंको, मनकी वृत्तियोंको तथा रुचिको आदत पड़ने लगी। धीरे धीरे वैसी लत पड़गयी। और जिस आदमीको जैसी लत पड़जाती है उसका चाल चलन वैसा ही हो जाता है। जिसका चाल चलन हलका बन जाता है उसको लोग दुर्गुणी कहते हैं। जिस समय इस किस्मके बुरे विचार मनमें आये उसी समय उन्हें भगा दिया होता और अपने मनमें उन विचारोंको खेलने न दिया होता तथा दस बीस वार मनसे लड़ाई करके उन बुरे विचारोंको जड़ पकड़ने न दिया होता तो ऐसी खराब लत न पड़ती और आदमी खराब न समझा जाता। परन्तु उसने खराब विचारोंको अपने मनमें जगह दी और उनके साथ खेल किया तथा वे विचार उसे पसन्द आये इसीसे वह दुर्गुणी हो गया। अगर आरम्भमें उसने उन विचारोंको सहारा न दिया होता तो उसकी ऐसी हालत न होती। इसलिये याद रखना कि विचारोंका बल बहुत बड़ा है। और अच्छे या बुरे विचार करना अपने इख्तियारकी बात है। जैसा विचार किया जाता है वैसा आदमी बन जाता है। इसमें तनिक सन्देह नहीं है। जो कोई बुरा विचार करनेसे खूब बचना।

इससे आप समझ सकोगे कि अच्छा या बुरा होना अपने ही हाथमें है। इसलिये विचार करनेमें बहुत खबरदारी रखना चाहिये। बहुत आदमी कहते हैं कि हमारे मनमें अनेक प्रकारके बुरे विचार आते हैं, वे हमें रुचते नहीं, तोभी जबरदस्ती हमारे चित्तमें घुस जाते हैं; तब हम क्या करें? इसके उत्तरमें महात्मा कहते हैं कि तुम्हारी यह बात सच है परन्तु इसका कारण इतना ही है कि इसके लिये जितनी मिहनत करना चाहिये

उतनी मिहनत अभी तुम नहीं करते हो। कुत्तेको घरमें आनेसे रोकनेके लिये हम लोग कभी डांटते है, कभी मारते हैं, और दरवाजा बन्द रखते है। वैसा ही वर्ताव तुम बुरे विचारोंके साथ करो तब वे तुम्हारे मनसे जायंगे। परन्तु अभी तुम उतनी मिहनत नहीं करते। तुम जब किसी वक्त अच्छे संयोगमें रहते हो तब बुरे विचारोंको भगानेकी इच्छा करते हो परन्तु जब निर्बल संयोगमें पड़ जाते हो तब बुरे विचारोंको अपने मनमें टिकने देते हो और उसमें अपने मनको खेलाया करते हो। इसीसे तुम उन विचारोंके वशमें हो गये हो और उनमें बंधगये हो। इससे उन विचारोंके आगे तुम्हें लाचार होना पड़ता है। परन्तु याद रहे कि इन बुरे विचारोंका, जितना बल है उससे अधिक बल तुम्हारी आत्माका है और उससे कहीं अधिक बल परम कृपालु परमात्माकी कृपाका है। इसलिये अगर तुम अपने मनमें खेलनेवाले या आनेवाले बुरे विचारोंको निकालना चाहो तो निकाल सकते हो।

तुम कहते हो कि हम ऐसे बुरे विचारोंको अपने मनसे निकालते हैं परन्तु वे बार बार लौट आते है; हमें वे विचार नहीं रुचते तोभी वे आते है। भाइयो! तुम्हारी यह बात सच है परन्तु तुम्हें ऐसे विचार किया करनेकी पुरानी आदत पड़ गयी है इससे वह आदत एकाएक नहीं छूटेगी। आदत पड़नेमें जितना समय लगता है उससे बहुत अधिक समय उस आदतको छोड़नेमें लगता है। इसलिये ऐसे बुरे विचारोंको मनसे निकाल डालनेकी कोशिश करना चाहिये। लगी हुई पुरानी आदत एकाएक नहीं जाती, धीरे धीरे जा सकती है। खराब विचारोंको मनसे निकाल डालनेके लिये जैसे बने वैसे उनसे लड़ाई करते रहो।

बन्धुओ! आपके मनसे बुरे विचार न जाते हों तो इसमें आपकी ही भूल है। और इसमें आपका ही भोलापन है। जरा विचार तो कीजिये कि आप अपने मौज शौकके पीछे जितना पैसा खर्चते हैं उतना पैसा अपने विचार सुधारनेमें खर्चते है? आपका कोई नातेदार या मेहमान आता है तो उसका जितना ख्याल रखते हैं और सबेर उठ कर गाड़ीके टाइमपर स्टेशन जाते हैं—उतना ख्याल अपने मनसे बुरे विचारोंको दूर करनेका रखते हैं? अगर आपको धन मिले आप खाना, सोना और मौज शौक छोड़देते हैं परन्तु अपने अंतःकरणको सुधारनेके लिये और भगवानको पानेके लिये आप उस तरह खाना सोना और मौज शौक थोड़े छोड़ देते हैं? कहिये कि नहीं। इस विषयमें आपका पुरुषार्थ बहुत थोड़ा है इससे आपका मन वश नहीं होता। अगर मनको वश करना हो और उसमें से खराब विचारोंको निकाल डालना हो तो इन सब बातोंको अच्छी तरह समझ लीजिये और इनमेंसे जो कुंजी आपमें ठीक लगे उसे पकड़ लीजिये और उसका उपयोग किया कीजिये। तब धीरे धीरे आप अपने विचारोंको सुधार सकेंगे; आप सद्गुणी हो सकेंगे और प्रभुके प्यारे हो सकेंगे।

१११—आदमी अपने मनमें जैसा विचार करता है आगे जा कर वैसा ही हो जाता है। (२)

बन्धुओ! जो सच्चे भक्त होते हैं वे अपने मनसे खराब विचारोंको निकाल डालनेके लिये कितनी मिहनत करते हैं यह बात आप जानते हैं? वे कितने उदार होते हैं; प्रभुके लिये

अपने स्वार्थका कितना सुख त्यागते हैं, कैसे सन्तुष्ट रहते हैं, कैसे निर्लोभी रहते है और कितने प्रभुपरायण होकर रहते है यह बात विचारने योग्य है। जिन्हें ऐसा करना आता है वेही अपने अन्तःकरणसे बुरे विचारोंको निकाल सकते हैं। जो ऐसे प्रभु-परायण भक्त होते हैं वे कुछ भी बुरे विचार अपने मनमें नहीं आने देते उनका मन ईश्वरके ध्यानमे तथा प्रभुके जीवोंके कल्याणके काम करनेमें ही लगा रहता है। इससे उनके मनमें बुरे विचार नहीं आ सकते। खराब विचारोंके रहनेकी जगह ही उनके मनमें नहीं होती। फिरभी कभी कोई बुरा विचार आ जाय तो, जैसे अपने अंगरखेपर चढ़े हुए कीड़े मकोड़को तुरत पकड़ कर अलग फेक देते है, वैसे ऐसे भक्त अपने मनमें आ घुसे हुए बुरे विचारोंको तुरत ही निकाल भगाते है। किसी बुरे विचारका बहुत जोर हो गया हो और पुरानी आदत पड़ जानेसे वे विचार भगजसे न निकलते हों तोभी वे उन विचारोंके अनुसार काम नहीं करते। अगर कभी ऐसा हलका काम जबरदस्ती होभी जाय तो वे तुरत चेत जाते है और इस बातका सदा ध्यान रखते हैं कि फिर ऐसी भूल न हो। इससे वे पापी विचारोंसे बचते हैं। परन्तु ऐ हरिजनो! याद रखना कि आपने अपने मनसे खराब विचारोंको दूर करनेके लिये इतनी ज्यादा मिहनत नहीं की है और ऐसी सावधानी नहीं रखी है तथा ऐसी दृढ़ता नहीं रखी है। इससे आप फंस जाते हैं। सो आप जो भूल करते है उसमें आपका ही दोष है। इस विषयको अच्छी तरह समझनेके लिये आप अपने अनुभवका एक दृष्टान्त लीजिये।

जब आप पहलेपहल भक्ति करने और प्रभुका नाम सुमिरने लगे तब माला फेरनेमें कितनी कठिनाई पड़ती यह याद है?

फिर आंख बंद करके ध्यान लगनेमें कितनी कठिनाई पड़ती और अब इन सब बातोंमें कितना बड़ा आनन्द आता है यह देखते हैं कि नहीं ? इसका कारण क्या है ? भाइयो ! इसका कारण और कुछ नहीं, आदत ही है।

भइयो ! नया नया जो काम करना पड़ता है, वह पहले अवश्य कठिन जान पड़ता है, परन्तु आदत पड़ जानेके बाद हर काम सहज होजाता है। जैसे बालक पहलेपहल चलना सीखते हैं तो उसमें भी कठिनाई पड़ती है, बोलना सीखते हैं तोभी कठिनाई पड़ती है, गाना सीखते हैं तबभी कठिनाई पड़ती है और नये रोजगार धंधेमें पहलेपहल हाथ लगाते हैं तबभी कठिनाई पड़ती है। परन्तु जब आदत पड़जाती है तब ये सब काम बहुत सहज हो जाते हैं और उनमें बहुत आनन्द मिलता है। वैसेही याद रखना कि आपके मनमें जो बुरे विचार रमरहे हैं उन्हें निकाल डालनेमें इस घड़ी आपको मिहनत लगती है परन्तु जब ऐसे विचारोंको दूर करनेकी आदत पड़ जायगी तब आपको कुछ मुश्किल नहीं मालूम होगी। वरंच उनको दूर करनेसे आपको बहुत आनन्द होगा। भाइयो ! इन सब बातोंसे समझ लीजिये कि सब आदतके अधीन है। इसलिये बुरे विचारोंको रोकनेकी आदत डालिये और अच्छे विचारोंमें मनको लगाइये। तब अच्छे काम कर सकेंगे और भद्र पुरुष हो सकेंगे। परन्तु इसमें एक बात विशेष रूपसे ध्यानमें रखना कि एकवार या पांच सात बार प्रयत्न करनेसे पुरानी आदत जाती नहीं रहेगी जब बहुत समय तक बारबार यह उपाय आजमाया करेंगे और उसमें पीछे नहीं हटेंगे तभी आगे जाकर विजय पा सकेंगे। सो खराब विचारोंको मनसे दूर करनेके लिये धीरज और हिम्मतसे काम लेना और विश्वासपूर्वक यह समझना कि शुभ विचारोंकी

क्योंकि भगवान है ; इससे अंतको शुभ विचारोंकी ही विजय है। यह समझ कर शुभ विचारोंमें ही मनको लगाये रखनेकी चेष्टा करना।

बन्धुओ! आप जानते हैं कि बालक जब चलना सीखते हैं तब कुछ एकही दिनमें नहीं चलना आजाता वरंच बहुत दिनों तक एक एक पैर उठाकर चलते हैं। आम कुछ एक दिनमें नहीं पकता वरंच उसके पकनेमें समय लगता है और वह मौसिम आनेपर पकता है। वैसेही अपने मनसे बुरे विचारोंको निकाल डालना खेलवाड़ नहीं है और न दाल भातका कौर है; यह धीरजका काम है, यह मिहनतका काम है। जब धीरजसे मिहनत करें तभी चित्तमें उठते हुए बुरे विचार बन्द हो सकते हैं।

बन्धुओ! मनमें आनेवाले बुरे विचारोंको रोकनेकी एक यह भी युक्ति है कि जैसे बने वैसे भगवानका नाम खूब सुमिरे। ऐसा करनेसे भी बुरे विचार रुक सकते हैं। यद्यपि इससे भी एकदम सब विचार नहीं रुकते तथापि यह उपाय भी बहुत अक्सीर है। ज्यों ज्यों नामस्मरणका जोर बढ़ता जाता है त्यों त्यों बुरे विचार आपसे आप रुकते जाते हैं। खेदकी बात यह है कि जैसा भजन करना चाहिये वैसा भजन हमसे नहीं होता। इससे बुरे विचार हमारे ऊपर हमला कर देते हैं। परन्तु उस हमलेको रोकनेके लिये भजन बहुत बढ़िया ढाल है। इसमें कुछ सन्देह नहीं है। इसलिये इस उपायको जितने जोरसे बने काममें लाते रहना।

भाइयो! मनमें आनेवाले बुरे विचारोंको रोकनेकी एक रीति यह है कि आग लगे तो तुरत ही उसे बुझा देना, आगे बढ़ने न देना। बढ़ने देनेपर पीछेसे बुझाना कठिन हो जाता है। वैसे ज्योंही मनमें खराब विचार आवे त्योंही उसे खदेड़ना और

उसी समय चले तो किसी दूसरे विचारमें लग जाना या किसी दूसरे काममें मन लगाना परन्तु मनमें आये हुए बुरे विचारके साथ न खेलना। ऐसा करनेपर बहुत आसानीसे बुरे विचारोंको रोक सकते हैं। पुराने पापी विचार-जिनकी बहुत आदत पड़ गयी हो और मनमें जिनका दाग पड़ गया हो वे जल्द न जायं तो यह दूसरी बात है परन्तु जो नये खराब विचार मनमें आते हों उनको इस उपायसे तुरत रोक सकते हैं। हर एक हरिजनको अपने मनसे दुष्ट विचार निकाल डालनेके लिये ये सब उपाय जान लेना चाहिये।

बन्धुओ! ऊपर बताये सब उपायोंको मौके मौकेपर आजमाना। इसके साथ ही सबसे पक्का उपाय प्रार्थना करना भी है कि हे प्रभु! हे प्रभु! हमारे मनमें हमें न रुचनेवाले दुष्ट विचार आजाते हैं उन्हें रोकनेकी तू कृपा कर। हे नाथ! हमारे जोरसे ये विचार नहीं जाते, इसलिये उन्हें निकाल डालनेमें तू हमारा सहाय हो। इस प्रकार शुद्ध अन्तःकरणसे बारंबार परम कृपालु परमात्माकी प्रार्थना किया करें तो इससे भी खराब विचारोंको मनमें आनेसे रोक सकते हैं। भाइयो! बुरे विचार कितनी बड़ी खराबी करते हैं यह समझ लीजिये और उसके साथ यह भी जान लीजिये कि अच्छा या बुरा होना अपने ही हाथमें है और अपने विचारों पर अंकुश रखनेसे आदमी अच्छा हो सकता है। इसलिये हे हरिजनो! जैसे बने वैसे अपने विचारोंपर अधिकार रखिये और दुर्बल विचारोंको दूर कीजिये तथा ऐसा कीजिये कि अच्छे विचार और अच्छे काम हों। महात्माओंकी ये सब युक्तियां जानकर उनसे लाभ उठाइये और सुखी हूजिये। यही हमारी विनती है।

११२–शास्त्र और संत कहते हैं कि सत्संगकी बलिहारी है।

सत्संगमें अनेक प्रकारका लाभ है, यह बात सन्तलोग पुकार कर कहते हैं। दुनियाके सब धर्मके शास्त्रोंमें यही बात बारंबार कही है कि सत्संग करो और कुसंगसे बचो। हम देखते हैं कि जो आदमी कोयलेका रोजगार करता है उसका कपड़ा काला होता है और जो आदमी इत्र बेचता है उसका कपड़ा खुशबूदार होता है। वैसेही जो आदमी सत्संग करता है वह अच्छे विचारवाला होता है और जो खराब संगतमें रहता है उसकी खराबी होती है। इसमें कुछ भी सन्देह नहीं है।

बन्धुओ! सत्संगका प्रभाव कितना बड़ा है यह आप जानते हैं? पानीकी कीमत कुछ भी नहीं है तो भी जब उसे दूधमें मिला देते हैं तब वह दूधके भाव बिकता है। घी और नारियलके तेलके भावमें बहुत अंतर है परन्तु नारियल या बिनौलेके तेल या चरबीको घीमें मिलादें तो वह घीके भाव बिकता है, अन्नमें कंकड़, रुईमें मकठा, मक्खनमें आटा, इत्रमें तेल और दूसरी कितनीही चिजोंमें कितनीही सस्ती वस्तुएं मिला देते हैं और अच्छी चीजोंकी संगतसे उन सस्ती वस्तुओंकी कीमत भी बढ़ जाती है। जब संगतका प्रभाव जड़ वस्तुओंपर भी पड़ता है तब तीव्र रुचि-वाले मनुष्योंपर उसका प्रभाव पड़नेमें क्या आश्चर्य है? इसलिये जैसे बने वैसे बुरी संगतसे बचना चाहिये और सत्संग करना चाहिये। सत्संगका यह प्रभाव हमने देखा है कि किसी अच्छे राजा महाराजसे गरीब आदमीकी मित्रता होजाती है तो उस गरीबको भी अपनी रीति भांति तथा पोशाकमें फेरबदल करना पड़ता है और अमीरके साथ शोभनेवाली रहन सहन उसे

रखनी पड़ती है। वैसेही सेठसे ब्याही देहातकी गरीब घरकी लड़की भी उसके संगसे धीरे धीरे सुधर जाती है पीछे धीरे धीरे वास्तवमें सेठानी बनजाती है। यह सब सत्संगसे होता है।

राजाओंकी सेवामें जो आदमी रहते हैं उनमें कितनेही हलकी जातिके होते है। जैसे- खवास, कहार, मोची इत्यादि। साहबोंके नौकर मेहतर तक होते हैं। राजाकी तथा साहबकी सगतसे उन सब आदमियोंमें बहुत कुछ शिष्टाचार, अदब कायदा, सफाई तथा बोलचालकी छटा आजाती है। ऐसे आदमियोंको देख कर आसपासके लोगोंको आश्चर्य होता है कि इन आदमियोंमें इतना बड़ा फेरबदल कैसे होगया ? इसका कारण बड़ोंकी संगत ही है।

बन्धुओ ! ये सब दुनियवी दृष्टान्त हैं और इनसे भी बहुत अच्छी तरह यह समझमें आजाता है कि अच्छी संगतसे कितना बड़ा लाभ होता है। विचार कीजिये कि जब दुनियादार लोगों तथा वस्तुओंकी संगतसे भी इतना बड़ा असर होता है तब प्रभुके अच्छे अच्छे संतोंके संगसे कितना बड़ा असर होता होगा। इसके लिये भक्त कहते हैं कि जब सच्चे संतोंका समागम होजाता है तब तुरतही लक्षण बदलने लगते हैं। सन्तकी संगतमें आये हुए मनुष्यमें प्रभुप्रेम बढ़ताजाता है, मनमें उठनेवाले खराब विचार निकलते जाते हैं और उनके बदले अच्छे अच्छे विचार आते जाते हैं। संतके संगसे धीरे धीरे जिंदगी बदलती जाती है और काम, क्रोध, मद, लोभ और डाहके बदले दया, शान्ति, क्षमा, संतोष, धीरज, सत्यता, पवित्रता और हृदयका आनन्द इत्यादि बड़े बड़े गुण आने लगते है। इतनाही नहीं, संतके संगसे मनुष्य देवता बन सकता है, नरसे नारायण बनजाता है और जीवसे शिव बनजाता है। इसलिये सत्संगका बहुत बड़ा लाभ समझ कर

महात्माओं, सन्तो, भक्तों और भक्तोका संग कीजिये। संग कीजिये। यही हमारी विनय है।

११३–सत्संगमण्डलीमें किसी संतके साथ रह कर भक्ति करनेसे जितना आनन्द मिलता है उतना आनन्द उस स्थान तथा उस संगके छोड़नेके बाद नहीं मिलता। इसका कारण।

बहुतेरे हरिजन यह कहते है कि ध्यान धरते समय हमें जैसा आनन्द होता है वैसा आनन्द संसारी लोगोंके संगसे नहीं होता। कितने भक्त कहते है कि प्रभुका दर्शन करनेसे हमें जैसा आनन्द होता है वैसा आनन्द मन्दिर छोड़नेके बाद नहीं रहता। कितने भक्त कहते है कि हरिकथाके समय हमारा मन जैसा पवित्र रहता है वैसी पवित्रता कथासे उठनेके बाद नहीं रहती। कितने भक्त कहते है कि प्रभुका नाम सुमिरते समय हमें जो आनन्द होता है वह आनन्द छोड़नेको जी नहीं चाहता। कितने भक्त कहते हैं कि भगवानका भजन करते समय हमें जो आनन्द होता है वैसा आनन्द उस स्थितिके छूटनेपर नहीं होता। कितने भक्त कहते हैं कि प्रभुके लिये परमार्थके काम करते समय हमें जो आनन्द होता है वह आनन्द घर गृहस्थीके काम करते समय नही होता। इसका कारण क्या है? कितनेही हरिजन ऐसा पूछते हैं। इसके उत्तरमें संत कहते है कि जो आरम्भके भक्त हैं, जो कच्चे भक्त है, जो अधूरे भक्त हैं और जिनका मन अभी प्रभुमें ठहरा नहीं है उनके अन्दरका प्रभुप्रेम पतली बत्तीवाले छोटेसे दीयेके

समान है। छोटे दीयेको जरा भी हवाका झोंका लगे तो वह झलमलाने लगता है और जरा जोरसे झोंका लगे तो बुझ जाता है। संसारी जनोंकी संगत प्रभुप्रेमके दीयेको झलमलादेनेवाली हवाके समान है। साफ दिलसे, पूरी श्रद्धासे, गहरे प्रेमसे, निःस्वार्थभावसे और सच्ची समझसे प्रभुकी महिमा समझ कर भजन करनेकी जो स्थिति है और व्यवहारकी तरद्दुदकी छोटी छोटी बातोंमें समय बिताने, दुखड़ा रोने, सारे जहानकी फिकरकी बातें करने, एक दूसरेपर क्रोध करने, खाने पीने तथा पहिनने ओढ़नेकी बातोंमें ही खुश रहने और ओछे दरजेके विचार तथा बातें सुननेकी जो स्थिति है इन दोनोंमें आकाश पातालका अन्तर है। इसलिये ईश्वरके भजनके समय जैसा आनन्द मिल सकता है वैसा आनन्द उस स्थितिके छूटनेपर नहीं मिल सकता। जो छोटा पेड़ होता है उसको हवा हिलाती है। वैसे ही हमारे हृदयका प्रभुप्रेम जबतक छोटा रहता है तबतक संसारी धक्के उसे लगते रहते हैं और संसारी लोगोंकी संगतके प्रभावसे उसमें अन्तर पड़ जाता है। इसलिये भक्ति करते समय जैसा आनन्द होता है वैसा सांसारिक काम करते समय नहीं हो सकता।

बन्धुओ! जैसे जलती आगमें ठंढी हवाकी आशा नहीं पूरी हो सकती वैसे सांसारिक प्रपंचोंके बीचमें रह कर तथा ऐसे आदमियोंकी संगतमें पड़ कर आत्मानन्दको जगाये रखना बड़ा कठिन है। क्योंकि प्रपंच अग्नि समान है और आत्मानन्द एक प्रकारकी हृदयकी ठंढक है। इसलिये जैसे अग्निमें ठंढक नहीं रहती वैसे व्यावहारिक प्रपंचोंमें आत्मानन्द नहीं रह सकता। कुछ न कुछ उसे धक्का लगा ही करता है।

क़लई किये हुए सोने, चांदीके गहने हाथमें लें तो तुरत ही

उनमें दाग लगजाता है और कलई जरा फीकी पड़ जाती है। वैसे व्यवहारी लोगोंकी संगतमें जानेसे भक्तिका रंग फीका पड़ जाता है। इन सब विषयोंको समझ कर पहलेके ऋषि तथा कितने ही त्यागी, साधु जंगलमें जा कर अकेले रहते थे और किसी प्रपंची मनुष्यका संग नहीं करते थे। परन्तु आजके जमानेमें ऐसा होना कठिन है और देश कालको देखनेसे ऐसा करनेकी कुछ विशेष जरूरत भी नहीं जान पड़ती। तोभी इतनी बात तो अवश्य समझ लेने योग्य है कि संगतका असर बहुत पड़ता है और संसारी प्रपंचमें बहुत पड़नेसे भक्ति उड़ जाती है। ऐसा न होने देनेके लिये सच्चे हरिजनोंको ऐसा करना चाहिये कि अपने भीतर जगे हुए प्रभुप्रेमका दीया बना रहे। इस दीयेको हवाके झोंकेसे बचाना चाहिये।

११४–किसीने कुछ थाती रखी हो और वह वापस ले जाय तो उसका अफसोस नहीं करना चाहिये।

एक स्त्री थी। वह बहुत चतुर, शान्त स्वभावकी और धर्मका मर्म समझे हुई थी। इससे वह बहुत शान्तिसे रहती थी परन्तु उसका पति बड़े चंचल स्वभावका और मोहवादी था, इससे छोटी छोटी बातोंमें भी अपना मन बिगाड़ता और क्रोध करता था। उसे सुधारनेके लिये वह स्त्री बहुत कोशिश करती थी। एक बार उस स्त्रीका लड़का बीमार पड़ा और उसी बीमारीमें अचानक गुजर गया। उस समय स्त्रीका पति घरमें मौजूद न था। स्त्रीको चिन्ता हुई कि पति सन्ध्याको

घर आवेगा तो कुहराम मचावेगा और बहुत दुखी होगा। उसे समझाने और ढारस देनेके लिये कोई युक्ति करना चाहिये। यह सोच कर उसने अपने मरे लड़केकी लाशको कपड़ेसे इस ढंगसे ढकदिया मानो वह सोता है। पीछे जब पति घर आया तब स्त्रीने कहा कि आज मुझसे बड़ा झगड़ा हुआ है और बड़ी आफत मच गयी है।

पतिने पूछा कि क्यों और किससे झगड़ा हुआ?

स्त्रीने कहा कि मैं अपनी पड़ोसिनसे एक बड़ा कीमती गहना थोड़ी देरके लिये मंगनी मांग लायी थी। वह स्त्री आज अपना गहना मुझसे मांगने आयी तो मैंने कहा कि अभी नहीं दूंगी। पड़ोसिनने कहा कि मैं गहना लिये बिना यहांसे टलूंगी नहीं। तब मैंने उससे बहुत झगड़ा किया। यह सुन कर उसके पतिने कहा अरे तू पगली होगयी है क्या? ऐसी मूर्खता कोई करता है? जिसका गहना मंगनी लिया हो उसको लौटा देना ही चाहिये। इसके लिये झगड़ा क्यों? इसमें तेरी ही भूल है।

स्त्रीने कहा कि बेशक गहना वापस देना चाहिये परन्तु वह गहना बहुत बढ़िया है और मुझे बहुत पसन्द है इससे उसे लौटानेका मन नहीं करता। मैंने कहा कि मेरे पति आवेंगे तो मैं तुझे लौटाऊंगी।

पतिने कहा कि इसमें मेरी क्या जरूरत थी? तुझे पसन्द है इससे क्या तू किसीका गहना जबरदस्ती रख लेगी? तेरे समान चतुर और गुणागरी स्त्री इतना भी नहीं समझती? तूने बड़ी भारी भूल की है और व्यर्थ झगड़ा किया है। तुझे तो तुरत गहना लौटा देना चाहता था। जबरदस्ती रख लेने का तुझे कुछ हक नहीं है।

यह सुन कर उस स्त्रीने अपने पतिसे कहा कि जिसकी मिल-

कियत हो उसे वापस देना चाहिये और उसके लिये अफसोस न करना चाहिये । यह सच बात है ? पतिने कहा इसमें क्या शक ? आज तू ऐसा विचित्र सवाल क्यों पूछती है ? जिस बातको एक छोटा सा बच्चा भी समझता है उसमें तुझे शक क्यो होता है ? स्त्रीने कहा कि प्यारे ! तुम जैसा कहते हो वैसा ही करना। देखो ! प्रभुने हमें जो थाती दी थी वह वापस ले ली है । इसलिये रंज मत मानना । यह कह कर उसने लड़केकी लाशपरसे कपड़ा उठा लिया और पतिको मुर्दा दिखाया। देख कर पतिको बड़ा अफसोस हुआ परन्तु स्त्रीकी पहलेसे समझायी हुई बातसे उसने बहुत कुहराम नहीं मचाया । अगर पहलेसे न समझाया गया होता तो वह आदमी बहुत गड़बड़ मचाता और हाय हाय किया करता ।

चतुर और धर्मवती स्त्रियां अपने पति तथा मा बाप और भाइयोंको इसी तरह मोह मायासे बचा लेती है ।

जिसमें धर्मका बल आजाता है वह आदमी यह समझ जाता है कि जीव प्रभुका भेजा हुआ है और प्रभु जब चाहे तब उसे वापस बुला ले सकता है । इसमें हमारा कुछ जोर नहीं चल सकता । इसके सिवा हरिजनोंको यह भी विश्वास होता है कि आत्मा अमर है वह नहीं मरती । इसलिये देह बदलनेसे कुछ बहुत नुकसान नहीं होता बल्कि और ऊंची दशामें जा सकते हैं । पुराने कपड़ेके बदले नया कपड़ा पहननेको मिलता है या पुराने घरके बदले नया घर रहनेको मिलता है । इसके सिवा हरिजन यह भी मानते हैं कि इस दुनियामें अच्छा काम किया हो तो स्वर्गलोकमें अधिक सुख मिलता है । ऐसी समझ होनेसे हरिजनोंको मौतका बहुत भय नहीं होता । इससे वे मरनेके समय भी कई तरहसे शान्ति रखते है, मायामें फंसे

हुए संसारी जीवोंकी तरह हाय हाय नहीं करते । परन्तु याद रखना कि जब हृदयमें भगवानका प्रेम आता है और जब धर्मका तथा ज्ञानका बल जमजाता है तभी ऐसे मौकेपर दृढ़ता रखी जा सकती है। इसलिये प्रभुप्रेम तथा सत्यधर्मका ज्ञान पानेकी कोशिश कीजिये तब ऐसे दुःखके मौकेपर भी धीरज रख सकेंगे। इस किस्मका धीरज रखनेकी बहुत जरूरत है। क्योंकि अपनी इच्छा न होनेपर भी समय समयपर सगे सम्बन्धियोंमें मृत्यु हुआ करती है। हमें धर्मका बल प्राप्त कर शान्तिसे रहना सीखना चाहिये।



११८–हम सबको कैसे धर्मगुरु की जरूरत है?

एक बड़ा राजा था। वह जब गद्दीपर बैठा तो उसने पहला काम यह किया कि अपने गुरुको बुलाया और उसकी गुरुआई छीन ली। उसे जो वर्षासन मिलता था वह बन्द कर दिया, उसे छतरी मशाल, पालकी आदिकी जो इज्जत थी वह छीन ली और उसे अपमानित करके निकाल दिया, इससे गुरु गरीब होगया। इसके कुछ दिन बाद वह गुरु राजाके दरबारमें गया। राजाने उससे कहा कि तेरा यहां कुछ काम नहीं है तू अपना मुंह मत दिखा। यह सुन कर प्रधान मंत्रीने बड़े अदब और नम्रतासे कहा कि गरीबपरवर! इस आदमीके ऊपर दया होनी चाहिये। इसने ऐसा क्या कसूर किया है कि श्रीमानको इसके ऊपर इतना क्रोध हुआ है?

राजाने कहा कि यह जब मेरा गुरु था तब इसने मुझे गाना बजाना सिखाया, बहुत तरहकी कसरत सिखायी, शिकार

खेलनेका शौक दिलाया, पढ़ना सिखाया, घुड़दौड़में जाना सिखाया, घोड़ेपर चढ़ना सिखाया, मौज शौकके बाज़ार दिखाये और जगतके मोहमें फंसाने और ललचानेवाले बहुतसे विषय मुझे सिखाये परन्तु वैराग्य और ईश्वरसम्बन्धी कोई बात मुझे नहीं सिखायी। इसलिये ऐसे गुरुसे मुझे कुछ काम नहीं है। जो गुरु प्रभुकी महिमा नहीं समझाता और जगतका मिथ्यापन नहीं बताता उस गुरुसे मुझे कुछ गरज नहीं है। दूसरे लोगोंको भी ऐसे गुरुको गुरु नहीं मानना चाहिये। क्योंकि गुरुका दरजा बहुत बड़ा है। गुरु शब्दका अर्थ ही होता है अंधकार दूर करनेवाला और प्रकाशमें लेजानेवाला। गुरु माने अराबी दिखानेवाला आकाशदीया, गुरु माने अपने विश्वासका स्थान; गुरु माने अपनी इच्छाकी लगाम सौंपनेकी जगह; गुरु माने ऐसी जगह जिसके आधारसे निर्भय रह सकें, गुरु माने असली वस्तु पहचाननेवाला महात्मा; गुरु माने चौरासी लाखके फेरेसे छुड़ानेवाली दिव्य शक्ति; गुरु माने सत्य ज्ञानका भंडार; गुरु माने हमें अपने वशमें रख सकनेवाला और सीधे रास्ते लेजानेवाला बल; गुरु माने जिन्दगी सौंपदेनेकी जगह और गुरु माने ईश्वरके समक्ष लेजानेवाला देवता। गुरुका इतना बड़ा दरजा है और ऐसी ज़ोंकी गुरुके ऊपर है। वे गुरु जब आपही मौजशौकमें पड़े रहें और मौज शौककी बातें सिखाया करें और वैराग्यकी, जगतके मिथ्यापनकी तथा सर्वशक्तिमान महान परमात्माके ज्ञानकी बातें न समझा सकें तो फिर गुरु कैसे? ऐसे गुरुओंको गुरु कौन माने? बिना हार्दिक वैराग्यके गुरु तो साधारण मोहवादी सन्यासियोंके ऐसे हैं। ऐसोंको माननेसे क्या फल है? इसलिये तुम इस गुरुकी व्यर्थ वकालत मत करो, इसे मेरे सामनेसे दूर करो। मैं वैराग्य और प्रभुप्रेमसे हीन गुरु नहीं चाहता। यह कह कर राजाने अपने

गुरुको अपने दरबारसे निकलवा दिया।

बन्धुओ! यह दृष्टान्त दे कर एक महात्मा अपने सत्संगियोंको यह समझाते कि जो गुरु होकर अपने शिष्योंसे नहीं कहता कि पाप बहुत खराब है; जो गुरु अपने माननेवाले आदमियोंको यह नहीं समझाता कि इस जगतको छोड़नेके बाद अपने अच्छे बुरे कामोंका हिसाब देना पड़ेगा; जो गुरु अपने पास आनेवाले लोगोंको यह नहीं समझाता कि यह संसार क्षणभंगुर है और अचानक घड़ीभरमें मरजाना है; जो गुरु अपने शिष्योंसे तथा दूसरे लोगोंसे साफ साफ यह नहीं कहता कि तुम्हें परमार्थका काम करना चाहिये वह गुरु गुरुभाईके योग्य नहीं है। क्योंकि गुरुओंका सबसे पहला और अन्तिम तथा प्रधान कर्त्तव्य यह है कि वे अपने सम्प्रदायवाले मनुष्योंको पापके काम करनेसे रोकें और उन्हें विश्वास दिलावें कि प्रभुका भजन करनेमें ही मनुष्यजन्मकी सार्थकता है। यह संसार क्षणभंगुर है; मरनेपर पापी जीवोंको नरकका भयंकर कष्ट भोगना पड़ता है; ऐसा न होने देनेके लिये जैसे बने वैसे शुभ काम करना चाहिये और पापसे बचनेकी कोशिश करना चाहिये। इस तरह पापकी बुराई गुरु अपने शिष्योंको समझावें। जो गुरु ऐसा नहीं करते वे बहुत बड़ी भूल करते हैं और गुरुके बहुत बड़े कर्त्तव्यसे चूक जाते हैं, ऐसा न होने देनेके लिये हरएक गुरुको चाहिये कि जैसे बने वैसे अपने शिष्योंको पापकी भयंकरता समझानेकी कोशिश करें तथा ऐसा उपाय बतावें कि वे पापसे बच सकें। इस विषयपर बारबार जोर दें। क्योंकि पाप ऐसी खराब वस्तु है और ऐसी सूक्ष्म वस्तु है कि जहांका हम कयास नहीं करते वहां भी वह घुस जाता है। इसलिये इस विषयमें बहुत सम्हाल रखनेकी जरूरत है। जिसको इस विष-

थकी सावधानी रखना आवे तथा जो दूसरे मनुष्योंमें प्रभुप्रेम जगा सके वही मनुष्य गुरु होनेके योग्य है । भाइयो ! पापसे बचना हो और प्रभुका प्यारा होना हो तो जो गुरु पापसे बचानेका उपाय जानता हो तथा जो आपके चित्तके प्रभुप्रेमको जगा सकता हो उसे गुरु बनानेका ख्याल रखना । जो स्वयं पापसे छूट गया होगा वह आपको भी पापसे छुड़ा सकेगा और जिसमें प्रभुप्रेम होगा वह आपको प्रभुप्रेम दे सकेगा । सिर्फ बाहरसे बात बनानेवाले गुरुसे सन्तोष मत करना वरंच ऐसे गुरुको पसन्द करना जो आत्माको खुराक दे सके । यही हमारी सलाह है ।

११६–अब यह समझना सीखना चाहिये कि जिन अच्छे कामोंसे बहुत आदमियोंकी भलाई होती है वे सब धर्मके ही काम हैं ।

बहुतेरे भक्तोंको भक्ति बहुत रुचती है और बहुतेरे मनुष्योंको धर्म बहुत रुचता है परन्तु बहुतेरे भक्त भक्तिके बारेमें बहुतही तंग विचार रखते हैं और अपने मनमें रखे हुए थोड़ेसे विषयोंको ही भक्ति समझा करते हैं । उसके सिवा और जो बहुतसे विषय भक्तिके होते हैं उनको वे भक्ति नहीं मानते । जैसे—

कितने भक्त यह समझते हैं कि तीर्थोंमें जाने, नहाने धोने, पूजा पाठ करने, देवताका दर्शन करने, व्रत उपवास करने और अपनी सम्प्रदायकी रीतिपर चलनेका नाम ही भक्ति है । इसके सिवा दूसरे विषयोंपर उनका ध्यान नहीं

जाता और न उनको वे भक्ति समझते। परन्तु बन्धुओ! याद रखना कि अब ऐसे तंग विचारोंमें रह जानेका समय नहीं है। अब हमें अधिक उदार मनसे और अधिक उदार बुद्धिसे भक्तिका विचार करना चाहिये और भक्तिका उद्देश्य समझना चाहिये तथा भक्तिका कारण जानना चाहिये। इन सब विषयोंको गौरसे सोचें तो तुरत ही समझमें आजाय कि प्रभुका प्रेम प्राप्त करना भक्तिका उद्देश्य है, यही भक्तिका फल है। प्रभुका प्रेम कब मिलता है? जब प्रभुके जीवोंकी सेवा करें और उनको कुछ भी लाभ पहुंचा सकें तभी प्रभुका प्रेम मिलता है। इसलिये जिन कामोंसे बहुत आदमियोंका फायदा हो उन कामोंको करना भी एक प्रकारकी बहुत अच्छी भक्ति है। जैसे—अच्छे अच्छे ग्रंथ लिखने या लिखवाने या सस्ते मूल्यपर अज्ञान लोगोंमें उनका प्रचार करनेका नाम भक्ति है। ज्ञान परमात्माका प्रकाश है और ज्ञानसे ही जगतका व्यवहार चलता है तथा ज्ञान फैलानेका काम करना भी एक प्रकारकी भक्ति है। खेतीका सुधार करना भी एक प्रकारकी भक्ति है। कितनेही गंवार भक्त कहेंगे कि खेतीसे भक्तिका क्या सम्बन्ध है? भाइयो! अब यों ऊपरी निगाहसे ही देखना ठीक नहीं है। अब हमें जरा गहरी निगाह डालना सीखना चाहिये। अगर खेती वारीमें सुधार हो और आजकल जिस आमके पेड़से दस मन आम मिलता है उससे बीस मन फल पैदा किया जाय तो कितने लोगोंको कितना बड़ा लाभ होगा? आजकल जिस एक बीघा जमीनमें बीस मन धान होता है उसमें साठ मन धान हो तो लोगोंको खुराक कितनी सस्ती मिलेगी और कितने लोगोंका आशीर्वाद प्राप्त होगा? यह सोचना चाहिये। यह सोचनेसे तुरत समझमें आसकता है कि खेतीबारीमें सुधार करना भी एक प्रकारकी भक्ति है। भक्तिका अर्थ ही है अपने

अन्तःकरणको पवित्र बनाना सेवा करनेवाला बनाना और ऐसा करना कि अपना तथा अपने बन्धुओंका दुःख घटे। इसलिये जो जो काम करनेसे ऐसा हो सकता है उन कामोंका नाम भक्ति है।

नयी,नयी धातुओंकी खानें खोदना और जो माल धरतीके पेट में दबा पड़ा है उसे बाहर निकाल कर उसका मूल्य बढ़ाना और जगतको उससे लाभ पहुंचाना तथा अनेक मनुष्योको उससे रोजी देना भक्ति है।

विदेशोसे सम्बन्ध जोड़ना और अपने भाइयोके लिये नये नये देशोंका द्वार खोलना तथा वहां रोजगार धंधा करने और शिल्प-कला सीखनेके लिये अपने भाइयोको सुबीता कर देना भक्ति है। नये नये आविष्कार करना और उनसे लोगोंका सुख बढ़ाना तथा जीविकाका उपाय करदेनेके लिये नये नये काम जारी करना और जगतका सौन्दर्य बढ़ाना तथा प्रभुकी महिमा समझाना बहुत बड़ी बात है और यह भी भक्तिका ही काम है। इस तरह जो जो काम करनेसे मनुष्यका सुख बढ़ता है, देशकी और दुनियाकी समृद्धि बढ़ती है, लोगोंका मन खिलता है और उन्हें आगे बढ़नेमें सहारा मिलता है वे सब भक्तिके काम हैं। महात्मा लोग ऐसा समझते हैं और कहते हैं। यह सब भी प्रभुके लिये हो तो उत्तम प्रकारकी भक्ति ही है। इसमें कुछ भी संशय नहीं है। इसलिये बन्धुओ! अब नहाने धोनेकी कोरी और छोटी बाहरकी तंग भक्तिमें ही मत रहजाना वरंच प्रभुके अर्थ ऐसे उपयोगी काम और प्रभुके बालकोंकी सेवा करनेको उत्तम प्रकारकी भक्ति समझना सीखिये; तब आपकी भक्तिकी सीमा विशाल हो सकेगी और ज्यों ज्यों भक्तिकी सीमा बढ़ेगी त्यों त्यों आपका आनन्द बढ़ता जायगा। इन विषयोको भी भक्तिके भीतर समझ कर ध्यानसे प्रभुके प्रीत्यर्थ कीजिये।

११७–भगवानकी महिमा।

कोई धर्मवाला विश्व देख कर भगवानको भजता है। वह यह सोचता है कि इतनी बड़ी पृथ्वी विना किसीके बनाये कैसे बन सकती है? इतना बड़ा समुद्र विना किसीके हुकमके सीमामें कैसे रह सकता है? विना किसी महान शक्तिकी मददके छोटीसी थाली बराबर दिखाई देनेवाला सूर्य लाखों करोड़ो वर्षसे इतना प्रकाश कैसे दे सकता है? चन्द्र और तारे किसीकी शक्ति विना नियमित रूपसे कैसे चल सकते हैं? वायुमें क्या आपसे आप इतना बड़ा बल आ सकता है? पानीकी बूंदसे क्या विना किसीकी सहायताके गर्भ रह सकता है? एक बीजसे अनेक फल क्या विना किसीके किये हो सकते हैं? और बिजली, वर्षा, सवेर सांझ, रात, प्रकाश, अंधकार आदि आपसे आप होते हैं? नहीं, नहीं। ये सब बड़ी बड़ी वस्तुएं आपसे आप नहीं होतीं। इनका बनानेवाला और इनको नियममें रखनेवाला कोई होना ही चाहिये। विना किसी शक्तिकी मददके ऐसी अद्भुत और महान वस्तुएं बन ही नहीं सकतीं। इसलिये जरूर उनका कोई बनानेवाला होगा। इस तरह कितनेही आदमी जगत देख कर ईश्वरको मानते हैं।

कितनेही भलेमानस उपकार वृत्तिसे भगवानको मानते हैं। वे अपनी भलाईसे यह समझते हैं कि हमारी सत्ता क्या है! हमारी बिसात क्या है! हमारी योग्यता क्या है! हमारा हक क्या है! और अनन्तताके आगे हम किस गिनतीमें हैं तथा विना उसकी मरजीके हम क्या कर सकते हैं! हमसे कुछ नहीं हो सकता। हम तो बातकी बातमें मिट्टीमें मिल जानेवाले है, परन्तु प्रभु हमें निबाहता है और हमारे सुखका सामान पूरा करता है। इससे हमें प्रभुको मानना चाहिये। यों अपनी दुर्बलता देख कर उपकारके कारण ईश्वरको मानते हैं।

इसके सिवा आजके जमानेमें नये नये आविष्कार होते जाते हैं; उन आविष्कारोंकी मददसे किसी तरह धर्मको न माननेवाले नास्तिकोंके मनमें भी विचित्र भाव उत्पन्न होता है। दूरवीन, खुर्दबीन, बिजलीका आविष्कार, प्राणियोंके शरीरकी रचना, हरएक वस्तुके आरपार जानेवाली एक्सरेज किरणें तथा अखंड प्रकाश देनेवाले रेडियम आदि वस्तुओंकी विचित्रता तथा खूबी देख कर नास्तिकोंका मन भी पिघल जाता है। वे सोचते हैं कि यह सब क्या है? ज्यों ज्यों गहरे उतरते जाते हैं त्यों त्यों विशेषता आती जाती है। परन्तु अन्तका कुछ पता ही नहीं लगता। यह सोच कर ईश्वरकी विभूतियोंकी खूबियोंमें मग्न हो जाते हैं और ईश्वरको माननेका मन न होनेपर भी आश्चर्यभावसे मजबूरन उन्हें मानना पड़ता है। सर्वशक्तिमान महान ईश्वरकी ऐसी अगाध महिमा है।

११८–वैराग्य दिखाकर या डराकर भक्ति करानेकी अपेक्षा प्रभुका प्रेम बताकर तथा प्रभुकी महिमा समझाकर भक्ति कराना अच्छा है।

बन्धुओ! सर्वशक्तिमान महान ईश्वरको अनेक प्रकारसे भज सकते हैं। परन्तु प्रेमभावसे ईश्वरको भजना सबसे बढ़िया है। इसके बारेमें दो महात्माओंकी कथा है—

एक त्यागी भक्त जंगलमें रहता था। वहां उसने बड़ा गढ़ा खुदवा रखा था। वह उसको देखता और देख देख कर भजन करता। उसे गढ़ेकी तरफ नजर रखते देख कर किसी दूसरे भक्तने एक दिन उससे पूछा कि महाराज! आप इस गढ़ेके सामने क्या देखा करते हैं? इस गढ़ेमें क्या रहस्य है?

उस भक्तने कहा कि मैं मिट्टीसे पैदा हुआ हूं और अंतको ऐसे ही एक गढ़ेमें दब कर मिट्टीमें मिल जानेवाला हूं। इस बातका ख्याल रखनेके लिये मैंने यह गढ़ा खुदवाया है। और इसके सामने देखता हूं तो भजन करनेका मन करता है। क्योंकि मौत नजरके सामने नाचने लगती है। इससे मनमें वैराग्य आ जाता है। तब डरसे खूब भजन होता है। बिना भयके भजन कैसे हो? क्या आप ऐसा नहीं करते?

दूसरे भक्तने कहा कि नहीं हम भयसे भजन नहीं करते, हम तो प्रेमभावसे भजन करते हैं। क्योंकि प्रभुप्रेम सर्वव्यापी महान् तत्व है; प्रभुका प्रेम कल्पवृक्ष है; प्रभुका प्रेम पारसमणि है; प्रभुका प्रेम स्वर्गका अमृत है और प्रभुका प्रेम देवताओंको भी दुर्लभ है। ऐसा अमूल्य प्रेम जिसके हृदयमें आजाता है उसके हृदयमें शांतिका झरना बहा करता है। जिस भक्तके हृदयमें भगवानका प्रेम आजाता है उसके पुराने पाप जल जाते हैं। जिसके हृदयमें प्रेम आजाता है उसके दुःख भाग जाते हैं। जिसके हृदयमें प्रेम आजाता है उसके मुखरेकी ज्योति बदल जाती है। जिसमें प्रेम आता है वह दीमकोंका खाया हुआ हो तोभी महात्मा बन जाता है। जिसमें प्रेम आता है उसमें कितनी ही सिद्धियां आ जाती हैं। जिसके चित्तमें प्रभुका प्रेम आजाता है उसके पास प्रभु स्वयं हाजिर रहता है इससे वह कृतकृत्य हो जाता है। कभी कभी खराब संयोगोंके कारण कितने ही भक्तोंका भजन छूट जाता है परन्तु जिसके हृदयमें प्रभुका प्रेम आजाता है और प्रभुकी महिमा जिसकी समझमें आ जाती है उसका भजन किसी दिन नहीं छूट सकता। इसलिये हम तो प्रेमसे ही भजन करना तथा भजन कराना चाहते हैं। हमारी प्रार्थना है कि आप भी ऐसा कीजिये।

११९–याद रखना कि अपनेसे काम पड़नेवाले किसी आदमीको कोई बुरी आदत या बुरा व्यसन सिखा देना-बड़ा भारी पाप है।

बहुतेरे आदमी बड़े नेक होते हैं और किसी प्रकारका पाप करना नहीं चाहते, तोभी जाने बेजाने वे कितने ही किस्मके बहुत बड़े पाप कर डालते हैं लेकिन वे समझते नहीं कि हम यह पाप करते हैं। जैसे—

बहुत आदमी दूसरोंके साथ वाद विवाद करके उनकी श्रद्धा घटा देते हैं। कोई आदमी तमाखू पीता या खाता न हो तो कितने आदमी उसे रोज रोज जबरदस्ती पिलाते या खिलाते हैं। कोई आदमी सुंघनी न सूंघता हो तो उसके सामने सुंघनीकी डिबिया रख कर तथा उसकी बड़ाई करके उसे नस लेना सिखाते हैं। कोई आदमी गांजा न पीता हो तो उसे कसम धराकर गांजा पिलाते है। कभी कहते है तुम नहीं पीओगे तो मै भी नहीं पीऊंगा। इसके पीनेमें क्या हर्ज है? अपनी ही जिद मत रखो। जरासा ले लो। बड़ोंका कहना टालना क्या अच्छा है? ऐसा ऐसा कह कर जो न पीता हो उसे कितने ही आदमी जबरदस्ती गांजा पिलाते हैं तथा अफीम खिलाते हैं। परन्तु यह नहीं समझते कि हम भूल करते हैं।

जो आदमी ताश या चौपड़ न खेलता हो उसे जबरदस्ती खेलाना और ऐसे खेलका चस्का लगाना अपराध है। जो आदमी भंग न पीता हो उसे भंगका बखान करके तथा यह कह कर कि, आज शिवरात है इससे भंग पीना ही पड़ेगा, आग्रहसे पिलाना पाप है। जिस मनुष्यके मनमें विषयका विकार न हो उसके सामने विषयकी बातें कह कर उसकी

वृत्तियोंको उकसाना भी बहुत बड़ा पाप है । जो आदमी जूआ न खेलता हो उसे सालमें दो चार दिन जूआ खेलनेसे जुआड़ी थोड़े हो जायंगे ? यह तो एक प्रकारका खेलवाड़ है ; दीवालीमें तो जरा खेलवाड़ करना ही चाहिये ; "हमारे बाप दादे क्या मूर्ख थे कि खेलते थे" आदि कह कर दावपर बिठाना भी बहुत बड़ा पाप है। जिस आदमीको ऊधम मचाना न रुचता हो उस जानपहचानवालेके पास आकर यह कहना कि आज होली है आज तुम्हें नहीं छोड़ेंगे, हमारे साथ चलो नहीं तो तुम्हारे घर होलिहर भेजेंगे, तब फिर मजा देखोगे और यों दबाव डाल कर उससे क्यों बुलवाना और ऊधम मचानेके लिये जानपहचानवालोंको पकड़ लेजाना तथा उसके मनमें हल्के संस्कार डालना भी एक प्रकारका बहुत बड़ा पाप है । जो आदमी सुरतीमें पैसा न लगाना चाहता हो उससे यो कहना भी बहुत बड़ा पाप है कि एक रुपया कौन बड़ी बात है ? पड़ेगा तो हजारों रुपये मिल जायंगे। याद है ? पांच वर्ष हुए हमारे ही गांवके एक आदमीको दो हजार रुपये मिले थे कि नहीं ? भाग्य थोड़े बेच दिया है ? हम क्यों सोचें कि हमारा नाम नहीं पड़ेगा ? तुम्हारे पास रुपया न हो तो लो मैं देता हूं मगर एक टिकट तो खरीद ही लो। क्या मैं खाली हाथ लौट जाऊं ? अजी सिर्फ एक रुपयेके लिये इतनी कंजूसी करते हो ? यह कह कर उसे लॉटरीमें पैसा लगानेका शौक दिलाना भी बड़ा भारी पाप है ।

जो आदमी घुड़दौड़, पानी, अफीम या रुईके जुए में न जाता हो उसे वहां लेजाना और उसका नुकसान न बताकर सिर्फ फायदा बताना और वह जूआ खेलनेके लिये उसे ललचाना भी एक अपराध है। याद रहे कि ये सब बातें अभी बहुत छोटी लगती हैं परन्तु आगे जाकर कितनी ही बार कितनी ही जगह

परिणाम बहुत बुरा होता है। इसलिये अपनी जानपहचानके किसी आदमीमें इस प्रकारके दुर्गुण डालनेसे रुकना चाहिये ।

बन्धुओ ! हैजे या प्लेगके बीमारका छूतवाला कपड़ा किसी गरीब आदमीको देना जैसे पाप है वैसे ही किसीके मनमें बुरी लत या खराब व्यसनोंके विचार डालना भी बहुत बड़ा पाप है। सड़ी गली या निकम्मी चीजें भिखमंगों या पशुओंको खिलाकर उनकी तन्दुरुस्ती बिगाड़ना जैसे पाप है वैसे ही किसी निर्दोष आदमीके मनमें बुरे विचार भरना पाप है।

कोई आदमी अश्लील पुस्तकें छपवावे या उनका प्रचार करे तो वह कानूनसे कसूरवार ठहरता है ; कोई आदमी खराब नाटक खेले तो सरकार उसे रोकती है, कोई आदमी बायस्कोपमें नंगे चित्र दिखावे तो सरकार रोकती है और कोई आदमी सड़ा फल फूल आदि बेचे तो उसे भी सजा होती है क्योंकि खराब चीजें या बुरे विचार फैलानेका किसीको हक नहीं है। वैसे ही हमें भी अपनेसे काम पड़नेवाले मनुष्योंके मनमें बुरे विचार, बुरी लत या बुरे व्यसन भरनेका हक नहीं है। यह बहुत बड़ा पाप है। इसलिये जाने बेजाने ऐसी भूल करनेसे सम्हलिये। अभी चाहे ये बातें बेदम लगें परन्तु किसी समय इनसे बहुत बुरा परिणाम उपजता है और उसकी जवाबदेही घूम फिर कर अपने सिर आ पड़ती है। ऐसे जोखोंमें क्यों पड़ना ? और ऐसी भूल क्यों करना कि किसीकी जिन्दगीमें खराब तत्व घुस जायं ? मोहवादी अज्ञानी कभी ऐसी भूल करें तो उनकी बात दूसरी है परन्तु पवित्र हरिजनोंको तो ऐसी भूलोंसे जरूर ही बचना चाहिये और इस बातका विशेष ध्यान रखना चाहिये कि हमारी तरफसे किसी भी आदमीके मनमें खराब विचार या खराब लत न पड़ जाय।

१२०-प्रभुके अर्पण हो जानेके माने क्या ? (१०)

जैसे किसी भले मालिकसे उसका नमकहलाल नौकर बहुत धन पावे और फिर वही धन अपने मालिकको अपनी खुशीसे सौंप कर अपनेको कृतार्थ माने वैसे जो भक्त ईश्वरसे मिली हुई सब वस्तुएं-जैसे देह, प्राण, इन्द्रियां, मन तथा उसके सम्बन्धका सर्वस्व—प्रभुको सौंप दे उस भक्तको अर्पण हुआ समझना।

अर्पण हो जानेकी रीतियां-

समुद्रमें पड़ा काठका कुन्दा जिधर लहर मारती है उधर हो जाता है, अपनी ओरसे किसी तरफ जानेको जोर नहीं लगाता। वैसे प्रभु सुख या दुःख जैसी स्थितिमें रखे वैसी स्थितिमें प्रसन्न होकर रहनेका नाम अर्पण हो जाना है। मतलब यह कि अर्पण हुआ भक्त दुःखसे दिलगीर नहीं होता और न सुखसे फूल उठता, वरंच प्रभु जैसे रखे वैसे, उसकी इच्छाके अधीन होकर रहता है।

जैसे अंधा आदमी अपने रास्ता दिखानेवालेके भरोसे रहता है वैसे जो भक्त हर विषयमें ईश्वरके ही भरोसे रहे और अपनी सब चिन्तायें दूर करदे तथा चाहे जैसा खराब मौका आनेपर भी मनमें किसी बातकी शंका न रखे; सब स्थितिके अधीन रहे तथा सदा ऐसी ही प्रार्थना करे कि हे प्रभु ! मैं तेरे अधीन हूं, तेरी जैसी मरजी हो वैसी कर—ऐसी भावना रखे और कष्ट, रोग, अकाल तथा लड़ाई और मृत्यु जैसे महा कठिन प्रसंगमें भी न घबराय उसे अर्पण हुआ समझना।

जैसे मुकद्मेबाज लोग अपना मुकद्मा वकीलको सौंप कर आप निर्भय रहते हैं और बीमार आदमी अपनी नाड़ी वैद्यके हाथमें सौंप देते हैं तथा उसीकी सलाहपर चलते और उसीके

भरोसे रहते हैं वैसे जो भक्त भगवानके भरोसे अपना जीवन बिताता हो उसे ईश्वरके अर्पण हुआ समझना।

हम जब रेलगाड़ी या आगिनबोटमें बैठते हैं तब निश्चित स्थानपर पहुंचनेमें कुछ भी शंका नहीं रखते। वैसे अन्तको हमारा क्या हाल होगा इसकी शंका न रख कर भगवानकी इच्छानुसार दिन बिताना और प्रभु जैसे रखें वैसे शान्तिपूर्वक रहना तथा यह समझना कि हमारा प्रभु हमारी भलाई ही करेगा। क्योंकि वह अपने जनको कभी छोड़नेवाला नहीं है। यह अर्पणविधि है।

जो लड़के अपने बापके अधीन होकर रहते है उनपर उनका बाप कृपा रखता है और उनका भरण पोषण किया करता है वैसे ही जो हरिजन प्रभुके अर्पण हो जाते हैं और जो उनके हो गये है उनकी घर गृहस्थीकी तथा उनके कल्याणकी फिकर प्रभु रखता है। इससे ऐसे अर्पण हुए भक्त भक्तिमार्गमें बड़ी तेजीसे आगे बढ़ जाते है। इन सब बातोंको धर्ममें प्रेम रखे विना मनुष्य भली भांति नहीं समझ सकते। जो भक्त अर्पण हो गये है वे अनुभव कर सकते है कि जैसे छोटे बच्चेकी हर तरहसे खबरदारी उसकी माता करती है वैसे प्रभुके अर्पण हुए भक्तकी हरएक बातका ख्याल स्वयं प्रभु रखता है। फिर भी सोचा हुआ काम न हो तो समझना कि हमारे अर्पणमें कुछ कचाई है।

कितने भक्त अपने मनमें यह समझते हैं कि हम प्रभुके अर्पण हो गये हैं तोभी हमारे कितने ही काम सिद्ध नहीं होते। इससे उनके चित्तमें यह बात पैठ जाती है कि प्रभु हमारा ख्याल नहीं रखता। ऐसी शंका कितनी ही वार किसी किसी भक्तको होती है। और ऐसी शंका होनेका कारण यह है कि उनके कितने ही काम उनके सोचे हुए ढंगपर पूरे नहीं होते। परन्तु ऐसा होनेका कारण यह है कि वे असलमें अर्पण हुए नहीं

रहते, उनके अर्पणमें कुछ कचाई रहती है। इसीसे उनके कामोंमें फर्क पड़ता है। भक्तमें अर्पणका जोर जितना ही बढ़ता है भगवानको उसकी फिकर उतनी ही अधिक रखनी पड़ती है। अर्पणका जोर जितना कम हो भगवानको उस भक्तके लिये उतनी ही कम फिकर करनी पड़ती है। इसलिये किसी भक्तके अर्पण हो जानेपर भी प्रभु उसकी ओर लापरवाही दिखाता हो तो यह समझ लेना चाहिये कि अर्पणमें कुछ ढिलाई है या कहीं पर कुछ भूल होती है। ऐसा न हो तो अर्पण हुआ भक्त उदास, दुखी या फिकरमंद हो ही नहीं।

बहुत आदमी अपने सिर या कंधेपर कुछ गठरी या बोझ लेकर रास्ता चलते हैं। रास्तेमें उन्हें बैठनेके लिये गाड़ीपर मिल जाय तो वे उसमें बैठ जाते हैं परन्तु अपनी गठरी या बोझको अपनी गोद जांघ या सिरपर रखे रहते हैं। उसे अलग हटानेकी इच्छा उन्हें नहीं होती। वैसेही भगवान हर तरहका बोझ अपने ऊपर ले लेना चाहता है, परन्तु कितने भक्त ऐसे होते हैं जो अपना बोझ अपने सिरसे उतारना नहीं चाहते। इससे गाड़ीमें बैठनेपर भी अपनी जांघपर गठरी रख देते हैं। जिन्हें बोझ पसन्द नहीं है वे आदमी अपनी गठरीको एक बगल रख देते हैं। वैसे जो अर्पण हुए भक्त हैं वे बोझ अलग रख देते हैं। जो अर्पण नहीं हुए हैं वे भक्तिकी गाड़ीमें बैठनेपर भी अपनी फिकरकी गठरी अपने सिरपर लिये फिरते हैं और नाहक दुखी होते हैं। बन्धुओ! इस दृष्टान्तसे आप समझ सकेंगे कि प्रभुके अर्पण हो जानेसे हमारे ऊपरका सब तरहका बोझ हलका होजाता है। इससे बड़े ही आनन्दमें रह सकते हैं। हे हरिजनो! भगवानके अर्पण हो जाना सीखिये। भगवानके अर्पण हो जाना सीखिये।

१२१–प्रभुके अर्पण हो जानेके माने क्या ? (२) अर्पणमें महा आनन्द है तोभी बहुत लोग प्रभुके अर्पण नहीं होते । इसका कारण क्या है ?

प्रभुके अर्पण हो जानेमें इतना बड़ा आनन्द है, तोभी बहुत आदमी भगवानके अर्पण नहीं होते । इसका कारण यह है कि बहुते आदमी यह बात नहीं जानते कि भगवान माने क्या और भगवान कैसा समर्थ है, भगवान कैसा दयालु है, भगवान कैसा सर्वव्यापक है, भगवान कैसा अविनाशी है और भगवान कैसा सर्वशक्तिमान है । इसके सिवा बहुतेरे भक्त भगवानके विषयमें जितना जानना चाहिये उतना भली भांति नहीं जानते । किसीको इस विषयका थोड़ा बहुत ज्ञान हो भी तो उसमेंसे मैंपनका कांटा निकला नहीं रहता और श्रद्धाका जोर नहीं होता । इससे वह अपने ऊपरका बोझ दूर नहीं कर सकता । भगवानके अर्पण होजानेके लिये भगवानकी महिमा जानना चाहिये और जीवकी कमजोरी समझ लेना चाहिये । इन दोनों बातोंके जाननेसे अर्पणविधि समझनेमें बहुत मदद मिलती है और आगे जाकर प्रभुके अर्पण होकर जीवन बिताया जा सकता है । ऐसा होनेपर ही जिन्दगी सार्थक होती है । इसलिये हमें प्रभुके अर्पण होकर रहनेकी युक्तियां जाननी चाहियें ।

भक्ति करनेपर भी जैसा चाहिये वैसा लाभ न होनेका कारण ।

किसी रोगी आदमीपर बहुत दया करके कोई भला वैद्य अच्छीसे अच्छी दवा दे परन्तु वह रोगी उस दवाको विधिपूर्वक

न खाय और वैद्यके बताये नियमपर न चले तो उस दवासे कुछ बहुत लाभ नहीं होता । ऐसी दशामें लाभ न हो तो उसमें औषधका या वैद्यका दोष नहीं दे सकते। वैसे याद रखना कि हम प्रभुके अर्पण होजायं तो प्रभु हमारा सब दुःख मिटानेको तय्यार है। परन्तु शोक है कि हम प्रभुके नियम ठीक तौरपर नहीं पालते और अर्पणविधिका रहस्य नहीं समझते । इससे भक्ति करनेपर भी हम चिन्तित, उदास और शोकातुर रहते है। अगर हमें ठीक तौरसे प्रभुके अर्पण होजाना आवे तो ये सब बातें तुरंत ठीक होजायं। इसलिये अपनी जिन्दगी सुधारनेके लिये और प्रभुको प्रसन्न रखनेके लिये तथा अनन्त कालका, हरिके हजुरका, मोक्षका सुख पानेके लिये प्रभुके अर्पण होकर जिन्दगी बिताना सीखना चाहिये ।

अर्पणविधिका आनन्द समझनेके लिये एक नन्हेसे बालकके सामने देखिये। वह मैंपन नहीं रखता । हर बातमें मा बापका अनुसरण करता है और उनके कहनेके अनुसार करता है । इससे वह कैसा बेफिकर रहता है! कैसा आनन्दी रहता है ! कैसा नाचता कूदता रहता है और कैसा मस्त रहता है । जरा यह सब देखिये। इस तरह हमें अर्पण होजाना आवे तो हमारे सुखकी सीमा न रहे। भाइयो! याद रखना कि यह सब, कुछ बांचनेसे, सुननेसे या सीखनेसे नहीं आता वरंच जब धीरे धीरे बहुत दिनोंतक इसका अभ्यास हो तब यह बात यथार्थ रूपमें पकड़ी जा सकती है। इसलिये हरएक हरिजनको अर्पणविधिके अनुसार रहनेकी चेष्टा करनी चाहिये और अपना व्यवहार चलानेके लिये जो जो काम करना पड़े वह सब अर्पणविधिसे करनेकी कोशिश करनी चाहिये ।

गुरुकी तथा ईश्वरकी शरण जानेपर किसी हरिजनको अपने

अर्पणके विषयमें सन्देह न रखना चाहिये। प्रभुके अर्पण होनेके बाद जो मनुष्य अपने मनमें शंका रखता है कि प्रभु मुझे स्वीकारेगा या नहीं वह आदमी बहुत बड़ा पाप करता है। भक्तिमार्गका मुख्य सिद्धान्त यह है कि धर्मसम्बन्धी किसी विषयकी मनमें शंका न रखे और अश्रद्धा न रखे। फिर भी जो अश्रद्धा रखे उसका नाश होता है। इसके लिये श्री कृष्ण भगवानने कहा है कि

संशयात्मा विनश्यति।

अर्थात् जो संशय रखता है वह गिर जाता है और उसका नाश होता है। इसलिये एकवार प्रभुके अर्पण हो जानेके बाद अपने अर्पणके विषयमें किसी प्रकारकी शंका मत रखना। शंका रखनेसे वह दिन दिन बढ़ती जाती है और उससे आगे जाकर बहुत खराबी होती है। सो अपने अर्पणमें शंका मत रखना।

जो उत्तम प्रकारके भक्त हैं वे तो यही समझते हैं कि हमारे ऊपर परम कृपालु परमात्माकी अपार दया है इसीसे हमें सद्गुरु मिला है और इसीसे हम प्रभुके अर्पण हुए हैं; इसलिये हमारा धन्य भाग्य है। क्योंकि जिसके अंतरचक्षु नहीं खुले हैं उसको ऐसा ईश्वरी योग नहीं मिलता और ऐसा आत्मिक आनन्द नहीं मिलता, परन्तु हमारा पूर्वका कोई पुण्य उदय हुआ है इससे हमें ऐसा बड़ा लाभ हुआ है। यह समझ कर अर्पण हुए भक्त सदा आनन्दमें रहते हैं और अपने अर्पण होनेका भाव और दृढ़ करते जाते हैं। ऐसे भक्त धन्य हैं। धन्य हैं। भाइयो! ऐसे अर्पित तथा आनन्दी भक्त होनेकी कोशिश कीजिये।

१२२-प्रभुके अर्पण हो जानेके माने क्या ? (२)
अर्पण हुए भक्तोंमें भी कभी कभी छोटे छोटे पाप होते हैं पर इससे उनके अर्पणमें बाधा नहीं पड़ती ।

कितनी बार ऐसा होता है कि अर्पण हुए हरिजनोंको भी अपने अन्दर कितने ही तरहके पाप दिखाई देते हैं और जैसी पवित्रता भक्तोंमें होनी चाहिये वैसी उनमें नहीं दिखाई देती । इससे उन्हें अपने अर्पण होनेके बारेमें शंका होती है । वे सोचते हैं कि हममें तो अभी पाप है तब प्रभु हमें क्योंकर अंगीकार करेगा ? इसके समाधानमें महात्मा कहते हैं कि जब अपने अन्दर कचाई दिखाई दे तब पापके लिये पश्चाताप करना उचित है । परन्तु इस कारणसे अपने अर्पणके विषयमें कुछ शंका न रखे । क्योंकि हम जबतक मनुष्यके रूपमें हैं, जबतक हमारा जीव इस देहके अन्दर है और जबतक हम इस दुनियामें हैं तबतक हममें कुछ न कुछ कचाई रहेगी ही । परन्तु याद रखना कि ऐसी छोटी छोटी कचाईसे सर्वशक्तिमान महान ईश्वरको कुछ मतलब नहीं है । यद्यपि हमारी खामी हमें बाधा देगी परन्तु ऐसी छोटी छोटी भूलोंके कारण प्रभु हमें छोड़ नहीं देगा और उससे हमारे शरण जाने या अर्पण होनेमें विघ्न नहीं पड़ेगा । दयालु प्रभुका यह सिद्धान्त है कि चाहे जैसा पापी मनुष्य हो वह सच्चे भावसे शरण जाय तो प्रभु उसे अपना लेता है ।

" गये शरण प्रभु राखिहैं सब अपराध बिसारि । "

वह मनुष्योंके पाप देखनेमें ही नहीं लगा रहता वरंच वह तो अपनी प्रभुताका ध्यान रख कर शरण गये पापी जीवोंको भी अंगीकार

कर लेता है। फिर अंगीकार हुए जीवोंका पाप कटता जाता है। इसलिये अर्पणके विषयमें तनिक शंका मत रखना।

अर्पणका विषय अच्छी तरह समझानेके लिये एक भक्तराज महाराज कहते कि किसी मनुष्यने किसी ब्राह्मणको अपना घर दान किया हो और उस ब्राह्मणने वह दान लिया हो; और पीछेसे वह ब्राह्मण अपने मनमें शंका करे कि भला अब यह घर मेरा हुआ कि नहीं क्योंकि घर जहांका तहां है—तो इस शंकासे वह दान देनेवाले मनुष्यका अपमान करता है। वैसेही याद रखना कि हम ईश्वरके अर्पण होजानेके बाद अर्पणके विषयमें कुछ वहम रखें तो उससे ईश्वरका अपमान करते हैं। ऐसी भूलसे बचना।

अगर घर दान लेनेवाला ब्राह्मण यह समझे कि इस घरको गिरा पड़ा कर कहीं दूसरी जगह ले जानेसे ही वह मेरा कहलायेगा तो यह उसकी भूल है। क्योंकि दान लेनेके बाद उसे यही समझना चाहिये कि यह घर नया हो चाहे पुराना उसीका है। उसे सुधारना या बिगाड़ना उसके अधिकारकी बात है। घर दान करनेवाले मनुष्यको भी यह समझना चाहिये कि अब इस घरसे मेरा कुछ सरोकार नहीं है। ब्राह्मण अब चाहे तो इसको और ऊंचा बनावे चाहे ढहादे, मुझसे कुछ मतलब नहीं है। वैसेही अर्पण होजानेके बाद हम अच्छे हों या बुरे हों इससे प्रभुको कुछ मतलब नहीं है, इससे तो हमें मतलब है परन्तु प्रभु यही समझता है कि हम उसके अर्पण होचुके हैं। इसलिये अर्पणके विषयमें किसी हरिजनको अपने मनमें शंका न रखना चाहिये।

पापी भी प्रभुके अर्पण हो सकते हैं।

अर्पणके विषयमें यह बात भी समझ लेने योग्य है कि यह

कुछ नियम नहीं है कि बहुत पवित्र मनुष्य ही अर्पण हो सकते है, पापी मनुष्य नहीं। अग्निमें जो कुछ जाता है सब भस्म हो जाता है। परम कृपालु परमात्मा भी ऐसा पूर्ण पवित्र है कि उसके पास चाहे जैसा पापी जाय वह पवित्र हो जाता है। पापियोंको शरण लेनेसे प्रभुकी पवित्रता या बड़प्पन में कुछ भी कमी नहीं होती वरंच इससे उसका बड़प्पन और बढ़ता है। क्योंकि पापियोंको शरणमें लेनेसे जगतके दूसरे लोगोंको विश्वास होता है कि प्रभु अधमोद्धारक है। इसलिये जब मनुष्य सच्चे भावसे प्रभुकी शरण जाता है तो वह तुरत ही अंगीकार कर लेता है। इसमें जात पांत या पाप पुण्य कुछ भी नहीं देखता। सो अर्पण हुए भक्तोंको अर्पणके विषयमें कभी कुछ भी शंका न करनी चाहिये। वरंच ऐसा करना चाहिये कि अर्पणकी भावना दृढ़ होती जाय।

शरण जानेके बाद पापियोंको भी प्रभु स्वीकार कर लेता है तथा स्वीकार करनेके बाद भी किसी भक्तसे कुछ भूल हो जाय तो उसके अर्पणमें भी कुछ अड़चल नहीं पड़ती। इन दोनों बातोंको समझ लेनेके बाद अब हमें यह जानना चाहिये कि अर्पण हुए भक्त अपनी जिन्दगी कैसे बिताते हैं। इसको समझानेके लिये एक महात्मा अपने सत्संगियोंको बताते थे कि—

अर्पण हुए भक्त अपनी जिन्दगी कैसे बिताते हैं?

दो पलटनें आपसमें लड़ती हों और उनमें एक हार कर दूसरीके सेनापतिकी शरण जाय तो अपना हथियार डाल देती है और उसके अधीन होकर रहती है तथा उसका हुक्म मानती है। वैसे ही हम जब प्रभुकी शरण जायं और उसके अर्पण हो जायं तो हमें भी अपना हथियार रख देना चाहिये, उसकी इच्छानुसार

चलना चाहिये और उसका हुक्म मानना चाहिये। जब ऐसा करना आवे तभी सच्चा अर्पण हो सकता है। सारांश, इस अर्पणविधिका मुख्य सिद्धान्त यह है कि अपना मैंपन छोड़ कर प्रभुकी इच्छानुसार चलना चाहिये और उसका हुक्म मानना चाहिये। यही सौ बातकी एक बात है।

अर्पणविधि सीखने तथा पालनेके लिये अर्पण हुए भक्तोंका संग धरना चाहिये।

अर्पणविधिकी बातें सुनने या समझनेसे वैसा करना नहीं आता बल्कि जब ऐसे किसी शरणागत सिद्ध भक्तके समागममें मुद्दततक रहें तब उसकी रहन सहन तथा आचार विचार देख कर यह विषय सीख सकते हैं। इसलिये अगर अर्पणविधिका रहस्य हृदयमें बिठाना हो तो अर्पण हुए प्रेमी भक्तके संग रहना चाहिये। इतनाही नहीं वरंच जैसे लम्बा समुद्र तय करके आया हुआ अगिनबोट किनारे पहुंच कर गोदीके सरकारी पायलेटके हाथमें अपनेको सौंप देता है वैसे ही ऐसे अर्पण हुए महात्माके हाथमें अपनी जिन्दगीकी लगाम सौंप देना चाहिये और वह जो रास्ता बतावें उसपर चलना चाहिये। ऐसा करें तभी सच्ची अर्पणविधि पाली जा सकती है। सो अर्पणविधिको दृढ़ करनेके लिये प्रभुप्रेमी भक्तोंका संग धरिये।

१२३-प्रभुके अर्पण हो जानेके माने क्या ? (४) अर्पण हुए भक्तोंको कैसा बर्ताव करना चाहिये ?

जबसे हम प्रभुकी शरण पकड़ कर उसके अर्पण होते हैं और अर्पण होनेकी कंठी बांधते हैं, ब्रह्मसम्बन्ध कराते हैं, दीक्षा लेते हैं या वैसीही कोई दूसरी क्रिया करते हैं तबसे हम अपने नहीं रहते वरंच प्रभुके हो जाते हैं । इसलिये अर्पण हो जानेके बाद हमें प्रभुका हुक्म मानना चाहिये और प्रभु जिसमें रखे उसमें राजी रहना चाहिये, अपने सब काम प्रभुके अर्पण करना चाहिये और प्रभुके न रुचने योग्य पापकर्मसे जैसे बने वैसे दूर रहनेकी कोशिश करना चाहिये । सारांश यह कि गाय जैसे अपने गोपालके पीछे पीछे चली जाती है वैसे हमें भी शास्त्रमें कहे प्रभुके हुक्मके अनुसार चलना चाहिये । अब हमारा धर्म मगजमें रख छोड़नेका नहीं है बल्कि प्रभुके अर्पण हो जानेके बाद अपने धर्मको अपने रोजमर्रेके काममें लाना चाहिये । जब इस तरह हर रोजके काम काजमें हमारा धर्म काम आवे तभी असली अर्पण कहलाता है । इसलिये असली अर्पणवाले बनिये । बनिये ।

अच्छे बापका लायक बेटा जैसे अपने बापकी इज्जतका ख्याल रख कर चलता है वैसे हमें भी अपने पिता परमात्माकी इच्छानुसार चलना चाहिये । हमारा धन, हमारा बल और हमारी बुद्धि कुछ भी अर्पण हो जानेके बाद, अपना नहीं है । यह सब प्रभुका है । इसलिये प्रभुका कृपा करके दिया हुआ यह सब इनाम हमें प्रभुके अर्थ ही खर्चना चाहिये और प्रभुके अर्थ खर्चनेके लिये ऐसा करना चाहिये कि यह सब प्रभुके जनोंकी सेवामें लगे ।

जबतक हम भगवानके अर्पण नहीं होते तबतक हम

दुनियाके दास रहते हैं उससे दुनियादारीकी रीतिपर दुनियासे बर्ताव करते हैं। परन्तु जब प्रभुके अर्पण हो जाते हैं तब प्रभुके बनजाते हैं। अर्थात् जबसे अर्पण होते हैं तबसे सरकारी नौकरीमें दाखिल होते हैं। सरकारी नौकरीमें दाखिल होनेके बाद सरकारके हुक्म मुताबिक चलना चाहिये। जब हम प्रभुके अर्पण हो जाते हैं तबसे हमारी रीति भांति बदल जाती है और उसमें कुछ ऊंचे दर्जेके नये तत्व आजाते हैं। इस विषयको अच्छी तरह समझानेके लिये एक भक्तराज महाराज कहते थे कि छाछसे मक्खन होता है परन्तु मक्खन हो जानेके बाद वह फिर छाछमें नहीं मिलता वरंच अलग ही अलग रहता है। वैसे हम भी जब प्रभुकी शरण लेते हैं और उसके अर्पण हो जाते हैं तब दुनियासे अलग रहना पड़ता है। अर्पण हुए भक्त जगतके व्यवहारी लोगोंसे नहीं मिल सकते। क्योंकि व्यवहारी लोगोंका चालचलन घालमेलवाला होता है, पंचरङ्गा होता है, अधूरी समझवाला होता है और मतलबी होता है। परन्तु अर्पण हुए भक्तोंका चालचलन इससे उल्टा ही होता है। इससे दुनियाके अन्दर रहनेपर भी तथा अपनी घर गृहस्थीका काम चलाते हुए भी वे व्यवहारी लोगोंसे भिन्न रीतिपर चलते हैं, उनसे एकमिल नहीं होजाते।

जैसे अगिनबोट सदा पानीमें रहता है परन्तु उसके अन्दर, उसके बीचमें समुद्रका पानी नहीं भरजाता वैसेही प्रभुके अर्पण हुए भक्त भी इसी दुनियामें रहते हैं परन्तु दुनियाकी वासनाओंसे अपना हृदय नहीं भरते। इससे उन्हें दुनियाका दास होना नहीं पड़ता। अर्पण हुए भक्तोंमें यह उत्तमता है।

बहुतेरे जन भगवानके मन्दिरमें थोड़ी देर भक्त बनजाते हैं परन्तु अपने घरमें या गांवमें रोजगार धंधा करते समय भक्त

नहीं रह सकते। जो अर्पण हुए भक्त हैं वे मन्दिरमें, गुरुके पास, सन्तोंके पास, गरीबोंके पास, मित्रोंके पास, कुटुम्बके पास और शत्रुके साथ भी भक्तके भक्त ही रहते हैं। उनमें कुछ फेरबदल नहीं होता। इतना बड़ा बल अर्पण हुए भक्तोंमें आजाता है। इससे जैसे दूसरे कितनेही मामूली भक्त साधु ब्राह्मणोंसे स्नेह रखते हैं और घरके आदमियोंको हैरान किया करते हैं तथा गायपर दया रखते है और गधेपर क्रोध करते हैं वैसा वे नहीं करते। वे तो सबको अपने प्रभुका जीव समझ कर सबके साथ भलाई करते हैं और हर जगह तथा हर बातमें अपनी अर्पणता दिखा देते हैं।

अर्पण हुए भक्तोंको अपने अन्दरके दुर्गुण निकाल डालनेकी कोशिश करना चाहिये।

बन्धुओ! कितनी ही मण्डलियोंमें, कितनी ही सम्प्रदायोंमें, कितने ही सत्संगोंमें और कितने ही मन्दिरोंमें कितने ही मनुष्य भक्तके नामसे पुकारे जाते हैं और भगवानमें प्रेम रखते हुए जान पड़ते हैं तथा अपने समयका अधिक अंश भक्ति करनेमें बिताते हैं; परन्तु अक्सर उनमें कोई भक्त क्रोधी होता है, कोई भक्त लोभी होता है, कोई भक्त कामी होता है, कोई भक्त वहमी होता है, कोई भक्त निराशावादी होता है, कोई भक्त अत्याचारी होता है, कोई भक्त बकवादी होता है, कोई भक्त अहंकारी होता है, कोई भक्त विलासी होता है, कोई भक्त कठिन कलेजेका होता है और कोई भक्त झगड़ालू होता है। इस तरहकी भूलमें न पड़नेका ख्याल सब हरिजनोंको रखना चाहिये। क्योंकि जब वे भक्तिमें लगे और ईश्वरके अर्पण हुए तब ईश्वरके होगये हैं। इसलिये ऐसी ऐसी भूलें तथा खराबियां उनमें न रहनी चाहियें वरंच जैसे हो वैसे पवित्र और स्वच्छ रहना चाहिये, सरल स्वभाव रखना चाहिये और शुद्ध अन्तःकरणसे सबके साथ प्रेमपूर्ण बर्ताव करना चाहिये।

हित मित्रों या दूसरे भक्तोंके साथ ही नहीं, बरंच अपनेसे काम पड़नेवाले इस दुनियाके हर एक आदमीसे तथा अपने शत्रुसे भी भलाईका बर्ताव करना चाहिये। क्योंकि हम प्रभुके है इसलिये प्रभु जिसमें राजी रहे वैसा बर्ताव हमें करना चाहिये।

बन्धुओ! अर्पणाविधिके बारेमें और भी बहुत कुछ कहा जा सकता है। परन्तु सारांश यही है कि हमें इस रीतिसे बर्ताव करना चाहिये कि देख कर दूसरोंको भी वैसा ही करनेकी इच्छा हो। मतलब यह कि अर्पण हो जानेके बाद हम अपने नहीं हैं; प्रभुके हैं। इसलिये प्रभुकी योग्यतानुसार, प्रभुकी बड़ाईके अनुसार और प्रभुके गुणोंके अनुसार हमें बर्ताव करना चाहिये। और इस प्रकार उसकी इच्छानुसार चलनेके लिये सदा परम कृपालु परमात्मासे ऐसी प्रार्थना करना चाहिये कि हे प्रभु! ऐसा कर कि हमारी जिन्दगीके बाकी दिन तेरी सेवा स्मरणमें जायं और हम तेरे अर्पण हो कर रहें। सारांश यह कि हे प्रभु! तू हमें अपना बना ले और तू हमारा हो जा। यही हमारी प्रार्थना है।

१२४-बूढ़ोंको सलाह। (१)

घोड़े या बैल बहुत थक जानेपर भी जब अपने घरकी तरफ मुड़ते है तब बड़ी तेजीसे चलने लगते है। वैसे ही हे वृद्धजनो! अब आपको धर्मके रास्तेमें बहुत तेजीसे चलना चाहिये। क्योंकि मोक्षधाम हमारा असली घर है। यह संसार तो सिर्फ थोड़े समयके लिये है। जहां अनन्त कालतक रहना है वह हरिके हजूरका मोक्षधाम ही है और इस घरकी तरफ जानेका

अब आपका समय हो गया है। आपकी गाड़ी अब उस दिशाको मुड़ी है। इसलिये अब आपको धर्मके रास्तेमें बहुत जोरसे चलना चाहिये। घोड़े बैल जैसे जानवर जब थक गये हों तब-भी अपने घरकी तरफ जानेके लिये उतावली करते है। तब आप तो समझदार हैं, ज्ञानी हैं और अनुभवी हैं। इसलिये आपको तो बड़े ही जोरसे आपके घरकी तरफ चलना चाहिये।

जिस मनुष्यको बड़ी लम्बी यात्रा करना होता है वह अपनी जरूरतकी चिजोंकी बहुत बड़ी तय्यारी पहलेसे कर रखता है। ऐसा न करनेसे लम्बी मुसाफिरीमें अनेक प्रकारका दुःख भोगना पड़ता है। इससे चतुर आदमी लम्बी मुसाफिरीके लिये बहुत अच्छी तय्यारी कर रखते है। वैसे ही हे वृद्ध सज्जनो! आपको भी अब थोड़े दिनमें बहुत लम्बी यात्रा करना है। क्योंकि मृत्युके समान लम्बी यात्रा इस जगतमें दूसरी नहीं है। इसीसे मृत्युको महायात्रा भी कहते हैं। अन्तिमसे अन्तिम और लम्बीसे लम्बी यात्रा मृत्यु है। इस महायात्रामें निकलनेके लिये आपका समय आ पहुँचा है। इसलिये यात्रामें विघ्न न पड़े इस किस्मका सरोसामान लेने और उसे साथ रखनेकी तय्यारी आपको अभीसे कर रखना चाहिये। हम देखते हैं कि सिर्फ एकाध मंजिलकी यात्रा करना हो तोभी पानी पीनेके सामान, छाता, कपड़ा आदि चीजोंका बंदोबस्त पहलेसे कर रखना पड़ता है। अठवारे पखवारेकी यात्रामें तो बहुत तरहकी चीजें लेनी पड़ती हैं और बहुत बड़ी गठरी मोटरी बांधनी पड़ती है। तब विचार कीजिये कि जो लम्बीसे लम्बी यात्रा है और जहांसे अपनी इच्छानुसार लौटना नहीं है, वरंच जहां अनन्त कालतक रहना है वहां जानेके लिये कितनी बड़ी तय्यारी करनी चाहिये? यह बात आपकी अकलसे बाहर नहीं

है। इसलिये हे बाबालोगो ! अब गफलतमें मत रहना, वरंच इस लम्बी यात्राके लिये उचित तय्यारी रखनेकी कृपा करना। यही हमारी सलाह है।

बम्बई बन्दरसे काठियावाड़, कच्छ, गोवा आदि स्थानोंके लिये अगिनबोट छूटते हैं। कितने ही अगिनबोटोंके छूटनेका टाइम नियत रहता है और कितने अगिनबोटोंके छूटनेका टाइम नियत नहीं रहता। उनमें जिनको चढ़ना होता है वे आदमी अपना सरोसामान लिये किनारे बैठ कर अगिनबोट खुलनेकी बाट देखते रहते हैं। वे पहलेसे ऐसी तय्यारी कर रखें तो अगिनबोट खुल जाय और वे पड़े रहजायं, नियत समयपर अपने मुकाम-पर न पहुंच सकें। वक्तसे न पहुंचनेमें अगिनबोटवालेका कुछ नुकसान नहीं होता वरंच जिनको उसमें जाना है उन्हींका नुकसान होता है। ऐसे नुकसानसे बचनेके लिये चतुर मनुष्य पहलेसे ही बन्दरगाहमें जा कर बैठते हैं। वैसे ही हे वृद्ध सज्जनो ! हम आपसे कहते हैं कि आपकी देह कब गिरजायगी इसका कुछ पता नहीं है। यह अगिनबोट कब खुलजायगा इसका ठीक वक्त नहीं जानते परन्तु अब थोड़े दिनोंमें जाना है यह तो जरूर जानते हैं। उस अगिनबोटमें बैठ कर स्वदेश पहुं-चनेके लिये पहलेसे उचित तय्यारी कर रखना चाहिये। क्योंकि ऐसी तय्यारी करनेका समय अब आगया है। इस-लिये खबरदार रहना कि जिसमें गफलतसे अगिनबोट छूट न जाय। मतलब यह कि धर्म, ध्यान, परमार्थ, घर गृहस्थीके कामकाजका प्रबन्ध तथा वैसा ही और कुछ करना हो तो उसे बिना किये ही आप न चल बसें इसका ख्याल रखना।

बाबालोगो ! आपको मालूम है कि जिस देशमें जाना होता है उस देशका सिक्का अपने पास न हो तो वहां बड़ी कठिनाई

पड़ती है। क्योंकि भिन्न भिन्न देशोंमें भिन्न भिन्न सिक्के चलते हैं। इसी तरह इस दुनियाका व्यवहार चलानेमें जो धन काम आता है वह कुछ और है तथा ईश्वरके हजूर जो धन काम आता है वह कुछ और है। यहां धातुओंका तथा पत्थरोंका धन काम आता है परन्तु मोक्षधाममें धर्मका धन ही काम आता है। वहां कुछ यहांका धन काम नहीं आता और उस नये देशमें आपकी जानेकी तय्यारी हो चुकी है। इसलिये अब आपको ऐसा धन प्राप्त करना चाहिये जो उस देशमें चल सके। वहां पैसे, आने, रुपये, गिनी, नोट, दस्तावेज़, पट्टे और इस्टेटका धन काम नहीं आवेगा; वहां तो दयाका धन चाहिये, वहां तो चित्तकी शान्तिका धन चाहिये, वहां तो प्रभुके नामस्मरणका धन चाहिये, वहां तो प्रभुप्रेमका धन चाहिये, वहां तो परमार्थका धन चाहिये, वहां तो प्रभुके ध्यानका धन चाहिये, वहां तो अन्तःकरणकी कोमल वृत्तियोंका धन चाहिये, वहां तो भ्रातृभावका धन चाहिये, वहां तो शुभेच्छाका धन चाहिये, वहां तो मानसिक वैराग्यका धन चाहिये, वहां तो प्रभुके सब जीवोंसे भलाई करनेका धन चाहिये, वहां तो इन्द्रियोंको तथा मनको वशमें रखनेका धन चाहिये, वहां तो सन्तोंकी सेवा करनेका धन चाहिये, वहां तो सत्संगका धन चाहिये, वहां तो ईश्वरी ज्ञानका धन चाहिये, वहां तो श्रद्धाका धन चाहिये और वहां तो आत्मिक धन चाहिये। वहां कुछ चांदी सोनेका धन, कम्पनी कागज़का धन या हुंडी पुर्जेका धन काम नहीं आवेगा। इसलिये आपको थोड़े दिनमें जिस देशमें जाना है वहांका धन लेनेका उपाय कीजिये। यही हमारी विनती है।

१२५–बूढ़ोंको सलाह। (२)

पाप कर करके जो मनुष्य नरकमें पड़े हैं और नरकका दुःख भोग रहे हैं वे यह चाहते हैं कि अगर थोड़े दिनके लिये हमें जगतमें फिर जानेको मिले तो हम वहां जाकर खूब भजन ध्यान कर लें और ऐसा कर आवें कि जिससे हमारी आत्माका कल्याण हो। इसके लिये वे छटपटाते हैं और बारंबार प्रभुसे प्रार्थना करते हैं कि हे प्रभु! हमें थोड़ी देरके लिये भी पृथ्वीपर फिर भेज कि जिससे हम तुझे जान सकें और तेरा प्रेम पा सकें। परन्तु अफसोस! उनके पाप इतने भारी होते हैं कि वे नरकसे नहीं छूट सकते। इस प्रकार नरकमें पहुंचनेके बाद पछताना, हाथसे मौका निकल जानेपर रोना और खो देनेके बाद चतुर बनना किस कामका? इसलिये हे बूढ़े बाबाओ! अभी आपके हाथमें जो थोड़ा बहुत समय है उसमें कुछ कर लीजिये और जैसे बने वैसे थोड़े बहुत समयसे भली भांति लाभ उठा लीजिये। नरकमें पड़नेके बाद पछताने की अपेक्षा अभी, जबतक हाथमें समय है तब-तक, चेत जाना और उस समयसे लाभ उठा लेना बहुत अच्छी बात है। सो आपके हाथमें जो थोड़ासा समय बाकी है उससे लाभ उठा लीजिये। लाभ उठा लीजिये।

एक धनी गृहस्थ था। उसकी आंखें कमजोर होने लगीं तो उसने एक चतुर डाक्टरसे अपनी आंखें दिखायीं। डाक्टरने देख कर कहा कि कि थोड़े दिनमें आपकी आंखें चलीजायंगी। अब कोई उपाय नहीं हो सकता। एकाध वर्षमें आप सूरदास बनजायंगे। यह सुन कर वह अनुभवी गृहस्थ चेत गया और अपने भविष्यके सब काम जल्दी जल्दी करने लगा। जैसे-देसावरके अढ़तियोंसे हिसाब किताब चोख किया। कागज

पंथ जो रखना चाहिये उसे रखा। तीर्थ आदि जो करना था वह कर लिया। जो जो चीजें देखनेको थीं सब अच्छी तरह देख लीं और ऐसी हर एक प्रकारकी तय्यारी कर रखी जिससे आंखें जानेपर अफसोस न हो। इसके कुछ दिन बाद उसकी आंखोंकी ज्योति मारी गयी और वह अंधा हो गया। परन्तु इसके लिये पहलेसे खबरदार होने और सब तरहकी तय्यारी किये रहनेसे अंधापेके कारण उसे दूसरोंके इतना दुखी नहीं होना पड़ा। हे वृद्ध सज्जनो! हम आपसे कहते हैं कि जो बुढ़ापा है वह आप सबको चेतानेवाला डाक्टर है क्योंकि वह आकर कहता है कि अब आपको लम्बी यात्रा करनी होगी। बुढ़ापा गुरु है क्योंकि वह आकर उपदेश देता है कि अब समय निकट आताजाता है इसलिये चेतो। बुढ़ापा देवताका दूत है। वह आकर पहलेसे खबर देता है कि अब चलनेकी तय्यारी होतीजाती है इसलिये जो कुछ सार्थकता करनी हो कर लो। क्योंकि समय बहुत थोड़ा है और करनेको बहुत है। ऐसी चेतावनीसे जो आदमी सम्हल जाते हैं उनका काम बनजाता है। जो थोड़े दिनकी मीयाद जान कर भी प्रभुके न्यायकी परवा नहीं करते, नरकके कष्टकी परवा नहीं करते और अपनी आत्माके कल्याणकी परवा नहीं करते वे बहुत दुखी होते हैं। इसलिये बुढ़ापारूपी डाक्टरके चेतानेपर भी नहीं चेतेंगे और पहलेसे जरूरी तय्यारी नहीं कर रखेंगे तो बहुत बड़ी खराबी होगी। ऐसी भयंकर भूलसे बचना।

ऐ बूढ़े चाचाओ! आपके चेतनेका अब सचमुच समय आ-गया है। गागर बंधी डोरका अधिक भाग कूपमें नीचे जा चुका है अब सिर्फ अन्तकी गांठ हाथमें रहगयी है। अगर वह गांठ भी हाथसे सरक जायगी तो गागर और डोर दोनों कुएकी तलहटीमें चली जायेंगी। वैसे ही हे वृद्ध बाबाओ! याद रखना

कि आपकी जवानी चलीगयी है, अधेड़ अवस्था भी चलीगयी है अब तो सिर्फ बुढ़ापेकी गांठ हाथमें रहगयी है। वह भी खिसक जायगी तो नरकके कुण्डमें गिरनेमें कुछभी देर नहीं लगेगी। इसलिये अभी जबतक जिन्दगीकी डोरकी आखिरी गांठ या बुढ़ापेके जो थोड़े वर्ष बाकी हैं उनमें आपसे जो कुछ धर्म, दान, ध्यान, जप, तप आदि, करते बने कर लीजिये। अगर इस अन्तिम समयमे भी इस विषयमें लापरवा रहेंगे तो अन्तकालको बड़ा ही अफसोस होगा।

"अन्तकाल पछतावगे जब तन जैहैं छूटि"।

आप सोचेंगे कि हमने साधन रहते हुए भी कुछ नहीं किया। एक ओर इस प्रकारका पछतावा, दूसरी ओर नरकका कष्ट, तीसरी ओर स्वर्गका सुख, चौथी ओर प्रभुका कोप और पांचवीं ओर इन सब विषयोंको अच्छी तरह देखने तथा समझनेके लिये आपको दिया हुआ ज्ञान—यह सब देख कर बहुत छटपटी होगी और उससे भयंकर वेदना उपजेगी। आपके लिये वह समय बहुत दूर नहीं है। इसलिये हे बूढ़े बाबाओ! चेतिये और जैसे बने वैसे धर्मके रास्तेमें, प्रभुकी तरफ झुकनेकी कृपा कीजिये। यही हमारी बिनती है।

हे बूढ़े बाबाओ! दियासलाईकी डिबियामेंसे जब बहुत कांडी खर्च हो जाती है और दो चार बाकी रहती है तब उसे बहुत सम्हाल कर खर्च करना पड़ता है। क्योंकि अगर दूसरी डिबिया पासमें न हो और अन्तकी थोड़ीसी कांडी भी न जले या जल कर दीया बालनेसे पहले ही बुझ जाय तो सारी रात अंधेरेमें और जंगलमें बाघ भालूके भयमें बितानी पड़ती है। इससे जो आदमी जंगलमें रहते हैं और जिनके पासकी दियासलाईमें से बहुतसी कांडी खर्च हुई रहती है वे बाकी बची

थोड़ीसी कांडीको बहुत सम्हाल कर खर्च करते हैं और उसमें भी एक ही लकड़ी हो तो बहुत ही ख्याल रखते हैं। हे माननीय बूढ़े बाबा लोगो! हम आपसे कहते हैं कि आपकी जिन्दगीकी डिबियामेंसे बहुतसी कांड़ी खतम हो चुकी है सिर्फ दो चार बाकी हैं। अर्थात् आपकी जिन्दगीके बहुत वर्ष बीत गये, अब अन्तके कुछ वर्ष बाकी हैं। इसलिये जैसे बने वैसे उनका सदुपयोग कर लीजिये। उस बाकी बची दियासलाईकी कांड़ीसे धर्मका दीया जला लीजिये, प्रभुप्रेमका दीया जला लीजिये, जिन्दगी सार्थक करलेनेका दीया जला लीजिये और ईश्वरकृपाका दीपक जला लीजिये। नहीं तो मरनेपर नरकके महाभयंकर अंधकारमें रह जाइयेगा। इस भूलसे बचना और बेकारण जरासी लापरवाहीसे ऐसा भयंकर दुःख न भोगना पड़े इसका ख्याल रखना। यही हमारी विनती है।



१२६—बूढ़ोंको सलाह। (३)

ऐ हमारे बूढ़े बाबाओ! अब आप बुढ़ापेमें जो कुछ ध्यान दान आदि करेंगे वह आमका रस चूस कर छिल्का गुठली दान करनेके समान है। जिस समय चढ़ती जवानी होती है, जब शरीरमें बल होता है, जब मनमें जोश होता है, जब बुद्धि खिलती रहती है और जब अनेक प्रकारका प्राकृतिक सुबीता होता है उसी समय परम कृपालु परमात्माका ज्ञान प्राप्त करलेना चाहिये तथा उसी समय उसका भजन कीर्त्तन करना चाहिये। परन्तु अफसोस है कि आपने वह बढ़िया मौका खो दिया है, वह अनमोल अवसर गंवा दिया है और जिन्दगीकी मिठासका वह

चुके हैं और अच्छा बुरा बहुत कुछ अनुभव ले चुके हैं। यह भी देख चुके है कि मायाके मिथ्याप्रदेशमें भटकनेसे कितनी खराबी होती है और अब आपके शरीरकी सारी इन्द्रियां निर्बल होगयी है। इससे जवानोंको प्रभुकी ओर अपना मन झुकानेमें जैसी कठिनाई पड़ती है वैसी कठिनाई आपके रास्तेमें नहीं है। आपके लिये सीधी और सुन्दर सड़क बनी पड़ी है। अब आपको धर्मके सुगम मार्गमें तथा प्रभुके आनन्दी रास्तेमें चलना सीखना चाहिये। आपके लिये यही शान्तिका उत्तम रास्ता है। अब आप जैसे बने वैसे और सब निकम्मी उपाधियोंको छोड़ कर प्रभुके रास्तेमें चलिये और ऐसा कीजिये कि उस महामंगलकारी पवित्र पिताके नामका स्मरण हो, उसका ध्यान धरा जाय तथा उसके लिये उसके बालकोंको दान दिया जाय। यही हमारी अरदास है।

हे बूढ़े काकाओ! आप अभी अपने मनमें यही विचार किया करते है कि हमारा फलां काम हो जायगा तो हम भजन भावमें लगेंगे। यह बहुत बड़ी भूल है। क्योंकि इस जगतमें जो सांसारिक काम है वे कुछ मनसोचे ढंगपर नहीं होते। इसके सिवा एक काम पूरा होनेपर दूसरे कामकी इच्छा होती है और दूसरा काम पूरा होनेपर तीसरे कामकी इच्छा होती है। इस तरह ज्यों ज्यों व्यवहारी काम पूरे होते जाते हैं त्यों त्यों आशा तृष्णा बढ़ती जाती है। और इस बीचमें कोई ऐसा बड़ा घाव लग जाता है कि जखम भरनेमें बहुत समय चला जाता है। अच्छी बुरी घटनाओंका होना इस संसारका प्रवाह ही है। अगर ऐसे बहानेमें पड़े रहे तो धर्मके काममें लगनेकी फुर्सत ही नहीं मिलती। ऐसा करते करते मृत्यु आजाती है, और धर्मके काम पड़े रहजाते हैं। ऐसी भारी भूल न

होने देनेके लिये हे दादाओ! आप चेतिये, ऐसे बहानेमें मत पड़े रहिये कि फलां काम होजानेके बाद हम भगवद्भजनमें लगेंगे। मनको ढीला रखेंगे तो ऐसे बहानोंकी कमी नहीं है। इसका नतीजा यह होगा कि ऐसे बहानेमें रह जाइयेगा और छूछे हाथ घड़ीभरमें चल बसियेगा। उस समय बड़ा पछतावा होगा। ऐसी भूलसे बचिये।

हे वृद्ध बाबाओ! थोड़े वर्ष पहले आप स्वयं बहुत छोटे बालक थे और दूसरोंको काका बाबा कह कर पुकारते थे। इसके बाद, कुछ दिन पहले, आप सुन्दर और तगड़े जवान थे और इतने ही समयमें बूढ़े होगये! यह देखते हैं न? इसी तरह समय जाते देर नहीं लगती और शरीरको छबकते भी देर नहीं लगती तथा मौत आते भी कुछ देर नहीं लगती। इसलिये हे बूढ़े बाबाओ! अब आप जल्द चेतिये और जैसे बने वैसे धर्मके रास्तेमें आजाइये। कुछ समय पहले जब आप बालक थे अब आप जिनको चाचा, मामा, बाबा और दादा कहते थे उनमेंसे कोई आज जीता है? वे सब चाचा बाबा जैसे चले गये वैसे अब आप सबके चाचा बाबा होगये हैं इससे अब आपका भी यहांसे कूच करनेका समय निकट आता जाता है। इसके लिये दूर क्यों जायं? आप अपने शरीरको देखिये तो मालूम हो जायगा कि आपकी पाचनशक्ति घट गयी है, आपके दांत गिरते जाते हैं, आपकी आंखोंकी ज्योति घट गयी है, आपकी चलनेकी शक्ति घट गयी है और आपके हाथका जोर घट गया है। इस तरह आपके शरीरकी सब शक्तियां घटती जाती हैं। यह क्या आपको धर्मके रास्तेमें जानेकी चेतावनी नहीं है?

हे बूढ़े बाबाओ! आपके शरीरकी शक्तियां बुढ़ापेके कारण घट बेशक गयी हैं परन्तु आपकी जीवात्माकी शक्ति नहीं घटी

है। आपकी जीवात्मा बूढ़ी नहीं हुई है। वह तो और चतुर हुई है, अधिक अनुभवी हुई है और अधिक जोरसे अधिक समझसे तथा अधिक श्रद्धासे प्रभुको पकड़ सकनेवाली हुई है। इसलिये अब आपके हाथमें थोड़ासा समय है। इतने समयमें परम कृपालु परमात्माकी शरण पकड़ लेनी चाहिये और जैसे बने वैसे धर्मके काममें लग जाना चाहिये।

हे बूढ़े चाचाओ! आपके शरीरकी शक्ति घटी है परन्तु सर्वशक्तिमान अनन्त ब्रह्माण्डके नाथकी दया नहीं घटी है। उसकी दया और कृपा तो सबके ऊपर अखंडभावसे झर रही है और उसमें भी अच्छे, समझदार, नेक और धर्मात्मा बूढ़े जनों पर तो उसकी विशेष कर अतिशय दया होती है। इसलिये हे बाबाओ! आपको उसकी दयासे लाभ उठाना चाहिये और जैसे बने वैसे इस अन्तिम अवस्थामें खूब भजन भाव करना चाहिये। यही जिन्दगीकी सार्थकताका उपाय है।

१२७–बूढ़ोंको सलाह। (४)

इतने बड़े जगतमें मरते समय जो खालीहाथ चला जाय वह सबसे भारी मूर्ख है।

एक बड़ा धनी सेठ था। उसके एक देहाती मित्र था। वह देहाती बड़ा हाजिरजवाब और कुछ कुछ निर्दोष दिल्लगी करनेवाला था। परन्तु बेचारा बड़ा सीधा था। व्यवहारकुशल मनुष्योंमें जैसी चालाकी होती है वैसी चालाकी और वैसी कुशलता उसमें न थी। इससे वह धनवान समझता कि यह मूर्ख आदमी है। यह समझ कर सेठने एक दिन दिल्लगीमें अपनी छड़ी उसे

देदी, उस भोले हंसमुख देहातीने पूछा कि यह छड़ी लेकर मैं क्या करूं ? सेठने कहा कि अगर तुमसे बढ़कर कोई मूर्ख, तुम्हें मिले तो उसे यह छड़ी देदेना ; जबतक ऐसा कोई मूर्ख न मिले तबतक अपने ही पास रखना । वह भोला आदमी छड़ी लगाकर घूमने लगा । घूमते घूमते उसे बहुत दिन बीतगये पर छड़ी देने लायक कोई आदमी उसे नहीं मिला । इससे वह छड़ी आपही लगाता और उसे देख देख कर वह सेठ उसकी दिल्लगी उड़ाता और कहता कि क्यों ? तुमसे बढ़कर कोई मूर्ख नहीं मिलता क्या ? तब तो मैंने तुम्हें वज्र-मूर्ख ठीक ही समझा है न ? इस तरह सेठ उसकी दिल्लगी उड़ाता, इसके बाद सेठ बहुत बीमार पड़ा और मरनेके किनारे आगया । देहातीने उसके पास जा कर पूछा कि क्यों सेठजी ! क्या करते हो ? सेठने कहा कि अब तो चलनेकी तय्यारीमें हूं । देहातीने पूछा—लौटोगे कब ? सेठने कहा—वहांसे कोई नहीं लौटता , देहातीने पूछा—वहां जानेके लिये कुछ सीधा कलेवा साथ लिया है कि नहीं ? सेठने कहा कि यहांका सीधा कलेवा वहां काम नहीं आता । यह सुन कर देहातीने कहा कि अब तुम जाते हो तो यह छड़ी किसको दूं ? सेठने कहा—तुमसे कह चुका हूं कि तुमसे बढ़कर मूर्ख जो हो उसीको देना । अब फिर क्या पूछते हो ? देहातीने कहा कि तो तुम्हीं यह छड़ी लो । सेठने पूछा—कारण ? देहातीने कहा कि जिस स्थान पर अनन्त कालतक रहना है वहां साधन रहते हुए भी बेसीधा कलेवा जानेसे बढ़कर मूर्खता और क्या है ? सेठजी ! मुझे तो यही जंचता है कि सदाके घरमें छूछेहाथ जानेवाले तुम्हीं सबसे बढ़कर मूर्ख हो इसलिये अपनी छड़ी अपने पास रखो । यह सुन कर उस मरनसेजपर पड़े हुए सेठके चित्तपर बड़ा असर

पड़ा और उसने अपनी शक्तिभर बहुत कुछ दान पुण्य किया।

हे बूढ़े बाबाओ ! यह बात कह कर हम आपको यह सुझाना चाहते हैं कि आपकी भी अब लम्बे रास्तेकी तय्यारी हो चुकी है इसलिये कुछ सीधा कलेवा ले रखिये। यही हमारी विनती है। याद रखना कि वहां चावल दालका सीधा या पेड़ा बरफी, हलवा पूरी आदिका कलेवा काम नहीं आवेगा वहां प्रभुके पवित्र नामके जपका सीधा काम आवेगा; वहां तो ईश्वरके गुण गानका कलेवा काम आवेगा; वहां तो प्रभुके ध्यानका नाश्ता काम आवेगा; वहां तो पवित्रताका कलेवा काम आवेगा; वहां भ्रातृभावका कलेवा काम आवेगा; वहां प्रभुके अर्थ दिये हुए दानका कलेवा काम आवेगा; वहां दीनताका कलेवा काम आवेगा; वहां भगवदिच्छाका कलेवा काम आवेगा; वहां प्रभुका उपकार माननेका कलेवा काम आवेगा, वहां हरिजनोंकी सेवा करनेका कलेवा काम आवेगा; वहां सत्संगका कलेवा काम आवेगा; वहां मनोनिग्रहका कलेवा काम आवेगा, वहां सत्यका कलेवा काम आवेगा; वहां दयाका कलेवा काम आवेगा; वहां प्रभुप्रेमका कलेवा काम आवेगा और वहां ईश्वरी ज्ञानका कलेवा काम आवेगा। ऐसा सीधा कलेवा लेनेका उपाय करना। यही हमारी विनती है।

सवेरेके समय जिन बैलोंको गाड़ीमें जोतते हैं उनको संध्या समय छोड़ देते हैं। अगर हठ पकड़ कर रातको भी गाड़ी चलाया करें तो बैल थके बिना नहीं रहेंगे। इसके सिवा रातको गाड़ी चलानेसे लुटजानेका भय भी रहता है। हे बूढ़े बाबाओ ! अब आपको भी, अपनी संसारी गाड़ी खोल देनी चाहिये। क्योंकि आप बहुत गाड़ी चला चुके हैं और अब आपकी संध्या होगयी है। इसलिये अब विश्रामका समय है।

ऐसा न करनेसे आप थक जायंगे और रास्तेमें लुटजायंगे। ऐसी भयंकर भूलसे बचना।

हे बाबाओ! बुढ़ापेके लिये हमारे शास्त्रमें क्या कहा है आप जानते हैं? बाबाजी! अब आपके सन्न्यास लेनेका समय आगया है। परन्तु जमाना दूसरा है। इससे शरीरसे सन्न्यास न ले सकें तो कुछ हर्ज नहीं परन्तु मानसिक सन्न्यास तो जरूर लेना चाहिये और प्रपंचकी बहुत बातोंसे दूर रहना चाहिये। अब आपका चौथापन है, अब आपकी उत्तर अवस्था है और अब आपकी अन्तिम अवस्था है। अब सब छोड़ कर थोड़े समयमें जाना है और ऐसी जगह जाना है जहांसे इस रीतिसे लौटना नहीं है कि आपको मालूम हो। इसलिये अब चेतनेका समय है और सन्न्यास लेनेका समय है। परन्तु आजकलके जमानेमें शास्त्रविधिसे सन्न्यास पालना बड़ा कठिन है। इसलिये सन्न्यासके बाहरी नियमोंको छोड़ दें तो भीतरी नियमोंको अपने कल्याणके लिये पालना ही चाहिये। ऐसे भीतरके सन्न्यासको ही मानसिक सन्न्यास कहते हैं। जैसे—

मानसिक सन्न्यास माने दुनियादारीके सब प्रपंच मनसे निकाल डालना; मानसिक सन्न्यास माने घर गृहस्थीका जंजाल मनसे निकाल डालना; मानसिक सन्न्यास माने कुटुम्बकलह मिटाकर सबसे मिलजुल कर माफी मांग लेना; मानसिक सन्न्यास माने अपने ऊपरका बोझ अपने बेटे पोतोंको, भाइयोंको या दूसरे सगे सम्बन्धियोंको सौंपदेना; मानसिक सन्न्यास माने मनमें अच्छी तरह यह समझ लेना कि जगतकी जो ये सब चीजें दिखाई देती हैं उनमें कोई मेरी आत्माके काम नहीं आनेकी; इसलिये इन सब वस्तुओंका मोह मुझे घटाना

चाहिये। यह समझ कर ऐसा करनेका नाम मानसिक सन्न्यास है। संसारकी रचना ही ऐसी है और मनुष्यकी प्रकृति ही ऐसी है कि जबतक शरीरमें प्राण रहे तबतक कुछ न कुछ सुख या दुःख होता ही है। ऐसे सुख दुःखकी परवा न करके सुखमें समभाव रखने तथा दुःखमें भी समभाव रखनेका नाम मानसिक सन्न्यास है। मनमें जो जो संकल्प विकल्प उठा करते हैं उन सबको रोकने और उनके बदले मनही मन परमात्माका स्मरण किया करनेका नाम मानसिक संन्यास है। बचपनसे छोटे बड़े प्रपंच करने तथा जिस बातसे अपना कुछ भी मतलब न हो उसमें भी मनको दौड़ानेकी आदत पड़गयी है। इस आदतको छुड़ाकर मनको एकाग्र करने या परमात्मामें लय करनेका नाम मानसिक संन्यास है। कुटुम्बमें अच्छी बुरी घटनाएं हों या धन सम्बन्धी कुछ तंगी सतावे तथा आदर मानकी बातोंमें कुछ विघ्न आवे तोभी उन बातोंसे अलग रहने और उनका धक्का अपने चित्त पर न लगने देनेका नाम मानसिक संन्यास है। सारांश यह कि स्वार्थ त्याग करना और ईश्वरके लिये जीना सीखना तथा उसके अर्पण होकर जिन्दगी बिताना मानसिक संन्यास कहलाता है। याद रहे कि ऐसे ही संन्याससे आगे जाकर कल्याण होता है और ऐसा सन्यास लेनेका अब आपका समय है। इसलिये हे बूढ़े बाबाओ! ऐसा मानसिक सन्यास लेकर हृदयमें शान्ति रखना सीखिये और जैसे बने वैसे प्रभुसे अपने जीवको जोड़े रहिये। यही हमारी विनती है। बुढ़ापा प्रभुको भज लेनेका आखिरी मौका है। यह आखिरी मौका भी हाथसे गया तो फिर यमदूत हाथमें डंडा लिये तय्यार हैं और नरकका द्वार खुला पड़ा है। इसलिये यह आखिरी मौका खोनेकी भयंकर भूल मत करना।

१२८—बूढ़ोंको सलाह (५)

बुढ़ापेकी भूलें।

१—बहुतेरे बूढ़े आदमियोंके घर उनके लड़केवाले बड़ी उमरके हुए रहते हैं और वे सब काम सम्हालने लायक होते हैं तोभी बहुतेरे बूढ़े उन्हें बहुत चीज़ोंका मालिकाना नहीं देते और व्यर्थका सब बोझ अपने ही ऊपर रखकर हैरान हुआ करते हैं। अगर लड़के नालायक हों और घर गृहस्थी सम्हाल न सकते हों तब उनको उनकी जिम्मेवारी न सौंपना दूसरी बात है परन्तु बहुतेरे बूढ़ोंके लड़के बड़े लायक होते हैं और अपना काम सम्हाल सकते हैं तोभी वे उन्हें सौंपने योग्य चीजें नहीं सौंपते, जहांतक बनता है आप घसीटा करते हैं और व्यर्थका जंजाल वे सहा करते हैं तथा सबसे विना कारण रार मचाया करते हैं। बूढ़े बाबाओ! ऐसी भूलसे बचना। एक तो व्यर्थ दूसरेका बोझ लादना और दूसरे रार—ऐसा धंधा कौन करे? ऐसी मूर्खता कौन करे? ऐसी भूलसे बचना।

२—बहुतेरे बूढ़े ऐसे कच्चे होते हैं कि अपने छोटी उमरके और कच्ची बुद्धिके लड़कोंको अपना सब अधिकार सौंप देते हैं पीछेसे परिणाम यह होता है कि कच्ची बुद्धि तथा कम उमरके लड़कोंसे वह बोझ नहीं सम्हलता इससे वे बुरा रास्ता पकड़ लेते हैं या पैसा खराब करते हैं। बाप कुछ कहने जाय तो बुरा भला कहते हैं और उलटे उसका अपमान करते हैं। इससे बुढ़ापेमें बहुतेरे बूढ़ोंको बहुत दुःख होता है। उस समय अपना कुछ अधिकार नहीं होता और न अपने पास कुछ चीज होती।

इससे सब अत्याचार सहना और मनहीमन झीखना पड़ता है। ऐसा न होने देनेके लिये नालायक लड़कोंको घरका सब कारोबार सौंप देनेसे पहले बहुत सोच विचार लेना चाहिये और लड़कोंमें जैसी योग्यता हो वैसा वर्ताव उनसे करना चाहिये। अगर इस बातका ख्याल न रखा जाय तो पीछेसे बहुत हैरान होना पड़ता है। ऐसी भूलसे बचना।

३–बहुतेरे बूढ़े ऐसे होते है जो अपने रस्म रिवाज और खुराक पोशाकके नियमोंमें ही जकड़े रहते है। उसमें जरा भी फर्क पड़े तो वे बरदाश्त नहीं कर सकते। दूसरी ओर देखिये तो दिन पर दिन जमाना बदलता जाता है। इससे लोगोंके आचार विचार बदलते जाते हैं, अध्ययनका ढंग बदलता जाता है, शिक्षा देनेकी रीति बदलती जाती है, स्त्रियों तथा पुरुषोंकी पोशाकमें फेरबदल होता जाता है, खुराकमें भी बहुतेरी नयी नयी चीजें दाखिल होती जाती हैं, जेवरका फैशन भी बदलता जाता है। बूढे यह हठ करते हैं कि हम अपने जमानेमें ऐसा करते थे इसलिये तुम भी ऐसा ही करो। परन्तु आजकलके जमानेमें बहुतसे जवान लड़कोंको बूढ़े बापकी बात नहीं रुचती। क्योंकि उन्होंने नया जमाना देखा है, इससे वे नये जमानेकी रीतिपर चलना चाहते है और बूढ़े चलती आयी हुई पुरानी रीतिपर चलनेको कहते हैं। इससे बूढ़े बाप और जवान लड़केमें, बूढ़ी मा और जवान लड़कीमें, बूढ़ी सास और नयी पढ़ी लिखी बहूमें, पुराने विचारके, बूढ़े दीवान और अंगरेजी विचारोंके अनुसार पले हुए नये विचारके जननायकोंमें मतभेद हुआ करता है। बहुतेरे बूढ़ोंको अपने वक्तकी पुरानी पुरानी सब बातें अच्छी लगती हैं और आजके जमानेमें जो कुछ नया फेर बदल होता

है वह उन्हें उल्टा पुल्टा लगता है । जवान-लोग नयी नयी रीतियोंके अनुसार नये नये विचार पसन्द करनेवाले होते हैं इससे उनको बूढ़ोंकी बातें नहीं भातीं, उन्हें इस बातका आग्रह होता है कि हम जो करते है वही उचित है । बूढ़े भी बड़े हठीले होते हैं । इससे उनमें वारंवार मतभेद हुआ करता है । हे बाबाओ ! जब ऐसा मतभेद हो तब जरा जमानेकी ओर देखनेकी भी कृपा करना और आपसे जहांतक तरह देते बने देनेकी कृपा करना । नये विचारवाले जवानोंको हमारी सलाह है कि एकदम अलग बैठनेकी इज्जत मत करना वरंच, जिसमें पिता राज़ी रहें-वैसा कोई रास्ता निकालनेकी कोशिश करना । और हे बाबाओ ! आप भी नया जमाना समझनेकी कोशिश करना । अगर नये जमानेकी ओर न देखें और सब पुराने रिवाजपर ही चलाते जायं तो समझ लेना कि इसमें भी आप बहुत बड़ी भूल करते हैं । आपकी पुराने जमानेकी नवाबी नये जमानेमें पूरी पूरी नहीं चल सकती । इसलिये समय बूझ कर नये विचारमें पले हुए जवान लड़कोंसे बहुत हठ न करके थोड़ी बहुत स्वाधीनता देते हुए चलनेकी कोशिश करना और कुटुम्बमें कलह मचनेसे बचाना । यही हमारी सलाह है ।

४-बहुतेरे बूढ़े ऐसे हैं कि बुढ़ापेकी कमजोरीके कारण अपना रोजगार धंधा या घर गृहस्थीका काम उनसे जैसा चाहिये वैसा नहीं होता और उनके भाई, लड़के या नौकरसे यह काम अच्छी तरह हो सकता है परन्तु उन बूढ़ोंको काम करनेका और जंजाल उठानेका ऐसा मोह होता है कि अपनेसे न हो सकनेपर भी वे अपना कामकाज अपने प्यारे सगोंको नहीं सौंपते । फल यह होता है कि लड़के बिना अनुभवके रह

जाते हैं और अपनी पहुंच न होनेसे कामकाजमें भूल करते हैं, तथा नुकसान उठाते हैं। इसलिये अपनेसे न होसकने लायक काममें भी अन्ततक लगे रहनेकी भूल न करनी. चाहियें परच अपनेसे जो बात न होसके या जो काम न बनसके वह दूसरोंको सौंपने लायक हो तो सौंप देना चाहिये और आप ऐसी उपाधिसे मुक्त होना चाहिये।

५–बहुतसे बूढ़े एक बहुत बड़ी भूल करते है। वह यह कि अपने शरीरमें बिलकुल शक्ति न हो, रोगका जोर बढ़ गया हो और मरनेकी तय्यारीमें हों तोभी अपने रुपये पैसेकी तथा लेनदेनकी बात सच सच अपने बालबच्चोंको नहीं बताते और न कहीं उसे नोट कर रखते। इससे जब वे अचानक आंखें मूंद लेते हैं तब जहां जो रखा है वह वहीं रह जाता है और किसी बेविश्वासी व्यापारीके यहां रुपया जमा किया हो तो वह मार लेता है और स्त्री बालक दुखी होते हैं। याद रहे कि अहल दिलसे अपने प्यारे सगोंसे भी पेटकी बात न बतानेके कारण ही ऐसी खराबी होती है और लेनदेनका साफ हिसाब न रखनेसे ही ऐसी खराबी होती है। ऐसी भूलसे बहुत संम्हलना चाहिये। जो धन पैदा करनेके लिये खूनको पसीना बनाया है, जो धन कमानेके लिये अनेक प्रकारका प्रपंच रचा है, जो धन कमानेके लिये भूख प्यास सही है और जो धन कमानेके लिये दूसरोंकी खुशामदकी है तथा अपमान सहा है वह धन अपनी जरासी भूलके कारण व्यर्थ दूसरा कोई खाजाय और जिन स्त्री पुत्रोंके लिये वह धन कमाया है उनके काम न आवे तो इससे बढ़कर खराबी और क्या है ! हे वृद्धजनो! इस बातका ख्याल रखना कि ऐसी भूल न हो।

इस प्रकारकी बहुत बड़ी भूल होनेका कारण यह है कि

कितने बूढ़े बहुत अधीरजी होते हैं; कितने बूढ़े बड़े वहमी होते है; कितने बूढ़े बड़े कंजूस होते है और कितने बूढ़े अपने स्त्री पुत्रोंके बारेमें यह सोचते हैं कि उनके हाथमें पैसा आयगा तो वे उड़ादेंगे। कितने बूढ़े यह सोचते हैं कि हम लड़कोंको सब कुछ सौंप देंगे तो फिर लड़कोंको हमारी कुछ परवा नहीं रहेगी; वे हमारा कहना नहीं मानेंगे। यह समझ कर वे अपना रुपया पैसा छिपाते हैं। कितने बूढ़े यह समझते है कि हम अपना लेनदेन लड़कोंसे कह देंगे तो हमारा भेद खुल जायगा। इस कारण वे उनसे लेनदेनकी बात नहीं कहते। परन्तु इसका परिणाम यह होता है कि किसीका धन जमीनमें गड़ा रह जाता है; किसीका धन व्यापारीके यहां पड़ा रह जाता है और किसीका धन कर्जदारोंके यहां या कम्पनियोंके शयरोंमें रह जाता है और धन रहते हुए भी बूढ़ेके गुजर जानेपर उसके स्त्री पुत्र दुखी होते है। इसलिये हे बाबाओ! ऐसी भूलसे बचना।

१९९—बूढ़ोंको सलाह। (६)

बहुतसे बूढ़ोंका स्वभाव ऐसा बन जाता है कि उनसे कुछ भी नहीं होसकता, उनका शरीर बहुत अशक्त होजाता है इससे वे घरके कोनेमें या खाटपर पड़े रहते है; परन्तु शोक है कि ऐसी दशामें भी वे अपनी जीभको वशमें नहीं रखते। खाटपर पड़े पड़े भी अपनी जीभ चलाया करते है और लड़कोंको, बहुओंको तथा नौकर चाकरोंको झूठमूठ डांटा करते है तथा जिस बातमें ध्यान देनेकी उन्हें जरूरत नहीं उसमें भी सिर

खपाया करते है । बेकारण दिनभर बड़बड़ाते है और छोटी छोटी बातोंके लिये भी आफत मचाते है । अपना खून खौला डालते हैं और घरके लोगोंको भी हैरान करते है । यह सब करनेका कोई खास कारण नहीं होता, उनका स्वभाव ही ऐसा चिड़चिड़ा होजाता है और उनका मन ही ऐसा अस्थिर होता है कि वे सबके साथ छोटी छोटी बातके लिये झगड़ा मचाया करते हैं और घरमें अपना कुछ न बसाता हो तो भी अड़ंगा डालते हैं। ऐसा करके वे आप दुखी होते है और घरके आदमी भी उनसे नकिया जाते हैं । परिणाम यह होता है कि जिन बूढ़े मा बापका आदर करना चाहिये उन्हींका अपमान करना पड़ता है; जिन बूढ़े मा बापको खुश रखना चाहिये उन्हींको दुखी करना पड़ता है; जिन वृद्ध मा बापका आशीर्वाद लेना चाहिये उन्हींकी गाली खानी पड़ती है तथा उन्हींका शाप सुनना पड़ता है और जिन मा बापके लिये यह मानना चाहिये कि अभी बहुत दिन जीयें उनके लिये यह कहनेका समय आता है कि अब बेचारे बहुत दुःख पा रहे है, छुटकारा पा जाते तो अच्छा होता। इस प्रकार जीनेके बदले मरना मनाना पड़ता है। याद रहे कि कुछ बूढ़ोंके बिगड़े हुए स्वभावके कारण यह सब खराबी होती है। इसलिये बूढ़ोंको अपना मन वशमें रखना चाहिये तथा अपने स्वभावको सुधारनेकी कोशिश करना चाहिये । चतुर मनुष्योंकी रीति ही यह है कि अपनी मौत बनानेके लिये, जब मरनेके किनारे आवें तब सबसे अधिक भलाईका बर्ताव रखें । सबको उनका हक चुकाकर, सबको प्रसन्न कर, सबका आशीर्वाद लेकर, सबके सामने बहुत शान्तिसे प्रभुका नाम स्मरण करते करते मरना चाहिये। इसके बदले, बुढ़ापेमें मरनेका समय निकट आनेपर सबसे लड़ना पड़े, सबका मन दुखाना पड़े और अपने प्यारे सगे

सम्बन्धियोंको विना कारण क्लेश देना पड़े तो यह कितनी बड़ी भूल है ? बुढ़ापेमें खाटपर पड़े पड़े घर गृहस्थीका मोह रखकर अपना मिजाज विगाड़ने और–व्यर्थ जीभ चलानेसे ही यह सब खराबी होती है। हे बूढ़े बाबाओ ! ऐसी भयंकर भूलसे बचना।

बहुतेरे वृद्ध ऐसा संकीर्ण विचार रखते हैं कि अगर हम अपने लड़के बालोंके लिये धन नहीं बटोर जायंगे तो वे बेचारे क्या खायेंगे ? बिना अन्नके भूखो मरेंगे। यह सोचकर, जहां मरनेके समय अपने हाथसे परोपकार करके ढारस लेना चाहिये उस समय भी वे कुछ दान धर्म नहीं करते और अपने लड़कोंको मालदार बनानेके लिये आप खालीहाथ चले जाते हैं। ऐसी भूल होनेका कारण यह है कि ऐसे बूढ़े बड़े मोहवादी होते हैं इससे वे अपने लड़कोंको निकम्मा समझा करते हैं और सोचते हैं कि हम उनके लिये धन न छोड़ जायं तो वे भूखों मरेंगे। इस कारण वे मरते समय भी जैसा चाहिये वैसा दान पुण्य नहीं करते। साधन रहते हुए भी इस प्रकार खालीहाथ चले जाने और लड़कोंको अमीर बनानेके लिये आप नरकमें जानेसे बढ़कर भारी भूल और क्या है ? ऐसी भूलसे बचना।

जो आदमी बहुत धन छोड़कर मरे उसका, इस दुनियामें, बखान होता है। लोग कहते हैं कि इसने बड़ा रुपया कमाया था, यह बड़ा चतुर आदमी था। इस प्रकार धन छोड़कर जाने वालेका बखान होता है। परन्तु याद रखना कि उसका प्रभुके घर बखान नहीं होता। जो आदमी खूब दान पुण्य करे और मोक्ष-धाममें काम आने योग्य सीधा कलेवा लेजाय उसी परमार्थी मनुष्यका, प्रभुके घर, बखान होता है। इसलिये किसी और समय दान पुण्य न बनपड़े तो न सही परन्तु जब मरनेका समय निकट आवे तब तो बूढ़े आदमियोंको अपने हाथसे शक्तिभर

दान पुण्य अवश्य करना चाहिये, क्योंकि ऐसे वक्त दान पुण्य करनेसे बूढ़े मनुष्योंकी अंतरात्माको एक प्रकारकी मानसिक शान्ति मिलती है; हृदयका बोझ हलका होता है, गरीब लोगोंका तथा सगे सम्बन्धियोंका और नौकर चाकरोंका आशीर्वाद मिलता है इससे प्रभु भी प्रसन्न होता है। इसलिये बुढ़ापेमें दान पुण्य करनेकी आदत रखनी चाहिये। इतना ही नहीं वरन्च खास चाह कर ऐसे समय अधिक दान करना चाहिये। परन्तु अफसोस है कि इस विषयमें भी बहुत आदमी बहुत भूल करते हैं और अपने लड़कोंको धनी बनानेके लिये आप नरकमें जाते हैं। हे प्यारे दादाओ! ऐसी भूलसे बचना।

पढ़नेवाले भाई बहनो! अब आपसे यही विनती करना है कि बूढ़े आदमियोंकी ये सब भूलें देख कर आप अपने बूढ़े माता पिताको, बूढ़े हित मित्रोंको या बूढ़े पड़ोसियोंको उनकी भूलें मत बताया करना और ऐसी भूलोंका ख्याल मनमें रखकर पूज्य वृद्धजनोंको खराब मत समझना वरंच वृद्धजनोंपर जैसे बने वैसे इज्जत और स्नेहकी दृष्टि रखना, उन्हें उदारताकी दृष्टिसे देखना, उन्हें दयाकी दृष्टिसे देखना, उन्हें क्षमाकी दृष्टिसे देखना और उनकी भूलोंको सहलेनेकी कोशिश करना। क्योंकि आपके बूढ़े मा बापने आपके लिये वह काम किया है जो जगतमें और और किसीसे नहीं बन सकता। और अबभी उनके मनमें आपके लिये बड़ा स्नेह है। वे आपके स्नेहके कारण ही नरकका कष्ट स्वीकार करते हैं परन्तु अपनी शक्तिसर हाथ उठाकर किसीको दान नहीं देते। उनका आपके ऊपर इतना बड़ा मोह है। इसलिये उनकी भूल मनमें मत रखना वरंच उन्हें निबाह लेजानेकी कोशिश करना। ऐसा न करके बूढ़े पुरनियोंकी भूल देखा करें तो समझ लीजिये कि आप बहुत बड़ी भूल कर रहे हैं।

इसलिये हे जवान बन्धुओ ! आप भी ऐसी भूलसे बचना ।

भाइयों और बहनो ! आपमेंसे जो जो यह लेख पढ़े वे अपने माता पिताको यह सब विषय पढ़कर सुनानेकी कृपा करें उन्हींको नहीं वरंच अपने चाचा, मामा, मौसी, फूआ आदि बूढ़े रिश्तेदारों तथा बूढ़े पड़ोसियोंको भी पढ़ सुनानेकी कृपा करना । क्योंकि ये सब सच्ची बातें समझानेसे उनकी आँखें खुलेंगी उन्हें असली रास्ता मिलेगा और वे प्रभुकी तरफ झुक सकेंगे । इसमें आपकी बहुत बड़ी सेवा समझी जायगी और ऐसी सेवा करनेसे आपको भी कुछ पुण्य होगा । इसलिये अपनेसे काम पड़नेवाले बूढ़े सज्जनोंको ये बातें सुनानेकी कृपा करना । यही हमारी विनती है ।

१२०—संत अपने प्रभुको यश देना चाहते हैं और प्रभु अपने सन्तोंको यश देना चाहता है ।

इस जगतमें बहुत काम परम कृपालु परमात्मा अपने भक्तोंकी मार्फत कराता है । जैसे—औषधालय, धर्मशाला, पाठशाला, मन्दिर और अनाथालयका स्थापन आदि जगतमें परमार्थके जितने बड़े बड़े काम हैं वे सब बहुत करके आगे बढ़े हुए भक्तोंके हाथसे ही होते हैं । इतनाही नहीं, भक्तोंकी कृपासे बहुत आदमियोंके भयंकर रोग मिटजाते हैं तथा भक्तोंकी अमृतदृष्टिसे काम, क्रोध, लोभ आदि महादुर्गुण भी नष्ट होजाते हैं । ये सब शुभ काम बहुधा भक्तोंकी मार्फत ही होते हैं । इससे सब लोग उन कामोंका यश भक्तोंको देते हैं ।

परन्तु भक्त अपने चित्तमें खूब अच्छी तरह समझते हैं कि जो करता है वह सब सर्वशक्तिमान परमकृपालु परमात्मा ही करता है, हम तो उसमें निमित्तमात्र हैं और वह भी बड़ा कृपालु है इसीसे हमें निमित्त बनाता है। नहीं तो उसके कामोंमें निमित्तमात्र बननेकी योग्यता हममें नहीं है । यह समझ कर वे अपने चित्तमें गलजाते हैं । इससे किसी तरहका यश लूटना नहीं चाहते या न अपना नाम प्रसिद्ध करना चाहते। तिसपर भी उनका नाम प्रसिद्ध होजाय तो वे घबराते हैं और भागते फिरते हैं। क्योंकि उन्हें विश्वास रहता है कि हम तो कुछ हैं ही नहीं, हम कुछ कर ही नहीं सकते और हममें कुछ दम ही नहीं है। जो बलिहारी है वह हमारे नाथकी है । सिर्फ यह समझकर नहीं, वरंच ऐसा अनुभव करके वे चित्तसे स्थिर होते हैं । इससे विश्वासपूर्वक यही मानते हैं कि किसीके तेल भरनेसे दीया जलता हो और दीया यह अभिमान करे कि यह तेज मेरा ही है तो यह जैसे उचित नहीं है वैसे हमें जो बल मिला है, जो बुद्धि मिली है और दूसरे जो अच्छे साधन मिले हैं वे सब प्रभुकी कृपासे। इसीसे कुछ कुछ काम होजाता है। उसमें हमारा क्या है ? जैसे कोई आदमी खूब बढ़िया पतंग बनाकर खूब लम्बी डोर ढील दे और पतंग आकाशमें खूब ऊंचे उड़ती हो और वह अभिमान करे कि मैं कितनी उंचाईपर हूं तो यह व्यर्थ है। क्योंकि पतंगके नीचे रहने या ऊंचे जानेका आधार वह डोर उड़ानेवालेके हाथमें है। वैसेही हमें आराम देनेवाला हमारा अनन्त ब्रह्माण्डका नाथ है; हम तो निमित्तमात्र हैं। इससे अपने कामोंसे फूल उठनेका हमें कुछ भी हक नहीं है। यह समझकर जो सच्चे सन्त है, सच्चे भक्त हैं, सच्चे ज्ञानी हैं और सच्चे महात्मा हैं वे कभी अपना नाम सामने नहीं लाना चाहते वरंच

जैसे हो वैसे प्रभुका नाम और उनकी महिमा फैलानेका उपाय किया करते हैं।

बन्धुओ! भक्त जहां ऐसा करते हैं वहां दुनियादार लोग एकदम उल्टी चाल चलते हैं और सारा यश आप लेलेते हैं तथा अपना ही नाम फैलानेका हिर्स किया करते हैं और सोभी सच्चे तौरपर नहीं, अच्छे अच्छे काम करके नहीं, प्रभुको प्रसन्न करके नहीं और अपने हृदयको सन्तुष्ट करके नहीं वरंच जैसे कोई आलसी रसोइया दो एक चीजोंमें नमक डाल आवे और मनमें फूला करे कि सब रसोई मैंने ही बनायी है वैसे संसारी आदमी जरासा करके अपना नाम प्रसिद्ध करना चाहते हैं और हर काममें यह दिखाया करते हैं कि हमने किया।

बन्धुओ! सन्तोंमें और संसारी लोगोंमें इतना अन्तर है कि सन्तोंको प्रभु यश देना चाहता है तोभी वे यश लेते शरमाते हैं और संसारी कुछ करते नहीं तोभी व्यर्थका यश चाहते हैं। ऐसी पोलमें मत पड़े रहना और जैसे बने वैसे सच्चे भक्त होकर अपने सब कामोंका यश प्रभुको देना और उसका नाम फैलाना यही हमारी प्रार्थना है।

१२१—"दुखमें सुमिरन सब करें सुखमें करे न कोय।"

एक राजाके यहां एक जंगी अफसर था। वह बड़ा बहादुर और लड़वैया था। परन्तु उसके शरीरमें कोई भारी रोग था। उसका शरीर देखनेसे ऐसा जान पड़ता कि इसकी कजा पूरी हो चली है यह दो चार महीनेमें जरूर मर जायगा। वह भी

अपने मनमें सोचता कि मै इस बीमारीसे नहीं बचूंगा।

वह जंगी अफसर शरीरसे सदा बीमार रहता था परन्तु लड़नेमें बड़ा कुशल था। बीमार शरीरसे भी वह हर लड़ाईमें जाता और बहुत बड़ी विजय कर ले-आता। इस तरह उसने बहुत बड़ी विजय प्राप्त कर राजाको बहुत देश जीत दिये। राजा उसके ऊपर बड़ा खुश हुआ। उसे जंगी अफसरकी बीमार तबीयतपर बड़ी दया आयी। उसने, बहुत प्रवीण वैद्योंको बुलाकर उसका इलाज कराया। राजा यह समझता था कि यह जब इतना बीमार और कमजोर रहनेपर भी इतनी बड़ी बहादुरी दिखाता है और दुश्मनोंको जीत लेता है तब नीरोग शरीर होनेपर न जाने क्या करेगा। इसलिये ऐसे आदमीको चंगा करना चाहिये। यह सोचकर राजाने वैद्योंसे विशेष करके कह दिया कि चाहे जितना खर्च हो और चाहे जैसी दवा लगे कुछ फिकर नहीं इस अफसरको अच्छा करो। अगर यह अच्छा हो जायगा तो मैं तुमको बहुत इनाम दूंगा, वैद्य बड़े ध्यानसे इलाज करने लगे। दवा असर कर गयी और वह अफसर अच्छा होगया। उसके चेहरेका रंग बदलगया। उसमें नयी तेजी आगयी। उसका शरीर हृष्टपुष्ट होगया और वह बहुत सुन्दर दिखाई देने लगा।

इसके बाद उस अफसरने इस्तेफा दाखिल किया और कहा कि अब मुझसे नौकरी नहीं होगी। इसलिये मुझे माफ कीजिये और कृपा करके पलटनी नौकरीसे छुट्टी दीजिये।

यह सुनकर राजाको बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने पूछा—यह क्या? जब तुम बीमार थे तब बहादुरीसे लड़ते थे और जब अच्छे हुए तब इस्तेफा? इस्तेफा देनेका क्या कारण है? उस अफसरने जवाब दिया कि महाराज! मैं जबतक बीमार था

तबतक यह सोचता था कि इस रोगसे नहीं बचूंगा। दो दिन आगे पीछे मरना ही है तब कुछ बहादुरी क्यों न दिखालूं ? जब थोड़े समयमें मरजाना है तब कुछ कीर्ति क्यों न कमालूं ? और जब रोगसे भी मरना ही है तब आपकी सेवा करते करते लड़ाईमें क्यों न मरूं ? यह सोच कर मैं लड़ता था। उस समय मुझे अपने लिये कुछ भय न था। इससे मैं विजय पाता था। परन्तु अब नीरोग होजानेपर मुझे मरना नहीं सोहाता, अब मुझे मौतसे डर लगता है। अब मेरा जी सुख भोगना चाहता है। इससे मैं इस्तेफा देता हूं।

बन्धुओ ! हमलोग भी उस अंगी अफसरके ऐसा करते हैं। जब दुःख आपड़ता है तब प्रभुको याद करते हैं; जब दुःख आपड़ता है तब उसकी प्रार्थना करते हैं और जब दुःख आपड़ता है तब धर्ममें कुछ अधिक बलवान बनजाते हैं तथा कई प्रकारसे भक्ति करने लगते हैं। परन्तु जब सुख आजाता है तब ढीले सीले होजाते हैं; जब सुख होता है तब मोहमें पड़जाते हैं; जब सुख होता है तब मौज शौक करनेका मन होजाता है; जब सुख होता है तब झूठी नजाकत और बाहरी आडम्बर बढ़जाता है; जब सुख होता है तब कर्तव्यपालनमें एक तरहका खास आलस आजाता है और जब सुख होता है तब झूठी शरम, ऊपरी शिष्टाचार और मानसिक दुर्बलता आजाती है। इससे सुखके समय प्रभुसे विमुख होजाते हैं।

बन्धुओ ! अगर हरिजन होना हो तो सुख दुःखके ये सब विषय समझ लेने योग्य हैं। क्योंकि जिन्दगीसे सुख दुःख लगा हुआ है। इसलिये जब दुःख आवे तब दब मत जाना परन्तु दुःखसे भी बहुत लाभ होता है और दुःखके समय प्रभुका स्मरण अधिक होता है यह समझ कर दुःखमें ढारस रखना

सीखिये और सावधान रहिये कि जिससे सुखमें मन ढीला न हो, मोहमें न पड़े और प्रभुको न भूलजाय।

१२२–शरीर तथा मन दोनों सुधरें तभी सची भक्ति हो सकती है।

एक बड़ा धनवान था। वह आजकलके फैशनके अनुसार अपने शरीर तथा घरकी बाहरी सफाई रखनेमें बड़ा कुशल था। अपनी बैठकमें कहीं धूल न रहनी चाहिये; अपने कपड़ेमें कहीं छोटासा दाग भी न रहना चाहिये, मेजपर बिछे हुए कपड़ेमें कहीं सिकुड़न न रहना चाहिये; खिड़की झरोखेमें भी धूल न रहनी चाहिये; अपना कालर इसी ढंगसे रहना चाहिये; धोतियोंकी किनारी चुन्नटदार और फुरफुराती होनी चाहिये; छाता छातेकी जगह रहना चाहिये; कलम दावात बढ़िया होना चाहिये, बागमें पौधोंको नियमपूर्वक सींचना चाहिये; हजामत वक्तपर ही बनवाना चाहिये; वक्तपर ही घूमने जाना चाहिये; कुत्तेको हररोज साबुन लगाकर नहलाना ही चाहिये; मोटरगाड़ीको हमेशा साफ रखना चाहिये; रद्दीकागज खास जगहपर ही रखना चाहिये, घड़ीको इस ढंगसे ही लगाना चाहिये कि उसकी चेन दिखती रहे; चश्मा बारंबार रूमालसे पोंछते रहना चाहिये; बाहर जाना हो तो वारंवार साबुनसे मुँह धोना चाहिये; सिरके बाल आगे दस आने और पीछे छः आनेके हिसाबसे रखना चाहिये; तबेलेमें गन्दगी न रहने देना चाहिये; साग तरकारीमें कोई बासी चीज न आने देना चाहिये और

पुस्तकोंको खूब शोभने योग्य आलमारीमें रखना चाहिये। इस तरह बाहरकी ओर कितनी ही बातोंमें वह सेठ बड़ी सफाई रखता था परन्तु अपने मनको सुधारनेमें एकदम कोरा था। क्योंकि हम देखते कि चाय जरा देरसे मिलती तो उसका मिजाज गरमाजाता। कोई नौकर कोई छोटीसी भूल भी करता तो उसको चाबुक ढूंढ़नापड़ता। दूधमें थोड़ी मलाई आजाती तो आफत मचजाती। गाड़ीके आनेमें जरा देर होती तो वह जलते तेलका बैंगन होजाता। नातेदारोंसे सदा बिगाड़ रहता। घरमें अपनी स्त्रीसे भी प्रेम नहीं। परन्तु अमीरी ठाट रखता था। लड़कोंसे सरलता नहीं परन्तु सेठाईका दिमाक रखता था। आलपिन खो जाती या कलमका कत जरा मोटा हो जाता तो उसके लिये सेठका मिजाज काबूमें न रहता।

किसी जगहसे न्योतेकी चिट्ठी आनेमें देर होती तो वह अपमान समझता। नहाते समय पानी जरा गरम या कुछ ठंढा हो तो नौकरकी शामत आजाती; किसी सभामें आगेकी कुरसी न मिले तो भीतरसे कुढ़ा करता। मुलाकातको आया हुआ आदमी खूब बड़ाई न करे तो वह आदमी उसे तीन कौड़ीका लगता था। कहीं भक्ति सम्बन्धी बात होती तो वहां थोड़ी देर भी बैठनेका मन न करता। कहीं अन्य पुरुषकी बात-चीत होती हो तोभी वह समझ लेता कि मेरी ही चर्चा कर रहे हैं। कभी जरा धूप या सर्दीमें जानापड़े तो उसे बड़ी कठिनाई पड़ती। बिना गाड़ी थोड़ी दूर चलनापड़े तो वह मनहीमन शरमाया करता। गरीबोंसे बातचीत करनेमें अपनी हतक समझता और धर्म या तत्त्वज्ञानकी पुस्तकोंमें उसका जरा भी मन नहीं लगता था। क्योंकि उसने अपने मनको विकसित नहीं किया था परन्तु बाहरकी सफाईपर

हीं ध्यान दिया था। इससे उसका मन बहुत तंग होगया था। बात बातमें उसका मन भड़कजाता और इस कारण वह व्यर्थ जहां दुःख न हो वहां भी दुखी हुआ करता।

यह सेठ जैसे बाहरकी सफाईमें रहगया था वैसे एक भक्त था जो अपने मनको सुधारनेमें ही रहगया परन्तु अपने शरीरको सुधारने तथा घर गृहस्थी चलानेकी ओर जरा भी ध्यान नहीं देता था। उसका मन बहुत ऊंचे दरजेका और दैवी वृत्तिवाला था इससे वह दुःखमें धारस रखता था। सबके ऊपर दया रखता, सब सरंजाम ठीक न होनेपर भी खुशीसे चला है जाता ; खाने पीनेमें अबेर सबेर होनेकी कुछ परवा न करता बेस्वादका भोजन मिलनेपर भी कुछ ख्याल न करता ; बे-आरामकी जगह सोनेको मिलनेपर भी दुखी न होता ; पहननेको अच्छा कपड़ा न मिलनेपर भी नहीं शरमाता। अपना आदर न होने पर भी उसे कुछ फिकर न होती। कोई आदमी उसके विरुद्ध बोलता तोभी वह असनख न मानता। वह तत्वज्ञानके गहरे अध्ययनमें लगा रहता परन्तु उसका शरीर देखनेसे दया आती थी। गाल पचकगये थे, आंखें धसगयी थीं, शरीरकी मुख्य मुख्य नसें बाहरसे दिखाई देती थीं ; पेट सटकगया था और शरीर सूख कर लकड़ी बनगया था। घरमें किसी चीजका ठिकाना न था। दरिद्रता चारों ओर घूम रही थी। घर द्वार गिरापड़ा था। बर्तन मैले, पुराने और टूटे फूटे थे। लड़के रोया और धूलमें लोटा करते थे। स्त्रीका स्वभाव, प्रतिष्ठा न मिलने से कड़ा होगया था। पड़ोसी लोग उस भक्त का अनादर करते। इस तरह सब बातोंमें उसको असुधीता था। सारांश यह कि बाहरकी सफाईपर वह कुछ भी ध्यान नहीं देता था। सिर्फ अपने मनको सुधारनेमें ही खा पी कर लगा रहता। इससे उसका मन सुधरा

था परन्तु शरीर निर्बल रहगया था और गृहस्थी भी विगड़ गयी थी।

बन्धुओ ! विचार कीजिये कि पहले सेठकी तरह बाहरकी सफाई तथा शरीर सुधारनेमें ही रहजाना और मनको सुधारनेकी ओर जरासी ध्यान न देना क्या उचित है ? और उस भक्तकी तरह मनको अंकुशमें रखनेमें लगेरहना और शरीरकी बलि देना तथा अपनी घर गृहस्थी बिगड़ने देना क्या उचित है ? और क्या इसका नाम धर्म है ? इसका नाम भक्ति है ? और इस तरह एक ही अंगमें रहजानेसे कल्याण हो सकता है ? कहिये कि नहीं।

इसलिये बन्धुओ ! अगर सच्ची भक्ति करना हो और सर्वशक्तिमान महान ईश्वरको रिझाना हो तो जैसे बाहरकी सफाई रखते हैं वैसे चित्तकी सफाई रखना सीखिये और जैसे शरीरको चमकानेका ध्यान रखते हैं वैसे मनको चमकानेके लिये भी परिश्रम कीजिये। शरीर और मन दोनोंके खिले बिना तथा भीतर बाहर दोनोंकी सफाई रखे बिना सच्ची भक्ति नहीं हो सकती। इसलिये सच्ची भक्ति करना हो और हृदयसे पवित्र भक्त होना हो तो इन दोनो विषयोंपर उचित ध्यान दीजिये। उचित ध्यान दीजिये।

१२२—इस जगतमें कोई काम छोटा नहीं है।

भाइयो ! एक ही किस्मके कामसे इस जगतका व्यवहार नहीं चल सकता ; इसमें किस्म किस्मके काम होते हैं। आप अपने ही घरका दृष्टान्त लीजिये। एक घरमें दस आदमी हों तो वे भी हररोज भिन्न भिन्न समय पर भिन्न भिन्न काम करते हैं।

जैसे–कोई रसोई बनाता है, कोई साग तरकारी चीरता है, कोई बाजारसे सौदा लाता है, कोई लड़का खेलाता है, कोई नौकरी करता है, कोई लड़कोंको पढ़ाता है, कोई पानी भरता है, कोई बर्तन धोता है, कोई सीता पिरोता है, कोई पुस्तक पढ़ता है, कोई बीमारके पास बैठकर उसकी सेवा सहायता करता है कोई घरका हिसाब किताब रखता है, कोई आये हुए आदमियोंसे मुलाकात बात करता है और कोई बैठे बैठे पूजा पाठ करता है, इस प्रकार एक ही घरके आदमी भी जुदे जुदे वक्तपर जुदा जुदा काम करते हैं। ऐसा न करें तो एक छोटेसे घरका व्यवहार भी न चल सके। तब विचार कीजिये कि किस्म किस्मका रोजगार धंधा किये विना जगतका व्यवहार कैसे चल सकता है? जगतका व्यवहार चलानेके लिये अनेक प्रकारका रोजगार तो चाहिये ही।

घरकी कौन कहे हमारे एक शरीरके अन्दर भी जुदी जुदी इन्द्रियोंको जुदा जुदा काम करना पड़ता है। जैसे–कान सुननेका काम करते हैं, आंखें देखनेका काम करती है, मन विचारनेका काम करता है, चमड़ा स्पर्श समझनेका काम करता है, नाक सूंघनेका काम करती है, दांत चबानेका काम करते हैं, पैर चलनेका काम करते हैं, जीभ स्वाद लेनेका तथा बोलनेका काम करती है, हाथ वस्तुओंको उठानेका काम करते हैं, अंतड़ी खुराकको पचानेका काम करती है और फेफड़ा सांस लेनेका काम करता है। इस प्रकार एक शरीरके अन्दर भी जुदी जुदी इन्द्रियां, जुदी जुदी वृत्तियां तथा जुदे जुदे अवयव जुदे जुदे काम कर रहे हैं। ऐसा किये विना शरीर टिक नहीं सकता। तब विचार कीजिये कि जुदे जुदे रोजगार धंधे किये विना जगतका व्यवहार कैसे चल सकता है? इसलिये खूब अच्छी तरह समझ लीजिये कि जगतको सुन्दर बनानेके लिये और

जगतमें ईश्वरकी महिमा बढ़ानेके लिये किस्म किस्मके रोजगार धंधेकी बहुत जरूरत है। जैसे—किसीको डाक्टर होना पसन्द है, किसीको वकील होना पसन्द है, किसीको व्यापार करना पसन्द है, किसीको पलटनमें भरती होना पसन्द है, किसीको कारीगरीका काम पसन्द है, किसीका मन खेती-बारीमें लगता है, किसीको नाव चलानेका काम पसन्द है; किसीको गाड़ी हांकनेका काम पसन्द है, किसीको नये नये आविष्कार करना पसन्द है, किसीको इंजीनियरीका काम पसन्द है, किसीको पशु पालनेका काम पसन्द है, किसीको हुकूमत चलाना पसन्द है, किसीको मुनीम गुमाश्ता होना पसन्द है, किसीको हथियार बनानेका काम पसन्द है और किसीको धर्मका उपदेश देना पसन्द है। इस तरह भिन्न भिन्न मनुष्योंको भिन्न भिन्न काम करना पड़ता है। ऐसा काम करनेके लिये कितने ही आदमियोंमें पूर्वका वैसा संस्कार होता है, कितने आदमियोंको आसपासका अनुकूल संयोग होता है, कितने आदमियोंको लाचारी दरजे करना पड़ता है और कितने आदमियोंके दिलमें हौसला होता है। इस तरह कितने ही कारणोंसे भिन्न भिन्न मनुष्योंको भिन्न भिन्न रोजगार करना पड़ता है। परन्तु उन सब मनुष्योंका उद्देश्य एक ही होता है। यानी अपने कामसे अपनी उन्नति करना और ईश्वरको प्रसन्न रखना उद्देश्य है। इसी उद्देश्यसे इस दुनियामें किस्म किस्मके काम होते हैं। इसलिये बन्धुओ! किसी कामको छोटा समझनेकी भूल मत करना और अपनेसे विभिन्न काम करनेवाले या और किस्मका रोजगार करनेवाले आदमियोंका तिरस्कार मत करना। वरंच सब आदमी अपने अपने संयोगके अनुसार भगवदिच्छासे भिन्न भिन्न काम करते हैं और अपना व्यवहार चलानेके

लिये, आगे बढ़नेके लिये तथा प्रभुको रिझानेके लिये ही करते हैं—यह समझ कर सबसे मिठास और उदारताका बर्ताव करना। जो काम करनेको पड़जाय, जो कर्त्तव्य पालनापड़े उसे ऊंचेसे ऊंचा उद्देश्य रखकर करना और दूसरे किसीको छोटा मत समझना। तब प्रभु आपका कल्याण करेगा।

१३४—परमार्थके काममें कठिनाई आपड़े तो सफलताका उपाय।

इस जगतमें जो पक्के हरिजन हैं उन्हें परमार्थका काम करना बहुत भाता है। परमार्थके काम करनेसे अपनी आत्माको एक प्रकारका स्वाभाविक सन्तोष होता है, परमार्थके काम करनेसे जिस जीवकी मदद हो उसके अन्तःकरणका आशीर्वाद मिलता है और परमार्थके काम करनेसे जिन्दगी सुधरती है तथा प्रभु प्रसन्न रहता है। इसलिये परमार्थका काम करना हरएक हरिजनका खास कर्त्तव्य है यह समझ कर बहुतेरे भक्त परमार्थके काम किया करते हैं। जैसे—कोई आदमी खराब आदमियोंको अच्छी सलाह देता है; कोई आदमी पापियोंका पाप छुड़ानेके लिये परिश्रम करता है, कोई आदमी दुखियोंको दिलासा देता है; कोई आदमी हारे हुओंको हिम्मत देता है; कोई आदमी रोगियोंका रोग मिटानेकी तदबीर करता है, कोई आदमी मरनसेजपर पड़े हुए मनुष्योंको शान्ति देनेका काम करता है; कोई आदमी मरनेके बादका शोक मिटानेका काम करता है; कोई आदमी गरीबोंको रोजी दिलानेका काम करता है; कोई आदमी विद्यार्थियोंकी मदद करता है; कोई आदमी दूसरेके

किये हुए अपराधकी माफी दूसरोंसे दिलाता है; कोई आदमी कुमार्गमें पड़े हुए जवानोंको सुमार्ग चलाता है; कोई आदमी अज्ञानी लोगोंमें ईश्वरका ज्ञान फैलाता है और कोई आदमी गाय भैंस भेड़ बकरी तथा पशु पक्षियोंकी भलाईका काम करता है। इस तरह परमार्थकी अनेक दिशाएं हैं; इन सब दिशाओंमें कोई कोई आदमी कुछ कुछ काम किया करते हैं। तोभी अक्सर बहुतेरे परमार्थी अपने काममें निराश होते हैं। जैसे—

कोई बिगड़ैल छोकरा बारंबार अच्छी सलाह देनेपर भी नहीं सुधरता। किसी ढीलढाले शिष्यको गुरु बारंबार उपदेश दे और उसपर बहुत ध्यान रखे तोभी उस शिष्यमें भक्ति नहीं आती। कोई स्वदेशाभिमानी मनुष्य अपने बन्धुओंको अच्छे रास्ते लेजाना चाहता हो तोभी लोग उसे नहीं मानते। किसी कंजूस धनीको बहुत समझाया जाय कि कुछ परमार्थ करो तोभी यह बात उसे नहीं जंचती। किसी अत्याचारी हाकिमसे अर्ज कीजाय कि आप जरा रहमदिल बनिये तोभी वह नहीं मानता। किसी कुटुम्बकलह बढ़ानेवालेसे कहें कि अपना झगड़ा आपसमें निबटालो अदालतमें जाकर मट्टी खराब मत करो तोभी यह बात उसकी समझमें नहीं आती। कोई कोई अच्छे आदमी भी कभी कभी ममतामें आजाते हैं तो उस ममताको छोड़नेके लिये बहुत कहने पर भी वे नहीं मानते। कोई सरदार अपनी बिरादरीमें सामाजिक सुधारके लिये बहुत परिश्रम करता है परन्तु उसका परिश्रम उस समय कुछ काम नहीं आता। कितनेही नास्तिकोंको प्रभुके रास्तेमें लानेके लिये कितनेही सज्जन अनेक युक्तियां लड़ाते हैं परन्तु उनपर कुछ भी असर नहीं पड़ता। इस प्रकार बहुत जगह परमार्थके काम करनेमें भी बहुत कठिनाइयां पड़ती हैं। यहांतक कि बड़ी बड़ी कठिनाइयां भोगनेपर

भी बहुधा सोचे हुए काममें सफलता नहीं होती। उस समय क्या करना चाहिये और ऐसे मौकेपर कैसे सफलता पाना चाहिये यह आप जानते हैं? अगर ठीक ठीक परमार्थ करना हो तो हर-एक परमार्थी हरिजनको इस विषयकी कुंजी जान रखना चाहिये। वह कुंजी आप जानते हैं? इसके लिये सन्त कहते हैं कि

"जब तुम्हें अपने शुभ कामोंमें सफलता न मिले तब उसके लिये परम कृपालु परमात्माकी परम प्रेमसे प्रार्थना करना। प्रार्थनाके बलसे और प्रभुकी कृपासे तुम अपने परमार्थके कामोंमें सफलता पा जाओगे। क्योंकि जो काम और किसी तरह नहीं होसकता वह प्रभुको साथ रखनेसे, प्रभुको हृदयमें रखनेसे हो सकता है। बन्धुओ! याद रखना, कि प्रभु सबसे बड़ा साझीदार है। इस साझीदारको अपने साथ रखना जिसे आजाता है उसकी प्रभुता बढ़जाती है और उसके वचनोंका जादूसा असर होता है। प्रभुकी प्रार्थना करनेसे प्रार्थी भक्तमें प्रभुके गुण आजाते हैं; प्रभुकी प्रार्थना करनेसे विश्वास बढ़ता है; प्रभुकी प्रार्थना करनेसे हृदयमें नया बल आता है; प्रभुकी प्रार्थना करनेसे अन्तःकरणमें पवित्रता आती है; प्रभुकी प्रार्थना करनेसे उतने समयतक प्रभुसे एकता होती है; प्रभुकी प्रार्थना करनेसे अहं-भाव घटता है और नम्रता आती है; प्रभुकी प्रार्थना करनेसे दृष्टि-विशाल होती है; प्रभुकी प्रार्थना करनेसे सद्बुद्धि प्राप्त होती है और प्रभुकी प्रार्थना करनेसे प्रभुकी सामर्थ्य मिलती है। परमार्थके जो और किसी तरह नहीं हो सकते वे कठिन काम भी ईश्वरको साथ रखनेसे हो सकते हैं इसमें कुछ सन्देह नहीं है। इसलिये प्रभुको अन्तःकरणमें पधराकर उसकी प्रार्थना करनेके बाद परमार्थके शुभ काम कीजिये, तब कठिन जान-पड़ते हुए कामोंमें भी आपको बहुत सहजमें सफलता मिल सकेगी

सो प्रभुको साथ रख कर परमार्थके काम कीजिये। प्रभुको साथ रख कर परमार्थके काम कीजिये।

१३५–सगे सम्बन्धियोंके मरनेका अफसोस करनेमें मत रहजाना।

इस जगतमें दैवी वृत्तिवाले बहुत आदमी हैं; उन्हें स्वभावतः पूर्वके संस्कारोंसे ही भक्ति करना आता है। परन्तु उनमें कितनेही आदमी भक्तिके नियम नहीं जानते इससे उनकी भक्ति अधूरी रहजाती है। अगर सचे भक्त होना हो तो पहले भक्तिके नियम जान लेना चाहिये।

भक्ति टिकनेके लिये मनको शान्तिमें रखनेकी जरूरत है और मनको शान्तिमें रखनेके लिये मायाका मोह घटानेकी जरूरत है। कहां कहां जीव मोहमें पड़जाता है यह जान लेना चाहिये तथा उससे मनको हटानेका उपाय भी हरिजनोंको जानलेना चाहिये।

बन्धुओ! इस जगतमें बहुत चीजें मोह उत्पन्न करनेवाली हैं परन्तु उन सबसे सगे सम्बन्धियोंकी मृत्युका प्रसङ्ग बड़ा ही दुःखदायी होता है और जब दैवयोगसे ऐसा अनिच्छित दुःखदायक प्रसङ्ग आपड़ता है तब मनुष्य अपने धीरजसे काम नहीं ले सकते। उस समय धीरज उनके पाससे खिसकजाता है; इससे वे बहुत दिलगीर होते है और हाय हाय करते हैं। यहांतक कि बहुत दिनोंतक इसीमें रहजाते हैं। ऐसा न होने देनेके लिये हरिजन कहते हैं—

कोई यात्री घोड़ेपर चढ़कर विदेश जाता हो और उसका घोड़ा

कहीं रास्तेमें मरजाय तो क्या वह यात्री वहीं बैठा रहता है? नहीं। वह आगे बढ़ता है। उसका घोड़ा चाहे जितना भव्य रहा हो, चाहे जितना कीमती रहा हो, चाहे जैसा जवान रहा हो, चाहे जैसा लाभदायक रहा हो और चाहे जैसा प्यारा रहा हो परन्तु उसके लिये यात्री वहीं बैठा नहीं रह सकता। अगर जहां घोड़ा मरा है वहीं वह मुसाफिर बैठा रहे तो इससे लाभ ही क्या है? वैसेही याद रखना कि यह दुनिया एक धर्मशाला है। धर्मशालामें जैसे भिन्न भिन्न यात्री भिन्न भिन्न समय इकट्ठे होजाते हैं वैसे हम सब यात्री इस धर्मशालामें मिलगये हैं। धर्मशालाकी भेंट कबतक रह सकती है? वहां तो थोड़े समयमें बिछुड़न होगा ही। इसमें कुछ आश्चर्य नहीं है। वैसे अपने सगे सम्बन्धियों, हितमित्रों तथा पड़ोसियोंसे, चार दिन आगे या पीछे संग छोड़ना ही पड़ेगा। इसमें कुछ सन्देह नहीं है। इसलिये ऐसे मौकेपर रोने कलपनेमें ही न पड़े रह कर आगे बढ़नेकी कोशिश करनी चाहिये।

कितनेही भक्त यह कहते हैं कि यह संसार जो है वह पंछियोंके जमा होनेके ऐसा है। एक पेड़पर तरह तरहकी चिड़ियां रातको जमा होजाती हैं और सबेरे उड़ कर जिधर तिधर चली जाती हैं। वैसाही इस जगतका व्यवहार है। कर्मसंयोगसे थोड़े समयके लिये हम सब मिलगये हैं और प्रारब्धका भोग पूरा होनेपर लाचारी दरजे अलग होजाना पड़ता है। इसलिये मनको दृढ़ रख कर जैसे बने वैसे उस समय ऐसा करना चाहिये कि शोक घटे।

कितने भक्त यह कहते हैं कि यह जगत एक चलती रेलगाड़ीके समान है। एक डब्बेमें बहुत आदमी बैठगये हैं परन्तु सबको ज्यों ज्यों अपना स्टेशन आवे त्यों त्यों उतरजाना है।

और स्टेशन आनेमें देर नहीं लगती । इसलिये रेलमें बैठे हुए मुसाफिरकी दोस्ती बहुत देरतक नहीं ठहर सकती । वैसे लेन देनके सम्बन्धसे हम भी एक कुटुम्बमें, एक घरमें, एक पड़ोसमें, एक गांवमें या एक जातिमें आगये हैं । परन्तु यह सम्बन्ध अन्त-तक नहीं टिक सकता, आगे या पीछे वारी वारी टूट ही जायगा, इसमें कुछ भी सन्देह नहीं है । हम यात्री हैं तब एक दूसरेके लिये शोक करनेमें कबतक पड़े रहेंगे ? अगर शोक करने और पिछड़े रहजानेमें बहुत समय खो दें तो इससे फायदा ही क्या है ? इन सब विषयोंको विचार कर मोह घटाना चाहिये और मनको वशमें रखना सीखना चाहिये । जब ऐसी बातोंकी बहुत चोट न लगे तभी मन शान्तिमें रह सकता है और जब मन शान्तिमें रहे तभी ज्ञान तथा भक्ति सोहाती है और तभी प्रभुकी महिमा समझमें आती है तथा तभी प्रभुका प्रेम टिक सकता है । इसलिये इस बातकी सम्हाल रखना कि सगे सम्ब-न्धियोंके मरनेपर बहुत मोह न हो और शोकमें बहुत समय न निकल जाय तथा आप जहांके तहां न पड़े रहजायं ।

१३६—ईश्वरकी अलौकिक कृपाके विषयमें ।

इस संसारमें तथा परलोकमें जो सबसे ऊंची और सबसे श्रेष्ठ वस्तु है वह ईश्वरकी कृपा है । ईश्वरकी कृपा हो तो जिस प्रकारका लाभ चाहें आपसे आप मिलजाता है । इस ब्रह्माण्डमें ऐसी कोई वस्तु नहीं है जो ईश्वरकी कृपा होनेपर भी न मिल सके । मतलब यह कि सारे ब्रह्माण्डकी चीजें ईश्वरकृपासे मिल सकती है । इसलिये ईश्वरकृपा बहुत बड़ी बात है । परन्तु याद रखना कि महान ईश्वरकी कृपाके दो भेद हैं । एक

प्रकारकी कृपाको लौकिक कृपा कहते हैं। उस लौकिक कृपासे धन मिलता है, प्रतिष्ठा मिलती है, रोजगार धंधेमें बरकत होती है, स्त्रीपुत्रादिका सुख मिलता है और शरीरकी तन्दुरुस्ती तथा लम्बी आयुका सुख मिलता है। इस प्रकार जिस कृपासे दुनियाके बाहरी सुख मिलें वह लौकिक कृपा कहलाती है। जिस कृपासे मनुष्योंमें सद्गुण आवें और उनका मन प्रभुकी ओर झुके वह अलौकिक कृपा कहलाती है। उसी अलौकिक कृपाके विषयमें हम यहां कहना चाहते हैं। लौकिक कृपा बहुत छोटीसी बात है; अलौकिक कृपा ही महत्त्वकी बात है और इसीमें सच्चा कल्याण है। इसलिये ईश्वरकी अलौकिक कृपा सम्बन्धी बातें जहांतक बने जानलेना चाहिये।

बन्धुओ! महात्मा लोग अलौकिक कृपा किसको कहते हैं यह आप जानते हैं? अलौकिक कृपा माने अंतरचक्षु, अलौकिक कृपा माने दिव्य दृष्टि और अलौकिक कृपा माने ईश्वरी ज्ञान तथा ईश्वरी प्रेम। ऐसी अनमोल वस्तुयें ईश्वरकी ओरसे मिलनेको सन्त अलौकिक कृपा कहते हैं। यह कृपा दयालु प्रभु सबके ऊपर उतारता है परन्तु बहुतही थोड़े आदमी उस कृपाको पकड़ते हैं। बाकी बहुत आदमी तो इस कृपाको व्यर्थ ही गंवादेते हैं। अब यह जानलेना चाहिये कि जिन मनुष्योंपर ईश्वरकी अलौकिक कृपा उतरती है और जो हरिजन इस कृपाको पकड़ते हैं उनमें क्या क्या फेर बदल होता है। इसके लिये सन्त यह कहते हैं कि—

जिनके ऊपर ईश्वरकी कृपा उतरती है वे मनुष्य निर्बल हों तो बलवान हो जाते हैं; वे बिना बुद्धिके हों तोभी बुद्धिशाली बन जाते हैं; वे कंजूस हों तो उदार बनजाते हैं; वे पापी हों तो पुण्यात्मा बनजाते हैं; वे क्रोधी हों तो शान्त बनजाते हैं; वे

किसीको क्षमा न कर सकते हों तो क्षमा करनेवाले बनजाते हैं और वे नास्तिक हों तो बहुत आस्तिक बनजाते हैं। इसतरह गति बदलजाती है और नये विचारके आदमी बनजाते हैं। यों जो फेरबदल होता है उसको सन्त ईश्वरकी अलौकिक कृपा कहते हैं। इसके सिवा जिनपर ईश्वरकी अलौकिक कृपा उतरती है उनमें और भी बहुत कुछ फेरबदल होता है। जैसे—पहले ईश्वरभजनसे उनका जी ऊबता हो तो अब आनन्द आता है। पहले वे प्रभुप्रेमी भक्तोंको ढोंगी समझते रहे हों तो अब उन्हें अपना सच्चा सगा समझते हैं और दुनियामें उन्हींको सबसे बढ़कर प्रतिष्ठायोग्य समझते हैं। पहले धर्मके जो काम दूसरोंकी देखादेखी या किसी लोभसे करते रहे हो तो अब जो कुछ करते हैं वह विश्वाससे करते हैं, निष्कामभावसे करते हैं और प्रभुके अर्थ करते हैं। इस प्रकारका फेरबदल होजानेको हम ईश्वर-कृपा कहते हैं।

जब ईश्वरकृपा उतरती है तब हरिजनोंमें इस प्रकारका फेर-बदल होजाता है। परन्तु उस कृपाको संचय करना न आवे, उस कृपाको पकड़ रखना न आवे और उस कृपासे लाभ उठाना न आवे तो वह कृपा लौट आती है। ऐसा न होने देनेके लिये सन्त कहते हैं कि प्रभुकृपाको जगाये रखनेका मुख्य उपाय है—सदा सत्संग करना, भजन करना, कीर्तन करना, व्रत करना, धर्मके नियम पालना, परमार्थके काम करना और यह सब करनेमें स्वार्थको आगे न रखना वरंच स्वार्थ त्याग कर सब कुछ प्रभुके प्रीत्यर्थ करना। ऐसा करना आवे तो प्रभुकृपा जगी रहती है और दिन दिन बढ़तीजाती है। इस प्रकार अलौकिक ईश्वरी कृपाको बढ़ाना ही हरिजनोंका मुख्य काम है। उसे बढ़ानेका उपाय करना चाहिये।

कितने आदमी यह पूछते हैं कि जिन हरिजनोंपर ईश्वरकी कृपा होती है उनके भीतर पाप होता है कि नहीं ? इसके उत्तरमें जानना चाहिये कि जिन मनुष्योंपर ऐसी कृपा नहीं है उनमें बहुत ज्यादा पाप होता है और जिनपर कृपा उतरती है उनका पाप दिन दिन घटताजाता है। यद्यपि चित्तमें मौजूद बहुत छोटा पाप एकदम नहीं जाता—यह जाता रहे तो भक्तका काम बहुत ही बढ़जाय और बहुत ही ऊंचे दरजे चढ़जाय परन्तु यह सब धीरे धीरे होता है। उससे पहले चोरी, व्यभिचार, विश्वासघात, जीवहत्या आदि बड़े पाप न हों और भजन ध्यान तथा दान हुआ करे तोभी ईश्वरकृपा जाती नहीं रहती। मतलब यह कि चित्तमें छोटे छोटे पाप होनेपर भी ईश्वरकी अलौकिक कृपा रह सकती है। ऐसे पाप एकदम नहीं जाते। उन्हें निकालनेके लिये बहुत बड़ी लड़ाई करनी पड़ती है। इसलिये इस बातका खास ख्याल रखना चाहिये कि किसी तरहका बड़ा पाप न होजाय।

किसी पेड़को अच्छा माली खूब सींचा करे तोभी उसमें फल न लगे तो माली उस पेड़को निकम्मा समझ कर सींचना बंद कर देता है। वैसेही जिस मनुष्यपर दया रख कर प्रभु अपनी कृपा उतारे वह उससे लाभ न उठावे तो प्रभु उसके पाससे अपनी कृपा खींच लेता है। प्रभुको अपनी कृपा वापस लेनीपड़े तो यह हमारी कितनी बड़ी नालायकी है ? इसका विचार हमें करना चाहिये। ऐसी भूल न होने देनेके लिये ऐसा उपाय करना चाहिये कि जिससे ईश्वरकृपा बनी रहे तथा बढ़तीजाय। जगतकी सब वस्तुओंसे ईश्वरकृपाकी कीमत कहीं बढ़कर है और उससे धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष—चारो पदार्थ मिल सकते हैं। इसलिये हे हरिजनो ! ऐसा कीजिये कि ईश्वरकी अलौकिक कृपा जागे।

१३७-जुदे जुदे लोगोंको जुदे जुदे काम करने पड़ते हैं; यह देखकर ऐसा न सोचना चाहिये कि हम ऊंचे हैं और दूसरे नीच हैं।

इस जगतमें अनेक प्रकारके मनुष्य हैं। उनकी बुद्धि जुदी जुदी होती है तथा उनके आसपासके संयोग भी भिन्न भिन्न प्रकारके होते हैं। इससे मनुष्योंको आगे बढ़नेके लिये दुनियांमें सैकड़ों किस्मके रोजगार धंधे करनेकी जरूरत पड़ती है। जैसे-कोई आदमी वकालका काम करता है, कोई आदमी घड़ी बनानेका काम करता है, कोई खेती करता है, कोई व्यापार करता है, कोई पशु पालता है, कोई बढ़ई होता है, कोई लुहार होता है, कोई मोची होता है, कोई धोबी होता है, कोई झाड़ू देनेका काम करता है, कोई गाड़ी हांकनेका काम करता है कोई सिपहगरी करता है, कोई नाव या जहाज चलाता है, कोई खान खोदता है, कोई बिजलीकी मदद लेता है, कोई धर्मकी क्रियाएं कराता है, कोई खेल तमाशा दिखाता है, कोई नौकरी करता है, कोई पढ़ाता है, कोई रसोई बनाता है और कोई नये नये आविष्कार करता है। इस तरह जिस आदमीको जिस किस्मका सुबीता होता है, जैसा वंशपरम्पराका संस्कार होता है तथा जिस प्रकारकी स्वाभाविक रुचि होती है उसके अनुसार उसको उस किस्मका काम करना पड़ता है। परन्तु सब काम अपना व्यवहार अच्छी तरह चलानेके लिये, अपना कर्तव्य पालनेके लिये, अपनी आत्माके कल्याणके लिये तथा सर्वशक्तिमान परमात्माको प्रसन्न करनेके लिये किये जाते हैं। इसलिये न्यायके रास्ते, ईमानदारीसे, शुद्धतापूर्वक जो काम किये जायं उनमें से किसीको छोटा मत

समझना तथा उसके करनेवाले मनुष्यको छोटा मत समझना क्योंकि ईश्वरके राज्यमें और ईश्वरकी सृष्टिमें जो कोई काम योग्य रीतिसे हो वह हलका नहीं है। जैसे—अपने शरीरको ही देखिये तो मालूम पड़ेगा कि आँखें देखनेका काम करती हैं। जीभ बोलनेका और स्वाद समझनेका काम करती है, कान सुननेका काम करते हैं, दांत चबानेका काम करते हैं, फेफड़ा सांस लेनेका काम करता है, मगज विचारनेका काम करता है, ज्ञान तंतु संदेशा पहुंचानेका काम करते हैं, चमड़ा स्पर्श समझनेका काम करता है, नाक सूंघनेका काम करती है, पैर चलनेका काम करते हैं, हाथ चीजें उठानेका काम करते हैं, गला बोलनेका काम देता है और मन संकल्प विकल्प करनेका काम करता है। ये सब काम एकही शरीरके भिन्न भिन्न अवयव करते हैं। क्योंकि इन सब कामोंकी हमें जरूरत है। अब अगर आंख कहे कि मेराही काम सबसे अच्छा है; फेफड़ा कहे कि मेराही काम अच्छा है, अंतड़ी कहे कि मैंही ऊंची हूं और तुम सब नीच हो तो क्या यह उचित है? नहीं। वैसेही इस संसारमें किस्म किस्मके रोजगार धंधेकी जरूरत हम सबको है। इसलिये हमारे जो भाईबन्द हमसे भिन्न प्रकारके रोजगार धंधे करते हों उनको छोटा न समझना चाहिये, उनका तिरस्कार न करना चाहिये और अपनेको ऊंचा और उन्हें नीच समझनेके झूठे अभिमानमें न पड़े रहना चाहिये। सच्चे हरिजनोंको तो यही समझना चाहिये कि सब आदमी किस्मकिस्मके कामोंकी मार्फत प्रभुकीही पूजा कररहे हैं और उन्हें जैसा संयोग मिला है वैसा काम कररहे हैं। परन्तु वे सब एकही पिताके पुत्र हैं और सब एकही प्रभुको रिझानेके लिये अपना अपना कर्त्तव्य पूरा कररहे हैं। इसलिये सबके साथ प्रेमभावसे और ईश्वरी

स्नेहसे बर्ताव करना चाहिये । यह समझ कर अच्छाई या बड़प्पनका अभिमान मत करना बरंच सबसे भलाई करना और सबका सबकी योग्यतानुसार आदर करना सीखना । यही हमारी प्रार्थना है ।

१३८-लोगोंको पाप और नरकके दुःख बताकर भक्त बनानेकी अपेक्षा ईश्वरके गुण और मोक्षका सुख बताकर भगवानकी ओर लेजाना अधिक अच्छा है ।

बन्धुओ ! मनुष्योंके अन्दर प्रभुका प्रेम जगाकर उन्हें भक्त बनानेके लिये दो तरहके उपाय हैं । कितनेही भक्त सन्त, हरिजन, कथा बाचनेवाले, पण्डित तथा साधु भय बताकर जीवोंको बिगाड़ते हैं । जैसे-वे कहते हैं-

यह देह क्षणभंगुर है । अजी तुम किसके मोहमें पड़े हो ? इस देहको गिद्ध सियार खायेंगे, यह देह मसानमें जलादी जायगी । जानते हो नरक क्या है ? नरककी आग बड़ी भयंकर है और यमको जराभी दया नहीं आती । यमका स्वरूप तुमने देखा है ? उसका चेहरा कैसा विकराल होता है, उसकी आंखोंमें कैसा क्रोध होता है, उसके हृदयमें कैसी निर्दयता होती है, मनुष्योंको कष्ट देनेके लिये वह कितनी तरहकी सजा करता है और वह कैसा भयावना होता है यह तुम जानते हो ? अजी ! अभी तुमने कालको कहां देखा । काल ! अरे बापरे बाप ! उसका नाम मत लो । काल सारे संसारको खाजानेवाला है ; काल हमारे

प्यारोंको खाजानेवाला है; काल हमारे बालकों और माबापको अपने पैर तले कुचल डालनेवाला है, जगतमें ऐसी कोई वस्तु नहीं है जो कालके गालसे बच सके। काल सबको स्वाहा करजाता है और सबको भस्म कर डालता है। ऐसे कालसे तुम क्यो नहीं डरते ? क्या जाने किस घड़ी तुम्हें उठा ले जायगा इसका कुछ ठिकाना है ? ऐ गाफिल लोगो ! तुम्हें सुखसे नींद कैसे आती है ? तुम्हारे सिर पर मौत नाचती है तुम्हें खाना कैसे रुचता है ? तुम्हारा यहां कुछभी नहीं है, तुम्हारे पापके लिये यम तुम्हारे सिरकी ओर ताकरहा है और फिरभी तुम मौज शौक ढूंढते हो ! कैसी लज्जाकी बात है ! हाय ! हाय ! तुम्हारी आंखें कब उघड़ेंगी ? इस प्रकार भयंकर वर्णन करके तथा चित्र दिखाकर लोगोंको डराते हैं और डराकर लोगोंको भगवानकी ओर खींचते है। भक्त बनानेका एक उपाय यह है। दूसरा उपाय इससे उल्टा है। उसके माननेवाले ज्ञानी महात्मा बड़े शान्त होते हैं, वस्तुको समझे रहते हैं और प्रभुप्रेममें मग्न रहते हैं। उन्हें काला पट नहीं सुहाता। क्योंकि उनकी जिन्दगी आनन्दमयी होती है और वे इस किसमका अध्ययन किये रहते हैं कि जगतमें हर जगह उन्हें कुछ न कुछ अच्छा ही दिखाता है, इससे वे बहुत ऊंचे आनन्दकी बातें ही करते है। जैसे—वे कहते हैं—

— भाइयो ! आत्मा क्या है जानते हो ? आत्मा अजर है, आत्मा अमर है, आत्मा बिना शोक मोहकी है, आत्मा न बढ़ती है न घटती है, आत्मा आनन्दरूप है, आत्मा प्रेमस्वरूप है, आत्मा ज्ञानस्वरूप है और आत्मा परमात्मासे सीधा सम्बन्ध रखनेवाली है। ऐसी आत्मा तुम हो। अब बताओ कि इसमें दुःख कहां है ? अजी ! तुम दुखी हो ? भला ऐसी पवित्र आत्मा तुममें है तो भी तुम दुखी हो ? यह कैसे ? बन्धुओ ! प्रभुकी कृपा तो देखो। पानी और पवन किसके लिये है ? तुम्हारे लिये। आग

और बिजली किसके लिये है? सुन्दर मीठे फल किसके लिये हैं? अन्तःकरणमें प्रेमकी रुचि किसके लिये है? सब तुम्हारे लिये। अब देखो कि जो प्रभु पापी मनुष्यके लिये भी, विकारवाले मनुष्यके लिये भी, धर्म न पालनेवाले मनुष्यके लिये भी ऐसा सुन्दर जगत बनाता है—अजी! ऐसे भूलभरे मनुष्योंके लिये भी जिसने चन्द्र सूर्य बनाये हैं; ऐसे अल्पायु मनुष्योंके लिये भी जिसने सोना हीरा और माणिक बनाये हैं और ऐसी क्षणभंगुर देहके लिये भी जिसने अनेक प्रकारके पदार्थोंमें अनेक प्रकारका स्वाद दिया है उस परम कृपालु परमात्माने अपने भक्तोंके लिये स्वर्ग और मोक्षधाममें क्या क्या आनन्दकी चीजें बनायी होंगी! जरा खयाल तो करो। क्या वह आनन्द भोगनेको तुम्हारा जी नहीं करता? बन्धुओ! याद रखना कि यह आनन्द तुम्हारे ही लिये है। क्योंकि तुम प्रभुके बालक हो, तुम प्रभुके अंश हो और व्यापक रूपसे प्रभु स्वयं अबभी तुम्हारे अन्दर है। तुम अगर चाहो और थोड़ी अधिक पवित्रता रखो तथा हृदयमें जरा गहरे उतरो तो अवश्य तुम उस आनन्दके अधिकारी हो सकते हो। भाइयो! मोक्षका आनन्द तुम्हारे ही लिये है और प्रभु तुम्हारी बाट देखरहा है। इसके लिये प्रभुने शास्त्रकी मार्फत तुमसे प्रतिज्ञा की है, सन्तोंकी मार्फत प्रभु तुम्हें स्वर्गका न्योता भेजता है और तुम थोड़ी दूर आगे आगे चलो तो, जैसे छोटे बालकको चलते देख कर उसकी मा झट गोदमें उठालेती है वैसे, तुम्हें उठालेनेको प्रभु तय्यार है। इसलिये भाइयो! प्रभुकी महिमा समझो; मोक्षके सुखकी ओर देखो और ऐसा आनन्द भोगना हो तो भक्तोंके कदम बकदम चलनेकी कृपा करो। भाइयो! तुम अभी चाहे न समझो परन्तु याद रखना कि यह अमृतका प्याला कुछ निराला ही है।

इसलिये आओ, आओ, थोड़ी देर उस समर्थ पिताका उपकार मान लें। यह कह कर वे भक्त अहलादिलसे प्रार्थना करने लगते हैं। इससे लोगोंपर जादूसा असर होता है और उस समय बहुत आदमियोंका हृदय पिघलजाता है। भाइयो ! इस प्रकार उपदेश देनेकी दो रीतियां है, उसमें भय दिखाकर भक्ति करानेकी अपेक्षा प्रभुकी महिमा समझाकर भक्ति कराना अधिक उत्तम है। यह बात और अच्छी तरह समझानेके लिये एक सन्त कहते थे कि दो भिखमंगे भीख मांगने निकले हैं। एक भिखमंगा अपने हाथमें सारंगी लेकर छप्पनके अकालका दुःख गाता है। बताता है कि उस समय पशु घास बिना तड़प तड़प कर कैसे मरगये; मनुष्य गांव छोड़ छोड़ कर कैसे भागगये; खेत कैसे उजाड़ और वीरानसे पड़े थे; चोर डाकुओंका कैसा उपद्रव था और भूखके मारे बहुत आदमियोंमें कितनी नीचता आगयी थी। इसके सिवा अकालपीड़ितोंको काम देनेके लिये परोपकारी सज्जनोंकी ओरसे जो "रिलीफवर्क" खुले थे वहां मजदूरी करनेवाले गरीबोंमें हैजेका कैसा जोर था यह बताता है। फिर कहीं नाव या जहाज डूबगया हो तो उसका चित्र खींचता है और लोगोंका मन पिघलाकर उनकी आंखोंसे आंसू बहाकर भीख मांगता है। दूसरा भिखमंगा अपना तम्बूरा लेकर सूरदास, तुलसीदास आदि महात्माओंके चरित्रका आनन्ददायक वर्णन करता है तथा राजा विक्रम, भोज, हरिश्चन्द्र आदिके सद्गुण और परोपकारका वर्णन करता है और कालिदास पण्डित तथा बीरबलकी चतुराईकी बातोंसे लोगोंको हंसाकर भीख मांगता है। इन दोनों भिखारियोंमें जो लोगोंको रिझाकर पैसा लेता है वह दुःख वर्णन करके पैसा मांगनेवाले भिखारीसे अच्छा गिनाजाता है। वैसे

ही जो पण्डित, कथा बाचनेवाले, कवि या भक्त नरकका कष्ट बताकर तथा पापका भय दिखाकर लोगोंको भक्त बनानेकी कोशिश करता है उससे वह अधिक श्रेष्ठ है जो प्रभुकी महिमा तथा मोक्षका सुख समझाकर मनुष्योंको भक्त बनानेकी चेष्टा करता है। इसलिये हे उपदेशक-भाइयो तथा संतो! जैसे बने वैसे ऐसा उपदेश दीजिये जिससे आत्माका बल समझमें आवे, प्रभुकी महिमा समझमें आवे, धर्मका लाभ समझमें आवे, जीवनका उद्देश्य समझमें आवे और मोक्षका सुख समझमें आवे तथा उससे मनुष्य अपनी खुशीसे भक्त हों। यही हमारी विनती है और यही महात्माओंकी सलाह है।

१३९—महाराजजी! हमारे अन्दरका पाप नहीं जाता। इसके लिये हम क्या करें?

बहुतेरे हरिजनोंको भक्त होना बहुत पसन्द है। परन्तु भक्त होनेके लिये सबसे जरूरी और मुख्य बात यह है कि पापको छोड़े। जबतक हृदयका पाप रहे तबतक सच्ची भक्ति नहीं हो सकती; जबतक हृदयमें पाप हो तबतक उत्तम प्रकारका महान भक्त नहीं हो सकते और जबतक भीतर पाप हो तबतक हृदयमें प्रभु नहीं पधारता। इसलिये पापको छोड़ना सबसे पहली बात है, बहुत आदमी भक्त होना चाहते हैं परन्तु पापको नहीं छोड़ सकते। वे पापको छोड़नेके लिये बहुत बहुत परिश्रम करते हैं तोभी जाने बेजाने कोईनकोई पाप उनसे होजाता है। इससे वे अपने मनमें बहुत झीखाकरते हैं। वे सोचते हैं कि हम भक्त होना चाहते हैं और इतनी मिहनत करना चाहते

हैं तोभी हमसे पाप क्यों होजाता है। उस समय वे बहुत छटपटाते और मनहीमन हैरान हुआ करते हैं तथापि मनको अक्सर रोक नहीं सकते, इससे छोटे छोटे पाप होजाते हैं। उससे छूटने और शुद्ध होनेके लिये वे अपने गुरु या किसी महात्माके पास जाते हैं और कहते हैं कि महाराजजी! हमारे हृदयसे पाप नहीं जाता, इसके लिये हम क्या करें? अनुभवी सन्त कहते हैं कि—

'भाई! छोटा बालक एकदम सीढ़ीपर नहीं चढ़ सकता, बड़ी मिहनतसे बहुत समयमें तथा बहुत बार डिलमिलानेके बाद मुश्किलसे एक एक सीढ़ी चढ़ना सीखता है। वैसेही याद रखना कि पाप कुछ तुरत फुरत जाता नहीं रहता वरंच जब उसके साथ खूब लड़ाई कीजाय और सच्चा ज्ञान हो तथा हृदयसे सच्ची छटपटी हो तभी धीरे धीरे पाप जाता है।'

पौधा लगानेसे तुरत ही उसमे फल नहीं आजाता, जब बहुत समयतक—उसे पानीसे सींचते हैं, खाद देते हैं और रखवारी करते हैं तब समय आनेपर फल मिलता है। वैसेही जब भक्ति करने लगें उसी समय, झटपट सब तरहके पाप नष्ट नहीं होजाते, वरंच ज्यो ज्यों अधिक भक्ति होती है; ज्यों ज्यों धर्मका नियम अधिक पालाजाता है, ज्यों ज्यों ईश्वरी ज्ञान बढ़ताजाता है और ज्यों ज्यों नरकके दुःख तथा स्वर्गसुखके विचार बढ़तेजाते हैं तथा ज्यों ज्यों सर्वशक्तिमान महान ईश्वरके निकट पहुंचतेजाते है त्यों त्यों पाप नष्ट होताजाता है। याद रहे कि यह सब एकदम नहीं होजाता, धीरे धीरे होता है। इसलिये भक्ति करनेपर भी अगर तुरत ही पाप न जाय तो उससे निराश मत होना और हार मत जाना; वरंच सच्चे प्रेमसे, पूरे विश्वाससे और आत्मिक बलसे भक्ति करते-

जाना तथा सच्चा ज्ञान प्राप्त करतेजाना और संतोंके संगमें पड़े रहना। तब धीरे धीरे सब तरहके पाप घटजायँगे, अनेक प्रकारके पाप नष्ट होजायंगे और जो दुर्गुण हृदयमें घर बनाये बैठा है और जमगया है उसका जोरभी घट जायगा तथा आगेजाकर स्वभावमें घुसा हुआ ऐसा कड़ा पाप भी नष्ट होजायगा। इसलिये भाइयो और बहनो! उतावले मत होना। भक्तिमें लगे रहना। भक्तिमें लगे रहना। तब जैसे सूर्यके पास अंधकार नहीं रह सकता तथा जैसे सिंहकी गुफामें स्यार नहीं जा सकता वैसे सच्ची भक्तिके पास पाप नहीं रह सकेगा। इसलिये भक्तिमें लगे रहना। भक्तिमें लगे रहना।

१४०-सब बातोंमें कर्त्ता हर्ता स्वयं भगवान है तोभी कुछ काम वह हमारे ही हाथ कराना चाहता है।

प्रभु बीजमें से अनेक फल देना चाहता है परन्तु उस बीजको बोने, सींचने, खाद देने तथा रखवारी करनेकी मिहनत हमसे ही कराना चाहता है। प्रभु हमें पानी देना चाहता है इससे उसने पृथ्वीके भीतर जगह जगह पानी भर रखा है; परन्तु बावली या कुआ खोदनेका काम उसने हमारे ही ऊपर छोड़ा है। प्रभु बहुत आदमियोंको धन देना चाहता है परन्तु धन पानेके लिये जो जो उपाय तथा रोजगार धंधा करना उचित है वह मनुष्योंको ही करना पड़ता है। प्रभु हमारा रोग मिटाना चाहता है, इसके लिये उसने औषधियोंमें रोग मिटानेका गुण भरा है तथा उसके लिये मनुष्योंको ऐसी बुद्धि दी है कि वे रोगको पहचान सकें

तथा औषधिका गुण जान सकें । इसलिये औषधि पहचानने तथा रोग परखनेकी मिहनत तो मनुष्योंको ही करनी चाहिये । प्रभु हमारे शत्रुओंका नाश करना चाहता है और हमें उनपर विजय दिलाना चाहता है परन्तु शत्रुओंको जीतनेके लिये जो जो युक्तियां करनी चाहियें तथा जो जो हथियार जुटाने चाहियें उनके लिये मिहनत तो हमें ही करनी चाहिये । प्रभु हमें सोना, चांदी, हीरा, माणिक, मोती आदि देना चाहता है, इसके लिये उसने जगतमें जगह जगह ये वस्तुएं तय्यार रखी हैं परन्तु उन्हें निकालनेका परिश्रम तो हमें ही करना चाहिये ।

प्रभु हमें अपार बल देना चाहता है, इससे उसने पानीमें, पवनमें, आगमें, भाफमें, बिजलीमें, आवाजमें और ऐसी अनेक चीजोंमें अनन्त सामर्थ्य दी है । उनमेंसे उस बलको ढूँढ़कर उसकी योग्य व्यवस्था करनेका काम तो मनुष्योंको ही करना चाहिये । तभी यह बल काममें आ सकता है । वैसेही याद रखना कि परम कृपालु पवित्र पिता परमात्मा हमारा उद्धार करना चाहता है और हमें मोक्षधामका सुख देना चाहता है परन्तु उसे प्राप्त करनेके लिये, धर्मके नियम जानने तथा पालनेकी मिहनत तो हमें ही करनी चाहिये । इसके विना आपसे आप यह सब नहीं होता ।

भाइयो ! इस तरह बहुतेरे कामोंमें तथा बहुतेरी वस्तुओंमें और बहुतेरी घटनाओंमें परम कृपालु परमात्माने अनेक प्रकारकी खूबियां भर रखी हैं । परन्तु इन खूबियोंको ढूंढ़नेमें वह हमें निमित्तमात्र बनाना चाहता है और ऐसे शुभ कामोंमें निमित्त बननेके बदलेमें वह हमें बड़ी प्रतिष्ठा, बड़ा इनाम देना चाहता है । इसलिये हमें ऐसे शुभ कामोंमें निमित्त बनना चाहिये और उसने हमारे लिये जो जो तय्यारियां कर रखी हैं उनसे लाभ

उठाना चाहिये । हे हरिजनो ! याद रखना कि हमारा प्रभु सर्वशक्तिमान है और सब तरहसे सम्पूर्ण तथा समर्थ है । तोभी अपनी दयाके कारण कोई कोई काम वह हमसे कराना चाहता है और उसमें निमित्त होना महाभाग्यकी बात है । सो भाइयो ! प्रभु जो हमसे कराना चाहे वह हमें खुशीसे करना चाहिये और यह समझ कर करना चाहिये कि प्रभु सब कुछ कर सकता है तोभी जान-बूझकर कुछ हमसे कराना चाहता है। यह समझकर उसकी इच्छानुसार काम कीजिये । उसकी इच्छानुसार काम कीजिये ।

१४१–जो मनुष्य शक्ति देनेपर भी परमार्थ नहीं करता समझना कि वह पाप करता है ।

बहुत आदमी ऐसे हैं जिनके पास ईश्वरकृपासे अनेक प्रकारके साधन हैं और अनेक प्रकारका सुबीता है तोभी वे अपनी हैसियतके अनुसार परमार्थके काम नहीं करते और मनमें यह सोचते हैं कि हम दूसरोंकी पंचायतमें क्यों पड़ें ? अपना घर सम्हालें इतनाही बहुत है। किसीसे कुछ कहने सुनने जायँ और उसमें कुछ बुरा भला हो तो उल्टे मुफ्तकी बदनामी है । इसकी अपेक्षा किसीकी पंचायतमें न पड़ना और सीधे रास्ते चले जाना ही अच्छा है । प्रभु अपना धन भोगने दें यही बहुत है । हमें दूसरेके आदर मानसे कुछ मतलब नहीं है । जिसको आदर मान दरकार हो वह सिरपच्ची भलेही करे और झंझट वेसाहे । बेकारण सुखके जीवको दुःखमें क्यों डालें ? दुनिया हमसे सुधरनेवाली थोड़े है ? सबको अपना अपना कर्म-

भोग भोगना है उसमें हम क्या करें ? यह सोच कर बहुत आदमी साधन रहते हुए भी अपनी शक्तिको काममें नहीं लगाते। परन्तु शास्त्रका तथा महात्माओंका यह उपदेश है कि जो आदमी अपनी शक्तिसे पूरा पूरा काम न ले उसको पाप लगता है। जैसे—

कोई दो आदमी लड़ते हों और पासमें उन्हें कोई छुड़ा-सकनेवाला मौजूद हो तोभी उन्हें न छुड़ावे और लड़ने दे तो उस आदमीको पाप लगता है। उसने ईश्वरकी दी हुई अमूल्य शक्तिसे जरूरतके वक्त काम नहीं लिया और जो पुण्य किया जा सकता है वह नहीं किया। इससे उसको पाप लगता है।

दो आदमियोंमें कुछ झंझट चलरही हो और उनमें समझौता करसकनेवाला कोई आदमी वहां मौजूद हो मगर वह ऐसा न करे और उनकी कलह बढ़ने दे तो उस आदमीको पाप लगता है।

जो आदमी पार्लिमेण्टका, लाटसभाका या म्यूनीसिपल कमेटीका मेम्बर होकर उसमें कुछ सुधार कर सकता हो परन्तु मेम्बर न बने और अपने सुख विलासके कारण या छोटी छोटी अड़चलोंके कारण अपने घरके कोनेमें पड़ा रहे तो उसे पाप लगता है। परम कृपालु परमात्माने कृपा करके हमें जो जो शक्तियां दी है तथा हममें जो जो सद्गुण भरे हैं वे प्रभुके नामपर अपने भाइयोंकी मदद करनेके लिये हैं। हम उनसे काम न लें तो हमें पाप लगता है। किसी कुटुम्बमें कोई आदमी दुखी होता हो और उसका दुःख हमारी सिफारिशसे, हमारी सलाहसे, हमारे उपदेशसे या हमारी मददसे मिट सकता हो तोभी हम उसका दुःख न मिटावें या मिटानेकी कोशिश न करें तो हमें पाप लगता है।

दो गधे, दो बछड़े, दो कुत्ते दो या बिल्लियां लड़ती हों और हम

उन्हें छुड़ा सकते हैं तोभी न छुड़ावें तो हमें पाप लगता है ।

कोई आदमी अपनी जातिका अगुआ होकर सुधार कर सकता हो तोभी कदराकर या निन्दाके डरसे या कुछ खर्च पड़नेके अन्देशेसे अपनी जातिका अगुआ न हो और शक्तिभर सुधार न करे तो उस मनुष्यको पाप लगता है ।

अपने कुटुम्बमें, अपने सगे सम्बन्धियोंमें पड़ोसियोंमें या अपनी जाति या गांवमें कोई लड़का पढ़ने योग्य हो और हम उसकी मदद करनेकी शक्ति रखते हों तोभी ऐन वक्तपर उसकी मदद न करें तो पाप लगता है ।

हमारे इर्द गिर्दके कितने कुटुम्बोमें कितनी स्त्रियां छोटी छोटी भूलोंके कारण बहुत दुखी हुआ करती हैं । उन भूलोंको हम समझते हों और उनके सुधारनेमें उनकी मदद कर सकते हों तथा हमारी मददसे उनका दुःख दूर हो सकता हो तोभी हम ऐसे वक्तपर उनकी मदद न करें तो हमें पाप लगता है । अक्सर बहुत लोगोंमें झूठी बातें तथा झूठे वहम चला करते हैं । वे सब किसी चतुर आदमीके भाषण या लेखसे दूर होसकते हों तोभी वह आदमी ऐसा न करे तो उसे पाप लगता है । अज्ञान श्रेणीके बहुत लोगोंमें धर्मसम्बन्धी कितनी उल्टी सीधी समझ होती है और वह कुछ गुरुओंके हुक्म या उपदेशसे दूर हो सकती है तोभी, अगर उनके गुरु सामर्थ्य रहते हुए भी वैसा काम न करें और ऐसे लोगोंको न सुधारें तो उनको पाप लगता है ।

बन्धुओ ! इसी तरह दूसरी बातोंमें समझ लेना और सब देख सुन कर विचार करना कि परमकृपालु परमात्माने हमें जो शक्ति दी है वह काममें न आकर निकम्मी तो नहीं पड़ी रहती । प्रभुने शक्ति दी हो और शक्तिको लगानेका मौका दिया हो तोभी हम उस शक्तिको काममें क्यों नहीं लगाते ?

वन्धुओ ! यह बात नहीं है कि ऐसा मौका कभी ही कभी मिलता है और किसी ही किसीको मिलता है। सब मनुष्योंको बारंबार ऐसा मौका मिलता है। क्योंकि—सर्वशक्तिमान अनन्त ब्रह्माण्डके नाथने सब जीवोंमें अपना चैतन्य दिया है और सब जीवोंमें अपना सद्गुण तथा अपनी शक्ति दी है और उनमें भी खास कर मनुष्योंको तो बहुत ही ज्यादा अपनी शक्ति प्रभुने दी है। इसलिये मनुष्य अपनी अपनी हैसियतके अनुसार बहुत कुछ कर सकते हैं। फिरभी ईश्वरी शक्तिसे, ईश्वरी गुणोंसे लाभ न उठायाजाय तो पाप लगनेमें आश्चर्य ही क्या है ? ऐसे पापमें न पड़ेरहनेके लिये भाइयो और बहनो ! जैसे बने वैसे अपनी शक्तियोंका सदुपयोग करना और प्रभुके अर्थ अपने वन्धुओंकी मदद करनेमें अपनी शक्ति तथा अपने गुणोंको लगाना। यही हमारी सलाह है और यही धर्मका मूल है यह पक्का समझना।

१४२—कुटुम्बसुख पानेका उपाय (१)

जरा विचार तो कीजिये कि—गृहस्थी सम्हालना आये विना कोई आदमी गृहस्थी नबाध बैठे तो उसका काम कैसा पूरा पड़ेगा ?

कोई आदमी विना वैद्यक जाने वैद्यका काम करने लगे तो उसका क्या फल होगा ? उल्टे बीमारका रोग और बढ़जायगा। व्यापार विना जाने जो आदमी व्यापार करने लगे उसका क्या हाल होगा ? अन्तमें उसका दिवाला ही निकलेगा। हिसाब जाने विना जो आदमी हिसाब लगाने लगे उसका हिसाब कैसे ठीक होगा ? उसमें जरूर बहुत गलती होगी। रसोई बनाना सीखे विना जो

आदमी रसोई बनाने बैठे उसकी रसोईमें क्या स्वाद होगा ? वह आधी कच्ची आधी पक्की, जली और कमोबेश नमक मिर्च-वाली होगी। ऐसी रसोई मुंहमें नहीं पड़ेगी। वैसेही जिन मनुष्योंको घर चलाना नहीं आता, जिन मनुष्योने घर चलानेकी विद्या नहीं सीखी है और जो आदमी घर चलानेकी कठिनाइयोंको नहीं समझते तथा अपना कर्त्तव्य नहीं जानते वे आदमी घर गृहस्थी चलाने लगें तो उनका घर कैसे चल सकता है ? देखिये कि छोटी छोटी बातें भी बिना सीखे नहीं आतीं। जैसे—बिना गाना सीखे कोई गीत गाने लगे तो उसके गायनमें कुछ असली मधुरता नहीं आसकती। बोलना सीखे बिना जो आदमी बोलनेको खड़ा हो वह समाजपर मनमाना असर नहीं डाल सकता उल्टे लोगोंमें अपनी हंसी कराता है। वैसे जो बिना उमरपर पहुंचे, बेअनुभवी छोकरे घर गृहस्थीमें हाथ डाल देते हैं वे उल्टे अपनी फजीहत कराते हैं और आगे जाकर दुखी होते हैं। इसलिये गृहस्थीमें हाथ डालनेसे पहले उसे चलानेकी योग्यता प्राप्त करना चाहिये। योग्यता प्राप्त करनेके बादही गृहस्थीमें हाथ डालना चाहिये। तभी सुखी हो सकते हैं और तभी उसकी सार्थकता होती है। इस जगतमें विजय पानेके लिये जैसे किस्म किस्मके हुनर विधिपूर्वक सीखेजाते हैं वैसे घरमें सुख पानेके लिये घर चलानेकी विद्या भी अच्छी तरह जानलेना चाहिये। घर सबसे प्यारी वस्तु है इसलिये उसमें सुधार करना चाहिये।

लोग कहते हैं कि घर दुनियाका छोर है। इस कारण जैसी शान्ति दुनियामें और कहीं नहीं मिल सकती वैसी शान्ति घरमें मिल सकती है। यह बात समझनेके लिये देखिये कि जो बड़े बड़े अमीर परदेशमें रहते हैं उन्हें अपने घरसे वहां

अनेक प्रकारका सुबीता हो तोभी अपना घर याद आता है और घर जानेका मन करता है। जो मलाह नाव या जहाजपर जगह जगह घूमते हैं और रात दिन पानीमें पड़े रहते हैं उन्हें भी बीच-धारामें अपना घर याद आता है। राजाकी ड्योढ़ीपर रहनेवाले दरवान बहुत गरीब होते हैं उनके घरपर कुछ उतना सुबीता नहीं होता और राजाकी ड्योढ़ी पर उन्हें तरह तरहका सुबीता होता है तोभी अपना गरीब घर बारबार याद आता है और उन्हें भी घर जानेका मन करता है। शौकीन आदमी जब नाच तमाशेमें रात बिताते हैं और नाटकोंके शौकीन जब खेलसे खुश होकर वन्स मोर वन्स मोर करते है तब और उत्सव तथा भोज भातका मजा लूटनेवाले लोगोंको भी सब छोड़कर अन्तमें अपने घर जानेका मन करता है।

बन्धुओ! मनुष्योंको ही अपना घर नहीं रुचता; पशु पक्षी तथा बाघ भालू आदि जंगली जीवोंको भी अपना घर बहुत प्यारा लगता है। घोड़ोंको जब अपना तबेला मिलता है तभी शान्ति होती है; भेड़ बकरियोंको जब उनका बाड़ा मिलता है तब आनन्द होता है; गाय भैंसोंको जब अपने गोथानपर रहनेको मिलता है तभी उन्हें सन्तोष होता है; बाघ भालुओंको जब अपनी माद मिलती है तभी सुख होता है; सांपको भी जब अपनी बिल मिलती है तभी वह आराम पाता है और पक्षियोंको भी अपना घोंसला मिलता है तभी वे खुश होते हैं।

घर आरामकी जगह है, इसलिये रातको खेतकी रखवारी करनेको गया हुआ किसान खेतमें बैठे बैठे और सोये सोये भी अपने घरकी याद किया करता है। लड़ाईमें लड़नेके लिये गये हुए सिपाहियोंको भी अपना घर याद आता है। परदेशमें सफलता न पानेवाले मनुष्योंको भी अपने ही घर लौटजानेका मन

करता है और बहुत धन कमाये हुए मनुष्योंको भी अपने घर जानेका मन करता है। बड़ी विजय पानेवाले जंगी अफसरोंको भी अपना घर याद आता है। बीमार आदमियोंको अपना घर याद आता है और भले चंगे आदमियोंको भी अपने घर जानेका मन करता है। दूसरी जगह अनेक प्रकारका सुबीता हो तोभी कितनेही बीमार आदमी वहां न रह कर मरनेके लिये अपना घर पसन्द करते हैं और अपने ही घरमें मरना चाहते है। घर ऐसा प्यारा है। क्योंकि घर विश्रामका स्थान है इससे जगतके सब जीवोंको अपने अपने घर रहना बहुत पसन्द है।

इस प्रकार दुनियाके सब जीवोंको अपना घर पसन्द है और घरमें जानेपर ही उन्हें शान्ति मिलती है। ऐसे प्यारे घरमें ही आग लग जाय तो फिर कहां जायं ? ऐसा प्यारा घर ही जब बिगड़ा हो तब फिर क्या करें ? और विश्रामके इस असली स्थानमें ही अगर लड़ाई झगड़ा और अधर्म हो तो फिर सुख कहांसे मिले ? इसलिये हे गृहस्थ बन्धुओ ! ऐसा कीजिये कि आपका घर सुधरे। ऐसा कीजिये कि आपका घर सुधरे।

एक घरमें और एक कुटुम्बमें जुदे जुदे स्वभावके मनुष्य तो होते ही हैं, इसमें कुछ नयापन नहीं है परन्तु उनके साथ मेल-जोलसे रहना और निबाह लेजाना ही सच्ची खूबी है।

अपना गृहस्थाश्रम सुखरूप रखनेके लिये यह बात जान लेना चाहिये कि एक ही बागमें किस्म किस्मके पेड़ होते है, उन पेड़ोंमें किस्म किस्मके फल होते हैं और उन फलोंका गुण तथा स्वाद भी किस्म किस्मका होता है। जैसे—अंगूरमें मिठास होती है, नीबूमें खटास होती है, मिर्चमें तिताई होती है, निमो-रीमें कड़वास होती है और आंवलामें कसाव होता है। इस प्रकार एकही बागीचेमें किस्म किस्मके पेड़ तथा किस्म किस्मके फल

होते हैं और उन सबके गुण भी अलग अलग होते हैं। याद रखना कि इस जगतमें भगवानने मनुष्यकी प्रकृति भी भिन्न भिन्न बनायी है। जैसे–किसी मनुष्यका स्वभाव बड़ा लोभी होता है; किसी मनुष्यका स्वभाव बड़ा क्रोधी होता है; किसी मनुष्यका स्वभाव बड़ा खटपटी होता है। कोई मनुष्य आनन्दी स्वभावका होता है; किसी मनुष्यका स्वभाव मुहर्रमी होता है; कोई मनुष्य अनदेखना होता है; कोई मनुष्य विद्या-विलासी होता है और किसी मनुष्यको विद्याके नामपर जूड़ी आती है। ऐसे जुदे जुदे स्वभावके मनुष्य इस दुनियामें होते हैं और विचित्र-स्वभावके मनुष्य अपने कुटुम्बमें भी होते हैं। इसलिये सबका यह कर्त्तव्य है कि अपने परिवारके मनुष्योंकी प्रकृति समझलें और जैसे चले बने वैसे चलावें। अगर इस प्रकार कुटुम्बके मनुष्योंका स्वभाव समझना न आवे तो घरमें बार बार रार मचाकरेगी और उस रारमें आपको भी शामिल होना पड़ेगा। तब कुटुम्बसुख नहीं मिलेगा और घर सुखके बदले दुःखका घर बनजायगा। ऐसा न होने देनेके लिये कुटुम्बके सब मनुष्योंका स्वभाव समझ कर उन्हें निबाह लेजाना सीखिये। उन्हें निबाह लेजाना सीखिये।

१४२–कुटुम्बसुख पानेका उपाय। (२)

बहुत आदमी अपनी जीभको वशमें नहीं रखते इससे घरमें झगड़ा होता है। अगर कुटुम्बसे कलह दूर करना हो तो जीभको वशमें रखना सीखिये।

हम देखते हैं कि बहुतेरे कुटुम्बोंमें कुछनकुछ झगड़ा होता

रहता है और छोटी मोटी बातोंमें मतभेद हुआ करता है। इन सबका कारण ढूंढ़नेसे अक्सर पता लगता है कि कुछ आदमी जीभको अपने वशमें नहीं रखते इससे कड़वा वचन बोल देते हैं और कड़वा वचन बहुत आदमियोको बाणसे भी बुरा लगता है। इसके लिये अनुभवी मनुष्य कहते हैं कि तलवारका घाव सूख जाता है परन्तु कड़वे वचनका घाव मरते दमतक नहीं सूखता। कड़वे वचनके कारण ही स्त्री पुरुषोंमें झगड़ा होता है; कड़वे वचनके कारण ही भाई भाईमें झगड़ा होता है; कड़वे वचनके कारण ही बाप बेटेमें लड़ाई होती है; कड़वे वचनके कारण ही स्नेहियोमें मनमुटाव होता है, कड़वे वचनके कारण स्त्रियां आपसमें लड़ पड़ती हैं; कड़वे वचनके कारण भिन्न भिन्न समाजों तथा जातियोमें फसाद होता है और कड़वे वचनके कारण ही सम्बन्धियों तथा पड़ोसियोंमें अनबन होती है। इन सब खराबियोंका मूल कड़वा वचन है। इसलिये कुटुम्बवाले गृहस्थको जहांतक बने बहुत सोच विचार कर बोलना चाहिये तथा एक दूसरेका दोष ढूंढ़नेमें न रहना चाहिये। अपने सगों या स्नेहियोंको छोटी छोटी बातें चिल्ला चिल्लाकर दूसरे सगों तथा, पड़ोसियोंसे न कहना चाहिये और किसीपर नुकाचीनी करनेसे बहुत सम्हलना चाहिये। अगर इस प्रकार सोच समझ कर बर्ताव कियाजाय और जीभको वशमें रखना आवे तो कुटुम्बसे, जातिसे समाओंसे और देशसे तथा दुनियासे बहुत कुछ झगड़ा घटजाय। इसमें कुछ सन्देह नहीं है। इसलिये हे गृहस्थ बन्धुओ तथा बहनो! आप अपनी जीभको वशमें रखना सीखिये और जीभके कारण जो खराबी होती है तथा जो जेरबारी होती है उससे बचिये और सुखी हूजिये। यही हमारी सलाह है।

जीभको वशमें रखनेके लिये कोई बड़ा यत्न करनेकी जरूरत नहीं है; जीभको वशमें रखनेके लिये कुछ उथलपुथल कर डालनेका काम नहीं है, जीभको वशमें रखनेके लिये समुद्रपार किसी अनजान देशमें नहीं जानापड़ता और जीभको वशमे रखनेके लिये कोई जंतर मंतर करनेकी जरूरत नहीं है; सिर्फ जरा सादी समझसे काम लेना और जरा मनको मजबूत रखना। तब ज़ीभसे होनेवाली भूलोंसे बच सकेंगे। इतना ही नहीं, यह बात भी याद रखना कि ऐसे विषय बहुत ही कम होते है जिनमें असली नुकसानके कारण कलह हो और ऐसे मौके कभी ही कभी आते है। परन्तु ऐसे मौके वार वार आते हैं जिनमें कड़वे बचनके कारण ही झगड़ा होता है। इसलिये अपने कुटुम्बसुखके निमित्त ऐसी भूलसे बचना।

याद रखना कि जो आदमी स्वार्थी है, झगड़ालू हैं और बातचीत करनेमें रिसाजानेवाले हैं वे घरमें रहने लायक नहीं हैं।

कुटुम्बकलहका क्या कारण है यह आप जानते है? इसके बारे में अनुभवी गृहस्थ कहते हैं कि हर कुटुम्बमें कोई कोई आदमी बड़े स्वार्थी होते हैं; कोई कोई आदमी बड़े मतलबी होते हैं; कोई कोई आदमी बड़े अनदेखने होते हैं; कोई कोई आदमी हठ करके अपनी ही बात रखनेवाले होते हैं; कोई कोई आदमी बात बातमें चिढ़नेवाले होते है; कोई कोई आदमी बड़े ही अभिमानी होते है; कोई कोई आदमी बड़े क्रोधी होते हैं और कोई कोई-जो मुंहमें आया वही बोल देते हैं। उनके कारण कुटुम्बके दूसरे आदमियोको भी नाहक हैरान होनापड़ता है। ऐसे आदमी अपने घरमें झगड़ा करते है और अपने कुटुम्बकी खराबी करते हैं। इतना ही नहीं, ऐसे स्वभावके आदमी किसी सभामें जाते हैं तो वहां भी झगड़ा करते हैं। अपने मनको

वशमें न रखनेवाले मनुष्य किसी मण्डलीमें जाते हैं तो वहां भी अपनी मूर्खताके छींटे लगाया करते है। ऐसे स्वार्थी तथा हठी आदमी जिस जातिमें होते हैं उस जातिकी भी खराबी होती है। जैसे दुम उठाकर म्याउं म्याउं करनेवाली बिल्लियां एकही घरमें एक साथ नहीं रह सकतीं और जैसे डाही कुत्ते एकही महल्लेमें एक साथ नहीं रह सकते वरंच भूका करते हैं और दांत किचकिचाया करते है। वे जैसे एकही स्थानमें रहने लायक नहीं हैं वैसेही कुत्ते बिल्लीके स्वभावके जो आदमी हैं वे भी घरमें रहने लायक नहीं हैं। ऐसे मनुष्योंको घरमें रहकर खानाखराब न करना चाहिये और अपने लिये दूसरोंको दुखी न करना चाहिये। ऐसे जंगली स्वभावके तथा पशुवृत्तिके मनुष्योंको तो घर छोड़कर जंगलियोंकी तरह जंगलमें चलेजाना चाहिये। जिन मनुष्योंमें ऐसे भारी कुर्गुण हैं और जो मनुष्य अपने कुटुम्बके आदमियोंको ही हैरान कियाकरते है तथा अपने प्यारे सगोंका ही लहू चूसाकरते हैं वे गृहस्थ कहलानेके योग्य नहीं हैं। जो सच्चे गृहस्थ हैं उनमें शान्ति होती है, उनमें कुटुम्ब-स्नेह होता है, उनमें बहुत क्षमा होती है, उनमें उदारता होती है; उनका मन बड़ा होता है, वे सहनशील होते हैं, वे अमियदृष्टि-वाले होते हैं और वे दूसरोंको लाभ करानेवाले होते है। इसलिये भाइयो और बहनो! अगर आपको सुखी होना हो और अपने कुटुम्बको सुखी करना हो तो कुत्ते बिल्लीके स्वभावके मत बनिये अगर आप अपने ऐसे स्वभावको न सुधार सकें तो घर छोड़ कर जंगलमें चले जाइये। ऐसा मत कीजिये कि आपके प्यारे कुटुम्बी बेकारण आपके मारे हैरान हुआ करें और झोखाकरें तथा घरके कोनेमें बैठकर रोवें और लम्बी सांस खींचा करें। जहांतक बने सद्गुणी एके गृहस्थ बनना। यही हमारी सलाह है।

माली जैसे बागको सुधारता है वैसे, आपको सुखी होना हो तो अपने घरको सुधारिये।

बन्धुओ! कुटुम्बसुखका मूल क्या है यह आप जानते हैं? इसके विषयमें घर गृहस्थीके अनुभवी गृहस्थ कहते हैं कि कुटुम्बसुखका मूल मेल है। जिस घरमें भाई भाईमें मेल हो, मा बाप तथा लड़कोंमें मेल हो, पति पत्नीमें मेल हो, सास पतोहूमें मेल हो, देवरानी जेठानीमें मेल हो, ससुर दामादमें मेल हो और मामा मौसी, फूआ, काका आदि दूरके रिश्तेदारोंसे जिसका मेल हो वह कुटुम्ब सबसे सुखी होता है। सो सुख बढ़ानेके लिये जैसे बने वैसे कुटुम्बमें मेल बढ़ाना चाहिये, परन्तु बहुतेरे कहते हैं कि हमारे परिवारमें कुछ आदमी ऐसे मूर्ख हैं जो हजार कोशिश करनेपर भी नहीं समझते। बेशक बहुतसे परिवारोंमें ऐसे मूर्ख भी होते हैं, यह कोई आश्चर्यकी बात नहीं है परन्तु ऐसोंको भी जब हम सुधार लें और उनके साथ भी निबाह ले जाना सीखें तभी हमारी खूबी है। इसलिये अगर कुटुम्बमें कोई आदमी मूर्ख हो, जंगली हो, उत्पाती हो, कड़कमिजाज हो या और किसी तरहका दोषी हो तो उससे निराश मत होजाना और हिम्मत न हार जाना। वरंच माली जैसे अपने बागीचेको सुधारता है वैसे ऐसे नादान आदमीको सुधारनेकी कोशिश करना। जैसे माली किसी पौधेको जरा छांट देता है; किसी पौधेको पानीसे सींचता है; किसी पौधेको एक जगहसे उखाड़ कर दूसरी जगह रोपता है; किसी पौधेका कलम लगाता है, किसी पेड़को ऊंचे बढ़ने देता है, किसी पेड़को नीचे रखनेकी कोशिश करता है और जो निकम्मा घास फूस जम जाता है उसको खोद डालता है तथा बागमें समयसे पानी देता है, खाद

डालता है और रखवारी करता है। घरके मालिकको भी अपने कुटुम्बके सुखके लिये बागवानी करनी चाहिये। अर्थात् अपने कुटुम्बमें किसीको बढ़ने देना चाहिये, किसीको दाबमें रखना चाहिये, किसीको एक जगहसे दूसरी जगह या एक रोजगारसे दूसरे रोजगारमे लगाना चाहिये और सबकी निगरानी करनी चाहिये तथा ऐसा करना चाहिये कि सबको उनकी योग्यतानुसार अपनी ओरसे मदद मिले तथा उनकी शक्तिसे लाभ उठाया जाय। यह सब करनेके लिये कुटुम्बके मालिकको बड़े दिलका होना चाहिये, क्षमा रखना चाहिये, शान्त होना चाहिये और नादान तथा अनाड़ी मनुष्योंको भी सुधार लेना और निबाह लेजाना सीखना चाहिये। जब ऐसी चतुराईसे घर गृहस्थी चलाना आवे तभी कुटुम्बका सच्चा सुख पा सकते है और जब धर्मका बल बढ़े तभी क्षमा, शान्ति, उदारता आदि सद्गुण आ सकते है। ये सब गुण जितनेही बढ़ें उतनाही अधिक सुख पा सकते है। इसलिये ऐसा कीजिये कि धर्मकी मददसे ये गुण बढ़ें धर्मकी मददसे ये गुण बढ़ें।

१४४—कुटुम्बसुख पानेका उपाय। (३)

जिनको अपने कुटुम्बके साथ भी निबाह लेजाना न आवे और मेलजोल न रखना आवे उन मनुष्योंको घर न बनाकर जंगलमें चले जाना चाहिये।

बन्धुओ। आपने सरकस देखा है? अगर देखा होगा तो आपको मालूम होगा कि हाथी, घोड़े, बन्दर कुत्ते आदि पशुओंको भी सिखा सकते हैं और उनसे भी अनेक प्रकारके मनमाने

खेल करा सकते है। इतनाही नहीं, बाघ भालू, सांप आदि हिंसक जन्तुओंको भी बहुत अच्छी तरह सिखाते हैं और उनसे भी इच्छानुसार खेल कराते हैं। विचार कीजिये कि जब पशु पक्षी तथा भयंकर हिंसक जन्तुओंको स्नेहसे, भयसे तथा लालचसे सिखा सकते हैं तब परम कृपालु परमात्माने जिनको जगतके और सब जीवोंसे अधिक बुध्दि दी है उन मनुष्योंको सिखाना क्या कठिन है? नहीं भाइयो! याद रखना कि मनुष्योंको सिखाना कुछ कठिन नहीं है, मनुष्योंकी सच्ची प्रकृति समझ कर काम लेना आवे तो यह सहज है। और उसमें भी अपने कुटुम्बके मनुष्योंको सुधारना तो और भी सहज है। क्योंकि उनका स्वभाव, उनकी रीति भांति, उनकी आदत, उनके विचार और उनसे काम लेनेकी युक्ति मालूम रहती है। इससे उनपर बहुत जल्द असर डाला जा सकता है। इसलिये हमें ऐसी कोशिश करनी चाहिये कि वे सुधरें और सुखी हों। अगर हमें अपने कुटुम्बके आदमियोंको सुधारना न आवे तो यह जानना कि इसमें कुछ अपनी ही कचाई है। यातो हम उनका स्वभाव नहीं समझते या जैसी उदारतासे बर्ताव करना चाहिये वैसी उदारतासे हम उनके साथ बर्ताव नहीं करते; यातो उन्हें जितनी स्वाधीनता देनी चाहिये उतनी नहीं देते या उनको जितने अंकुशमें रखना चाहिये उतने अंकुशमें रख नहीं सकते; या उनपर जितना प्रेम रखना चाहिये उतना प्रेम नहीं रखते इससे वे नहीं सुधरते। इन सब विषयोंमें हम बराबर ध्यान रखें विचारसे काम लें तथा मनको बहुत उदार रख कर गम खाना सीखें तो कुटुम्बमें झगड़ा फसाद बहुत कुछ घटजाय और जो मनुष्य नहीं सुधरते वे भी सुधर-जायं। पर इसमें सबसे बड़ी भूल यह होती है कि स्वयं हमको ही

ठीक ठीक अपने कुटुम्बके मनुष्योंकी परीक्षा करना नहीं आता तथा जितना गम खाना चाहिये उतना गम खाना नहीं आता। इसीसे कुटुम्बमें कलह होती रहती है। परन्तु अनुभवी गृहस्थाश्रमी कहते हैं कि जिन मनुष्योंको गम खाना न आवे और अपने परिवारके मनुष्योंकोभी खुश रखना न आवे उन्हें ब्याह ही न करना चाहिये, उन मनुष्योंको घर ही न बनाना चाहिये वरंच उन्हें जंगलियोंकी तरह जंगलमें चलेजाना चाहिये या साधु फकीर बनजाना चाहिये जिससे कि उनसे दूसरोंको कष्ट न मिले।

भिन्न भिन्न स्वभावके मनुष्योंके संग निबाह ले जाना सीखनेके लिये धर्मकी जरूरत है।

बड़े कुटुम्बमें बहुत आदमी भिन्न भिन्न स्वभावके होते हैं। जैसे-किसी भाईका स्वभाव बड़ा उड़ाऊ होता है; किसी भाईका स्वभाव अनदेखना होता है; किसीका स्वभाव बड़ा चिड़चिड़ा होता है। कोई बहू बड़ी कर्कशा होती है; कोई बहू कम बोलनेवाली होती है; किसीकी बात बातमें गाली गलौज करनेकी आदत होती है; कोई बहू लोभी होती है; कोई बहू शौकीन होती है; कोई धर्मकी निन्दा करनेवाली होती है; किसीके चालचलनमें कुछ हंसने लायक बात होती है; किसीकी शक्ल सूरतमें कोई नुक्स होता है और किसीका विचार कुछ होता है तो किसीका विचार कुछ होता है। इसके सिवा खानेमें भी किसीको मीठा रुचता है; किसीको खट्टा भाता है, किसीको बहुत तीता पसन्द है और किसीको सादा भोजन रुचता है। कपड़ा पहननेमें भी ऐसाही मतभेद होता है। जैसे-किसी स्त्रीको लाल रंगकी सारी पसन्द है, किसीको सफेद रंगकी, किसीको पीले रंगकी और किसीको कत्थाठोरी रंगकी सारी पसन्द है। इस प्रकार

एक कुटुम्बमें भिन्न भिन्न गांवकी बहुएं आती हैं, भिन्न भिन्न कुलके दामाद होते हैं तथा भिन्न भिन्न स्वभावके भाई भतीजे और चाचा, मामा होते हैं। उन सबके साथ अच्छा बर्ताव करनेके लिये, मेलजोल रखनेके लिये और उन सबको खुश रखनेके लिये धर्मकी मददकी जरूरत है। क्योंकि धर्म मध्यस्थता रख सकता है और भिन्न भिन्न स्वभावके मनुष्योंको वशमें रख सकता है तथा धर्मके बलसे कितनी ही बड़ी छोटी बातोंमें मनुष्योंको गम खाना आजाता है। इससे बहुत कुछ झगड़ा रफा होजाता है। जिस कुटुम्बमें धर्मका जोर नहीं उस कुटुम्बमें सबसे ज्यादा लड़ाई होती है; जिस कुटुम्बमें धर्मका जोर नहीं उस कुटुम्बका रुपया वकील बारिस्टरों तथा डाक्टरोंकी जेबमें जाता है; जिस कुटुम्बमें धर्मका जोर नहीं उस कुटुम्बके आदमी दिखाऊ शिष्टाचार या किसी तरहके दबावसे एकमें रहते हों तोभी उनका मन अलग अलग होता है; साथ बैठकर भोजन करते हों तोभी एक दूसरेके विरुद्ध बातें मनमें सोचा करते हैं। क्योंकि धर्मकी मदद न होनेसे, मनुष्योंमें जैसी चाहिये वैसी पवित्रता नहीं आती; धर्मकी मदद बिना मनुष्योंमें एक दूसरेको प्रेमभावसे निवाह ले जानेकी सहनशीलता नहीं आ सकती; धर्मके बल बिना काम, क्रोध, लोभ मोह आदि स्वाभाविक विकारोंको मनुष्य रोक नहीं सकते; धर्मके बल बिना मनुष्य अपनी बुद्धिका सदुपयोग नहीं कर सकते तथा धर्मके बल बिना मनुष्य हृदयका डारस नहीं पा सकते। इन सब सद्गुणों बिना बड़े कुटुम्बोंमें जेरबारी होना और एक दूसरेका मन अलग बिलग होना आश्चर्यकी बात नहीं है। इसलिये अगर कुटुम्बसे कलह मिटाना हो, अमीरोंके कुटुम्बसे रोग निकालना हो और खान्दानकी इज्जत तथा बड़ाई बनाये रखना हो तो

गृहस्थोंके घरमें धर्म होना चाहिये और धर्म सीखनेके लिये धर्मगुरु या कोई अच्छा संत तथा धर्मकी अच्छी पुस्तकें होनी चाहियें । इन्हीं सबकी मददसे धर्ममें आगे बढ़ सकते है और धर्ममें आगे बढ़नेसे इस प्रकारकी कलह आपसे आप घटजाती है । इसलिये हे प्रभुके कृपापात्र धनवानो ! हमारी विनती है कि ऐसा कीजिये कि जिससे आपमें, आपके घरमें और आपके कुटुम्बमें धर्म बढ़े । धर्म बढ़े ।



१४५-कुटुम्बसुख पानेका उपाय । (४)

बालक बहुत आसानीसे और बहुत जल्द सुधर सकते हैं इसलिये उनके सुधारनेकी ओर विशेष ध्यान रखना—

बूढ़ोंको सुधारनेमें बहुत विलम्ब होता है परन्तु बालक बहुत शीघ्र सुधर सकते है । क्योंकि उनकी वृत्तियां बहुत कोमल होती हैं और उनका अन्तःकरण कोरे कागजके ऐसा होता है इससे उसपर जो कुछ लिखना चाहें बहुत आसानीसे लिख सकते हैं । उनकी भावना किसी विषयमें दृढ़ नहीं होती; उनका कोई सिद्धान्त नहीं रहता और अपनी बातपर हठ करके अड़जानेका बल उनमें नहीं होता । इससे उनको सुधारनेके लिये, उनको सिखानेके लिये और उन्हें भलेमानस बनानेके लिये परिश्रम कियाजाय तो वे बहुत आसानीसे सुधर सकते हैं । खेत जोता हुआ तय्यार है उसमें सिर्फ बीज बोनेकी कसर है । अधेड़ों और बूढ़ोंके मनमें अनेक प्रकारका कूड़ा कर्कट घास

फूस भरा रहता है । दूसरे यह भी याद रखना कि बहुत बड़े पेड़को एक जगहसे उखाड़ कर दूसरी जगह रोपें तो वह सूख जाता है; परन्तु छोटे पौधेको एक जगहसे उखाड़ कर दूसरी जगह लगावें तो वह वहां और जोर पकड़ता है और खूब खिलता है । इसी तरह बूढ़े आदमी अपने विचार जल्द नहीं बदल सकते क्योंकि उनके अन्तःकरणमें उन विचारोंकी गहरी लीक पड़ी रहती है । उस लीकसे उनकी गाड़ीका पहिया इधर या उधर नहीं जा सकता । परन्तु बालकोंकी सड़क बिलकुल चौरस रहती है इससे उनकी गाड़ी सरपट दौड़ सकती है । इसलिये अपने विचारोंके अनुसार बालकोंको सिखानेकी खास कोशिश करनी चाहिये । इस कोशिशमें तुरत ही सफलता हो सकती है । आपको अपने कुटुम्बका सुख बढ़ाना हो और खान्दानी इज्जत बनाये रखना हो तो अपने बालकोंमें जहांतक बने ऊंचेसे ऊंचे धर्मका अच्छेसे अच्छा संस्कार डालनेकी विशेष चेष्टा करना । दूसरा कोई बल मनुष्यको जितना वशमें रख सकता है धर्मका बल उससे बहुत अधिक वशमें रख सकता है । सो कुटुम्बमें मेल रखना हो और अपने बालकोंकी सच्ची भलाई करना हो तो उनमें सत्य धर्मके शुभ संस्कार डालनेकी कोशिश करना । यही हमारी विनती है ।

अपने बालकोंका ब्याह करते समय हर मा बापको बहुत सम्हलना चाहिये और ब्याहकी जिम्मेवारी समझना चाहिये ।

बन्धुओ ! घरका मूल ब्याह है, अगर ब्याह सोच विचार कर हो तो घरका सुख मिल सकता है । परन्तु अफसोसकी बात है कि

जीवनमें जो सबसे जरूरी विषय है उस ब्याहके बारेमें ही बहुत लोग बड़ी लापरवाही दिखाते है और पोता खेलानेकी साधसे तथा कुछ मतलब साधनेके लिये वे अपने लड़कोंको जाने बेजाने गढ़ेमें डाल देते हैं । यह नहीं सोचते कि अपने लड़केमें घर गृहस्थी सम्हालनेकी योग्यता देखे विना ही उसका ब्याह कर देना और किसीकी लड़कीकी मिट्टी खराब करना बहुत बड़ा अपराध है और बहुत बड़ा पाप है। क्योंकि ब्याह कुछ मामूली बात नहीं है और न थोड़े दिनका ठेका है वरंच जिन्दगीभरके लिये है। इसलिये हर समझदार आदमीको पहलेसे यह सोचना चाहिये कि घर गृहस्थीका बोझ उठानेकी योग्यता मुझमें है या नहीं ; स्त्रीका स्वभाव जैसा है वैसा चलनेकी या उसे सुधारनेकी शक्ति मुझमें है या नहीं ! और जिस स्त्रीका हाथ पकड़ना चाहता हूं उसको सारी जिन्दगी सुखसे रख सकूंगा कि नहीं । इन सब बातोंको विचारना चाहिये। यह सब बोझ उठानेकी अपनेमें शक्ति हो तभी घर गृहस्थी बनाना चाहिये ।

बन्धुओ ! इन सब विषयोंका विचार पहलेसे नहीं किया जाता इसीसे बहुत जगह ब्याह सुखदायक नहीं निकलता। इसलिये हर मा बापको अपने लड़कोंका ब्याह करनेसे पहले यह विचारना चाहिये कि "वे अपनी घर गृहस्थी अच्छी तरह चला सकते हैं कि नहीं।" अगर ऐसा जंचे कि हमारे लड़के अभी अपनी घर गृहस्थीका भार सम्हालने लायक नहीं हैं, हमारे लड़के अभी अपना कर्तव्य समझने लायक नहीं है और हमारे लड़कोंको भविष्यमें सुखी होनेका सुबीता अभी नहीं है या उनके शरीरकी स्थिति ऐसी नहीं है तो उनका ब्याह करनेसे पहले बहुत विचार करना

चाहिये और जैसे बने वैसे उस समय धीरज रखना चाहिये। ब्याहके लिये झूठमूठ उतावले होकर, अपने प्यारे लड़कोंकी जिन्दगी न बिगाड़नी चाहिये। क्योंकि ब्याह छोटी बात नहीं है। यह काम सारी जिन्दगीके लिये है। इसलिये ब्याहके बारेमें हर मा बापको बहुत सावधानी रखनी चाहिये। यह हमारी खास सलाह है।

बहुत धूम धाम करनेसे ब्याह सुखमय नहीं निकलता। ब्याहके सुखकी कुंजी तो कुछ और ही है।

बहुतेरे गृहस्थोंके यहां जब लड़कोंका ब्याह होता है तब बहुत धूमधाम की जाती है। जैसे—मण्डप भड़कीला बनानेमें बहुत खर्च किया जाता है; रोशनीके लिये बड़ा बड़ा इन्तजाम किया जाता है; बाजे बजवानेमें भी यही ध्यान रखा जाता है कि हम कैसे दूसरोंसे बढ़जायं। बिरादरीके भोजमें भी हजारों रुपये खर्चे जाते हैं; ब्याह जैसे पवित्र और शुभ अवसरपर वेश्या नचानेकी भूल भी कीजाती है। इसके सिवा जेवर, कपड़े और पहरावेमें बहुत खर्च किया जाता है। कितनी जगह तो इस बाहरी खर्चका अंक इतना बड़ा होता है कि देखकर आश्चर्य हुए बिना नहीं रहता। परन्तु इतनी धूमधाम करनेपर भी, इतना ठाट बाट करनेपर भी, इतना खर्च करनेपर भी और इतनी मिहनत करनेपर भी बहुतसे ब्याह सुखदायक नहीं निकलते। क्योंकि ब्याहकी धूमधाममें जितना खर्च किया जाता है और इसके लिये जितनी मिहनत की जाती है उतनी मिहनत और उतना खर्च अपने लड़कोंको सुधारनेमें नहीं किया जाता। इससे परिणाम यह होता है कि बहुत खर्च और बहुत

धूमधामसे किया हुआ व्याह भी सुखदायक नहीं निकलता। व्याहको सुखदायक बनानेके लिये लड़कोंका व्याह तब करना चाहिये जब उनमें घर गृहस्थीका बोझ सम्हालनेकी योग्यता हो। इतनाही नहीं, वरंच व्याहके समय स्त्री पुरुषमें जो पवित्र प्रतिज्ञा होती है उसके समझने तथा पालनेकी शक्ति जब उनमें आवे तभी उनका व्याह करना चाहिये। ऐसी योग्यता जबतक न आवे तबतक व्याह जैसे बहुत जरूरी विषयमें अनुचित उतावलापन नहीं करना चाहिये। इसके सिवा धर्मके बल बिना आचरणका बल नहीं आता; धर्मके बल बिना एक दूसरेके संग निबाह लेजानेका बल नहीं आता और धर्मके बल बिना कड़वा घोंट गलेमें नहीं उतर सकता। सो व्याहकी योग्यता लानेके लिये ऐसा करना चाहिये बालकोंमें बचपनसे ही धर्म बढ़े। संसारमें सुखका मूल स्नेहभरा पवित्र व्याह है और व्याहके सुखका आधार उदार चरित्रवाला पवित्र सत्य धर्म है। इस-लिये सुखमय व्याहके लिये ऐसा करना चाहिये कि लड़कोंमें धर्म बढ़े और वे व्याहका कर्त्तव्य समझें तथा एक दूसरेको निबाह ले जाना सीखें।

१४६–कुटुम्बसुख पानेका उपाय। (५)

लड़कोंको सिखाते समय धीरजसे काम लेना; फल पानेके लिये उतावले मत होना।

माली जब आम, जामन, कटहल, नीबू, नारंगी आदिके पेड़ लगाता है तो उनसे तुरत ही फल नहीं मिलता। मुद्दततक पानीसे

सींचना पड़ता है; घास फूस साफ करना पड़ता है, रखवारी करनी पड़ती है और बहुत मिहनत करनी पड़ती है। जब वर्षों-तक खूब मिहनत कीजाती है तब फल मिलता है। वैसेही बालकोंको सिखानेमें भी बहुत धीरज रखना चाहिये। उनकी शिक्षाके लिये अपनी शक्तिके अनुसार खर्च करना चाहिये। इस बातकी सम्हाल रखनी चाहिये कि उनमें किसी तरहका बुरा संस्कार न पैठने पावे तथा वे बुरी संगतमें न पड़ें। बहुत प्रेमभावसे उनको सिखाना चाहिये और उनसे फल पानेके लिये अनुचित उतावलापन न करना चाहिये। अगर इस प्रकार धीरज और चतुराईसे काम लेना आवे तो लड़के आगे जाकर बहुत अच्छे निकलते हैं और परिणाममें बहुत लाभ होता है। इसके बदले लड़कोंसे झटपट लाभ उठानेके लिये अगर अनुचित उतावलापन करें, उन्हें थोड़ासा पढ़ाकर छुड़ादें, उनसे सख्तीका बर्ताव करें, उन्हें उनके बूतेसे बाहर काम सौंपें और उनसे जरूरतसे ज्यादा आशा रख कर, बारबार छेड़छाड़ करें तो लड़के उल्टे बिगड़जाते हैं और उनसे भविष्यमें जो लाभ मिलना चाहिये वह नहीं मिलता। इसलिये घरमें अपनेसे छोटा भाई हो, भतीजे या काका मामाके लड़के हों या ससुरालके लड़के हों तो उन सबके साथ धीरजसे, शान्तिसे और प्रेमभावसे बर्ताव करना चाहिये। उतावले होकर कच्चा फल तोड़नेकी इच्छा न करनी चाहिये और न कच्चे फलके झट-पट पकजानेकी इच्छा रखनी चाहिये बरच ऐसा करना चाहिये कि समयके अनुसार, उमरके मुताबिक और इर्दगिर्दके संयोगोंके अनुसार उनकी तथा अपनी भलाई हो और भगवान प्रसन्न रहे।

याद रखना कि बूढ़े घड़ीभरमें नहीं सुधरते। इसका ख्याल रख कर उनसे काम लेना सीखना।

जो बूढ़े आदमी है उनका स्वभाव बहुत जड़ पकड़े रहता है; वे अपने आचारमें बड़े दृढ़ होते हैं; उनके विचार भी उनकी भावनाके अनुसार बहुत पक्के होते हैं और उन्हें यह समझनेकी लत पड़ी रहती है कि हमसे छोटी उमरके आदमी किसी गिनतीमें नहीं हैं। उनको चतुराई और अवस्थाका कुछ अभिमान होता है और उनमें अपने आचार विचार बहुत जल्द बदल डालनेका जोर नहीं होता। वे किसी बातमें अपनी भूल समझते हों तोभी उनकी आदत ऐसी पड़ी रहती है कि झूठे हठके मारे अपनी भूलको मजबूतीसे पकड़े रहते हैं। कभी कोई भलामानस अपनी भूल सुधारना चाहे तोभी बहुत आसानीसे नहीं सुधार सकता। बूढ़े आदमियोंका ऐसा स्वभाव होनेके कारण उन्हें सुधारनेकी बड़ी बड़ी आशाएं रखना भी एक तरहकी भूल है। ऐसी आशा रख कर हम अपने बूढ़े मा बापको, काका काकीको, नाना नानी या मामा मामीको, दादा दादीको, मौसे मौसीको या सास ससुरको या दूसरे नातेदारोंको या मित्रोंके बूढ़े मा बापको सुधारना चाहें और मिहनत करें तो इसमें बहुत निराश होना पड़ता है। क्योंकि ये लोग हमारी अच्छी बातें भी अपनी खुशीसे नहीं मानते और हम उनपर कुछ दबाव डालें तो वे दबाव भी नहीं सह सकते। ऐसे बूढ़े पुरनियोंको सुधारने और अपने विचारानुसार चलानेका हठ करनेसे उल्टे कुटुम्बमें कलह बढ़ती है। जिन गृहस्थोंको सुखी होना हो और अपनी घरगृहस्थी अच्छी तरह चलाना हो तथा अपने कुटुम्बमें सुलह शान्ति रखना हो उन्हें बड़े बूढ़ोंके साथ वर्ताव करनेका नियम जान

लेना चाहिये और यह समझ लेना चाहिये कि वे आसानीसे नहीं सुधर सकते। इसलिये आपही उनसे उदारताका बर्ताव करना चाहिये और आपही गम खाना सीखना चाहिये। ऐसा किया जाय तभी कुटुम्बमें सुख रह सकता है। इसके विरुद्ध अगर बूढ़ोंके अपने विचारके अनुसार ही चलानेकी कोशिश कीजाय तो उल्टे कुटुम्ब-कलह बढ़ती है। हमारी सलाह है कि बड़ोंके साथ तथा बूढ़े मा बापके साथ और बड़ी उमरके दूसरे रिश्तेदारोंके साथ नम्रतासे तथा बहुत उदारतासे बर्ताव करना।

बड़े कुटुम्बवाले गृहस्थोंको धर्मकी खास जरूरत है।

बहुतेरे गृहस्थाश्रमी अमीरोंके घर बहुत कुछ सुबीता होता है और बहुत कीमती तथा सुन्दर वस्तुएं उनके सुखके लिये होती है। जैसे—रहनेके लिये सुन्दर सुन्दर मकान, आलीशान दीवानखाने, दिलखुश बागीचे, रमणीय हौज तथा फव्वारे बिलियार्ड खेलनेकी टेबुल, अजीब अजीब खिलौने, बढ़ियासे बढ़िया फैशनके फरनीचर, मोर, बंदर, कुत्ते मुनिया आदि पशु पक्षी, भड़कीले घोड़े आदि सुख विलासका बहुत कुछ सामान होता है। परन्तु बन्धुओ! याद रखना कि यह सब होनेपर भी जिसके घरमें धर्म न हो उसके यहां सुख नहीं होता। जिस गृहस्थके घरमें धर्म नहीं होता उसके यहां शान्ति नहीं होती। जिस गृहस्थके घरमें धर्म नहीं होता उसके कुटुम्बका सुख बहुत दिन तक नहीं ठहर सकता। जिस गृहस्थके घरमें धर्म नहीं होता उसके घरमें लक्ष्मी भी बहुत समयतक नहीं ठहरती। इसलिये जो अमीरोंको अपनी अमीरी बनाये रखनेके लिये, खान्दानकी आबरू बनाये रखनेके लिये तथा अपनी साख अधिकार और बड़प्पन बनाये रखनेके लिये धर्मकी खास करके जरूरत है।

मौज शौककी चीजें मौतके समय काम नहीं आतीं, उस समय एक धर्म ही काम आता है ।

चाहे जैसा आलीशान मकान हो, चाहे जितनी मजबूत उसकी दिवारें हों, चाहे जितने मजबूत उसके द्वार किवाड़ हों, उसके इर्दगिर्द चाहे जितने कोट किले हों और चाहे जितने चौकीदार हो परन्तु याद रखना कि ऐसे भारी घरमें भी बीमारी और मौत आये बिना नहीं रहती । यद्यपि समयपर ऐसे भारी घरमें गरीबी भी आजाती है परन्तु इस घड़ी हम उसकी बात कहना नहीं चाहते ; सिर्फ बीमारी और मौतकी बात कहना चाहते हैं । जब बीमारी आजाती है तब फूलके गमले आराम नहीं दे सकते; जब बीमारी आजाती है तब अच्छे अच्छे जेवर सुख नहीं दे सकते ; जब आखिरी बीमारी आजाती है तब नोट और कम्पनी कागजके बंडल आत्माको सन्तोष नहीं दे सकते ; जब बीमारी आजाती है तब इत्र गुलाब और लवेण्डर पमेटम आनन्द नहीं दे सकते , जब बीमारी आजाती है तब रबड़ी मलाई, गरमागरम हलवा या जीभ चटपटानेवाली चटनी आनन्द नहीं दे सकती और जब अन्त कालकी बीमारी होती है तब भिन्न भिन्न सभाओंका सभापतित्व या बड़े बड़े खिताब आनन्द नहीं दे सकते । उस समय तो सिर्फ भगवानके सन्त आनन्द दे सकते हैं; उस समय तो भगवानका ज्ञान ही आनन्द दे सकता है और उस समय तो भगवान ही आनन्द दे सकता है । और भगवानके संत, भगवानका ज्ञान तथा स्वयं भगवान ये तीनों धर्मके बलसे ही मिल सकते हैं । इसलिये धर्म बहुत बड़ी बात है । शोक है कि अमीर गृहस्थ अपने अच्छे समयमें बाहरी मौज शौककी बहुतेरी चीजें पसन्द करते हैं परन्तु जो वस्तु बीमारीमें काम आती है, मरते समय काम आती है तथा मरनेके बाद भी न्यायके

समय और पितरलोकमें, देवलोकमें तथा मोक्षधाममें भी काम आती है उस वस्तुको ग्रहण करनेकी, परवा नहीं करते। इसीसे वे बीमारी तथा मृत्युके समय बहुत दुखी होते हैं। बीमारी और मौत ये दोनों ऐसी हैं कि इस दुनियामें अच्छेसे अच्छे और बड़ेसे बड़े स्थानमें भी बिना पहुंचे नहीं रहतीं। इसलिये ऐसे मौकेपर काम आनेवाले, ऐसे कठिन समयपर ढारस देनेवाले और ऐन वक्तपर शान्ति देनेवाले धर्मकी, गृहस्थोंको, खास करके जरूरत है।

१४७-कुटुम्बसुख पानेके उपाय। (६)

हे अमीरो! जैसे आप बाहर चौकीदार रखते हैं वैसे हृदयमें चौकीदार रखना सीखिये।

एक बड़े सेठके यहां बड़ा ठाटबाट था, बहुतसे गाड़ी घोड़े, जेवर कपड़े, फरनीचर और मौज शौककी चीजें थीं। यह सब देखकर एक सन्तने उस सेठसे कहा कि सेठ! तुम्हारा ठाट बाट तो खूब है परन्तु आजकलका जमाना खराब है, इस ठाट बाटको बनाये रखने और चोरोंसे बचानेके लिये चौकीदार रखते हो कि नहीं?

सेठने कहा कि भला आजके जमानेमें बेचौकीदारके चल सकता है? बहुतसे दरबान रखने पड़ते हैं और बाहर जानेपर सरकारी सिपाहियोंकी भी मदद लेनी पड़ती है। दरबान रखे बिना जोखों कैसे रखी जासकती है? दरबान न हों तो दिन दोपहर लुटजायं। इसलिये पहरेदार तो रखना ही पड़ता है।

इतना माल रखें और पहरेदार न रखें यह कैसे होगा ? परन्तु महाराज जी ! यह पूछनेकी जरूरत क्यों पड़ी ?

सन्तने कहा कि सेठ ! यह तो तुमने बाहरी मालकी रक्षाके लिये पहरेदार रखनेकी बात कही परन्तु मैं तुम्हारे हृदयके पहरेदारकी बात पूछता हूं। वह पहरेदार धर्म है। अगर धर्म-रूपी पहरेदार न हो तो हृदयकी कितनीही बड़ी बड़ी वस्तुएं चोरी जासकती हैं। जैसे—धर्मके चौकीदार बिना उत्तम प्रकारका आचरण चोरी चलाजाता है; धर्मरूपी चौकीदार बिना हृदयकी शान्ति चोरी चलीजाती है; धर्मरूपी चौकीदार बिना ज्ञान और भक्ति जैसी अमूल्य वस्तुएं चोरी चलीजाती हैं; धर्मरूपी चौकीदार बिना भ्रातृभाव और भलमनसी चोरी चलीजाती है; धर्मरूपी चौकीदार बिना दया, क्षमा और परोपकारकी चोरी होजाती है और धर्मरूपी चौकीदार बिना हृदयस्थित स्वर्गकी चोरी होजाती है। अगर धर्मरूपी चौकीदार हृदयमें रहे तो ये सब उत्तम वस्तुएं चोरी जानेसे बचती हैं। याद रखना कि ये सब अमूल्य वस्तुएं जैसे जिन्दगीको सुधारनेवाली हैं वैसे जिन्दगीमें रस भरनेवाली हैं, ये सब दैवी सम्पत्तिवाली वस्तुएं मोक्षधाममें ले जानेवाली हैं और ये सब प्रभुकी प्यारी वस्तुएं प्रभुसे मिलाप करादेनेवाली हैं। इस बातका खास ख्याल रखना कि ऐसी अलौकिक वस्तुएं धर्मरूपी चौकीदार बिना तुम्हारे हृदयसे चोरी न चलीजायं। सेठजी ! याद रखना कि बाहरी मौज शौककी वस्तुएं जितना काम आती हैं उनसे हृदयकी दैवी वस्तुएं करोड़गुनी उपयोगी हैं। इसलिये जैसे बाहरी वस्तुओंकी रखवारीके लिये चौकीदार रखते हो वैसे हृदयकी वस्तुओंकी रखवारीके लिये धर्मरूपी चौकीदार रखना। धर्मरूपी चौकीदार रखना।

इस बातका ख्याल रखना कि जिन बाल बच्चोंको सुखी रखनेके लिये मिहनत करते हो वेही तुम्हारे कामोंसे दुखी न हों।

इस जगतमें प्रायः सब मनुष्य अपने स्त्री पुत्र तथा सगे सम्बन्धियोंको सुखी रखनेके लिये तरह तरहसे मिहनत करते हैं और बहुत हाय हाय करते है। कितने आदमी अपने लड़के बालोंको सुखी रखनेके लिये कई तरहके जाने वेजाने छोटे बड़े पाप भी करते है। परन्तु इतना करनेपर भी हम देखते हैं कि कितनेही कुटुम्बोंमें बड़ी कलह होती है। यहांतक कि घरवाले जिनको सुखी करनेके लिये मिहनत करते हैं और सिर धुनते है वेही उनके कितने कामोंसे दुखी होते हैं। क्योंकि उनका घर बिगड़ा रहता है, उनके घरमें धर्मका बल नहीं होता और उनके घरमें भगवान पधारे नहीं रहता; इससे अपने सगे सम्बन्धियोंकी भलाई करनेके लिये उनमें जो सहनशीलता होनी चाहिये वह नहीं होती। अपने कुटुम्बकी भलाई करनेके लिये व्यवहार तथा विचारोंमें जो उदारता आनी चाहिये वह उदारता धर्मके बल बिना नहीं आती; अपने कुटुम्बको सुखी करनेके लिये उसपर जो प्रेमभाव आना चाहिये वह प्रेमभाव धर्मके बल बिना नहीं आसकता, अपने कुटुम्बको सुखी करनेके लिये छोटा छोटा मतभेद छोड़ देनेकी जो समझ आनी चाहिये वह समझ धर्मके बल बिना नहीं आती। अपने कुटुम्बको सुखी करनेके लिये स्वार्थ त्याग करना सीखना चाहिये परन्तु यह बात धर्मके बल बिना नहीं होती। अपने कुटुम्बको सुखी रखनेके लिये अपने हृदयमें तथा अपने सगे सम्बन्धियोंके हृदयमें भगवानको पधराना चाहिये, यह धर्मके बल बिना नहीं होता। इससे

घरवाले जिनको सुखी करना चाहते हैं वे भी धर्मकी मदद बिना उनके कामों तथा विचारोंसे सुखी नहीं होसकते। जिनके लिये वे इतनी अधिक मिहनत करते हैं तथा जिनके लिये चारों ओर हाय हाय करते फिरते हैं वे भी जब उनसे सुखी न हों तो यह सब मिहनत और जंजाल किस कामका? इसलिये भाइयो और बहनो! अगर अपने प्यारे सगोंको प्रसन्न करना हो और उनसे बहुत आनन्द लेना हो तो ऐसा कीजिये कि आपका घर सुधरे। घर सुधारनेके लिये घरमें अर्थात् घरके सब मनुष्योंमें धर्मका बल बढ़ाइये। ज्यों ज्यों धर्मका बल बढ़ता जायगा त्यों त्यों आपके कामोंकी भूल सुधरती जायगी और ज्यों ज्यों धर्मका बल बढ़ताजायगा त्यों त्यों आपके कुटुम्बके मनुष्योंमें भी एक दूसरेको निबाह ले जानेका गुण आताजायगा। इस समय धर्मके बल बिना जैसा मतभेद होता है और जैसी खराबी होती है वैसी बात घरमें धर्म बढ़नेके बाद नहीं होगी। अगर सुखी होना हो और कुटुम्बियोंको सुखी करना हो तो हे गृहस्थ बन्धुओ! ऐसा कीजिये कि आपके घरमें धर्मका बल बढ़े।

बिना धर्मके अमीर बाहरसे अच्छे लगते है परन्तु भीतरसे वे बहुत दुखी होते है। जो कुटुम्ब गरीब है परन्तु प्रभुका प्रेमवाला है वह हृदयसे बड़ा सुखी होता है।

कितनेही अमीर खान्दानोंकी बाहरी तड़क भड़क देखकर बहुत आदमी भूलजाते हैं और यह मानलेते हैं कि वे लोग बहुत सुखी हैं। ऐसा मान लेनेका कारण यह होता है कि उनके घर दरी गलीचा, टेबुल कुर्सी, बिजलीकी रोशनी, बिजलीका पंखा, बड़े बड़े पलंग, घोड़ेगाड़ी, मोटर, अनेक प्रकारके खाने पीनेके पदार्थ और जेवर तथा पहनावे होते हैं। यह सब ठाट बाट देखकर

बहुतसे भोलेभाले आदमी यह समझते हैं कि ये अमीर बड़े सुखी है। परन्तु भीतरसे देखनेपर असली बात कुछ और ही होती है। यानी जिस खान्दानमें प्रभुका प्रेम न हो और जिस गृहस्थके घरमें धर्म न हो उस घरके आदमी मोहकी चीजोंके लिये एक दूसरेसे लड़पड़ते हैं। जो चीजें बाहर देखनेवाले गरीबोंको सुखदायी मालूम पड़ती हैं उन्हीं चीजोंके कारण उनमें लोहा लग जाता है। धर्मके बल बिना वे अपने मनको वशमें नहीं रख सकते। इससे जिस गृहस्थके घरमें धन बढ़जाय परन्तु धर्म न बढ़े उस गृहस्थके घरमें लड़ाई झगड़ा बढ़जाता है। बिना प्रभुप्रेमके मनुष्य धनके समय अपने मिजाजको काबूमें नहीं रख सकते। उनकी आशा तृष्णाकी भी हद नहीं होती और ज्यों ज्यों धन बढ़ता जाता है त्यों त्यों नये नये दुःख भी बढ़तेजाते हैं। इस प्रकारका वैभव अपने साथ कुछ नया दुःख लेआता है और दुःख दूर करनेकी दवा बिना धर्मके मनुष्योंके पास नहीं होती। इससे वे अपने वैभवके कारण उल्टे और दुखी होते हैं। इसके विरुद्ध जो गरीब आदमी हैं परन्तु जिनके घरमें धर्म है वे धर्मवाले गरीब खान्दान अमीरोंसे भी कहीं अधिक सुखी होते हैं। यद्यपि बाहरसे देखनेपर वे दुखी जान पड़ते हैं क्योंकि उनके पास अमीरोंके ऐसा वैभव नहीं होता तोभी प्रभुप्रेमके कारण वे हृदयसे सच्चे सुखी होते हैं। यह बात ठीक तौरपर समझानेके लिये एक संत कहते थे कि–

" जंगलमें एक तरहकी घास होती है। उस घासपर फल, फूल नहीं दिखाई देते परन्तु जब उस घासकी तरफसे होकर निकलें तो उसमेंसे बहुत सुन्दर और मीठी सुगंध आती है। यह देखकर अनजान यात्री सोचमें पड़जाते हैं कि यहां कोई फल या फूल नहीं दिखाई देता, एक सूखीसी घास दीख

पड़ती है परन्तु सुगंध कहांसे आती है? खोज पूछ करनेपर मालूम होता है कि उस घासकी जड़से सुगंध निकलती है और उस जड़के पास फूल होता है परन्तु वह फूल जड़में होनेसे सबको नहीं दिखाई देता। गरीब लोग बाहरसे घासके ऐसे दिखाई देते हैं परन्तु जिस गरीबके घरमें धर्म होता है उसका घर जड़में खुशबूदार फूल रखनेवाली घास समान होता है। बाहरसे देखनेमें कुछ ठाटबाट नहीं नजर आता परन्तु हृदयमें आनन्द ही आनन्द होता है। क्योंकि असली आनन्द गरीबी या अमीरीमें नहीं, प्रभुके प्रेममें है। इसलिये बिना प्रभुप्रेमके अमीरोंके बंगलोंसे प्रभुप्रेमवाले गरीबोंके झोपड़ोंमें अधिक आनन्द होता है और वैभववाले अमीरोंके कुटुम्बसे धर्मके बलवाले गरीबोंका कुटुम्ब अधिक सुखी होता है। अगर सच्चा सुख लेना हो तो जैसे बने वैसे ऐसा कीजिये कि घरमें धर्म बढ़े, आपके कुटुम्बमें ईश्वरी ज्ञान तथा ईश्वरकी भक्ति बढ़े और प्रभुका प्रेम बढ़े। यही हमारी प्रार्थना है।

१४८—कुटुम्बसुख पानेका उपाय। (७)

महात्मा कहते हैं कि जिस घरमें प्रभुप्रेम नहीं वह घर ही नहीं; वह तो कलहका अड्डा है।

बन्धुओ! जिस घरमें धर्म न हो, जिस घरमें भक्ति न हो, जिस घरमें ज्ञान न हो और जिस घरमें अपने कर्त्तव्यकी सुध न हो वह घर नहीं कहलाता, उस घरको सन्त लोग कलहका अड्डा बताते हैं, उस घरको महात्मा लड़ाईका मैदान बताते हैं। क्योंकि बिना प्रभुके ऐसे घरमें एक दूसरेकी निन्दाके

सिवा और कुछ सुननेमें नहीं आता; ऐसे घरमें कड़वे वचन, झूठी रगड़, कोरे हठ और अपने मतलबके सिवा दूसरा कुछ नहीं दिखाई देता; ऐसे घरमें एक दूसरेको रोते देखते हैं, ऐसे घरमें एक दूसरेको शाप देते सुनपड़ते हैं, ऐसे घरमें लम्बी सांस-मोटी आह निकला करती है; ऐसे घरमें हमेशा बीमारी चली आती है और अकालमृत्यु तथा आत्महत्या जैसे महापाप हुआ करते है। इससे ऐसे घरमें रहनेवाले किसी मनुष्यकी जानको जरा भी सुख नहीं मिलता। अगर घरकी इज्जत बनाये रखना हो तो ऐसा कीजिये कि आपके घरमें धर्म आवे आपके घरमें प्रभुप्रेम आवे और आपके घरमें ज्ञान भक्ति बढ़े।

जिस घरमें धर्म होता है और जिस घरमें प्रभुप्रेम होता है वही घर सबसे बढ़कर सुखी होता है।

जिस घरमें प्रभुका प्रेम हो, जिस घरमें भगवानकी तथा भगवानके सन्तोंकी सेवा होती हो, जिस घरमें परम कृपालु परमात्माका गुण गाया जाता हो, जिस घरमें प्रभुके नामका स्मरण होता हो, जिस घरमें अनन्त ब्रह्माण्डके नाथके अर्थ दान दिया जाता हो, जिस घरमें सर्वशक्तिमान पवित्र पिता परमात्माके अर्थ व्रत तथा तप होता हो और जिस घरके मनुष्य भगवानकी इच्छानुसार वर्तते हों वह घर दुनियाभरमें सबसे श्रेष्ठ हो तो आश्चर्य क्या है! जिस घरमें धर्म होता है उस घरके स्त्री-पुरुष, बालक, आत्मीय परिजन नौकर चाकर और पड़ोसी आदि सबमें थोड़ाबहुत धर्म आजाता है। इससे धर्मवाले कुटुम्बके आसपासके मनुष्य भी धर्मवाले बनतेजाते हैं। जैसे जहां राजा जाता है वहां उसकी सेना भी जाती है। वैसे

जिस घरमें भगवान पधारता है उस घरमें उसके सद्गुण भी आजाते हैं। जिस घरमें भगवान पधारता है वहां उसका ऐश्वर्य भी जाता है। जिस घरमें भगवान पधारता है वहां उसकी ज्ञानभक्ति भी हाजिर होती है। जहां भगवानकी ज्ञान-भक्ति होती है वहां मेल, क्षमा, दया, शान्ति, धीरज नम्रता और सहनशीलता आदि सद्गुण होते ही है इसमें सन्देह नहीं। जिस घरके मनुष्योंमें ऐसे सद्गुण हो उस कुटुम्बके सुखी होनेमें कुछ भी आश्चर्य नहीं है। इसलिये अगर सचमुच सुख पाना हो तो अपने घरमें अपने कुटुम्बमें धर्म तथा प्रभुका प्रेम बढ़ाइये। यही हमारी विनती है।

जिस घरमें धर्म होता है वह कुटुम्ब सुखी होता है यही नहीं, ऐसे धर्मात्मा कुटुम्बसे दूसरे कितने ही कुटुम्ब भी सुधरते हैं।

धर्मसे केवल अपनी आत्माको शान्ति और अपने कुटुम्बियोंको सुख नहीं मिलता वरंच धर्म इससे भी बहुत बढ़कर काम करता है। बहुत आदमियोंका स्वभाव देखीदेखा करनेका होता है; बहुत आदमियोंका स्वभाव अच्छे आदमियोंकी रीति भांतिपर चलनेका होता है; बहुत आदमियोंका स्वभाव जिसको विजय मिले और जिसका बखान हो उसकी ओर ढलजानेका होता है; बहुत आदमियोंका स्वभाव बाहरी ठाठबाट, गानतान और बड़े आदमियोंके दलपर मोहजानेवाला होता है और बहुत आदमी ज्ञान भक्तिका ठिकाना ढूंढते फिरते हैं। ये सब आदमी जब किसी बड़े भक्तको देखते है या किसी परिवारमें पूर्ण श्रद्धासे धर्म होते देखते है तो उनपर अलग अलग असर पड़ता है। इससे वे सब आदमी उस धर्म करनेवाले घरकी ओर खिंच आते है और फल

यह होता है कि वे भी धीरे धीरे धर्मात्मा बनते जाते हैं। ऐसे आदमी पहले सिर्फ तमाशा देखने आते हैं। पीछे भजन कीर्तन होते देख कर उन्हें सुननेकी इच्छा होती है। इसके बाद धीरे धीरे भक्तिकी तरफका खिंचाव बढ़ताजाता है और जिस मनुष्यमें जो मुख्य प्राकृतिक गुण होता है वह उसमें खिलजाता है। जैसे-धर्मात्मा कुटुम्बमें जो व्रत उत्सव होता है उसे देख कर कितने आदमियोंको वैसाही व्रत उत्सव करनेकी इच्छा होती है। धर्मात्मा परिवारकी ओरसे दान दक्षिणा दीजाती हो तो देख कर उदार मनुष्य धर्मके उसी अंगको पकड़ लेते है। धर्मात्मा कुटुम्बमें जो जप तप होता है उसे देख कर वैसे स्वभावके मनुष्य जप तप सीख जाते है। जिन मनुष्योंको ज्ञानकी इच्छा हो उन्हें ज्ञानकी कुंजी मिलजाती है। यों धर्मात्मा कुटुम्बको देख कर पड़ोसियोंमें धर्म फैलता है, गांवमें धर्म फैलता है, जाति बिरादरीमें धर्म फैलता है और आगे बढ़ते बढ़ते देशमें धर्म फैलता है। इस प्रकार धर्मात्मा कुटुम्बसे जाने बेजाने तथा उल्टे सीधे बहुत आदमियोंको बहुत फायदा होता है। इसलिये सब गृहस्थोंको विशेषकरके ऐसा उपाय करना चाहिये कि उनके घरमें धर्म बढ़े और प्रभुका प्रेम बढ़े। इस जगतमें धर्मसे बढ़-कर ऊंची वस्तु दूसरी नहीं है और अपने दृष्टान्तसे आस-पासके मनुष्योंको सुधारनेसे बढ़ कर दूसरा कोई पुण्य नहीं है। सो हे भाइयो और बहनो! जैसे बने वैसे अपने घरमें धर्म बढ़ाइये। अपने घरमें धर्म बढ़ाइये।

१४९–जैसे आकाशके बाहर नहीं जा सकते वैसे सर्वशक्तिमान महान ईश्वरसे दूर नहीं जा सकते।

एक योगिराज थे। वह एक मन्दिरमें रहते थे। योग साधनेके लिये मन्दिरके अन्दर एक बंद कोठरीमें बैठते और हठयोगकी कितनी ही क्रियाएं करते थे। वे वर्षोंसे अपनी कोठरीसे बाहर नहीं निकले थे। मन्दिरके पुजारी आदि बाहर जाते तो उन्हें वह योगी कहते कि तुम लोग घुमक्कड़ हो। भला भगवानको छोड़ कर कहीं बाहर जाना चाहिये ? एक दिन उस मन्दिरमें एक भक्त आया। वह जब परमार्थका काम करनेके लिये बाहर जाने लगा तो योगिराजने पूछा–क्यों भगत! कहां चले ? भक्तने कहा कि भगवानकी सेवा करने जाता हूं। यह सुन कर उस योगीने कहा कि भगवान तो यहीं है। मन्दिर छोड़ कर, पूजाका स्थान छोड़ कर आनन्दका स्थान छोड़ कर बाहर क्यों जाते हो ? भक्तने कहा कि महाराज ! हमारा भग-वान कुछ खास एक ही जगह नहीं है। आप यह समझते है कि मैंने अपनी कोठरीमें भगवानको पकड़ रखा है परन्तु हम यह समझते है कि हम जहां जाते हैं वहां सर्वव्यापक प्रभु हमें पकड़ रखता है। हम चाहे जहां जायं परन्तु आकाश हमारे सिर पर ही रहता है। आकाशके बाहर कोई नहीं जासकता। वैसे ही हम प्रभुसे बाहर नहीं जासकते। जहां जायं वहां आकाश रहता ही है। वैसे हमारा प्रभु तो हमारे ही साथ रहता है, हमारा प्रभु किसी खास गुफामें, खास पहाड़पर खास मन्दिरमें या खास तीर्थमें ही नहीं रहता। हमारा प्रभु इन स्थानोंमें है और सब स्थानोंमें भी है। इसलिये हम अपने प्रभुको छोड़ कर कहीं नहीं जासकते। हम जहां जाते हैं वहां उसीकी महिमा हमारी

समझमें आती है ; हम जहां जाते हैं वहां उसीकी कृपा बरसती रहती है ; हम जहां जाते है वहां उसीकी चतुराई दिखाई देती है ; हम जहां जाते है वहां उसीकी सुन्दरता दिखाई देती है ; हम जहां जाते हैं वहां उसीका प्रेमप्रवाह होता है और हम जहां जाते है वहां उसीकी विभूति दिखाई देती है। इससें हमें तो हर जगह प्रभुकी खूबी ही समझमें आती है। तुम्हारा भगवान तुम्हारी गुफामें ही रहता है, वहांसे बाहर जाओ तो भगवान चलाजाता है। उस तरह हमारा भगवान हमारे बाहरके मन्दिरमें ही नहीं रहता; हमारा भगवान तो सर्वव्यापक है और हमारे हृदयमें रहनेवाला है। इससे हम जहां जाते हैं वहां हमारे साथ ही रहता है।

बन्धुओ! उस योगिराजकी तरह भगवानको बहुत तंग सीमामें मत रखिये और ऐसा मत कीजिये कि अमुक स्थानमें रहनेसे ही भगवानका आनन्द मिले। ऐसा कीजिये कि प्रभुके लिये जहां जाना पड़े वहां प्रभुको हाजिर जान सकें और सारी पृथिवीपर सब जगह उसका आनन्द पावें।

१५०—हमारे सब अच्छे कामोंमें प्रभु हमारा मददगार है परन्तु हम इस बातको नहीं जानते। अब इसे अच्छी तरह समझ लेना चाहिये।

बहुत आदमियोंको अक्सर अचानक अनसोची मदद मिल-जाती है। जैसे—कभी रेलमें बैठे हो तो वहां कोई अनजान आदमी मित्र बनजाता है और बहुत कुछ सुबीता कर देता है। कभी किसी सभामें गये हों तो वहां किसी वक्ताके शब्दोंसे हमारी ज़िन्दगीपर कुछ गहरा असर पड़जाता है। कभी दो आदमी बहुत

लड़ते हो तो देखकर अपनेको कुछ शिक्षा मिलजाती है। कभी किसी बीमार आदमीको देखने गये हों तो वहां कुछ जानने योग्य लाभ होजाता है। कभी रास्तेमें चले जाते हों तो कुछ अचानक लाभ होजाता है। कभी जहांसे कुछ आशा न रखी हो वहांसे भी बड़ी मदद मिल जाती है। कभी तंगी या कठिनाईमें पड़े हो और ऐंगऊँचाव हुआ हो तो कोई पुस्तक पढ़ते पढ़ते मनका समाधान होजाता है। अनेक प्रकारसे अनसोची मदद मौके मौकेपर सब आदमियोंको मिलती रहती है। यह देखकर बहुत आदमी फूल उठते हैं। वे समझते है कि यह सब हमारी चतुराईसे होता है। यह सब हमारी लियाकतसे होता है और यह सब संयोगोके आधारसे होता है। परन्तु असली बात यह है कि ऐसे कामोमें परमात्माका हाथ है और वह कृपा करके हमारी मदद गुप्त रीतिसे करता है। इस बातको हम समझते नहीं। जैसे–

कोई आदमी बहुत अच्छे ढंगसे बाजा बजाता हो तो वह मनहीमन फूला करता है कि मुझे अच्छा बजाना आता है और मेरे बजानेका ढंग अच्छा होनेसे ही यह बाजा ऐसा बढ़िया बजता है। परन्तु उस समय उसे यह ख्याल नहीं होता कि यह बाजा बनानेवालेकी खास खूबी है। अगर उसने ऐसा अच्छा बाजा न बनाया होता तो उसे ऐसी उत्तमतासे न बजा सकते। उस बाजेमें तरह तरहकी आवाजकी कल लगानेवाले ने जो खूबी की है उस खूबीके कारण ही ऐसा बढ़िया बज रहा है। इसलिये मुझे बाजा बनानेवालेका भी उपकार मानना चाहिये। परन्तु अफसोस है कि बाजा बजाकर अपने अभिमानमें फूलते समय उस आदमीके मनमें यह ख्याल नहीं आता। वैसेही हम भी अपने कामोंमें सफलता होते देख कर अपनी चतुराईपर मनहीमन फूला करते है परन्तु उस समय हमें यह नहीं

दिखाई देता कि इस सफलतामें परम कृपालु परमात्माका हाथ है। अभी हम कच्चे भक्त हैं और सर्वशक्तिमान महान प्रभुकी महिमा हमने नहीं समझी है। इसीसे ऐसे अभिमानमें पड़जाते हैं।

इसी तरह जब किसी नाटकमें कोई पात्र अपना खेल अच्छी तरह दिखाता है और " वन्समोर " " वन्समोर " होता है तथा तालियोंकी गड़गड़ाहटसे लोग उसको वाहवाही देते है तो वह पात्र यह समझता है कि यह सारी खूबी मेरी ही है। यह सोच कर वह मनहीमन फूलता है। परन्तु उस समय उसे यह ख्याल नहीं आता कि इसमें नाटक बनानेवालेकी तथा पार्ट सौंपनेवाले और सिखानेवाले मनेजरकी खास खूबी है। इस बातका ख्याल उसे नहीं रहता। वैसेही जब हमारे कामोंमें सफलता मिलती है तो हम समझते हैं कि यह सब हमारी ही योग्यतासे होती है। परन्तु यह नहीं दिखाई देता कि इसमें ईश्वरका हाथ है और सब ईश्वरकी कृपाका ही फल है।

एक अमीर अपनी गाड़ी हांकता था। उसने अपने छोटे लड़केको गोदमें बिठाया और उसके हाथमें घोड़ेकी लगाम देदी। यह देखकर वह लड़का समझने लगा कि यह गाड़ी मैं ही चलाता हूं, यह सोच कर वह खुश हुआ और पास बैठे हुए अपने भाईसे कहनेलगा कि देखो मैं कैसी खूबीसे गाड़ी हांकता हूं। इसके बाद जब टेढ़ा रास्ता आया तब लड़केसे गाड़ी नहीं चल सकी। उस समय उसके बापने उसके हाथसे लगाम लेली और गाड़ीको घुमाया। फिर जब सीधा रास्ता आया तब लगाम लड़केके हाथमें देदी।

बन्धुओ! इसी तरह, बापकी गोदमें बैठे हुए लड़केकी तरह हमसे परम कृपालु परमात्मा व्यवहारकी गाड़ी चलवाता है। परमात्मा हमारा हरएक काम स्वयं पूरा करता है। हम तो उसमें

निमित्तमात्र हैं । परन्तु अपने छोटे छोटे कामोंका भारी अभिमान करते हैं। भाइयो ! अगर सच्चा भक्त होना हो तो यह सब दृष्टान्त हृदयमें बिठाकर भलीभांति समझ लीजिये कि ऐन वक्तपर प्रभु स्वयं हमें सम्हाल लेता है और हमारा काम आगे बढ़ाता है। याद रहे कि हमारे सब अच्छे काम परम कृपालु परमात्मा ही करता है। हम तो निमित्तमात्र हैं । ऐसी समझ होनेपर अभिमानके दुर्गुणसे बचेंगे, दीनता आवेगी और प्रभुकी महिमा समझमें आवेगी । इससे प्रभुप्रेम बढ़ेगा । इसलिये भाइयो! इस बातको भलीभांति समझ लीजिये कि सब कुछ प्रभु करता है । हम निमित्तमात्र हैं ।

१९१–भगवानका नामस्मरण करनेसे लाभ ।

एक बहुत बड़ा जहाज उत्तर ध्रुवकी यात्रा ! करता था । रास्तेमें एक जगह लोहचुम्बकवाली चट्टान आपड़ी । जहाज उसकी तरफ खिचने लगा। कप्तानने जहाजको ठीक रास्तेपर लेजानेके लिये बहुत कोशिश की परन्तु उसकी सारी मिहनत व्यर्थ गयी और जहाज धीरे धीरे लोहचुम्बककी चट्टानकी तरफ ही सरकने लगा। तब कप्तानने स्टीमरमें बैठे हुए गृहस्थोंसे कहा कि मैं आज तीन दिनसे अगिनबोटको दूसरी तरफ लेजानेके लिये परिश्रम करता हूं परन्तु कुछ फल नहीं होता, अगिनबोट इसीके इर्दगिर्द है मालूम होता है कि यहांसे थोड़ी दूरपर कोई चुम्बकका पहाड़ है। जहाज कुछ समयमें वहां खिंच जायगा। अगर जहाज उधर ही बढ़गया तो उसके कील कांटे तुरत निकल जायंगे और जहाज डूब जायगा। इसलिये जिसकी इच्छा हो वह इस जिन्दगी बचानेवाले (लाइफ) बोटमें आजाय। यह सुन कर

कितने आदमी उसमें जा बैठे और कितने विचार करने लगे कि इतने बड़े जहाजमें नहीं बच सके तो ऐसी छोटी नावमें क्योंकर बचेंगे ? इतना बड़ा जहाज छोड़कर छोटीसी डेंगीमें कौन बैठने जाय ! कप्तानने कहा कि-भाइयो ! इस छोटेसे बोटमें लोहेकी कीलें नहीं हैं इससे यह बोट लोहचुम्बककी चट्टानके सामने टिक सकता है और बड़ा जहाज़ लोहेकी कील, जंजीर तथा पत्थर आदिसे भरा हुआ है इससे वह लोहचुम्बकके सामने नहीं टिक सकता । परन्तु यह बात बहुत लोगोंके मनमें नहीं जंची । इसके कुछ समय बाद जहाज लोहचुम्बकके पहाड़की तरफ खिंच गया और उसका लोहा चुम्बकसे जा चिपका। जहाजके पटरे अलग अलग होगये और उसमें बैठे हुए सैकड़ों यात्री डूब गये ।

बन्धुओ ! यह दृष्टान्त देकर एक भक्तराज महाराज यह समझाते थे कि प्रभुके नामका स्मरण उस छोटीसी नावके समान है । क्योंकि भगवानका गुण गानेमें किसी तरहकी कठिनाई नहीं है । धर्मके दूसरे अंगोंसे यह काम अधिक आसानीसे हो सकता है । जुदी जुदी सम्प्रदायों तथा मतोंके जो धर्म हैं वे सब जहाजके समान हैं और उनमें मोहके आकर्षणसे खिंच जाने योग्य लोहेके कितनेही कील कांटे हैं । नामस्मरणकी डेंगीमें आकर्षणसे खिंचने लायक कील कांटे नहीं हैं इससे यह डेंगी निरापद है । यह संसारसमुद्र उत्तर ध्रुवकी यात्राके ऐसा कठिन मार्ग है और उसमें लोहचुम्बककी चट्टानें बहुत हैं अर्थात् मन खींचनेवाले मोहके टीले उसमें बहुत हैं । इससे सम्प्रदायके जालमें फँसेहुए मनुष्योंका जहाज ऐसे मोहके टीलोंकी तरफ खिंच जाता है । परन्तु नामस्मरणकी डेंगियोंको ऐसे खिंचावका डर नहीं है इससे वे बचजाती हैं । अगर बचना हो तो प्रभुके महामंगलकारी नामका स्मरण करते रहिये । स्मरण करते रहिये ।

१९२—बहुत आदमी पैसा कमानेके आगे धर्मकी परवा नहीं करते ; परन्तु ऐसा करना कितनी बड़ी भूल है इसको जरा विचारना ।

आजकलके जमानेमें पैसा कमानेकी ओर लोग इतना अधिक ध्यान रखते है कि उसकी धुनमें धर्मको एकदम भूल जाते हैं। कितने आदमी तो खुल्लमखुल्ला कह भी देते है कि धर्म धर्म करनेसे क्या मिलता है ? पैसेसे तो तुरतही लाभ होता है। देखो पैसा होनेसे खानेको मिलता है, पैसा होनेसे अच्छा कपड़ा गहना मिलता है, पैसा होनेसे रहनेके लिये सुन्दर मकान मिलता है ; पैसा होनेसे विद्याभ्यास कर सकते हैं; पैसा होनेसे यात्रा कर सकते हैं; पैसा होनेसे स्त्री पुत्र माता पिता आदि कुटुम्बको सुखी रख सकते हैं; पैसा होनेसे मौज शौककी सामग्री मिल सकती है और पैसा होनेसे दुनियामें इज्जत बढ़ती है तथा परमार्थ भी किया जा सकता है। इसलिये हम तो पैसेको मुख्य समझते हैं। धर्म करनेसे हमें तुरत लाभ नहीं दिखाई देता। तब नगद माल छोड़कर उधार धर्मकी आशामें कौन पड़ा रहे ?

बहुत सयाने, व्यवहारचतुर मनुष्य ऐसी ही बातें करते हैं, उनसे हरिजन कहते हैं कि—

भाई ! धर्ममें जितना लाभ है उतना लाभ पैसेमें नहीं है। परन्तु तुम सिर्फ पैसेकी बातोंमें ध्यान रखते हो और धर्मकी बातोंसे बहुत लापरवाही दिखाते हो इससे धर्मका लाभ तुम्हारी समझमें नहीं आता। जरा विचार तो करो कि धर्म करनेसे मन जैसा बड़ा होजाता है वैसा बड़ा क्या पैसेसे हो सकता है ? धर्म करनेसे हृदय जैसा कोमल होता है, वैसी कोमलता क्या धनसे मिल सकती है ? धर्म करनेसे व्यवहार चलानेमें जैसी सफाई आ-

जाती है वैसी सफाई क्या पैसेका गुलाम बने रहनेसे आ सकती है ? धर्म करनेसे जगतमें सब जीवोंकी भलाई करनेकी जो वृत्ति जागृत होती है वह क्या केवल पैसा कमानेसे जागती है ? धर्म करनेसे दया, क्षमा, धीरज, शान्ति, इन्द्रियनिग्रहआदि सद्गुण भक्तोंमें आजाते हैं; वे सब गुण क्या केवल पैसेके जोरसे खरीदे जासकते हैं ? धर्म करनेसे हृदयमें जो एक प्रकारका मानसिक आनन्द होता है वह आनन्द क्या केवल पैसेसे मिल सकता है ? इतना ही नहीं, धर्म करनेसे भावनायें खिल जाती हैं; धर्म करनेसे मोक्ष देनेवाली पवित्रता आजाती है; धर्म करनेसे एक प्रकारकी तृप्ति मिलती है और धर्म करनेसे अगम्य महान ईश्वरसे मित्रता होजाती है । यह सब क्या केवल पैसेसे होसकता है ? कहो कि नहीं । इसीसे चतुर आदमी कह गये है कि मनुष्यको धनकी जितनी जरूरत है उससे अधिक जरूरत जिन्दगी सुधारनेवाले धर्मकी है । इसलिये तुम सबको हमारी यही सलाह है कि जैसे पैसा कमानेका ध्यान रखते हो वैसे धर्म करनेका भी ख्याल रखना । नहीं तो खाली पैसेसे सच्चा सुख कभी नहीं पा सकोगे । इसमें तनिक सन्देह नहीं है । सो पैसा कमानेके साथ धर्म कमानेका भी ध्यान रखना । पैसा व्यवहार सुधारनेका साधन है परन्तु धर्म जिन्दगी सुधारनेका साधन है । यह बात याद रखना ।

दोहा,–नाम विना बेकाम है, छप्पन भोग विलास ।
क्या इंद्रासन बैठना, क्या वैकुण्ठ निवास ॥
कामधेनु पारस मणी, कल्पवृक्षकी छांज ।
तुलसी हरिके भजन बिन, सबै नरकको साज ॥
अरब खरब लौं धन मिले, उदय अस्त लौं राज ।
तुलसी हरिके भजन बिन, सबै नरकको साज ॥

तुलसी सोई चतुरता, रामचरण लवलीन ।
परधन परमन हरनको, वेश्या बड़ी प्रवीन ॥

१५२-धनके लोभी मनुष्योंका नमूना या एक लोभी सेठकी बात ।

एक जहाज लन्दनसे अमेरिका जाता था । उसमें बहुतसे यात्री सवार थे । रास्तेमें बड़े जोरसे तूफान आया । अगिनबोट चक्कर खाकर डूबने लगा । तब कप्तानने सब यात्रियोंसे कहा कि इन छोटी छोटी डेंगियोंमें आजाओ । जल्दी करो, जल्दी करो नहीं तो रह जाओगे । जहाज थोड़ी ही देरमें डूब जायगा । यह सुनकर बहुत आदमी डेंगियोंमें जा बैठे परन्तु बहुत आदमी अपना सरसामान उठानेमें लगे रहे । उस समय कप्तानने बार बार कहा कि जल्दी करो, जल्दी करो । अगिनबोट डूब रहा है । निकलो, निकलो । परन्तु इतना कहनेपर भी एक लोभी आदमी उसमेंसे नहीं निकला । कप्तानने उससे कहा-कि तुम देर कर रहे हो, याद रखो कि डूब जाओगे । उस आदमीने कहा कि मैं भले ही डूबजाऊं परन्तु इतना धन छोड़कर यहांसे नहीं टलूंगा । कप्तानने कहा-तुम क्या कहते हो ? मर जानेपर यह धन तुम्हारे किस काम आवेगा ? उस लोभीने कहा कि यह तो कहा जायगा न कि मरते समय मेरे पास इतना रुपया था, रुपया लिये मुझे मरजाना पसन्द है परन्तु रुपया छोड़कर जीना पसन्द नहीं है । इसके कुछ ही देर बाद अगिनबोट डूब गया और उसमें वह लोभी मनुष्य भी डूब मरा परन्तु बाहर नहीं निकला ।

भाइयो ! इसी तरह लोभी अमीर अन्तिम घड़ीतक धनका लोभ नहीं छोड़ते और यह कहलानेमें अपनी सार्थकता समझते हैं कि हम मरनेके बाद इतना धन छोड़ गये । परन्तु याद रखना कि यहां बहुत धन छोड़ जानेवालेका हरिके हुजूर आदर नहीं होता, वरंच प्रभुके अर्थ धन खर्च करके जानेवालेका ही आदर होता है ।

१५४–बहुत आदमी दुःखको बढ़ा बढ़ाकर अपने मनमें नाहक दुखी हुआ करते हैं ।

सचमुच दुःख हो और उससे दुखी होना पड़े तो यह बात दूसरी है परन्तु बहुत जगह ऐसा होता है कि असलमें दुःख नहीं होता सिर्फ अपने मनकी कमजोरीके कारण बहुत आदमी नाहक दुखी हुआ करते हैं । जैसे—

कोई आदमी कहता है कि मेरे पास सोनेके फ्रेमवाला चश्मा नहीं है । इसके लिये उसका मन कचोटता है और वह दुखी होता है । चश्मा न होनेसे दुखी होता है परन्तु आंख मिली है इसके लिये उपकार माननेका मन नहीं होता । कोई आदमी कहता है कि मेरे पैरमें जूता नहीं है; मैं बहुत दिनोंसे विना-जूतेके चलारहा हूं । यह कहकर वह जूतेके लिये शोक करता है, परन्तु बहुत आदमी उसकी नजरके सामने लंगड़े दिखाई देते हैं । उन्हें देखकर क्या किसी दिन भी उसे यह विचार हुआ है कि प्रभुने मुझे पैर दिये हैं और पैरोंको सलामत रखा है यह उसका थोड़ा उपकार नहीं है ? जैसे जूता नहीं है वैसे अगर पैर ही न होता या पैरमें ही कोई दोष होता तो वह क्या

कर सकता ? बहुतेरे आदमी कपड़ेके लिये अफसोस करते है और कहते हैं कि हमें पहननेके लिये अच्छा कपड़ा भी नहीं मिलता। इस तरह कपड़ेका अफसोस करते है परन्तु अपना शरीर बना हुआ है और भला चंगा है इसके लिये ईश्वरका उपकार माननेका मन नहीं करता। हमारी आंखोंके सामने कितने आदमी मर जाते हैं परन्तु वे अभीतक जीते जागते है यह क्या प्रभुका उपकार नहीं है ? विचार कीजिये कि जीनेका सुख बड़ा है या अच्छा कपड़ा न होनेका दुःख बड़ा है ? सच पूछिये तो दुःख बहुत बड़ा होता ही नहीं। परन्तु बहुत आदमियोंमें बढ़ा बढ़ाकर दुःख बतियानेकी आदत पड़ी रहती है; इससे वे दुःखका रोना रोया करते हैं। याद रहे कि ऐसा करना हरिजनोंका काम नहीं है, ऐसा करना भक्तोंका काम नहीं है और ऐसा करना ईश्वरकी इच्छाके अधीन रहनेवाले ज्ञानियोंका काम नहीं है। यह तो मोहवादी अज्ञानियोंका काम है। इसलिये सच्चा भक्त होना हो तो बढ़ा बढ़ाकर दुःखकी बातें मत कहना और झूठमूठ मनहीमन दुखी मत हुआ करना वरंच दुःखके समय भी ईश्वरका उपकार मानना सीखना और यह सोचना कि इतने ही दुःखसे छुटकारा मिला है यह भी उसकी कृपा ही है। अगर इससे भी अधिक दुःख आता तो हम क्या कर सकते ? चश्मा न मिलनेसे चलजायगा परन्तु अंधे होगये होते तो क्या करते ? नाकमें पहननेकी नथ नहीं है मगर नाक ही कटगयी होती, तो क्या करते ? पढ़नेको पुस्तक नहीं है परन्तु पढ़ने ही न आता तो क्या करते ? अच्छा अच्छा खानेको कभी कभी नहीं मिलता परन्तु खानेको मिलनेपर भी ऐसा रोग हुआ होता कि खाया ही न जाता तो क्या करते ? बहुत धन नहीं मिला यह बात

सच है परन्तु इसके बदलेमें कुटुम्बमें जो शान्ति है उसका ख्याल किसी दिन किया है ? पलंग नहीं है परन्तु हर रोजम ऊंची नींद आजाती है इसके लिये किसी दिन उपकार माना है ? जिन्हें बड़े बड़े पलंग होनेपर भी पंखा झुलवा झुलवा कर और उबजिया उबजिया कर रात काटनी पड़ती है और किसी तरह नींद नहीं आती उनका हाल आपने किसी दिन जांचा है ? खिताब या डिग्री न मिलनेपर आप अफसोस करते हैं परन्तु दिवाला नहीं निकालनापड़ा इसको गनीमत किसी दिन समझा है ?

बन्धुओं ! आप इन सब विषयोंका विचार करेंगे तो जरूर आपकी समझमें आजायगा कि हम जितना दुखी हुआ करते हैं उतना दुखी होनेका कोई खास कारण नहीं है । हम नाहक अपने दुःखको बढ़ाया करते हैं । दुःख बढ़ाना बहुत बड़ा पाप है । ऐसे पापमें पड़े रहना हरिजनोंका काम नहीं है । इसलिये भाइयों और बहनो ! जैसे बने वैसे हर हालतमें सन्तोष मानना और आनन्द भोगना सीखिये और प्रभुका उपकार मानकर छोटे छोटे दुःखोंका ख्याल छोड़ दीजिये । इसके बदले आपको जो ऊंचे दरजेका सुख मिला है उसके लिये उपकार मानकर बड़े ही आनन्दके साथ हरिगुण गाते हुए जीवन बिताना सीखिये । हरिगुण गातेहुए जीवन बिताना सीखिये ।

१५५—दुःखसे दिलगीर मत होना वरंच यह समझ लेना कि दुःखसे भी बहुत फायदा हो जाता है !

बहुत आदमियोंका ऐसा स्वभाव है कि वे वारंवार हर जगह दुःखकी ही बात कहा करते हैं ; दुःखकी ही शिकायत

किया करते हैं और दुःखका ही रोना रोया करते हैं। परन्तु जो हरिजन है वे कहते हैं कि दुःखके विचार करना और दुःखकी बातें बतियाना बहुत ही बुरा है। दुःखसे भी बहुत तरहका लाभ होता है परन्तु इस बातको हम अच्छी तरह नहीं समझते इस कारण दुःखसे हारजाते हैं, दुःखसे निराश होजाते हैं और दुःखसे डरजाते हैं। याद रहे कि हर तरहका दुःख बहुतकरके हमें आगे बढ़ाने तथा मदद करनेके लिये ही आता है। इसके सिवा कभी कोई बुरा काम किया हो तो उसके दण्डस्वरूप भी दुःख आता है परन्तु वह दण्ड भी हमें सुधारनेके लिये ही होता है। जैसे—कोई उपद्रवी लड़का छोटा मोटा अपराध करता हो तो उसे पकड़ कर उद्योगशाला (रिफार्मेटरी स्कूल) में भेजते हैं। उस समय उस लड़केको उद्योगशालामें जाना और उसमें रहकर कामकाज सीखना दुःखदायी लगता है इससे वह कुढ़ता है और पकड़वानेवाले तथा पुलिसको गालियां देता है और उद्योगशालामेंसे भाग जानेकी कोशिश करता है परन्तु पीछे जब कोई अच्छा काम सीखलेता है और मीयाद पूरी होने-पर बाहर निकलकर रोजगार धंधा करता है, पांच रुपये कमाता है तथा इज्जतदार बनता है तब पहले जिस उद्योग-शालाको दुःखदायी मानता था उसीका बखान करता है और उसका उपकार मानता है। इसी तरह दुःख भी एक शाला है परन्तु यह शाला बड़ी ही करारी है इससे उसमें सीखना हमें नहीं रुचता। इस कारण हम कुढ़ते हैं, परन्तु आगे जाकर मालूम होता है कि दुःखसे भी जिन्दगी सुधरती है, दुःखसे बड़ा मनसूबा बंधता है, दुःखसे नया जोर आता है, दुःखसे बड़ा काम करनेका रास्ता मिलजाता है, दुःखसे जिन्दगीका रुख बदलजाता है, दुःखसे दीनता, उपकारबुद्धि, गम खाना

आदि गुण आजाते हैं और दुःखसे ईश्वरी रास्तेमें चलनेका मन होता है । इसलिये इस बातको खूब अच्छी तरह समझ लेना कि हमें हैरान करने के लिये ही दुःख नहीं आता वरंच आगे बढ़ानेके लिये और खुसी करनेके लिये दुःख आता है। जैसे—

जहांका समुद्र तूफानी होता है और जहां वारंवार भयंकर लहरें उठती हैं तथा लापरवा मलाहोंकी नावें उलट कर बैठजाती हैं वहांके मलाह बड़े बहादुर होते हैं। क्योंकि तूफानी समुद्रके कारण उन्हें जो कठिनाई सहनी पड़ती है, तूफानी समुद्रके कारण उन्हें जो कुछ तरद्दुद उठानी पड़ती है और तूफानी समुद्रके कारण उन्हें जो जोखों सहना पड़ता है उससे वे मलाह दूसरे मलाहोंसे अधिक खबरदार और बहादुर बन जाते हैं। इस प्रकार समुद्रके तूफानके कारण मलाहोंकी बहादुरी बढ़ती है और काम करनेकी युक्ति आती है तथा तूफानमें टिकने लायक नाव बनाना उन्हें आता है। परन्तु जिस देशमें समुद्र शान्त होता है और जहां भारी तूफान नहीं आता वहांके मलाहोंमें ऐसी चतुराई नहीं होती। इससे समझ सकते हैं कि दुःखसे भी आदमी सुधरते हैं और आगे बढ़ते हैं, इसलिये दुःखसे दुख मत जाना वरंच जैसे बने वैसे दुःखसे भी कुछ लाभ उठाना सीखना चाहिये।

जो राज्य सरहदपर होता है और जिसको दूसरे राज्योंसे बारबार लड़ाई करनी पड़ती है उस राज्यके सिपाही बड़े बहादुर होते हैं और वहांकी प्रजामें कुछ विशेष जागृति तथा तेजस्विता और उग्रता होती है। इसके विरुद्ध जो राज्य बहुत निरापद है और जिसे लड़ाईका डर नहीं है उस राज्यके सिपाही कमजोर होते हैं, उस राज्यके अफसर शौकीन होते हैं और उस राज्यकी प्रजामें एक प्रकारकी खास निर्बलता होती है तथा

उस राज्यका कानून ढीलासीला और बेदम होता है। इससे समझ सकते हैं कि दुःखसे मनुष्यकी चतुराई बढ़ती है; दुःखसे नयी नयी युक्तियां सूझती है; दुःखसे बहादुरी बढ़ती है और दुःखसे मनुष्य घर गृहस्थीमें तथा इस जगतमें आगे बढ़ सकते हैं। इसलिये याद रखना कि दुःखको हम इस समय जितना खराब समझते हैं उतना यह खराब नहीं है वरंच यह हमें आगे बढ़ानेमें मददगार है। सो दुःखसे भी कुछ सुख लेना सीखना चाहिये।

जिन व्यापारियोंको चढ़ाऊपरी करनी पड़ती है, जिन व्यापारियोंको व्यापार चलाना पड़ता है, जिन व्यापारियोंको कठिनाइयोंके बीचमें काम करना पड़ता है और जिन व्यापारियोंको प्रतिकूल संयोगोंमें नफा उठाना पड़ता है उन व्यापारियोंकी चतुराई जानने योग्य होती है, उन व्यापारियोंकी खूबी समझने योग्य होती है और उनका ढंग नकल करने योग्य होता है। इसके विरुद्ध जिन व्यापारियोंको किसी तरहका साहस नहीं दिखाना पड़ता, जिन व्यापारियोंको जोखों भरी उथलपुथल करनेवाली झोंकीमें लात नहीं देना पड़ता, जिन व्यापारियोंको परदेश नहीं दौड़ना पड़ता और जिन व्यापारियोंको कचवावट चढ़ाऊपरी नहीं करनी पड़ती वे व्यापारी कमजोर रहजाते हैं, वे व्यापारी नाममात्रके नफेमें रहजाते हैं, वे व्यापारी जरासी जोखों आनेपर भी घबराजाते हैं और घाटा उठानेका काम कर बैठते हैं और वे व्यापारी दूरतक नजर नहीं दौड़ा सकते तथा बहुत नफा नहीं उठा सकते। इससे समझ सकते है कि अड़चलोंसे, कठिनाइयोंसे, प्रतिकूल संयोगोंसे और दुःखसे ही मनुष्य आगे बढ़ सकते हैं। इसलिये दुःखको दुःख ही मत मानिये वरंच यह समझना सीखिये कि हमें आगे बढ़ानेके लिये और हमारी भलाई करनेके लिये ही दुःख आया है।

१५६—दुःखसे दिलगीर मत होना वरंच यह समझलेना कि दुःखसे भी बहुत फायदा होजाता है । (२)

याद रखना कि जिन सन्तोंने बहुत बहुत दुःख भोगा है; जिन हरिजनोंने बहुत तप किया है और जिन भक्तोंको जगतका सामना करनापड़ा है वेही सबसे बड़े महात्मा हुए हैं, उन्हींका असर आजतक लोगोंके चित्तपर है; उन्हीके नाम अमर हुए हैं और उन्हींके चरित्रसे हजारों और लाखों मनुष्योंको लाभ होता है। जिन संतोंने बहुत शान्तिसे अपनी जिन्दगी बितायी है और सब तरहके आराम सहित भजन किया है उनका नाम निशान कोई नहीं जानता। दुखी भक्तोंकी भक्तिकी प्रभुके हजूर जितनी कीमत होती है उतनी कीमत किसी बहुत आराम-तलब भक्तकी भक्तिकी नहीं होती। सब तरहका सुबीता होनेसे कुछ काम होगया तो कौन बड़ी बात हुई? जब किसी तरहका सुबीता न हो, चारों ओरसे कठिनाइयां ही हों और तिसपर भी कुछ आविष्कार किया जासके तभी वह आविष्कार कीमती समझा जाता है। इसलिये यह बात भी ध्यानमें रखना कि दुःखसे ही बहुतेरे संत सच्चे महात्मा हुए हैं। वे केवल सुखमें पड़ते तो कदाचित उनकी भक्ति छूटगयी होती और वे बड़े सन्त न हो सकते। सुखके समय भक्ति करना और ज्ञान लेना बहुत कठिन मालूम होता है, परन्तु दुःखके समय भगवान वारंवार याद आता है और दुःखके समय जो ज्ञान मिलता है वह टिकाऊ होता है। इसलिये भगवानके निमित्त जिन्होंने भक्तिका दुःख भोगा है उन संतोंका माहात्म्य बहुत बढ़ जाता है। जिन्होंने सुखसे भक्ति की है उनकी कोई बहुत परवा नहीं

करता। क्योंकि केवल सुखमें सच्ची भक्ति हो ही नहीं सकती। जब किसी प्रकारका दुःख हो और उससे मानसिक युद्ध करना हो तभी भक्तिका मूल्य बढ़ता है। इसलिये याद रखना कि इस जगतमें भक्ति बढ़ानेवाला तथा सन्तोंकी महिमा बढ़ानेवाला भी दुःख ही है। ये सब बातें कह कर हम आपको यह समझाना चाहते हैं कि आप जैसा सोचते है दुःख वैसा और उतना खराब नहीं है; वरंच लोगोंको सुखी बनानेके लिये ही और आगे बढ़ानेके लिये ही थोड़ा थोड़ा दुःख आता है इसलिये दुःखसे कदरा मत जाना और दुःख रोनेमें ही मत रह जाना बल्कि जैसे बने वैसे दुःखसे भी कुछ सार लेना दुःखको भी भगवदूइच्छा समझ कर शान्तिसे भोग लेना और व्यर्थकी बड़बड़ मत करना तथा अपने दुःखका छींटा दूसरोंके हृदयपर मत डालना। इतना करसकें तोभी बहुत है।

बन्धुओ! इस जगतमें जो अनेक प्रकारकी दवाएं निकली हैं वे क्योंकर निकली हैं यह आप जानते हैं? दुःखके कारण ही सब दवाएं निकली हैं। अगर दुःख न होता, रोग न होता, दर्द न होता तो दवा न निकलती। दुःखने ही आविष्कार करना सिखाया है। ऐसे आविष्कारमें कितना परिश्रम पड़ता है, ऐसे आविष्कारके लिये कितनी बुद्धि लड़ानी पड़ती है, कितने गहरे उतरना पड़ता है, कितना स्वार्थ त्याग करना पड़ता है, कितना खर्च करना पड़ता है, कितना समय लगाना पड़ता है और कितने विषयोंका अभ्यास करना पड़ता है यह आप जानते है? यह सब दुःखके कारण होता है। अगर दुःख न हो तो मनुष्य सहजमें आपसे आप यह सब न करें। दुःखको दूर करनेके लिये तथा सुख भोगनेके लिये मनुष्य ऐसा आविष्कार करते हैं। इससे सबका मूलकारण दुःख ही

है। इसलिये याद रखना कि दुःख मामूली चीज नहीं वरंच बड़ा कड़ा गुरु है; मनुष्योंमें जो मनुष्यत्व है दुःख उसे बाहर निकालनेवाली कीमिया है और दुःख मनुष्योंको सुखके रास्तेमें लेजानेवाला पंख है। यह समझ कर दुःखसे कायर मत होना और दुःखका रोना मत रोया करना वरंच जैसे बने वैसे दुःखके समय धीरज धरना सीखना तथा पहले समयके मनुष्योंने जैसे दुःखमें भी अपना काम निकाल लिया है वैसे आप भी दुःखमें अपना काम निकाल लेना सीखिये।

भाइयो! दुःखमें भी बहुत कल्याण हो सकता है और दुःखमें भी जिन्दगी सुधर सकती है। सुखसे अनेक प्रकारका मोह होजाता है परन्तु दुःख आगे बढ़नेके लिये धकेलता है; आगे बढ़नेका मन न हो तोभी जबरन धक्का मार मार कर आगे बढ़ाता है और जो स्थिति अपनेको पसन्द न हो उस स्थितिमें पहुंचा देता है। इससे आगे जाकर लाभ ही होता है इसमें कुछ भी सन्देह नहीं है। इसलिये भाइयो और बहनो! दुःखसे कायर होकर कुरकुरानेमें ही मत रह जाइये वरंच हमें सुधारनेके लिये, हमारी मददके लिये तथा हमारे कल्याणके लिये ही दुःख आया है यह समझ कर उसे शान्तिसे सह लीजिये और उससे भी कुछ शिक्षा ग्रहण कर ऐसा कीजिये कि दुःख भी आगे जाकर सुखरूप बन जाय, हम चाहते हैं कि परम कृपालु परमात्मा आपको ऐसा करनेका बल दे।

दोहा—दुखमें सुमिरन सब करे, सुखमें करे न कोय।
जो सुखमें सुमिरन करे, तो दुख काहेको होय॥
सुखमें सुमिरन ना किया, दुखमें कीया याद।
कहे कबीर ता दासकी, कौन सुने फरयाद॥

सुखके माथे सिल पड़े, नाम हृदयसे जाय ।
बलिहारी वा दुःखकी, पलपल नाम जपाय ॥
विपत भली हरिनाम ले, काम कसौटी दुःख ।
राम विना किस कामकी, माया संपत सुक्ख ॥

१५७–स्कूल कालिजोंमें जितना सीख सकते हैं उससे, अगर ज्ञान लेना आवे तो, घरके व्यवहारसे बहुत ज्यादा सीख सकते हैं ।

प्रारम्भका ज्ञान प्राप्त करनेके लिये स्कूल और कालेज बहुत उपयोगी विद्यालय है । इससे बहुत विद्यार्थी वहां जाते हैं और अपने गांवमें अच्छा सुबीता न हो तो बहुत खर्च उठाकर तथा बहुत कठिनाइयां सहकर भी ज्ञान पैदा करनेके लिये बहुत आदमी परदेश जाते हैं । ज्ञानके मूलतत्त्व समझने तथा ज्ञानके सिद्धान्त मगजमें जमानेके लिये ऐसा करना बहुत जरूरी है । इससे पहले जमानेमें बहुतेरे बालक ऋषियोंके आश्रममें जंगलमें रहते थे तथा कितने विद्यार्थी काशी नदीया आदि स्थानोंमें भिन्न भिन्न पण्डितोंके घर रहकर विद्याभ्यास करते थे । आजके जमानेमें युरोप, अमेरिका, जापान आदि देशोंमें शिल्पकलाकी शिक्षा देनेवाले बड़े बड़े कालेज हैं इससे बहुत विद्यार्थी वहां जाते हैं । यह बहुत अच्छी बात है । परन्तु इसके सिवा विद्यार्थियोंके लिये अपने घरमें भी बहुत कुछ सीखनेको है और स्कूल कालेजमें नीति या धर्मके जो जो नियम सिद्धान्त या सूत्र सीखनेमें आते हैं उन सबका अनुभव लेनेका मौका घरमें मिलता है । जैसे-स्कूलमें नीति सिखाते समय कहा जाता

है कि धीरज रखना, गम खाना, अफसोस न करना, झगड़ा न करना, उदारता रखना और शान्ति रखना । यह सब पुस्तकें पढ़कर विद्यालयमें सीखते हैं परन्तु उन सबसे काम लेनेका अवसर तो घरमें ही होता है । जैसे-

लड़के ऊधम मचाते हों और उनका ऊधम अपनेको न रुचता हो तोभी उनपर प्रेम रखना चाहिये । नौकर कभी कभी भूल कर देते हो और उससे कुछ नुकसान होजाता हो तोभी उनपर दया रखना चाहिये । अपने बड़े बहुत लोभी या क्रोधी स्वभावके हों तोभी उनकी इज्जत करना चाहिये । अपनी स्त्री बहुत खराब स्वभावकी हो और बात बातमें लड़ बैठती हो तथा कोई अच्छी बात न समझती हो तोभी उसे प्रेमभावसे निबाह ले जाना चाहिये और उसका स्वभाव सुधारनेका उपाय करना चाहिये । जवान लड़का पढ़ता न हो या उड़ाऊ हो तो उसे सुधारने और उसपर स्नेह रखनेके लिये अपने मनको दबाना चाहिये । भाई अपनेसे विरुद्ध स्वभावका हो और उसकी बहू बहुत लड़ाकू हो तथा घर घर जाकर निन्दा करती हो तो-भी उसे माफ करना चाहिये और उसके साथ सलूक रखना चाहिये । परिवारमें जब कोई * सगांग बीमार पड़े तब बहुत यत्नसे उसकी सेवा शुश्रूषा करना चाहिये । अपनी बहन या लड़कीको ससुरालमें किसी तरहका दुःख हो तो यथाशक्ति उसकी मदद करना चाहिये । बूढ़ी फूफी, अधेड़ मौसी, भोली-भाली दादी तथा परिवारके दूसरे बूढ़े पुरनियोंसे जिनके रस्म रिवाज और स्वभावमें आपके स्वभावसे जमीन आसमानका

* सगांग = स्वाङ्ग = स्व+अङ्ग = अपना अंग यानी अपने परिवारका आदमी ।

फर्क हो और आपकी हरएक रीतिभांति तथा विचार जिन्हें उल्टा मालूम देता हो, इससे जो आपसे हमेशा चिढ़े रहते हों, उनके स्वभावको भी निबाहलेना और उनसे भी हेत प्रीति सहित बर्ताव करना चाहिये। यह कोई छोटी बात नहीं है। यह सब ज्ञान घरमें मिल सकता है।

इसके सिवा घर गृहस्थीमें कभी कभी अचानक किसी तरहकी गड़बड़ आपड़ती है। जैसे—कभी जिसके ऊपर घरका पूरा भार हो वही आदमी मरजाता है; कभी धन जाता रहता है, कभी भाई भाईमें लड़ाई होनेसे अदालत जाना पड़ता है, कभी ब्याह शादीमें विघ्न पड़ता है; कभी जाति बिरादरीमें तनाजा पड़ता है, कभी पुराने अच्छे नौकर जाते रहते हैं; कभी कोई छोटी बात बड़ा रूप धारण करलेती है और किसी समय और कोई अनसोंची आफत आपड़ती है। ऐसे समय शान्ति रखना, क्षमा रखना, धीरज रखना, दिलको बड़ा रखना; ऐसे समय अफसोससे घबरा न जाना वरंच ऐसे प्रसङ्गोंको सावधानीसे संपरा लेजाना ही सच्ची खूबी है। यह सब प्रैक्टिकल ज्ञान घर गृहस्थीसे मिल सकता है। स्कूल कालिजका ज्ञान पहले घरमें ही अनुभवमें आ सकता है, इससे घरको सबसे बड़ा विद्यालय समझ कर घरमें ज्ञान पैदा कीजिये और स्कूलमें मिली हुई विद्यासे घरमें लाभ उठाइये। तभी ठीक ठीक आगे बढ़ सकेंगे।

भाइयो! केवल पोथियोंके ज्ञानमें मत रह जाइये वरंच ऐसा कीजिये कि आपको घर गृहस्थीमें ज्ञान मिले और आपके स्कूलमें पाये हुए ज्ञानका लाभ कुटुम्बको मिले।

१५८–बहुत आदमी बाहरके लोगोंके सामने भक्त बनते हैं परन्तु अपने घरके आदमियोंके सामने भक्त नहीं रहते।

एक सन्त कहते हैं कि चिरागकी रोशनी दूरतक जाती है परन्तु उसके तले अंधेरा होता है। वैसेही आजके जमानेमें बहुत आदमी ऐसे हैं जिनकी कीर्ति बहुत आदमियों तथा बहुत स्थानोंमें फैली रहती है; इसके सिवा भीतरसे देखनेपर भी वे बहुत बातोंमें अच्छे आदमी जान पड़ते हैं क्योंकि उनमेंसे किसीमें ज्ञान अधिक होता है, किसीमें परमार्थ अधिक होता है; किसीमें सेवा करनेका बल अधिक होता है; किसीमें व्याख्यान देनेकी शक्ति अधिक होती है, किसीमें सामनेके आदमीको प्रसन्न करनेकी शक्ति अधिक होती है; किसीमें शिष्टाचार अधिक होता है; किसीमें उदारता अधिक होती है; किसीमें किसी किसी विषयका अभ्यास अधिक होता है, किसीमें कोई गुण अधिक होता है, किसीमें भाईचारा अधिक होता है, किसीमें कुलीनता अधिक होती है, किसीमें अमीरी अधिक होती है और किसीमें और कोई सद्गुण होता है। इससे वे बहुत प्रसिद्ध हो जाते हैं और बहुत आदमियोंको प्रसन्न करते हैं। इसके सिवा अपनेसे काम पड़नेवाले बाहरके लोगोंको भी प्रसन्न रखनेकी बड़ी कोशिश करते हैं परन्तु अपने घरमें उनकी पोल चलती है। वहां जैसी चाहिये वैसी भलाई वे नहीं कर सकते। हमने देखा है कि बाहर बहुत अच्छे गिने जानेवाले और बाहरी लोगोंसे बहुत अच्छा बर्ताव रखनेवाले मनुष्य भी अपने नजदीकियोंसे अच्छा बर्ताव नहीं रखते। जैसे–उन अच्छे आदमियोंमेंसे कोई अपनी स्त्रीसे लड़ता है,

कोई अपने भाईसे झगड़ता है, किसीकी अपने बापसे नहीं बनती, किसीकी अपने लड़केसे नहीं पटती, किसीकी अपने पड़ोसियोंसे पटरी नहीं बैठती; किसीको ससुरालवाले ज़हरसे लगते हैं, किसीकी अपनी बहनसे नहीं बनती, किसीकी अपने दादा या दादीसे नहीं बनती, किसीकी अपने मालिकसे नहीं बनती, किसीकी चाचा, मामासे नहीं बनती, किसीकी अपनी भौजाईसे नहीं पटती और किसीकी अपने गुरुसे नहीं बनती। ऐसे आदमी और सब विषयोंमें बड़े कुशल होते हैं और बाहरके बहुत आदमियोंसे बहुत शिष्टतासे, बड़े अदबसे बर्ताव करते हैं परन्तु अपने सर्वांगोंसे अच्छा बर्ताव नहीं करते। ऐसा बर्ताव "चिराग तले अन्धेरा" ऐसा है। आजके ज़मानेमें बहुत अच्छे अच्छे आदमी भी ऐसी भूलमें पड़े रहते हैं। भाइयो! अगर सच्चे हरिजन होना हो तो ऐसी भूलमें मत पड़े रहिये और ऐसा मत कीजिये कि आपके घरमें ही अंधेरा रहजाय; वरंच आप जैसे अपनेसे काम पड़नेवाले बाहरके लोगोंको प्रसन्न रखनेकी कोशिश करते हैं वैसे अपने मा बाप, स्त्री पुत्र, भाई ,बहन, चाचा मामा, भांजा भतीजा तथा पड़ोसी आदि सबको प्रसन्न रखने और सबके साथ प्रेमभावसे बर्तनेकी कोशिश करना। यही हमारी सलाह है। जबतक अपने घरमें ही लड़ाई होती हो तबतक भक्ति ठीक ठीक नहीं शोभती। सच्चे भक्त होनेके लिये सबके साथ प्रेमभावसे बर्तना और उनमें भी जिनका अपने ऊपर अधिक हक हो उनके साथ अधिक प्रेमभावसे बर्तनेकी कोशिश करना। इस तरह कोशिश किया कीजियेगा और ऐसी भावना रखियेगा कि सबके साथ हेत प्रीति रखना उचित है, तो इस समय आपकी जिनसे नहीं पटती और मतभेद रहता है उनसे भी थोड़े समयमें

बनने लगेगा। इसलिये प्रेमपूर्वक प्रभुसे प्रार्थना कीजिये कि हे प्रभु! बाहरके लोगोंसे हमारा इतना मेल रहता है पर घरके लोगोंसे जो विरोध चलता है उससे बचानेकी कृपा कर और यह विरोध मिटानेकी सबुद्धि दे। ऐसी प्रार्थना करते रहेंगे और ऐसी भावना रखेंगे तथा जरा डोर ढील कर काम लेंगे तो परिवारका मतभेद थोड़े समयमें दूर हो जायगा। इसके बाद आपकी भक्ति बढ़ती जायगी और सच्चे रूपमें आती जायगी। इसलिये जैसे बाहरके लोगोंसे प्रेम रखते हैं वैसे घरके-आदमियोंसे भी ऐसा कीजिये कि प्रेम रहे। यह भी कल्याणका मार्ग है।

१८९–परमार्थके काम करते समय अपने नजदीकियोंको मत भूलजाना।

बहुतेरे आदमी बड़े परमार्थी होते हैं परन्तु उनका परमार्थ किसी न किसी कारणसे होता है। जैसे–कितने आदमी प्रतिष्ठाके लिये परमार्थ करते हैं, कितने आदमी दिखावेके लिये परमार्थ करते हैं; कितने आदमी अपनी मन्नत पूरी करनेके लिये परमार्थ करते हैं, कितने आदमी कुछ भारी लाभ होनेसे परमार्थके काम करते हैं; कितने आदमी अपने बाप दादेकी इज़्ज़त तथा कुलीनता बनाये रखनेके लिये परमार्थ करते हैं, कितने आदमी अपने बड़ोंके वसीयतनामेसे परमार्थ करते हैं; कितने आदमी अपने सगे सम्बन्धीकी यादगारमें परमार्थ करते हैं, कितने आदमी अपने सामनेके सम उमरियाको नीचा दिखानेके लिये या उससे भी कुछ करानेके लिये

परमार्थके काम करते हैं और कितने आदमी शरमाशरमी तथा किसीके दबावसे कुछ कुछ परमार्थके काम किया करते हैं। इन सब कामोंमें आजकलके जमानेका असर होता है; इससे कोई दवाखाना बनवाता है; कोई स्कूल खोलता है; कोई कुआ तालाब खुदवाता है; कोई मन्दिर उठवाता है; कोई धर्मशाला बनवाता है; कोई छात्रवृत्ति देता है, कोई तीसमारखांका पुतला बनवानेके फंडमें चंदा देता है, कोई आनाथालयमें मदद करता है और कोई तीर्थमें तथा ब्रह्मभोजमें रुपया खर्चता है। ये सब बातें ठीक हैं और करने योग्य हैं इसमें कुछ सन्देह नहीं क्योंकि आजके जमानेमें परमार्थकी खास करके जरूरत है और दूसरे सब धर्मोंसे यह धर्म पालने योग्य है; तोभी इसमें बहुत आदमी बहुधा एक भूल करते हैं। वैसी भूल न होने देनेके लिये हमारी एक चितौनी है। वह यह कि—

सब आदमियोंको खूब अच्छी तरह यह बात समझ लेना चाहिये कि अपने कुटुम्बका अपने ऊपर सबसे पहला हक है इसके बाद दूसरा हक अपने नजदीकी सम्बन्धियोंका है। तीसरा हक अपने मित्रोंका है। चौथा हक दूरके गोतियोंका है। इसके बाद पड़ोसियोंका हक है। फिर जाति बिरादरीका हक है। फिर गांववालोंका हक है। फिर अनाथोंका हक है। फिर देशका हक है। पीछे इस दुनियाका हक है। यह सब हक क्रमसे चुकाना चाहिये। अर्थात् जिसका अधिक हक हो उसे अधिक देना चाहिये। जिसका पहला हक हो उसे पहले देना चाहिये और जिसका अविच्छिन्न सम्बन्ध हो उसे उसकी योग्यतानुसार अपनी शक्तिभर मदद देना चाहिये। यह शास्त्रकी आज्ञा है और महात्माओंकी ऐसी इच्छा है। परन्तु इसके विरुद्ध आजकल बहुत जगह देखनेमें आता है कि—

भाईका सदावर्त चलता है और बहन कंगाल बनी रहती है; भाईका सदावर्त चलता है और बहनका लड़का भूखों मरता है। बाप विलायतके अस्पतालमें बड़ी रकमका चन्दा देता है परन्तु अपने लड़कोंके पढ़ानेमें कंजूसी दिखाता है। बहुत जगह देखा है कि लोग घरमें ठाकुर पूजा करते हैं इससे मन्दिर तथा पुजारीके लिये खूब खर्च करते है परन्तु अपनी स्त्री या पतोहूको जरूरी खर्च भी नहीं देते। वे बेचारी घर घर रोती फिरती हैं और आहें भरती हैं। एक सबेके बहुत आदमियोंकी छात्रवृत्ति दूसरे सूबेके विद्यार्थियोंको मिलती है परन्तु उनके धनका लाभ उनके दामाद या नाती नहीं उठाने पाते। बहुतेरोंकी धर्मशालाओंमें देशदेशके यात्री उतरते हैं परन्तु उनके बंगलेमें उनकी बहन, बुढ़िया काकी या पुराने विचारकी मौसीको जानेका हुक्म नहीं मिलता। बहुत आदमी अपना धन धर्मार्थ कामोंमें दे देते हैं अर्थात् जिन मन्दिरोंके मालिकोंके पास बहुत धन हो और जिनकी आमदनी खूब हो उनको अपना जेवर तथा मालमता सौंप देते हैं परन्तु अपने नजदीकके या दूरके जो सम्बन्धी दुःख भोगते हो, मजदूरी करते हों, बिना नौकरीके भटकते हों, रोजगारमें घाटा उठा रहे हों और मनही मन मूर्छित हो रहे हों उनकी कुछ भी मदद नहीं करते। बहुतेरे सेठ तरह तरहके फंडमें अपने नामके लिये भारी भारी चन्दा देते हैं और बहुत लोग लजवाकर दबाकर तथा ज़ोर पहुँचाकर उनसे रुपया पैसा हथिया लेते हैं; परन्तु जो आदमी उनके मकानमें या जमीनमें रहते हों और बहुत गरीबीसे गुजर करते हों, जो ब्राह्मण घरपर हररोज धक्का खाते हों, आशीर्वाद देते हों और बूढ़े होगये हों उनके लड़कोंको पढ़ानेके लिये या पड़ोसियोंकी मददमें वे जराभी ध्यान नहीं देते। इस

तरह बहुत आदमी परमार्थ करते है, परन्तु उनका परमार्थ बाहर ही बाहर चला जाता है; जो सच्चे हकदार है, उन्हें उनके परमार्थका कुछ भी लाभ नहीं मिलता। यह अफसोसकी बात है। याद रहे कि ऐसा करना बड़ी भारी भूल है। "बाहर वाले खागये और घरके गावें गीत" वाला काम ईश्वरके दरबारमें बड़ा नहीं समझा जाता। इसलिये भाइयो और बहनो! ऐसा करना कि आपके परमार्थके कामका लाभ, आपपर जिनका अधिक हक हो पहले, उन्हें मिले। ऐसा न हो कि प्रतिष्ठाकी तृष्णा और बड़प्पनके अभिमानमें दूर दूर दृष्टि पड़े और नजदीकी अंधेरेमें रह जायं। परमार्थ करते समय इस बातका ख्याल रखना बुद्धिमानी है, खूबी है, कर्त्तव्य है और इससे प्रभु प्रसन्न होता है तथा परमार्थ अग्रसर होता है। इसलिये ऐसा न होने देनेका ख्याल रखना कि "घरके देवता बनबन डोलें बनके देवता पूजा लें।"

१६०—सब धर्मवालों तथा सम्प्रदायवालोंको यह बात समझलेना चाहिये कि दुनियाके हर धर्म या हर सम्प्रदायमें हमारे ही प्रभुकी पूजा होती है।

सैकड़ों वर्षसे मनुष्यके मनमें धर्म सम्बन्धी बहुत तंग विचार बैठ गये हैं। इससे सब धर्मोंके लोग यही समझा करते हैं कि हमारा ही धर्म सच्चा है बाकी सब धर्म झूठे हैं; हमारी ही क्रिया सच्ची है बाकी सब क्रियाएं झूठी हैं; हमारे ही गुरु पवित्र है बाकी सब धर्मोंके गुरु पाखंडी है और हमारा ही शास्त्र

ईश्वरकी ओरसे आया है दूसरोंके शास्त्र बनावटी हैं। लाखों और करोड़ों मनुष्य ऐसा समझते हैं। इससे भिन्न भिन्न सम्प्रदायोंमें धर्मका झगड़ा हुआ करता है परन्तु महात्मा कहते हैं कि हमारा ही प्रभु हरएक धर्ममें भिन्न भिन्न नामसे पूजा जा रहा है। इसलिये हमें अपना धर्म न छोड़ना चाहिये और दूसरे किसीके धर्मकी निन्दा न करना चाहिये। क्योंकि—

कलकत्ते जानेके लिये एक स्टीमर मद्राससे चलता है, एक स्टीमर रंगूनसे छूटता है और एक स्टीमर बनारससे छूटता है। सबको कलकत्ते जाना है। वे सब रास्तेमें एक दूसरेसे मिले बिना भी कलकत्ते पहुंच सकते हैं। वैसेही इस संसाररूपी समुद्रमें जुदे जुदे धर्मरूपी जहाज चल रहे हैं, इन सब जहाजोंको अन्तमें परमात्माके पास पहुंचना है। रास्तेमें एक दूसरेसे मिले बिना मोक्षधाममें इन सबका पहुंच जाना कुछ आश्चर्यकी बात नहीं है। जगतमें जितने धर्म हैं; जितनी सम्प्रदायें हैं; जितने मत हैं और जितने पंथ हैं वे सब ईश्वरके निकट लेजानेवाले जहाजके समान हैं। उनमें जो जो रीतियां बतायी हैं तथा जो जो क्रियाएं कही हैं वे सब इस समय हमें न रुचें तो यह दूसरी बात है परन्तु उन सबको उनके गुरु उस समयके देश कालके अनुसार कहगये हैं और अपने पंथवाले मनुष्योंको आगे बढ़ानेके लिये ही कहगये हैं। हम छोटी दृष्टिसे देखते हैं इससे दूसरोंके धर्मकी बहुतेरी क्रियाओंका भेद नहीं समझते, और इस कारण हम उन्हें खराब मान लेते हैं। परन्तु असलमें वे धर्म उतने खराब नहीं होते और न खराबीके लिये कोई धर्म चला है; वरंच कल्याणके लिये ही सब धर्म हुए हैं; प्रभुप्रेम जगानेके लिये ही सब धर्म हुए हैं; आचरण सुधारनेके लिये ही सब धर्म हुए हैं; प्रभुका रास्ता बतानेके लिये ही सब धर्म हुए हैं; मनको

अंकुशमें रखना सिखानेके लिये ही सब धर्म हुए है और जगतमें भाईचारा बढ़ाने तथा सर्वशक्तिमान महान परमात्माका जय-जयकार करनेके लिये ही सब धर्म हुए हैं। परन्तु हमारे मनमें जिस धर्मका संस्कार बैठ गया है, जिस धर्मकी क्रियाएं हमें पसन्द आगयी हैं और जिसमें हमें लाभ दिखाई देता है उस धर्मको हम बखानते हैं। ऐसा करना बुरा नहीं है। किन्तु दूसरे धर्मोंकी – जिनकी खूबियां हमने नहीं जांची है, जिनकी क्रियाओंका फायदा जैसा चाहिये वैसा हमने नहीं देखा है, जिनके शास्त्रोंका अध्ययन हमने नहीं किया है, जिनके गुरुओंके सत्संगमें हम नहीं रहे हैं और जिनकी उत्पत्तिके देश तथा समयका सच्चा इतिहास हम नहीं जानते तोभी अपने धर्मके सिवा, उन सब धर्मोंको झूठा कहनेकी मूर्खता करते हैं यह क्या शोककी बात नहीं है! भाइयो। ऐसी भूलमें मत पड़े रहना, वरंच अपने धर्मको उत्तम समझते हुए दूसरे सब धर्मोंके साथ उदारताका बर्ताव करना। जगतके सब धर्म हमारे सर्वशक्तिमान एकही ईश्वरको जुदे जुदे रास्ते भजनेके लिये हुए हैं यह समझकर किसी धर्मकी निंदा मत करना। किसी धर्मकी निन्दा मत करना और अपना धर्म मत छोड़ना।

१६१–अन्तःकरण शुद्ध हुए विना दिखाऊ कामोंसे कुछ नहीं होता।

किसी दुबले पतले आदमीको मोटा ताजा बननेकी इच्छा हो और इसके लिये वह आदमी हररोज अपने शरीरपर खूब दुध

घी और मलाई चुपड़ाकरे तो मोटा नहीं हो सकता। इन सब चीजोंको खाया करे तो बलवान हो सकता है। जो भोले भक्त बाहरी ठाटबाटमें ही रह जाते हैं और तिसपर भी अपनेको भक्त मानते हैं वे भी ऐसी ही भारी भूल करते हैं। मोटी मोटी माला पहनना, लम्बे लम्बे तिलक लगाना और ऐसे ही दूसरे बाहरी चिन्ह धारण करके प्रसन्न होजाना सच्चे भक्तका लक्षण नहीं है। यह तो सिर्फ भक्तिका बाहरी चिन्ह है। भक्तिका असली लक्षण तो भीतरकी पात्रता है; भक्तिका असली लक्षण मायासे रहित होना है; भक्तिका असली लक्षण अन्तःकरणकी शान्ति है; भक्तिका असली लक्षण अपने भाइयोंकी प्रभुके प्रीत्यर्थ सेवा करना है और भक्तिका असली लक्षण भगवानका प्रेम अपने हृदयमें लाना है। ऐसे लक्षण आये विना जो मनुष्य खाली बाहरी चिन्ह धारण किये फिरते हैं वे बहुत ठगे जाते हैं। ऐसे मनुष्योंके विषयमें संत कहते हैं कि वे पानी भरनेकी झझर समान हैं। झझर बाहरसे धोधाकर अच्छी तरह साफ रख सकते हैं इससे वह ऊपरसे बहुत साफ दिखाई देसकता है। परन्तु उसका मुंह बड़ा तंग होता है इससे भीतर कभी ठीक ठीक सफाई नहीं हो सकती। वैसे जो ढोंगी आदमी हैं वे बाहरसे बड़ी सफाई रखते हैं और भक्तिके चिन्ह धारण करते हैं परन्तु भीतरसे मलिन होते हैं। भीतर साफ करना उन्हें आता ही नहीं और उसे साफ करनेको उन्हें सूझती भी नहीं। झझरकी बाहरी सफाईसे जैसे खुश न हो जाना चाहिये वैसे ऐसे ढोंगी आदमियोंके बाहरी लक्षण—माला, तिलक, कंठी तथा कपड़ेके रंगसे धोखा न खाना चाहिये। जो भक्त अपने अन्तःकरणको शुद्ध करने पर विशेष ध्यान रखते हों उन्हींपर सच्चा प्रेम रखना चाहिये और उन्हींको असली भक्त समझना चाहिये। जो बाहरसे शरीरपर मलाई पोतनेवालेके ऐसे

हों तथा बाहरसे झंझरकी तरह सफाई रखनेवाले हों परन्तु भीतरसे सड़े हों उनसे जैसे बने वैसे सावधान रहना चाहिये। इस बातका खूब ख्याल रखना चाहिये कि अपने भीतर ऐसी पोल न रहजाय। बाहरकी सफाईमे कुछ नहीं होता। जब भीतरसे पवित्र हों तभी सच्ची भक्ति हो सकती है और तभी प्रभु प्रसन्न हो सकता है। इसलिये भाइयो और बहनो! जैसे बने वैसे उत्तम होनेकी चेष्टा कीजिये। शुद्ध होनेकी चेष्टा कीजिये।

ढोंगी भक्त।

जप माला छापा तिलक सरे न एको काम।
मन काचे नाचे वृथा साचे राचे-राम॥
आसन मारे क्या हुआ मरी न मनकी आस।
तेलीकेरा बैल ज्यो फिरता कोस पचास॥
साधु भया तो क्या भया माला पहरी चार।
बाहर भेख बनाइके भीतर भरा अंगार॥
डाढ़ी मूछ मुड़ाय कर हो गया घोटमघोट।
मनको क्यों नहिं मूड़िये जामें भरी है खोट॥
पद गाये मन हरखिया साखी कहे अनन्द।
सत्यनाम नहिं जानिया गलेमें पड़ गया फंद॥
मनका फेरत जन्म गो गयो न मनको फेर।
करका मनका छोड़कर मनका मनका फेर॥
मन मैला तन ऊजला बगला कपटी अंग।
ताते तो कौआ भला तन मन एकहि रंग॥

१६२–हृदयके सच्चे प्रेमसे बाहरकी भक्ति उत्पन्न होती है। (१)

अपने हृदयमें सच्चा प्रभुप्रेम हो तो वह किसी न किसी रास्ते बाहर आये विना नहीं रहता।

इस जगतका ऐसा नियम है कि जिस वस्तुमें जो मुख्य गुण होता है उसका वह गुण आपही आप बाहर निकल आता है और दिखाई देता है। जैसे–सूर्यमें तेज है तो उसमेंसे तेज निकलता है; चन्द्रमामें शान्ति है तो उसमेंसे ठंडक निकलती है; कस्तूरीमें सुगंध है तो उसमेंसे सुगंध निकलती है; हीरेमें चमक है तो उसमेंसे चमक निकलती है; फूलमें सौन्दर्य है तो उसमेंसे सौन्दर्य निकलता है और अग्निमें गरमी है तो उसमेंसे गरमी निकलती है। इस तरह जिस वस्तुमें जो मुख्य गुण है वह गुण आपही आप, स्वभावत बाहर आता है; वह छिपा नहीं रह सकता। वैसेही जिन हरिजनोंमें अन्दरकी भक्ति होती है उनकी अन्दरकी भक्तिसे बाहरकी भक्ति पैदा होती है। ईश्वरके कृपापात्र हरिजनोंमें जो प्रभुप्रेम होता है और अपनी शक्तिभर कुछ भला काम करनेकी जो शुभ इच्छा होती है वह शुभेच्छा तथा वह प्रेम, किसी न किसी रूपमे मालूम होजाता है। ऐसा किसी एक देशमें, किसी खास समय या किसी एक धर्ममे ही नहीं, वरंच दुनियाके सब देशोंमें सब समय और सब धर्मोंमें होता आया है और होता रहेगा।

बाहरी क्रिया विना हृदयका सच्चा प्रेम टिक नहीं सकता।

जैसे तेल विना दीया बुझ जाता है। जैसे चाभी दिये बिना

घड़ी बन्द होजाती है, जैसे गरमी पहुंचाये विना इंजिन नहीं चल सकता और जैसे खुराक विना शरीर नहीं टिक सकता वैसे बाहरकी क्रिया विना भीतरकी भक्ति नहीं टिक सकती। भीतरकी भक्ति ठहराने तथा दृढ़ बनानेके लिये बाहरी क्रियाकी जरूरत है और इसीके लिये भिन्न भिन्न हरिजन बाहरकी जुदी-जुदी रीतियोंसे अपने भीतरकी भक्ति दिखाते है। जैसे—

हृदयका प्रेम दिखानेके लिये बाहरी क्रियाओंकी जुदी जुदी रीतियां।

कोई कोई धर्मवाले बहुत सुन्दर और खूब ठाटबाटका मन्दिर बनाकर अपने हृदयकी भक्ति दिखाते है।

कोई कोई धर्मवाले अपने धर्मग्रंथकी बड़ी इज्जत करते हैं और उससे बहुत अदब करके अपने अंदरकी भक्ति दिखाते है।

कोई धर्मवाला अपने देवताकी सुन्दर मूर्ति बनाने और उसके लिये बढ़िया बढ़िया गहने गढ़वानेमें बहुत खर्च करता है और इस रास्ते अपने अन्दरका प्रेम बाहर दिखाता है। कोई धर्मवाला यज्ञ, होम आदि धूमधामी क्रियाएं करके अपने हृदयकी भक्ति दिखाता है।

इस प्रकार भिन्न भिन्न धर्मवाले जुदी जुदी रीतियोंसे अपना प्रेम बाहर दिखाते है। इसके सिवा और भी रीतियां हैं। जैसे-

कोई आदमी किसी खास रीतिसे हाथ जोड़ कर प्रभुपर अपना प्रेम दिखाता है।

कोई आदमी आसन मार कर अपनी भक्ति दिखाता है।

कोई आदमी धरती पर सिर झुकाकर अपनी भक्ति दिखाता है।

कोई आदमी धरतीपर पेटके बल सोकर, दण्डवत करके अपना प्रेम दिखाता है।

कोई आदमी आकाशकी ओर टकटकी लगाकर अपनी भक्ति जताता है।

कोई आदमी आंखें बंद करके शरीरको ढीला रख कर अपने अन्दरका प्रभुप्रेम दिखाता है और कोई भक्त योगके आसन तथा ध्यान धारणा और समाधिसे अपना प्रभुप्रेम दिखाता है।

इस प्रकार जैसे शरीर और इन्द्रियोंसे मनुष्य अपना प्रेम दिखाते हैं, वैसे बुद्धिमान हरिजन भगवानकी महिमाके कवित्त बनाकर अपने भीतरका प्रेम दिखाते हैं; ग्रंथकार नये नये ग्रंथ लिखकर अपना प्रेम दिखाते हैं; भजनके शौकीन भजन गा गा कर अपना प्रेम दिखाते हैं; कितने भक्त कथाके समय मन्दिरमें नाच कूद कर अपना प्रेम दिखाते हैं और कितने भक्त प्रेमके आंसुओंसे अपने भीतरकी भक्ति प्रकाशित करते हैं। इस प्रकार भिन्न भिन्न मनुष्य भिन्न भिन्न वृत्तियों और भिन्न भिन्न हाव भावसे अपने हृदयकी भक्ति दिखाते हैं।

जैसे शरीरसे, इन्द्रियोंसे, वृत्तियोंसे, मनसे और बुद्धिसे अपने अन्दरकी भक्ति प्रगट कर सकते हैं वैसे जिन हरिजनोंके पास धनकी ढेरी होती है वे अपने धनको अच्छे काममें लगाकर अपने अंदरका प्रेम दिखाते हैं। जैसे–कोई मन्दिर बनवाता है, कोई यज्ञ करता है, कोई तालाब खुदवाता है, कोई नया स्कूल खोलता है; कोई पुल बंधवाता है; कोई सड़क बनवाता है; कोई सदावर्त चलवाता है; कोई धर्मशाला उठवाता है; कोई पुराने मन्दिरोंकी मरम्मत कराता है, कोई नयी मूर्तिकी प्रतिष्ठा कराता है; कोई मेला लगवाता है; कोई जुलूस निकालता है, कोई कुआ खुदवाता है, कोई विद्यार्थियोंको पुस्तक इनाम देता है; कोई अपने इष्टदेवका उत्सव करता है, कोई विद्वानोंकी, भक्तोंकी तथा दुखियोंकी मदद करता है और इस रास्ते अपने

अन्दरका प्रभुप्रेम बाहर निकालता है। हृदयके प्रभुप्रेमसे भगवानके अर्थ धर्मके ऐसे ऐसे जो काम होते हैं उन्हें बाहरकी भक्ति कहते हैं।

जैसे राजाकी इज्जतके लिये लोग धूमधाम करते हैं वैसे प्रभुपर प्रेम होनेसे भक्त उत्सव करते हैं।

जब किसी नगरमें बहुत बड़ा और नेक राजा आनेको होता है तब उसके स्वागतके लिये वहांके लोग अपना घर सजाते हैं, ध्वजा पताका गाड़ते हैं, बाजे बजवाते है, गीत गाते हैं, रास्तेपर पानी छिड़कते है, अच्छी पोशाक पहनते हैं, आतशबाजी छोड़ते हैं, रोशनी करते हैं, गुलाबजल तथा इत्र छिड़कते हैं और फूल बरसाते हैं। वैसेही अपने हृदयका प्रभुप्रेम दिखानेके लिये हरिजन मन्दिरोंमें जाते हैं, घड़ी घंटा बजाते हैं, नौबत झराते हैं। तबला बजाते है, तमूरा बजाते हैं, झाल मंजीरा बजाते हैं और ढोल ताशा शहनाई आदि तरह तरहके बाजे बजाते हैं; शंख फूंकते हैं, भेरी नगारा बजाते है और जय जयकी आवाज करते हैं। कोई भक्त फूल चढ़ाता है, चन्दन लेपता है, सुगंधित धूप तथा दशांग जलाता है, ध्वजा चढ़ाता है, बन्दनवार टंगवाता है, मंडप सजाता है, भजन गाता है, ताल देता है, नाचता है, लावनी गाता है और झूमता है। अपने अन्दरकी भक्ति दिखानेके लिये कितनेही हरिजन देवताकी पालकी तथा रथ गांवोंमें घुमाते है; जुलूस निकालते हैं, मेला लगाते है, प्रसाद बांटते हैं; कथा कहते हैं; देवताओंको नैवेद्य चढ़ाते हैं और घरका कामकाज छोड़कर भक्तिके आनन्दमें पागल हो जाते हैं। याद रहे कि भक्तिकी ये सब क्रियाएं अन्दरके सच्चे प्रेमसे ही होती हैं। क्योंकि अन्दरके प्रेमसे ही बाहरकी भक्ति उत्पन्न होती है।

धर्मकी बाहरी क्रियाओंसे हरिजनोंके हृदयमें होनेवाला असर।

यह सब देख कर, सुन कर तथा अनुभव करके मनके विकारोंका जोश ठंढा पड़ता है ; वृत्तियां कोमल होती हैं ; अधिक उदार होनेका मन करता है ; उस समय हम अपना दुःख भूल जाते हैं ; अपना मानमरतबा भूल जाते है ; अपना अभिमान तथा बड़प्पन त्याग देते हैं ; अदबमें आजाते हैं ; शिष्टाचारी बन जाते हैं , मीठी वाणी बोल सकते हैं और कुछ ऊंचे विचारोंमें लग सकते हैं। इन सब कारणोंसे हृदयमें प्रभुप्रेम जागता है। इससे अपनेको एक प्रकारका अलौकिक आनन्द होता है। जैसे-अन्दरका प्रेम बाहर दिखानेके लिये बाहरी क्रियाओंकी जरूरत है वैसे अन्दरकी भक्ति बढ़ानेके लिये भी बाहरी क्रियाओं तथा कर्मोंकी जरूरत है। इसलिये भाइयो और बहनो ! अपनी आत्माके कल्याणके लिये अन्दरके प्रेमके साथ बाहरकी भक्ति भी रखना।

१६२—हृदयके सच्चे प्रेमसे बाहरकी भक्ति उत्पन्न होती है। (२)

बाहरकी क्रियाओंसे मायावादी संसारियोंपर होनेवाला असर।

मन्दिरोंमें देवताओंके पास जो भजन होता है तथा हजारं मनुष्योंके मुंहसे जो जयजय कार होता है उसकी गर्ज सुनकर धर्मके विरोधियों तथा निन्दकों पर भी बहुत बड़ा असर पड़ता है

इससे उनका दिल पिघल जाता है और वे भी भक्तिमें शामिल होने लगते हैं। कितने आदमी डरपोक होते है इससे खुल्लमखुल्ला हिम्मत करके धर्मके काममें शामिल नहीं होते। कितने आदमी लजाधुर होते हैं, वे शरमके मारे भक्तिमें शामिल नहीं होते और कितने आदमी लोकलाजसे डरते हैं तथा कितने आदमी अपनी झूठी बड़ाईके अभिमानमें चूर रहते हैं इससे वे जी खोल कर प्रेमपूर्वक धर्मके कामोंमें शामिल नहीं होसकते। परन्तु ऊपर कहे ढंगपर बाहरकी भक्तिसे पैदा हुआ हजारो आदमियोंका आनन्द ऐसे मनुष्योंपर भी असर करता है, इससे दूसरोंका आनन्द देखकर उनमें भी नया बल और नया उत्साह आजाता है और डरपोक, लजाधुर तथा अभिमानी भी उस समय भक्तिमें शामिल होने लगते है। ऐसा करते करते धीरे धीरे उनमेंसे भी बहुतेरे जन भक्त बनजाते है।

विरोधीस्वभावके मनुष्योंपर भी बाहरकी भक्ति जो इतना बड़ा असर करती है उसका कारण यह है कि बहुत आदमी देखादेखी करनेवाले होते हैं, बहुत आदमी दूसरोंके प्रभावसे दब जाने वाले होते है और बहुत आदमियोंपर रोबीला दृश्य बहुत जबरदस्त असर करता है। मेलेठेले, तीर्थोंमें संतसमागम, धूमधामी जुलूसका तमाशा, बड़े बड़े मन्दिरोंके ऊंचे शिखर तथा सोनेके गुम्बज और नदीकिनारे बंधवाए हुए सुन्दर घाट सब मनुष्योंपर स्वभावतः बहुत बड़ा असर डालते हैं। जिनको धर्म नहीं रुचता उन मनुष्योंको भी यह सब देख देख कर उस समय भक्ति करनेकी इच्छा होती है। इसीसे अन्दरकी भक्तिके साथ बाहरी क्रियाओं तथा कर्मकाण्डोंका बखान भी महात्मा लोग करते हैं और उनका समर्थन करते है।

जैसे बाहरके भव्य दृश्य मनुष्योंपर गहरा प्रभाव डालते

है वैसे मन्दिरके भीतरके भड़कीले दृश्य भी साधारण मनुष्यों पर बहुत बड़ा असर डालते हैं। जैसे–मन्दिरके अन्दरकी गुलजार रोशनी, रंग तथा अबीर गुलालका चढ़ाव, झांझ पखावजकी ठनक और भजन कीर्तनकी धूमधाम दर्शकों तथा श्रोताओंके चित्तमें गड़जाती है। इसके सिवा देवमूर्तियोंको पहनाये हुए सोने चांदीके गहने, जरीदार पोशाकें, चटकदार चादरें, दिल खुश करनेवाली ऊंचे दरजेकी खुशबू, विशाल स्थान और महात्माओंके सुन्दर चित्र तथा मूर्त्तियां लोगोंके मनपर बड़ा गहरा असर डालती है। यह सब ठाटबाट देख कर बहुत जनोंको भक्ति करनेका मन होजाता है। इस प्रकार बाहरकी भक्तिमें बहुत लाभ है। इसीसे अपने अन्दरका प्रभुप्रेम बाहर दिखानेके लिये महात्मा तुलसीदासजी कहते है कि अपने घरके अन्दरका दीया बाहर देहरीपर रखो जिससे अन्दर बाहर दोनो जगह उजाला पड़े।

बाहरकी क्रियाओं तथा कर्मकाण्डोंसे मुख्य लाभ।

ऊपर कही बाहरी भक्तिसे और भी बहुत कुछ लाभ होता है। जैसे—ऐसी भक्तिमें जुदे जुदे देशोंके, जुदी जुदी जातियोंके और जुदी जुदी बोलियोंके मनुष्य इकट्ठे होते है यानी, गुजरातके, दक्षिणके, मदरासके, लंकाके, बंगालके, मारवाड़के, पंजाबके, बिहारके, युक्तप्रदेशके और ब्रह्मदेशके मनुष्य जमा होते हैं। इनकी बोली भिन्न भिन्न होती है; इनके रस्म रिवाज अलग अलग होते है; इनकी खुराक अलग अलग होती है; इनकी पोशाक अलग अलग होती है और इनके आचार विचार अलग अलग होते हैं। यह सब देख कर चतुर मनुष्योंको बहुत कुछ शिक्षा और नये विचार मिलते हैं। जैसे–कोई दूसरोंकी भाषा सीखता है; कोई दूसरोंसे भोजन, मिठाई और चटनी अंचार

बनाना सीखता है; कोई जुदे जुदे रोगोंकी दूसरे दूसरे देशोंमें होनेवाली दवा सीखता है; कोई दूसरे दूसरे देशोंके पहनावेसे अपने अनुकूल पोशाक पहनना सीखता है; कोई दूसरे देशकी घर गृहस्थीकी चालढाल परखता है और विचारता है कि उसमें अपने देशवासियोंके अनुकूल क्या है और कोई आदमी परदेशके अच्छे आचार विचार अपनी जातिमें जारी करता है। इतना ही नहीं, ऐसे प्रसंगोंमें जुदे जुदे देशोंके आदमी आपसमें मित्रता करते हैं और एक दूसरेके मददगार होते हैं। इससे यात्राका शौक बढ़ता है और देशका रोजगार धंधा बढ़ता है तथा शिल्पकलाको सहारा मिलता है। इससे देशकी उन्नति और धर्मकी वृद्धि होती है।

इसके सिवा बाहरकी भक्तिसे एक यह भी बड़ा लाभ होता है कि धर्मके मन्दिरो तथा मेलोमें धनी गरीब सब इकट्ठे होसकते हैं; ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र आदि सब जातियोंके मनुष्य मिल सकते हैं यानी ब्राह्मण, भूमिहार, राजपूत, खत्री कायस्थ, अगरवाले, सुनार, कुहार, तेली, कलवार, कुर्मी, कहार, कांदू, बढ़ई, माली, कोइरी, नोनिया आदि अनेक जातियोंके मनुष्य सबसे मिल जुल सकते हैं। इसके सिवा भक्तिके समय देवताके पास सब अपना दरजा भूल जाते है। जैसे—उस समय अमीर अपने धनका अभिमान छोड़ देते है; पण्डित पण्डिताईका वाद विवाद छोड़ देते हैं; साधु अपने त्यागका अभिमान छोड़ देते हैं; सिपाही अपना सिपाहियाना मिजाज छोड़ देते हैं; व्यापारी अपना जंजाल और प्रपंच भूल जाते हैं; देहाती अपना गँवारपन छोड़ देते हैं; हाकिम अपने अधिकारका अभिमान छोड़ देते है और स्त्रियां अपनी स्वाभाविक चंचलताको सीमामें ला रखती हैं। इस प्रकार सब श्रेणियोके मनुष्य कुछ कुछ आगे बढ़ते है और अपने विकारोको, अपनी भूलोंको, अपने स्वभावको, अपनी

लतको तथा अपनी इच्छाको दबाये रखनेकी कोशिश करते हैं। इसके सिवा किसान, मजदूर आदि पिछड़े हुए मनुष्य ऐसा मेला देख कर अदब कायदा सीखते हैं, विनय सीखते है; भजन गाना सीखते हैं, नियमसे रहना सीखते है, सबसे हिलमिल कर रहना सीखते है और दूसरे सद्गुण सीखते हैं। मनुष्य देखादेखी करनेके स्वभाववाले हैं और उनमें भी अज्ञान लोग अपनेसे ऊंचे कहलानेवाले मनुष्योंकी रीति भांतिकी बहुत नकल करते हैं। उनका आचार विचार सुधारनेमें बाहरी भक्तिके ऐसे मेलोंसे बड़ा लाभ होता है। इसलिये भीतरी भक्तिके साथ बाहरी भक्ति भी रखनी चाहिये।

यद्यपि असल सिद्धान्त यही है कि–"आत्मासे आत्माको पकड़ना चाहिये" और इसमें किसी प्रकारकी बाहरी क्रियाकी जरूरत नहीं है; तो भी याद रखना कि जबतक देहसे जीवका सम्बन्ध है तबतक किसी न किसी तरहके प्रेमकी बाहरी क्रिया तो करनी ही पड़ेगी। इसके विना नहीं चल सकता। इसलिये सब भाई बहनोंको अन्दरकी भक्तिसे उपजी हुई बाहरकी भक्तिका समर्थन करना चाहिये और इस बातका ख्याल रखना चाहिये कि बाहरकी भक्तिमें अन्दरका प्रभुप्रेम उड़ या दब न जाय। यह ख्याल रख कर अगर बाहरकी भक्ति करना आवे तो उससे अपना तथा दूसरोंका भी बहुत कल्याण किया जा सकता है। इसलिये अन्दरकी भक्तिसे उत्पन्न बाहरकी भक्तिका समर्थन करना।

१६४–धर्मकी बाहरी क्रियाएं लाभदायक हैं इससे जप करना, ध्यान धरना तथा ज्ञान वैराग्यका विचार करना भी आवश्यक है।

बन्धुओ! हरिजनोंको बाहरी भक्ति और भीतरी भक्ति दोनोंकी खास करके जरूरत है। अपनेमें देह और आत्मा दोनों वस्तुएं है। देहको बाहरी भक्तिकी जरूरत है और आत्माको भीतरी भक्तिकी जरूरत है। इसलिये जबतक देह है तबतक दोनों प्रकारकी भक्ति चाहिये ही। अन्दरकी भक्ति जिसे प्रभु-प्रेम कहते हैं वह और उसकी मदद करनेवाली बाहरकी क्रियायें तथा कर्मकाण्ड तो चाहिये ही। इन दोनों विषयोंमें प्रवीण होना चाहिये।

कितने पंछी ऐसे हैं जो आकाशमें उड़सकते है परन्तु पानीमें डुबकी नहीं मार सकते। और कितने प्राणी ऐसे हैं जो पानीमें रह सकते हैं परन्तु आकाशमें नहीं उड़सकते। परन्तु टिटिहरी नामकी एक चिड़िया होती है जो आकाशमें भी उड़ती है और पानीमें भी गोता लगाती है। वैसे ही कितने भक्त बाहरी भक्तिमें रहजाते हैं और कितने भक्त भीतरी भक्तिमें रहजाते है। परन्तु कितने भक्त ऐसे होते हैं जो अपने हृदयमें गहरे उतर कर ज्ञान ध्यानमें गोता लगाते है और अपने धर्मके नियमानुसार बाहरी क्रिया भी करते है। जो इन दोनों विषयोंमें चतुर होता है और धर्मके नियमानुसार चल सकता है वही सच्चा भक्त कहलाता है। इस बातको ठीक तौरपर समझानेके लिये एक सन्त कहते थे कि—

पहले समयमें जब तीर्थ करनेके लिये भारी दल निकलता था तो वह अपने संग नदीमें चलने योग्य डोंगी रखता था। दलके

लोग उस नावको गाड़ीपर रखते थे और गाड़ीको बैल खींचते थे। जब रास्तेमें नदी आजाती और उसमें पानी अधिक होता तब डोंगी गाड़ीसे उतार कर पानीमें रखते और नावमें गाड़ी चढ़ाकर नदी पार होते थे। इस प्रकार जरूरत पड़नेपर कभी गाड़ीपर नाव और कभी नावपर गाड़ी ले जाते थे। वैसे जो सच्चे भक्त हैं वे जब भीतरकी भक्तिकी जरूरत होती है तब उसपर विशेष ध्यान देते हैं और जब बाहरके कर्मकाण्ड तथा बाहरी क्रियाओंकी जरूरत पड़ती है तब उस कामको अपनी आत्माके कल्याणके लिये करते हैं। वे किसी एक ही विषयमें नहीं पड़े रहते। जो चतुर और सच्चे व्यापारी हैं वे अपने तराजूके दोनों पलड़े समान रखते हैं। क्योंकि जब दोनों पलड़े समान रहते हैं तभी ठीक ठीक वजन होता है। जबतक एक पलड़ा ऊंचा और एक नीचा रहेगा तबतक ठीक वजन नहीं होगा। वैसे ही अन्दरका प्रभुप्रेम और बाहरकी धर्मक्रिया दोनों ठीक ठीक हों तभी सच्ची भक्ति कहलाती है। इसलिये भाइयो और बहनो! जैसे हो वैसे उचित परिमाणमें दोनों प्रकारकी भक्ति करना। यही हमारी सलाह है और यही महात्माओंका सिद्धान्त है। किसी एक ही अंगमें मत रहजाना, वरंच अन्दरका प्रेम जगानेके लिये बाहरी भक्ति करना।

बन्धुओ! मिठाई खानेमें स्वाद मिलता है परन्तु जरूरतसे ज्यादा मिठाई खानेपर बीमारी होती है। रोशनी बहुत जरूरी चीज है मगर उसका तेज हदसे ज्यादा हो तो उससे आंखको नुकसान पहुंचता है। काम करना जिन्दगीकी बहुत जरूरी बात है परन्तु हदसे बाहर मिहनत होनेपर शरीर घिस जाता है। विश्राम लेनेकी सबको बहुत जरूरत है परन्तु ज्यादा आराममें पड़े रहनेसे आदमी सुकुमार बनजाता है। इस प्रकार अच्छीसे

अच्छी चीजोंसे भी हदसे बाहर काम लिया जाय तो वे नुक़सान पहुंचानेवाली होजाती है। याद रखना कि भक्तिकी बात भी ऐसी ही है। कोई एक भक्ति बहुत बढ़ जाय और दूसरी भक्तिकी ओर कुछ भी ध्यान न रहे तो इससे भी बहुत जियान होता है। इसलिये किसी एक ओर बहुत ज्यादा न झुक कर, दोनो प्रकारकी भक्ति ठीक तौरपर करना। महात्मा कहते है कि पंछीको दो डैनोंकी जरूरत है, एक डैनेसे वह नहीं उड़ सकता। वैसे ही हमें भी अन्दरकी तथा बाहरकी, दोनो प्रकारकी भक्तिकी जरूरत है। गाड़ी चलाने के लिये जैसे दो पहियोंकी जरूरत है वैसे मोक्षधाममें जानेके लिये दोनों प्रकारकी भक्तिकी जरूरत है।

रोटी एक तरफ अच्छी सिकी हो और दूसरी तरफ कची हो या जलगयी हो तो वह अच्छी नहीं कहलाती। वैसे ही भक्ति आत्माकी खुराक है। वह भी दोनों ओरसे बराबर पकी होनी चाहिये, तभी वह ठीक पोषण कर सकती है और आनन्द दे सकती है। इसलिये जैसे रोटीकी दोनों बगल एक समान सेकनेकी जरूरत है वैसे अन्दरसे तथा बाहरसे दोनों प्रकारकी भक्ति बराबर करनेकी जरूरत है।

नट रस्सीपर चलनेका खेल दिखाते हैं। उस समय वे अपना भार समतूल रखनेके लिये हाथमें एक लाठी रखते हैं और जिधरको झुकना होता है उधरको लाठी झुकाते हैं। इससे भार समतूल बना रहता है। अगर दोनो ओर समान भार न रहे तो रस्सीपर चलनेवाला मनुष्य भारी जोखोमें पड़ जाता है। वैसे ही धर्म करनेमें सब भक्तोको अपनी बुद्धिसे काम लेना चाहिये। जिस समय जिस प्रकारकी भक्ति दरकार हो उस समय उस प्रकारकी भक्ति ठीक ठीक करना चाहिये। मतलब यह कि किसी एकतरफी भक्तिमें बहुत मत झुक पड़ना।

जब ज्ञान ध्यानकी जरूरत हो तब उसमें जीवको गहरे उतारना और जब धर्मकी बाहरी क्रियाओंकी जरूरत हो तब उन्हें विधि-पूर्वक करना। इस प्रकार दोनों भक्ति करते और एकतरफी भक्तिमें न झुक पड़नेको संत सच्ची भक्ति कहते हैं। भक्तिके एक अंगमें रहजानेसे अधूरी भक्ति कहलाती है।

घरके दरवाजेमें दो किंवाड़ होते हैं। उसमें एक किंवाड़ बन्द करें और दूसरा खुला रखें तो घरकी रक्षा नहीं होती। जब दोनो बन्द करें तभी उसकी ठीक ठीक रक्षा होती है। वैसे भक्तिके भी दो द्वार हैं। पहला द्वार भीतरकी भक्ति है और दूसरा द्वार धर्मकी बाहरी क्रिया है। जब दोनों द्वार खोलना और बंद करना आवे तभी सच्ची भक्ति हो सकती है। इसलिये भाइयो और बहनो! आपको हमारी यही सलाह है कि किसी एक-अंगी भक्तिमें मत रह जाना वरंच जिस समय जिस भक्तिकी जरूरत हो उस समय बुद्धि लगाकर वैसी भक्ति करना। भगवान भला करेगा। दोनो प्रकारकी भक्तिमें चित्त लगाना। दोनों प्रकारकी भक्तिमें चित्त लगाना।

१५५—सच्चे सन्त गुरुआईका दावा नहीं करते।

एक बड़े जेलखानेमें बहुतसे कैदी थे, उन सबने कुछ कुछ कसूर किया था इससे वे बांधे गये थे। उन सब कैदियोंका कपड़ा, खुराक तथा बैठने उठनेकी जगह भी लगभग समान ही थी तोभी उनमें एक कैदी दूसरोंसे कुछ आगे बढ़ गया था और नामी हो गया था। क्योंकि वह नयी नयी बातें जानता था और वे बातें कैदियोंको हर रोज कह सुनाता था। इससे सब कैदी आश्चर्य करते और उसपर बहुत खुश रहते थे तथा समय पाने-

पर उसकी बात सुनना चाहते थे। किसी दिन वह चतुर कैदी कहता कि आज हमारे नगरसेठके लड़केका ब्याह है, शहरमें महाजनोंका भोज है; हमको भी मिठाई मिलेगी। किसी दिन कहता कि हमारे महाराज आज शिकार खेलने गये हैं, आज उधर ही रहेंगे। किसी दिन कहता कि शहरमें नया सर्कस आया है वह देखने लायक है, इससे खूब भीड़ होती है। किसी दिन कहता कि आज फलाने मुहल्लेमें एक महात्मा आये हैं; वहां कथा होती है। किसी दिन कहता कि आजकल अकाल पड़ा है इससे राजा साहब फलानी जगह बड़ा तालाब खुदवाते हैं; उसमें हजारों आदमी लगे हैं। किसी दिन कहता कि शहरमें हैजेका जोर है इससे लोग भाग रहे हैं। किसी दिन कहता कि फलाना जमींदार भारी यज्ञ करता है; खूब चहल पहल है। किसी दिन कहता कि हालमें एक भारी चोरी होगयी है; चोर अभीतक पकड़ा नहीं गया; उसे पकड़नेके लिये हजार रुपयेका इनाम निकला है। किसी दिन कहता कि फलाने बाबूने फलानी जगह भारी मन्दिर बनवाया है; उसमें आज प्रतिष्ठा होनेवाली है इससे जुलूस निकलेगा। किसी दिन कहता कि आज हमलोगोंको मिठाई बटेगी। ऐसी ऐसी बातें कैदियोंसे कहता। सुनकर सब कैदी आश्चर्यचकित होते। वे सोचते कि इस आदमीने भी कसूर किया है, यह आदमी भी हमारी तरह कैदखानेमें है, हमारी तरह इसे भी कहीं जाने आनेकी छूट नहीं है, यह दिनभर हमीं लोगोंके पास रहता है। फिर भी देश विदेशकी सब बातें यह कैसे जानलेता है।

एक दिन किसी आदमीने उस कैदीसे पूछा कि तुम कैदखानेमें रहने पर भी बाहरकी ये सब बातें कैसे जान जाते हो? उस कैदीने कहा कि मेरी कोठरीमें एक छोटी सी खिड़की है। वह

खिड़की रास्तेपर पड़ती है, वहां मैं खड़ा रहता हूं और राह-चलते आदमी जो बात करते हैं उसे मैं सुनलेता हूं या किसीसे पूछता हूं कि आज नयी खबर क्या है। कोई अच्छा आदमी होता है तो थोड़ी देर वहां खड़े होकर कुछ बता देता है। इस तरह मैं सब हाल जान जाता हूं, इसमें मेरी कुछ खूबी नहीं है। मुझे एक छोटी सी खिड़की मिलगयी है उसीसे सब हाल पा जाता हूं और सब तरह तो मैं इन्हीं कैदियोंके ऐसा हूं।

बन्धुओ ! यह दृष्टान्त देकर एक महात्मा अपने हरिजनोंको समझाते थे कि भाइयो ! उस कैदीकी तरह मुझे भी एक खिड़की मिल गयी है अर्थात् अच्छा संग मिल गया है और कुछ शास्त्रका अभ्यास होगया है। इससे मैं धर्मकी और भक्तिकी थोड़ी बहुत बात तुम लोगोंसे कहता हूं। नहीं तो मैं भी तुम्हारे ही ऐसा हूं। जैसे तुममेंसे विकार नहीं गये हैं वैसे मुझमेंसे भी अभी सब तरहके विकार नहीं गये हैं। जैसे तुम बंधनमें हो वैसे मैं भी बंधनमें हूं और जैसे तुम्हें कितने काम करने पड़ते हैं वैसे मुझे भी कितने काम करने पड़ते हैं। याद रखना कि मुझमें कुछ खूबी नहीं है, सिर्फ शास्त्रकी और सत्संगकी खिड़की मिलगयी है इससे मैं तुम्हारे सामने ज्ञानकी और भक्तिकी बातें करता हूं। इसके लिये मुझमें कुछ विशेषता समझनेकी भूल मत करना वरंच ऐसी चेष्टा करना कि मेरी तरह तुम्हें भी खिड़की मिल जाय। ऐसी खिड़की पाजाओगे तो तुम भी मेरी तरह गुरु समान हो जाओगे और आगे जाकर तुमको और दूसरोंको बहुत लाभ होगा। इस संसारके जेलखानेमें रहते हुए भी ईश्वरकी बातें जानने योग्य खिड़की ढूंढो। खिड़की ढूंढो। तब तुम भी महात्मा होसकोगे।

१६६-प्रभुका गुण गाकर हम उसको लाभ नहीं पहुंचाते, उससे हमको ही बेहद लाभ होता है।

दुनियाके सब धर्मोंमें कहा है कि परम कृपालु महान परमात्माका गुण गाना चाहिये। कितने आदमी पूछते हैं कि परमात्माका गुण गानेसे क्या फायदा होता है? क्या ईश्वरका गुण गानेसे वह जितना बड़ा है उससे कुछ और बड़ा हो जायगा? ईश्वरका गुण गानेसे उसमें जितने गुण हैं उनके सिवा कोई और गुण आजायगा? या ईश्वरका गुण गानेसे ईश्वरको कुछ विशेष लाभ होगा? इस प्रश्नके उत्तरमें सन्त कहते हैं कि ईश्वरका गुण गाकर उसको कुछ लाभ नहीं पहुंचा सकते। जैसे—पृथिवी जितनी बड़ी है उससे और बड़ी नहीं बना सकते, आकाश जितना ऊंचा है उससे और ऊंचा नहीं कर सकते; सूर्यमें जितना प्रकाश है उससे अधिक प्रकाश उसे दे नहीं सकते और जैसे समुद्रको पृथिवीपरसे उठाकर और कहीं नहीं ले जा सकते; वैसे ईश्वरका गुण गानेसे ईश्वरमें कुछ भी फेर बदल नहीं कर सकते।

बन्धुओ! हम कहते हैं कि हम ईश्वरकी स्तुति करते हैं, परन्तु सच पूछिये तो ईश्वरकी स्तुति हो ही नहीं सकती। क्योंकि जिसमें जितना गुण हो उससे बहुत बढ़ाकर कहनेका नाम स्तुति है। परन्तु समर्थ महान ईश्वरमें इतने अधिक गुण हैं कि उनका वर्णन ब्रह्मासे और हजार जीभवाले शेषनागसे भी नहीं हो सकता, तब हम अल्पबुद्धि मनुष्य उसका पूरा पूरा गुण क्योंकर गा सकते हैं? प्रभुमें जितने गुण हैं उनका लाखवां या करोड़वां भाग भी हमें कहने या समझने नहीं आता। तब हम गुण गाकर प्रभुको बड़ा कैसे बना सकते हैं?

इसलिये प्रभुको बड़ा बनानेके निमित्त उसका गुण नहीं गाना है वरंच आप बड़े होनेके लिये ही गुण गाना है । हमारे शास्त्रका यह सिद्धान्त है कि—

हृदयमें जैसी भावना होती है वैसा फल मिलता है और जिस किस्मके विचार अपने मनमें रमते है तथा जिस किस्मके गुण अपनी नजरके सामने नाचते रहते है उस किस्मके गुण अपनेमें स्वभावतः आतेजाते हैं । भावनाका बल अपार है, विचारका बल अन्दाज़से कहीं बढ़कर है और ऊंचे दरजेके गुणोमें एक प्रकारका आकर्षण है । इससे उन गुणोंका स्मरण करनेवालेमें वे गुण विना मिहनतके आतेजाते हैं । इस कारण भगवानका गुण गानेसे उसमें जो गुण हैं वे भक्तोमें उनकी भक्तिके अन्दाजसे आतेजाते हैं। जैसे—दया, परोपकार, क्षमा, शांति धीरज, आत्मभाव, सबकी भलाई चाहना, निरभिमान, अमरत्व विदेहपन, आत्मिक बल, उदारता, संकल्पसिद्धान्त, बुद्धिकी विशालता और परमात्मामें लवलीनता आदि महान गुणोंको रात दिन रटनेसे धीरे धीरे भक्तोंकी योग्यतानुसार उनमें भगवानके ये सब गुण आतेजाते हैं। इससे भक्तोंका जीवन सुधरता जाता है और उनमें धीरे धीरे प्रभुकी प्रभुता आतीजाती है जिससे वे अपनी आत्माका कल्याण कर सकते हैं और अपने बन्धुओंकी भी बहुत कुछ भलाई कर सकते हैं। सो प्रभुको बड़ा बनानेके लिये नहीं, वरंच आप अच्छे होनेके लिये और अपने अज्ञान भाइयोंमें प्रभुका ज्ञान फैलानेके लिये शुद्ध अन्तःकरणसे प्रेमपूर्वक सर्वशक्तिमान परमकृपालु पिता परमात्माका गुण गाना चाहिये। भाइयो! प्रभुका गुण गाते रहना, प्रभुका गुण गाते रहना। इससे प्रभु बड़ा नहीं होगा आप ही बड़े हो सकोगे।

इति ।